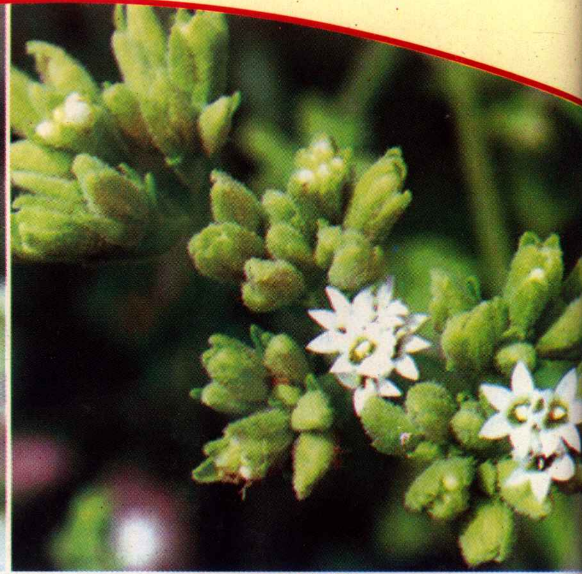
अमृतसागर नागरी

अमृतरूपी औषधियों का सागर





प्रकाशक : तेजकुमार बुक डिपो (प्रा०) लिमिटेड, लखनऊ
उत्तराधिकारी : नवल किशोर प्रेस बुक डिपो, लखनऊ



अमृतसागर

अर्थात्

अमृतरूपी औषधियों का सागर

चरक, सुश्रुत, वाग्भट, भावप्रकाश, चक्रदत्त, भैषज्यरत्नावली
इत्यादि उत्तमोत्तम वैद्यक-ग्रन्थों के अवलम्बन से
सद्वैद्यों द्वारा बनाया गया।

प्रकाशक
तेजकुमार-बुक डिपो (प्रा०) लिमिटेड,
उत्तराधिकारी-
नवल किशोर-बुक डिपो, लखनऊ

श्रीमती स्मिता पटवर्धन, प्रबन्ध संचालक द्वारा
अवध पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ में मुद्रित 2008 ई०।

छठवीं बार—3000 मूल्य 150/-

श्रीः

विशेष द्रष्टव्यपत्र

पाठकगण ! जिस समय आप लोग इस (अमृतसागर) से औषधि-निर्माण का कोई कार्य लेना चाहें उस समय इस विशेष द्रष्टव्यपत्र का अवश्य निरीक्षण कर लें। इसकी आवश्यकता इसलिए हुई है जिससे आपका कोई भ्रम शेष न रहे।

इस पुस्तक में अनेक स्थानों पर नुसखों की तौल का प्रमाण नहीं दिया गया है। विशेष रूप से काष्ठादिक नुसखों में ऐसा अवश्य है। अतएव तौल का प्रमाण साधारण रूप से जिस स्थान पर नहीं कहा गया है, वहाँ पर सम्पूर्ण औषधि की तौल बराबर भाग लेनी चाहिए। तौल का प्रमाण चिकित्सक के आधीन है, वह रोगी तथा रोग का बलाबल देखकर निर्माण कर सकता है। परन्तु साधारणतः काष्ठादिक नुसखों की तौल का प्रमाण युवा पुरुष के वास्ते २ माशा से ६ माशा तक तथा बालक के वास्ते १ माशा से ३ माशा तक एवं वृद्ध पुरुषों को भी बालक की तरह मात्रा का प्रमाण क्वाथ, लेप आदि में देना उचित है।

रसादिक एवं चूर्णादि तैयार की हुई औषधियों का प्रमाण १ महीने के बालक से लेकर १६ वर्ष पर्यन्त १ रत्ती से लेकर १ माशा तक उचित है, परन्तु इस बात का ध्यान विशेष रखना चाहिए, जैसे २ बालक बढ़ता जाय, औषधि-मात्रा भी उसी के अनुसार बढ़ाना चाहिये। १६ वर्ष के बाद ७० वर्षपर्यन्त १ माशा से ३ माशा तक देना उचित है इसके ऊपर अवस्था पर औषधि की मात्रा घटा कर देना चाहिये। जैसा कि बालक की मात्रा का वर्णन है वैसा ही करना योग्य है।

घृत-तैल की सिद्धि में सबसे उपयोगी बात यह है कि द्रव्य से चौगुना घृत, तैल तथा घृत, तैल से चौगुना जल देकर मन्दाग्नि द्वारा पचाना चाहिये।

द्रव्यादि वस्तु गेरने से पहिले घृत, तैल को अग्नि पर इतना गरम अवश्य करना चाहिये कि जिसमें कड़क पैदा हो जाय, बाद को अग्नि पर से उतारकर ठंढा करके द्रव्यादि मिलाना सर्वथा श्रेष्ठ है।

अरिष्ट—द्रव्यक्वाथ में औषधि गेर कर १ महीना तक पृथ्वी में गड़ा रहने दे, बाद को निकालकर, गाढ़े कपड़े से छानकर रख देने से अरिष्ट अच्छा तैयार होता है।

आसव—कच्चे जल में ही औषधियों को १ महीना तक सड़ाकर वारुणीय यन्त्र द्वारा खींचने से आसव तैयार होता है।

बिषैली औषधि का प्रयोग नुसखों में विना शुद्ध किए नहीं करना चाहिये, विशेषकर खानेवाले नुसखों में इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिये।

विशेषकर सड़ी-गली औषधि का भी प्रयोग नुसखों में सर्वथा हानिकर होता है।

इस पुस्तक के संशोधन में विशेष ध्यान इस बात का रक्खा गया है जैसे शास्त्रीय शब्द—टंक, कोल, कर्ष, कुडव, प्रस्थ, द्रोण आदि अनेक ऐसे शब्द आए थे, जिनका अर्थ विना शास्त्र देखे तौल का प्रमाण करना सर्वथा कठिन था, अतएव सर्वसाधारण के वास्ते उन शब्दों का अर्थ तथा तौल का प्रमाण हिन्दी भाषा में तोला, माशा, सेर आदि के शब्दों में परिवर्तन कर दिया है। चिकित्सकगण विना किसी परिश्रम के नुसखों में तौल का प्रमाण सुविधा से कर लें।

नरही, लखनऊ
मि० श्रीο कृ० १०
संवत् १९९१

संशोधक—
विद्याभूषण, वैद्यरत्न पं० हरिप्रसाद वैद्य



विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
आमाशय में प्राप्त वात का लक्षण तथा यत्न	१४६
पक्वाशयगत वात का लक्षण ...	१४६
गुदागत दुष्ट वात का लक्षण व यत्न...	१४६
हृदयगत वात का यत्न	१४६
कर्णादिकों में प्राप्त वात का लक्षण व यत्न	१४७
शरीर की नसों में प्राप्त वात का लक्षण व यत्न	१४७
सन्धिगत वात का लक्षण व यत्न ...	१४७
वातव्याधि का सामान्य यत्न	
नारायणतैल की विधि	१४७
योगराजगुग्गुल की विधि ...	१४८
विषगर्भतैल	१४६
महासुगन्धित लक्ष्मीविलासतैल ...	१४६
विजयभैरवतैल की विधि ...	१५०
विजयभैरवरस	१५०
वातारिरस	१५१
समीरपन्नग व समीरगजकेसरी रस ...	१५१
वृद्धचिन्तामणिरस ...	१५१
अमृतनाम गुटिका	१५२
राक्षसनामक रस	१५२
बङ्गेश्वररस	१५२
हरतालगुटिका ...	१५३
लहसुनपाक की विधि	१५३
ऊरुस्तम्भरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	१५४
ऊरुस्तम्भ रोग का पूर्वरूप...	१५४
ऊरुस्तम्भ का असाध्य लक्षण ...	१५४
ऊरुस्तम्भ का यत्न	१५४
आमवातरोग को उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	१५५
बढ़े हुए वात का लक्षण	१५५
बढ़े हुए वात का यत्न	१५६
महारास्नादि क्वाथ	१५६
अजमोदादिक चूर्ण	१५६
सोंठिपाक	१५६
मेथीपाक	१५७
वृहत्सैन्धवादि तैल	१५७
आमवातारिरस	१५७
व्याधिशार्दूल गुग्गुल	१५७
आमवातारि गुटिका	१५८
द्वात्रिंशक गुग्गुल	१५८
सिंहनाद गुग्गुल	१५८
वातेश्वररस	१५६
पित्तव्याधि की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	१५६
पित्त रोगों का सामान्य यत्न ...	१६०
कफ के बीस रोगों का लक्षण व यत्न...	१६१
वातरक्त की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न ...	१६१
वातरक्त का स्वरूप व पूर्वरूप ...	१६१
वाताधिक, रक्ताधिक, पित्ताधिक, कफाधिक वातरक्त का लक्षण ...	१६२
हाथों में उपजे वातरक्त का लक्षण ...	१६२
वातरक्त का असाध्य लक्षण व उपद्रव...	१६२
वातरक्त का यत्न	१६३
लघुमंजिष्ठादि काढ़ा	१६३
गुडूच्यादि क्वाथ	१६३
कैशोर गुग्गुल	१६३
अमृतभल्लातकावलेह	१६४
शूलरोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न...	१६५
वातज शूलोत्पत्ति का लक्षण ...	१६५
पैत्तिक शूल की उत्पत्ति, लक्षण ...	१६५
कफजशूल की उत्पत्ति, लक्षण ...	१६६
सन्निपात के शूल का लक्षण ...	१६६
आम वायुकफ, कफपित्त के शूल का लक्षण	१६६
शूलरोग का उपद्रव	१६६
शूलभेद परिणामशूल का लक्षण ...	१६६
इसका लक्षण	१६६
अन्नद्रव, जरत्पित्त शूल के लक्षण ...	१६७
शूलरोग का यत्न	१६७
कफ के शूल का यत्न	१६७
पसुली के शूल का यत्न ...	१७२
उदावर्त रोग की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न	१७३
अधोवायु आदि के तेरह वेगों का लक्षण	१७३
मलावरोध, मूत्रावरोध, जृम्भावरोध उदावर्त का लक्षण	१७३
आँसू, छींक, डकार छर्दि रोकने के उदावर्त का लक्षण	१७३
शुक्र, क्षुधा, तृषा, श्वास, निद्रा रोकने के उदावर्त का लक्षण... ...	१७४
उदावर्त की उत्पत्ति व सामान्य लक्षण...	१७४
उदावर्त का विशेष लक्षण ...	१७४
क्रम से उदावर्त का यत्न ...	१७५
मल, मूत्र रोकने के उदावर्त का यत्न...	१७५
जँभाई, आँसू, छींक, डकार, छर्दि रोकने के उदावर्त का यत्न ...	१७५

विषय	पृष्ठ

विषय	पृष्ठ

जंगम विष का यत्न

स्त्रियों के प्रदर आदि रोगों की उत्पत्ति, लक्षण व यत्न

आसव बनाने की विधि

अवलेह विधि

अनुभूत तैल प्रकरण

चूर्ण विधि

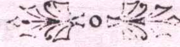
वटिका-मोदकादि विधान

लेपन विधान

लोमशातन प्रकार

षड्ऋतु-वर्णन

इस ग्रन्थ की प्रसिद्ध-प्रसिद्ध औषधों का सूचीपत्र



रस

गुटिका

चूर्ण

क्वाथ

अवलेह

तैल

घृत

गुग्गुल

पाक

गोली

लेप

॥ सूची समाप्त ॥

आधुनिक तौल

१० मिली ग्राम	=	१ सेंटी ग्राम
१० सेंटीग्राम	=	१ डेसी ग्राम
१००० मिलीग्राम	=	१ ग्राम
१००० ग्राम	=	१ किलो

आधुनिक तौल का तुलनात्मक निकटतम मापदण्ड



१ टका	=	लगभग ८ ग्राम
१ तोला	=	लगभग १० ग्राम
१ टंक	=	लगभग ४ ग्राम



अन्य प्राचीन तौल

८० तोले	=	१ सेर
१ तोला	=	१२ माशे
१ माशा	=	८ रत्ती
१ सेर	=	१६ छटांक



अमृतसागर

——:(०):——

श्रीमन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र महाराज श्रीसवाई प्रताप-सिंहजी ने संसार की भलाई के विचार से मनुष्यों के रोग दूर करने के लिए कृपापूर्वक चरक, सुश्रुत, वाग्भट, भावप्रकाश और आत्रेय प्रभृति वैद्यक के समस्त ग्रन्थों का सार लेकर जयपुर की बोली में अमृतसागर की रचना की, जिसमें संक्षेप से रोगों के निदान भी हैं। उसी को हिन्दीभाषा में अनेक प्रकार की अनुभूत ओषधियों के विचारपूर्ण यत्नों सहित लिखते हैं।

रोगविचार

अनेक प्रकार की पीड़ा को रोग कहते हैं। रोग दो प्रकार के हैं—एक कायिक, दूसरे मानसिक। काया में रहे सो कायिक, उसका नाम व्याधि है। मन में रहे सो मानसिक उसका नाम आधि है। ये दोनों शरीर में किसी प्रकार के कुपथ्य से—वात, पित्त, कफरूप दोष और मिथ्याहार-विहार के होने से—सब रोगों को उपजाते हैं। वात, पित्त, कफ कई प्रकार के कुपथ्य से बिगड़कर देह को बिगाड़ते हैं और ये ही अच्छे प्रकार पथ्य के सेवन से शरीर को पुष्ट भी रखते हैं।

सर्वरोगों की परीक्षा

नाड़ीपरीक्षा १, मूत्रपरीक्षा २ और रोगों के निदान आदि से रोगों

की परीक्षा तीन प्रकार की है। रोगों के निदान से भी इन तीनों प्रकार के रोगों का ज्ञान होता है।

नाड़ीपरीक्षा

पुरुष रोगी होय तो उसके दाहिने हाथ की और स्त्री रोगिणी होय तो उसके बायें हाथ की नाड़ी देखे। परन्तु वैद्य को उचित है कि एकाग्र और प्रसन्नचित्त होकर विचारपूर्वक रोगी के हाथ को हिलने न दे। इसी प्रकार अँगूठे के समीप जड़ में धमनी नामक जीव की साक्षी नाड़ी है, वह जीव के सब दुःख-सुख को बताती है, उसको वैद्य अच्छे प्रकार अपनी तीन अंगुलियों से देखे। जैसे राग के जाननेवाले को वीणा की ताँत से सब राग विदित हो जाते हैं, इसी प्रकार नाड़ी भी शरीर के सब दुःख-सुख को बताती है। और जो तत्काल स्नान करके आया हो, तत्काल भोजन किया हो, शरीर में तेल लगाया हो, सोते से उठा हो, दौड़ता आया हो और भूखा-प्यासा, कामातुर, मल-मूत्र आदि से वेगयुक्त हो, उस पुरुष की नाड़ी ग्रन्थ के मत से नहीं देखनी चाहिए। यदि देखे तो वैद्य को रोगी के रोग का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है। जैसे वैद्य रोगी के हाथ की नाड़ी देखे तैसे ही रोगी के पैर की भी नाड़ी देखे। शास्त्र की परिपाटी और अपनी बुद्धि के प्रभाव से जैसे जौहरी अपने अभ्यास के बल से हीरा आदि रत्नों के सच्चे और झूठेपन को कह देता है तैसे ही सद्वैद्य भी शास्त्र के अभ्यास के बल से रोगी के रोग की साध्यता और असाध्यता और शरीर के दुःख-सुख की चेष्टा को जान लेता है।

नाड़ी की पहिचान

अँगूठे से लगी हुई तीन अंगुलियों में पहिली अंगुली (तर्जनी) के नीचे वायु की मुख्य नाड़ी चलती है। बीच की अंगुली के नीचे पित्त की और पिछली (अनामिका) अंगुली के नीचे कफ की नाड़ी चलती है। जैसे सर्प, जोंक आदि जीव टेढ़े चलते हैं तैसे ही वायु की नाड़ी भी बाँकी और तिरछी चलती है और जैसे काक, कुलंग, मेढक आदि फुदकते और शीघ्रतायुक्त चलते हैं तैसे ही पित्त की नाड़ी उतावली और फुदकती चलती है, और जैसे राजहंस, मोर, बत्तख, मुर्ग,

कबूतर आदि जीव मन्द मन्द चलते हैं तैसे ही कफ की नाड़ी भी मन्द मन्द चलती है। जो बारबार सर्प और मेंढक की सी गति चले उसको वात-पित्त की नाड़ी जानिए। जिस नाड़ी की सर्प और हंस की सो गति हो उसको वात-कफ की जानिए। मेंढक और हंस की सो गति हो उसको पित्त-कफ की जानिए। सर्प, मेंढक और हंस इन तीनों के समान जो नाड़ी चलती है, उसको सन्निपात की नाड़ी समझना चाहिए। जैसे खाती चीरे हुए काष्ठ को अत्यन्त वेग से काटता है तैसे ही जिस पुरुष की नाड़ी चले और चलने से रुक जाय और फिर चलने लगे उस नाड़ी को भी सन्निपात की समझना चाहिए। परन्तु जो मन्द मन्द टेढ़ी मेढ़ी व्याकुलतापूर्वक स्थिर अस्थिर हो वह धमनी नाड़ी जीव के सूक्ष्म हो जाने से मारनेवाली होती है, उस नाड़ी को सन्निपात की जानिए। जिस पुरुष के ज्वर का कोप होय उसकी नाड़ी बहुत गरम और जल्दी जल्दी चलती है, और जिस रोगी की नाड़ी एक ढंग से अपने स्थान पर चले वह रोगी नहीं मरता। कामातुर पुरुष को नाड़ी शीघ्रतायुक्त चलती है। क्रोधी और चिन्तावान् पुरुष की नाड़ी क्षीण चलती है और कई प्रकार से भयभीत हुए पुरुष की नाड़ी महा-क्षीण चलती है। मन्दाग्नि और क्षीणधातुवाले पुरुष की नाड़ी महा-मन्द चलती है। रुधिर के विकारवाले पुरुष की नाड़ी कुछ गरम और भारी चलती है और जिस पुरुष के पेट में आँव का विकार होवे तिस की नाड़ी अत्यन्त भारी चलती है और जिस पुरुष को भूख बहुत लगी होय उसकी नाड़ी चपल होती है। जो पुरुष आहार बहुत करता हो उसकी नाड़ी हल्की और उतावली चलती है। जिस पुरुष ने भोजन किया होय उसकी नाड़ी धीमी चलती है। जिस पुरुष के मल का उत्पात हुआ हो उसकी नाड़ी बहुत उतावली चलती है। सुखी मनुष्य की भी नाड़ी धीमी और बलयुक्त चलती है। नाड़ी की परीक्षा अनेक प्रकार की है, बुद्धिमान सद्वैद्य अपनी बुद्धि से नाड़ी के द्वारा शरीर का सब दुःख-सुख विचार ले। जैसे योगी को योग के अभ्यास द्वारा ब्रह्म का साक्षत्ज्ञान हो जाता है तैसे ही सद्वैद्य को नाड़ी के अभ्यास से शरीर के सब रोग और सुख-दुःख का ज्ञान हो जाता है।

मूत्रपरीक्षा

वैद्य को उचित है कि चार घड़ी के तड़के रोगी को उठाकर काँच के सफेद बासन में अथवा कांसी के पात्र में प्रथम धार छोड़ कर मुतावे। फिर उस बासन को कपड़े से ढककर रक्खे। सूर्योदय होने के पीछे वैद्य उसकी परीक्षा करे। यदि रोगी का मूत्र पानी के सदृश हो, बहुत हो, कुछ नीला भी होय तो वायु के विकार का मूत्र जानिए। और जो मूत्र लाल कुसुम के सदृश होकर गर्म अथवा पीला टेसू के फूल के रंग के सदृश और थोड़ा उतरे तो गर्मी के रोगी का मूत्र जानिए। जिस रोगी का ठण्डा, सफेद और चिकना मूत्र उतरे उसे कफ का रोगी जानिए। चार घड़ी के तड़के का रोगी का मूत्र चार घड़ी तक धूप में रखने के पीछे वैद्य उसमें तेल की बूँद डाले। जो तेल की बूँद मूत्र के ऊपर फैल जाय तो उस रोगी को साध्य जानिए और वह अच्छा हो जाएगा, और जो तेल की बूँद मूत्र के ऊपर न फैले और स्थिर होकर रह जाय तो उस रोगी को कष्टसाध्य जानिए। और यदि वह बूँद मूत्र में गेरने से चक्र के सदृश घूमती हुई डूब जाय तो वह रोगी अवश्य मरे। और जिस रोगी के मूत्र में तेल की बूँद पड़ते ही छिद्र हो जाय अथवा खड्ग व दण्ड व धनुष के सदृश तेल की बूँद का आकार हो जाय तो वह भी रोगी अवश्य ही मरे। यदि रोगी के मूत्र के ऊपर तेल की बूँद चौखूँटी आकार की हो जाय अथवा हंस के आकार की होय तथा कमल, हस्ती, छत्र, चमर, तोरण के आकार की हो जाय तो वह रोगी नीरोग होय। जिसका मूत्र सरसों के तेल के सदृश होय उसको वातपित्त का रोग जानिए और जिसका काला और बुद्बुदे लिए हुए होय तिसको सन्निपात का रोग जानिए। और मूतते हुए जिस रोगी की लाल धार उतरे उसको महारोगी जानना और जिसकी धार काली निकले वह रोगी मर जाय और जिसके मूत्र में बकरी के मूत्र की सी बास आवे उसको अजीर्ण का अथवा पथरी का रोग जानिए और जिसका मूत्र गर्म और लाल अथवा केसर सा पीला होय तिसको ज्वर का रोग जानिए और जिसका कुएँ के पानी के सदृश मूत्र उतरे उसके लिङ्गरोग जानिए।

रोगों का वृत्तान्त और प्रसङ्ग

रोगों की परीक्षा

देखने, स्पर्श करने और पूछने से तथा स्वप्न, दूत, शकुन, कालज्ञान, औषध, देश, काल अवस्था तथा अग्निबल के विचार से एवं साध्य-असाध्य आदि प्रकारों से रोगी की परीक्षा करनी उचित है, सो क्रमपूर्वक लिखते हैं पीलिया आदि कई एक रोग तो रोगी को देखने से ही वैद्य को विदित होते हैं और ज्वर आदि कई रोग रोगी के स्पर्श किये बिना नहीं जाने जाते। उदरशूल, मस्तकपीड़ा, बवासीर, उपदेश अर्थात् गरमी, सूजाक, हौलदिल और भूतादिक का लगना, प्रमेह आदि कई एक रोग रोगी के बिना कहे वैद्य यथार्थ नहीं जान सकता।

स्वप्नपरीक्षा

रोगी को ऐसे स्वप्न देखने अच्छे नहीं होते जैसे कि रोगी स्वप्न में नंगा, मुण्डित, लाल और काला वस्त्र पहिरे हुए मनुष्य को देखे अथवा नकटा, बूचा और काले हथियार तथा फाँसी लिये मारते हुए पुरुष को देखे तो वह रोगी असाध्य होता है। भैंसा, ऊँट, गधा इन पर चढ़ा हुआ दक्षिण दिशा को जाता हुआ स्वप्न में रोगी मनुष्य देखे तो वह अच्छा नहीं होय और ऊँचे से नीचे गिरे, जल में डूब जाय और अग्नि भभकती जाय और सिंह आदि कोई हिंसक जीव उसको खाता होय, दीपक को बुझता देखे, तेल, मदिरा पीता देखे और पकवान खाय और कुएँ में गिरे ऐसा स्वप्न रोगी को होय तो वह रोगी असाध्य होता है और यदि ऐसा स्वप्न देखे भी तो स्वप्न देखनेवाला किसी से कहे नहीं, प्रातःकाल उठते ही भस्मादिक से स्नान करे और उस स्वप्न के सदृश हवन, दान, पाठ आदि करे तो स्वप्न-दोष दूर होय। रोगी को स्वप्न में देवता, राजा, याचक, मित्र, ब्राह्मण, गौ, अग्नि, तीर्थ दीखें तो वह रोगी जल्दी अच्छा होय और स्वप्न में कीचड़ को उलाँघ जाय और शत्रु को जीते एवं महल, रथ, पर्वत आदि के ऊपर चढ़े तो वह रोगी शीघ्र अच्छा हो और स्वप्न में श्वेतवस्त्र धारे तथा मांस, मीन व फल खाय तो वह रोगी जल्दी अच्छा होय और स्वप्न में अगम्या से गमन

और शरीर में विष्ठा का लेप करे, रोवे और अपनी मृत्यु देखे तथा कच्चा मांस खाय तो वह रोगी शीघ्र अच्छा होय एवं जोंक, सर्प, भौंरा, मक्खी जिसको स्वप्न में काटे वह रोगी भी शीघ्र अच्छा होय और जो यह स्वप्न अच्छे भले नीरोग मनुष्य को होयँ तो अशुभ जानिए।

दूतपरीक्षा

वैद्य के बुलाने के लिये जिस दूत को भेजे वह काना, कूबड़ा, नकटा आदि न हो क्योंकि ऐसे को भेजने से वह रोगी जल्दी अच्छा नहीं होता। और जो निर्मल वस्त्र पहिरे और सुखपूर्वक घोड़े, रथ आदि पर चढ़कर वैद्य को भेंट के लिए उत्तम वर्ण का अच्छा चेष्टावान् चतुर पुरुष जिसका बायाँ स्वर चलता होय वैद्य के पास अकेला जाय तो वह रोगी शीघ्र अच्छा होय।

शकुनपरीक्षा

जो वैद्य रोगी की चिकित्सा करने को जाता होय उसको उस समय सम्मुख शीतल शकुन मिलें तो अच्छा और जो अग्नि आदि ले गर्म शकुन मिलें तो रोगी अच्छा न होय, और जो दूत वैद्य को बुलाने के लिए जाता होय उसको जल आदि शीतल शकुन सम्मुख मिलें तो रोगी अच्छा नहीं होय और अग्नि आदि गर्म वस्तु मिलें तो रोगी जल्दी अच्छा होय।

कालज्ञान

जिस रोगी को रात्रि में गर्मी और दिन में शीत लगे और कण्ठ में कफ बोले वह रोगी निश्चय मरे और जिस रोगी के नाक का अग्र भाग शीतल होय और उसके हाथ, पैर, हृदय भी शीतल होयँ और सिर में शूल होय वह रोगी भी निश्चय मरे और जिस रोगी की कान्ति, तेज, लज्जा जाती रहे और स्वभाव में अधिक क्रोध हो जाय वह रोगी छः महीने में मरे और जिस रोगी का अंग काँपता होय और गति भंग होय और शरीर का रंग और का और हो जाय और सुगन्ध और दुर्गन्ध का ज्ञान न रहे वह रोगी निश्चय मरे तथा वृक्ष और वृक्ष की डालियों में रोगी को अग्नि सी दीखे वह छः महीने में मरे और जो

रोगी काम करके हीन होय और पसीना नहीं आवे वह तीन महीने में मरे और जो रोगी कान के छिद्रों को बन्द करे पीछे कान का घूंघूं शब्द न सुने वह रोगी निश्चय मरे एवं जिस रोगी की आँख, देह और मुख का वर्ण और का और हो जाय वह भी निश्चय मरे तथा जिस रोगी को अपनी जीभ और नासिका का अग्रभाग और भृकुटी का मध्य भाग नहीं दीखे वह निश्चय मरे और जिस रोगी की नाक का अग्रभाग टेढ़ा हो जाय और नेत्र लाल हो जायँ वह रोगी भी अवश्य मरे तथा जिस रोगी की इन्द्रियाँ अपने-अपने विषय को ग्रहण नहीं करें वह भी निस्संदेह मरे और जिस रोगी की बोलने से वाणी थक जाय और सामर्थ्य घट जाय वह भी अवश्य मर जाय और जिस रोगी को काँच तथा जल में अपनी छाया नहीं दीखे वह भी अवश्य मरे और जिसका मुख लाल कमल के सदृश हो जाय और जीभ काली हो जाय और शरीर में पीड़ा उठ आवे वह रोगी अवश्य मरे और जिस रोगी का हृदय, नाभि, कन्धा काँपने लगे वह निश्चय मरे और जिस पुरुष के अश्लेषा, शतभिषा, आर्द्रा, स्वाति, मूल, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, पूर्वाभाद्रपद, भरणी इन नक्षत्रों में रवि, शनि, मंगलवार और चौथ, छठ, द्वादशी तिथियों में रोग उत्पन्न होय तो वह रोगी निश्चय मरे और जिस रोगी को दूसरे की आँख की पुतली में अपना स्वरूप नहीं दीखे वह निश्चय मरे और जिस रोगी का सूर्योदय में दाहिना और सायंकाल को बायाँ स्वर चले वह नहीं मरे ।

औषधविचार

वैद्य को उचित है कि औषध का गुणागुण विचार रोगी के रोग के प्रमाण सदृश औषध दे । जो रोग थोड़ा होय तो अधिक औषध न दे और जो अधिक रोग होय तो थोड़ी न दे तथा जो कड़वी कसैली औषध रोगी न खाय और उससे द्वेष करे ऐसा रोगी जीवे नहीं ।

देशविचार

देश तीन प्रकार के हैं । अनूप १ साधारण २ जांगल ३ जहाँ बहुत सा जल सदैव बहता होय अथवा अधिक जलाशय होयँ और जिस देश

में कफ की अधिकता होय (जैसे पूर्व देश) उसको तथा इसी प्रकार के लक्षण जहाँ कहीं और देश में होयँ उसको भी अनूप कहिए और जिस देश में वात, पित्त, कफ बराबर होयँ उसको साधारण और जिस देश में वायु अधिक होय उसको जांगल कहिए। और जिस देश में जो मनुष्य उत्पन्न होय उसकी उसी देश के अनुसार प्रकृति होती है।

कालविचार

काल तीन प्रकार का होता है। शीतकाल १, उष्णकाल २, वर्षाकाल ३। अब इनका विचार लिखते हैं। शीतकाल में शीत थोड़ा पड़े या बहुत पड़े, तो रोग उत्पन्न हो और शीतकाल में गर्मी का पड़ना भी विपरीत है, यह भी अच्छा नहीं। इसमें भी रोग होता है। इसी प्रकार उष्णकाल में उष्णता थोड़ी अथवा अधिक पड़े अथवा शीत पड़े तो रोग की उत्पत्ति होय। ऐसे ही वर्षाकाल में वर्षा थोड़ी अथवा बहुत हो या नहीं हो तो मनुष्यों के रोग पैदा हों।

अवस्थाविचार

अवस्था तो कई प्रकार की हैं परन्तु उनमें तीन मुख्य हैं। एक बाल, दूसरी तरुण, तीसरी वृद्ध। उनमें उत्तम, मध्यम, अधम मनुष्य होते हैं। उनके जो रोग उत्पन्न होयँ उनके ही शरीर और अवस्था के अनुरूप विचार कर औषध करे।

अर्थविचार

अर्थ पाँच प्रकार के हैं। शब्द १, स्पर्श २, रूप ३, रस ४, गन्ध ५। शब्द का स्थान कान, स्पर्श का स्थान त्वचा, रूप का स्थान नेत्र, रस का स्थान जीभ, गन्ध का स्थान नासिका में होता है। सो शब्द की सामर्थ्य घटने से थोड़ा सुने या अधिक सुने अथवा मिथ्या सुने वा कुछ का कुछ सुने तथा स्पर्श की सामर्थ्य क्षीण होने पर थोड़ा स्पर्श करे अथवा मिथ्या स्पर्श करे वा कुछ का कुछ स्पर्श करे। देखने की सामर्थ्य न्यून होने पर थोड़ा देखे अथवा मिथ्या देखे वा कुछ का कुछ देखे। छहों रस (मधुर, लवण, अम्ल, कटु, कषाय, तिक्त) के खाने की सामर्थ्य थकने से थोड़ा खाय अथवा बहुत खाय या मिथ्या खाय वा कुछ का कुछ खाय और सूँघने की सामर्थ्य घटने से थोड़ा

सूँघे अथवा बहुत सूँघे या मिथ्या सूँघे वा कुछ का कुछ सूँघे तो निश्चय रोग की उत्पत्ति होय और इन पाँचों अर्थों के भले प्रकार बर्तने से मनुष्य सदैव नीरोग रहता है।

कर्मविचार

कर्म तीन प्रकार के हैं। कायिक १, मानसिक २, वाचिक ३। काया में रहे सो कायिक और मन में रहे सो मानसिक तथा वचन में रहे सो वाचिक। काया की कर्म-सामर्थ्य थकने से थोड़ा कर्म करे अथवा बहुत कर्म करे या कुछ का कुछ कर्म करे और मन की सामर्थ्य घटने से थोड़ी इच्छा होय वा बहुत होय अथवा कुछ की कुछ होय और बोलने की सामर्थ्य घटने से थोड़ा बोले अथवा मिथ्या बोले वा कुछ का कुछ बोले तो मनुष्य के रोग की उत्पत्ति होय और इन तीनों कर्मों को मनुष्य सदैव अच्छे प्रकार से एक सा बर्तता रहे तो वह मनुष्य सदैव ही नीरोग रहे।

अग्निबलविचार

अग्नि पाँच प्रकार की है। मन्दाग्नि १, तीक्ष्णाग्नि २, विषमाग्नि ३, समाग्नि ४, भस्माग्नि ५, जिसकी कफप्रकृति होती है उसके मन्दाग्नि होती है वह कफ के रोग उत्पन्न करती है। इसलिए अच्छी नहीं १ जिसकी पित्तप्रकृति होय उसके तीक्ष्णाग्नि होती है सो अच्छी है, खाया हुआ सब पचा देती है परन्तु गर्मी के रोग को उत्पन्न करती है २ जिसकी वातप्रकृति होय उसके विषमाग्नि होती है वह वायु के रोगों को उत्पन्न करती है, कभी अन्न पचाती है और कभी अन्न नहीं पचाती है ३ चौथी समाग्नि है वह सम्पूर्ण अग्नियों से श्रेष्ठ है, अच्छे प्रकार मनुष्य भोजन करे उसको पचा देती है और कोई रोग को नहीं उत्पन्न करती ४ पंचम भस्माग्नि है जो भस्मक रोग को उपजाती है। कभी औषध के संयोग से शरीर में कफ का घटना और पित्त का अग्निरूप बढ़ना ही वायु के संयोग से प्रेरित महातीव्र अग्नि उपजाता है तब वह भस्मक अग्नि हो जाती है। भस्मक अग्निवाला जब समय पर भोजन न पावे तब प्यास, पसीना, दाह, मूर्च्छा आदि उत्पन्न होकर उसे मार डालते हैं।

रोगी की असाध्यपरीक्षा

जिस रोगी को रात्रि में निद्रा नहीं आवे, कण्ठ में कफ बोले, शरीर में दाह हो, नाड़ी मन्द हो, बोलने में जीभ थक जाय, सब इन्द्रियाँ अपने २ धर्मों को छोड़ दें वह रोगी अवश्य मरे और जिस रोगी की मन्दाग्नि होकर प्रकृति बिगड़ जाय उसको भी असाध्य जानिये। जिसकी आँखें लाल हो जायँ, श्वास उठ आवे, हृदय में शूल होय, तन्द्रा, हिचकी, तृषा बहुत होय, बहुत सोवे, अत्यन्त दाह होय, पसीना अधिक और चिकना आवे वह रोगी निश्चय मरे।

रोगी की साध्यपरीक्षा

जिस रोगी की प्रकृति ठिकाने रहे, अग्नि तीव्र होय और किसी भाँति के रोग का उपद्रव न होय, एक ही दोष का कोई रोग होय तथा उसकी चिकित्सा के चार उपाय मिलें; एक तो अच्छा सद्वैद्य, दूसरे रोग को दूर करने वाली औषध और तीसरे चतुर चाकर मिले, चौथे रोगी द्रव्यवान्, जितेन्द्रिय तथा रोग के घटने-बढ़ने का जानने वाला हो तो उसको साध्य जानिए।

रोगों के भेद

जो रोग काया में रहे उसका नाम व्याधि है। वह चौदह प्रकार का है। सहज रोग १ गर्भज रोग २ जातजात रोग ३ पीड़ाजनित ४ कालजनित ५ प्रभावजनित ६ स्वभावजनित ७ देशजनित ८ आगन्तुक रोग ९ कायिक रोग १० आन्तर रोग ११ कर्मज रोग १२ दोषज रोग १३ कर्मदोषज रोग १४।

रोगों के पृथक् पृथक् लक्षण

माता, पिता के जो रोग होता है, वह उसकी सन्तान के भी हो जाता है–जैसे बवासीर, कोढ़ आदि। ये सहज रोग हैं १ गर्भ में ही कुबड़ा, पँगुला, छः अँगुली, रावण, खंजा आदि रोग होयँ उनको गर्भज कहते हैं २ गर्भ में माता के मिथ्या आहार और विहार करने से बालक के रतुआ और बुरा शरीर गूँगापन आदि जो रोग होयँ उनको जात-जात कहते हैं ३ शस्त्रादिक के प्रहार से उपजे अस्थिभंग, पीड़ा आदि रोगों को पीड़ाजनित समझना चाहिए ४ शीतकाल में अधिक शीत

और उष्णकाल में अधिक धूप एवं वर्षा में अधिक भोजने आदि से उत्पन्न रोगों को काजल कहते हैं ५ देवता, गुरु और बड़ों के शाप से तथा ग्रहों की प्रतिकूलता से उत्पन्न रोगों को प्रभावज कहते हैं ६ क्षुधा, तृष्णा, जरा आदि से उत्पन्न रोगों को स्वभावज कहते हैं ७ भूतादिक और काम, क्रोध, राग, द्वेष, लोभ मोहादिक के शरीर में प्रवेश करने से उत्पन्न हुए रोगों को आगन्तुक कहते हैं ८ ज्वरादि विष पर्यन्त मुख्य रोग कायिक कहाते हैं ९ हौलदिली आदि अर्धविक्षिप्त रोगों को आन्तर कहते हैं १० जिस देश में काले ही काले और लाल ही लाल एवं भूरे ही भूरे मनुष्य उपजें उसको देशज कहते हैं ११ पूर्वजन्म में अथवा इस जन्म से ब्रह्महत्यादिक पाप से उपजे रोगों को कर्मज कहते हैं १२ वात, पित्त, कफ से उपजे रोग दोषज कहलाते हैं १३ ब्रह्महत्यादिक पापों और वात, पित्त, कफादिक दोषों के मिलने से कर्मदोषज रोग उत्पन्न होते हैं १४ अब यही सम्पूर्ण रोग दो प्रकार के हैं–एक साध्य, दूसरे असाध्य। वे साध्य भी दो प्रकार के हैं–एक कष्टसाध्य जो बहुत यत्न से जैसे तैसे अच्छा होता है, और दूसरा थोड़ा ही यत्न करने से अच्छा हो जाता है, वह सुखसाध्य है। असाध्य रोग भी दो प्रकार के हैं–एक याप्य, जैसे गम्भीरादिक, बवासीर, मिरगी, अर्धांग, क्षयी श्वासादि और जिसमें अधिक रोग मिले हों वह पुरुष औषध खाया करे, पथ्य से चले। सद्वैद्य के कहने के अनुसार बर्ते जब तक इन रोगों का अन्त न हो जाय। इन रोगों को याप्य कहते हैं। और एक ऐसा रोग उत्पन्न हो जिसकी चिकित्सा ही न हो वह मार ही डालता है वह महाअसाध्य और अप्रतीकार है। रोगों के भेद तो अनन्त हैं। जिनका पार नहीं है। उन रोगों का ज्ञान तो ईश्वर ही को है, परन्तु सद्वैद्य भी शास्त्रबल और अपनी बुद्धिमत्ता से इन सब रोगों को १४ वेगों के अन्तर्गत ही जान लें।

प्रकारान्तर से संपूर्ण रोगों के उत्पन्न होने की और ही विधि

जो मनुष्य सब बातों से सावधान है और १४ प्रकार के वेगों में से किसी वेग को वृथा प्रकट नहीं करता है और स्वतः सिद्ध प्रकट

हुए को रोकता नहीं है और उसका कार्य करता है उस मनुष्य के रोग नहीं होते। और जो उन चौदह को वृथा प्रकट करता है और उनके प्रकट होने से उनको धारण करता है तो रोग अवश्य होते हैं।

१४ वेग

अधोवायु १ दिशाबाधा २ मूत्रबाधा ३ डकार ४ छींक ५ तृषा ६ क्षुधा ७ नींद ८ कास ९ खेद का श्वास १० जँभाई ११ आँसू १२ वमन १३ कामदेव ये १४ वेग हैं। इन वेगों को वृथा रोके और इनसे उत्पन्न हुए वेग को धारण करे तो निश्चय मनुष्य के रोग उत्पन्न होयँ वे क्रम से कहे जाते हैं। जो पुरुष अधोवायु को रोके उसके गोला, उदर में अफरा और पीड़ा ये रोग होते हैं तथा उसके अधोवायु अच्छे प्रकार से नहीं निकलती है और मूत्रकृच्छ्र, बद्धकोष्ठ, नेत्ररोग, मन्दाग्नि और हृदयपीड़ादि रोग होते हैं।

मल रोकने के रोग

जो पुरुष मल की बाधा को रोके उसके हाथ पैर में हड़फूटन, पीनस, मस्तकपीड़ा और वायु की ऊर्ध्वगति और अधोवायु की प्रवृत्ति अच्छे प्रकार से नहीं होती तथा हृदयपीड़ा, उदावर्त, वायुगोला, उदररोग, उदरपीड़ा, मूत्रकृच्छ्र, बद्धकोष्ठ, नेत्ररोग और मन्दाग्नि ये रोग होते हैं।

मूत्र रोकने के रोग

जो मनुष्य मूत्र की बाधा को रोके उसके ये रोग होते हैं। अंग में हड़फूटन, पथरी, लिङ्गेन्द्रिय की सन्धि में पीड़ा तथा वायुगोला आदि। जो मल के रोकने से रोग कहे हैं वे मूत्र के भी रोकने से उत्पन्न होते हैं।

डकार रोकने के रोग

जो मनुष्य आती हुई डकार को रोकते हैं उनके इतने रोग होते हैं। अरुचि, शरीर काँपे, हृदय रुके, अफरा, खाँसी और हिचकी इत्यादि।

छींक रोकने के रोग

जो मनुष्य छींक के वेग को रोके उसके ये रोग उत्पन्न होते हैं। मस्तकपीड़ा, शरीर की सम्पूर्ण इन्द्रियों में शिथिलता तथा गर्दन का न मुड़ना और मुख का टेढ़ा हो जाना आदि।

तृषा रोकने के रोग

तृषा रोकनेवाले के ये रोग होते हैं। मुख सूखे, सब अङ्गों में हड़-फूटन, बधिरता, मोह और भ्रम हो तथा हृदय दूखे।

क्षुधा रोकने के रोग

जो पुरुष भूख के वेग को रोके उसके सब अंग टूटने लगें, अरुचि होय और सर्व वस्तुओं के ऊपर ग्लानि, शरीरकृश, शूल भ्रम तथा बिना ही श्रम किये श्रम और सब इन्द्रियाँ शिथिल एवं शरीर का वर्ण और का और हो जाय।

नींद रोकने के रोग

जो मनुष्य आती हुई नींद को रोके उसके ये रोग उत्पन्न हों—मोह, मस्तक और नेत्र भारी, आलस्य, उबासी, अङ्ग पीड़ा इत्यादि।

खाँसी रोकने के रोग

जो मनुष्य खाँसी को रोकता है उसके खाँसी, श्वास, अरुचि हृदयरोग और हिचकी आदि रोगों की वृद्धि होती है।

श्रम के श्वास रोकने के रोग

जो पुरुष श्रम के श्वासों को रोके उसके इतने रोग होते हैं। वायुगोला, हृदयरोग, मोह और प्रमेह।

उबासी रोकने के रोग

जो मनुष्य आती हुई उबासी को रोकता है उसके मस्तकपीड़ा, इन्द्रियों की दुर्बलता और गर्दन व मुख टेढ़ा हो जाता है।

आँसू रोकने के रोग

जो मनुष्य आँसू रोकता है उसके पीनस, नेत्ररोग, मस्तक, हृदय और गर्दन में पीड़ा तथा अरुचि, भ्रम, वायुगोला होता है।

वमन रोकने के रोग

जो मनुष्य आते हुए वमन के वेग को रोकता है उसके रतुआ, पित्ती, कोढ़, नेत्ररोग, खाज़, पाण्डुरोग, ज्वर, खाँसी, श्वास, हृदयशूल, मुखकील अथवा मुखछाया ये रोग होते हैं।

कामदेव रोकने के रोग

जो मनुष्य कामदेव के वेग को रोकता है उसके सुजाक, प्रमेह, लिङ्गेन्द्रिय में पीड़ा और लिङ्गशोथ, चिन्ता तथा भोजन में अरुचि इतने रोग होते हैं।

इति प्रथमस्तरङ्गः ॥ १ ॥

कायिक रोगों के राजा ज्वर का वर्णन

ज्वर की उत्पत्ति

दक्ष प्रजापति के यज्ञ में सती के तनुत्याग करने से त्रिलोकीनाथ शिवजी ने कोप कर सहायक सहित दक्ष के मारने और यज्ञ विध्वंस करने के लिए अपने तीसरे नेत्र से वीरभद्र नाम का एक गण उत्पन्न किया। उस गण ने शिवजी की आज्ञा पाकर दक्ष प्रजापति को मारा और यज्ञ विध्वंस कर यज्ञ की सब सामग्री खाई तब शिवजी ने वीरभद्र का नाम ज्वर रक्खा। वह ज्वर मनुष्य के मिथ्याहार-विहार से नाभि और हृदय के मध्य में स्थित आमाशय में रहनेवाले वात, पित्त, कफ को रोगी के शरीर में दुष्ट करता है और आमाशय के स्थानवाले आहार से उपजे हुए रस को भी बिगाड़ता है तथा आमाशय में स्थित अग्नि को उदर में से बाहर निकालकर रोगी के सम्पूर्ण शरीर को अग्नि के समान गर्म करता है; वही ज्वररूप होकर शरीर के पराक्रम को नष्ट कर देता है। वह ज्वर आठ प्रकार का है। वातज्वर १ पित्तज्वर २ कफज्वर ३ वातपित्तज्वर ४ वातकफज्वर ५ कफपित्तज्वर ६ सन्निपात-ज्वर ७ आगन्तुकज्वर ८। इनके पृथक्-पृथक् लक्षण इस प्रकार है।

ज्वरमात्र का सामान्य लक्षण

जिसके शरीर में एक साथ ही ये लक्षण होयँ उसके ज्वर कहना चाहिए—शरीर गर्म हो आवे, पसीना न आवे, क्षुधा जाती रहे, सब अंग जकड़े हों, मस्तक में शूल होय, हाथ-पैरों में हड़फूटन हो और कहीं मन न लगे इत्यादि।

ज्वर का पूर्वरूप

हाथ-पैरों में हड़फूटन, मस्तक भारी होय और जँभाई आवे, बिना शूल के शरीर में खेद हो, ऐसे लक्षण जिस मनुष्य के हों तो जानना कि ज्वर आवेगा—ये लक्षण वैद्य को जानने चाहिए।

ज्वर के विशेष लक्षण

वातज्वर के लक्षण—शरीर काँपे, ज्वर का विषम वेग होय, कण्ठ तथा ओष्ठ सूखें, नींद और छींक न आवे, शरीर रूखा होय, माथा भारी, शरीर में पीड़ा हो, मुख से छओं रसों का स्वादु जाता रहे, दिशा

साफ न हो, पेट में शूल और अफरा होय तथा उबासी बहुत सी आवें तो वातज्वर जानिए।

सामान्य ज्वरमात्र का यत्न

गर्म पानी पिलावे, मल और बल के सदृश हलका लंघन तथा लघु पथ्य करावे और निर्वातस्थान में रक्खे, अच्छे महीन वस्त्र पर सुलावे तो ज्वर जाय। तीन दिन तक ज्वर में कड़वो, कषैली, जुलाब आदि की कोई औषधि न दे। यही यत्न करे तदनन्तर २ माशे सोंठि और १० माशे धनियाँ का क्वाथ कर पिलावे तो ज्वर जाता रहे और भूख भी लगे।

वातज्वर के यत्न

वातज्वरवाले को और तीक्ष्ण जठराग्निवाले को तथा गर्भिणी स्त्री, दुर्बल मनुष्य, बालक, वृद्ध और भयभीत इतने मनुष्यों को लंघन नहीं करावे, लघु पथ्य दे। वातज्वरवाले को चिरायता, नागरमोथा, नेत्रबाला दोनों कटैया, गुरच, सोंठि इन सब औषधों को छदाम छदाम भर (तीन तीन माशा) लेके जवकुटकर पाँच दिन तक क्वाथ दे तो वातज्वर जाय।

वातज्वर दूर करने का दूसरा क्वाथ

सोंठि, नींब को छाल, धमासा, पाढ़, कचूर, अड़ूसा, अरंड की जड़, पुष्करमूल इन सब औषधों को जवकुटकर छदाम छदाम भर लेकर क्वाथ दे तो वातज्वर दूर होय। हिंगुलेश्वर रस से वातज्वर तत्काल दूर होता है। शिगरफ, पीपरि, शोधा हुआ सिंगीमोहरा इन तीनों को बराबर ले पानी में महीन पीस आध आध रत्ती की गोली बनाकर प्रति-दिन एक एक खाय तो पाँच गोलियों में वातज्वर निश्चय जाय। मूँग, मसूर, कुरथी, मोठ इन सबकी दाल का पानी पथ्य में दे। शतावरि, गुरच ये दोनों छदाम छदाम (तीन तीन माशा) भर ले क्वाथकर उसमें छदामभर पुराना गुड़ डालकर पाँच दिन तक दे तो वातज्वर जाय तथा मुनक्का, किशमिश, पीपरि, पित्तपापड़ा, सौंफ ये सब छदाम छदाम भर लेकर क्वाथ करके दे तो वातज्वर जाय।

पित्तज्वर के लक्षण

नेत्रों में दाह हो, मुख कड़ुवा रहे, तृषा अधिक हो, चक्कर आवे, बहुत बके, शरीर गर्म रहे, ज्वर का वेग बहुत हो, मल पतला हो और

वमन होय, नींद नहीं आवे, मुख सूखे और पक जाय, पसीना आवे नेत्र तथा मल-मूत्र पीले हों ये लक्षण जिस पुरुष के होयँ उसके पित्त-ज्वर जानिए।

पित्तज्वर का यत्न

नागरमोथा, धमासा, पित्तपापड़ा, नेत्रबाला, चिरायता, नींब की छाल इन सब औषधों को छदाम-छदाम भर ले, जवकुटकर क्वाथ दे तो पित्तज्वर दूर होय। अथवा गर्म पानी के साथ खैरसार का चूर्ण तीन माशा, कुटकी दो माशे तथा मिश्री दो टंक* इनका चूर्ण दे तो पित्तज्वर जाय। अथवा १ टंक चंदन, १ टंक खस इनको महीन पीस चार पैसे भर फालसे के शर्बत में दो पैसे भर मिश्री डालके पिये तो पित्तज्वर दूर होय। यह यत्न त्रिसती नाम ग्रन्थ में लिखा है। अथवा चावल की खील के पानी में मिश्री मिलाकर पिये तो पित्तज्वर दूर होय। अथवा कुटकी, अमलतास की गिरी, नागरमोथा, हड़ की छाल, पित्तपापड़ा इन सबको छदाम छदाम भर ले कूटकर काढ़ा दे तो यह पित्तज्वर, तृषा, दाह, मूर्च्छा, प्रलाप, घुमनी इन सब रोगों को दूर करता है, यह वैद्यविनोद में लिखा है। अथवा गेहूँ के आटे को खूब भिगोकर उसमें मिश्री डालकर पतला हरीरा बनाकर दे तो पित्तज्वर दूर होय। तथा मीठे अनार का शर्बत दे तो पित्तज्वर दूर होय। अथवा महासुन्दरी सर्वगुणसम्पन्ना १६ वर्ष की स्त्री का आलिंगन करे तो दाह की व्यथा दूर हो। एवं तोता, मैना और बालक की वाणी तथा मनोहर बाग, फूलों का हार, कमल का फूल, मनोहर शृंगार की कथा, कपूर का लगाना, सुन्दर स्त्रियों का संग, फुहारा आदि सब दाह की व्यथा को दूर करते हैं। अथवा फालसे के शर्बत में सैंधव नोन डाल-कर पिये तो पित्तज्वर जाय। अथवा मूँग की दाल के पानी में मिश्री मिलाकर पिये तो पित्तज्वर दूर होय। अथवा मुनक्का, किशमिश का शर्बत मिश्री मिलाकर पिये तो पित्तज्वर जाय। अथवा पित्तपापड़ा, नागरमोथा, चिरायता इन सबको तीन २ माशा भर क्वाथकर ३ दिन पिये तो पित्तज्वर जाय। ये सब ज्वर के यत्न तिमिरभास्कर में लिखे हैं।

* चार माशे का एक टंक होता है, इसको शाण और धरण भी कहते हैं।

अथवा रक्तचन्दन, पद्माक, धनियाँ, गुरच, नींब की छाल इन सब औषधों को तीन २ माशा भर ले जवकुटकर ५ दिन काढ़ा पिये तो पित्तज्वर, दाह, तृषा, वमनादि सब दूर होयँ, यह यत्न लोलिम्बराज में लिखा है। और यही पित्तज्वर बहुत दाहकारक हो तो कमल के फूलों की शय्या पर अथवा केले के पत्तों पर सुलावें तो दाहज्वर दूर होय। अथवा अच्छे सघन जंगल में खस की टट्टियों में खस के ही पंखे को वायु करे तो दाहज्वर दूर होय, यह यत्न लोलिम्बराज में लिखा है। अथवा गुलाब के फूल की पंखड़ी को तिल में पाँच या सात पुट दे और उसका तेल चमेली के सदृश निकाले उसको हकीम गुलाबरोगन कहते हैं और वैद्य गुलाब का तेल बोलते हैं, उसके मर्दन से दाहज्वर दूर होता है। अथवा १०० या १००० बार का धोया हुआ घी देह में मले तो दाहज्वर की व्यथा तत्काल दूर होय। अथवा नींब के कोमल पत्तों को पीसकर उसमें पानी डाल बिलोयकर झाग उठाय दाहज्वरवाले के शरीर में लेप करे अथवा उन झागों में बहेड़े की मींगी मिलाकर लेप करे तो दाह की व्यथा तत्काल दूर होय। यह यत्न वैद्यजीवन और वैद्यविनोद में लिखे हैं।

कफज्वर के लक्षण और यत्न

अन्न में अरुचि, शरीर भारी और रोमांच होय और मूत्र तथा नख सफेद हों, नींद बहुत आवे, शरीर ठंढा और मुख मीठा होय, ज्वर का वेग कम हो, आलस्य, श्वास, खाँसी, पीनस आदि लक्षण जिसमें हों उसको कफज्वर जानिए।

कफज्वर के यत्न

नींब की छाल, सोंठि, गुरच, कटैया, पुहकरमूल, कुटकी, कचूर, अड़ूसा, कायफल, पीपरि, शतावरि इन सबको तीन २ माशा भर ले जवकुटकर ७ दिन क्वाथ दे तो कफज्वर दूर होय। अथवा कायफल, पीपरि, काकड़ासिंगी, पुहकरमूल इन सब औषधों को कपरछान करके छदामभर शहद में चटावे तो कफज्वर, श्वास, कास आदि दूर होयँ। यह यत्न वैद्यविनोद में कहा है। कफज्वरवाले को गर्म (सेर भर का तीन पाव) पानी करके थोड़ा थोड़ा पिलावे और १२ लंघन करावे। पीछे मूँग, मोठ अथवा कुरथी के पानी का पथ्य करावे तथा दिन में सोने न दे और बिजौरा के

भीतर के जीरे में सैंधव नोन, अद्रक मिलाके पथ्य में दे। अथवा यह पाचन वस्तु दे—सोंठि, मिरच, पीपरि, चित्रक, पीपलामूल, दोनों जीरे, लवंग, इलायची, भूनी हुई हींग, अजवायन, अजमोद, इन सबको समान ले चूर्ण करके छदाम भर गर्म जल से दे तो पाचन होय, कफज्वर जाय, भूख लगे। अथवा कटेरी, गुरच, सोंठि, पुहकरमूल, अड़ूसा, इन सबको तीन २ माशा भर ले जवकुटकर ७ दिन तक क्वाथ दे तो कफ-ज्वर जाय। यह क्षुद्रादि क्वाथ है। अथवा कटेरी, पीपरि, काकड़ासिंगी, गुरच, अड़ूसा इन सब औषधों को तीन २ माशा लेके क्वाथकर १० दिन दे तो कफज्वर, श्वास, कास, मन्दाग्नि ये सब दूर होयँ। अथवा अड़ूसे का काढ़ा १ तोला १० दिन दे तो कफज्वर निश्चय तत्काल जाय। अथवा २ रत्ती शीतभंजी रस अड़ूसा और सोंठि के क्वाथ के अनुपान से ७ दिन दे तो कफज्वर निश्चय तत्काल दूर होय।

शीतभंजी रस

शिंगरफ से निकाला हुआ शुद्ध पारा ५ टंक (२० माशा), शोधी हुई गन्धक ५ टंक, ताम्रेश्वर ५ टंक, सिंगीमुहरा २ टंक, सोंठि ५ टंक, मिरच ५ टंक, पीपरि ५ टंक, शोधा हुआ सुहागा ५ टंक इन सबको महीन पीस चित्रक के रस की ३ पुट दे, पीछे अद्रक के रस की ७ पुट देकर पान के रस की ३ पुट देवे और एक एक रत्ती की गोलियाँ बनावे। यह शीतभंजी रस है। इससे कफज्वर, शीताङ्ग और सर्ववायु के रोग दूर होते हैं।

वातपित्तज्वर के लक्षण और यत्न

जिस मनुष्य के वातपित्तज्वर, तृषा, मूर्च्छा, घुमनी, दाह हो और निद्रा न आवे, मस्तक में पीड़ा हो तथा कण्ठ तथा मुख सूखे, वमन, रोमांच, अरुचि और अँधेरा हो जाय, सब अंग में पीड़ा होय तथा जँभाई आवे। यह लक्षण जिस ज्वर में होय उसको वातपित्तज्वर कहिए।

वातपित्तज्वर के यत्न

खिरैंटी, गुरच, अरण्ड की जड़, नागरमोथा, पद्माक, भारंगी, पीपरि, खस, रक्तचन्दन इन सब औषधों को तीन २ माशे के प्रमाण ले पीछे जवकुटकर क्वाथ बनाकर १२ दिन तक दे तो वातपित्तज्वर दूर होय

अथवा गुरच, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, चिरायता, सोंठि इन सबको बराबर ले जवकुटकर क्वाथ बनाकर १२ दिन दे तो वातपित्तज्वर दूर होय। यह पंचभद्र नाम क्वाथ है। अथवा गुरच, पित्तपापड़ा, सोंठि, नागरमोथा, अडूसा इनको बराबर ले जवकुटकर क्वाथ बनाकर दे तो वातपित्तज्वर जाय। अथवा परवल के पत्ते, नींब की छाल, गुरच, कुटकी इन सबको बराबर ले क्वाथ बनाकर १२ दिन तक दे तो वातपित्तज्वर दूर होय। अथवा महुआ, मुलहठी, लोध, गोरीसर, नागरमोथा, अमलतास का गूदा, इन सबको बराबर लेके जवकुटकर क्वाथ बनाकर १२ दिन तक दे तो वातपित्तज्वर जाय। अथवा चावल की खील के पानी में मिश्री और शहद मिलाकर १० दिन दे तो वातपित्तज्वर जाय। अथवा सोंठि, मिरच, पीपरि इनको बराबर ले सबकी बराबर मिश्री मिलाय चूर्णकर प्रतिदिन तीन माशा शहद के साथ १० दिन तक खाय तो वातपित्तज्वर दूर होय।

वातकफज्वर के लक्षण और यत्न

खाँसी, अरुचि, सन्धि और मस्तक में पीड़ा, जुकाम, सन्ताप, अङ्गकम्प, शरीर में भारीपन, निद्रा का न आना, पसीना, श्वास, उदर में शूल, तथा नाड़ी सर्प अथवा हंस की गति चले, धूसर, श्वेत, चिकना अथवा सुरमे के सदृश मूत्र और काला तथा चिकना मल होय, आँखें धूमरी, मुख कषैला अथवा मीठा और जीभ काली अथवा श्वेत हो, कण्ठ में कफ और भारी बोल, शरीर ठंढा ये लक्षण जिसमें होयँ उसको वातकफज्वर जानिए। ये लक्षण ज्वरतिमिरभास्कर में लिखे हैं।

वातकफज्वर के यत्न

इस ज्वरवाले को १० दिन लंघन करावे और अधोटा पानी पिलावे तथा १० दिन पीछे चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, सोंठि ये सब तीन २ माशे ले जवकुटकर क्वाथ बनाकर दे पीछे उसको पथ्य दे तो कोई उपद्रव नहीं उठे और तीन दिन पीछे कायफल, देवदारु, भारंगी, नागरमोथा, धनियाँ, पित्तपापड़ा, हड़ की छाल, सोंठि, कंजा की जड़ ये सब औषधें बराबर ले जवकुटकर काढ़ा करके दे तो वातकफज्वर, खाँसी, सूजन, श्वास इन सबको दूर करे। अथवा नागरमोथा, पित्तपापड़ा, सोंठि, गुरच, धमासा इन

सबको बराबर लेके जवकुटकर क्वाथ बनाकर १० दिन तक दे तो वातकफज्वर, वमन, मुखशोष इत्यादि दूर होयँ। अथवा छोटी कटैया, सोंठि, पीपरि, गुरच, ये सब तीन २ माशा भर ले काढ़ाकर दे तो वातकफज्वर जाय। अथवा सरिवन, पिठवन, दोनों कटैया, गोखुरू, बेलगिरी, सोनापाढ़ा, अरलू, खम्हारि, पाढ़ ये दशमूल हैं इनको कूटकर क्वाथ करे और पीपरि मिलाकर १० दिन तक दे तो वातकफज्वर दूर होय। यदि ज्वर में मुख और तालू सूख जाय, जीभ लठरा जाय तो बिजौरा के जीरे में सैंधवनोन और मिरच लगाय जीभ में लेप करे तो मुख और तालू का शोष और जीभ की लठरता दूर होय। अथवा चिरायता, गिलोय, देवदारु, कायफल, बच यह बराबर ले क्वाथकर दे तो वातकफज्वर जाय। यह यत्न ज्वरतिमिरभास्कर में लिखा है।

कफपित्तज्वर के लक्षण

कफ से मुख और जीभ लिपी हो तथा तंद्रा, मोह, खाँसी, अरुचि, तृषा अधिक हो। बारंबार शरीर में दाह, शीत और पीड़ा हो, हृदय दूखे, घुमनी आवे, क्षुधा न लगे, शरीर जकड़ा सा हो जाय, नाड़ी हंस की अथवा मेढ़क की गति चले, मूत्र श्वेत ललाई लिये चिकना हो और मल भी ललाई लिये हो तथा नेत्र मेढ़क के रंग के सदृश हों, मुख मीठा अथवा कड़ुवा रहे, जीभ ललाई लिये श्वेत हो। जिस मनुष्य के ये लक्षण हों उसके कफपित्तज्वर जानिए। ये लक्षण ज्वरतिमिरभास्कर में लिखे हैं।

कफपित्तज्वर के यत्न

इस ज्वरवाले को १४ लंघन करावे और अष्टावशेष जल पिलावे तथा गुरच, रक्तचन्दन, सोंठि, नेत्रवाला, दारुहल्दी इन औषधों को बराबर लेके जवकुटकर काढ़ा बनाकर १० दिन तक दे तो कफपित्तज्वर दूर हो। अथवा नींब की छाल, रक्तचन्दन, पद्माक, गुरच, धनियाँ इन औषधों का काढ़ा १० दिन दे तो यह ज्वर और दाह, तृषा, वमन, सब दूर होयँ। अथवा गुरच इन्द्रयव, नींब की छाल, परवल के पत्ते, कुटकी, सोंठि, सफेद चन्दन, नागरमोथा, पीपरि इन सबको बराबर ले महीन चूर्णकर ४ माशे अष्टावशेष जल के साथ दे तो ज्वर, श्वास,

गर्मी, हृदयशूल, अरुचि, खाँसी आदि रोगों को यह चूर्ण दूर करे। अथवा गुरच, दोनों कटैया, कचूर, दारुहल्दी, पीपरि, अडूसा परवल के पत्ते, नींब की छाल, चिरायता इन सब औषधों को समान लेके जवकुटकर काढ़ा बनवाकर दोनों समय १० दिन तक दे तो पित्त कफज्वर दूर होय। अथवा किशमिश, अमलतास की गूदी, धनियाँ, कुटकी, नागरमोथा, पिपलामूल, सोंठि, पीपरि इन सबको बराबर लेके ११ दिन तक काढ़ा दे तो शूल, भ्रम, मूर्च्छा, अरुचि, छर्दि, पित्तकफज्वर इतने रोगों को दूर करे। अथवा शिंगरफ का निकाला हुआ पारा २० माशा, शोधी हुई गन्धक २० माशा, कालीमिरच २० माशा, शोधा, हुआ सुहागा २० माशा इन सबको महीन पीस अदरख के रस की ७ पुट दे, फिर पान के रस में ७ पुट दे, तदन्तर २ रत्ती प्रमाण की गोली बाँधकर एक गोली प्रतिदिन दोनों समय ७ दिन तक खाय तो निश्चय कफ-पित्तज्वर दूर होय।

सन्निपातज्वर की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

जो मनुष्य बहुत चिकना, खट्टा, अधिक गर्म, चरफरा, मीठा, रूखा भोजन करे और विरुद्ध वस्तु खाय अथवा अधिक भोजन करे तथा बुरा पानी पिये और क्रोधवती रुगैली स्त्री के साथ प्रसङ्ग करे और दुष्ट अथवा कच्चा मांस खाय और ठण्ढ, धूप, देश, ऋतु, ग्रह की विपरी-तता से मनुष्य को सन्निपात रोग होता है।

सन्निपात का लक्षण

अकस्मात् कभी दाह, कभी शीत लगे, स्वभाव बदल जाय और सब इन्द्रियाँ अपने अपने धर्म को छोड़ दें, शरीर के हाड़ हाड़ तथा सन्धि सन्धि और माथे में अधिक पीड़ा हो, नेत्रों में जल आवे, काले और लाल हो जायँ, कानों में शब्द और पीड़ा हो, कण्ठ में काँटे पड़ जायँ तथा तन्द्रा, मोह, श्वास, कास, अरुचि, भ्रम हो और जीभ काली और खरखरी होकर लठरा जाय तथा रुधिर मिला हुआ कफ थूके, दिन में सोवे, रात्रि में जागे, पसीना बहुत आवे अथवा नहीं आवे, अक-स्मात् गावे, नाचे, हँसे, रोवे, माथा धुने, तृषा अधिक लगे, हृदय दूखे, मलमूत्र उतरे नहीं और जो उतरे तो थोड़ा उतरे, शरीर कृश हो जाय,

कण्ठ में कफ घरघराय, गूँगा हो जाय, ओष्ठ आदि अंग पक जायँ, पेट भारी हो, नाड़ी की गति महामन्द, शिथिल, सूक्ष्म, टूटीसी हो और मूत्र हल्दी सा या काला अथवा रुधिर के समान और मल काला श्वेतता लिये हो अथवा शूकर के मांस सदृश हो। इतने लक्षण जिसमें हों उसके सन्निपातज्वर कहिए। जो वैद्य औषध, रस और यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र से सन्निपात को दूर करे उस वैद्य से धन देकर भी रोगी उऋण नहीं होता।

सन्निपातज्वर के यत्न

सन्निपातज्वरवाले को अर्धावशेष अच्छे कुएँ के जल में चार माशे सोंठि डालकर दिन का औटा दिन में और रात्रि का औटा रात्रि में पिलावे और चतुर मनुष्य पास रहे और निर्वात स्थान में रक्खे, शीतल यत्न कभी न करे और शिव आदि का पूजन, हवन, मन्त्र, मणिधारण, दानादिक करे। अथवा सात दिन पीछे कायफल, पिपलामूल, इन्द्रयव, भारंगी, सोंठि, चिरायता, कालीमिरच, पीपरि, काकड़ासिगी, पुहकर-मूल, रास्ना, दोनों कटैया, अजमोदा, बालछड़, बच, पाढ़, चव्य इन सब औषधों को समान ले जवकुटकर क्वाथ बनाकर दोनों समय दे तो सन्नि-पात और सर्ववस्तु की अज्ञानता तथा अधिक प्रस्वेद, शीताङ्ग और विक्षिप्तता, उदरशूलता, अफरा, वात और कफ के रोग तथा सुआरोग इन सब रोगों को यह क्वाथ दूर करता है। अथवा आक की जड़, जवासा, चिरायता, देवदारु, रास्ना, निर्गुण्डी, बच, अरणी, सहँजना, पीपरि, पिपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि, अतीस, जलभाँगरा इन सबको बरा-बर ले जवकुटकर काढ़ा बनाकर दोनों समय दे तो महासन्निपातज्वर, धनुर्वात और जबड़ा भिच गया हो तिसको और सुआ का रोग, श्वास, खाँसी और वायु के रोगों को यह काढ़ा दूर करता है। यह यत्न लोलि-म्बराज में लिखा है। सन्निपात में जीभ जड़ हो गई हो तो बिजौरा की केसर में सेंधानोन और मिरच मिलाके लेप करे तो जीभ की जड़ता दूर हो। अथवा जिस सन्निपात में ज्ञान जाता रहा हो तो बच, महुआ, सेंधानोन, मिरच, पीपरि ये सब बराबर ले गर्मजल में महीन पीस नास दे तो ज्ञान हो जावे।

सन्निपात के दूर करने की नास

पारा २० माशा, गन्धक २० माशा इन दोनों की कजली खरल में करे। पीछे दोनों के बराबर सोंठि, मिरच, पीपरि महीन पीस मिलाय धतूरे के फल के रस की ३ पुट देकर एक दिन खरल करे। यह उन्मत्त नाम रस है। इसकी नास दे तो सन्निपात दूर होवे।

सन्निपात दूर करने का अंजन

जमालगोटे की मींगी ४ माशा, कालीमिरच ४ माशा, पिपलामूल ४ माशा इन तीनों को जंभीरी नींबू के रस में ७ दिन तक खरल करे पीछे इसका अञ्जन दे तो सन्निपात दूर हो। अथवा पारा, गन्धक, काली मिरच, पीपरि ये सब बराबर ले और इन चारों का चतुर्थांश शुद्ध जमालगोटा लेकर खरल में पारा, गन्धक की महीन कजली करे। पीछे इन दोनों को कजली में मिलाय सबको जंभीरी के रस में आठ दिन तक खरल करे फिर इसका अञ्जन दे तो सन्निपात दूर हो। इस अञ्जन का नाम भैरवाञ्जन है। यह वैद्यरहस्य में लिखा है। अथवा सिरस के बीज, पीपरि, काली मिरच, सेंधानोन, लहसन, मैनसिल, बच ये बराबर ले महीन पीस गोमूत्र में एक दिन खरल कर अञ्जन करे तो सन्निपात दूर हो।

सन्निपात दूर करने का पञ्चवक्त्र नाम रस

शिंगरफ का निकला हुआ पारा २० माशा, शोधी हुई गन्धक २० माशा, शोधा हुआ सिंगीमुहरा २० माशा, शोधा हुआ सुहागा २० माशा, पीपरि २० माशा, काली मिरच २० माशा, पारा और गन्धक की कजली करे, पीछे कजली में इन सब औषधों को मिलाय धतूरे के बीज के तेल में ४ घड़ी खरल करके १ रत्ती के प्रमाण गोली बाँधे। एक गोली अदरख के रस में दे तो सन्निपात जाय। इसके ऊपर दही भात खवावे। यह यत्न वैद्यरहस्य में लिखा है।

सन्निपात दूर करने का स्वच्छन्दभैरव रस

शिंगरफ का निकला हुआ पारा २० माशा, शोधी हुई गन्धक २० माशा, शोधा हुआ सिंगीमुहरा २० माशा, जायफल ८ माशा, पीपरि ४० माशा। पारा और गन्धक की कजली करे, पीछे इन सब

औषधों को इसमें मिलावे और अदरख के रस में १ दिन खरल करे, पीछे १ रत्ती के प्रमाण दे तो सन्निपातज्वर, शीतज्वर, विसूचिका, विषमज्वर, मन्दाग्नि, माथे का रोग इन सबको यह रस दूर करता है। यह वैद्यरहस्य में लिखा है।

सन्निपात में उत्पन्न शीत का उबटना

मिरच, पीपरि, सोंठि, हड़ का छिलका, पठानी लोध, पुहकरमूल, चिरायता, कुटकी, कूट, कचूर, इन्द्रयव इन सबको बराबर ले महीन पीस मर्दन करे तो पसीना और शीताङ्ग को दूर करे। अथवा पारा २० माशा, सिंगीमुहरा २० माशा, मिरच ४० माशा, धतूरे के फल की राख १३ तोला ४ माशा, इन सबको महीन पीसकर शरीर में मर्दन करे तो पसीना, शीताङ्ग, सन्निपात दूर हो।

महासन्निपात दूर करने का यत्न

पारा, सिंगीमुहरा, कालीमिरच, नीलाथोथा, नौसादर इन सबको बराबर ले महीन पीस धतूरे और लहसन के रसमें रोटी करे, वह रोटी क्षौर कराके रोगी के सिर पर एक पहर तक रक्खे जब शरीर में ताप हो आवे और चैतन्य हो जाय तो वह पुरुष जीवे और जो तापयुक्त और चैतन्य न हो तो निश्चय वह मनुष्य मरे। अथवा लहसन, राई, सहँजने की जड़ इन सबको गौ के मूत्र में महीन पीस रोटी करे, वह रोटी क्षौर कराके मस्तक पर ६ घंटे रक्खे। जो चैतन्यता और ताप न हो तो वह न जीवे। यह यत्न वैद्यविनोद में लिखा है।

सन्निपात दूर करने का यत्न

महाभयंकर सन्निपातवाले को बिच्छू से कटवावे तो सन्निपात दूर हो। सन्निपातवाले को सर्प से भी कटाना लिखा है परन्तु लोकविरुद्ध है इससे यह चिकित्सा न करे। अथवा सन्निपातवाले को लोहे की शलाका अत्यन्त गर्मकर उसके पगथली, भौंह और ललाट के मध्य में दाग दे तो सन्निपात जाय, यह वैद्यविनोद में लिखा है। मन्त्र, यन्त्र आदि के साधन से भी सन्निपात दूर होता है। सुश्रुत, चरक, वाग्भट के मत से तो सन्निपातज्वर एक ही प्रकार का है, परन्तु अन्य ऋषियों

के मत से ५२ प्रकार का है, उनमें १३ मुख्य हैं। उनके पृथक्-पृथक् नाम, लक्षण और यत्न लिखते हैं।

१३ सन्निपात के नाम

सन्धिक, अन्तक, रुग्दाह, चित्तभ्रम, शीताङ्ग, तन्द्रिक, कण्ठकुब्ज, कर्णक, भुग्ननेत्र, रक्तष्ठीवी, प्रलाप, जिह्वक, अभिन्यास। अब इनकी आयुर्बल कहते हैं। सन्धिक ७ दिन, अन्तक १० दिन, रुग्दाह २० दिन, चित्तभ्रम २४ दिन, शीताङ्ग १५ दिन, तन्द्रिक २५ दिन, कण्ठ-कुब्ज १३ दिन, कर्णक ९० दिन, भुग्ननेत्र ८ दिन, रक्तष्ठीवी १० दिन, प्रलाप १४ दिन. जिह्वक १६ दिन, अभिन्यास १५ दिन रहता है। इनमें यदि कोई उपद्रव उठ आवे तो मनुष्य तत्काल ही मर जाय। सन्निपातज्वरवाले का शीतल यत्न न करे तथा दिन में सोने न दे, अर्द्धा-वशेष जल पिलावे, आँव और कफ घटे ऐसा यत्न करे, एवं सन्निपात के दोषसदृश लंघन करावे।

सन्धिक सन्निपात के लक्षण

शरीर की सन्धि सन्धि में शूल और सूजन हो, पेट भारी रहे, अङ्ग शिथिल पड़ जायँ, बल जाता रहे, वात-कफ का कोप बहुत हो, नींद न आवे, ये लक्षण सन्धिक सन्निपात के जानिए।

सन्धिक सन्निपात का यत्न

रास्ना, हड़ की छाल, गुरच, सहँजना, चित्रक, लजालू (छुईमुई), सोंठि, देवदारु, कुटकी, कचूर, अड़ूसा, बायबिड़ंग सरिवन, पिठवन, दोनों कटैया, बेलगिरी, अरणी, अरलू, खँभारि, पाढ़, पीपरि ये सब बराबर ले जवकुट कर काढ़ा कर दोनों समय दे तो सर्वलक्षणसंयुक्त सन्धिक सन्निपात दूर हो।

अन्तक सन्निपात के लक्षण

शरीर में दाह, कम्प, मस्तकपीड़ा हो, खाँसी और हिचकी आवे, बके बहुत, ज्ञान जाता रहे, श्वास हो ये लक्षण जिसमें हों उसके अन्तक सन्निपात कहिए। न इस रोग की औषध है और न रोगी जीता ही है।

रुग्दाह सन्निपात के लक्षण

शरीर में दाह और व्याकुलता हो, उदर में शूल चले, तृषा अधिक लगे ये लक्षण जिसमें हों उसके रुग्दाह सन्निपात जानिए। यह भी असाध्य है।

रुग्दाह का यत्न

हड़ की छाल, पित्तपापड़ा, नींब की छाल, कुटकी, देवदारु, अमलतास की गूदी, मुनक्का, किशमिश, नागरमोथा ये सब बराबर ले जवकुटकर क्वाथ बनाकर दोनों समय १५ दिन दे तो रुग्दाह सन्निपात जाय।

चित्तभ्रम सन्निपात के लक्षण

भ्रम, मद, ताप, मोह, श्वास हो और विक्षिप्त के से नेत्र हो जायँ तथा हँसे, गावे, नाचे ये लक्षण जिसमें हों उसके चित्तभ्रम सन्निपात जानिए।

चित्तभ्रम सन्निपात का यत्न

ब्राह्मी, बच, छुईमुई, त्रिफला, कुटकी, खरैंटी, अमलतास की गूदी, नींब की छाल, नागरमोथा, कड़ुवी तोरई की जड़, मुनक्का, किशमिश, सरिवन, दोनों कटैया, गोखुरू, बेलगिरी, अरणी, अरलू, खँभार, पाढ़, ये सब बराबर ले जवकुटकर काढ़ा बनाकर दोनों समय ११ दिन दे तो चित्तभ्रम सन्निपात दूर हो।

शीताङ्ग सन्निपात के लक्षण और यत्न

सम्पूर्ण शरीर शीतल ओला सा हो जाय और काँपे, हिचकी आवें, अङ्ग शिथिल हो जाय, श्वास, खाँसीओर वमन हो, मुख से लार बहे, ये लक्षण जिसमें हों उसके शीताङ्ग सन्निपात जानिए। यह भी महाअसाध्य है। इस सन्निपातवाला जीता नहीं तथापि यत्न कहते हैं। इस सन्निपातवाले को बिच्छू से कटावे और सिंगीमुहरा तेल में मिलाय अच्छे प्रकार मर्दन करे और सिंगीमुहरा, लहसन, राई इनको गोमूत्र में पीस रोटी कर रोगी का क्षौर कराय उसके शिर पर धरे। जब तक शरीर गर्म न हो तब तक रोटी माथे पर रक्खे। जो ताप न आवे तो वह रोगी मर जाय। अब उसका उबटना कहते हैं। पारा

२० माशा, सिंगीमुहरा २० माशा, कालीमिरच १६॥ तो. ८ माशा, धतूरे के फल की राख १३॥ तो. ४ माशा इनको महीन पीस शरीर में मर्दन करे तो शीताङ्ग सन्निपात दूर हो।

तन्द्रिक सन्निपात के लक्षण

तन्द्रा हो, ज्वर का वेग और तृषा अधिक हो, जीभ काली और खरखरी हो, श्वास, अतिसार, दाह, कान में पीड़ा ये लक्षण जिसके हों उसके तन्द्रिक सन्निपात जानिए।

तन्द्रिक का यत्न

भारंगी, गुरच, नागरमोथा, कटैया, हड़ की छाल, पुहकरमूल इनको बराबर ले जवकुट कर काढ़ा बनाकर १५ दिन तक दे तो तन्द्रिक सन्निपात दूर हो।

कण्ठकुब्ज सन्निपात के लक्षण

माथा बहुत दुखे, दाह और दाढ़ में पीड़ा हो, शरीर बहुत गर्म रहे, मूर्च्छा हो, गला रुके और पक जाय, वात से शरीर में पीड़ा हो तथा बके ये लक्षण जिसके हों उसके कण्ठकुब्ज सन्निपात जानिए। यह कष्टसाध्य है।

कण्ठकुब्ज का यत्न

काकड़ासिंगी, चित्रक, हड़ की छाल, अड़ूसा, कचूर, चिरायता, भारंगी, दारुहल्दी, कटैया, पुहकरमूल, नागरमोथा, कुड़ा की छाल, इन्द्रयव, कुटकी, कालीमिरच इन सबको बराबर लेके जवकुट कर काढ़ा बनाकर दोनों समय ८ दिन तक दे तो कण्ठकुब्ज सन्निपात जाय।

कर्णक सन्निपात के लक्षण

कण्ठ में पीड़ा और शरीर खेदयुक्त तथा अतिगर्म रहे, खाँसी, श्वास, कर्णमूल में सूजन और बहुत पीड़ा, ये लक्षण जिसमें हों उसके कर्णक सन्निपात जानिए।

कर्णक सन्निपात के यत्न

रास्ना, असगन्ध, नागरमोथा, दोनों कटैया, भारंगी, काकड़ासिंगी, हड़ की छाल, बच, पुहकरमूल, कुटकी इन सबको बराबर ले जवकुट कर काढ़ा बनाकर दोनों समय ४० दिन तक दे तो कर्णक सन्निपात जाय।

दूसरा यत्न

हल्दी, हिंगणबेट की जड़, कूट, सहँजने की जड़, सेंधानोन, दारुहल्दो, देवदारु, इन्द्रायण की जड़ इन औषधों को बराबर ले जवकुट कर आक के दूध में महीन खरल करे और कर्णमूल में ठंढा ही लेप करे तो कर्णमूल बैठ जाय तथा कर्णमूल का रोग दूर हो। अथवा कर्णमूल के उठते ही जोंक लगावे और कर्णमूल के अनुसार रुधिर कढ़ावे तो कर्णमूल निश्चय ही अच्छा हो।

भुग्ननेत्र सन्निपात के लक्षण

जिस रोगी की स्मरण-शक्ति जाती रहे, ज्वर का वेग, बाँके और चञ्चल नेत्र, भ्रम और कम्प हो, बकने लगे, ये लक्षण जिसमें हों उसके भुग्ननेत्र सन्निपात जानिए। यह भी असाध्य है।

भुग्ननेत्र सन्निपात का यत्न

दारुहल्दी, परवल के पत्ते, नागरमोथा, कटैया, कुटकी, हल्दी, नींब की छाल, त्रिफला इन सबको बराबर ले काढ़ा बनाकर दोनों समय ८ दिन तक दे तो भुग्ननेत्र सन्निपात दूर हो।

रक्तष्ठीवी सन्निपात के लक्षण

लोहू थूके, तृषा अधिक हो, मोह, श्वास, उदरशूल, भ्रम, वमन, अफरा ये लक्षण जिसमें हों उसके रक्तष्ठीवी सन्निपात जानिए। यह महाअसाध्य है।

रक्तष्ठीवी सन्निपात का यत्न

नागरमोथा, पद्माक, पित्तपापड़ा, रक्तचन्दन, महुआ, नेत्रबाला, शतावरि, सफेद चन्दन, बकाइन की छाल इन सबको बराबर ले जवकुट कर काढ़ा बनाकर १० दिन दे तो रक्तष्ठीवी सन्निपात जाय। अथवा दूब का रस और अनार के फूलों के रस का नास दे तो रक्तष्ठीवी सन्निपात दूर होय।

प्रलापक सन्निपात के लक्षण

शरीर काँपे, बहुत गर्म रहे और बके, दाह हो ज्वर का वेग अधिक हो, संज्ञा जाती रहे, सब अंग विकल हो जायँ ये लक्षण प्रलापक सन्निपात के जानिए।

प्रलापक सन्निपात का यत्न

नागरमोथा, नेत्रबाला, सरिवन, पिठवन, दोनों कटैया, बेलगिरी, अरलू, खम्हारि, पाढ़, सोंठि, पित्तपापड़ा, सफेद चन्दन, अड़ूसा इन सबको बराबर ले जवकुटकर काढ़ा बनाकर दोनों समय १० दिन तक दे तो प्रलापक सन्निपात दूर होय।

जिह्वक सन्निपात के लक्षण

श्वास, कास और ताप होय, जीभ लठरा जाय और काँटे भी पड़ जायँ, गूँगा और बहिरा हो जाय, बल जाता रहे, ये लक्षण जिह्वक सन्निपात के जानिए। यह भी कष्टसाध्य है।

जिह्वक सन्निपात का यत्न

खुरासानी बच, कटैया, जवासा, रास्ना, गुरच, नागरमोथा, सोंठि, कुटकी, काकड़ासिंगी, पुहकरमूल, ब्राह्मी, भारंगी, नींब की छाल, अड़ूसा, कचूर ये सब बराबर ले जवकुट कर काढ़ा बनाकर १६ दिन तक दे तो जिह्वक सन्निपात दूर होय।

अभिन्यास सन्निपात के लक्षण

नींद आवे नहीं, श्वास बहुत शीघ्र चले, शरीर काँपे, सब चेष्टा जाती रहे, घोंघों बोले, काष्ठवत् जड़ हो जाय, ये लक्षण अभिन्यास सन्निपात के हैं। यह महा असाध्य और मृत्युरूप है।

अभिन्यास सन्निपात का यत्न

भारंगी, रास्ना, परवल के पत्ते, देवदारु, हल्दी, सोंठि, मिरच, पीपरि, अड़ूसा, इन्द्रायण की जड़, चिरायता, नींब की छाल, नेत्रबाला, कुटकी, बच, पाढ़, सोनापाठ, दारुहल्दी, गुरच, निसोत, झाऊ की जड़, पुहकरमूल, दोनों कटैया, नागरमोथा, जवासा, इन्द्रयव, त्रिफला, कचूर इन सबको बराबर ले जवकुट कर काढ़ा बनाकर १५ दिन तक दे तो अभिन्यास सन्निपात दूर होय।

सर्वसन्निपात दूर करने का अञ्जन

लहसुन, पीपरि, मिरच, बच, अरलू के बीज, सेंधानोन इन सबको बराबर ले गोमूत्र में महीन पीस नेत्रों में अञ्जन करे तो सब सन्निपात दूर होयँ।

सर्वसन्निपात दूर करने का नास

काली मिरच, महुआ, सेंधा नोन, चित्रक, कायफल, पीपरि इन सबको बराबर ले महीन पीस गर्म पानी में नास दे तो सर्वसन्निपात दूर होयँ।

आठों ज्वरों को दूर करनेवाला चिन्तामणि रस

शिंगरफ का निकाला हुआ पारा, शोधी हुई गन्धक, अभ्रक, ताम्रेश्वर, सोंठि, काली मिरच, पीपरि, हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, शोधा हुआ जमालगोटा इन सबको बराबर ले दड़घल (सहदेई) के पत्तों के रस में खरलकर दोपहर पीछे धूप में सुखाय १ रत्ती के प्रमाण गोली बाँधे। एक गोली दे तो आठों ज्वर दूर होयँ और उदरशूल, अजीर्ण, आमवात ये भी सब दूर होयँ। यह वैद्यरहस्य और वैद्यविनोद में लिखा है।

मृतसंजीवनी गुटिका

शिंगरफ़ का निकाला हुआ पारा ८ माशा, शोधी हुई गंधक १) तो०, ताम्रेश्वर १६ माशा, शोधा हुआ सुहागा ८ माशा, शोधा हुआ शिंगीमुहरा ४ माशा, कालीमिरच १६ माशा ले। पहिले पारे और गन्धक की कजली करे पीछे ये सब औषधें मिलाय सबको ब्राह्मी के रस में १ पुट देकर पीछे २ पुट अदरख के रस की दे। फिर सोंठि, मिरच, पीपरि इन तीनों को औटाय १ पुट दे। फिर चित्रक की १ पुट देकर इसकी १ रत्ती के प्रमाण गोली बाँधे। एक गोली अदरक के रस में दे तो सन्निपात और मूर्च्छा को दूर करे। यह रस मृतक पुरुष को जिलाता है और आमवात, वायुशूल, स्याह, दाग विषमज्वर, मन्दाग्नि, सन्निपात इन सबको यह मृतसंजीवनी गुटिका दूर करती है। यह रसमञ्जरी में लिखा है।

कालारि रस

शोधा पारा १२ माशे, शोधी गन्धक २० माशे, शिंगीमुहरा १२ माशा, कालीमिरच २० माशे, पीपरि ४० माशे, लवंग १६ माशे, धतूरे के बीज १३ माशे, शोधा सुहागा २० माशे, जायफल २० माशे, अकरकरा १२ माशे ले। पहिले पारे और गन्धक की कजली करे; पीछे

उस कजली में ये सब औषधें महीन पीसकर मिलावे। तदनन्तर ३ दिन अदरक के रस में खरल करे। फिर ३ दिन नींबू के रस में खरल करे। फिर ३ दिन केले के रस में खरलकर १ रत्ती के प्रमाण गोली बाँधे। एक गोली खाय तो वायु और सन्निपात रोग दूर होयँ। यह रस योगचिन्तामणि में लिखा है।

त्रिपुरभैरव रस

सोंठि ४ पैसे भर, कालीमिरच ४ पैसे भर, शोधा तेलिया और सुहागा ३ पैसे भर, शोधा सिंगीमुहरा १ पैसे भर इन सबको महीन पीस ३ दिन नींबू के रस में और ५ दिन अदरक के रस में फिर ३ दिन पानों के रस में खरल करे। तदनन्तर १ रत्ती के प्रमाण गोली बाँधे। एक गोली अदरक के रस में दे तो सन्निपात दूर होय।

संज्ञाकरण रस

शोधा सिंगीमुहरा, सेंधानोन, कालीमिरच, रुद्राक्ष, कटेली, कायफल, महुआ, समुद्रफेन ये सब बराबर महीन पीस आक के खार की ३ पुट दे पीछे १ या २ या ३ रत्ती कान या नाक में रखकर फूँक दे तो संज्ञा हो आवे और सन्निपात दूर होय।

ब्रह्मास्त्र रस

पारे की भस्म १ तोला, शोधागन्धक १।) तो० इन दोनों के समान शोधा सिंगीमुहरा और इनके बराबर काली मिरच ले। सबको एकरस कर करिहारी के बकले और ज्वालामुखी जड़ी (अरणी) के रस में और अदरक के रस में २१ पुट देकर यह रस तैयार करे। फिर १ रत्ती के प्रमाण में दे तो सन्निपात दूर होय।

आगन्तुक ज्वर की उत्पत्ति और लक्षण

शस्त्रादिक के आघात से, भूतादिक के लगने से, विष आदि के खाने से, आधि अर्थात् मानसी व्यथा से और राजा, गुरु, माता, पिता आदि के तिरस्कार से तथा काम, क्रोध, शोक, भय, स्नेह, द्वेष इनसे उत्पन्न आगन्तुक ज्वर कहा जाता है।

शस्त्रादिक के आघात से उत्पन्न हुए ज्वर के लक्षण

शस्त्रादिक के लगने से उत्पन्न पीड़ा में वायु कुपित होकर रुधिर को

बिगाड़ता है। फिर उससे पीड़ा, सूजन और शरीर का वर्ण और का और हो जाता है। तदनन्तर वह वायु शरीर में ज्वर करती है।

शस्त्रादिक के आघात से उत्पन्न हुए ज्वर का यत्न

इस ज्वरवाले को लंघन न करावे, कषैली और गर्म वस्तु खाने को न दे। मधुर और सचिक्कण वस्तु या शोरुआ खिलावे तथा सेंक और पट्टीबन्धन आदि यथायोग्य यत्न करे।

भूतादिक के लगने से उत्पन्न ज्वर के लक्षण

शरीर में उद्वेग होय, कभी रोवे, कभी हँसे, कभी काँपे, चित्त स्थिर न रहे उसके भूतादिक प्रवेश जानिये।

भूतादिक का यत्न

जिसके भूत लगा हो उसके बन्धन, ताड़नादिक करके मन्त्र यन्त्र तन्त्र करे और नास दे तो भूतादिक दूर हों।

भूतादिक दूर होने के कुछ अनुभूत उपाय

भूतादिक के झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो ॐ हां हो हूं नमो भूतनायक समस्त भुवन भूतानि साधय साधय हुं फट् स्वाहा। यह मन्त्र पढ़के मोरपंख से झाड़ दे तो भूतादिक भाग जायँ। तथा दूसरा मन्त्र ॐ नमो नारसिंहाय हिरण्यकशिपुवक्षस्थलविदारणाय त्रिभुवनब्यापकाय भूतप्रेतपिशाचशाकिनीकीलोन्मूलनाय स्तम्भोद्भवसमस्तदोषान् हन हन सर सर चल चल कम्प कम्प मथ मथ हुं फट् ठह ठह महारुद्रो जयति स्वाहा। इस नृसिंहरक्षामन्त्र को पढ़कर मोरपंख से झाड़ दे तो भूतादिक नहीं रहें।

भूतादिक के बकुराने का मन्त्र

ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय किल किल तरवाय रौद्रदंष्ट्राकरालवक्त्राय त्रिनयनभूषिताय धगधगितपिशङ्गललाटनेत्राय तीव्रकोपानलायामिततेजमे पाशशूलखट्वाङ्गडमरुकधनुर्बाणमुद्गरभूपदण्डत्रासमुद्राव्यग्रदशदोर्दण्डमण्डिताय कपिलजटाजूटकूटार्धचन्द्रधारिणे भस्मरागरञ्जितविग्रहाय उग्रफणिपतिघटाटोपमण्डितकण्ठदेशाय जय जय भूतडामरस आत्मरूपं दर्शय दर्शय नृत्य नृत्य सर सर चल चल पाशेन बन्ध बन्ध हुंकारेण त्रासय त्रासय वज्रदण्डेन हन हन निशितखङ्गेन

छिन्धि छिन्धि शूलाग्रेण भिन्धि भिन्धि मुग्दरेण चूर्णय चूर्णय सर्वग्रहाणां आवेशय आवेशय। इस मन्त्र से गौ के घृत में गुग्गुल मिलाय बहुतसी धूप दे और इसी मन्त्र से उड़दों को अभिमन्त्रित करके उसके मारे तो मनुष्य निश्चय बकुरकर जैसा होय वैसा कहे। पीछे उसी मन्त्र से लिखकर नींब के पत्ते और सर्प की कांचली मिलाकर धूप दे।

भूतादिक के उतारने का नास और अञ्जन

हींग को लहसुन के पानी में पीसकर नास दे तथा अञ्जन करे तो भूतादिक दूर होयँ। यह तन्त्रोपचार में लिखा है।

भूतादिक उतारने का तन्त्र

तुलसीपत्र ८, काली मिरच ८, सहदेई की जड़ रविवार को पवित्र होकर ले। इन तीनों को मिलाके कण्ठ में बाँधे तो भूतादिक दूर होयँ।

क्रोधज्वर के लक्षण

शरीर काँपे, मस्तक में पीड़ा हो और पित्तज्वर के लक्षण मिलें उसको क्रोधज्वर जानिए।

क्रोधज्वर का यत्न

अच्छे शीतल वचनों से चित्तविनोदक लोभ दिलावे तो यह ज्वर दूर होय।

मानसज्वर की उत्पत्ति और लक्षण

इष्ट, मित्र, पुत्र, स्त्री-धन आदि जिसका नष्ट हो गया हो अथवा राजा और बड़ों का तिरस्कार किया हो उसके अतिसार हो जाना और सर्व वस्तु में ग्लानि, चित्तभ्रम, श्वास, अश्रुपात आदिक लक्षण हों तो मानसज्वर जानिए।

मानसज्वर का यत्न

इस ज्वरवाले को ज्ञान और धैर्यता रखनी उचित है, मिष्टान्न और नाना प्रकार के रुचिकारी भोजन तथा व्यञ्जन खाये तो यह ज्वर दूर होय।

कामज्वर के लक्षण

जिसके कामज्वर प्रकट होय उसको भोजनादिक में अरुचि और मन में दाह होय तथा लज्जा, निद्रा, बुद्धि, धैर्य, ये सब जाते रहें, हृदय दूखे, संभोग ही में ध्यान रहे, श्वास हो आवे उसके कामज्वर जानिए।

कामज्वर का यत्न

अत्यन्त सुन्दरी, सर्वगुणसम्पन्ना, नवयौवना १६ वर्ष की स्त्री से अच्छे प्रकार संभोग करे तो कामज्वर दूर होय।

स्त्री के कामज्वर के लक्षण

मूर्च्छा और सर्व शरीर में मरोड़ होय, प्यास लगे, नेत्र चपल हो जायँ, कुचमर्दन कराने की मन में इच्छा होय, पसीना; हृदय में दाह तथा भोजन में अरुचि होय तथा लज्जा, निद्रा, धैर्यता जाती रहे ये लक्षण जिस स्त्री के हों उसके कामज्वर जानिए।

स्त्री के कामज्वर का यत्न

जिस स्त्री के कामज्वर हो वह अच्छे प्रकार से सर्व अलङ्कारयुक्त हो अपने पति से रमण करे तो कामज्वर दूर होय।

भयज्वर के लक्षण

भयज्वरवाले के प्रलाप, अतिसार, भोजन में अरुचि और चित्तस्थिर न रहे, ये लक्षण होते हैं।

भयज्वर का यत्न

भय दूर करनेवाली आनन्द की बातें कहकर उसके भय को दूर करे तो भयज्वर जाय।

विषमज्वर के लक्षण

जिस मनुष्य के ज्वर आने के पीछे किसी प्रकार के कुपथ्य से रस धातु को छोड़; रुधिर आदि धातु को प्राप्त हुआ पित्त कफ विषमज्वर को करता है। अथवा ज्वर आये बिना भी जिस पुरुष के ज्वर होकर शीत और दाह हो आवे तथा तृषा, दाह के थोड़े बहुत का नियम और समय का भी नियम ना रहे, किसी समय आ जाय उसके विषमज्वर कहिए। विषमज्वर चार प्रकार का है। एक सन्तत जो प्रतिदिन आवे। दूसरा एकान्तरा जो एक दिन बीच देके आवे। तीसरा तिजारी जो तीसरे दिन आवे। चौथा चातुर्थिक जो चौथे दिन आवे। विषमज्वर के भेद तो बहुत हैं परन्तु चार मुख्य हैं वे ही लिखे हैं।

विषमज्वर का यत्न

विषमज्वरवाले को मूँग अथवा मोठ की दाल का पानी देवे, हलका

रक्खे, औटा जल पिलावे और परवल के पत्ते, हड़ की छाल, नींब की छाल, इन्द्रयव, गुरच, जवासा इन औषधों को बराबर ले जवकुट कर काढ़ा बनाकर ७ दिन तक दे तो सततज्वर जाय। अथवा शीतज्वरवाले को, बृहत् क्षुद्रादि क्वाथ दे तो शीतज्वर जाय सो लिखते हैं। कटैया, धनियाँ, सोंठि गुरच, नागरमोथा, पद्माक, रक्तचन्दन, चिरायता, परवल के पत्र, अड़ूसा, पुहकरमूल, कुटकी, इन्द्रयव, नींब की छाल, भारंगी, पित्तपापड़ा इन सबको बराबर ले जवकुट कर काढ़ा बनाकर दोनों समय १० दिन तक दे तो शीतज्वर दूर होय। अथवा षोडशाङ्ग चूर्ण से भी विषमज्वर दूर होता है सो लिखते हैं। चिरायता, नींब की छाल, कुटकी, गुरच, हड़ की छाल, नागरमोथा, धनियाँ, अड़ूसा, छोटी कटैया, बड़ी कटैया, काकड़ासिंगी, सोंठि, पित्तपापड़ा, कंकोल, मिरच, परवल के पत्ते, पीपरि, कचूर इन सबको बराबर ले महीन पीस कपड़छानकर ४ माशा भर शीतल जल से ८ दिन तक खाय तो विषमज्वर जाय। अथवा चिरायता, कुटकी, निसोत, नागरमोथा; पीपरि, बायबिड़ंग, सोंठि, नींब की छाल, हड़ की छाल इन सबको बराबर ले महीन पीस चूर्ण करके ४ माशा गर्म जल से ७ दिन तक दे तो विषमज्वर दूर होय और भूख लगे अथवा सम्बुल (संखिया) को मारू बैंगन के पेट में १४ बार पकाकर भुरता करे पीछे उसके बराबर पीपरि और शिंगरफ़ ले इन तीनों की राई के बराबर गोली बाँधकर १ गोली बताशे में ३ अथवा ५ दिन तक दे तो यह ज्वरांकुश रस शीतज्वर, एकान्तरा, तिजारी इन सबको दूर करे।

जीर्णज्वर के लक्षण

२१ दिन के पीछे जिसके शरीर में सूक्ष्म होकर ज्वर रहे और भूख जाती रहे, शरीर दुर्बल हो जाय, पेट में फिया (तिल्ली) होय उसके जीर्णज्वर कहिए।

जीर्णस्वर का यत्न

जीर्णज्वरादिक को दूर करनेवाला बसन्तमालिनी रस लिखते हैं। सुवर्ण के वर्क १ माशे, बूके मोती २ भाग, शिंगरफ़ ३ भाग, काली-मिरच ४ भाग, गोमूत्र में शोधी खपरिया ८ भाग इन सबको खरल में महीन पीस पीछे से इनको अष्टमांश गौ के मक्खन में खरल करे फिर

जब तक चिकनाई न मिटे तब तक नींबू के रस में खरल करे इस प्रकार इसको तैयार करके १ रत्ती या २ रत्ती पीपरि और शहद के साथ दे तो जीर्णज्वर जाय और धातु का विकार, गर्मी का रोग, संग्रहणी, मूत्रकृच्छ्र, श्वास, कास, प्रदर इन सब रोगों को अनुपान के संयोग से दूर करता है। अथवा कटैया, गिलोय, सोंठि इन तीनों का काढ़ा १० दिन तक दे तो जीर्णज्वर जाय। अथवा कचूर, पित्तपापड़ा, सोंठि, नागरमोथा, कुटकी, कटैया, चिरायता इन सबको बराबर ले जवकुटकर काढ़ा बनाकर दोनों समय ११ दिन तक दे तो जीर्णज्वर, विषमज्वर जाय। यह वैद्यविनोद में लिखा है।

लाक्षादि तेल

पीपल की लाख पाव सेर, मीठापानी (कूपजल) ६ सेर, पठानी लोध तीन तोला चार माशा इनको मधुरी आँच से ओटाय चतुर्थांश करके निकाले पीछे से इस रस में गो का मट्ठा १ सेर, मीठा तेल १* सेर और सौंफ, असगन्ध, हल्दी, देवदारु, सेमर, पित्तपापड़ा, कुटकी, मुरहरी (मूर्वा), मुलहठी, नागरमोथा, रक्तचन्दन, रास्ना इन सब औषधों को आठ २ माशा ले महीन पीस इस तेल में डालकर पीछे से सबको एकरस कर मधुरी आँच से ओटावे; जब रस जल जाय और लस आ जाय तब उतार ले फिर इस तेल का मर्दन करे तो जीर्णज्वर, विषमज्वर दोनों दूर होयँ और शरीर में बल होय अथवा ३ पीपरि से एक एक प्रतिदिन २१ तक बढ़ावे और एक ही एक घटावे जब फिर तीन पर आ जाय और पथ्य से रहे तो इस वर्धमान पिप्पली से भी जीर्णज्वर, विषमज्वर रोग दूर होते हैं। अथवा बकरी के दूध के झाग से भी जीर्णज्वर जाता है। अथवा नींब के पत्र, त्रिफला, सोंठि, मिरच, पीपरि, अजमोद, सैंधव नोन, सोंचर नोन, बिड़ नोन, जवाखार, चित्रक, चिरायता, पित्तपापड़ा इन सब औषधों को बराबर ले महीन पीस कपड़छान कर ४ माशा प्रातःकाल जल से ले तो विषमज्वर, जीर्णज्वर दूर होते हैं। यह निम्बादि चूर्ण है। अथवा त्रिफला, दारुहल्दी-

---

*तैल सिद्ध करने से पहिले तैल को आँच पर खूब गरम करके ठंडा करे उसके बाद निम्नोक्त औषध गेरकर फिर मन्दाग्नि से पचावे।

दोनों कटैया, कचूर, सोंठि, काली मिरच, पीपरि, पिपलामूल, मुरहरी (मूर्वा), गुरच, धनियाँ, अड़ूसा, कुटकी, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, नेत्रबाला, नींब की छाल, पुहकरमूल, मुलहठी, अजवाइन, इन्द्रयव, भारंगी, सहँजने के बीज, फिटकरी, बच, तज, कमलगट्टा, पद्माक, चन्दन, अतीस, खरेटी, बायबिड़ंग, चित्रक, देवदारु, परवल के पत्ते, चव्य, लवङ्ग, वंशलोचन, पत्रज इन सब औषधों का आधा चिरायता ले महीन पीस कपड़छान कर ६ माशे शीतल जल से ले तो यह विषमज्वर जीर्णज्वर और सर्वज्वरमात्र को दूर करता है। यह सुदर्शनचूर्ण है। अथवा किसी प्रकार विषमज्वर, जीर्णज्वर न जाता दीखे तो रोग के मुवाफ़िक जुलाब और वमन करावे तब विषमज्वर और जीर्णज्वर दूर होयँ।

अजीर्णज्वर के लक्षण

बारंबार ढीला दस्त और खट्टी डकार आवे, वमन की इच्छा रहे, उदर में पीड़ा और अफरा तथा गुड़गुड़ाहट शब्द होय तो अजीर्णज्वर जानिए।

अजीर्णज्वर का यत्न

अजमोद, हड़ की छाल, सोंचर नोन, कचूर इन सबको बराबर ले महीन चूर्णकर ४ माशा गर्म पानी के साथ ले तो अजीर्णज्वर जाय।

दृष्टिज्वर के लक्षण

जमुहाई बहुत आवें, उदर में पीड़ा और हाथ में हड़फूटन हो, शरीर से शक्ति जाती रहे तो दृष्टिज्वर जानिए।

दृष्टिज्वर का यत्न

भुनी हुई हींग, काली मिरच, पीपरि, सोंठि इनको महीन पीस गर्म पानी के साथ ४ माशा ले तो दृष्टिज्वर दूर होय। अथवा जहरमुहरा आदि का जल पिलावे तो दृष्टिज्वर दूर होय।

बिगड़े रुधिर के ज्वर के लक्षण

अंग में हड़फूटन हो, मुख से श्वास आवे, शरीर शिथिल और नेत्र लाल होयँ, तृषा, मूर्च्छा, अफरा ये लक्षण जिसमें होयँ उसके रुधिर का ज्वर जानिए।

रुधिर के ज्वर का यत्न

किशमिश, अड़ूसा, कटैया, हल्दी, गुरच, हड़ की छाल इन सबको

बराबर ले जवकुट कर काढ़ा करे। जब शीतल हो जाय तब धेले भर शहद मिलाय ७ दिन तक पिये तो बिगड़े रुधिर का ज्वर जाय।

मलज्वर के लक्षण

मुखशोष, दाह, भ्रम, मूर्च्छा, मस्तक पीड़ा, हिचकी, वमन, पेट में शूल ये लक्षण जिसमें होयँ उसके मलज्वर जानिए।

मलज्वर की औषध

कुटकी, पीपलामूल, नागरमोथा, हड़ की छाल, अमलतास की गूदी ये सब औषधें बराबर ले जवकुट कर काढ़ा बनाकर दे तो मलज्वर जाय। यह आरग्वधपञ्चक है।

गर्भिणी के ज्वर का यत्न

रक्तचन्दन, किशमिश, गौरीसर, खस, मुलहठी, महुआ, धनियाँ, नेत्रवाला, मिश्री इन सबको बराबर ले काढ़ाकर ७ दिन तक पिये तो गर्भिणी का ज्वर जाय।

प्रसूतिका के ज्वर के लक्षण

अंग में हड़फूटन, शरीर भारी और गर्म रहे तथा कम्प, तृषा, सूजन, अतिसार ये लक्षण जिस स्त्री के होयँ उसके प्रसूतिका ज्वर कहिए।

प्रसूतिका के ज्वर की औषध

अजमोद सफेदजीरा, वंशलोचन, खैरसार, विजयसार, सौंफ, धनियाँ, मोचरस इन सबको बराबर ले जवकुट कर काढ़ा बनाकर १० दिन तक दे तो प्रसूतिका का ज्वर दूर होय। अथवा दशमूल का काढ़ा दे तो प्रसूतिका का ज्वर जाय। दशमूल ये हैं। सरिवन, पिठवन, दोनों कटैया, गोखुरू, बेल की गिरी, अरणी, अरलू, खँभारि, पाढ़ा, ये सब बराबर ले जवकुट कर काढ़ा बनाकर पीपरि का चूर्ण १ माशा गेरकर १० दिन तक दे तो प्रसूतिका रोग जाय।

बालक के ज्वर की उत्पत्ति और लक्षण

बालक की माता अथवा धाय कुपथ्य करे और गरिष्ठ वस्तु खाय तो बालक के नाना प्रकार के रोग होयँ और बालक के रोने से ज्वर प्रत्यक्ष विदित होता है।

बालक के ज्वर का यत्न

बालक की माता अथवा धाय को पथ्य से रक्खे और हलका भोजन

दे तथा जो माता के दूध न हो तो बकरी का दूध दे। अथवा नागरमोथा, हड़ की छाल, परवल के पत्ते, गुलहठी इन सबको बराबर ले १ माशे भर काढ़ा ७ दिन तक दे तो बालक का ज्वर जाय। अथवा धान की खील, मुलहठी, बालछल, महुआ इनका महीन चूर्ण कर १ माशे शहद के साथ दे तो बालक का ज्वर जाय। अथवा बालक के अतिसार लिए ज्वर होय तो अतीस, बेलगिरी, इन्द्रयव, धाय के फूल, पठानी लोध, धनियाँ, नेत्रबाला इनको २ माशे भर लेकर क्वाथ कर दे तो ज्वरातीसार दूर होय। अथवा बालक की नाभि पक गई हो तो घृत के सेकने से अच्छी होय।

पेट में कीड़े पड़ जाने से उत्पन्न हुए ज्वर के लक्षण

ज्वर होय, शरीर का वर्ण और का और हो जाय, पेट में शूल और हृदय में पीड़ा, वमन, भ्रम, भोजन में अरुचि, अतीसार आदि होते हैं।

पेट में कीड़े पड़ जाने से उत्पन्न ज्वर का यत्न

पलास (ढांक), पित्तपापड़ा, नींब की छाल, सहँजने की जड़, नागरमोथा, देवदारु, बायबिड़ंग इनको बराबर ले जवकुटकर काढ़ा बनाकर ७ दिन तक दे तो पेट के कीड़े दूर होयँ।

कालज्वर के लक्षण

ज्वर का अधिक वेग और ऊर्ध्वश्वास होय, शरीर की कान्ति जाती रहे, पसीना आवे शरीर शिथिल होय, नाड़ी हाथ न लगे, सब इन्द्रियों के धर्म जाते रहें तो कालज्वर जानिए।

कालज्वर के यत्न

गो, पृथ्वी, आदि का श्रद्धापूर्वक दान और विष्णु का स्मरण तथा सन्निपात का यत्न जो पीछे लिखा गया है करे।

ज्वर के १० उपद्रव

तृषा १ खाँसी २ श्वास ३ हिचकी ४ वमन ५ अतीसार ६ अरुचि ७ बद्धकोष्ठ ८ अफरा ९ मूर्च्छा १० ये ज्वर के उपद्रव हैं।

उपद्रवों के लक्षण

प्रथम ज्वर होय फिर अन्य रोग होयँ और वह ज्वर का यत्न नहीं करने दे उसी को ज्वर का उपद्रव कहिए। क्षुधा, तृषा तो ज्वर की स्त्री

हैं और कास, श्वास बेटे, हिचकी और वमन बेटी, अतीसार भाई, अरुचि बहिन, बद्धकोष्ठ भानजा, अफरा श्वशुर, मूर्च्छा बाँदी, इनमें जो बलवान् होय उसका यत्न करे।

ज्वर, अतीसार इकट्ठे होयँ उनका यत्न

सोंठि, अतीस, नागरमोथा, चिरायता, गुरच, कुड़ा की छाल इनको बराबर ले जवकुटकर काढ़ा बनाकर ७ दिन तक दे तो यह रोग दूर होय। अथवा पीपरि, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि, बेल की गिरी, नागरमोथा, चिरायता, कुड़ा की छाल, इन्द्रयव इन सबको बराबर ले जवकुटकर काढ़ा बनाकर ७ दिन तक दे तो ज्वरातीसार, मुखशोष, हिचकी, तृषा, वमन, श्वास, कास ये सब दूर होयँ।

ज्वर में तृषा अधिक लगे उसका यत्न

धनियाँ, नागरमोथा, पित्तपापड़ा इनको बराबर ले जवकुटकर काढ़ा बनाकर ३ दिन तक दे तो तृषा, दाह, अतीसार ये सब दूर होयँ। अथवा बरगद की कोंपल, चावल की खील, कमलगट्टा इन सबको बराबर ले महीन पीस शहद में गोली बाँधकर एक गोली मुख में रक्खे तो तृषा दूर होय।

ज्वर में खाँसी हो जाय उसका यत्न

पीपरि, पीपलामूल, सोंठि, भारंगी, खैरसार, कटैया अड़ूसा, कुलींजन, बहेड़ा इन सबको बराबर ले काढ़ा बनाकर ७ दिन तक दे तो खाँसी जाय।

ज्वर में श्वास होय उसका यत्न

सोंठि, मिरच, पीपरि, नागरमोथा, काकड़ासिंगी, भारंगी पुहकरमूल इन सबको बराबर ले काढ़ा बनाकर ७ दिन दे तो ज्वर का श्वास दूर होय।

ज्वर में हिचकी आवे उसका यत्न

जल में सैंधव नोन महीन पीस नास दे तो हिचकी दूर होय। अथवा मोर के पंख की राख, जली हुई पीपरि शहद में चटावे तो हिचकी और वमन दूर होय।

ज्वर में वमन होय उसका यत्न

चार अंगुल गिलोय के काढ़ा में शहद मिलाकर दे तो ज्वर का

वमन दूर होय। अथवा दो रत्ती मक्खी की बीट शहद में चटाव तो वमन दूर होय। अथवा चावल की खील, पीपरि और शहद में चटावे। तो भी वमन दूर होय।

ज्वर में मूर्च्छा होय उसका यत्न

अमलतास की गूदी, किशमिश, पित्तपापड़ा, हड़ की छाल इनको बराबर ले काढ़ा बनाकर दे तो मूर्च्छा दूर होय।

ज्वर में बद्धकोष्ठ या अफरा होय उसका यत्न

साबुन की बत्ती बनाकर गुदा में रक्खे तो बद्धकोष्ठ और अफरा यह दोनों दूर होयँ।

ज्वर में मुखशोष और जीभ में विरसता का यत्न

मिश्री व अनार के दानों कुल्ले करे अथवा किशमिश और अनार के दानों के कुल्ले करे तो मुखशोष और जीभ की विरसता दूर होय।

ज्वर में निद्रा जाती रहे उसका यत्न

आलूबुखारा १ सिकी भङ्ग १ रत्तीभर शहद में चटावे तो निद्रा आवे और अतीसार, संग्रहणी दूर होय, भूख लगे। अथवा ४ माशा पीपलामूल गुड़ में खाय तो अवश्य निद्रा आवे। अथवा अरण्ड और अलसी के तेल को कांसी की थाली में घिस अञ्जन करे तो अवश्य निद्रा आवे।

ज्वर उतर गया हो उसका लक्षण

सब शरीर हलका, मस्तक में खुजली, ओठ में पपड़ी पड़े, सब इन्द्रियाँ अपने अपने विषयों को ग्रहण करने लगें, शरीर की संपूर्ण व्यथा जाती रहे, सब शरीर में पसीना आवे, क्षुधा लगे, छींक आवे, मल की प्रवृत्ति होय, ये लक्षण जब होयँ तब निश्चय ज्वर गया जानिए। बुद्धिमान् पुरुष ज्वर आने के पीछे भी जब तक शरीर में बल न आवे तब तक पथ्य से रहे और मैथुन, व्यायाम, बोझ उठाना, अति भोजन इत्यादि न करे।

इति द्वितीयस्तरङ्गः ॥ २ ॥

—:०:—

अतीसार रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

मैदा आदि गरिष्ठ वस्तु और शीतल पतली वस्तु तथा विरुद्ध वस्तु खाने, भोजन के ऊपर भोजन करने, विष खाने, मल की बाधा रोकने और अधिक चिकनी, रूखी, गर्म वस्तु के खाने आदि से मनुष्यों के अतीसार रोग उत्पन्न होता है।

अतीसार का स्वरूप

मनुष्य के शरीर में कुपथ्यों से जल धातु बढ़े तो उदर की अग्नि को शान्त करे और वह जल पवन से प्रेरित हो विष्ठा से मिल गुदा के मार्ग से पतला होकर नीचे अधिक उतरे उसको अतीसार जानिए। वात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ शोक ५ आम ६ इन भेदों से यह अतीसार छः प्रकार का है।

अतीसार का पूर्वरूप

प्रथम हृदय, नाभि, गुदा, उदर, पेडू इनमें पीड़ा और सब अङ्गों में हड़फूटन होय तथा गुदा की पवन रुक जाय, बद्धकोष्ठ और अफरा होय, अन्न पचे नहीं तो जानिए कि मनुष्य के अतीसार होगा।

वात के अतीसार के लक्षण

कुछ एक ललाई लिये मल उतरे और मल में झाग मिले हों तथा रूखा, थोड़ा बार बार आम सहित आवे और दिशा के समय पेडू में पीड़ा होय तो वात का अतीसार जानिए।

वात के अतीसार का यत्न

खुरासानी बच, अतीस, नागरमोथा, इन्द्रयव, सोंठि ये सब बराबर ले जवकुटकर काढ़ा बनाकर ७ दिन तक दे तो वात का अतीसार दूर होय। अथवा इन्द्रयव, नागरमोथा, पठानीलोध, बेल की गिरी, आम की गुठली, धवई के फूल इनको महीन पीस चूर्ण कर आठ माशा भैंस की छाँछ में ७ दिन दे तो वायु का अतीसार दूर होय।

पित्त के अतीसार के लक्षण

मल पीला, लाल, नीला और दुर्गन्धयुक्त पतला हो, गुदा पक जाय, शरीर में पसीना आवे, प्यास लगे, दाह और मूर्च्छा हो ये लक्षण जिसमें हो उसके पित्त का अतीसार जानिए।

पित्त के अतीसार का यत्न

बेल की गिरी, इन्द्रयव, नागरमोथा, नेत्रबाला, अतीस इनको जव-कुटकर काढ़ा बनाकर ८ दिन दे तो पित्त का अतिसार जाय। अथवा रसौत, अतीस, इन्द्रयव, धाय के फूल, सोंठि इन सबको बराबर ले महीन चूर्ण कर चावल के पानी से आठ माशा शहद मिलाय के ७ दिन दे तो भयंकर भी पित्त का अतीसार जाय। और पित्तातीसार का रक्तातीसार भी भेद है। अत्यन्त गर्म वस्तु खाने से पित्त बढ़कर रुधिर को बिगाड़ता है। तब रुधिर से मिला हुआ मल उतरता है उसको रक्तातीसार कहते हैं।

रक्तातीसार का यत्न

कुड़ा की छाल, अनार का छिलका इन दोनों को आठ माशा भर ले काढ़ा कर २० माशा शहद मिलाय ७ दिन दो तो रक्तातीसार जाय। अथवा कुड़ा की छाल, अतीस, नागरमोथा, नेत्रबाला, पठानीलोध, रक्त चन्दन, धवई के फूल, अनार का छिलका, पाढ़ इन सबको बराबर ले जवकुटकर काढ़ा कर उसमें आठ माशा शहद मिलाय ७ दिन दे तो दाह और शूलसंयुक्त रक्तातीसार दूर होय। अथवा सफेद चन्दन ४ माशा महीन पीस के आठ माशा शहद और आठ माशा मिश्री मिलाय ८ दिन चाटे तो रक्तातीसार दूर होय। अथवा मीठे अनार का पुटपाक ४ माशा शहद मिलायकर चाटे तो रक्तातीसार जाय। अथवा बकरी के दूध में मक्खन, मिश्री और शहद मिलाय के पिये तो रक्तातीसार जाय।

गुदा पक गई हो उसका यत्न

परवल के पत्ते, मुलहठी, महुआ इनको पानी में औटावे और ठंढा कर उस पानी से गुदा धोवे तो गुदा का पकना जाय। अथवा बकरी के दूध में मिश्री और शहद मिलाय के धोवे तो भी गुदा का पकना जाय। अथवा गेहूँ के आटे में घृत मिलाय पानी से उसने उससे सुहाता सुहाता सेंके तो गुदा का पकना अच्छा हो जाय।

कफातीसार के लक्षण

जिसका मल चिकना और सफेद, गाढ़ा, दुर्गन्ध लिये, शीतल, थोड़ी पीड़ा सहित उतरे और शरीर भारी रहे, भोजन में अरुचि होय, ये लक्षण जिसमें होयँ उसके कफातीसार जानिए।

कफातीसार का यत्न

कफातीसारवाले को दो चार लंघन करावे अथवा मूँग का थोड़ा सा पथ्य दे पीछे चव्य, अतीस, कूट, कुटकी, बेल की गिरी, सोंठि, कुड़ा की छाल, तज इनको जवकुटकर काढ़ा बनाकर ७ दिन दे तो कफातीसार जाय। अथवा सिंकी हुई हींग, काला नोन, सोंठि, काली-मिरच, पीपरि, अतीस इन सबको बराबर ले चूर्णकर ४ माशा ७ दिन दे तो कफातीसार जाय।

सन्निपातातीसार के लक्षण

जिसका मल शूकर के मांस के सदृश हो और अनेक रूप का दीखे तथा तन्द्रा, तृषा, मुखशोष, भ्रम, मोह ये सब बातें जिस बालक, वृद्ध और स्त्री के होयँ उसे असाध्य जानिए।

सन्निपातातीसार का यत्न

पीपरि, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि, खरैंटी, बेल की गिरी, गुरच, नागरमोथा, पाढ़, चिरायता, कुड़ा की छाल, इन्द्रयव इनको जवकुटकर काढ़ा बनाकर १० दिन दे तो सन्निपात का अतीसार जाय। अथवा जंगी हड़, सोंठि, नागरमोथा इन सबको बराबर ले महीन पीस पुराने गुड़ में आठ माशा ७ दिन खाय तो त्रिदोष का अतीसार दूर होय। अथवा कुड़ा की छाल का पुटपाक कर रस निकाल २ तोला शहद मिलायके १० दिन तक दे तो सन्निपात का अती सार जाय।

शोक के अतीसार के लक्षण

पुत्र, मित्र, स्त्री, धन आदि के नाश से उपजा शोक उदर की अग्नि को मन्द करता है और शरीर के बाहर का तेज उदर में जाकर रक्त को बिगाड़ता है। वह रक्त विष्ठा से मिलके अथवा न मिलके गुदा के द्वारा गुंजा के सदृश निकले तो उसको शोकातीसार जानिए। वह शोक दूर होने ही से जाता है और इसी तरह किसी प्रकार के भय से उपजे भयातीसार को भी जान ले।

आमातीसार के लक्षण

जिस पुरुष के प्रथम भोजन का अजीर्ण होय और वह पीछे गरिष्ठ

वस्तु खाय तो उसके कोष्ठ में वात, पित्त, कफ ये तीनों जाकर धातु के समूह और मल को बिगाड़ते हैं और वह मल शूल संयुक्त, दुर्गन्ध लिये अनेक रंग का गुदा के द्वारा निकलता है उसको वैद्य आमातीसार कहते हैं। और जो मल जल में तैरे वह आम है। जल में डूब जाना अथवा दुर्गन्धयुक्त, सफेद चिकनाई लिये होना भी इसका लक्षण है।

आमातीसार का यत्न

धनियाँ, सोंठि, बेल की गिरी, नागरमोथा, नेत्रबाला ये सब बराबर ले जवकुट कर काढ़ा बनाकर ७ दिन अथवा रोग के सदृश १० दिन तथा १५ दिन दे तो आमातीसार और शूल ये दूर होयँ। यह धान्य-पंचक है। अथवा जंगी हड़, मोथा, सोंठि, अतीस, दारुहल्दी इन सबको बराबर ले जवकुट कर काढ़ा बनाकर ७ दिन दे तो आमाती-सार दूर होय। अथवा जंगी हड़, अतीस, सिंकी हुई हींग, सोंचर नोन, सैंधव नोन इनको बराबर ले महीन पीस आठ माशा गर्म पानी से ले तो आमातीसार जाय।

पक्वातीसार का यत्न

पठानी लोध, धवई के फुल, बेल की गिरी, मोथा, आम की गुठली, इन्द्रयव ये सब बराबर ले महीन पीस आठ माशा भैंस की छाँछ (मट्ठा) से ले तो पक्वातीसार दूर होय। अथवा अजमोद, मोचरस, सोंठि, धवई के फूल, जामुन की गुठली, आम की गुठली इन सबको बराबर ले महीन पीस आठ माशा गौ की छाँछ के साथ ले तो पक्वाती-सार जाय। यह लघुगङ्गाधर चूर्ण है।

शोकातीसार का यत्न

साँठी की जड़, इन्द्रयव, पाढ़, बायबिड़ंग, अतीस, नागरमोथा, काली मिरच इन सबको बराबर ले जवकुटकर काढ़ा बनाकर ७ दिन दे तो शोकातीसार जाय।

अतीसार में वमन होय उसका यत्न

आम की गुठली, बेल की गिरी इन दोनों को आठ माशा ले काढ़ा कर उसमें आठ माशा शहद और आठ माशा मिश्री मिलाके ७ दिन दे तो वमन सहित अतीसार जाय। अथवा सिंकी हुई मूँग, चावल की

खील इन दोनों को औटाय शहद, मिश्री मिलाय ५ दिन पिये तो वमन, अतीसार, दाह, ज्वर दूर होय।

अतीसार का भेद मोढ़ानिबाही है उसका लक्षण

कुपथ्य के करने वाले मनुष्य के वात बढ़कर कफ से मिलके मोढ़ानिबाही को करता है। जब पुरुष के क्षण क्षण में मरोड़ा होकर थोड़ा अथवा अधिक गुदा के द्वारा मल निकले उसको मोढ़ानिबाही कहते हैं। यह वात, पित्त, कफ, रुधिर के भेद से चार प्रकार का है। जिसमें बहुत पीड़ा होकर मल उतरे उसको वायु का कहिए और जिसमें दाह अधिक होय उसको पित्त का और जिसमें कफसंयुक्त मल जाय उसको कफ का कहिए तथा जिसमें रुधिरसंयुक्त मल उतरे उसको रुधिर का जानिए।

इन चारों के यत्न

बेल की गिरी, पठानी लोध, कालीमिरच इन तीनों को दो पैसे भर ले, महीन पीस चार माशा शहद में चाटे तो मोढ़ानिबाही दूर होय। अथवा धाय के फूल आठ माशा महीन पीस दही के साथ ७ दिन खाय तो मोढ़ानिबाही जाय। अथवा कैथ का रस २० माशा शहद में ७ दिन खाय तो मोढ़ानिबाही दूर होय। अथवा आठ माशा पठानी लोध दही के साथ ७ दिन खाय तो मोढ़ानिबाही जाय। ये सब लक्षण और यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं।

आमातीसार के यत्न

हड़ की छाल महीन पीस आठ माशा शहद में ५ दिन खाय तो आमातीसार जाय। अथवा भाँगरे का रस २० माशा दही के साथ ७ दिन खाय तो सब प्रकार के अतीसार दूर होयँ। अथवा आठ माशा राल में ३ तोला ४ माशा मिश्री मिलाय १० दिन खाय तो बहुत काल का हुआ भी अतीसार जाय। अथवा बेल की गिरी आठ माशा बकरी के दूध के साथ ७ दिन पिये तो रक्तातीसार जाय। यह वैद्यविनोद में लिखा है। अथवा धनियाँ, सोंठि, पीपरि, सैंधानोन, अजमोद, सिंकीहींग, सफेद जीरा इन सबको बराबर ले महीन पीस मट्ठे के साथ पिये तो अतीसार, आमशूल इत्यादि जायँ। भूख लगे और रुचि होय।

यह वृन्दनाम ग्रन्थ में लिखा है। अथवा सोंठि को जल से पीसकर गोला बनाय गोले को अरण्ड के पत्तों से लपेट डोरों से बाँध कपरौटी कर मधुरी आँच में पकावे फिर उसकी मिट्टी दूर कर सोंठि काढ़ ले। ठण्ढी कर आठ माशा शहद से ७ दिन खाय तो अतीसार जाय। अथवा एक भाग अफीम, दो भाग हींग तीन भाग लवङ्ग, चार भाग मोचरस, तीन भाग मिश्री इनको महीन पीस १ या २ रत्ती साँठी चावल के पानी में अथवा छाँछ के साथ खाय तो भयंकर भी अतीसार जाय। अथवा नागरमोथा, मोचरस, पठानी लोध, धाय के फूल, बेल की गिरी, इन्द्रयव, अफीम, शोधा पारा, शोधी गन्धक इन सबको बराबर ले पहिले पारे और गन्धक की खरल में कजली करे पीछे इन सब औषधों को उस कजली में मिलाय ३ रत्ती के प्रमाण छाँछ में खाय तो अतीसार, मोढ़ानिबाही, संग्रहणी ये सब दूर होयँ। यह गन्धार रस है। अथवा सोंठि, जायफल, अफीम, कच्चे अनार का गूदा इन सबको बराबर ले इकट्ठी कर कच्चे अनार में भरे, पीछे उसका पुटपाक कर उसकी गोली घुँघचिल के प्रमाण बनाकर एक गोली गौ की छाँछ में ७ दिन खाय तो पक्वातीसार दूर होय। अथवा अफीम को ठीकरे में मधुरी आँच से सेक कर प्रमाण से दे तो अतीसार निश्चय दूर होय। अथवा जायफल, लवङ्ग, धवई के फूल, बेल की गिरी, नागरमोथा, सोंठि, मोचरस, शिंगरफ़, अफीम इन औषधों को बराबर ले महीन पीस पोस्ता के छिलके के पानी में १ या २ रत्ती के प्रमाण गोली बाँधे, एक गोली चावल के पानी या छाँछ के साथ खाय तो निश्चय सर्व अतिसार जायँ। अथवा जायफल, छोहारा, अफीम इन तीनों को बराबर ले पान के रस में एक रत्ती प्रमाण गोली बाँधे एक गोली छाँछ के साथ ७ दिन खाय तो भयंकर भी अतीसार दूर होय। जिसके अतीसार होय वह नवीन अन्न, गर्म वस्तु, भारी और चिकना भोजन, धूप, खेद, मैथुन, स्नान, चिन्ता आदि न करे। यह वैद्यरहस्य में लिखा है।

अतीसार के असाध्य लक्षण

शूकरमांस के सदृश मल होय और प्यास, दाह, अरुचि, श्वास,

हिचकी, पसली में शूल, मूर्च्छा इत्यादि होयँ तथा किसी बात में मन न लगे, गुदा पक जाय, अग्नि मन्द हो जाय; ज्वर भी रहे, मूत्र बन्द होय, शरीर निर्बल हो जाय ये लक्षण जिस पुरुष में होयँ वह पुरुष मर जाय।

अतीसार जाता रहा हो उसके लक्षण

जिसको दिशा आये बिना मूत्र उतरे, गुदा की पवन अच्छे प्रकार से चले और कोठा हलका होय ये लक्षण होयँ तो अतीसार रोग दूर हुआ जानिए।

संग्रहणी रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

प्रथम मनुष्य के अतीसार होके जाता रहा हो फिर उस मनुष्य के कुपथ्य करने से मन्द हुई जो अग्नि सो उदर में रहनेवाली जो छठी कला जिसका नाम संग्रहणी है और वही कला अग्नि का स्थान है और खाये हुए अन्नादिक को ग्रहण करती है, वह मन्दाग्नि उस कला को बिगाड़कर कच्चे अन्न को ग्रहण कर पक्के अन्न को गुदा के द्वारा निकालती है इसी हेतु से वैद्य लोग उसका नाम संग्रहणी कहते हैं। इस संग्रहणी कला में अग्नि ही का बल है सो वह कला अग्नि को ही बिगाड़ती है।

संग्रहणी के लक्षण

प्रथम वात, पित्त, कफ, सन्निपात इन भेदों से संग्रहणी ४ प्रकार की है। वात, पित्त, कफ अधिक कुपथ्य से और अधिक भोजन करने से कच्चे ही अन्न को गुदा के द्वारा निकालते हैं, अथवा पक्के अन्न को निकालें तो भी कभी पीड़ा, कभी मल पतला और कभी बँधा उतरे यही संग्रहणी के लक्षण हैं।

वात की संग्रहणी की उत्पत्ति और लक्षण

जो पुरुष बादी वस्तु का अधिक सेवन करे और मिथ्या आहार और मैथुनादिक अधिक करे उस पुरुष के वात कुपित होकर जठराग्नि को बिगाड़ वात की संग्रहणी को करता है सो जिस पुरुष के अर्धपक्व अन्न पचे और कण्ठ सूखे, क्षुधा तृषा लगे, कानों में शब्द होय तथा पसली जंघा, पेड़ू और काँधों में पीड़ा होय, अथवा कभी कभी विसूचिका

भी हो आवे, हृदय दूखे, शरीर दुर्बल हो जाय, जिह्वा का स्वाद जाता रहे, मीठे आदि रसों के खाने की इच्छा रहे और भोजन करे तो जिह्वा आनन्द पावे तथा उदर में गोला फिया के आकार होय, पैर दुखने लगें और थोड़ा सा शीघ्रता समेत पवन सरे, बारम्बार दिशा जाय एवं श्वास, कास भी होय, ये सब लक्षण वात की संग्रहणी के हैं।

वात की संग्रहणी का यत्न

सोंठि, गुरच, नागरमोथा, अतीस इन सबको बराबर ले जवकुटकर काढ़ा बनाकर १५ दिन दे तो आम समेत वात की संग्रहणी जाय और भूख बढ़े। अथवा गौ के मट्ठे में सोंठि, पीपलामूल, पोपरि, चित्रक, चव्य इन सबको बराबर ले चूर्ण कर आठ माशा प्रतिदिन मट्ठे में मिलाके पिये और मट्ठे का ही खूब सेवन करे तो वात की संग्रहणी अवश्य जाय। अथवा शोधी गन्धक १ तोला, शोधा पारा ६ माशे दोनों की कजली कर पीछे सोंठि, काली मिरच, पीपल ये तीनों २ तोले, पाँचों नोन डेढ़ तोले, भुना अजमोद १ तोला, भुना जीरा १ तोला, भुनी हींग १ तोला, भुना सुहागा १ तोला सब औषधों से आधी भुनी हुई भंग इन सबको महीन पीस पारे और गन्धक की कजली में मिलावे फिर उस सब मिले हुए को २ दिन खरल करे तो यह लाही चूर्ण होय। इसको २ तथा ४ माशे गौ के मट्ठे में दे तो वात की संग्रहणी, मन्दाग्नि, अतीसार, बवासीर, पेट के कृमि और क्षयी इनको यह लाहीचूर्ण दूर करे।

पित्त की संग्रहणी की उत्पत्ति और लक्षण

जो पुरुष मिरच आदि गर्म वस्तु और तीखी, खट्टी, खारी अधिक खाय उसका पित्त बिगड़कर जठराग्नि को बुझा देता है और नीला, पीला, पतला, जलसहित कच्चा मल निकले तथा खट्टी डकार आवे, हृदय और कंठ में दाह, अन्न में अरुचि होय, तृषा लगे ये लक्षण जिसमें होयँ उसके पित्त की संग्रहणी जानिए।

पित्त की संग्रहणी का यत्न

रसौंत, अतीस, इन्द्रयव, तज, धाय के फूल, इन सबको बराबर ले महीन पीस चूर्णकर आठ माशा गौ के मट्ठे से अथवा शहद से व चावल के पानी के साथ १५ दिन खाय तो पित्त की संग्रहणी जाय।

अथवा जायफल, चित्रक, सफेद चन्दन, बायबिड़ंग, इलायची, भीमसेनी कपूर, बंशलोचन, जीरा सफेद, सोंठि, काली मिरच, पीपरि, तगर, पत्रज, लवङ्ग इन सबको बराबर ले महीन पीस सबकी दूनी अथवा बराबर मिश्री और बिना सेंकी भंग मिलाकर सबको महीन पीस ४ अथवा ६ माशे गो के मट्ठे के साथ १५ दिन ले तो पित्त की संग्रहणी जाय। यह वैद्यरहस्य में लिखा है।

कफ की संग्रहणी की उत्पत्ति और लक्षण

भारी, अति चिकनी और शीतल वस्तु को जो मनुष्य भोजन करके सो जाय; उस पुरुष के कफ का कोप होने से अन्न आधा पचे, हृदय दूखे, वमन और अरोचकता होय तथा मुख मीठा रहे, खाँसी और पीनस होय, पेट भारी रहे, मीठी डकार आवे, स्त्री प्यारी न लगे, आमसहित मल उतरे, बल बिना शरीर पुष्ट दीखे, आलस्य अधिक आवे, जिसमें ये लक्षण होयँ उसके कफ की संग्रहणी जानिए।

कफ की संग्रहणी का यत्न

हड़ की छाल, पीपरि, सोंठि, चित्रक, काला नोन, काली मिरच, इन सबको बराबर ले महीन पीस चूर्णकर आठ माशा प्रतिदिन मट्ठे के साथ १५ दिन खाय तो कफ की संग्रहणी जाय।

सन्निपात की संग्रहणी के लक्षण

जिसमें वात, पित्त, कफ, इन तीनों के सब लक्षण मिलें उसको सन्निपात की संग्रहणी जानिए।

सन्निपात की संग्रहणी का यत्न

बेल की गिरी, मोचरस, नेत्रबाला, नागरमोथा, इन्द्रयव, कुड़ा की छाल, इन सबको बराबर ले महीन पीस आठ माशा बकरी के दूध के साथ २५ दिन पिये तो सन्निपात की संग्रहणी जाय। अथवा अनारदाना ८ टके भर, काला नोन १ टके भर, जीरा १ टके भर, धनियाँ १ पैसे भर, सोंठि १ टके भर, काली मिरच १ टके भर, मिश्री १ टके भर, इन सबको महीन पीस आठ माशा गो के मट्ठे के साथ १ महीने पिये तो सन्निपात की संग्रहणी और आमातीसार, पसली की पीड़ा, अरुचि, गोला ये सब रोग दूर हों। अथवा

शोधा पारा, शोधी गन्धक, सिंगीमुहरा, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, भुना सोहागा, कांतीसार, अजमोद, अफीम इन सबको बराबर ले और सबकी बराबर अभ्रक ले फिर इन सबको चित्रक के काढ़े के रस में १ दिन खरलकर कालीमिरच के बराबर गोली बाँधे। १ गोली प्रतिदिन १ महीने तक खाय तो सन्निपात की संग्रहणी जाय। यह अभ्रकगुटिका है। अथवा शोधी गन्धक, पारा, अभ्रक, शिंगरफ, कांतीसार, जायफल, बेल की गिरी, मोचरस, शोधा सिंगीमुहरा, अतीस, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, धाय के फूल, घृत में सिकी हुई हड़ की छाल, कैथ, अजमोद, चित्रक, अनारदाना, इन्द्रयव, धतूरे के बीज, कंजा, अफीम ये सब बराबर ले प्रथम पारे और गन्धक की कजली करे फिर उस कजली में ये औषधियाँ महीन पीस मिलावे पीछे मिरच के प्रमाण पोस्त के छिलके के रस में गोली बाँधे १ गोली नित्य १५ दिन तक दे तो सन्निपात की संग्रहणी, अतीसार, विसूचिका इन सबको दूर करे। यह संग्रहणीकपाट रस है और वैद्यरहस्य में लिखा है।

त्रिदोष की संग्रहणी के भेद और आमवात की संग्रहणी के लक्षण

पतला, सफेद, चिकना, आमसहित मल हो और कटि में पीड़ा हो, वात अधिक सरे, कभी अच्छा हो जाय और कभी महीने पन्द्रह दिन पीछे फिर हो आवे अथवा सदैव बना रहे, आँत बोला करे, आलस्य आवे, शरीर दुर्बल हो जाय, पेट में पीड़ा रहे, दिन में पीड़ा और रात में अच्छा हो जाय, ये लक्षण जिसमें हों उसको आमवात की संग्रहणी कहिए। यह असाध्य है इसका और सन्निपात की संग्रहणी का एक ही यत्न है।

संग्रहणी का भेद घटीयंत्र है उसके लक्षण

शरीर सुन्न रहे, पसली में शूल होय, पेट बोला करे और पूर्वोक्त संग्रहणी के लक्षण भी हों उसको घटीयन्त्र कहिए। यह भी असाध्य है और जो अतीसार के असाध्य लक्षण तथा अच्छे यत्न पीछे लिखे हैं सोई इस संग्रहणी के भी जानने चाहिए।

संग्रहणी का और विशेष यत्न

कैथ ८ भाग, मिश्री ६ भाग, अजमोद ३ भाग, पीपरि ३ भाग, बेल की गिरी ३ भाग, धाय के फूल ३ भाग, अनार का गूदा ३ भाग

तंतरीक ३ भाग, काला नोन १ भाग, नागकेसरि १ भाग, धनियाँ १ भाग, तज १ भाग, पत्रज १ भाग, मिरच १ भाग, अजवाइन १ भाग, पीपलामूल १ भाग, नेत्रबाला १ भाग, इलायची १ भाग इन सबको महीन पीस गौ के मट्ठे के साथ आठ माशा ले तो संग्रहणी गोला इन सबको यह चूर्ण दूर करे। यह कपित्थाष्टक है। संग्रहणीवाला इतनी वस्तु नहीं खाय-भारी वस्तु जो आम करे, भूख बन्द करे और अतीसार में जो वस्तु वर्जित की हैं वे न करे तथा जिन वस्तुओं से भूख लगे वे खाय तो संग्रहणी जाय।

बवासीर रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

मनुष्य की गुदा में खड्ड की भितरली नाभि के सदृश ४ अंगुल के ३ चक्र हैं। एक ऊपर का, दूसरा बीच का, तीसरा नीचे का। ऊपर के चक्र का नाम प्रवाहिनी है वह मल, पवन आदि को बाहर निकालता है और बीच का चक्र मल, पवन आदि को छुटाता है इसलिए इसका नाम सर्जनो है तथा तीसरा नीचे का चक्र उस मल, पवन के छोड़ने के पोछे गुदा को ज्यों का त्यों ढक देता है इसलिए इसका नाम ग्राहणी है। इन तीनों चक्रों में बवासीर उत्पन्न होती है। यह बवासीर का स्थान है। पहिले में बवासीर हो तो साध्य और बीच के में हो वह कष्टसाध्य तथा भीतर के में हो वह असाध्य है। बवासीर वात १, पित्त २, कफ ३, सन्निपात ४, रुधिर ५ और एक वह जो शरीर के साथ ही उत्पन्न हो ६, इन भेदों से छः प्रकार की है। बादी अथवा गरम कफकारी, चिकनी, मीठी वस्तुओं के खाने से और वात, पित्त, कफ के करनेवाले मिथ्या आहार, मिथ्या विहार से कोप को प्राप्त वात, पित्त, कफ, दोष गुदा के तीनों चक्रों के ऊपर त्वचा, मांस, मेदा को बिगाड़कर गुदा के ऊपर नाना प्रकार के मांस के अंकुरों को मस्से के आकार में करते हैं उसको वैद्य बवासीर कहते हैं। वह छः प्रकार की है परन्तु लौकिक में दो प्रकार की प्रसिद्ध है एक खूनी और दूसरी बादी, जिसमें बहुतसा रुधिर जाय वह खूनी और जिसमें रुधिर न जाय परन्तु पीड़ा, चिमचिमी और खुजली आदि हो वह बादी ये दोनों उन्हीं छः के भेद में से हैं।

संपूर्ण बवासीर का पूर्वरूप

अन्न का परिपाक अच्छे प्रकार न हो और कोख ही में रहे, बद्धकोष्ठ तथा मन्दाग्नि हो, डकार बहुत आवें, शरीर कृश हो जाय, कोख में अफरा हो, अङ्ग में पीड़ा रहे ये लक्षण जिसके हों उस पुरुष के जानिए कि बवासीर होगी।

वात की बवासीर के लक्षण

जिसकी गुदा के मस्से चिमचिमी और ललाई लिये, खरदरे, कठोर, बाँके, तीक्ष्ण, फटे मुख के गुदा के ऊपर हों और छोटे बेर, कपास अथवा कदम के फूल के सदृश हों तथा शिर, पसली, कंधे, कटि, जंघा, पेड़ू इनमें व्यथा हो और छींक, डकार आवे नहीं, हृदय दूखे, भूख लगे नहीं तथा कास, श्वास, मन्दाग्नि, कर्ण में शब्द, भ्रम, वायुगोला, फिया, उदररोग, जिसमें ये हों उसके वात की बवासीर जानिए।

वात की बवासीर का यत्न

जिमीकन्द को मिट्टी में लपेट, भाड़ में खूब भरता कर, तेल अथवा घृत से लपेट १ टके भर नित्य ३१ दिन खाय तो वात की बवासीर अवश्य दूर हो। यह भावप्रकाश में लिखा है। अथवा आक के नवीन पत्रों में पाँचों नोन और तेल, खटाई प्रमाण से लगावे और उन्हें जलाय राख करे पीछे गरम पानी से वह राख चार माशा या आठ माशा १५ दिन खाय तो वात की बवासीर जाय। यह वैद्यविनोद में लिखा है। अथवा गौ के मट्ठे में सेंधा नोन प्रमाण से मिलाय अच्छे प्रकार बहुत दिन सेवन करे तो वात की बवासीर जाय और शरीर पुष्ट रहे। यह भावप्रकाश में लिखा है। अथवा हड़ की छाल ५ टके भर, चित्रक १ टके भर, सोंठि १ टके भर, शोधा भिलावाँ ५ टके भर, कालीमिरच 1 टके भर, पीपलामूल १ टके भर, पीपरि १ टके भर, सफेदजीरा 1 टके भर, चव्य 1 टके भर, पकाया जिमीकन्द पाव भर, जवाखार ४ टके भर इन सबको ले महीन पीस सबसे दूना गुड़ मिलाय १ टके भर के प्रमाण की गोली बाँधे एक गोली प्रतिदिन खाय तो वात की बवासीर निश्चय जाय। यह गुड़ कांकायन मुनि ने कहा है। अथवा बन्दाल के पत्तों को औटाय उसके पानी से शौच ले तो बवासीर के मस्से जायँ अथवा बन्दाल के ढूँढ़ो

की धूनी दे तो मस्से दूर हों। अथवा सेंधा नोन और बन्दाल के ढूँढ़ों को काँजी में पीस बवासीर में लेप करे तो मस्से जायँ। अथवा नींब के पत्ते और कनेर के पत्ते, गुड़, कड़वी तोंबी की जड़ इन सबको काँजी के पानी में पीस मस्सों में लेप करे तो मस्से दूर हों। अथवा हल्दी, कड़वी तोरई की जड़, आक के पत्ते, सहँजने की जड़, इनको काँजी के पानी में महीन पीस लेप करे तो मस्से दूर हों। अथवा अरण्ड की जड़, मुलहठी, रास्ना, अजवाइन, महुआ इनको काँजी में पीस गरमकर लेप करे, अथवा इससे सेंक करे तो मस्से की चिमचिमी जाय और मस्से झड़ पड़ें। यह वैद्यरहस्य और वैद्यविनोद में लिखा है। अथवा हीरा कसीस, सेंधानोन, पीपरि, सोंठि, कूट, करिहारी की जड़, पाषाणभेद, कनेर की जड़, बायबिड़ंग, दन्ती की जड़, चित्रक, हरताल, सत्यानासी की जड़ इन सबको बराबर ले महीन पीस इनका तिगुना तेल लेकर थूहर और आक का दूध तथा गोमूत्र ये तीनों तेल से चौगुने ले इन सबको इकट्ठा कर पकावे जब ये जल जायँ और तेल ऊपर आ रहे तब उतारकर तेल निकाल मस्सों में मर्दन करे तो मस्से दूर हों, बवासीर जाय और बली दूखे नहीं। यह क्षारतैल वैद्यरहस्य में लिखा है। अथवा पकाया जिमींकन्द १६ भाग, चित्रक ८ भाग, सोंठि ८ भाग, काली मिरच ४ भाग, त्रिफला २ भाग, पीपलामूल ८ भाग, शोधा भिलावाँ ८ भाग, शतावरि ८ भाग, बिधारा १६ भाग, भंग ८ भाग, इलायची ४ भाग, बायबिड़ंग ८ भाग इन सबको महीन पीस सब औषधों से दूना गुड़ मिलाय १६ माशे के प्रमाण गोली बाँधे और नित्य १ गोली ३० दिन तक खाय तो बवासीर, हिचकी, श्वास, कास, राजरोग, प्रमेह, फिया इन सब रोगों को यह बृहत्सूरणमोदक दूर करता है। यह वैद्यरहस्य में लिखा है।

पित्त का बवासीर के लक्षण

मस्सों का मुँह नीला, लाल, पीला, सफेदी लिये हो और उन मस्सों से गरम गरम महीन धार से रुधिर निकले और महीन कोमल मस्से हों तथा उन मस्सों का मुँह जोंक का सा हो और शरीर में दाह, ज्वर, मूर्च्छा और अरुचि हो तथा नीला, पीला, लाल, मल उतरे और त्वचा, नख, नेत्र जिसके पीले हों ये लक्षण जिसमें हों, उसके पित्त की बवासीर जानिए।

रुधिर की बवासीर के लक्षण

गुदा के मस्से घुँघचिल के रंग के सदृश हों और मस्सों से रुधिर की धार गरम और बहुत गिरे तथा गाढ़ा कच्चा लोहू निकले अथवा रुधिर के बहुत जाने से उसका शरीर ढाक के फूल के सदृश हो जाय और उसका बल, वर्ण, उत्साह, पराक्रम सब जाता रहे, शरीर सूख जाय, अधोवायु अच्छे प्रकार नहीं सरे, मस्सों में से रुधिर निकलते हुए झाग हों और कटि, जंघा, गुदा में पीड़ा हो, शरीर दुर्बल हो जाय तो रुधिर की बवासीर में वायु का भी मेल जानिए। जिसका मल चिकना, भारी और ठण्डा हो तथा मस्सों में से रुधिर की धार मोटी और गरम पड़े और गुदा में कफ ऐसा लगा रहे तो कफ संयुक्त रुधिर की बवासीर जानिए।

बवासीर के रुधिर थँभने की औषध

बड़ के पत्ते और सूखे आमले चार चार पैसे भर लेकर पाव भर गौ के मक्खन को लोहे की कढ़ाई में खूब तप्त करे फिर इन दोनों वस्तुओं को घृत में डाले। जब ये तीनों जल जायँ तब उतार ठंढीकर धातु के बासन में भर रक्खे। फिर इन सबको खरल में डाल महीन पीस एक, रस करे। बवासीरवाले रोगी को ६ माशे प्रतिदिन प्रातःकाल २१ दिन दे। फिर पानी का कुल्ला करे। कुल्ले का पानी पीवे नहीं और गरम वस्तु, बाजरा, करेला, मिरच, पेड़ा, अचार, बैंगन, टेंटी, उर्द आदि न खाय तो बवासीर का रुधिर थँभि जाय।

रुधिर रुकने का दूसरा यत्न

निबौली की मींगी, एलुआ इन दोनों को बराबर ले खरल में पानी से महीन पीस १ रत्ती प्रमाण गोली बाँधे। १ गोली रसौंत के पानी में प्रतिदिन प्रातःकाल ११ दिन ले तो बवासीर का रुधिर निश्चय थँभे।

बवासीर के मस्से दूर करने की औषध

रसौंत, चीनियाँकपूर (भीमसेनीकपूर), निबौली की मींगी इन तीनों को पानी से महीन पीस लेप करे तो मस्से दूर हों।

पित्त और रुधिर की बवासीर का यत्न एक ही है सो लिखते हैं

रसौंत को महीन पीस आठ माशा पानी में चार घड़ी भिजोकर फिर उस पानी को छान प्रतिदिन २ महीने पिये तो पित्त और रुधिर

की बवासीर अवश्य जाय। अथवा पीपल की लाख, हल्दी, मुलहठी, मँजीठ, कमलगट्टे की मींगी इन सबको बराबर ले महीन पीस चार माशा नित्य ४९ दिन तक ले तो दोनों बवासीर जायँ। अथवा नाग-केसर, मक्खन, मिश्री २० माशा प्रतिदिन बकरी के दूध में ४९ दिन ले तो दोनों बवासीर जायँ। अथवा नागकेसर, मिश्री २० माशा ४९ दिन ले तो दोनों बवासीर जायँ। अथवा १०० टकेभर कुड़ा की छाल पीस १६ सेर पानी में औटावे जब उसका आठवाँ भाग रहे तब उतार रस छान ले फिर उस रस में नागरमोथा १ टकेभर, सोंठि १ टका, काली मिरच १ टका, पीपरि १ टका, त्रिफला ३ टका, रसौंत २ टका, चित्रक २ टका, इन्द्रयव २ टका, बच १ टकाभर इन सबको महीन पीस गुड़ की चाशनी में मिलावे फिर उसमें पाव भर गौ का घृत मिलावे फिर उसको पावभर शहद में मिलाकर १ टके भर प्रतिदिन खाय तो दोनों प्रकार की बवासीर, अम्लपित्त, अतीसार, पाण्डुरोग, संग्रहणी, क्षीणता, सूजन इन सब रोगों को पृथक् पृथक् अनुपान से और ऊपर मट्ठे के सेवन से दूर करता है। यह कुड़ा की छाल का अवलेह है। अथवा बकायन के फल ६ तथा ८ प्रतिदिन मिश्री के साथ १ महीने तक ले तो दोनों प्रकार की बवासीर जायँ। अथवा सतगिलोय, शोधा पारा, शोधी गन्धक, बीजबोल, मोचरस ये सब औषध बराबर ले मिलाय के ३ माशे प्रतिदिन शहद के साथ २१ दिन खाय तो दोनों बवासीर, अतीसार, प्रमेह, प्रदर, भगन्दर ये सब रोग जायँ। यह बीजबोल बद्धरस है। अथवा वसन्तमालती रस २ रत्ती, पीपरि २ या ३ शहद और मिश्री के साथ २५ दिन ले तो दोनों बवासीर और संग्रहणी जायँ। यह यत्न वैद्यरहस्य में लिखा है। अथवा बवासीर से बद्धकोष्ठ होकर मस्सा ऊँचा हो आवे और खुजली हो तथा रुधिर बहे उस मस्से में जोंक लगाकर रुधिर निकलवा डाले तो बवासीर जाय। इसके समान और कोई यत्न नहीं है यह वैद्यरहस्य में लिखा है। पित्त और रुधिर की बवासीर को खूनी बवासीर और सबको बादी जानिए।

कफ की बवासीर के लक्षण

गुदा का मस्सा मोटा और मन्द मन्द, पीड़ा सहित ऊँचा और भारी,

कफ से लिपटा हो, खुजली अधिक हो, प्यास लगे, पेडू में अफरा और गुदा में खाज बहुत हो तथा कास, श्वास, हृदयपीड़ा, अरुचि, पीनस, मूत्रकृच्छ्र, मन्दवाय, मन्दाग्नि ये सब हों और शीत लगे तथा कफ से लिपटा मल उतरे और गुदा के मस्से से रुधिर नहीं निकले एवं शरीर का रंग पीला, चिकना, आमवात युक्त हो, ये लक्षण जिसके हों उसके कफ की बवासीर जानिए।

कफ की बवासीर का यत्न

१ टके भर अदरक का काढ़ा २१ दिन ले तो कफ की बवासीर जाय। अथवा हल्दी में थूहर के दूध की ७ पुट दे मस्से में लेप करे तो मस्से दूर हों। अथवा त्रिफला, दशमूल, चित्रक, काला निसोत, दन्ती की जड़, ये पाँचों सेरभर ले कूटकर २० सेर पानी में २१ दिन रक्खे और औषधों के साथ ७ सेर गुड़ भी जल में डाले फिर यत्न के द्वारा मदिरा के सदृश अर्क निकाले। पीछे चार माशा प्रतिदिन ले तो कफ की बवासीर जाय। यह दन्ती का अर्क है और वृन्दनाम ग्रन्थ में लिखा है।

सन्निपात की बवासीर के लक्षण

वात, पित्त, कफ के मिले हुए जो लक्षण हैं वही इसके भी जानना।

सन्निपात की बवासीर का यत्न

अदरख ३ टका, कालो मिरच १ टका, पीपरि पावभर, चव्य १ टका, नागकेसर १ टका, पीपलामूल १ टका, चित्रक १ टका, इलायची १ टका, अजमोद १ टका, जीरा १ टकाभर इन सब औषधों को महीन पीस ३० टकेभर गुड़ में आठ माशा के प्रमाण गोली बाँधे। फिर प्रातःकाल १ गोली खाकर भोजन करे और पथ्य से रहे तो सन्निपात की बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, वात का रोग, विषमज्वर, पाण्डुरोग, गोला, फिया, कास, श्वास, वमन, अतीसार, हिचकी इन सब रोगों को पृथक् पृथक् अनुपान से तत्काल दूर करे। जैसे जल में तैल डालते ही क्षणभर में फैल जाता है वैसे ही औषध भी अनुपान के बल से फैल जाती है। यह प्राणदा गुटिका सर्वसंग्रह में लिखी है। अथवा त्रिफला, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, तज, पत्रज, इलायची, बच, भुनी, हींग,

पाढ़, सज्जी, जवाखार, दारुहल्दी, चव्य, कुटकी, इन्द्रयव, सौंफ, पाँचों नोन, पीपलामूल, बेल की गिरी, अजमोद इन सबको बराबर ले महीन पीस गरम जल से आठ माशा प्रतिदिन ले तो सन्निपात की बवासीर, श्वास, शोष, हिचकी, खाँसी, भगन्दर, पसली का शूल, गोला, उदर-रोग, प्रमेह, पाण्डुरोग, अन्त्रवृद्धि, संग्रहणी, विषमज्वर, जीर्णज्वर, उन्माद इन सब रोगों को पृथक् पृथक् अनुपान से यह विजय नाम चूर्ण दूर करता है। यह भावप्रकाश में लिखा है। अथवा शोधा पारा १ टकाभर, शोधी गन्धक १ टका, ताम्रेश्वर ३ टका, कान्तीसार १ टका, सोंठि २ टका, कालीमिरच २ टका, पीपरि २ टका, शोधा सिंगी-मुहरा १ टका, दन्ती की जड़ १ टका, चित्रक २ टका, सुहागा २ टका, बेल की गिरी १ टका, जवाखार १ टका, सेंधानोन ५ टका, गोमूत्र ३२ टका, थूहर का दूध ३२ टकेभर इन सबको इकट्ठाकर कढ़ाई में मधुरी आँच से पकावे जब उसकी पिण्डी बँध जाय तब २ माशे के प्रमाण गरम पानी से ले तो असाध्य भी सन्निपात की बवासीर जाय। यह अर्शकुठार रस है और योगतरङ्गिणी में लिखा है।

शिवजी के मत से बवासीर आदि सर्वरोगहारक लोहसार

बवासीर को महा असाध्य रोग जान मनुष्यों के रोग दूर करने के अर्थ नारदजी ने श्रीमहादेवजी से पूछा कि महाराज! सुम्बल आदि के लगाने से गुदा के मस्से दूर होते हैं परन्तु उससे मनुष्य मर-मरकर कठिनता से बचे हैं इससे बवासीर दूर होने के लिये अन्य कोई सुगम उपाय बताइए। महादेवजी ने बहुत करुणाकर नारदजी को इन सबके बनाने की क्रिया बताई जिसके करने से बवासीर आदि अनेक रोग दूर होते हैं सो लिखते हैं। कान्तीलोह अथवा गजबेल का लोह ले उसके पत्र कराकर उनको कुरथी, तैल, तक्र, गोमूत्र, काँजी, त्रिफला इनमें सात सात बार पहिले शोधे पीछे उसको रितवाय उसकी बराबर मैन-सिल, सोनामक्खी ले फिर इन दोनों को रेते हुए लोह के सरवे में रख-कर चित्रक को छाल के रस से उन दोनों को उसमें सानकर प्रमाण सदृश रेते हुए लोह में उन दोनों को डाल सरवे को बन्द कर लुहारी कोयलों में धौंकनी से खूब फूँके जब वे दोनों जल जायँ और बास आनी

बन्द हो जाय तब उनको निकाले। इसी प्रकार उसको १० बार फूँके फिर त्रिफले के रस से पारे और उस रेते लोहे के आठवें भाग को चुरावे इस विधि से चार बार और भस्म करे। तदनन्तर उन सबको खरल में महीन पीसे जब वह लोहसार पानी में तिरनेवाला हो जाय तब उस लोह के सरवे में उस सार को विषखपर के रस को १ पुट उसी विधि से दे। फिर त्रिफले की १ पुट दे। अद्रक की १० पुट, जिर्मीकन्द की १० पुट, छीले के रस की १० पुट, थूहर के दूध की १० पुट, साँठी के रस की १० पुट, शतावरि की १० पुट, गिलोय के रस की २० पुट, जामुन के बकले की ७ पुट, गूलर के छिलके की ७ पुट, ग्वार के पट्ठे की १० पुट, तेंदू की सात पुट, आमले के रस की २० पुट, नींबू के रस की २० पुट, छीले के बकले के रस की १० पुट दे। सार का १२ भाग सिंगरफ डालकर उसको ग्वार के पट्ठे के रस में मिलावे और उसकी पुट दे। फिर उसमें घृत की १० पुट और शहद की १० पुट देवे। हर एक पुट में खरल करता जाय। इसी प्रकार इस सार को सिद्ध करे। पीछे इस सार को १ रत्ती के प्रमाण शहद और पीपरि के साथ ले और शिवजो का पूजन करे। ओं अमृतं भक्षयामि स्वाहा॥ इस मन्त्र से खाय और इसकी परम मात्रा चढ़ती बलानुसार ले तो ३ रत्ती प्रभात काल ही ले और इसके ऊपर खरैंटी का काढ़ा ले। इसी प्रकार तीन महीने तक इसका सेवन करे तो बवासीरमात्र दूर होकर वह पुरुष तरुण हो जाय और मन्दाग्नि, श्वास, कास, पाण्डुरोग, वातरक्त, मूत्रकृच्छ्र, अण्डवृद्धि आदि असाध्य रोग भी जायँ और बल, वर्ण बहुत बढ़े, शरीर में पुष्टता हो, आयुर्बल बढ़े सर्व रोगमात्र जायँ। इसका सेवन करनेवाला पेठा, तेल, उरद, राई, मदिरा, खटाई इतनी वस्तु न खाय। यह विधि आत्रेय और भावप्रकाश में लिखो है। अथवा बड़ी हड़ की छाल आठ माशा, पुराना गुड़ ८ माशा इन दोनों को मिलाय जल से प्रतिदिन ले। ऊपर से गौ के मट्ठे का सेवन करे तो बवासीर जाय। अथवा आँधीझाड़ा, नीलोफर की जड़, खरैंटी, दारुहल्दी, पिठवन, गोखुरू, इन्द्रयव, सारिवा के फूल, बड़ का अंकुर, गूलर का अंकुर और पीपल के कोमल पत्र इन सब औषधों को दो दो टकेभर ले जवकुटकर आठ माशे का काढ़ा कर छान ले फिर

जीवन्ती की जड़, कुटकी, पीपलामूल, कालीमिरच, सोंठि, देवदारु, शतावरि, चन्दन, रसौंत, कायफल, चित्रक, मोथा, प्रियंगु, खरैटी, सरिवन, कमलगट्टे की मींगी, मँजीठ, कटेली, बेल की गिरी, मोचरस, पाढ़ इन सबको धेले धेले भर ले महीन पीस चार सेर इनके काढ़े का रस ले उसमें गौ का घृत १ सेर डाल दोनों को कढ़ाई में चढ़ाकर औटावे जब काढ़ा जलजाय और घृत रह जाय तब उतार छानकर टके भर प्रतिदिन खाय तो बवासीर जाय अथवा शोधा पारा, शोधी गन्धक दोनों को बराबर ले कजली करे फिर कज्जली को घृत से चुपड़े और उन दोनों से दूना बीजबोल कजली में डाल रगड़कर टिकड़ी बाँधे। फिर टिकड़ी को लोहे के पात्र में आँच देकर पतली करके केले के पत्ते पर डालकर उसकी पपड़ी करे। इसका नाम पर्पटीरस है। इस रस का सेवन ३ रत्ती नित्य १५ दिन करे तो सन्निपात की बवासीर जाय। यह वैद्यविनोद में लिखा है गुदा के मस्से के सिवाय शरीर में और किसी ठिकाने पर मस्सा हो जिसको चर्मकील कहते हैं उसको अग्नि से और क्षार से दूर करे।

मस्से का यत्न

खाने का चूना, सज्जी, सुहागा, नीलाथोथा इन सबको बराबर ले नींबू के रस में ३ दिन तक भिजोवे, फिर मस्से में लगावे तो मस्सा अवश्य दूर हो। अथवा शीशे की गोली को गौ के घृत में घिस बवासीर के मस्से पर १० दिन लगावे तो बवासीर दब जाय, अथवा विष्णुकान्ता की जड़ (कोयल की जड़) आठ माशा, कालीमिरच २० दाने, भङ्ग आधा माशा प्रतिदिन घोटकर पिये तो बवासीर दबी रहे।

बवासीर के असाध्य लक्षण

जिसकी बवासीर में सूजन, अतीसार, वमन, अङ्ग में पीड़ा, तृषा, ज्वर, अरुचि, मन्दाग्नि, गुदा का पकना, हृदय में शूल ये लक्षण हों वह निश्चय मर जाता है। बवासीरवाला मलमूत्र न रोके, स्त्री से अधिक प्रसङ्ग न करे, घोड़े की सवारी न करे, उकड़ू न बैठे, करेला, बाजरा आदि गर्म वस्तु न खावे।

इति तृतीयस्तरङ्गः ॥ ३ ॥

—:०:—

अजीर्णज्वर की उत्पत्ति

मनुष्य के मन्दाग्नि १ तीक्ष्णाग्नि २ विषमाग्नि ३ समाग्नि ४ इन भेदों से चार प्रकार की जठराग्नि होती है। जिस पुरुष की कफप्रकृति होती है उसके मन्दाग्नि, जिसकी पित्तप्रकृति होती है उसके तीक्ष्णाग्नि, जिसकी वातप्रकृति होती है उसके विषमाग्नि और जिसकी वात, पित्त, कफ तीनों से मिली प्रकृति होती है उसके समाग्नि जानिए।

मन्दाग्नि के लक्षण

मन्दाग्निवाले को थोड़ा हितकारी भी खाया हुआ भोजन अच्छे प्रकार नहीं पचता और उसका शिर, उदर भारी रहता है, अङ्ग में टूटफूटन रहती है।

तीक्ष्णाग्नि के लक्षण

अत्यन्त भी भोजन किया हुआ अच्छे प्रकार पच जाता है। यह अग्नि अच्छी होती है।

विषमाग्नि के लक्षण

कभी अच्छे प्रकार और कभी बुरे प्रकार भोजन पचे और अफरा, पेट में शूल, उदर भारी, अतीसार, पेट बोला करे ये लक्षण हों तो विषमाग्नि जानिए।

समाग्नि के लक्षण

जिसके समाग्नि होती है उसके प्रमाण का भोजन और अजीर्ण में भी बहुत खाया भारी अन्न पच जाता है। यह समाग्नि तीनों अग्नियों में श्रेष्ठ है। इस अग्नि से किसी प्रकार का विकार नहीं होता और लगी भूख को किसी कारण से रोके तो भी तत्काल रोग को नहीं उपजाती। तीक्ष्णाग्नि भूख को रोकते ही तत्काल पित्त के रोग को उत्पन्न करती है। इस हेतु से समाग्नि श्रेष्ठ है। मन्दाग्नि से कफ का रोग और तीक्ष्णाग्नि से पित्त का रोग और विषमाग्नि से वायु रोग होता है। तथा समाग्नि से कोई भी रोग नहीं होता।

भस्मक रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

तीखी वस्तु आदि ले जो रूखा अन्न खाय उसके कफ घटता और वात, पित्त बढ़ता है। तब पित्त पवन से प्रेरित होकर रोगरूप भस्मक

अग्नि को उत्पन्न करता है। उस समय जो खाया जाय वह एक क्षण-मात्र में भस्म हो जाता है। इसको भस्मक रोग कहते हैं। यह तृषा, दाह, मूर्च्छा को प्रकट कर किये हुए भोजन और सब धातुओं को खाकर मनुष्यों को मार डालता है।

अजीर्णरोग की उत्पत्ति

बहुत जल पिये, विषमाशन अर्थात् समय कुसमय भोजन करे, मल और मूत्र के वेग को रोके, दिन में सोवे, रात्रि में जागे ऐसे पुरुष को पथ्य का भी भोजन अच्छे प्रकार नहीं पचता। अथवा अष्ट प्रहर ईर्षा, भय, क्रोध, लोभ अथवा कोई रोग, दीनता, रुचिकारक भोजन की अप्राप्ति, इतनी बातों से मनुष्य को अच्छे प्रकार अन्न नहीं पचता है।

अजीर्ण के सामान्य लक्षण

मन में ग्लानि, शरीर भारी, उदर में अफरा, प्रमेह, गुदा की वायु अच्छे प्रकार न बहे, बद्धकोष्ठ हो, बारम्बार पतले मल की प्रवृत्ति हो, जिसमें ये लक्षण हों उसे अजीर्ण जानिए।

अजीर्ण के भेद

अजीर्ण छः प्रकार का है। एक तो वह जो मीठा अर्थात् कच्चा ही अन्न गुदा के द्वारा जाय और कफप्रकृति लिये मन्दाग्नि हो उसको आम कहते हैं। दूसरा जो कुछ खटाई लिये मल जाय और पित्तप्रकृति लिये तीक्ष्णाग्नि हो उसको विदग्ध कहते हैं। तीसरा वह जो खाया हुआ अन्न कोष्ठ ही में रहे, पचे नहीं, उदर में शूल और अफरा रहे, कच्चा ही अन्न गुदा के द्वारा जाय और वायु की प्रकृतिकर विषमाग्नि हो उसको विष्टब्ध कहते हैं। चौथा वह जो भोजन करे और अच्छे प्रकार पचे नहीं, मल पतला जाय उसको रसशेष कहते हैं। पाँचवाँ वह जो भोजन एक दिन और रात्रि में पचे, दूसरे दिन भूख लगे यह अच्छा और निर्दोष है इसको दिनपाक कहते हैं। छठा अजीर्ण जो स्यतःसिद्ध सदा रहे उसको प्रतिवासर कहते हैं। यह अजीर्ण बाईं करवट सोने, गर्म पानी पीने, श्रम करने और हड़ के खाने से दूर हो जाता है।

आमाजीर्ण के लक्षण

शरीर भारी रहे, वमन की इच्छा रहे, जैसा भोजन करे वैसा ही

बना रहे, गर्मी के नाना प्रकार के रोग हों, धुएँ सहित खट्टी डकार आवे, पसीना हो।

विष्टब्ध अजीर्ण के लक्षण

पेट में शूल, अफरा और वायु की नाना प्रकार की पीड़ा होय, मल और अधोवायु रुक जाय, शरीर जकड़बन्द होय।

रसशेष अजीर्ण के लक्षण

अन्न में अरुचि, हृदय दूखे, शरीर भारी रहे।

अजीर्ण के उपद्रव

मूर्च्छा, प्रलाप, वमन, अङ्ग में पीड़ा और भ्रम ये उपद्रव होवें तो वह रोगी मर जाता है। मूर्ख मनुष्य अजीर्ण में पशु की भाँति भोजन करते हैं, इससे उनकी वायु स्वल्प आम दोषों से बन्द होकर जब अग्नि के मार्ग को नहीं रोकती है तब अजीर्ण में भी भूख लगती है उस कच्ची भूख में जो पुरुष भोजन करता है वह अनेक रोगयुक्त होकर मर भी जाता है।

विसूचिका के लक्षण

जिस पुरुष के मन्दाग्नि में प्रथम आमाजीर्ण हुआ और पीछे उसने पशु की भाँति अधिक गरिष्ठ वस्तु खाया तो उसके विसूचिका, मूर्च्छा, अतीसार, वमन, भ्रम, पीड़ा, हड़फूटन, जम्हाई, दाह और शरीर का वर्ण और का और हो जाता है। कम्प, हृदय और मस्तक में पीड़ा, शरीर में सुई सी चुभे, जिसमें ये लक्षण हों उसके विसूचिका कहिए। लौकिक में इसको बासी कहते हैं। इसके उपद्रव से नींद न आवे, सर्वत्र अनिच्छा, शरीरकम्प, मूत्रकृच्छ्र हो, संज्ञा जाती रहे, ये उपद्रव जिसमें हों वह मर जाय।

आलस्य के लक्षण

विष्ठब्ध वायु के अजीर्ण से पेट में अफरा हो, आँत में शब्द हो, पवन फिरने से रुककर कोख में फिरे, मल-मूत्र और गुदा की पवन भी रुक जाय, तृषा अधिक हो, डकारें बहुत आवें जिस पुरुष में ये लक्षण हों उसके आलस्य जानिए।

विलम्बिका के लक्षण

भोजन किया हुआ पचे नहीं, ऊपर नीचे जाय नहीं, दाँत, ओष्ठ,

नख काले हों, संज्ञा जाती रहे, वमन हो, नेत्र बैठ जायँ, स्वर घोंघों बोले, शरीर शिथिल हो जाय जिसमें ये लक्षण हों, वह प्राणी मर जाता है।

अजीर्ण जाता रहा हो उसके लक्षण

डकारें शुद्ध आवें, शरीर में उत्साह हो, मल-मूत्र और पवन की अच्छे प्रकार प्रवृत्ति हो, शरीर हलका हो, भूख और प्यास अच्छी तरह लगे तो जानिए कि अजीर्ण दूर हुआ।

मन्दाग्नि, अजीर्ण, विसूचिका आदि का यत्न

हड़ की छाल, सोंठि इन दोनों को आठ माशा ले महीन पीस २० माशा गुड़ के साथ जल से प्रतिदिन दे तो आमाजीर्ण जाय, क्षुधा बढ़े। अथवा हड़ की छाल, सेंधा नोन इनका सेवन प्रतिदिन करे तो अजीर्ण जाय और भूख बढ़े अथवा चित्रक, अजमोद, सेंधानोन, सोंठि, कालीमिरच ये सब बराबर ले महीन पीस आठ माशा गो की छाँछ के साथ १५ दिन ले तो क्षुधा बढ़े, मन्दाग्नि, पाण्डुरोग और बवासीर जाय। अथवा आमाजीर्ण हो तो खुरासानी बच और लवण की वमन से जाय। विदग्धाजीर्ण हो तो लंघन से जाय। विष्टब्धाजीर्ण हो तो सेंक से जाय। रसशेष हो तो सोने से जाय। अथवा सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, अजमोद, सेंधानोन, दोनों जीरे, भुनी हींग इन सबको बराबर ले चूर्णकर ४ माशा या ८ माशा खिचड़ी में घृत से मिलाय प्रथम ग्रास के साथ प्रतिदिन खाय तो अजीर्ण कभी न हो। यह हिंग्वष्टक चूर्ण है। अथवा जवाखार, सज्जी, चित्रक, पाँचों नोन, इलायची, पत्रज, भारंगी, भुनी हींग, पुष्करमूल, कचूर, निशोत, नागरमोथा, इन्द्रयव, डाँसरा (तिन्तरीक), अमलबेल, जीरा, आमला, हड़ की छाल, अजवाइन, पीपरि, तिलों का खार, सहँजने का खार, छीले का खार, सार ये सब औषधें बराबर ले महीन पीस कपरछान कर बिजौरे के रस की ८ पुट दे सिद्धकर प्रतिदिन ८ माशा जल के साथ ले तो बहुत भूख लगे और अजीर्ण, वायुगोला, उदरव्याधि, अण्डवृद्धि, वात, रक्तविकार इन सब रोगों को यह अग्निमुख चूर्ण दूर करता है। अथवा थूहर, आक, चित्रक, अरण्ड का खार, साँठी, तिल, आँधी-

झाड़ा, छिला केला, डाँसरा (तिन्तरीक) इन सबका पृथक् पृथक् खार निकाल महीन पीस अदरक के रस की ५ पुट देकर इस वैश्वानरचूर्ण को सिद्ध करे। पीछे चार माशा शीतल जल से प्रातःसमय ले तो अजीर्ण कभी न रहे, भूख बहुत बढ़े और पृथक् पृथक् अनुपान से अनेक रोगों को दूर करे। अथवा साँभरनोन ४ पैसे भर, कालानोन २ पैसे भर, बायबिड़ंग २० माशा, सेंधा नोन २० माशा, धनियाँ २० माशा, पीपरि २० माशा, पीपलामूल २० माशा, पत्रज २० माशा, काला जीरा २० माशा, नागकेसरि २० माशा, चव्य २० माशा, अमलबेत २० माशा, कालीमिरच २० माशा, जीरा ८ माशा, सोंठि ८ माशा, अनारदाना ४० माशा, तज ४ माशा, इलायची ४ माशा इन सबका महीन चूर्णकर ४ माशे गो के मट्ठे से अथवा काँजी से ले तो गोला, फिया, उदररोग, बवासीर, संग्रहणी, बद्धकोष्ठ, शूल, सूजन, श्वास, कास, आम का विकार, पाण्डुरोग, मन्दाग्नि, सब प्रकार के अजीर्ण इन सबको यह लवणभास्कर चूर्ण दूर करता है। अथवा सेंधा-नोन ४ माशा, पीपलामूल ८ माशा, चव्य १२ माशा, चित्रक १६ माशा, सोंठि २० माशा, हड़ की छाल, २४ माशा इनसे दूनी मिश्री ले। इस तोल से यह चूर्णकर ८ माशा प्रतिदिन ले तो अजीर्ण दूर हो, क्षुधा बहुत लगे। यह बड़वानलचूर्ण है। अथवा शोधी गन्धक २ टके भर, पारा १ टकेभर, सार लोहभस्म २० माशा, ताम्रेश्वर २० माशा, पहले पारे और गन्धक की कजली करे फिर इन दोनों को उस कजली में मिलावे तदनन्तर इन चारों को लोहे के पात्र में अग्नि पर चढ़ाकर पिघलावे। फिर चतुराई से अरण्ड के पत्तों पर डाले और उसको महीन पीसकर खरल में डाल १०० टके भर जंभीरी नींबू के रस में साने। फिर उसमें बिजोरे का रस १०० टके भर सुखावे। तदनन्तर इसमें पीपरि, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि इनका काढ़ा करे, उस काढ़े के ५० पुट दे। फिर जब यह सब सूख जाय तब इन सबकी बराबर भुना हुआ सुहागा डाले और सुहागे से आधा काला नोन मिलावे तथा सबकी बराबर काली मिरच डाले। फिर इसमें चने के खार की ७ पुट दे। तैयार कर इस क्रव्यादि रस को अच्छे प्रकार सुन्दर पात्र में रख

छोड़े, फिर इस रस में से २ माशे ले और ऊपर से सेंधानोन मिलाके गौ का मट्ठा पिये तो अजीर्णमात्र तत्काल दूर हों और अतिगरिष्ठ भोजन किया हुआ भी तत्काल पच जाय तथा शूल, गोला, अफरा, फिया, उदर रोग आदि को भी यह क्रव्यादि रस दूर करता है।

अथवा जवाखार, सज्जी, सुहागा, शोधा पारा, शोधी गन्धक, पीपरि, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि इन सबको बराबर ले और सबकी बराबर भुनी भंग तथा भंग से आधी सहँजने की जड़ ले। फिर इनको भंग के रस में एक दिन खरल करे, पीछे सहँजने के रस में एक दिन खरल करे, तथा चित्रक के रस में एक दिन खरल कर धूप में सुखावे और इसको सकोरे में रख; कपरौटी कर फूँक दे। फिर निकालकर ७ दिन अदरक के रस में खरल करे। १ अथवा २ रत्ती के प्रमाण शहद से ले और ऊपर से गुड़ को गरम जल से ले तो तत्काल सब अजीर्ण और अतीसार, संग्रहणी, कफरोग, वमन, अरुचि इन सबको दूर करे और क्षुधा बढ़ावे। यह ज्वालानल रस भावप्रकाश में लिखा है। अथवा शोधी गन्धक, काली मिरच, चूक, काला नोन इनको बराबर ले महीन पीस ८ माशा पानी के साथ ले तो बद्धकोष्ठ दूर हो। अथवा पारा २० माशा, शोधी गन्धक २० माशा, शोधा सिंगीमुहरा २० माशा, काली मिरच ४० माशा, जायफल ८ माशा। प्रथम पारे और गन्धक की कज्जली करे, फिर उस कजली में इन सबको मिलाय डाँसरे (तिन्तरीक) के रस में ५ दिन खरल करे। फिर १ रत्ती प्रमाण ७ दिन खाय तो भूख बढ़े और अजीर्ण तत्काल मिटे। यह रामबाण रस है, अथवा शोधा पारा, शोधी गन्धक, अजमोद, त्रिफला, जवाखार, चित्रक, सेंधा नोन, सफेद जीरा, काला नोन, बायबिड़ंग, साँभर नोन, सोंठि, काली मिरच, पीपरि इन सबको बराबर ले और सबकी बराबर बकायन के फल ले। प्रथम पारे और गन्धक की कजली कर उसमें ये सब वस्तुएँ मिलाय जंभीरा के रस में ७ दिन खरल करके एक रत्ती प्रमाण गोली बनावे। प्रतिदिन एक गोली खाय तो भूख बहुत लगे। इसके ऊपर हड़ की छाल और सोंठि इनके काढ़े में गुड़ मिलाकर ले तो सर्व रोग दूर हों। यह अग्नितुण्डावती गोली है। अथवा सोंठि १ भाग,

काली मिरच २ भाग, पीपरि ३ भाग, सेंधानोन ४ भाग, शोधी गन्धक ५ भाग इन सबको महीन पीस नींबू के रस में १० दिन खरल करे। फिर १ रत्ती के प्रमाण गोली बाँधे। एक गोली प्रतिदिन खाय तो क्षुधा बढ़े। यह क्षुद्रबोध रस है अथवा बिड़ नोन, काला नोन, अजवाइन, दोनों जीरे, हड़ की छाल, सोंठि, काली मिरच, पीपरि, चित्रक, अमल-बेत, अजमोद, धनियाँ, डाँसरा (तिन्तरीक) इनको बराबर ले महीन चूर्णकर २ टंक प्रतिदिन ले तो पत्थर भी पच जाय भोजन क्या वस्तु है, अथवा शोधी गन्धक, काली मिरच, पीपरि, सोंठि, सेंधानोन, जवा-खार, लवङ्ग इन सबको बराबर ले महीन पीस नींबू के रस में १० दिन खरल करे। फिर १ रत्ती प्रमाण गोली बाँधे। प्रतिदिन एक गोली खाय तो क्षुधा अधिक हो। अथवा हड़ की छाल ६ भाग, पीपरि ४ भाग, चित्रक २ भाग, सेंधा नोन २ भाग इनका महीन चूर्णकर ८ माशा जल के साथ खाय तो अजीर्ण जाय और क्षुधा लगे। अथवा भुना सुहागा ८ माशा, पीपरि ८ माशा, शोधा सिंगीमुहरा ८ माशा, हींग ८ माशा, काली मिरच ८ माशा इन सबको महीन पीस नींबू के रस में १० दिन खरल करे। फिर मटर के प्रमाण गोली बाँधकर १ तथा २ गोली जल के साथ खाय तो अजीर्ण और विशूचिका दूर हों। यह अजीर्ण-कण्टक रस है। अथवा शोधा सिंगीमुहरा ८ माशा, भुना सुहागा ८ माशा, कालीमिरच ८ माशा, सेंधानोन ८ माशा इन सबको महीन पीस फिर इसमें अदरख का पाव सेर रस डालकर सुखावे और दही को बाँध उसका १ सेर जल ले इसमें डाल सुखा ले और नींबू का भी १ सेर रस उसमें सुखावे फिर इसकी गोली २ रत्ती के प्रमाण बाँधे। एक गोली प्रतिदिन जल से ले तो अजीर्ण, अफरा, उदररोग, गोला, फिया, शूल ये सब जायँ और क्षुधा बढ़े। यह क्रव्यादि रस है। अथवा दालचीनी ४० माशा, इलायची ४० माशा, लवङ्ग ५ तोले, भुना सुहागा ४० माशा, चित्रक ४० माशा, कालीमिरच १० माशा, सेंधा-नोन ३ पैसे भर इनको महीन पीस गर्म जल से ४ माशा के प्रमाण ले तो अजीर्ण तत्काल जाय। यह भी क्रव्यादि चूर्ण है ये सब यत्न वैद्य-रहस्य में लिखे हैं। अथवा सोंठि, काली मिरच, पीपरि, त्रिफला, पाँचों

नोन, भुना सुहागा, जवाखार, सज्जी, पारा, शोधी गन्धक, शोधा सिंगी-मुहरा इन सबको बराबर ले पारे और गन्धक की कजली करे, उस कजली में इन सबको मिलाय अदरख के रस की ७ पुट देकर १ रत्ती प्रमाण की गोली बाँधे। १ या २ गोली लवङ्ग के क्वाथ के साथ ले तो अजीर्ण तत्काल जाय और क्षुधा बढ़े। यह क्षुधासागर रस है। अथवा १०० बड़ी हड़ ले गौ के मट्ठे में औटावे। फिर उनकी गुठली निकाल उन हड़ों में सोंठि, काली मिरच, पीपरि, चव्य, चित्रक, दालचीनी, पाँचों नोन, भुनी हींग, जवाखार, सज्जी, दोनों जीरे, अजमोद, निशोत इन सबको बराबर ले महीन पीस नींबू के रस की १० पुट दे और इनके समान चूक मिलाय ये सब औषध भरे। पीछे उनको धूप में सुखाय १ हड़ प्रतिदिन खाय तो अजीर्ण, मन्दाग्नि, उदररोग, गोला, शूल, संग्रहणी, बद्धकोष्ठ अफरा, आमवात इन सबको दूरकर क्षुधा बहुत बढ़ावे। यह अमृतहरीतकी है। अथवा कालीमिरच २८ माशा, अजवाइन ८ माशा, चित्रक ८ माशा, पीपरि २८ माशा, काला नोन ८ माशा, साँभर नोन ८ माशा, पारा ४ माशा, सेंधा नोन ८ माशा, शोधी गन्धक ४ माशा, पीपलामूल ८ माशा, सोंठि ५ पैसे भर, हड़ की छाल ५ पैसे भर, बहेड़े की छाल २० माशा, जीरा ४ माशा, चव्य २० माशा इन सबसे आधी लवङ्ग ले। पहिले पारे और गन्धक की कजली करे। फिर इन औषधियों को महीन पीस कजली में मिलाय अदरक के रस की १० पुट दे और सबकी बराबर चूक मिलाय २ माशे प्रमाण की गोली बाँधे। १ गोली जल से खाय तो अजीर्ण तत्काल जाय और इसका सेवन सदैव करे तो क्षुधा बढ़े और सब रोगमात्र दूर हों और शरीरपुष्टि करे। यह लवङ्गामृत गुटिका है। ये सब वैद्यरहस्य में लिखे हैं। अथवा दालचीनी २० माशा, लवङ्ग ४० माशा, दोनों जीरे ४० माशा, सेंधा नोन ६ तोले ८ माशा, सोंठि ४० माशा, कालीमिरच २० माशा, अजमोद २० माशा, हड़की छाल २० माशा, पत्रज २० माशा, डाँसरा (तिन्तरीक) ४० माशा, काला नोन ४० माशा, निसोत ५ तोले, सोनामक्खी पावभर, अनारदाना आधासेर, इन सबको महीन पीस नींबू के रस की पुट दे। फिर इन सबके बराबर चूक मिलाय सुखाय अच्छे

प्रकार अमृतबान में धर रक्खे। १ टंक जल से ले तो अजीर्ण, बद्ध-कोष्ठ, मन्दाग्नि, उदररोग, वायुगोला, फिया आदि सर्व रोगों को दूर करे। इस चूर्ण का नाम राजवल्लभ है। अथवा हड़ की छाल, पीपरि, काला नोन इन सबको बराबर ले महीन पीस ५ माशा गर्म जल के साथ ले तो अफरा आदि अब अजीर्ण जायँ। अथवा मुनक्का, किश-मिश, हड़ की छाल, मिश्री इन तीनों को बराबर ले शहद मिलाकर ८ माशा की गोली करे। एक गोली जल से ले तो अजीर्ण जाय। यह वृन्दनाम ग्रन्थ में लिखा है। अथवा जीरा, काला नोन, सोंठि, पीपरि, सेंधा नोन, अजमोद, भुनी हींग, हड़ की छाल इन सबको धेले धेले भर और निशोत २ टके भर लेकर महीन चूर्ण कर ८ माशा गर्म जल से ले तो तत्काल अजीर्ण जाय और भूख लगे यह जीरकादि चूर्ण योगतरङ्गिणी में लिखा है। अथवा अजमोद, हड़ की छाल, चित्रक, लवङ्ग, दालचीनी, सेंधा नोन इन सबको बराबर ले महीन पीस ८ माशा पानी के साथ ले तो अजीर्ण जाय और क्षुधा बढ़े। यह अजमोदा-दिक चूर्ण सर्वसंग्रह में लिखा है। अथवा शोधी गन्धक १ टके भर, चित्रक ८ माशा, कालीमिरच ८ माशा, पीपरि २० माशा, जवाखार ८ माशा, सेंधा नोन ४ माशा, काला नोन ४ माशा, साँभर नोन ४ माशा इन सबको महीन पीस नींबू के रस में ७ दिन खरल करे। फिर ४ माशा के प्रमाण गोली बाँधकर एक गोली जल से ले तो अजीर्ण, शूल, आम का दोष, गोला, अफरा आदि सब तत्काल दूर हों। यह गन्धकवटी सर्वसंग्रह में लिखी है।

विसूचिका का यत्न

एक लहसुन की पोटी की गुली, जीरा, शोधी गन्धक, सेंधा नोन, सोंठि, काली मिरच, पीपरि, भुनी सींग इन सबको बराबर ले खरल में महीन पीस नींबू के रस की ५० पुट दे। फिर इसकी गोली छोटे बेर के प्रमाण करे। एक गोली जल से दे तो विसूचिका, अजीर्ण मिटे और क्षुधा बढ़े। यह जीरकादिक लोलिंबराज में लिखा है। अथवा बायबिड़ंग, सोंठि, पीपरि, हड़ की छाल, आमला, बहेड़ा, खुरासानी बच, गिलोय, शोधा भिलावाँ, शोधा सिंगीमुहरा (सिंगिया) इन सब

को बराबर ले महीन पीस गोमूत्र में १ दिन खरल करके १ रत्ती प्रमाण गोली बाँधे। एक गोली अदरक के रस में दे तो अजीर्ण जाय और दो गोली दे तो विसूचिका जाय, तीन गोली दे तो सर्प का काटा अच्छा हो और चार गोली दे तो सन्निपात जाय। यह संजीवनी गुटिका है। अथवा भुना सुहागा २० माशा, पारा २० माशा, शोधी गन्धक २० माशा, शोधा सिंगीमुहरा २० माशा, पीली कौड़ी की राख ८ माशा सज्जी ८ माशा, पीपरि ८ माशा, सोंठि ८ माशा, काली मिरच ८ माशा, प्रथम पारे और गन्धक की कजली करे, फिर इन सब औषधियों को जंभीरी नींबू के रस में ८ दिन खरलकर १ रत्ती के प्रमाण की गोली बाँधे १ गोली विसूचिकावाले को दे तो विसूचिका तत्काल अच्छी हो। यह अग्नि-कुमार रस है। अथवा आक के पत्तों का रस १ सेर धतूरे के पत्तों का रस १ सेर, थूहर का दूध १ सेर, सहँजने की जड़ का रस १ सेर, कूठ २ टके भर, सेंधा नोन २ टके भर, तिल का तेल १ सेर, काँजी का पानी ४ सेर इन सबको इकट्ठा कर कड़ाही में मधुर आँच से पकावे। जब रसमात्र जल जाय और तेल रह जाय तब इस तेल को मर्दन करे तो विसूचिका और पक्षाघात जाय। यह वैद्यरहस्य में लिखा है। अथवा कणगच अर्थात् कंजा की जड़, आँधीझाड़े की जड़, नींब की छाल, गिलोय, कुड़ा की छाल इन सब को बराबर ले काढ़ा बनाकर ३ दिन दे तो विसूचिका जाय। अथवा हड़ की छाल, बच, भुनी हींग इन्द्रयव, भाँगरा, काला नोन, अतीस इनको बराबर ले महीन पीस ८ माशा जल के साथ ले तो विसूचिका जाय। अथवा इलायची ४ माशे, लवङ्ग ४ माशे, अफीम १ माशा, जायफल १० माशे इनको महीन पीस ४ माशे गर्म जल के साथ ले तो विसूचिका तत्काल जाय। अथवा चूक को औटाय के उसका १ सेर रस निकाल उसमें सेंधा नोन २० माशा, कूट ४ माशा, तेल पाव भर इन सबको इकट्ठाकर मन्द अग्नि से पकावे। जब रस जल जाय और तेलमात्र रह जाय तब उसको मर्दन करे तो विसूचिका दूर होय। अथवा यव का आटा ४ पैसे भर, जवाखार २० माशा इनको मट्ठे में पकाकर गर्म लेप करे तो पेट का शूल, विसूचिका दूर होय। अथवा कड़ुवे तेल को

गर्म गर्म मर्दन करे तो कोख का दर्द दूर होय। अथवा विसूचिका में तृषा बहुत बढ़े तो लवङ्ग का काढ़ा देने से तृषा दूर होय। अथवा विसूचिका बहुत बढ़े तो उसकी पसली दाग दे तो विसूचिका दूर होय। अथवा बिजौरा की जड़, सोंठि, काली मिरच, पीपरि, हल्दी, कणगच (कंजा की जड़) इनको बराबर काँजी के पानी में महीन पीस अंजन करे तो विसूचिका जाय। यह सर्वसंग्रह में लिखा है।

अलसबिलम्बिका का यत्न

साबुन २४ माशा, नीलाथोथा ४० माशा इनको जल से महीन पीस गुदा में लगावे तो तत्काल बन्द छूटे और अलसबिलम्बिका जाय। अथवा दारुहल्दी, चोक अर्थात् सत्यानाशी की जड़, कूट, सौंफ, हींग, सेंधानोन इनको बराबर ले काँजी के पानी में महीन पीस गर्मकर उदर में लेप करे तो अलसविलम्बिका दूर होय। अथवा यव का आटा आध पाव उसमें १ टके भर सज्जी डाल पकाकर कोख में गर्म गर्म लेप करे तो विसूचिका और अलसविलम्बिका दूर होय।

कृमिरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

कृमि दो प्रकार के हैं एक बाहर के दूसरे भीतर के—बाहरवालों का जन्म दो स्थानों से है; एक मल से उपजे, दूसरे पानी से। जैसे जूँ, लीख, जमजूँ।

भीतर के कृमि की उत्पत्ति

अजीर्ण में भोजन करे और प्रतिदिन मीठा खट्टा पतला खाय और भोजन करके परिश्रम न करे, दिन में सोवे और विरुद्ध भोजन करे तो पुरुष के पेट में कृमि पड़ जाते हैं। ये कृमि गिड़ोला आदि भेदों से २० प्रकार के हैं।

उदर में गिड़ोला आदि कृमि पड़ गये होयँ उसके लक्षण

ज्वर हो आवे और शरीर का रंग और का और हो जाय पेट में शूल हो, हृदय दूखे, वमन, भ्रम, भोजन में अरुचि, अतीसार, ये लक्षण जिसके हों उसके जानिए कि पेट में कृमि गिड़ोला है।

कृमिरोग के दूर करने का यत्न

खुरासानी अजवाइन ८ माशा, बासी पानी से ७ दिन ले तो पेट

के कृमि जायँ। अथवा ४ माशा पलाशपापड़ा (ढाक के बीज) को पानी में पीस ८ माशा शहद डाल ५ दिन पिये तो पेट के कृमि जायँ। अथवा ८ माशा बायबिड़ंग महीन पीस शहद के साथ ७ दिन ले तो पेट के कृमि जायँ। अथवा बायबिड़ंग, सेंधा नोन, हड़ की छाल, जवाखार इन सबको बराबर ले महीन पीस ८ माशा मट्ठे के साथ ७ दिन पिये तो पेट के कृमि झड़ पड़ें। अथवा ४० माशा नींबू के पत्तों के रस में ४ माशा काला नोन मिलाय ७ दिन पिये तो पेट के कृमि जायँ। अथवा पारा ४ माशा, शोधी गन्धक ८ माशा, खुरासानी अजवाइन १ तोला, बकायन के फल १६ माशा, पलास-पापड़ा (ढाक के बीज) २० माशा इन सबको महीन पीस ८ माशा नित्य २० माशा शहद के साथ ७ दिन खाय तो पेट के कृमि जायँ। यह सर्वसंग्रह में लिखा है। अथवा नागरमोथा, त्रिफला, देवदारु, सहँजने की जड़ इनको बराबर ले जवकुट कर काढ़ा बनाकर ७ दिन ले तो पेट के कृमि जायँ। अथवा बायबिड़ंग, सेंधा नोन, भुनी हींग, पीपरि, कपीला (कमीला) काला नोन इन सबको बराबर ले महीन पीस ८ माशा गर्म पानी से ७ दिन ले तो पेट के कृमि जायँ। यह वैद्यविनोद में लिखा है।

शिर में जूँ, लीख पड़ जायँ उनके दूर करने का यत्न

धतूरे के पत्तों के रस में अथवा नागरबेल के पत्तों के रस में पारा मिलाकर बालों में लेप करे तो जूँ लीख मर जायँ।

गुदा में चुन्ने पड़ गये हों उसका यत्न

हींग को जल में पीस गुदा में लेप करे तो चुन्ने जायँ। अथवा काहू के फूल, बायबिड़ंग, करिहारी की जड़, सफेद चन्दन, राल, खस, कूट, भिलावाँ, लोबान इन सबको बराबर मिलाय धूनी दे तो चुन्ने और घर के मच्छड़, खटमल भी जायँ। यह वैद्यरहस्य और वैद्यविनोद में लिखा है।

पाण्डु, कामला, हलीमक रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

पाण्डुरोग वात, पित्त, कफ, सन्निपात, मट्टी खाना, इन भेदों से ५ प्रकार का उत्पन्न होता है।

पाण्डुरोग की उत्पत्ति

अधिक खेद करने से, खट्टी अथवा तिक्त वस्तु खाने से अथवा दिन

में सोने से वात, पित्त, कफ पुरुष के रुधिर को बिगाड़ शरीर की त्वचा को पीली कर देते हैं।

पाण्डुरोग के पूर्वरूप के लक्षण

त्वचा फटने लगे, अङ्ग में पीड़ा हो, मिट्टी खाने की इच्छा रहे, नेत्रों पर कुछ सूजन हो, मल तथा मूत्र पीले हों, अन्न पचे नहीं ये लक्षण जिसमें हों तो वैद्य बतला दे कि तुम्हारे पाण्डुरोग होगा। इस पाण्डु-रोग को लौकिक में पीलिया भी बोलते हैं।

वात के पाण्डुरोग के लक्षण

जिसकी त्वचा, मूत्र, नेत्र रूखे हों अथवा काले और लाल हों और शरीर में कम्प, पीड़ा, अफरा और भ्रमादिक हों तो वात का पाण्डुरोग जानिए।

पित्त के पाण्डुरोग के लक्षण

मल, मूत्र, नेत्र जिसके पीले हों, शरीर में दाह, तृषा, ज्वर हो और पतला मल, शरीर की त्वचा पीली हो तो पित्त का पाण्डुरोग जानिए।

कफ के पाण्डुरोग के लक्षण

मुख से कफ निकले, शरीर में सूजन हो, तन्द्रा, आलस्य और शरीर भारी हो, त्वचा, मूत्र और नेत्र सफेद हों तो कफ का पाण्डु-रोग जानिए।

सन्निपात के पाण्डुरोग के लक्षण

कषैली मिट्टी खाने से वात का कोप और मीठी मिट्टी खाने से कफ का कोप होता है। फिर वही मिट्टी सातों धातुओं को और खाये हुए भोजन को रूखा कर डालती है। वही मिट्टी पेट में बिगड़कर पकी हुई नसों को फुला देती है, अथवा रस को बहने से रोक देती है तब सब इन्द्रियों का बल जाता रहता है और शरीर का वीर्य और पराक्रम भी जाता रहता है। फिर वही मिट्टी शरीर की त्वचा को पीली करके बल, वर्ण और अग्नि का नाश कर देती है तब उसे तन्द्रा, आलस्य, श्वास, कास, शूल, बवासीर, अरुचि और नेत्र, पाँव, उदर, इन्द्रिय इतने अङ्गों पर सूजन हो, पेट में कृमि, अतीसार, मल, कफ, रुधिर

आदि से मिले ये सब लक्षण हों तो मिट्टी खाने का पाण्डुरोग जानिए।

पाण्डुरोग के असाध्य लक्षण

जिसके शरीर का रुधिर जाता रहे, शरीर सफेद हो जाय तथा दाँत, नख, नेत्र पीले हों और सब पदार्थ पीले ही पीले दीखें, सब शरीर में सूजन, अतीसार और ज्वर भी हो। ऐसा पाण्डुरोग हो तो वह रोगी मर जाय।

कामलारोग के लक्षण

जो पाण्डुरोगी गर्म वस्तु बहुत खाता है उसका पित्त रुधिर और मांस को दग्ध करता है और नेत्र, त्वचा, नख, मुख आदि अंग हल्दी के सदृश पीले हो जाते हैं तथा मल, मूत्र रुधिर से उतरें, इन्द्रियों का बल जाता रहे, दाह हो, अन्न पचे नहीं, दुर्बलता और अरुचि हो। ये लक्षण हों तो कामलारोग जानिए।

हलीमकरोग के लक्षण

जिस पाण्डुरोगी के वात, पित्त बढ़े और त्वचा हरी, पीली, काली हो जाय और बल उत्साह जाता रहे तथा तन्द्रा, मन्दाग्नि, सूक्ष्म-ज्वर, दाह, तृषा, अरुचि, भ्रम हो और स्त्री का संग प्यारा न लगे, अङ्ग में पीड़ा हो तो हलीमकरोग जानिए।

पाण्डुरोग का यत्न

लोहासार को गोमूत्र में ७ दिन पकावे। फिर महीन पीस जल से ४ माशा गुड़ के साथ ४ रत्ती प्रमाण १५ दिन तक ले तो पाण्डु-रोग जाय। अथवा मण्डूर को गोमूत्र में पकाय चार माशा गुड़ के साथ १५ दिन ले तो पाण्डुरोग जाय। अथवा साँठी की जड़, निशोत, सोंठि, मिरच, पीपरि, बायबिडंग, दारुहल्दी, चित्रक, कूठ, हल्दी, त्रिफला, दन्ती, चव्य, इन्द्रयव, कुटकी, पीपलामूल, नागरमोथा, काकड़ासिंगी, खुरासानी अजवाइन, कायफल इन सबको टके टके भर ले महीन पीसे और सबका दूना मण्डूर मिलावे फिर इन सबको अष्टगुणित गोमूत्र में पकाकर ४ माशा प्रमाण की गोली बाँधे। १ गोली गो के मठे के साथ मिला के १५ दिन ले तो असाध्य भी पाण्डुरोग जाय और कामला, हलीमक, श्वास, कास, राजरोग, ज्वर, सूजन,

शूल, फिया, अफरा, बवासीर, संग्रहणी, कृमिरोग, वातरक्त, कोढ़, इन सब रोगों को यह पुनर्नवादि मण्डूररस दूर करता है। अथवा हड़ की छाल २० माशा, बहेड़े की छाल २० माशा, आमला २० माशा, सोंठि २० माशा, कालीमिरच २० माशा, पीपरि २० माशा, नागरमोथा २० माशा, बायबिड़ंग २० माशा, चित्रक २० माशा, मारा हुआ सार ९ पैसे भर इन सबको महीन पीसे। फिर सार मिलाकर ९ रत्ती ले शहद के साथ या घृत के साथ गौ के मट्ठे के साथ अथवा गोमूत्र के साथ ले तो पाण्डुरोग, सूजन, मन्दाग्नि, बवासीर, अरुचि इन सब रोगों को दूर करे। इसके खाने की यह युक्ति है कि प्रथम दिन दो रत्ती खाय फिर प्रतिदिन २ रत्ती के हिसाब से १८ रत्ती तक बढ़ावे यह नवायस चूर्ण है। अथवा अड़ूसा, गिलोय, नींब की छाल, त्रिफला, चिरायता, कुटकी इन सबको बराबर ले जवकुटकर काढ़ाकर शहद मिलाय १० दिन ले तो पाण्डुरोग, रक्तपित्त, कामला, हलीमक ये सब दूर हों। अथवा त्रिफला, गिलोय, दारुहल्दी, नींब इनके पृथक् पृथक् रसों में शहद मिलाय १० दिन पिये तो पाण्डुरोग, कामला, हलीमक ये सब जायँ। अथवा दड़घल के रस का नेत्रों में अञ्जन करे तो पाण्डुरोग, कामला, हलीमक जायँ। यह वैद्यरहस्य में लिखा है। अथवा चिरायता, कुटकी, देवदारु, नागरमोथा, गिलोय, परवल के पत्ते, धमासा, पित्तपापड़ा, नींब की छाल, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, चित्रक, त्रिफला, बायबिड़ंग इन सबको बराबर ले महीन पीस इनकी बराबर सार मिलाय ४ माशा शहद के साथ अथवा मट्ठे के साथ प्रतिदिन खाय तो पांडुरोग, कामला, हलीमक, सूजन, प्रमेह, संग्रहणी, श्वास, कास, रक्तपित्त, बवासीर, आमवात, गोला, कोढ़ ये सब दूर हों। यह अष्टादशाङ्गावलेह भावप्रकाश में लिखा है। अथवा कड़ुवी तूंबी की गूदी के रस की नास ले तो तत्काल पीलिया जाय। पाण्डुरोगवाला यव, गेहूँ, चावल, मूँग, अरहर, मसूर ये अनाज खाय।

इति चतुर्थस्तरङ्गः ॥ ४ ॥

—:(०):—

रक्तपित्त की उत्पत्ति और लक्षण

बहुत धूप में रहने, खेद करने, बहुत चलने, अधिक मैथुन और शोच करने तथा तीक्ष्ण, गर्म, खारी, कड़ुवी वस्तु अथवा नोन, खटाई के खाने से पित्त दग्ध होकर शरीर के रुधिर को दग्ध करता है तब उसका रुधिर दो प्रकार से प्रवृत्त होता है। एक ऊपर, दूसरा नीचे। ऊपर तो नाक, नेत्र, कान, मुख से और नीचे लिङ्ग, योनि, गुदा से प्रवृत्त होता है और अधिकतर जब रुधिर कुपित होता है तो सब बालों से प्रवृत्त होता है।

रक्तपित्त का पूर्वरूप

अङ्गों में पीड़ा और वमन हो, ठण्ढा अच्छा लगे और मुख से धुआँ निकले, रुधिर की बास मुख से आवे तो जानिए कि रक्तपित्त होगा।

कफ के रक्तपित्त के लक्षण

शीतल, पीला, चिकना, मोर के पंख सदृश रुधिर हो तो कफ का जानिए।

वात के रक्तपित्त के लक्षण

काला, झाग समेत, महीन धार लिये, सूखा रुधिर हो तो वात का जानिए।

पित्त के रक्तपित्त के लक्षण

कत्थे के काढ़े के समान काला, गोमूत्र और स्याही के सदृश चिकना रुधिर हो तो पित्त का जानिए और ये सम्पूर्ण लक्षण रुधिर में पाये जायँ तो सन्निपात का जानिए। नाक, मुख, आँख, कान में होकर रुधिर जाय तो साध्य जानिए और गुदा, लिङ्ग, योनि में होकर जाय तो याप्य जानिए और दोनों मार्गों से जाय तो असाध्य जानिए।

रक्तपित्त के उपद्रव

जिसका शरीर रोगों से क्षीण, वृद्ध और दुर्बल हो तथा लंघन करता हो तो असाध्य जानिए और श्वास, कास, ज्वर, वमन, मद-युक्त, पाण्डुरोगी के सदृश दाह, मूर्च्छा और अधैर्यवान् के सदृश हृदय-शूल, तृषा और अतीसारवाले के सदृश भोजन में अरुचि हो तो

उपद्रव जानिए। रक्तपित्तवाले को आकाश लाल दीखे, नेत्र लाल हों तथा रुधिर की डकारें आवें, सर्वत्र रुधिर सा दीखे तो असाध्य जानिए।

रक्तपित्त का यत्न

नकसीरवाले के मुख से रुधिर जाय तो हड़, त्रिफला, निशोत, अमलतास इनका जुलाब दे तो रक्तपित्त जाय और नीचे के मार्ग का रक्तपित्त वमन कराने से जाता है अथवा खस, कमलगट्टे, अड़ूसा, गिलोय, मुलहठी, महुआ, नागरमोथा, रक्तचन्दन, धनियाँ इन सबको बराबर ले जवकुट कर काढ़ा बनाकर शहद डालकर ले तो रक्तपित्त जाय। अथवा प्रियंगु के फूल, पठानी लोध, रसौंत, चक्की की मिट्टी, अड़ूसा इन सबको बराबर ले काढ़ा बनाकर शहद, मिश्री मिलाय १० दिन ले तो रक्तपित्त जाय। अथवा दूब के रस की या अनार के फूलों के रस की वा अमलतास के रस की अथवा हड़ को शीतल जल में पीस उसकी नास दे तो नकसीर बहना दूर हो। अथवा दूब और आमले को पीसकर मस्तक में लेप करे तो नकसीर तत्काल बन्द हो। अथवा पक्का गूलर वा छुहारा या किशमिश शहद से खाय तो रक्त-पित्त जाय। ये सम्पूर्ण वैद्यविनोद में लिखे हैं। अथवा धनियाँ, आमला, अड़ूसा, किशमिश, पित्तपापड़ा इन सबको बराबर ले २० माशा शीतल जल में भिगोय, पानी से पीस, छानकर पिये तो रक्तपित्त, ज्वर, दाह, तृषा ये सब जायँ। अथवा मुनक्का, किशमिश, सफेद चन्दन, पठानी लोध के फल, प्रियंगु इनको बराबर ले महीन पीस शहद से १० दिन चाटे तो रक्तपित्त जाय। अथवा वसन्तमालतीरस, बोलबद्ध, परपटी-रस जो पीछे लिखे हैं उनसे भी नकसीर अच्छी होती है। अथवा प्याज के रस की नास लेने से नकसीर अच्छी होती है। अथवा १०० बार का धोया घी मस्तक में लेप करे तो नकसीर बन्द हो अथवा बड़े पक्के पेठे के बीज और छिलके दूरकर, पानी में पकाय, ठण्ढाकर गाढ़े वस्त्र में उसका जल छाने और उस जल को जुदे बासन में रक्खे तथा पेठे को कढ़ाही में घी से भूने, जलने न दे, फिर उस पेठे के रस में मिश्री की चाशनी करे उसमें पेठे को डाले और पीपरि ८ माशा, सोंठि ८ माशा, जीरा ८ माशा, धनियाँ २० माशा, पत्रज २० माशा, इलायची २०

माशा, काली मिरच २० माशा, तज २० माशा, वंशलोचन २० माशा इन सबको महीन पीस पाव भर शहद के साथ उस चाशनी में मिलावे। फिर इसमें से १ टके या २ टकेभर प्रतिदिन खाय तो रक्तपित्त, ज्वर, तृषा, दाह, प्रदर, क्षीणता, वमन, स्वरभङ्ग, कास, क्षयी इन सब रोगों को यह कूष्माण्डावलेह दूरकर शरीर को पुष्ट करता है। अथवा इलायची, पत्रज, वंशलोचन, तज, किशमिश, पीपरि, इन सबको दो दो पैसे भर ले महीन पीस मिश्री, मुलहठी, किशमिश, छुहारा इन सबको टके टके भर ले महीन पीस शहद में मिलाय ३ माशे के प्रमाण गोली बाँधे। एक गोली प्रतिदिन खाय तो रक्तपित्त, कास, श्वास, पित्तज्वर, हिचकी, मूर्च्छा, मन्दाग्नि, भ्रम, तृषा, पसली का शूल, अरुचि स्वरभङ्ग, क्षयी इन सबको यह एलादिगुटिका दूर कर देह को पुष्ट करती है। यह एलादिगुटिका वैद्यरहस्य में लिखी है।

राजरोग तथा शोषरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

राजरोग पाँच प्रकार का है। वात का, पित्त का, कफ का, सन्निपात का, हृदय में चोट लगने का। तथा शोषरोग छः प्रकार का है। एक तो अत्यन्त स्त्रीप्रसङ्ग से, दूसरा बहुत शोच से, तीसरा गम्भीर व्रण और हृदय में चोट लगने से, चौथा बहुत मार्ग चलने से, पाँचवाँ अत्यन्त खेद से, और छठा वृद्धावस्था से होता है।

राजरोग की उत्पत्ति

मल, मूत्र और अधोवायु का रोकना, वीर्य की क्षीणता, बहुत साहस करना, सामर्थ्य से बाहर काम करना, कुसमय में अत्यन्त भोजन करना इत्यादि बातें रस की बहनेवाली नाड़ियों को रोककर वीर्य को क्षीण करती हैं इस कारण से इस रोग में कफ प्रधान है। यह कफ बहुत स्त्रीप्रसङ्ग करने से त्रिदोषरूप राजरोग होकर पैदा होता है और रस की बहनेवाली नाड़ियों को रोक और वीर्य को क्षीणकर सातों धातुओं को क्षीण करता है तब वह मनुष्य प्रतिदिन सूखता जाता है। यह राजरोग की उत्पत्ति है।

राजरोग का पूर्वरूप

श्वास, अङ्गों में पीड़ा, खाँसी में कफ थूकना, तालु में शोष, वमन,

अग्नि की मन्दता, पीनस, खाँसी, अत्यन्त निद्रा, नेत्रों में श्वेतता, मांस खाने और मैथुन करने की इच्छा ये लक्षण जिस मनुष्य के हों तो जानिए कि राजरोग पैदा होनेवाला है।

राजरोग के लक्षण

पसली और कन्धों में पीड़ा, हाथ-पैरों में जलन, सब अङ्गों में ज्वर रहे ये लक्षण हों तो राजरोग जानिए। अथवा भोजनमात्र में अरुचि और श्वास, कास हो, मुख से रुधिर आवे, स्वरभङ्ग हो, ये लक्षण हो तो राजरोग जानिए।

वात के राजरोग के लक्षण

स्वरभेद और शूल हो, कन्धे और पसली में संकोच हो तो वात का राजरोग जानिए।

पित्त के राजरोग के लक्षण

ज्वर, दाह और अतीसार हो, मुख से रुधिर आवे तो पित्त का राजरोग जानिए।

कफ के राजरोग के लक्षण

माथा भारी रहे, भोजन में अरुचि और खाँसी हों, कण्ठ से बोला न जाय तो कफ का राजरोग जानिए। ये सम्पूर्ण मिले हुए हों तो सन्निपात का राजरोग जानिए।

हृदय में चोट लगने से उपजे राजरोग के लक्षण

जिसके शिर में पीड़ा, मुख से रुधिर का वमन, शरीर में रूखापन हो उस राजरोगी को असाध्य जानिए। अथवा जिसके नेत्र श्वेत हों, अन्न में अरुचि हो, श्वास का रोग और प्रमेह बढ़ जाय तथा बहुत मूत्र करे वह राजरोगी मृत्युवश होता है।

राजरोगी की अवधि

अच्छा शास्त्रज्ञ, यत्नकारक और सम्पूर्ण क्रियाकुशल, चतुर जो वैद्य मिले तथा रोगी तरुण, धनवान्, वैद्य का आज्ञाकारी और जितेन्द्रिय हो तो हजार दिन तक जीता है।

साध्य राजरोग के लक्षण

जिसके ज्वर न हो और बलवान् हो, वैद्य की दी हुई कड़वी, कषैली

औषध खा जाय और क्षुधा उसकी तीव्र हो तथा शरीर पुष्ट हो ऐसे रोगी का यत्न करना चाहिए।

अधिक मैथुन से उत्पन्न शोषरोग के लक्षण

लिङ्गेन्द्रिय और फोतों में पीड़ा हो तथा मैथुन करने की सामर्थ्य न रहे। फिर हाड़ों का नाश हो और पीछे कहे हुए राजरोगों के भी उपद्रव हों, शरीर पीला और चिन्ताग्रस्त हो जाय तथा अंग शिथिल हों, ये लक्षण हों तब जानिए कि इसके मैथुन करने से शोषरोग हुआ, है। और शोक करने से उत्पन्न शोषरोग के भी यही लक्षण हैं। इसमें वीर्य का क्षय नहीं है।

जराशोष के लक्षण

कृश होकर वीर्य, बुद्धि, बल जाते रहें, शरीर में कम्प, भोजन में अरुचि, घों-घों बोल, कफ बहुत थूके, शरीर भारी, पीनस और शरीर रूखा हो, ये लक्षण हों तो जानिए कि जराशोषी है।

मार्गशोष के लक्षण

यह भी जराशोषी के लक्षणों से मिलता है, परन्तु जराशोषी के हृदय में पीड़ा नहीं होती और मार्गशोषी के होती है।

गम्भीरादि व्रण से उत्पन्न शोषरोग के लक्षण

बहुत तीरन्दाजी से और भार के उठाने से हृदय में जोर आ पड़ता है और अत्यन्त मैथुन करके सूखा भोजन करे उसके भी हृदय में यह रोग पैदा होता है तथा हृदय दूखें, पसली और अङ्ग सूखे, शरीर में कम्प हो तथा वीर्य, बल, वर्ण, अरुचि, अग्नि ये सब घट जायँ और रुधिर थूके, रुधिर ही वमन करे, रुधिर ही दिशा और मूत्र में जाय, पसली और कमर दूखे, ज्वर हो आवे, सूखकर महाकंकाल के सदृश हो जाय, अतीसार और खाँसी हों, ये सब लक्षण हों तो व्रणशोष का रोग जानिए।

राजरोग और शोषरोग के यत्न

वंशलोचन ३२ माशा, पीपरि १६ माशा, इलायची ८ माशा, तज ४ माशा, मिश्री ५ तोले ४ माशा इनको महीन पीस शहद और मक्खन के साथ चाटे तो राजरोग, श्वास, पित्तज्वर, पसली का शूल, मन्दाग्नि,

अरुचि, हाथपैरों की दाह, रक्तपित्त इन सबको दूर करता है। यह सितो-पलादि अवलेह है। अथवा गिलोयसत, लोहसार ये दोनों ४ माशा ले शहद और मक्खन के साथ चाटे तो राजरोग जाय। अथवा मारा हुआ पारा ३ भाग, सुवर्ण की भस्म १ भाग, मैनसिल 1 भाग, गन्धक १ भाग इन सबको इकट्ठाकर बड़ी पोली कौड़ी में भरे। फिर बकरी के दूध में सुहागे को पीस उससे कौड़ी का मुँह बन्द करे। फिर कौड़ो को एक कुलढ़े में रख बन्द कर गजपुट की आँच में फूँक दे। फिर शीतल करके निकाल ले। इस राजमृगाङ्क रस को ४ रत्ती प्रमाण १ महीने तक वर्धमानपीपरि अर्थात् ३ पीपरि से २१ तक शहद और मक्खन मिला-कर खाय तो राजरोग अवश्य जाय। यह राजमृगाङ्क रस है। अथवा भीमसेनी कपूर २० माशा, तज २० माशा, कालीमिर्च २० माशा, जायफल २० माशा, लवङ्ग २० माशा, नागकेसर २८ माशा, पीपरि ५ तोले ४ माशा, सोंठि ३ तोले इन सबको महीन पीस सब * से दूनी मिश्री मिलाय शहद आदि अनोपान से ४ माशा ले तो राजरोग, अरुचि, क्षयी, कास, श्वास, गोला, बवासीर, वमन और कण्ठ का रोग इन सब रोगों को यह दूर करता है। यह कर्पूरादि चूर्ण है। अथवा शोधा पारा २० माशा, शोधी गन्धक २० माशा, अभ्रक २० माशा, शिंगरफ ८ माशा, मैनसिल ८ माशा। पहले पारे और गन्धक की कजली करे फिर इसमें ये ओषधियाँ मिलाय इन सबका आधा लोहसार मिलावे। तदनन्तर इन सबको खरल में डाल शतावरि के रस की १४ पुट देकर सुखा ले। फिर २ रत्ती तथा ३ रत्ती मिश्री के साथ प्रातःकाल खाय तो राजरोग, वात-पित्त कफ रोग और सब ज्वरों को दूर करता है। यह कुमुदेश्वररस वैद्यरहस्य में लिखा है। अथवा चौराई के साग को राँधकर खूब घृत मिलाके नित्य भोजन करे तो राजरोग और बहु-मूत्रता दूर हो। अथवा बड़े बड़े पक्के हरे ५०० आमलों को जल में पकाय उनका रस निकाले उस रस में ५० टके भर मिश्री की चाशनी चाँदी के पात्र में करे। फिर इस चाशनी में ये

---

* चीनी अथवा मिश्री किसी चूर्ण में मिलाना हो तो दूनी मिलाना चाहिए, अगर गुड़ मिलाना हो तो चूर्ण के बराबर डाले। यह प्रमाण आढमल्ली का है।

ओषधें डाले—मुनक्का, किशमिश, अगर, चन्दन, कमलगट्टे, इलायची, हड़ की छाल, * काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, गिलोय, काकड़ासिंगी, पुष्करमूल, कचूर, अड़ूसा, बिदारीकन्द, खरैंटी, सरिवन, पिठवन, दोनों कटेली, बेलगिरी, अरणी, अरलू, खम्हारि, पाठ, नागरमोथा इन सब ओषधियों को एक एक टके भर ले अत्यन्त महीन पीसकर आमले के संयोग की मिश्री की चाशनी में डाले। फिर उस चाशनी में ६ टके भर शहद डाले और पीपरि ८ माशा, तज ८ माशा, पत्रज ८ माशा, नागकेसर ८ माशा, इलायची ८ माशा, वंशलोचन ८ माशा ये सब महीन पीस डाले। फिर इनको एक रस कर १। टके भर प्रतिदिन खाय तो राजरोग, शोषरोग को दूरकर बल, कान्ति, पुष्टता और वृद्ध को तरुण यह च्यवनप्राश अवलेह करता है।

अथवा अड़ूसे का रस और कटेली का रस १। टके भर ले उसमें शहद ४ माशा, पीपरि ८ माशा मिलाकर प्रतिदिन खाय तो राजरोग दूर हो। अथवा मृक १ भाग, पारा १ भाग, अनबेधे मोती २ भाग, शोधी गन्धक २ भाग, प्रथम पारे और गन्धक की कजली करे, पीछे सब ओषधि मिलाय काँजी में १ दिन खरल करे। फिर इसकी गोली कर एक सरवे में धरकर कपरौटी करे और उस कपरौटी किये हुए सरवे को एक नोन से भरी हुई हँड़िया में धर एक दिन तक अग्नि देकर पका ले जब शीतल हो तब काढ़कर १ या २ रत्ती के प्रमाण प्रातःकाल मिश्री के साथ ले तो राजरोग जाय। यह कुमुदेश्वररस वैद्यविनोद में लिखा है। अथवा बड़ी पीली कौड़ी, पारा, गन्धक बराबर ले उसकी कजली कर उसको कौड़ी में भरे और उस कौड़ी के मुँह को भुने सुहागे से बन्द करे। फिर उस कौड़ी को सरवे में बन्दकर गजपुट से फूँक दे। जब शीतल हो तब निकाले। इसमें १ रत्ती प्रमाण खाय तो राजरोग, कास, श्वास, संग्रहणी, ज्वरातीसार इन सब रोगों को दूर करे। यह कपर्दिकेश्वररस रुद्रदत्तनाम ग्रन्थ में लिखा है। अथवा राजरोग,

---

* इन ओषधियों के अभाव में क्रम से ये ओषधियाँ छोड़े—शतावरि, गुखुरू, असगन्ध, बाराहीकन्द यह पाठ भावप्रकाश का है।

शोषरोगवाले को दूध, मीठा अनार ये गुणकारी हैं। यह वृन्द में लिखा है। अथवा शुद्ध शिलाजीत के सेवन से राजरोग जाय। यह चरक में लिखा है। अथवा तालीसपत्र ४० माशा, चित्रक ४० माशा, हड़ की छाल ४० माशा, अनारदाना ४० माशा, तंतरीक ४० माशा, अजमोद १० माशा, गजपीपरि १० माशा, अजवाइन १० माशा, झाऊ की जड़ १० माशा, जीरा १० माशा, धनियाँ १० माशा, जायफल १० माशा, लवङ्ग १० माशा, तज १० माशा, पत्रज १० माशा, इलायची १० माशा, इन सबकी बराबर मिश्री मिलाकर महीन पीस १० माशा प्रतिदिन बकरी के दूध में ले तो राज-रोग, क्षयीरोग, पीनस, फिया, अतीसार, मूत्रकृच्छ्र, पाण्डुरोग, वात-पित्त का रोग, प्रमेह इन सब रोगों को यह चूर्ण दूर करता है। यह महातालीसादि चूर्ण हारीत में लिखा है। अथवा सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, तज, पत्रज, इलायची, लवङ्ग, जायफल, वंशलोचन, कचूर, बावची, अनारदाना इन सबको बराबर ले महीन पीस इनकी बराबर इसमें उत्तम लोहसार मिलावे फिर इन सबसे दूनी मिश्री मिलाय ३ माशा प्रतिदिन बकरी के दूध के साथ खाय तो राजरोग, मन्दाग्नि, बीस प्रकार के प्रमेह इनको दूर कर शरीर को पुष्ट करता है। यह शुण्ठ्यादि चूर्ण है।

अथवा लवङ्ग, कङ्कोल, मिरच, खस, चन्दन, तगर, कमलगट्टे, काला जीरा, इलायची, अगर, नागकेसर, पीपरि, सोंठि, चित्रक, नेत्रबाला, भीमसेनी कपूर, जायफल, वंशलोचन इन सबको बराबर ले और सबके बराबर मिश्री मिलाय ४ माशा प्रतिदिन खाय तो राजरोग, मन्दाग्नि, श्वास, हिचकी, संग्रहणी, अतीसार, भगन्दर, प्रमेह इन सबको दूर करता है। यह लवङ्गादि चूर्ण है। अथवा मारा अभ्रक २। टके भर, भीमसेनी कपूर ४ माशे, जावित्री ४ माशे, खस ४ माशे, तेजपात ४ माशे, लवङ्ग ४ माशे, तालीसपत्र ४ माशे, दालचीनी ४ माशे, दाल-चीनी के फूल ४ माशे, धवई के फूल ४ माशे, हड़ की छाल ६ माशे, आमला ४ माशे, बहेड़े की छाल ६ माशे, सोंठि ६ माशे, पहले पारे और गन्धक की कजली करे, पीछे इन ओषधियों को महीन पीस एक

रस कर उसमें मिलाय पानी से चने प्रमाण गोली बाँधकर ४ गोली प्रतिदिन शीतल जल से खाय तो राजरोग, श्वास, खाँसी, शूल, प्रमेह, वमन, अम्लपित्त, अरुचि, संग्रहणी, वातरक्त, इन सब रोगों को यह गोली दूर करके शरीर को पुष्ट करती है। यह शृङ्गाराभ्रकगुटिका है।

मधुपक्व हड़ की क्रिया

दशमूल, पीपरि, चित्रक, कोंच के बीज, बहेड़े की छाल, कायफल, कालीमिरच, पीपलामूल, रोहिष (रोहीड़ा), दन्ती की जड़, किशमिश, दोनों जीरे हल्दी, आमला, बायबिड़ंग, काकड़ासिंगी, देवदारु, साँठी की जड़, धनियाँ, लवङ्ग, अमलतास की गूदी, गोखुरू, बिधारा, कूट, इन्द्रायण ये सब ओषधियाँ आठ २ माशा ले जवकुटकर १६ सेर पक्के जल में इन ओषधियों को डाले और ओषधियों के साथ चोखी मोटी ४ सेर बड़ी पक्की हड़ की छाल मधुरी आँच से मटके में औटावे, पीछे उन हड़ों को जल से निकाल ठंढी करे फिर चोखे शहद में ५ दिन तक डाल रक्खे फिर उनको शहद से निकाल दूसरे इतने शहद में डाले कि हड़ उसमें डूबी रहें। फिर हड़ों समेत शहद के बासन में तज, पत्रज, नागकेसर, इलायची, पीपरि इन सबको महीन पीस ८ टके भर चूर्ण डालकर १ हड़ प्रतिदिन खाय तो राजरोग, शोषरोग, कास, श्वास, हिचकी, वमन, ज्वर, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, वातरक्त, बवासीर, संग्रहणी, रक्तपित्त, दाह, विभूति, ब्योंचा, कोच, मृगी, पाण्डुरोग इन रोगों को यह मधुपक्व हड़ दूर करती है। यह धन्वन्तरिसंहिता में लिखा है।

अथवा पुराना गुड़ पाव भर और अदरक का रस १ सेर, इस रस में मधुरी आँच से गुड़ की पतली चासनी करे। फिर तज, पत्रज, नागकेसर, इलायची, लवङ्ग, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि इन सबको २ टके भर ले महीन पीस मिलाकर १ टकेभर प्रतिदिन खाय तो राजरोग, मन्दाग्नि, कास, श्वास, अरुचि इन रोगों को यह अदरक का अवलेह दूर करता है।

अथवा बकरी के दूध में बराबर का पानी डालकर ३ पीपरि डाले और एक एक प्रतिदिन ३० दिन तक बढ़ावे। फिर एक ही एक घटावे। जब पानी जल जाय और दूध रह जाय तब पहिले तो पीपरि खाय पीछे

उस दूध को पिये तो राजरोग, कास, श्वास, ये सब रोग जाते रहें। यह काशीनाथ-पद्धति में लिखा है।

अथवा ४ सेर पक्के मुनक्का या किशमिश एक मन पानी में औटावे जब चतुर्थांश शेष रह जाय तब उसमें पुराना गुड़ ५ सेर, बायबिड़ंग, प्रियंगु के फूल, तज, इलायची, पत्रज, नागकेसर इन सबको दो-दो टके भर डालके मदिरा के यन्त्र से इनका अर्क काढ़कर १ टके भर प्रतिदिन ले तो राजरोग, कास, श्वास दूर हों। यह किशमिश का आसव योगतरङ्गिणी में लिखा है। अथवा मृगाङ्क १ रूपरस २ ताम्रेश्वर ३ पारे की भस्म ४ अभ्रक ५ इन सब रसों को बराबर भाग ले। फिर इकट्ठा मिलाय इनमें पृथक् २ आगे लिखी हुई औषधियों की एक २ पुट दे। प्रथम बायबिड़ंग की १ नागरमोथा की १ कायफल की १ निर्गुण्डी की १ दशमूल की १ चित्रक की १ हल्दी की १ सोंठि की १ काली मिरच की १ पीपरि की १ पुट देकर आधी आधी रत्ती की गोली बाँधे। एक गोली प्रतिदिन खाय तो राजरोग, खाँसी, फिया, गोला इत्यादि जायँ। यह पंचामृत रस सारसंग्रह में लिखा है। अथवा बड़े शंख की राख को गोमूत्र में सानकर बड़ी दो प्याली बनाकर उसमें पारा २० माशा, गन्धक २० माशा इन दोनों की कजली करके भरे और कपरौटी कर गजपुट में फूँक दे। फिर इसको प्याली समेत पीस १ रत्ती शहद के साथ खाय तो राजरोग जाय। यह रसार्णव में लिखा है। अथवा गीली थूहर की लकड़ी पाव भर, सेंधानोन २ तोला, काला नोन २ तोला, साँभर नोन २ तोला, बैंगन १ सेर, चित्रक २। टके भर इन सबको इकट्ठा कर महीन पीस बड़े सरवे में रख के गजपुट से फूँक दे। फिर इसमें से एक माशे भोजन के पीछे जल से ले तो तत्काल भोजन पचे और राजरोग, श्वास, बवासीर जाय और आम तत्काल भस्म हो, शूल जाय। यह क्षुद्रादिक खार रसराज-लक्ष्मी ग्रन्थ में लिखा है। अथवा शंख की राख को नींबू के रस में बुझाकर उस राख में से १ टके भर ले उसमें चव्य ४० माशा, जवाखार ४० माशा, पाँचों नोन ४० माशा, भुनी हींग ४० माशा, सोंठि ४० माशा, काली मिरच ४० माशा, पीपरि ४० माशा, पारा ४० माशा, शोधी गन्धक ४० माशा, शोधा सिंगीमुहरा

४० माशा ले। पहिले पारे और गन्धक की कजली करे। फिर कजली में ये सब औषधियाँ मिलाय नींबू के रस में चने के प्रमाण गोली बाँधे। १ गोली प्रतिदिन लवङ्ग के साथ खाय तो राजरोग, संग्रहणी, शूल, गोला ये सब दूर हों। यह शंखवटी योगतरङ्गिणी में लिखी है।

अगस्त हड़ की विधि

दशमूल, कोंच के बीज, शंखाहूली, कचूर, खरैंटी, गजपीपरि, अपामार्ग (लटजीरा), पीपलामूल, चित्रक, भारंगी, पुष्करमूल, ये सब औषधियाँ दो दो टके भर और बड़ी हड़ १०० लेकर इन सब औषधियों को जवकुट करे। फिर २० सेर पानी में सब औषधियाँ और हड़ें मिला के ओटावे। जब पानी चतुर्थांश रहे तब उसे उतार उसमें से हड़ें निकाल उनकी गुठली अलग कर पीसे और १०० टके भर गुड़ की चाशनी कर उसमें हड़ का चूर्ण मिलाय ८ टकेभर गो का घृत मिलावे। फिर ४ माशा नित्य खाय तो राजरोग, शोषरोग, खाँसी, श्वास, हिचकी, विषमज्वर, संग्रहणी बवासीर, अरुचि, पीनस इतने रोगों को यह अगस्त हरीतकी दूर करके शरीर को पुष्ट करे और क्षुधा को बढ़ाय कोष्ठ को शुद्ध करती है। यह अगस्त हड़ को विधि वृन्द में लिखी है।

अथवा १०० टकेभर अडूसे का काढ़ा कर उसका चतुर्थांश जुदा छाने। फिर उस काढ़े में १० टकेभर गुड़ की चाशनी बनावे और उसमें ८ टके भर तिल का तेल और आठ टके भर गौ का घृत मिलाय उस चाशनी में १०० बड़ी हड़ के बक्कल का महीन चूर्ण मिलावे। फिर पीपरि १० माशा, पीपरामूल १० माशा, कालीमिरच १० माशा, पुष्करमूल १० माशा, चव्य १० माशा, चित्रक १० माशा, सोंठि १० माशा इन सबको महीन पीस इस चाशनी में डाले फिर इन सबको इकट्ठा कर २ तोले प्रमाण नित्य खाय तो राजरोग निश्चय दूर हो और बवासीर, खाँसी, स्वरभेद, सूजन, आमपित्त, पाण्डुरोग, उदररोग, मन्दाग्नि, नपंसुकता ये सब इस औषध से जाते हैं। यह औषधि चरक में लिखी है।

कासरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

मुख में धुआं और धूल जाने से, रूखा अन्न खाने से, भोजन के

कुपथ्य से और मल, मूत्र, छींक के रोकने से; चिकनाई और मूली आदि को खाकर ऊपर जल पीने से खाँसी उत्पन्न होती है। वह खाँसी हृदय को प्राणपवन से मिलती है और प्राणपवन कण्ठ की उदान पवन से मिल उन दोनों पवनों को बिगाड़ती है और बिगड़ी पवन उस के शब्द को काँसी के फूटे बासन के समान करके मुख में से वेग विलम्ब से निकालती है। तब मनुष्य उसको खाँसी कहते हैं। वह खाँसी का रोग ५ प्रकार का होता है। वात, पित्त, कफ, चोट लगने और क्षयीरोग। अनुक्रम से एक की अपेक्षा दूसरे को बलवान् जानिए।

खाँसी का पूर्वरूप

कण्ठ में काँटे से पड़कर खुजली चले, भोजन न किया जाय तब जानना कि खाँसी होगी।

वात की खाँसी के लक्षण

हृदय, कनपटी, माथा, उदर, पसली इन सबमें शूल हो, मुख उतर जाय और बल, पराक्रम, स्वर ये क्षीण हो जायँ तथा ग्रास खाते में कण्ठ दूखे, सूखा खाँसे, टूटा स्वर बोले, ये लक्षण वात की खाँसी के हैं।

पित्त की खाँसी के लक्षण

हृदय में दाह और ज्वर हो, मुख सूखे और कड़ुआ रहे, तृषायुक्त हो, कड़ुवा कड़ुवा वमन करे, शरीर पीला हो जाय, ये लक्षण हों तो पित्त की खाँसी जानिए।

कफ की खाँसी के लक्षण

कफ से मुख लिपा रहे, मस्तक दूखे, भोजन में अरुचि, शरीर भारी, कण्ठ में खुजली चले, कफ की गाँठें थूके, ये लक्षण हों तो कफ की खाँसी जानिए।

क्षतज खाँसी की उत्पत्ति लक्षण

बहुत स्त्रीप्रसङ्ग करने से, बोझ उठाने से, मार्ग चलने से, युद्ध करने से, घोड़े हाथी के दौड़ाने से, रूखा भोजन करने से वात हृदय में जाकर खाँसी प्रकट करता है। प्रथम रूखा खाँसे फिर रुधिर थूके, कण्ठ बहुत दुखे, शूल हो, सन्धियों में पीड़ा हो और ज्वर, श्वास, तृषा हो, स्वर घों-घों बोले और कबूतर की भाँति बोला करे ये लक्षण हों तो क्षतज की खाँसी जानिए।

क्षयीरोग से उपजी खाँसी के लक्षण

कुपथ्य और विषमाशन अर्थात् समय कुसमय भोजन आदि करे और बहुत मैथुनकर मल मूत्र को रोंके, बहुत सोवे, उस मनुष्य के मन्दाग्नि होकर वात, पित्त, कफ तीनों के कोप से क्षयी रोग की खाँसी उत्पन्न होती है। वह खाँसी शरीर को क्षीण करके ज्वर, दाह, मोह को करती है तब यह प्राण का नाश करती है। सूखा खाँसे, दुर्बल होता जाय, शरीर का रुधिर और मांस सूख जाय, राध थूके तब असाध्य जानिए।

खाँसी के असाध्य लक्षण

वात, पित्त, कफ इन तीनों की खाँसी साध्य और क्षतज रोग तथा क्षयीरोग की खाँसी असाध्य और बूढ़े मनुष्य की भी खाँसी असाध्य जानिए।

खाँसी रोग का यत्न

लवङ्ग २० माशा, काली मिरच २० माशा, बहेड़े का छिलका २० माशा, खैरसार २० माशा, इन सबको महीन पीस बबूल के छिलके के काढ़े में २ रत्ती प्रमाण गोली बाँधे। १ या २ या ३ गोली ७ दिन तक खाय तो खाँसी जाय। यह लवङ्गादि की गोली लोलिम्बराज में लिखी है। अथवा पारा ४ माशा, शोधा गन्धक ८ माशा, पीपरि १२ माशा, हड़ की छाल १६ माशा, बहेड़े का छिलका १६ माशा, काकड़ासिंगी २० माशा इनमें से पारा गन्धक की कजलीकर अन्य सब औषध महीन पीस कपड़ छानकर कजली में मिलावे और बबूल की छाल के काढ़े की २ पुट दे ३ माशा भर की गोली बाँधे। १ गोली नित्य खाकर ऊपर से सोंठि का काढ़ा पिये तो खाँसी अवश्य जाय। यह रससमूह ग्रन्थ और योगचिन्तामणि ग्रन्थ में लिखा है। अथवा काली मिरच १० माशा, पीपरि १० माशा, अनार का छिलका ४० माशा, गुड़ २॥ टके भर, जवाखार ४ माशा इन सबको महीन पीस चने के प्रमाण गोली बाँधे। २ तथा ४ गोली नित्य खाय तो खाँसी जाय। अथवा पीपरि, पुष्करमूल, हड़ की छाल, सोंठि, कचूर, नागरमोथा इन सबको महीन पीस गुड़ में ६ रत्ती प्रमाण की गोली बाँधे। १ वा

२ गोली खाय तो खाँसी जाय। अथवा सोंठि के काढ़े से खाँसी जाय। अथवा अदरक के रस में शहद मिलाकर खाय तो खाँसी जाय। अथवा कटेली, गिलोय, सोंठि, पुष्करमूल इन सबको बराबर लेकर इसमें अड़ूसा मिलाय काढ़ाकर पिये तो खाँसी जाय। यह क्षुद्रादिक काढ़ा है। अथवा छोटी कटेली का भरताकर उसके रस में पीपरि का चूर्ण मिलाय प्रतिदिन पिये तो खाँसी जाय। अथवा हड़ की छाल १० माशा, सोंठि १० माशा, काली मिरच १० माशा, पीपरि १० माशा, अमलबेत १० माशा, चव्य १० माशा, चित्रक १० माशा, सफेद जीरा १० माशा, डांसरा (तंतरीक) १० माशा, तज ४ माशा, पत्रज ४ माशा, नागकेशर ४ माशा, इनको महीन पीस १ पाव गुड़ में ३ माशा के प्रमाण गोली बाँधे। १ गोली प्रभात खाय तो खाँसी और श्वास जाय। अथवा लवङ्ग १० माशा, पीपरि १० माशा, जायफल १० माशा, काली मिरच २० माशा, सोंठि ८ पैसे भर इन सब के बराबर मिश्री ले फिर सबको महीन पीस ३ माशा जल से सुबह शाम खाय तो खाँसी, ज्वर, प्रमेह, अरुचि, श्वास, मन्दाग्नि, संग्रहणी इन सब रोगों को यह लवङ्गादि चूर्ण दूर करता है। अथवा शिंगरफ, काली मिरच, नागरमोथा, शोधा सिंगीमुहरा इन सबको बराबर ले महीन पीस जंभीरी के रस में अथवा अदरक के रस में मूँग के प्रमाण गोली बाँधे। १ गोली नित्य खाय तो श्वास और खाँसी जाय। अथवा काली मिरच, नागरमोथा, कूट, बच, शोधा सिंगीमुहरा इन सबको बराबर ले अदरक के रस में महीन पीस मूँग प्रमाण गोली बाँधे। १ गोली नित्य खाय तो श्वास, शूल, कफ के रोग सूतिका रोग संग्रहणी इन सब रोगों को यह गोली दूर करे। अथवा बंग ४ माशा, पीपरि ८ माशा, हड़ का छिलका १२ माशा, बहेड़े का छिलका १६ माशा, अड़ूसा २० माशा, भारंगी २४ माशा इन सबकी बराबर खैरसार ले सबको महीन पीस बबूल के बक्कल के काढ़े की २ पुट दे और शहद से चने प्रमाण गोली बाँधे। १ गोली नित्य खाय तो श्वास, खाँसी, क्षयी ये सब रोग जायँ। यह कासकर्त्तरी गुटिका है। अथवा भीमसेनीकपूर ५ माशा, कस्तूरी ५ माशा, लवङ्ग ५ माशा,

मिरच्च १० माशा, पीपरि १० माशा, बहेड़े की छाल १० माशा, कुलीं-जन ८ माशा, अनार का छिलका ५ माशा इन सबकी बराबर खैरसार इसमें मिलाय महीन पीस पानी से चने के प्रमाण गोली बाँधे। यह कर्पू-रादि गुटिका है। १ गोली नित्य खाय तो खाँसी जाय। ये सब यत्न वैद्य-रहस्य में लिखे हैं। अथवा आक के फूल के मध्य की फूली और उसकी बराबर मिरच इन दोनों को महीन पीस १ रत्ती के प्रमाण गोली बाँधकर १ गोली नित्य खाय तो खाँसी जाय। अथवा आक के फूल के बीच की फूली और उसकी बराबर लवङ्ग ले १ रत्ती प्रमाण गोली बाँधकर १ गोली नित्य खाय तो खाँसी जाय। यह रुद्रदत्त में लिखा है। अथवा पसरकटेली के पञ्चाङ्ग में ४ सेर पानी डाल काढ़ा निकाल उस काढ़े में १०० बड़ी हड़ पकावे जब उबल जायँ तब उतार शीतल कर उनकी गुठली निकाल पीस डाले। फिर १०० टकेभर पुराने गुड़ की चाशनी कर उस चाशनी में वह हड़ों का चूर्ण मिलावे, पीछे ये औषधें डाले। सोंठि १ टकेभर, कालीमिरच, पीपरि, तज, पत्रज, नागकेशर, इला-यची इन सबको चार चार माशाभर ले महीन पीस उस चाशनी में डाले फिर आधसेर शहद मिला के एकरस कर १ टकेभर नित्य खाय तो सब प्रकार की खाँसी जाय। यह भृगुहरीतकी है।

कटेली का अवलेह

४ सेर कटेली का काढ़ा कर उस काढ़े में ४ सेर मिश्री की चाशनी करे और ये औषधें डाले। गिलोय १ टकेभर, चव्य ४ माशा, चित्रक ४ माशा, नागरमोथा ४ माशा, काकड़ासिंगी ४ माशा, सोंठि ४ माशा, पीपरि ४ माशा, धमासा ४ माशा, भारंगी ४ माशा, कचूर ४ माशा इन सबको महीन पीस उस चाशनी में मिलावे। फिर १ सेर शहद और १ पाव वंशलोचन डाल के १ टके भर नित्य खाय तो सब प्रकार की खाँसी जाय। यह कटेली का अवलेह भावप्रकाश में लिखा है। अथवा अड़ूसे के काढ़े में शहद डाल पिये तो खाँसी जाय। अथवा आक का पत्र, मैनसिल, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि इन सबको बरा-बर ले गुड़ में गुटिका बनाकर हुक्के में पिये तो खाँसी अवश्य दूर हो। अथवा पारा, शोधी गन्धक, शिंगरफ, शोधा सिंगीमुहरा, सोंठि काली-

मिरच, पीपरि, भुना सुहागा इन सबको बराबर ले महीन पीस पारे और गन्धक की कजली में मिलाकर उस कजली को भाँगरे के रस में १ दिन खरल करे, फिर बिजौरे के रस में ३ दिन खरल कर इसकी आधी रत्ती की गोली करे। १ गोली नित्य १० दिन तक खाय तो खाँसी, क्षयी, संग्रहणी, सन्निपात, मृगी इन रोगों को यह आनन्द भैरवरस दूर करता है।

हिचकी रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

गर्म, बादी, भारी, रूखी, सीली (ठंढी) आदि वस्तु खाने से और मुख में धूलि के जाने से, खेद करने से, मार्ग चलने से, मल-मूत्र के रोकने से, भूखे रहने से मनुष्य के हिचकी, श्वास और खाँसी उत्पन्न होती है।

हिचकी का स्वरूप

वायु दोनों पसलियों और आँतों को दुःख देती हुई मुख में होकर बड़े शब्द सहित प्राण का नाश करनेवाला भयङ्कर शब्द मुख से निकालती है उसको मनुष्य हिचकी कहते हैं। वह बात-कफ से मिलकर ५ प्रकार की हिचकी होती है। अन्नजा, यमला, क्षुद्रा, गंभीरा और महती।

हिचकी का पूर्वरूप

कण्ठ और हृदय भारी रहे, मुख कषैला हो, कोख में अफरा हो तो जानिए कि इसके हिचकी पैदा होगी।

अन्नजा हिचकी के लक्षण

बहुत अन्न खाने और बहुत पानी पीने से कुपित हुआ वात ऊर्ध्वगामी हो मनुष्य के अन्नजा हिचकी पैदा करता है।

यमला हिचकी के लक्षण

ठहर ठहर कर दो दो हिचकी आवें, शिर और कन्धों को कँपावें उसको यमला हिचकी कहिए।

क्षुद्रा हिचकी के लक्षण

ठहर ठहर कर मन्द मन्द कण्ठ और हृदय की सन्धि से चले उसके क्षुद्रा हिचकी कहिए।

गंभीरा हिचकी के लक्षण

नाभि से भयंङ्कर उठे और पीड़ा बहुत हो तथा अनेक उपद्रव करे उसको गंभीरा हिचकी कहते हैं।

महती हिचकी के लक्षण

सर्व मर्मस्थानों में पीड़ा करती हुई तथा सब शरीर को कँपाती हुई चले उसको महती हिचकी कहते हैं।

हिचकी के असाध्य लक्षण

हिचकी चलते हुए जिसका शरीर काँप उठे और ऊँची दृष्टि हो जाय तथा अँधेरी आजाय, भोजन में अरुचि हो, छींक बहुत आवें ये दोनों गंभीरा और महती हिचकी असाध्य जानिए।

हिचकी का यत्न

प्राणायाम के करने से, किसी प्रकार से भयभीत होने से भयङ्कर बात के सुनने से, वात और कफ की घटानेवाली वस्तु के खाने से हिचकी दूर होती है अथवा बकरी के दूध में सोंठि को पकाय सोंठि सहित दूध पिये तो हिचकी जाय। अथवा बिजौरे के रस में यव का सत्तू और सेंधा नोन मिला के खाय तो हिचकी जाय। अथवा सोंठि पीपरि शहद से चाटे तो हिचकी जाय। अथवा मक्खी की बीट दूध में पीस नास ले तो हिचकी जाय। अथवा गुड़ और सोंठि पानी में पीस नास ले तो हिचकी जाय अथवा काँस की जड़ के रस में शहद मिलाय नास ले तो हिचकी जाय अथवा मोर के पंख की राख शहद से चाटे तो हिचकी जाय। अथवा बिजौरे की केसर सेंधा नोन मिला-कर खाय तो हिचकी जाय। अथवा पुष्करमूल, जवाखार, कालीमिरच ये सब बराबर ले महीन पीस ३ माशा गर्म जल के साथ ले तो हिचकी जाय, अथवा हल्दी और उड़दों को पीस निर्धूम अंगार पर रख हुक्के में धुआँ पिये तो भयङ्कर भी हिचकी जाय। यह वैद्यविनोद में लिखा है। अथवा सन की छाल का चूर्ण कर उसका हुक्का पिये तो हिचकी जाय अथवा सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, जवासा, कायफल, करेलण, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी इन सबको बराबर ले महीन पीस ३ माशा शहद के साथ चाटे तो हिचकी, खाँसी, श्वास जाय। अथवा पित्त-

पापड़ा, पीपरि ये दोनों १० माशा और गुड़ २० माशा इनका काढ़ा दे तो हिचकी जाय। अथवा ६ माशा सम्हालू के काढ़े को छानकर पिये तो हिचकी तत्काल दूर हो। यह वैद्यरहस्य में लिखा है। अथवा मुलहठी ५ माशा शहद के साथ चाटे तो हिचकी जाय। अथवा पीपरि ५ माशा मिश्री के साथ खाय तो हिचकी जाय। अथवा दूध में घृत डाल गर्म गर्म पिये तो हिचकी जाय। यह सुश्रुत में लिखा है। अथवा बिजौरे का रस, शहद और काला नोन मिलाकर खाय तो हिचकी निश्चय दूर हो। यह वैद्यसर्वस्व में लिखा है। अथवा कैथ और आमले का रस शहद मिलाकर पिये तो हिचकी और श्वास जाय यह काशीनाथपद्धति में लिखा है। अथवा इलायची १ दालचीनी २ नागकेसर ३ काली मिरच ४ पीपरि ५ सोंठि ६ भाग ये वृद्धिक्रम से ले महीन पीस घृत मिलावे और इन सबसे दूनी मिश्री मिलाय ३ माशा जल से ले तो हिचकी, अजीर्ण, बवासीर, श्वास और खाँसी इन सब रोगों को दूर करे। यह एलादिचूर्ण वृन्द में लिखा है।

श्वास रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

जिन वस्तुओं के खाने से हिचकी पैदा हो उन्हीं वस्तुओं के खाने से श्वासरोग होता है। वह ५ प्रकार का है। महाश्वास ऊर्ध्वश्वास, छिन्नश्वास, तमकश्वास और क्षुद्रश्वास।

श्वास रोग का पूर्वरूप

हृदय दूखे, शूल हो, अफरा हो, मल-मूत्र न उतरे, मुख में रसों का स्वाद न आवे और कनपटी दूखे तो जानिए कि श्वासरोग होगा।

श्वास रोग की उत्पत्ति

सब शरीर में फिरती वायु कफ से मिल सब नसों को रोकती है। तब वह वायु फिरने से बन्द होकर श्वास को प्रकट करती है।

महाश्वास के लक्षण

जब मनुष्य श्वासयुक्त हो थक के ऊँचे प्रकार मस्त बैल के समान निरन्तर श्वास ले और जिसका ज्ञान नष्ट हो गया हो, नेत्र तरतराहट करें, श्वास लेते में मुख और नेत्र फट जायँ, मुख से बोला न जाय, दुर्बल हो जाय और श्वास का शब्द दूर तक सुनाई दे, ये लक्षण हों तो महाश्वास जानिए। इस श्वासवाला तत्काल मर जाय।

ऊर्ध्वश्वास के लक्षण

ऊर्ध्वश्वास ले, नीचे आवे नहीं, कफ से मुख भर जाय, ऊँची दृष्टि हो, नेत्र तरतराहट करें और इस श्वास से दुःखी होकर नेत्र भ्रमता, मोह, ग्लानि हो, ये लक्षण हों तो ऊर्ध्वश्वास जानिए। यह मनुष्य को मार डालता है।

छिन्नश्वास के लक्षण

सर्व शरीर के पाँचों पवनों से पीड़ित मनुष्य टूटा श्वास ले अथवा दुःखित होकर श्वास नहीं ले और जिसके मर्मस्थान टूटकर अफरा हो आवे तथा प्रस्वेद होकर नेत्र फट जायँ और श्वास लेते समय नेत्र लाल हो जायँ, चैतन्यता जाती रहे, शरीर का वर्ण और का और हो जाय, वह प्राणी तत्काल मर जाय।

तमकश्वास के लक्षण

शरीर की पवन उलटी चले, नासिका को रोक दे तब कन्धे और शिर पकड़कर कफ को प्रकट करता हुआ पवन कण्ठ में जाकर घुरघुर शब्द करे। फिर प्राणनाशक श्वास प्रकट करे तब मनुष्य श्वास के वेग से ग्लानि को प्राप्त होता है और जब उसकी अग्नि रुक जाती है तब वह मनुष्य श्वास लेते समय मोह को प्राप्त होता है तथा कफ भी छूटता है। जब दुःखी होकर मुख से कफ निकल जाय तब वह दो एक घड़ी सुख पाता है और उससे बोला भी तभी जाता है और जब वह सोवे तब श्वास हो आवे, नींद आवे नहीं, बैठे ही चैन पड़े और गर्मी सुहावे, नेत्रों पर सूजन हो, ललाट में पसीना आवे, मुख सूखे, धौंकनी के सदृश श्वास ले, मेह की पवन और शीतल वस्तु से तथा मधुर खाने से बढ़े, ये लक्षण हों तो तमकश्वास का लक्षण जानिए। यह श्वास याप्य है।

क्षुद्रश्वास के लक्षण

रूखी वस्तु खाने से, खेद से, कोठे की पवन से क्षुद्रश्वास प्रकट होता है। वह मनुष्य को न तो बहुत दुःख देता है और न खानपान की गति रोकता है और इन्द्रियों को भी पीड़ा नहीं करता है ये लक्षण क्षुद्रश्वास के जानिए। यह क्षुद्रश्वास बलवान् पुरुष के हो तो साध्य

है और तमकश्वास कष्टसाध्य है तथा महाश्वास और छिन्नश्वास ये प्राण के हरनेवाले हैं।

श्वासरोग का यत्न

नोन में तेल डाल सुहाता सुहाता हृदय को सेंके तो श्वास दबे। अथवा अदरक का रस शहद में मिलाय चाटे तो श्वास जाय। अथवा अदरक का रस और शहद दोनों आधसेर मिलाय १। टके भर नित्य खाय तो श्वास, कास जाय। अथवा दशमूल, कचूर, रास्ना, पीपरि, सोंठि, पुष्करमूल, भारंगी, काकड़ासिंगी, गिलोय, चित्रक ये सब बराबर ले काढ़ा बनाकर ले तो कास, श्वास, पसली का शूल निश्चय जाय। अथवा पेठे की जड़ का चूर्ण ४ माशा गर्म जल से ले तो श्वास, कास निश्चय जाय। अथवा हल्दी, काली मिरच, किशमिश, पीपरि, रास्ना, कचूर इन सबको बराबर ले महीन पीस ४ माशा गुड़ या तेल के साथ खाय तो श्वास का रोग निश्चय जाय। अथवा पावभर भारंगी को ओटा के रस निकाले उसमें १०० टके भर गुड़ की चाशनी करे उस चाशनी के पकने में हड़ की छाल का पावभर चूर्ण डाले। फिर चाशनी ठंढी हो तब ६ टके भर शहद डाले और सोंठि, तज, पीपरि, पत्रज, नागकेसर ये पाँच २ माशा, जवाखार ८ माशा महीन पीस उस चाशनी में मिलावे। फिर १ पैसेभर नित्य खाय तो श्वास, खाँसी, बवासीर, गोला, क्षयी, उदर के रोग ये सब जायँ। यह भारंगी का अवलेह है। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं। अथवा पारा १० माशा, सोधी गन्धक १० माशा, शोधा सिंगीमुहरा १० माशा, भुना सुहागा १० माशा, मैनसिल १० माशा, काली मिरच १० माशा, सोंठि १० माशा, पीपरि १० माशा पहिले पारे और गन्धक की कजली करे और उसमें ये औषधें मिलावे फिर अदरक के रस की एक पुट देके यह श्वासकुठाररस १ रत्ती नित्य खाय तो श्वास जाय। अथवा धतूरे के बीज १ से बढ़ाकर ५ तक ३० दिन खाय तो श्वासरोग जाय। अथवा पारा १ भाग, गन्धक आधाभाग इनके बराबर ताम्रेश्वर ले फिर इन तीनों को ग्वार के पट्ठे के रस में खरल करे। फिर इसको ताँबे की डिबिया में धर बालुकायन्त्र में १ दिन पचाय सिद्धकर २ रत्ती प्रमाण

यह सूर्यावर्तरस पान में रखकर खाय तो श्वासरोग जाय। यह वैद्यविनोद में लिखा है। अथवा काकड़ासिंगी, सोंठि, पीपरि, नागरमोथा, पुष्करमूल, कचूर, कालीमिरच इन सबको बराबर ले और सबकी बराबर मिश्री महीन पीस इस चूर्ण को ३ माशा प्रमाण गिलोय, अड़ूसा, पीपरि, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि इनके काढ़े के साथ ले तो श्वासरोग जाय। यह चक्रदत्त में लिखा है। अथवा पीपरि, पुष्करमूल, हड़ की छाल, सोंठि, कचूर, कमलगट्टा इन सबको बराबर ले चूर्णकर इनके बराबर गुड़ में चने प्रमाण गोली बाँधकर १ या २ या ३ गोली नित्य खाय तो श्वास जाय। अथवा शोधा पारा, गन्धक, लोहसार, सोंठि, कालीमिरच, पत्रज, नागकेसर, नागरमोथा, बायविड़ंग, सम्हालू, कबीला, पीपलामूल, ये सब पारा, गन्धकसार, इन तीनों से दूनी-दूनी ले फिर इन सबको महीन पीस जलपीपरि के रस में ३ पुट दे। फिर इसकी चने के प्रमाण गोली बाँधे। १ गोली नित्य खाय तो श्वास, कास, बवासीर, भगन्दर, हृदय और पसली का शूल, संग्रहणी, उदररोग, प्रमेहमात्र इन सब रोगों को यह महोदधिरस दूर करता है। यह सर्वसंग्रह में लिखा है। अथवा पारा, शोधी गन्धक, लोह का सार, सुहागा, रास्ना, बायविड़ंग, त्रिफला, देवदारु, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, गिलोय, कमलगट्टा, शोधा सिंगीमुहरा पहिले पारे और गन्धक की कजली करे फिर इन सबको बराबर ले महीन पीस कजली में मिलाय शहद से १ तथा २ रत्ती के प्रमाण गोली बाँधें। १ गोली नित्य खाय तो श्वास जाय। यह वैद्यरहस्य में लिखा है। अथवा पारा और गन्धक बराबर ले इनकी कजलीकर चौराई के रस में ५ दिन खरल करे फिर वज्रमूसी में रखकर बालुकायंत्र में पकावे। १ दिन पीछे इसमें से २ रत्ती पान में खाय तो श्वास और हिचकी दूर हों। यह मेघडम्बर रस रुद्रदत्त ग्रन्थ में लिखा है।

इति पञ्चम स्तरङ्गः ॥ ५ ॥

—:०:—

स्वरभङ्ग रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

मनुष्य के बहुत बोलने से, विष आदि के खाने से, उच्चस्वर के पढ़ने से कण्ठ में किसी प्रकार की चोट लगने से कोप को प्राप्त हुए वात, पित्त, कफ कण्ठ के स्वर की बहनेवाली नसों में रहकर स्वरभङ्ग को करते हैं। वह स्वरभङ्ग छः प्रकार का है। वात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ शरीर के भंगपने ५ क्षयीरोग ६।

वात के स्वरभङ्ग के लक्षण

जिसके नेत्र, मुख, मल, मूत्र काले हों, टूटे शब्द बोले, गधे का सा शब्द हो तो वात का स्वरभङ्ग जानिए।

पित्त के स्वरभङ्ग के लक्षण

जिसके नेत्र, मुख, मल, मूत्र पीले हों और बोलने के समय गले में दाह हो तो पित्त का स्वरभङ्ग जानिए।

कफ के स्वरभङ्ग के लक्षण

दाहयुक्त कण्ठ कफ से रुका रहे और मन्द मन्द आधा बोला जाय, रात्रि में बढ़ जाय तो कफ का स्वरभङ्ग जानिए।

सन्निपात के स्वरभङ्ग के लक्षण

जिसमें वात, पित्त, कफ के सब लक्षण मिलें उसको सन्निपात का स्वरभङ्ग कहिए यह असाध्य है।

क्षयीरोग के स्वरभङ्ग के लक्षण

बोलते हुए मुख में धुआँ निकले तो क्षयीरोग का स्वरभङ्ग जानिए, यह भी असाध्य है।

शरीर के मोटेपन से उपजे स्वरभङ्ग के लक्षण

गले में बोले, शब्द सुनाई न दे और देर से बोले, गला जले, तृषा अधिक लगे जिसके ये लक्षण हों उसके शरीर के मोटेपन का स्वरभङ्ग जानिए। यह भी अच्छा नहीं है।

स्वरभङ्ग का यत्न

वात का स्वरभङ्ग हो तो नोन तेल की वस्तु खाने से जाय। पित्त का स्वरभङ्ग घृत और शहद के खाने से जाय। कफ का स्वरभङ्ग खारी, कडुवी वस्तु और शहद आदि के खाने से जाय। अथवा गले का, तालू का, मसूढ़े का रुधिर निकालने से स्वरभङ्ग जाय। अथवा गर्म जल

के पीने से वात का स्वरभंग जाय। अथवा घृत, गुड़ के खाने से वात का स्वरभंग जाय। गर्म दूध के पीने से पित्त का स्वरभंग जाय। अथवा कटेली १०० टके भर ले और इससे आधा पीपलामूल और इससे आधी चित्रक तथा चित्रक की बराबर दशमूल ले इनको एक मन पानी में औटावे जब ४ सेर पानी रह जाय तब छानकर उस पानी में १०० टके भर पुराने गुड़ की पतली चाशनी करे फिर उस चाशनी में ये सब औषधें महीन पीस डाले और १ सेर शहद डाले फिर २। टके तथा ३। टके भर नित्य खाय तो सब प्रकार का स्वरभंग, श्वास, कास, मन्दाग्नि, गले का रोग, अफरा, मूत्रकृच्छ्र इन सब रोगों को यह दूर करता है। यह कटेली का अवलेह भावप्रकाश में लिखा है। अथवा अजमोद, हल्दी, चित्रक, जवाखार, आमला ये सब बराबर ले महीन पीस ८ माशा घृत और शहद के साथ ले तो भयंकर भी स्वरभंग जाय। अथवा हड़ की छाल, बच, पीपरि महीन पीस गर्म जल से ले तो मेद के क्षयीरोग का स्वरभंग जाय। यह वैद्यविनोद में लिखा है। अथवा बहेड़े की छाल, पीपरि, सैंधवनोन, आमला इन सबको महीन पीस गौ के मट्ठे में अथवा गोमूत्र में ले तो स्वरभंग जाय। यह वृन्द में लिखा है। अथवा जायफल, पीपरि, खील, बिजोरे की केसर ये सब महीन पीस शहद के साथ चाटे तो स्वरभंग जाय और स्वर अत्यन्त सुन्दर सूक्ष्म हो जाय। यह जायफल का अवलेह सर्वसंग्रह में लिखा है। अथवा कुलींजन मुख में रखकर उसका रस पिये तो स्वरभंग जाय। अथवा चव्य, अमलबेत, सोंठि, काली मिरच, पीपरि, तन्तरीक, पत्रज, तज, सफेद जीरा, चित्रक, इलायची इन सबको बराबर ले महीन पीस ८ माशा पुराने त्रिवर्षी गुड़ में ले तो स्वरभङ्ग, पीनस, कफरोग, अरुचि ये सब जायँ। यह चव्यादि चूर्ण है। अथवा पारे की राख, ताम्रेश्वर, लोहसार इन तीनों को बराबर ले फिर इनमें कटेली के फलों के रस की २१ पुट दे। फिर उसकी गोली मूँग प्रमाण बाँधे। १ गोली मुख में रक्खे तो स्वरभङ्ग दूर हो। यह गोरखनाथजी की गोली है। अथवा ब्राह्मी, बच, हड़ की छाल, अड़ूसा, पीपरि ये सब बराबर ले महीन पीस ८ माशा शहद के साथ १४ दिन ले तो स्वर-

भङ्ग जाय और उसका स्वर किन्नर का सा हो। यह यत्न वैद्यरहस्य में लिखा है।

अरोचक रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

शोक, क्रोध, मोह, अतिलोभ, डरने से और चित्त के रोकनेवाले भोजन तथा बुरे प्रकार के रूप देखने से और बुरीगन्ध के सूँघने से मनुष्य के वात, पित्त, कफ ये तीनों अरुचिनाम रोग को उत्पन्न करते हैं। वह अरुचि पाँच प्रकार की है। वात, पित्त, कफ, सन्निपात और शोकादिक।

वात की अरुचि के लक्षण

खट्टा, कषैला मुख हो, हृदय में शूल हो, भोजन से रुचि जाती रहे तो वात की अरुचि जानिए।

पित्त की अरुचि के लक्षण

कड़ुवा, खट्टा, गर्म, विरस, नमकीन जिसके मुख का स्वाद हो, शरीर में दाह और मुख में शोष हो तो पित्त की अरुचि जानिए।

कफ की अरुचि के लक्षण

मुख मीठा हो, अरुचि हो, शरीर भारी रहे, बद्ध कोष्ठ हो, लार गिरे, शरीर में स्थान-स्थान पर पीड़ा हो तो कफ की अरुचि जानिए। ये सब लक्षण मिले हों तो सन्निपात की अरुचि जानिए।

शोकादिक की अरुचि के लक्षण

पेट में क्षुधा रहे और मुख से खाया न जाय तो शोक की अरुचि जानिए।

अरुचि का स्वरूप

मुख में अन्न का ग्रास लेने से कुछ भी स्वाद न आवे तो जानिए कि अरुचि का रोग है।

भक्तद्वेष के लक्षण

भोजन का चिन्तन करे अथवा भोजन के देखने से अन्न रुचे नहीं तो उसको भक्तद्वेष जानिए। यह माधवी में लिखा है।

भक्तद्वेष का यत्न

भोजन के पहिले सैंधवनोन और अदरख खाय तो क्षुधा लगे और कण्ठ, जीभ शुद्ध हो जाय। शहद और अदरख का रस मिला के पिये

तो अरुचि, श्वास, कास जाय। अथवा पक्की इमली का शर्बत मिश्री डालके करे उसमें इलायची, लवंग, भीमसेनी कपूर का प्रतिवास दे अर्थात् ऊपर से भुरकी छोड़ दे, फिर उस शर्बत को पिये अथवा कुल्ले करे तो अरुचि जाय। अथवा राई, जीरा, भुनी हींग, सोंठि, सैंधव-नोन इन सबको महीन पीस अनुमान मुवाफ़िक़ गो के मट्ठे में डालकर पिये तो अरुचि जाय और क्षुधा बढ़े। अथवा गौ के दही को वस्त्र में छानके उसमें मिश्री, इलायची, भीमसेनीकपूर*, लवङ्ग, कालीमिरच अनुमान मुवाफ़िक़ अर्थात् समभाग महीन पीस मिलाके पिये तो अरुचि तत्काल जाय। अथवा अनारदाना २ टके भर, मिश्री ३२ माशा, सोंठि ४ माशा, कालीमिरच ५ माशा, पीपरि ५ माशा, तज १० माशा, पत्रज १० माशा, नागकेशर १० माशा इन सबको महीन पीस ३ माशा प्रमाण जल से नित्य ले तो अरुचि जाय। अथवा लवङ्ग, कङ्कोल, मिरच, खस, चन्दन, तगर, कमलगट्टे, काला जीरा नेत्रबाला, अगर, नागकेसर, पीपरि, सोंठि, चित्रक, इलायची, भीमसेनीकपूर, जायफल, वंशलोचन ये सब बराबर ले और इनसे आधी मिश्री ले फिर महीन पीस ४ माशा नित्य जल के साथ ले तो अरुचि, मन्दाग्नि, क्षीणता, बद्धकोष्ठ, खाँसी, हिचकी, राजरोग, संग्रहणी, अतीसार, प्रमेह इन सब रोगों को यह लवङ्गादिचूर्ण दूर करता है। यह सब यत्न भाव-प्रकाश में लिखे हैं। अथवा वंशलोचन, बड़ी इलायची के दाने, अनार-दाना, जीरा ये सब धेले धेले भर ले और पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि, कालीमिरच, अजमोद, तन्तरीक, अमलबेत, असगन्ध, अज-वाइन, कैथ की गिरी ये भी धेले धेले भर और मिश्री ४। टके भर ले इन सबको महीन पीस ३ माशा प्रतिदिन जल के साथ ले तो अरुचि, श्वास, खाँसी, शूल, वमन, रक्तपित्त इन सब रोगों को यह दूर करता है। यह बृहत् एलादिकचूर्ण सारसंग्रह में लिखा है। अथवा जवाखार, सज्जी, भुना सुहागा, पाँचोनोन, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, त्रिफला, लोहसार, भीमसेनी कपूर, लवङ्ग, चव्य, चित्रक, अनारदाना, तन्तरीक, अदरक ये सब बराबर ले महीन पीस अजवाइन के अर्क की ३ पुट दे,

* जहाँ पर कपूर छोड़े तो शुद्ध करके औषध में मिलावे।

फिर नींबू के रस की ५ पुट दे, तथा अमलबेत के रस की ३ पुट दे, फिर इस रस की चने प्रमाण गोली बाँधे। १ गोली नित्य खाय तो अरुचि, मन्दाग्नि, प्रमेह, खाँसी और कफ के रोगों को नाना अनोपान से यह अग्निकुमाररस दूर करता है।

छर्दिरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

बहुत चिकनी और दुर्गन्धित वस्तु खाने से, पेट में कृमि के पड़ने से, खेद करने से, भय से, अजीर्ण से, आम के दोष से, तृषा लगने से, दुर्गन्धि की वस्तु देखने से, स्त्री के गर्भ रहने से, अति शीघ्र भोजन करने से वात, पित्त, कफ दुष्ट होकर अंगों में पीड़ा करके मुख के द्वारा सब खाया पिया निकाल देते हैं। इसको मनुष्य छर्दि कहते हैं। वह छर्दि ५ प्रकार की है। वात, पित्त, कफ, सन्निपात, सूगली वस्तु आदि देखने की।

छर्दि का पूर्वरूप

हृदय से खारी और खट्टा खट्टा प्रथम ही गिरे और डकार नहीं आवे, लार गिरने लगे, खारी मुख हो जाय, अन्नपान के ऊपर से रुचि जाती रहे तब जानना कि वमन होगा।

वात की छर्दि के लक्षण

हृदय और पसली में पीड़ा हो, मुखशोष हो, मस्तक और नाभि दूखे, श्वास और स्वरभेद हो, डकार का शब्द ऊँचा हो, वमन में झाग आवे, वमन का रंग काला और कषैला हो और बहुत वेग से वमन थोड़ा हो, दुःख बहुत पावे, ये लक्षण वात की छर्दि के जानिए।

पित्त की छर्दि के लक्षण

मूर्च्छा, तृषा, मुखशोष हो, मस्तक गर्म रहे, तालू और नेत्रों में गर्मी रहे, अँधेरा और घुमनो आवे और गर्म, हरा, लाल वमन करे तो पित्त की छर्दि के लक्षण जानिए।

कफ की छर्दि के लक्षण

तन्द्रा और मुख मीठा हो, कफ डाले, निद्रा आवे भोजन में अरुचि हो, शरीर भारी रहे, चिकनी, मीठी, ठंढी और कफयुक्त छर्दि हो, रोमाञ्च हो ये लक्षण हों तो कफ की छर्दि जानिए।

सन्निपात की छर्दि के लक्षण

शूल हो, अन्न पचे नहीं, अरुचि, दाह, तृषा, श्वास, प्रमेह ये सब सदैव अधिक रहें और सलोना, खट्टा, नीला, ठंढा, गर्म लार वमन करे तो सन्निपात की छर्दि जानिए।

सूगली वस्तु के देखने से उपजी छर्दि के लक्षण

उत्क्लेद होकर छर्दि करने लग जाय।

छर्दिरोग का यत्न

धनियाँ, सोंठि, दशमूल, इनका काढ़ा ले तो वात की छर्दि जाय। अथवा घृत में सैंधवनोन डालकर पिये तो वात की छर्दि जाय। अथवा मूँग, आमला इन दोनों को औटाय रस निकाल घृत और सैंधव नोन डाल पिये तो वात की छर्दि जाय। अथवा उरद, मूँग, मसूर, यव इनके आटे का रवाकर उसमें शहद डालकर पिये तो पित्त की छर्दि जाय। अथवा आमले के रस में चन्दन और शहद मिलाके पिये तो पित्त की छर्दि जाय। अथवा गिलोय, नींब की छाल, पटोल अर्थात् परवर के पत्ते, त्रिफला इनका काढ़ाकर शहद डाल पिये तो पित्त की छर्दि जाय। अथवा पित्तपापड़े के क्वाथ में शहद डाल पिये तो पित्त की छर्दि जाय। अथवा मक्खी की बीट, मिश्री, चन्दन, शहद मिला के चाटे तो पित्त की छर्दि जाय। अथवा खीलों का सत्तू घृत, मिश्री, शहद मिलाय खाय तो पित्त की छर्दि जाय। अथवा मसूर का सत्तू मिश्री मिलाय खाय तो पित्त की छर्दि जाय। अथवा अनार के रस में शहद मिलाय पिये तो पित्त की छर्दि जाय। अथवा चावल के पानी में शहद मिलाय पिये तो पित्त की छर्दि जाय। अथवा इलायची, नागरमोथा, नागकेसर, चावल की खील, गोरीसर, सफेद चन्दन, बहुफली, बेर की मींगी, लवङ्ग, पीपरि इन सबको बराबर ले महीन पीस ५ माशा तथा १० माशा भर शहद से चाटे तो त्रिदोष की छर्दि जाय। अथवा पीपरि की छाल को जलाय पानी में बुझाय वह पानी पिये तो छर्दि जाय। अथवा बेर की मींगी, आमले की मींगी, पीपरि, मक्खी की बीट इनका काढ़ाकर उसमें शहद मिश्री मिलाय पिये तो छर्दि जाय। ये सब यत्न वैद्यविनोद में लिखे हैं। अथवा जामुन और आम के पत्ते पानी में औटाय उस पानी में खील

का आटा डाल शहद मिलाय पिये तो भयङ्कर भी छर्दि जाय। अथवा सूगली वस्तु से उपजी छर्दि अच्छी वस्तु के दिखाने से जाय। और आम से उपजो छर्दि लंघन करने से जाय। ये यत्न भावप्रकाश में हैं। अथवा केसर १ माशे, इलायची २ माशे, सिंगरफ़ ३ माशे इनको शहद से चाटे तो छर्दि जाय।

तृषारोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

भय से, खेद से, निर्बलता से बढ़ा पित्त वात से मिल तालू में जाकर रोग की उत्पत्ति करता है और जल की ले जानेवाली नसों को रोककर वात, पित्त, कफ ये तीनों ७ प्रकार की तृषा को करते हैं। वात, पित्त, कफ, शस्त्रादिक के चोट लगने, निर्बलता, आम, भोजन करने की।

तृषारोग का स्वरूप

बारंबार जल पिये और तृप्ति न हो पानी पीने की मन में इच्छा ही बनी रहे तब जानिए कि तृषारोग है।

वात की तृषा के लक्षण

मुख उतर जाय, कनपटी और शिर में पीड़ा हो आवे, नासिका रुक जाय, मुख से रस का स्वाद जाता रहे, ठंढा पानी पीने से तृषा बढ़े तब जानिए कि वात की तृषा है।

पित्त की तृषा के लक्षण

मूर्च्छा हो, भोजन प्यारा लगे नहीं, दाह हो, शरीर में ताप हो और मल, मूत्र, नेत्र पीले हों, ये लक्षण पित्त की तृषा के जानिए।

कफ की तृषा के लक्षण

जठराग्नि को कफ रोकता है तब वह अग्नि की गर्मी जल को ले जानेवाली नसों को सुखाय कफ की तृषा को उपजाती है तब मनुष्य इस तृषा से पीड़ित होकर नींद और शरीर के भारीपने को प्राप्त होता है और मुख मीठा और शरीर सूखता जाय तब जानिए कि इसके कफ की तृषा है।

शस्त्रादिक की चोट से उपजी तृषा के लक्षण

शस्त्रादिक के लगने से, शरीर का रुधिर निकालने से अति पीड़ा होती है उससे तृषा लगती है।

क्षीणता की तृषा के लक्षण

हृदय दूखे, कम्प हो, मुख सूखे, शरीर में शून्यता हो, तृषा बहुत लगे, पीते पीते तृप्ति न हो तब जानो कि क्षीणता की तृषा है। तथा ऐसे ही लक्षण आम की तृषा के भी जानिए।

भोजन उपरान्त तृषा लगे उसके लक्षण

बहुत चिकना, खट्टा, नमकीन, भारी अन्न खाया हो तो तत्काल तृषा लगती है।

तृषा के उपद्रव

मुख का स्वर बैठ जाय तथा कण्ठ, गला, तालू सूखे और ज्वर, मोह, श्वास, खाँसी ये हों तो वह तृषावाला मर जाय।

तृषारोग का यत्न

वात की तृषावाले को गर्म अन्न और अच्छा जल दे तो तृषा जाय। अथवा दही और गुड़ मिलाकर खाय तो वात की तृषा जाय।

पित्त की तृषा का यत्न

सोने, रूपे का बुझाया पानी पिये तो पित्त की तृषा जाय। अथवा मिश्री के ठंढे शर्बत से पित्त की तृषा जाय। अथवा धनियाँ को रात्रि में भिजोकर प्रातःकाल घोट मिश्री मिलाकर पिये तो पित्त की तृषा जाय। अथवा अनार के शर्बत में मिश्री मिलाकर पिये तो पित्त की तृषा जाय। अथवा शीतलस्थान में रहने और भीगा वस्त्र पहिरने से पित्त की तृषा जाय। अथवा कपूर, चन्दन, अगर ये लगाने से पित्त की तृषा जाय।

कफ की तृषा का यत्न

तीखी, कड़ुवी, गर्म वस्तु खाने से कफ की तृषा जाती है। अथवा जीरा, सोंठि, काले नोन इनका चूर्ण जल से ले तो कफ की तृषा जाय। अथवा सुन्दर मद्य के पीने से कफ की तृषा जाय।

क्षीणता की तृषा का यत्न

सांठे के रस से तृषा दूर होती है। अथवा बड़ का अंकुर, मुलहठी, खील, कमलगट्टा इनको महीन पीस गोली कर मुख में रक्खे तो तृषा जाय। अथवा सेमर के गोंद को मुख रक्खे तो तृषा जाय। अथवा बिजौरे की जड़, कैथ, अनार की जड़, सफेद चन्दन, पठानीलोध की

जड़ इनको जल में महीन पीस शिर में लेप करे तो तृषा, दाह, शोष ये सब जायँ।

शस्त्रप्रहार से उपजी तृषा का यत्न

बकरे का रुधिर पीने से यह तृषा जाय। अथवा बकरे के शोरुवे में शहद मिलाकर खाय तो शस्त्रप्रहार की तृषा जाय। अथवा खीर में मिश्री मिलाकर खाय तो यह तृषा जाय।

आम की तृषा का यत्न

खुरासानी बच और बेल के काढ़े से आम की तृषा जाय।

दुर्बल मनुष्य की तृषा का यत्न

दूध के पीने से इसको तृषा जाय। तृषा से दुःखित हो पुरुष मोह को प्राप्त होकर प्राण छोड़ देता है इससे मनुष्य जल की तृषा को न रोके थोड़ा थोड़ा सदैव पिये। ये यत्न वैद्यविनोद और भावप्रकाश में लिखे हैं।

मूर्च्छा, मोह, भ्रम, तन्द्रा, निद्रा, संन्यासरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

क्षीण पुरुष के, बहुत कुपथ्य करनेवाले के मल मूत्र रोकने से, चोट लगने से पुरुष की बाहरवाली जो नेत्र, कर्ण आदि इन्द्रियाँ हैं उनमें वात, पित्त, कफ घुसकर संज्ञा करनेवाली नसों को तत्काल अन्धकार प्राप्त करते हैं तब मनुष्य को काष्ठ की भाँति पृथ्वी पर डाल देते हैं, उसके कुछ सुख-दुख का ज्ञान नहीं रहता। उसको वैद्य मोह और मूर्च्छा कहते हैं। वह मूर्च्छा छः प्रकार की है—वात, पित्त, कफ, रुधिर, मद्य और विष की। फिर उसी मूर्च्छा में पित्त होता है, वह मुख्य और प्रधान है।

मूर्च्छा का सामान्य स्वरूप

कुपथ्य के सेवन करनेवाले और हीनपराक्रम, क्षीण, मद्यादिक के पीनेवाले पुरुष के अज्ञान का हेतु तमोगुण पित्त बढ़कर ज्ञानरूप सतोगुण और रजोगुण को आच्छादन करे और दशों इन्द्रियों के स्थान में रहनेवाले वात, पित्त, कफ, ज्ञान की करनेवाली नसों को आच्छादन कर सुख, दुख और प्राण का हरनेवाला ऐसा अज्ञान कारण जो तमोगुण सो बढ़कर वेग से मनुष्य को काष्ठ की भाँति पृथ्वी पर डाल देता है, उसको वैद्य मूर्च्छा कहते हैं।

मूर्च्छा का पूर्वरूप

हृदय दूखे, जँभाई आवे, मन में ग्लानि हो, संज्ञा घट जाय तब जानिए कि इस पुरुष के मूर्च्छा का रोग होगा।

वात की मूर्च्छा के लक्षण

काला और लाल दीखकर फिर अन्धकार में प्रवेश होकर ज्ञान हो तदनन्तर शरीर काँपे, अङ्ग में हड़फूटन हो, हृदय दूखे, शरीर कृश हो जाय, लाल और कालो छाया दीखे, ये लक्षण जिसके हों उसके वायु की मूर्च्छा जानिए।

पित्त की मूर्च्छा के लक्षण

आकाश जिसको लाल, हरा, पीला दीखे फिर मूर्च्छा होकर पसीना आवे, फिर ज्ञान होकर तृषा लगे, शरीर ठंढा प्रस्वेद से युक्त हो और लाल, पीले जिसके नेत्र हों, मुख से टूटे अक्षर निकलें, शुद्ध बोला न जाय, शरीर की कान्ति पीली हो जाय तो पित्त की मूर्च्छा जानिए।

कफ की मूर्च्छा के लक्षण

मेघ की घटायुक्त आकाश सा जिसको दीखे, फिर उसको मूर्च्छा आवे और देर में ज्ञान हो तथा शरीर ठंढे पसीने से भर जाय और लार बहुत गिरे तो कफ की मूर्च्छा जानिए और सब लक्षण मिले हों तो सन्निपात की मूर्च्छा जानिए। यह मूर्च्छा मृगी के तुल्य है, सूगली वस्तु देखे बिन ही होती है।

रुधिर की मूर्च्छा के लक्षण

मनुष्य को रुधिर की दुर्गन्ध आकर पृथ्वी और आकाश अन्धकार युक्त दीखे तथा सर्वत्र रुधिर की बास आवे, निश्चल दृष्टि हो, श्वास अच्छी प्रकार न आवे फिर मूर्च्छा हो तो रुधिर की मूर्च्छा जानिए। इसी प्रकार चम्पे के फूल आदि के सूँघने से भी मूर्च्छा होती है, यह इसका स्वभाव है।

मद्य की मूर्च्छा के लक्षण

अधिक मद्य पीकर मनुष्य बहुत बके और पीछे से सो जाय, फिर संज्ञा जाती रहे तथा पृथ्वी पर हाथ-पैर पटके, जब तक शरीर में मद्य का अमल रहे शरीर काँपे, बहुत सोवे, प्यास अधिक लगे, ये लक्षण मद्य की मूर्च्छा के जानिए।

विष की मूर्च्छा के लक्षण

जिसने विष खाया हो उसका शरीर काँपे और नींद बहुत आवे, संज्ञा जाती रहे, मुख काला पड़ जाय, अतीसार हो, भोजन में रुचि जाती रहे, ये लक्षण विष की मूर्च्छा के जानिए। तमोगुण और पित्त की अधिकता से मूर्च्छा होती है।

भ्रम के लक्षण

रजोगुण और वात-पित्त जब मिलते हैं तब भ्रम होता है।

तन्द्रा के लक्षण

तमोगुण और वात-कफ जब मिलते हैं तब तन्द्रा होती है और आधे नेत्र खुले रहते हैं।

निद्रा के लक्षण

तमोगुण और कफ मिलने से मनुष्य का चित्त खेदयुक्त होता है और दशों इन्द्रियाँ भी खेदयुक्त होकर अपने अपने विषय को ग्रहण नहीं करें तब पुरुष सोता है।

संन्यास के लक्षण

हृदय में रहनेवाले वात, पित्त, कफ तीनों दोषों से वाणी, देह, मन की चेष्टा को ग्रहणकर निर्बल पुरुष को काष्ठ की भाँति मूर्च्छित करते हैं, उसको संन्यास कहिए।

मूर्च्छा का यत्न

तिल आदि के सेंकने से वात की मूर्च्छा जाय।

पित्त की मूर्च्छा का यत्न

शीतल शर्बतमात्र से पित्त की मूर्च्छा जाय। चमत्कारी मणि के धारण से मूर्च्छा जाय। कपूर, चन्दन आदि शीतल वस्तु के लेप से मूर्च्छा जाय। अथवा बेर की मींगी, शीतलचीनी, खस, नागकेसर ये चारों २० माशा ले फिर शीतल जल में भिगोय शर्बत कर इसमें शहद मिश्री मिलाय पिये तो मूर्च्छा जाय। अथवा मीठे अनार के शर्बत में मिश्री मिलाकर पिये तो मूर्च्छा जाय। अथवा किशमिश के शर्बत में मिश्री मिलाकर पिये तो मूर्च्छा जाय। अथवा साबुन जल में घोल-कर अञ्जन करे तो मूर्च्छा जाय। अथवा सिरस के बीज, पीपरि, काली-मिरच, सेंधानोन ये सब गोमूत्र में पीस अञ्जन करे तो मूर्च्छा जाय

अथवा मैनसिल, बच, लहसुन इन तीनों को गोमूत्र में पीस अञ्जन करे तो मूर्च्छा जाय। अथवा मैनसिल, महुआ, सेंधानोन, बच, काली मिरच ये सब बराबर ले जल में महीन पीस नास दे तो मूर्च्छा जाय।

रुधिर की मूर्च्छा का यत्न

सर्व शीतल यत्नों से यह मूर्च्छा जाय।

मद्य की मूर्च्छा का यत्न

सर्व शीतल यत्नों से यह भी मूर्च्छा जाती है। मद्य की मूर्च्छा में और थोड़ी सी मद्य पिये तो मद्य की मूर्च्छा जाय।

विष की मूर्च्छा का यत्न

विष की मूर्च्छावाले को मींढक की अथवा नीलेथोथे की अथवा फिटकरी की या गर्मपानी, पीपरि आदि की किसी प्रकार वमन कराने से विष की मूर्च्छा जाय। अथवा पीपरि, मारा पारा, ताम्रेश्वर, खस, नागकेसर ये सब बराबर ले इसमें से १ रत्ती के प्रमाण शीतल जल से दे तो सर्वप्रकार की मूर्च्छा जाय।

घुमनी का यत्न

धमासे के काढ़े में घृत मिलाकर पिये तो घुमनी जाय। अथवा आमला और हड़ के काढ़े में घृत डालकर पिये तो घुमनी जाय। अथवा सोंठि, पीपरि, सौंफ, हड़ की छाल ये सब टके टके भर ले और ६ टके भर गुड़ लेकर पाँच पाँच माशे की गोलियाँ बनावे और एक गोली नित्य खाय तो घुमनी जाय।

तन्द्रा का यत्न

सेंधानोन, कपूर, सरसों, मैनसिल, पीपरि, महुआ के फूल इनको घोड़े के झाग से महीन पीस अञ्जन करे तो तन्द्रा जाय और अतिनिद्रा भी दूर होय। अथवा सहँजने के बीज, सेंधानोन, सरसों, कूट इनको बकरे के मूत्र में महीन पीस नास दे तो तन्द्रा और अतिनिद्रा दोनों जायँ। अथवा काली मिरच, सहँजने के बीज, सोंठि, पीपरि ये सब बराबर ले अगस्त के रस में महीन पीस नास दे तो तन्द्रा जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं। अथवा सोंठि के रस में शहद और मिश्री मिलाकर पिये तो मूर्च्छा जाय। अथवा किवाँच की फली लगाने से मूर्च्छा जाय।

इति अमृतसागरनामग्रन्थे षष्ठस्तरङ्गः ॥ ६ ॥

—:०:—

मदात्ययरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

जो गुण विषभक्षण में हैं वही मद्य पीने में भी हैं। बुरे प्रकार अत्यन्त कुपथ्य के साथ जो पुरुष बहुत मद्य पिये उसके मदात्यय आदि बहुत से रोग उत्पन्न होते हैं, इसलिए मद्य अच्छे प्रकार से पीने योग्य है। इसको अच्छे प्रकार पिये तो अमृत का सा गुण करे और बुरे प्रकार पिये तो रोगों को उत्पन्न करती और विष के सदृश मार डालती है। इसमें दृष्टान्त है कि जैसे मनुष्य समय पर अच्छे प्रकार प्रमाण का भोजन करता है वह भोजन अमृत के तुल्य गुणदायक है और शरीर को आरोग्य करता है। और उसी अन्न को पशु के सदृश थोड़े बहुत का ज्ञान न रखकर खाय तो वही भोजन उबासी आदि अनेक रोगों को उपजाता है और तत्काल मारता है। ऐसे ही मद्य और विष ये दोनों प्राण के हर्त्ता हैं। परन्तु इनको युक्तिपूर्वक सेवन करे तो ये दोनों अमृत के तुल्य गुण करते हैं और सर्व रोग को दूरकर सदैव पुरुष को तरुण रखते हैं।

विधि से मद्य पीने का फल

प्रातःसमय शौचादिक कर, स्नान सन्ध्या से निवृत्त हो २ टके भर रीति से मद्य पिये और मध्याह्न समय सचिक्कण भोजन के साथ ४ टके भर पिये और सायङ्काल पहर भर रात्रि गये भोजन के समय ८ टके भर मद्य पिये तो यह मद्य अमृत का सा गुण करके क्षुधा को अधिक करती है, रोग को समीप नहीं आने देती और अच्छे भोजन के साथ प्रसन्नचित्त होकर पिये तो जैसा मद्य में गुण कहा है वैसा ही गुण करता है। सो वे लिखते हैं। काम बढ़ावे, चित्त प्रसन्न रक्खे और तेज, बुद्धि, पराक्रम, स्मृति, हर्ष, सुख, भोजन, निद्रा इन सबको मद्य बढ़ावे और अन्यथा पिये तो मदात्यय आदि अनेक रोगों को उत्पन्न करता है। वे भी लिखते हैं। बकने लगे, स्मरण जाता रहे, वाणी और शरीर की चेष्टा विक्षिप्त की सी हो जाय, आलस्य आवे नहीं, अनकहने की बातें कहे और काष्ठ के सदृश पड़ा रहे, अगम्यागमन करे, बड़ों को न माने, अभक्ष्य भोजन करे, संज्ञा जाती रहे, गुप्त बात को प्रकट कर दे और रोगों को उपजाकर शरीर की निर्बलता करे यह

अयोग्य रीति से होता है। जैसे भोजन बिना किये पिये, बारंबार पिया ही करे, क्रोध कर पिये, भय कर पिये, तृषायुक्त होकर पिये, खेदयुक्त हो पिये, मल-मूत्र से वेगयुक्त होकर पिये, बहुत खटाई के साथ पिये, निर्बलता में पिये, किसी प्रकार की गर्मी से पीड़ित होकर पिये तो उस पुरुष के मदात्यय आदि बहुत रोग होते हैं।

वात के मदात्यय रोग के लक्षण

हिचकी और श्वास हो, मस्तक काँपे, पसली में शूल हो, निद्रा न आवे, बहुत बके, ये लक्षण हों तो वात का मदात्यय जानिए।

पित्त के मदात्यय के लक्षण

तृषा बहुत लगे, दाह और ज्वर हो तथा पसीना, मोह, अतीसार हो, घुमनी आवे, शरीर का हरित वर्ण हो जाय तो पित्त के मदात्यय के लक्षण जानिए।

कफ के मदात्यय के लक्षण

वमन और अरुचि हो, नमकीन और खट्टा अच्छा लगे, तन्द्रा हो, शरीर भारी रहे ये लक्षण हों तो कफ का मदात्यय जानिए। और यह लक्षण मिले हों तो सन्निपात का मदात्यय जानिए।

परममद के लक्षण

पीनस, मस्तक में दर्द, अङ्गों में पीड़ा हो, शरीर भारी रहे, मुख का स्वाद जाता रहे, मल-मूत्र रुक जाय और तन्द्रा, अरुचि, तृषा ये लक्षण हों तो परममद जानिए।

पानाजीर्ण के लक्षण

अत्यन्त अफरा, वमन, दाह और अजीर्ण हो, ये लक्षण हों तो पानाजीर्ण जानिए।

पानविभ्रम के लक्षण

हृदय दूखे, अङ्गों में पीड़ा हो, कफ थूके, मुख से धुआँ निकले, मूर्च्छा, ज्वर, वमन और मस्तक में दर्द हो, मिठाई और मद्य में रुचि न हो, ये लक्षण हों तो पानविभ्रम जानिए।

मदात्यय के असाध्य लक्षण

नीचे का ओष्ठ लटक जाय, शरीर ऊपर से ठंढा लगे और भीतर

दाह हो तथा मुख में तेल की बास आवे, जीभ, ओष्ठ, दाँत काले हों और नेत्र नीले, पीले और लाल हो जायँ तथा हिचकी, ज्वर, वमन, पसली में शूल, खाँसी, घुमनी, ये लक्षण हों तो मदात्यय असाध्य जानिए।

मदात्यय, परममद, पानाजीर्ण, पानविभ्रम आदि का यत्न

दारू की विधि से निकाले हुए सुन्दर आसव के सेवन से वात का मदात्यय जाय। यहाँ यह दृष्टान्त है कि अग्नि से जले हुए को अग्नि ही से तपावे तो अच्छा हो। अथवा बिजौरे की केसर, अमलबेत, मीठा बेर, मीठा अनार, अजवाइन, जीरा, सोंठि इन तीनों को महीन पीस बिजौरादिक के रस की इनमें पुट दे, फिर इस चूर्ण को अन्दाज से ३ माशा सुन्दर मद्य में डालकर विधिपूर्वक पिये अथवा इसमें सेंधा नोन मिलावे। अथवा सत्तू के साथ मद्य पिये और पुरानी मद्य पिये। अथवा काला नोन, सोंठि, काली मिरच, पीपरि इनको महीन पीस चूर्णकर ३ माशा भर मद्य में मिलाय पिये तो वात का मदात्यय जाय। अथवा चव्य, काला नोन, भुनी हींग, सोंठि, अजवाइन इनको महीन चूर्णकर मद्य में मिला के पिये तो वात का मदात्यय जाय। अथवा लवा, तीतर, मुर्गे का मांस भक्षण करने से वात का मदात्यय जाय। अथवा सर्वगुणसम्पन्न यौवनवती १६ वर्ष की स्त्री से सम्भोग करे तो वात का मदात्यय जाय। यह यत्न भावप्रकाश में लिखा है। अथवा किशमिश, अनार, छुहारा, महुआ इनको दारू, मिश्री मिलाके पिये तो वात का मदात्यय जाय। अथवा गौ का मट्ठा मिश्री मिलाके पिये तो वात का मदात्यय जाय यह सारसंग्रह में लिखा है।

पित्त के मदात्यय का यत्न

सब शीतल यत्नों से पित्त का मदात्यय जाय। अथवा शीतल जल में मिश्री और शहद मिलाके पिये तो पित्त का मदात्यय जाय। अथवा मीठे अनार के रस में मिश्री मिलाके पिये तो पित्त का मदात्यय जाय। अथवा खरगोश, हरिण, लवा इनका मांस खाय तो पित्त का मदात्यय जाय। अथवा बकरे के शोरुवे में साँठी के चावल खाने से पित्त का मदात्यय जाय।

कफ के मदात्यय का यत्न

चन्दन, खस इनके लेप से कफ का मदात्यय जाय। अथवा यव, गेहूँ का पथ्य खाने से कफ का मदात्यय जाय। अथवावमन और लङ्घन करने से कफ का मदात्यय जाय। अथवा काला नोन, जीरा, अमलबेत, तज, इलायची, कालीमिरच, मिश्री इन सबको महीन पीस जल के साथ ले तो कफ का मदात्यय जाय।

सन्निपात के मदात्यय का यत्न

१ तोले आमले के रस में पारे और गन्धक की १ माशा कजली मिलाके पिये तो सन्निपात का मदात्य जाय।

पानविभ्रम का यत्न

किशमिश के शर्बत में अथवा कैथ के शर्बत में अथवा अनार के शर्बत में शहद मिलाके पिये तो पानविभ्रम जाय। यह वृन्द में लिखा है।

धतूरे के फल के मद का यत्न

पेठे के रस में गुड़ मिलाके पिये तो धतूरे का मद जाय। अथवा दूध में मिश्री डालकर पिये तो धतूरे और भङ्ग का मद जाय।

भङ्ग के मद का यत्न

कपास की जड़ का रस अथवा बैंगन की जड़ का रस या पतला मट्ठा अथवा घृत या नीबू का रस मिश्री के शर्बत में मिलाके पिये तो धतूरे और भङ्ग का मद जाय।

विष के मद का यत्न

निंबौली की मींगी और नीलाथोथा १ माशा इन दोनों को पीसकर काँजी के पानी में मिलाकर पिये तो सर्व विषमात्र का मद जाय। यह यत्न वैद्योपचार ग्रन्थ में है।

दाहरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

दाह ७ प्रकार का है। पित्त का १ दुष्ट रुधिर के बढ़ने का २ शस्त्रादिक से निकले रुधिर से पूर्ण हुए कोष्ठ का ३ मद्यादिक के पीने का ४ तृषा रोकने का ५ धातुक्षय का ६ मर्मस्थान में चोट लगने का ७।

पित्त के दाह का लक्षण

जिसमें पित्तज्वर के सब लक्षण मिलें उसे पित्त का दाह जानिए।

रुधिर के दुष्टपने से उत्पन्न दाह का लक्षण

सब शरीर में दाह लग जाय और सब देह में धुआँ सा निकले तथा शरीर की ताम्र की सी आकृति हो और ताम्र के रंगसदृश नेत्र हों, मुख में रुधिर की सी गन्ध आवे और सब अङ्ग अग्नि की भाँति जलें—ये लक्षण हों तो दुष्ट रुधिर का दाह जानिए।

शस्त्रादिक से निकले रुधिर से पूर्ण हुए कोष्ठ के दाह का लक्षण

जिसका रुधिर से कोष्ठ भर जाय और दाह लग जाय तो वह असाध्य रोगी मर जाय।

मद्यादिक पीने के दाह का लक्षण

हृदय का पवन पित्त और रुधिर से मिल सब त्वचा में प्राप्त होकर शरीर में भयङ्कर दाह करता है।

तृषा रोकने के दाह का लक्षण

तृषा के रोकने से शरीर का जल और धातु क्षीण होता है, शरीर में गर्मी बढ़कर शरीर को दग्ध करती है तब मनुष्य का चित्त मन्द होता है और गला, तालू सूखकर जीभ बाहर निकालकर काँपने लगता है।

धातुक्षय के दाह का लक्षण

धातुक्षय के दाह से मूर्च्छा और तृषा होकर मुख का स्वर बैठ जाय, शरीर की सामर्थ्य जाती रहे तो यह दाह असाध्य है।

मर्म की चोट लगने के दाह का लक्षण

शिर से पेड़ू को आदि ले मर्मस्थान में चोट लगने से जो दाह उत्पन्न हो वह असाध्य जानिए।

दाह का असाध्य लक्षण

शरीर ठंडा हो जाय, दाह भीतर हो तो वह मनुष्य मर जाय।

दाह का यत्न

१००० बार का अथवा १०० बार का धोया घी शरीर में मर्दन करे तो शरीर का दाह जाय। अथवा यव के सत्तू में मिश्री मिला के खाय तो दाह जाय। अथवा आमले के पानी में कपड़ा भिजोकर ओढ़े तो दाह जाय। अथवा खस और रक्तचन्दन घिसकर शरीर में लेपन करे तो दाह जाय। अथवा केले के पत्तों की व कमल की पंखु-

रियों की सेज पर सोवे तो दाह जाय। अथवा फव्वारा, चादर आदि जलक्रीड़ा करने से दाह जाय। अथवा खस की टट्टियों में रहने से दाह जाता रहे। अथवा शीतल जल के पीने से दाह जाता रहे। अथवा उपवन आदि शीतल स्थान में रहने से दाह जाता रहे। अथवा चन्दन, पित्तपापड़ा, खस, कमलगट्टा, धनियाँ, सौंफ, आमला इनका समान भाग लेकर काढ़ा कर उसमें शहद मिश्री मिलाकर पिये तो दाह दूर हो। ये सब उपाय भावप्रकाश में लिखे हैं।

रुधिर बिगड़ने के दाह का यत्न

फ़स्त लगवा दे तो बिगड़े रुधिर का दाह दूर हो। अथवा पारा, शोधी गन्धक, भीमसेनी कपूर, चन्दन, खस, नागरमोथा ये सब बराबर ले पीछे पारे और गन्धक की कजली कर उसमें ये ओषधियाँ डाले पीछे इसके जल से गोली बाँधे। १ गोली मुख में रखकर चूसे तो शरीर के भीतर का दाह जाय। यह दाह के दूर करने का रस है। अथवा शोधा पारा १ तोला, ताम्रेश्वर १ तोला, अभ्रक १ तोला, शोधी गन्धक १ तोला, प्रथम पारे और गन्धक की कजली करे, फिर ये सब ओषधियाँ उसमें मिलाकर नागरमोथे के रस की १ पुट दे, फिर पीपरि के रस की १ पुट दे तदनन्तर मीठे अनार के रस की १ पुट दे तथा बड़ के अंकुरों की १ पुट दे फिर चन्दन के रस की १ पुट दे एवं सहदेई के रस की १ पुट दे पीछे किशमिश के रस की ७ पुट दे, छाया में सुखाय चने प्रमाण गोली बाँधे। १ गोली नित्य खाय तो दाह, अम्ल, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर प्रमेह इन सब रोगों को यह चन्द्रकलारस दूर करता है।

उन्मादरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

विरुद्ध भोजन, अपवित्र भोजन और दुष्ट भोजन से तथा देवता, गुरु, ब्राह्मण, तपस्वी और राजा इनके तिरस्कार से एवं किसी प्रकार के भय और हर्ष से तथा धतूरा, भङ्ग आदि के खाने से मनुष्यों का चित्त बिगड़ जाता है। वह बिगड़ा हुआ चित्त वात, पित्त, कफ इन तीनों से मिलकर पुरुष को मदयुक्त कर देता है अर्थात् मनुष्य को गहल में कर देता है उसको लौकिक में हौलदिली कहते हैं। हौलदिली वात

१ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ मन के दुःख ५ विष खाने ६ आदि छह प्रकार से होती है।

उन्माद का स्वरूप

क्षीण-पुरुष के विरुद्ध भोजन करने के पीछे वात, पित्त, कफ दुष्ट होकर बुद्धि को नष्ट करते हैं, फिर उसके हृदय में पीड़ा करके मन के ले चलनेवाली नसों को मोहित करते हैं, तब मनुष्य का चित्त डामाडोल होकर थिर नहीं रहता। इसको हौलदिली कहते हैं।

उन्माद का पूर्वरूप

बुद्धि स्थिर न रहे, शरीर का पराक्रम जाता रहे, ये लक्षण हों तो जानिए कि पुरुष के उन्माद होगा।

वात के उन्माद का लक्षण

रूखी और ठंढी वस्तु अधिक खाने, अधिक जुलाब लेने और धातु की क्षीणता से वात बढ़ती है। वह वात हृदय को बिगाड़कर बुद्धि और स्मरण को तत्काल नष्ट करती है; तब मनुष्य बिना ही कारण हँसे, गावे, नाचे अथवा हाथ-मुख से बन्दर की-सी चेष्टा करने लग जाय और रोने लग जाय तथा शरीर कठोर और काला, लाल पड़ जाय और भोजन पचने के पीछे यह रोग अधिक बढ़े, ये लक्षण हों तो वात का उन्माद जानिए।

पित्त के उन्माद का लक्षण

अजीण में भोजन करने और कड़ुआ, खट्टा गर्म भोजन से पित्त बढ़कर मनुष्य के हृदय को बिगाड़कर उन्माद को करता है तब वह पुरुष किसी बात को माने नहीं और नंगा होकर सबको मारने लगे तथा शरीर गर्म हो जाय, शीतल वस्तु खाने की इच्छा रहे और शरीर पीला हो जाय, ये लक्षण हों तो पित्त का उन्माद जानिए।

कफ के उन्माद का लक्षण

क्षुधा मन्द होने पर भी बहुत खाय, काम करने में आलस्य आवे उसका पित्त कफ से मिलकर मर्मस्थानों को बाँधता है, तब पुरुष की बुद्धि और स्मरण को नाश करके उसके चित्त को बिगाड़ उन्मत्त कर देता है, तब वह पुरुष कम बोलता है। क्षुधा जाती रहे, स्त्रियाँ प्यारी

लगें, एकान्तस्थान अच्छा लगे, नींद अधिक आवे, छर्दि हो, बल जाता रहे, नखादिक श्वेत हो जायँ, ये लक्षण हों तो कफ का उन्माद जानिए और ये सम्पूर्ण लक्षण मिले हों तो सन्निपात का उन्माद जानिए।

मन के दुःख के उन्माद का लक्षण

चोरों के भय से, राजा के भय से, प्रबल शत्रु के भय से और भयानक कर्म के भय से अथवा धन पुत्रादिक के नाश से, अधिक मैथुन से जब पुरुष के चित्त में चोट लगती है तब उस पुरुष के मन में चोट लगकर मन को बिगाड़कर उन्मत्त कर देती है। वह पुरुष जो चाहता है वही अस्तव्यस्त बकता है और संज्ञा जाती रहती है तथा गाने, हँसने लग जाय ये लक्षण हों तो मन के दुःख का उन्माद जानिए।

विष खाने के उन्माद का लक्षण

लाल नेत्र हों, शरीर का बल और सब इन्द्रियों की कान्ति जाती रहे, गरीब हो जाय, मुख काला पड़ जाय, ये लक्षण हों तो विष खाने का उन्माद जानिए। इस उन्मादवाला मर जाय।

उन्मादमात्र का असाध्य लक्षण

नीचा या ऊँचा ही मुख रक्खे और शरीर का बलमात्र जाता रहे, निद्रा आवे नहीं, जागा ही करे, ये लक्षण हों तो वह पुरुष मर जाय।

भूतादिक के लगने से उपजे उन्माद का लक्षण

जिस पुरुष के भूतादिक लगे हों उस पुरुष की वाणी मनुष्य की सी न होकर विचित्र हो और उसका पराक्रम, शरीर की चेष्टा और उसके ज्ञान-विज्ञान भी विचित्र हों तो भूतादिक के लगने का उन्माद जानिए।

जिसके शरीर में किसी देवता का प्रवेश हो उसके उन्माद का लक्षण

सब बातों से वह संतुष्ट और पवित्र रहे, अच्छे पुष्पादिक की माला धारण करे, सुन्दर अतर सूँघा करे और नेत्र बन्द न हों तथा बिना पढ़ा हुआ संस्कृत बोले, शरीर में तेज बढ़े और जो माँगे उसको वर दे तथा ब्राह्मण बन जाय जिसमें ये लक्षण हों उसके देवता के प्रवेश का उन्माद जानिए।

जिसके शरीर में असुर ने प्रवेश किया हो उसके उन्माद का लक्षण

पसीना आवे और ब्राह्मण, गुरु, देवता इनमें दोष निकाले, कुटिल दृष्टि हो, किसी प्रकार का भय न हो, खोटे मार्ग में दृष्टि हो, किसी प्रकार तृप्ति न हो, भोजनादिक में दुष्टात्मा हो, ये लक्षण जिसमें हों उसके असुर लगा हुआ जानिए।

गन्धर्व लगने से उपजे उन्माद का लक्षण

दुष्टात्मा हो और पुलिन वन में रहने से चित्त प्रसन्न रहे, आचार में मग्न रहे, गाना और नाचना सुहावे, थोड़ा बोले, ये लक्षण हों तो गन्धर्व लगा जानिए, और यही यक्षग्रह के लक्षण जानिए।

जिसके शरीर में पितृदोष हो उसका लक्षण

डाभ के ऊपर पिण्ड बनाकर धरा करे, सतोगुणी हो, तर्पण किया करे तथा मांस, गुड़ और खीर के भोजन में रुचि रहे, ये लक्षण हों तो पितृदोष जानिए।

जिसके सती का दोष हो उसका लक्षण

मन निश्चल रहे नहीं, सन्तानादिक का अवरोध करे, सती की वार्ता सुहावे, बोले नहीं, बोले तो वर दे और पवित्र रहे, अच्छी वस्तुओं में मन रहे, ये लक्षण हों तो सती का दोष जानिए।

क्षेत्रपाल के दोष का उन्माद

मुख, नासिका में रुधिर चले, श्मशान की भस्म मस्तक में लगावे, खोटा स्वप्न हो, उदर में पीड़ा रहे और सन्धि-सन्धि में पीड़ा रहे, चित्त स्वस्थ न रहे, ये लक्षण हों तो क्षेत्रपाल का दूषण जानिए।

बीजासणी देवी के दोष से उपजे उन्माद का लक्षण

पक्षाघात हो, शरीर और रुधिर सूख जाय, मुख और पैर टेढ़े हो जायँ, शरीर क्षीण हो जाय, स्मरणादिक जाता रहे, ये लक्षण हों तो बीजासणी देवी का दोष जानिए।

कामण के दोष से उपजे उन्माद का लक्षण

कन्धा और मस्तक भारी हो, मन स्थिर न रहे, सर्व अङ्ग क्षीण हो जायँ तथा नासिका, हाथ और पैर में दाह हो, वीर्यनाश हो, शरीर के

आठों अङ्गों में सुई के से चुभके चलते रहें, शरीर सूख जाय, ये लक्षण हों तो कामण के दोष का उन्माद जानिए।

शाकिनी, डाकिनी के लगने से उपजे उन्माद का लक्षण

सब अङ्गों में पीड़ा हो, नेत्र बहुत दूखें, मूर्च्छा हो, शरीर काँपे, रोवे, बके, भोजन में अरुचि हो, हँसे, स्वरभङ्ग हो, शरीर का बल और क्षुधा जाती रहे, घुमनी आवे, ज्वर भी हो, ये लक्षण हों तो शाकिनी, डाकिनी का दोष जानिए।

कुगति से मरा पुरुष जो प्रेत हो उससे उपजे उन्माद का लक्षण

सवेरे ही घर में से उठउठ भागे, खोटा वचन कहे, बहुत बके, शरीर काँपे, रोवे, खाय पिये नहीं, बुरे प्रकार श्वास लिया करे, मन में आवे सो खाय, ये लक्षण हों तो प्रेत का दोष जानिए।

जिसके राक्षस लगा हो उसके उन्माद का लक्षण

मांस खाने और रुधिर पीने में जिसकी रुचि रहे, बहुत दुष्टता से बोले, बहुत सा शूरपना चढ़ जाय, क्रोध बहुत हो, रात्रि में अकेला फिरे, अपवित्र रहे, ये लक्षण हों तो राक्षस लगा जानिए।

जिसके ब्रह्मराक्षस लगा हो उसके उन्माद का लक्षण

देवता, ब्राह्मण, गुरु इनसे शत्रुता रक्खे, वेद और वेदान्त का जानने वाला आप हो जाय तथा अपने शरीर को आपही दुःख दे और मारे नहीं, ये लक्षण हों तो ब्रह्मराक्षस लगा जानिए।

पिशाच लगने के उन्माद का लक्षण

ऊँचे हाथ रक्खे, शरीर कृश हो जाय, कुछ का कुछ बके, शरीर में दुर्गन्ध आवे, अपवित्र रहे, अतिचञ्चल हो जाय, बहुत खाय, उद्यान में मन रहे, भ्रमे, बहुत रोवे, ये लक्षण हों तो पिशाच लगा जानिए।

उन्माद के असाध्य लक्षण

नेत्र फटे से हो जायँ, डोला करे, मुख में झाग आवें, निद्रा बहुत आवे, गिरगिर पड़े, काँपे, ये लक्षण हों तो असाध्य जानिए और पूर्णिमा में अधिक रोग हों तो देवता का दोष जानिए और सायंकाल का कोई लगे तो असुर का दोष जानिए। तथा पड़िवा को विकल हो तो यक्ष का

दोष जानिए और रात्रि में ये लक्षण हों तो पिशाच का दोष जानिए।

इन सबके लगने का प्रकार कहते हैं

जैसे मनुष्यादिकों का प्रतिबिम्ब दर्पणादिक में प्रवेश करता है तैसे ही प्राणीमात्र में शीत और उष्णता घुस जाती है और जैसे आतशी शीशे में सूर्य की किरण प्रवेशकर अग्नि को उत्पन्न करती है वैसे ही मनुष्यादिकों के शरीर में भूत प्रेतादिक प्रवेश कर जाते हैं और दीखते नहीं, परन्तु चेष्टादिकों से जान पड़ते हैं।

उन्माद को आदि ले इन सबका यत्न

घृतादिक के पीने से वात का उन्माद जाय, अच्छे जुलाब के लेने से पित्त का उन्माद जाय, वमन के करने से कफ का उन्माद जाय, लिङ्ग और गुदा में पिचकारी देने से उन्माद जाय। इसको बस्तिकर्म कहते हैं। अथवा लौनिये के रस में बराबर का गुड़ डाल गौ का मट्ठा मिलाकर पिये तो उन्माद जाय, अथवा खरैंटी की डालियों का रस निकाल पिये तो उन्माद जाय, अथवा कड़ुवे तेल का मर्दन करके धूप में बैठे तो उन्माद जाय, अथवा कोई अद्‌भुत वस्तु दिखावे या किसी इष्ट-मित्र का नाम सुनावे तो उन्माद जाय, अथवा गर्म घृत व गर्म तेल या गर्म जल को स्पर्श करावे तो उन्माद जाय, अथवा कौंच की फली का स्पर्श करावे तो उन्माद जाय, अथवा कोड़े की मार मारे तो उन्माद जाय, अथवा शस्त्र से सर्प से सिंह से वा रोकने से किसी प्रकार से डरपावे तो उन्माद जाय, जिस प्रकार से चित्त ठिकाने आवे सो सर्वदुःख से प्राण का रखना भला है। इस कारण ये यत्न अच्छे हैं। अथवा कूट, असगन्ध, सेंधा नोन, अजमोद, दोनों जीरे, सोंठि, काली मिरच, बड़ी पीपरि, पाढ़, शंखाहूली सबको बराबर ले और इन सबकी बराबर बच ले, फिर सबको महीन पीस उसमें ब्राह्मी से रस की १० पुट दे, फिर छाया में सुखा कर ६ माशा प्रमाण घृत, शहद के साथ इस सारस्वत चूर्ण को १५ दिन ले तो सर्वप्रकार का उन्माद जाय। यह चूर्ण सर्ववात के विकार और प्रमेह को दूर कर बुद्धि को बढ़ाकर कविताशक्ति करता है। यह चूर्ण ब्रह्माजी का बनाया सारस्वत चूर्ण है। अथवा त्रिफला, पित्तपापड़ा, देवदारु,

शालिपर्णी (सरिवन), जवासा, तगर, हल्दी, दारुहल्दी, इन्द्रायण की जड़, गौरीसर, चन्दन, पद्माक, कूट, कमलगट्टे, इलायची, कटेली, मंजीठ, पत्रज, निशोत, बायबिड़ंग, रुद्रदन्ती, नागकेसर, मुलहठी, पृष्ठिपर्णी (पिठवन), चमेली के फूल ये सब औषध धेले धेले भर ले फिर इन औषधों को ४ सेर जल में कूट डाले और इसमें १ सेर गौ का घृत डालकर मधुरी आँच में पकावे, जब वह जल भस्म हो जाय और घृतमात्र रह जाय तब उतार ले, फिर २० माशा प्रतिदिन भोजन के साथ खाय तो उन्माद, मृगीरोग, पाण्डुरोग ये सब जायँ। यह कल्याणघृत है। अथवा सोंठि, काली मिरच, पीपरि, हींग, खुरासानी बच, सिरस के बीज, सेंधा नोन, सरसों इन सबको बराबर लेके गोमूत्र में महीन पीस अञ्जन करे तो उन्माद जाय। यह यत्न वैद्यविनोद में है। अथवा सोंठि, अजमोद, हल्दी, दारुहल्दी, सेंधानोन, बच, मुलहठी, कूट, पीपरि, जीरा ये सब बराबर ले गोमूत्र में महीन पीस १० माशा घृत के साथ खाय तो उन्माद जाय तथा उसकी जिह्वा में सरस्वती आ बसें। यह विश्वाद्य-चूर्ण भावप्रकाश में लिखा है। अथवा ब्राह्मी का रस, पेठे का रस अथवा पीपलामूल का रस अथवा शंखाहूली का रस ४० माशा पिये तो उन्माद जाय। अथवा खुरासानी बच, कूठ, शंखाहूली, धतूरे की जड़ ये सब बराबर लेकर इसमें ब्राह्मी के रस की ७ पुट दे, फिर काले धतूरे के बीज के तेल की ५ पुट दे फिर इसकी नास देने से उन्माद दूर होता है, यह वैद्यरहस्य में लिखा है। अथवा सिरस के फूल, मंजीठ, पीपरि, सरसों, खुरासानी बच, हल्दी, सोंठि इन सबको बराबर ले, बकरे के मूत्र में महीन पीस गोली बाँध ले। फिर एक गोली घिसकर अञ्जन करे तो उन्माद जाय। यह योगरत्नावली में है, अथवा भूनी हींग, काला नोन, सोंठि, काली मिरच, पीपरि ये सब बराबर दो २ टके भर ले फिर ४ सेर गौ का घृत और घृत से चौगुना गौ का मूत्र ले फिर इन सबको इकट्ठा कर मधुरी आँच से पकावे। जब उसमें से गोमूत्र जल जाय और घृतमात्र रह जाय तब उतार १ तोला भोजन के समय ले तो उन्माद दूर हो।

सर्वशास्त्र के अनुसार भूतादि उन्माद के मन्त्र, तन्त्र

प्रथम भूतादिक का जो यत्न करे वह आप पवित्र हो अपनी रक्षा करके यत्न करे। काली मिरच, पीपरि, सेंधा नोन, गोरोचन इनको महीन पीस शहद में अञ्जन करे तो भूत-प्रेत जायँ। ज्वर के प्रकरण में भूतज्वर के ऊपर श्रीनृसिंहजी का दिव्यमन्त्र लिखा है उससे भूत-प्रेतादिक के सब उन्माद दूर होते हैं।

शिवकथित उड्डीश-शाबर मन्त्र

ॐ नमो भगवते नारसिंहाय अतुलवीरपराक्रमाय घोररौद्रमहिषासुररूपाय त्रैलोक्यडम्बराय रौद्रक्षेत्रपालाय ह्रो ह्रौ० क्री क्री० क्रमित ताड़य ताड़य मोहय मोहय द्रंभि द्रंभि क्षोभय क्षोभय आभि आभि साधय साधय ह्रीं हृदये आशक्तय प्रीति ललाटे बन्धय ह्रीं हृदये स्तम्भय स्तम्भय किलि किलि ई ह्रीं डाकिनी प्रच्छादय प्रच्छादय शाकिनीं प्रच्छादय प्रच्छादय भूतं प्रच्छादय प्रच्छादय अभूति अदूति स्वाहा राक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय ब्रह्मराक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय आकासं प्रच्छादय प्रच्छादय सिंहिनीपुत्रं प्रच्छादय प्रच्छादय एते डाकिनीग्रहं साधय साधय शाकिनीग्रहं साधय साधय अनेन मन्त्रेण डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेत, पिशाचादि एकाहिक, द्व्याहिक, त्र्याहिक, चातुर्थिक, पंचमिक, वातिक, पैत्तिक, श्लेष्मिक, सन्निपात, केशरी, डाकिनीग्रहादि मुञ्च मुञ्च स्वाहा गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच। इस मन्त्र से २१ बार मोरपंख से अथवा लोहे की वस्तु से अथवा छप्पर के पानी से झाड़ दे तो भूतादिक के सब उन्माद दूर हों।

शाकिनी, डाकिनी के बकुराने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू को ॐ नमो जय जय नृसिंह तीन लोक चोदह भुवन में हाथ चाब ओठ चाब नयन लाल लाल सर्ववैरी पछाड़ मार भक्तन की प्राण राख आदेश आदेश पुरुष को। इस मन्त्र की क्रिया। यह मन्त्र पढ़ रोगी को बैठाय मन्त्र से पानी अभिमन्त्रितकर आप पवित्र हो उस रोगी को पिलावे फिर उससे पूछे तो शाकिनी और डाकिनी निश्चय बोले।

डाकिनी बकुराने का मन्त्र

ॐ नमो चढ़ो चढ़ो शूरवीर धरती चढ़ पाताल चढ़ि पगपाली चढ़ा कौन कौन बीर चढ़ा हनुमन्त वीर चढ़ा धरती चढ़ी पगपाणा चढ़ी एँड़ी चढ़ी एँड़ी चढ़ी मुरवे चढ़ी मुरवे चढ़ी पिण्डुरी चढ़ी पिण्डुरी चढ़ी गोड़ा चढ़ी गोड़ा चढ़ी जाँघ चढ़ी जाँघ चढ़ी कटि चढ़ी कटि चढ़ी पेट चढ़ी पेट चढ़ी पेट से धरणि चढ़ी धरणि से पांसल्या चढ़ी पांसल्या से हिये चढ़ी हिये से छाती चढ़ी छाती से खवा चढ़ी खवा से कण्ठ चढ़ी कण्ठ से मुख चढ़ी मुख से जिह्वा चढ़ी जिह्वा से कानों चढ़ी कानों से आँखों चढ़ी आँखों से ललाट चढ़ी ललाट से शीश चढ़ी शीश से कपाल चढ़ी कपाल से चोटी चढ़ी हनुमान नारसिंह कर वारात्मा चल्यां वीर समदवीर दोठवीर अगियावीर सोसन्तावीर ये वीर चढ़्या। इस मन्त्र से बकुरावे तो उस पुरुष में वह निश्चय आय बोले।

डाकिनी के चोट लगने का मन्त्र

ॐनमो महाकाया योगिनी योगिनी पार शाकिनी कल्पवृक्षाय दृष्टियोगिनी सिद्धरुद्राय कालदण्डेन साधय साधय मारय मारय चरय चरय अपहर अपहर शाकिनी सपरिवारं नमः ॐ त्रिं ६ ॐ ह्रीं टं ह्रों ह्रोट फट् स्वाहा। इस मन्त्र की क्रिया पवित्र होकर ७ बार गूगल को मन्त्रित कर ओखली में डाल मूसल से कूटे तो यह चोटें डाकिनी के लगें और इस मन्त्र से शिर मूँड़े तो डाकिनी का माथा मूड़ा जाय और इसी मन्त्र से उड़दों को पढ़कर डाले तो उसके घर आ बोले और जलने लगे तथा उन्हीं उड़दों को पढ़कर आँखों पर छोड़े तो वह खेल उठे।

डाकिनी के दोष दूर होने का झाड़ा

मोर के पंख अथवा लोहे की छुरी से दीजिए। ॐ नमो आदेश गुरू का डाकिनी सिहारी किसने मारी यती हनुमन्त ने मारी कहाँ जाय दबकी किन देखी यती हनुमन्त ने देखी सातवें पाताल गई सातवें पाताल से कौन पकड़ लाया यती हनुमन्त पकड़ लाया एक ताल दे एक कोठा तोड़ा दो ताल दे दो कोठे तोड़े तीन ताल दे तीन कोठे तोड़े चार ताल दे चार कोठे तोड़े पाँच ताल दे पाँच कोठे तोड़े छह

ताल दे छह कोठे तोड़े सातवाँ कोठा तोड़ देखे तो कोने में खड़ी है डाकिनी सिहारी भूत प्रेत चला यती हनुमन्त तेरे झाड़े से चला ॐ नमो आदेश गुरू का गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र. ईश्वरोवाच।

डाकिनी के दूर होने का मन्त्र

७	७	६	८
ऽ	५	४	६
४	।।।	ऽ	११
७।	५	१।।	।।

इस यन्त्र को अच्छे पानीमें घोल पिलावे तो डाकिनी दूर हो।

१।ऽ	६६	१	५
७	४	७	६१
ऽ		०।	०।०
६	१	ऽ	४०

इस यन्त्र को बालक के गले में बाँधे।

प्रत्यक्ष हाजरायत

हाजरायत का मन्त्र। ॐ नमः कामाख्यायै सर्वसिद्धायै अमुक कर्म कुरु कुरु स्वाहा। अस्य मन्त्रस्य वह्निकऋषिः जगतीछन्दः कामाख्यादेवता प्रणवः शक्तिः अव्यक्तः कीलकं अमुककर्मणि जपे विनियोगः। ॐअंगुष्ठाभ्यां नमः कामाख्यायै तर्जनीभ्यां नमः स्वाहा सर्वसिद्धिदायै मध्यमाभ्यां वषट् अमुककर्म अनामिकाभ्यां हुं कुरु कुरु कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां अस्त्राय फट्। ॐ नमो हृदयाय कामाख्यायै शिरसे स्वाहा सर्वसिद्धिदायै शिखायै वषट् अमुककर्म कवचाय हुं कुरु कुरु नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

योनिमात्रशरीराय कंगुवासिनी कामदा। रजस्वला महातेजा कामाक्षी ध्यायतां सदा॥ अस्य मन्त्रस्य सहस्रं जपः। गुड़हल के फूलों की १००० आहुति दे मेढल की साख कर रक्खे रुई में मिलाके उसकी बत्ती कर तेल के दीपक में धरे और उस दीपक की पूजा करे दीपक के आगे ८ वर्ष का अथवा दश वर्ष का पवित्र शुद्धवंश देवतागण का बालक बैठाना और आप भी पवित्र होकर मेढल के फूल के ऊपर इस मन्त्र के संकल्प

का जल डाले तथा दीपक के आगे यह यन्त्र लिख यन्त्र की पूजा कर और यह यन्त्र बालक को दिखावे तथा उसकी हथेली में मेढल की राख को तेल में सानकर मसले फिर उससे पूछे जो वह देखे सो सत्य समाचार सब कहे। अथवा आठ दश वर्ष की पवित्र कुल की देवतागण कन्या को बैठावे उसे दीखे सो कहे। दशांश आहुति, दशांश तर्पण, दशांश मार्जन, ब्राह्मण भोजन करावे यह सत्य हाजरायत है। यह उड्डीस में लिखा है—

१	८	३	८	ता
५	६	३	६	र
७	२	९	क	र२
७	४	५	४	ली

हाजरायत का यन्त्र

अथवा नींब के पत्र, खुरासानी बच, हींग, साँप की काँचली और सरसों इनकी धूनी दे तो डाकिनी, भूतादि के सर्वदोष जायँ। अथवा कपास का काकड़ा, मोर की चन्द्रिका, कटेली, शिव का निर्माल्य, मरुवा, तज, बालछड़, बैल का दाँत, मार्जार की विष्ठा, तुष, बच, केश, सर्प की काँचली, गो का सींग, हाथी का दाँत, हींग, कालीमिरच इन सबको बराबर ले कूटकर इसकी धूनी दे तो सब प्रकार के भूतादि के दोष दूर हों। यह माहेश्वरधूप चक्रदत्त में लिखी है। अथवा पीपरि, कालीमिरच, सेंधानोन, गोरोचन इनको शहद में पीस अञ्जन करे तो सर्वभूतादि के दोष दूर हों। अथवा कणगच की जड़, दारुहल्दी, सरसों, कूट, हींग, बच, मंजीठ, त्रिफला, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, प्रियंगु के फूल इनको बराबर ले बकरे के मूत्र में पीस नास दे अथवा अञ्जन करे तो सर्वभूतादि के दोष जायँ। अथवा गोरखमुंडी, गोखुरू, बिनौले, काकड़ासिंगी इनको गोमूत्र में पीस नास ले तो ब्रह्मराक्षस का दोष जाय। अथवा शंखाहूली की जड़ को चावल के पानी में अथवा घृत में पीस उसकी नास दे तो भूतादि का दोष जाय।

मृगी रोग की उत्पत्ति और लक्षण

चिन्ता और शोकादि से क्रोध को प्राप्त हुए वात, पित्त, कफ हृदय की नसों में, घुस, स्मरणमात्र का नाशकर, मृगी के रोग को प्रकट करते हैं। वह मृगीरोग वात, पित्त, कफ, सन्निपात इन भेदों से चार प्रकार का है।

मृगी का पूर्वरूप और लक्षण

हृदय काँपे, शरीर सूना हो जाय, पसीना आवे, ध्यान लग जाय, मूर्च्छा हो, ज्ञान जाता रहे, निद्रा न आवे, ये लक्षण हों तो जानिये कि इसके मृगीरोग होगा। सर्वत्र अन्धकार ही दीखे, स्मरण जाता रहे और हाथ, पैर आदि सब अङ्गों को पृथ्वी पर पटका करे तब जानिए कि मृगीरोग हुआ।

वात की मृगी का लक्षण

कम्प हो, दाँत चाबे, मुख में झाग आवें। श्वास हो, काला पीला देखे, ये लक्षण वात की मृगी के हैं।

पित्त की मृगी का लक्षण

मुख में पीले झाग आवें तथा शरीर की त्वचा और मुख पीला हो जाय, ये लक्षण पित्त की मृगी के जानिए।

कफ की मृगी के लक्षण

मुख में श्वेत झाग आवें, शरीर की त्वचा, मुख, नेत्र ये सब श्वेत पड़ जायँ, शीत लगे, रोमांच हो और श्वेत ही श्वेत दीखे, ये लक्षण कफ की मृगी के हैं।

सन्निपात की मृगी के लक्षण

पीछे कहे हुए सब लक्षण हों तो सन्निपात की मृगी जानिए।

मृगी का असाध्य लक्षण

जिसका शरीर बहुत फड़के और क्षीण हो जाय, भौंह चढ़ी रहें, नेत्रों की प्रकृति और हो जाय तो वह मृगीवाला मर जाय।

मृगी का समय

बारहवें दिन आवे तो वायु की जानिए और पन्द्रहवें दिन आवे तो पित्त की जानिए तथा एक महीने में आवे तो कफ की जानिए। यहाँ दृष्टान्त लिखते हैं:—जैसे इन्द्र के जल बरसाने से सभी वस्तु उपजती हैं; परन्तु जो, चना आदि पृथ्वी पर शरद ही ऋतु में उत्पन्न होते हैं वैसे ही शरीर में यह रोग रहते तो सदैव हैं, परन्तु जब उनका समय आता है तभी कोप करते हैं।

मृगी का यत्न

तिल के साथ लहसुन खाय तो वात की मृगी जाय, दूध के साथ शतावरि खाय तो पित्त की मृगी जाय, ब्राह्मी का रस शहद के साथ खाय तो कफ की मृगी जाय, अथवा राई, सरसों खाय, वा गोमूत्र में पीस शरीर में लेप करे तो मृगी जाय, अथवा तेल १ सेर, सहँजने का रस ४ सेर, ग्वारपट्ठे का रस ४ सेर, चिड़चिड़े का रस ४ सेर, नींब की छाल का रस १ सेर, गोमूत्र ४ सेर इन सबमें तेल मिलाकर पकावे। जब वह सब रस जल जाय और तेलमात्र रह जाय तब तेल को निकाल बासन में रक्खे। उस तेल का मर्दन करे तो मृगी जाय। अथवा मैन-सिल और नीलकण्ठ (नीलटाँच) की बीट अथवा कबूतर की बीट इन दोनों को महीन-पीस अञ्जन करे तो मृगी जाय। अथवा शुद्ध पारा, मारा अभ्रक, सार (लोहा), शोधी गन्धक, मारा हुआ मैनसिल, मारा हरताल, रसौंत ये सब बराबर ले इनको गोमूत्र में १ दिन खरल करे। फिर लोहे के पात्र में इनसे दूनी गन्धक मिलाकर अधर धरके अग्नि से पका ले, १ पहर के पीछे उतारकर ठंढी करे, फिर १ रत्ती प्रतिदिन ७ दिन तक खाय तो मृगी जाय। अथवा सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, कालानोन, भुनी हींग इनको बराबर ले महीन पीस १० माशे पेठे के रस में ७ दिन पिये तो मृगी जाय। अथवा खुरासानी बच और कूट को महीन पीस दश माशा के प्रमाण ब्राह्मी के रस में वा शंखाहूली के रस के साथ अथवा पुराने गुड़ के साथ १५ दिन पिये तो मृगी जाय। अथवा गौ का घृत १ सेर, पेठे का रस १८ सेर, मुलहठी के काढ़े का पानी २ सेर इन तीनों को पकावे। जब दोनों रस जल जायँ और घृत-मात्र रह जाय तब इस घृत को खाय तो मृगी जाय। अथवा सहँजने की छाल, कूट, नेत्रबाला, सफेद जीरा, लहसुन, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, हींग इन सबको पैसे-पैसे भर ले और तेल आधसेर, बकरे का मूत्र १ सेर इन सबको मधुरी आँच से पकावे। जब सब जल जायँ और तेलमात्र रह जाय तब इसकी नास दे तो मृगी जाय। ये सब यत्न भाव-प्रकाश में लिखे हैं। अथवा पीपरि, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि, त्रिफला, बायबिड़ंग, सेंधानोन, अजवाइन, धनियाँ, सफेद जीरा, इन

सबको बराबर ले महीन पीस दश माशा प्रमाण पानी के साथ ले तो मृगी, संग्रहणी, उन्माद, बवासीर इन सबको दूर करे। अथवा पुष्य नक्षत्र के दिन कुत्ते का पित्ता निकाल अञ्जन करे, अथवा घृत के साथ इसकी धूप दे तो मृगी जाय। यह योगतरङ्गिणी में लिखा है। अथवा खुरासानी बच का चूर्ण छः माशा दूध के साथ अथवा शहद के साथ १ महीने पिये तो मृगी जाय। यह भी योगतरङ्गिणी में है। अथवा न्योले की विष्ठा, बिलाव की विष्ठा और कागले की विष्ठा इनकी धूनी दे तो मृगी जाय। यह चक्रदत्त में लिखा है।

इति सप्तमस्तरङ्गः।

—:०:—

वातज व्याधि की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

कषैली, कड़वी, तीखी वस्तु के खाने से, तिल्ली की खल के भोजन से, रूखी वस्तु के खाने से, खेद से, शीतल भोजन से, अधिक मैथुन से, धातु के क्षीणपने से, मल मूत्र के रोकने से, शोच और भय से, अधिक रुधिर के निकलवाने से मांस के क्षीणपने से, अधिक वमन और विरेचन से आमक दोष से और वृद्धावस्था से मनुष्यों के वर्षाऋतु में तृतीय पहर अथवा पहर भर के तड़के खाली नसों में बलवान् वायु घुसके कोपित हो सब अङ्गों में अथवा एक एक अङ्ग में नाना प्रकार के ८४ रोगों को उत्पन्न करता है। वे ८४ रोग ये हैं। शिरोग्रह १, अल्पकेश २, अधिक जँभुवाई ३, चौहर मुड़े नहीं ४, जीभ हले नहीं ५, बकाई खाता बोले ६, हौले बोले ७, गूँगापन हो ८, खोटा ही बोले ९, बहुत बके १०, जीभ का स्वाद जाता रहे ११, बहिरा हो जाय १२, कानों में घुन्नाटे का शब्द हो १३, त्वचा में स्पर्श का ज्ञान जाता रहे १४, अर्दित रोग १५, कन्धा मुड़े नहीं १६, भुजा सूख जाय १७, भुजा मुड़े नहीं १८, चर्चित रोग १९, विश्वाची रोग २०, ऊर्ध्ववात २१, डकार बहुत आवें २२, अफरा हो २३, आध्मान रोग २४, अष्ठीला रोग २५, प्रत्यष्ठीला रोग २६, तूनी २७, प्रतितूनी २८, अग्नि की विषमता २९, आटोप रोग ३०, पसली में शूल ३१, पीठ में शूल ३२, बहुमूत्रता ३३, मूत्र रुक जाय ३४, मल गाढ़ा हो ३५, मल उतरे

नहीं ३६, गृध्रसी रोग ३७, कलापखञ्जता रोग ३८, खोड़ापना ३९, पंगुता रोग ४०, क्रोष्टुशीर्षक पैर का रोग ४१, खल्लीरोग ४२, वातकण्टक रोग ४३, पैर की सूजन ४४, पैर की जलन ४५, आक्षेप रोग ४६, दंडकरोग ४७, वाताक्षेपक रोग ४८, पित्ताक्षेक रोग ४९, दण्डापतानक रोग ५०, अभिघातकक्षेप ५१, अन्तरायाम ५२, बाह्यायाम ५३, धनुर्वात ५४, कुब्जक ५५, अपतन्त्रक ५६, अपतानक ५७, पक्षाघात ५८, आखलागिक ५९, कम्प ६०, स्तम्भ ६१, व्यथा ६२, लोद ६३, अस्फुरण ६४, रूक्षता ६५, कालापन ६६, क्षीणपन ६७, शीतलपन ६८, रोमाञ्च ६९, अगम ७०, अङ्गविभ्रम ७१, नसों का संकोच ७२, अङ्गशोष ७३, डरपना ७४, मोहपना ७५, उन्मादपन ७६, नींद नहीं आवे ७७, पसीना नहीं आवे ७८, बल की हानि ७९, वीर्य का नाश ८०, स्त्रीधर्म का नाश ८१, गर्भ का नाश ८२, बिना श्रम के श्रम ८३ और श्रमनाश ८४।

वातज सब रोगों का लक्षण और यत्न

पहिले सामान्य यत्न लिखते हैं। मीठी, सलोनी, चिकनी, गर्म वस्तु, आमला इनके खाने से और तेल के मर्दन से, औषधों के सेवन से सामान्य वातरोग दूर होता है।

शिरोग्रह का लक्षण

वात रुधिर से मिलकर मस्तक की नसों को रूखी करता है; फिर उनमें बहुतसी पीड़ा करके नसों को काली कर देता है, यह रोग असाध्य है।

शिरोग्रह का यत्न

दशमूल का काढ़ा कर रस निकाले और बिजौरे का रस निकाले फिर इस रस में तेल पकाकर उस तेल का मर्दन करे तो शिरोग्रह दूर हो। अथवा कूट, अरण्ड की जड़, धतूरे की जड़, सहँजने की जड़, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, सिंगीमुहरा ये सब औषध बराबर ले काढ़ा कर अनुमान मुवाफ़िक़ तेल डालकर मधुरी आँच से पकावे। जब तेलमात्र रह जाय तब उसको उतार मर्दन करे तो शिरोग्रह जाय।

अल्पकेशों की चिकित्सा

देशी गोखुरू, तिल के फूल इनको बराबर ले और इनकी बराबर शहद और घृत ले उसमें इन दोनों को महीन पीस केशों में लेप करे तो केश बहुत बढ़े। अथवा मुलहठी, नीले कमल की जड़, मुनक्का, किशमिश इनको तेल, घृत, दूध में महीन पीस लेप करे तो केश बहुत लम्बे हों, और इन औषधों से छछूँदर का भी दोष दूर होता है।

जँभुवाई का लक्षण

मुख के एक श्वास को प्रथम मुख में पी जाय, फिर वह श्वास उलटा काढ़ दे, फिर आलस्य और निद्रासंयुक्त आवे उसको जँभुवाई कहते हैं।

जँभुवाई बहुत आवे उसका यत्न

सोंठि, पीपरि, काली मिरच, अजमोद, सेंधा नोन इनको जुदा अथवा इकट्ठा महीन पीस गर्म पानी से ले तो जँभुवाई का रोग जाय। अथवा कड़ुवा तेल मर्दन करे अथवा मीठा भोजन करे अथवा ताम्बूल खाय तो जँभुवाई का रोग जाय।

हनुग्रहरोग का लक्षण

दातून की फाड़ से जीभ को बहुत घिसने और चबेना के खाने से अथवा किसी प्रकार की चोट से डाढ़ की जड़ में रहनेवाली वायु कोपित होकर मुख को फटा ही रक्खे अथवा बन्द ही रक्खे तब पुरुष को बोलने और खाने की बड़े कष्ट से सामर्थ्य होती है। उसको वैद्य हनुग्रहरोग कहते हैं।

हनुग्रहरोग का यत्न

जिसका मुख मिच गया हो उसको चिकनी वस्तु से सेंककर पसीना लिवावे तो मुख खुल जावे। जिसका मुख फटा रह जाय उसको शीतल वस्तु से आराम होता है। जिसकी डाढ़ मुड़े नहीं उसको पीपरि, अदरक चबवा-चबवा कर थुकवावे तो रोग दूर हो। अथवा गर्मपानी के कुल्ले करवावे तो रोग दूर हो। अथवा तेल में लहसुन तलकर सेंधा नोन लगाकर खाय तो हनुग्रह रोग जाय। अथवा उड़द के बड़ों में लहसुन, सेंधा नोन, अदरक, हींग मिलाकर तेल में सेंक के खाय तो हनुग्रह-

रोग जाय। अथवा प्रसारिणी तेल के मर्दन से नीचे लिखे रोग दूर होते हैं। तेल इस प्रकार बनता है। खीप का पञ्चाङ्ग १०० टके भर ले। कूटकर १६ सेर पानी में औटावे। जब चतुर्थांश रह जाय तब उतार कर छान ले और उस पानी में तिल का तेल १०० टके भर, मट्ठा १०० टके भर, कांजी का पानी १०० टके भर और तेल से चौगुना गौ का दूध डाले तथा चित्रक, पीपलामूल, महुआ, सेंधा नोन, खुरासानी बच, सौंफ, देवदारु, रास्ना गजपीपरि, छारछबीला, रक्त-चन्दन, अरण्य की जड़, खरैटी की जड़, सोंठि इन सब औषधों को टके-टके भर ले काढ़ा कर काढ़े का रस उस तेल में डाले और १ सेर खीप का रस डालकर मधुरी आँच से पकावे। जब सब रस जल जाय। और तेल रह जाय तब तेल को उतार ले। पीछे इस तेल को मर्दन करे अथवा नास दे या खिलावे अथवा इसका सेंक करे तो सर्व वातविकार, पंगुलता, जिह्वास्तम्भ, अर्दितरोग, बकाई का रोग, स्कन्धस्तम्भ, पीठ-शूल, गृध्रसी, खोड़ा, चपला और धनुर्वात इतने वात के रोगों को यह प्रसारिणी तेल दूर करता है।

जिह्वास्तम्भ का लक्षण

वाणी को ले चलनेवाली नसों में रहनेवाली पवन कुपित होकर जीभ को स्तम्भित करती है; तब वह जीभ जल के पीने और बोलने में समर्थ नहीं होती है। इसको जिह्वास्तम्भरोग कहते हैं।

जिह्वास्तम्भ का यत्न

मीठा रस, नोन, खटाई, चिकनी, गर्म इन वस्तुओं से जीभ को यथायोग्य मर्दन करे अथवा सुहाते-सुहाते गर्म पानी से कुल्ले करे तो जिह्वास्तम्भ का रोग दूर होवे।

गूँगापन, गिनगिना और बकाई खाने का लक्षण

कफ से संयुक्त वायु धमनी नाड़ी की ले चलनेवाली नसों को आच्छादित कर मनुष्यों के गूँगापन और नाक में ही बोलना और बकाई खाकर बोलना इतने रोगों को करती है।

गूँगापन, गिनगिना और बकाई खाकर बोले इन सबका यत्न

गौ का घृत १ सेर, सहंजने की जड़ १ टके भर, खुरासानी

बच १ टके भर, सेंधानोन १ टके भर, धवई के फूल १ टके भर, पठानीलोध १ टके भर इन सबको पीसकर बकरी के ४ सेर दूध में १ सेर घृत डाले, फिर ये ओषधियाँ मिलाय मधुरी आँच से पकावे। जब दूध और ओषधियाँ जल जायँ और घृतमात्र रह जाय तब उसे निकाल कर उस घृत को सरस्वतीमन्त्र से विधिपूर्वक सेवन करे तो गूँगापन, गिनगिनापन और बकाई खाना ये सब रोग दूर हों और बुद्धि, स्मृति-मेधा और कान्ति बहुत बढ़े। यह सारस्वतघृत है।

सरस्वतीमन्त्र

ॐ ह्रीं ऐं ह्रौं ॐ सरस्वत्यै नमः। यह सरस्वतीमन्त्र-सिद्ध है। इसका इन अक्षरों की बराबर सहस्र जप करे तो यह मन्त्र सिद्ध हो। इस मन्त्र से यह सारस्वतघृत खाय अथवा मालकाँगनी का तेल खाय तो सर्वरोग जायँ और उसकी बुद्धि तत्काल चमत्कारी हो जाय। अथवा हल्दी, कूट, पीपरि, सोंठि, जीरा, अजमोद, मुलहठी, महुआ, सेंधानोन इनको बराबर ले महीन पीस दश माशा मक्खन के साथ नित्य २१ दिन तक ले तो सर्वरोग दूर हों, और वह पुरुष श्रुतिधर हो १००० श्लोक नित्य कण्ठ करे। इति कल्प का अवलेह।

प्रलाप और वाचालरोग का लक्षण

अपने कुपथ्य से कुपित वायु से पीड़ित अर्थरहित कुछ का कुछ वचन बोले तो प्रलापरोग जानना। जो अर्थसहित खोटा शब्द मुख से बोले उसे वाचाल कहते हैं।

प्रलाप और वाचाल का यत्न

तगर, पित्तपापड़ा, कुटकी, नागरमोथा, असगन्ध, ब्राह्मी, किशमिश, अगर, दशमूल, शंखाहूली इन सबको बराबर ले जवकुट कर इनका काढ़ा दे तो प्रलाप और वाचालरोग दूर हों।

जीभ के रसाज्ञान का लक्षण

मधुर रस आदि छह रसों के खाने में जीभ का यथार्थ ज्ञान जाता रहे उसको रसाज्ञानरोग कहते हैं।

रसाज्ञानरोग का यत्न

सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, सेंधानोन, अमलबेत, चूक इन औषधों

को महीन पीस एकरस कर जीभ में अच्छे प्रकार लेप करे तो रसाज्ञान का दोष दूर हो। अथवा ब्राह्मी, पलाशपापड़ा, राई, कालाजीरा, पीपरि, पीपलामूल, चित्रक, सोंठि इनको महीन पीस जीभ में बारंबार लेप करे। अथवा इनका काढ़ाकर कुल्ले करे तो रसाज्ञानदोष दूर हो। अथवा अदरक खाय तो रसाज्ञानदोष दूर हो।

शरीर की त्वचा शून्य हो गई हो उसका लक्षण

जिस पुरुष को शीतोष्ण, कोमल, कठिनता का ज्ञान जाता रहे उसके त्वचाशून्यपने का रोग जानिये।

त्वचाशून्य का यत्न

त्वचाशून्यवाले का रुधिर निकलवावे तो यह रोग जाय। अथवा नोन, धमासा इन दोनों को तेल में मिलाकर शरीर में मर्दन करे तो यह रोग जाय।

अर्दितरोग का लक्षण

ऊँचे से गिरती हुई भारी वस्तु, को ऊँचा मुख कर हाथों से ग्रहण करे, कड़ुवी वस्तु बहुत खाय, बहुत हँसे, जँभुवाई ले, माथे पर बहुत बोझ उठावे अथवा विषम (ऊँचे-नीचे) स्थान में सोवे उस पुरुष के शिर, नासिका, ओष्ठ, डाढ़ और नेत्र इन स्थानों में रहनेवाली वायु उस पुरुष के मुख में अर्दितरोग को उत्पन्न करती है, तब पुरुष का मुँह आधा टेढ़ा हो जाय और कन्धा मुड़े नहीं, शिर हाला करे, अच्छे प्रकार बोला और देखा न जाय तथा कन्धे, डाढ़ी, दाँतों में पीड़ा रहे जिसमें ये लक्षण हों उसको अर्दितरोग कहिये। वह वात पित्त कफ इन भेदों से तीन प्रकार का है।

वात के अर्दितरोग का लक्षण

लार बहुत पड़े, शरीर में पीड़ा अधिक हो, शरीर काँपे और अत्यन्त फड़के, डाढ़ी मुड़े नहीं, ओष्ठ सूज जायँ, ये लक्षण हों तो वायु का अर्दितरोग जानिये।

पित्त के अर्दितरोग का लक्षण

मुख पीला हो जाय, ज्वर हो आवे, तृषा बहुत हो तो पित्त का अर्दितरोग जानिये।

कफ के अर्दितरोग का लक्षण

मोह बहुत हो, गला, कन्धा और शिर में सूजन हो तथा ये तीनों मुड़े नहीं तो कफ का अर्दित रोग जानिये।

अर्दितरोग का असाध्य लक्षण

क्षीणपुरुष के निमेष नहीं लगे और उस पुरुष से बोला न जाय तथा शरीर कँपते हुए तीन वर्ष हो गये हों तो अर्दितरोग असाध्य जानिए।

अर्दितरोग का यत्न

अर्दितरोगवाले को चिकना खवावे तथा नारायण और विषगर्भतैल आदि का मर्दन करावे एवं गर्म वस्तु का सेवन करावे, डाह दिवावे, गर्म औषधियों से पसीना लिवावे, शिर में वायु का तेल डाले इतनो वस्तुओं से अर्दितरोग जाता है।

वायु के अर्दितरोग का यत्न

दशमूल के काढ़े से वायु का अर्दितरोग जाय। बिजौरे के रस से वायु का अर्दित जाय। अथवा खरैटी, पीपरि, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि इनके काढ़े से वायु का अर्दित जाय। उड़द के बड़ों में हींग, अदरक, लहसुन मिलाकर खाय और ऊपर से मांस का शोरुआ पिये तो वायु का अर्दित जाय।

पित्त के अर्दित का यत्न

घृत का बस्तिकर्म करे अथवा दूध का सेवन करे तो पित्त का अर्दित दूर हो।

कफ के अर्दित का यत्न

वमन कराने से कफ का अर्दित जाय। अथवा तिल के तेल में लहसुन मिलाके खाय तो सब प्रकार का अर्दित तत्काल जाय।

मन्यास्तम्भ का लक्षण

दिन के सोने से, बहुत बैठने से, विकार को प्राप्त हुआ कफ वात से मिल कन्धे को मुड़ने न दे तो उसको मन्यास्तम्भ कहते हैं।

मन्यास्तम्भ का यत्न

दशमूल के काढ़े से अथवा पञ्चमूल के काढ़े से मन्यास्तम्भ जाय।

अथवा तेल का मर्दन करके ऊपर से अरण्ड के पत्ते बाँधे तो मन्या-स्तम्भ जाय। अथवा कुक्कुट के अण्डे के रस में सेंधानोन और घृत मिलाय कन्धों में मर्दन करे तो मन्यास्तम्भ जाय।

बाहुशोष का लक्षण

कन्धों में रहनेवाली वायु कोपित हो भुजा को सुखाकर स्तम्भित कर देती है उसको बाहुशोष कहते हैं।

बाहुशोष का यत्न

पीछे उन्मादरोग में लिखे हुए कल्याणघृत के सेवन से बाहुशोष रोग जाय। अथवा खरैंटी के काढ़े में सेंधा नान मिलाकर पिये तो बाहुशोष और मन्यास्तम्भ रोग जायँ।

अपबाहुक रोग का लक्षण

कन्धों की वायु कुपित होकर उसके बाँधनेवाले कफ को सुखाय, नसों को खैंचकर अपबाहुक रोग को उत्पन्न करती है।

अपबाहुक रोग का यत्न

शीतल जल की नास दे तो अपबाहुकरोग जाय। अथवा गुग्गुल, मोईजड़ी की जड़ का काढ़ाकर उसमें गुग्गुल मिलाकर नास दे तो अपबाहुक रोग जाय। अथवा उड़द के पानी की नास दे तो अपबा-हुक रोग जाय। अथवा उड़द, अलसी, यव, कूट, सेला, कटेली, गोखरू, अरलू, कोंच की जड़, कपास, सन का बीज, कुलत्थ, बेर की जड़, साँठी की जड़, खीप की जड़, रास्ना, खरैंटी की जड़, गिलोय, कुटकी इनको तेल में पकाकर उस तेल का मर्दन करे तो अपबाहुक रोग जाय। यह माषतैल भावप्रकाश में लिखा है।

विश्वाचीरोग का लक्षण

हाथ की अंगुली के नीचे खुजली हो और भुजा के पीछे खुजली होकर भुजा को निकम्मी कर दे उसको विश्वाचीरोग कहते हैं।

विश्वाचीरोग का यत्न-

दशमूल, खरैंटी, उड़द इनका काढ़ाकर उसमें तेल मिलाकर पिये तो विश्वाचीरोग जाय। अथवा उड़द, सेंधा नोन, खरैंटी, रास्ना, दश-मूल, हींग, खुरासानी बच, सोंठि इनको महीन पीस पानी में ओटावे

फिर पानी में तेल डालकर तेल को पकावे। जब पानी जल जाय और तेल रह जाय तब उतार, तेल का मर्दन करे तो विश्वाची, बाहुशोष, अपबाहुक, पक्षाघात इनको यह माषादि तैल दूर करता है।

ऊर्ध्ववातरोग का लक्षण

कुपथ्य के सेवन से कुपित हुई अधोवायु मुख के कफ से मिल बारम्बार डकार बहुत लावे तो ऊर्ध्ववात रोग कहिये।

ऊर्ध्ववात का यत्न

सोंठि १० भाग, बिधारा १० भाग, हड़ की छाल ५ भाग, असगन्ध १ भाग, भुनीहींग १ भाग, सेंधा नोन १ भाग, निशोत ५ भाग, इन सबके बराबर चित्रक ले महीन चूर्णकर ६ माशा गर्म जल के साथ ले तो ऊर्ध्ववातरोग जाय।

आध्मानरोग का लक्षण

सम्पूर्ण पेट में अफरा और पीड़ा अधिक हो तथा अधोवायु रुक जाय उसको आध्मानरोग कहते हैं।

आध्मानरोग का यत्न

इस रोग में लंघन करावे, पाचन और क्षुधा बढ़ने की ओषधि देवे, बस्तिकर्म करावे। अथवा पीपरि ६ माशा, निशोत ४० माशा, मिश्री ४० माशा इनका चूर्ण कर ६ माशा शहद के साथ खाय तो अफरा जाय यह नारायणचूर्ण वृद्धवाग्भट्ट में लिखा है। अथवा खुरासानी बच, कूट, सौंफ, भुनी हींग, सेंधा नोन ये सब बराबर ले इनका चूर्णकर, काँजी से महीन पीस, गर्मकर सुहाता-सुहाता पेट पर लेप करे तो अफरा दूर हो। अथवा महानाराच रस से अफरा जाय सो लिखते हैं। हड़ की छाल ५ माशा, किरमाला (अमलतास) की गूदी ५ माशा, आमला ५ माशा, दात्यूणी (जमालगोटा की जड़) ५ माशा, कुटकी ५ माशा, निशोत ५ माशा, नागरमोथा ५ माशा, थूहर का दूध ८ माशा इन सबको महीन पीस ४ सेर पानी में औटावे जब पानी का अष्टमांश रह जाय तब जमालगोटे का छिलका ५ माशा भर उतार, महीन वस्त्र में बाँध शनैःशनैः जमालगोटे को पचावे जब पानी जल जाय तब उसे काढ़ ले पीछे जमालगोटा ८ भाग, सोंठि १ भाग, काली-

मिरच २ भाग, पारा १ भाग और शोधी गन्धक १ भाग। पहिले पारे और गन्धक की कजली करे, उसमें ये औषध मिलाय १ पहर खरल कर फिर १ रत्तीप्रमाण की गोली बाँधे। १ गोली नित्य शीतल जल से ले तो अफरा, शूल, आनाह, प्रत्याध्मान, उदावर्त्त, गोला और उदर के रोगों को यह महानाराच रस दूर करता है। इसके खाने से दस्त हो चुकें तब मिश्री मिलाकर दही खवावे फिर चावल दही मिलाय अनुमान मुवाफ़िक उसमें सेंधा नोन डाल थोड़ा सा खवावे तो आध्मान रोग जाय।

प्रत्याध्मान का लक्षण

पसली और हृदय में तो अफरा न हो परन्तु नाभि से लेके पेट तक अफ़रा हो उसको प्रत्याध्मान कहिये।

प्रत्याध्मान का यत्न

लंघन करावे और पाचनादिक देवे तथा बस्तिकर्म करावे तो प्रत्याध्मान जाय।

वातष्ठीला का लक्षण

नाभि के नीचे पवन की गाँठि पत्थरसी बँधकर मल-मूत्र को रोक दे तो उसको वातष्ठीला कहते हैं।

प्रत्यष्ठीला का लक्षण

नाभि के नीचे पवन की गाँठि पाषाण के सदृश बँधकर मल-मूत्र को रोक दे और उस स्थान पर पीड़ा अधिक करे तो उसको प्रत्यष्ठीला कहते हैं।

इन दोनों का यत्न

भुनी हींग, पीपलामूल, धनियाँ, सफेद जीरा, खुरासानी बच, चव्य, चित्रक, पाढ़ कचूर, अमलबेत, काला नोन, सेंधा नोन, साँभर नोन, सोंठि, कालो मिरच, पीपरि, जवाखार, सज्जी, अनारदाना, हड़ की छाल, पुष्करमूल, डाँसरा, झाऊ की जड़ इन सबको बराबर ले, महीन पीस, अदरक के रस की ३ पुट दे, फिर इस चूर्ण को छाया में सुखाकर ६ माशा गर्म पानी के साथ ले तो वातष्ठीला, प्रत्यष्ठीला सब जायँ।

तूनीरोग का लक्षण

मल-मूत्र के स्थान में रहनेवाली पवन गुदा और लिङ्ग में पीड़ा करे तो उसको तूनी कहते हैं।

प्रतूनी का लक्षण

गुदा और लिङ्ग में रहनेवाली पवन गुदा और लिङ्ग में पीड़ा कर पेडू में पीड़ा करे तो उसको प्रतूनी कहते हैं।

इन दोनों का यत्न

इन दोनों रोगों में तेल की बस्ति दे तो दोनों तूनी, प्रतूनी रोग जायँ। अथवा सोंठि, पीपरि, काली मिरच, भुनी हींग, जवाखार, सज्जी, सेंधा नोन इनको महीन पीस ६ माशा गर्म पानी से ले तो तूनी, प्रतूनीरोग जायँ।

त्रिकशूल का लक्षण

कमर के तीनों हाड़ों में और बाँसे के हाड़ में शूल हो उसको त्रिकशूल रोग कहते हैं।

त्रिकशूल का यत्न

बालूरेत से सेंक करावे अथवा अरने उपले की राख से सुहाता-सुहाता सेंक करावे तो त्रिकशूल जाय। अथवा गूल्ही गोली की जड़ का छिलका, असगन्ध, झाऊ का बकल, गिलोय, शतावरि, गोखुरू, रास्ना, निशोत, सौंफ, कचूर, अजवाइन, सोंठि, इन सबको बराबर ले और सबकी बराबर शोधा गुग्गुल और गुग्गुल से चौथाई घृत ले सब को एकरस कर ५ माशे नित्य दारू के अथवा गर्म पानी वा मांस के शोरुवे के साथ खाय तो त्रिकशूल, जानुग्रह, भुजास्तम्भ, सन्धिगत वायु, हाड़ टूट गया हो, खोड़ापन, गृध्रसी, पक्षाघात इन सब रोगों को यह त्रयोदशाङ्गगुग्गुल दूर करे।

बस्तिवात का लक्षण

पेडू की पवन कुपित होकर मूत्र को अच्छे प्रकार उतरने न दे और रोगों को उत्पन्न करे उसको बस्तिवातरोग कहते हैं।

बस्तिवात का यत्न

खरैटी की जड़ का बकल और उसी की बराबर मिश्री मिलाकर ६

माशा गौ के दूध के साथ खाय तो बारम्बार मूतने का रोग जाय। अथवा त्रिफले का चूर्ण कर उसके बराबर सार मिलाकर ४ माशे शहद के साथ ले तो मूत्र का रोग जाय।

मूत्र रुक गया हो उसका यत्न

जवाखार ५ माशे मिश्री के साथ ले तो मूत्रबन्ध छूटे। अथवा पेठे के बीज, तिवरसी के बीज, इन दोनों को पानी में पीस, २ माशे जवाखार डालकर मिश्री के साथ पिये तो मूत्रबन्ध छूटे। अथवा चीनिया कपूर की बत्ती लिङ्ग वा भग में दे तो मूत्रबन्ध छूटे।

गृध्रसीरोग का लक्षण

पहिले कूले में पीड़ा हो, पीछे अङ्ग में पीड़ा हो फिर परों को स्तम्भित कर दे और पैर बहुत होले-होले उठें उसको गृध्रसीरोग कहते हैं। वह दो प्रकार का है—एक वात का, दूसरा वातकफ का। वात की गृध्रसी में तो पीड़ा अधिक हो, शिर टेढ़ा हो जाय और पैर, जंघा और सन्धि-सन्धि फड़क-फड़क कर स्तम्भित हो जायँ और वात-कफ की गृध्रसी में शरीर भारी रहे, अग्नि मन्द हो जाय, तन्द्रा आवे, लार बहुत पड़े।

गृध्रसी का यत्न

वमन कराने से, बस्तिकर्म से गृध्रसीरोग जाय। शरीर को हड़ के जुलाब से निराम कर फिर बस्तिकर्म करे। अथवा अरण्ड का तेल और गोमूत्र मिलाकर १ महीने तक पिये तो गृध्रसीरोग जाय। अथवा तेल, घृत, अदरक का रस, बिजौरे का रस, चूक, गुड़, ये अनुमान मुवाफ़िक मिलाकर १ महीने तक पिये तो गृध्रसीरोग जाय तथा इससे कटि और जंघा की पीड़ा, त्रिकशूल, गोला, उदावर्त ये भी रोग जाते हैं। अथवा अण्डी की मींगी को दूध में खीर कर १ महीने तक खाय तो गृध्रसीरोग, फ़ोते का शूल दूर हो। अथवा अरण्ड की गिरी, कटेली इनका काढ़ा कर इसमें तेल मिलाय पिये तो गृध्रसी, फ़ोतों का शूल दूर हो। अथवा बिड़ नोन, काला नोन इनको महीन पीस गोमूत्र और अरण्ड के तेल में मिलाकर पिये तो कफवायु की गृध्रसी जाय। अथवा अड़ूसा, दात्यूणो (जमालगोटा की जड़), किरमाला की गिरी (अमलतास

की गूदी), इनका काढ़ा कर उसमें अरण्ड का तेल मिलाकर पिये तो गृध्रसीरोग जाय। अथवा निर्गुण्डी के पत्तों के काढ़े से गृध्रसीरोग जाय। अथवा रास्ना ५ टके भर, गुग्गुल इन दोनों को पीसकर घृत में ४ माशे की गोली बाँधे। १ गोली नित्य खाय तो गृध्रसीरोग जाय। अथवा रास्ना, गिलोय, किरमाला की गिरी (अमलतास की गूदी), देवदारु, गोखुरू, अरण्ड, साठी की जड़, सोंठि इनका काढ़ा कर दे तो गृध्रसी-रोग, पेड़ू और पसली का शूल इतने रोगों को यह रास्नादिक काढ़ा दूर करता है।

खोड़ा पंगुलारोग के लक्षण

कटि में रहनेवाली वात जाँघ की नसों को पकड़ एक पैर को स्तम्भित कर दे उसको खोड़ा कहते हैं, और कटि में रहनेवाली वात जाँघ की नसों को ग्रहणकर दोनों जाँघों का नाश करे, और चलने न दे उसको पंगुला कहते हैं।

इन दोनों का यत्न

जुलाब के लेने से और औषधों के गर्म पसीने, योगराज आदि गुग्गुल के खाने से तैलादिक के मर्तन से, बस्तिकर्म से ये दोनों रोग जायँ।

कलायखञ्जरोग का लक्षण

चलते में शरीर काँपे और लँगड़ा सा दीखे तो जानना कि नसों ने अपना ठिकाना छोड़ दिया है उसके कलायखञ्जरोग कहते हैं।

इसका यत्न

*विषगर्भादिक तैल के मर्दन से यह रोग जाय।

क्रोष्टुशीर्षकरोग का लक्षण

वात और रुधिर के विकार से पैरों में सूजन हो, पीड़ा अधिक हो और स्यार के मस्तक के सदृश कठोर हो उसको क्रोष्टुशीर्षकरोग कहते हैं।

इसका यत्न

गिलोय १० माशा, त्रिफला ४० माशा, इन दोनों का काढ़ा कर

* सिंगीमुहरा का टिकड़ा १ छटाँक की ऽ। भर तैल में पकाकर मर्दन करना।

उसमें १० माशा गुग्गुल मिलाकर १ महीने तक पिये तो यह रोग जाय। अथवा ऽ। दूध, ४० माशा अरण्ड का तेल डालकर पिये तो यह रोग दूर हो। अथवा बिधारे का चूर्ण १० माशा गौ के ऽ। दूध के साथ पिये तो यह रोग जाय। अथवा कैशोरगुग्गल के सेवन से यह रोग दूर हो।

पैर दूखने का यत्न

तेल का मदन करके ऊपर से पिसी सोंठि का मर्दन करे फिर उसके ऊपर तेल चुपड़ अरण्ड के पत्ते गर्मकर बाँध दे तो पैर दूखने से बंद हो। अथवा कौंच के बीज १० माशा दही के साथ ७ दिन अथवा १४ दिन ले तो पैर दूखना बन्द हो।

खल्ली का यत्न

कूट, सेंधा नोन इनका काढ़ा कर इस काढ़े के रस में तेल और अमलबेत के रस को डालकर तेल को मधुरी आँच से पकावे जब रस जलकर तेलमात्र रह जाय तब इस तेल का मर्दन करे तो खल्ली-रोग जाय।

वातकण्टकरोग का लक्षण

ऊँचे नीचे स्थान पर पैर रखने में पीड़ा हो पीछे टखने में पीड़ा हो आवे उसको वातकण्टकरोग कहते हैं।

इसका यत्न

टखने में पछने से रुधिर निकलवावे तो वातकण्टकरोग जाय। अथवा अरण्ड का २० माशा तेल १ महीने तक नित्य पिये तो यह रोग जाय।

पाददाह का लक्षण

वात, पित्त, रुधिर ये तीनों मिल पैरों के तलुओं में दाह करें उसको पाददाहरोग जानिये।

पाददाह का यत्न

मसूर की दाल को महीन पीस औटावे फिर अत्यन्त ठंढो कर उसमें आटा सान पाँच, सात बार पतला लेप करे तो पाददाह जाय। अथवा मक्खन को पैरों के तलुओं में मर्दन कर अग्नि से तपावे तो

यह रोग जाय। अथवा अंडी का गो के दूध में लेप करे तो अत्यन्त भी दाह जाय।

पादहर्ष का लक्षण

जिसके दोनों पैर झंझनाहट कर सो जायँ और किसी प्रकार दाबने से जाग उठें उसको पादहर्षरोग जानिए।

इसका यत्न

कफ और वात का दूर करने वाला यत्न करे तो यह रोग जाय।

पैरों की हड़फूटन का यत्न

तिल, साँभर नोन, हल्दी ये बराबर ले इनको धतूरे के बीज के पानी में पीसे और इन तीनों के बराबर गो का मक्खन ले फिर इनको पकावे और पकते समय चौगुना गो का मूत्र डाले ये सब जल जायँ और घृतमात्र रह जाय तब वह घृत पैरों के तलुओं में मर्दन करे तो पैरों की हड़फूटन जाय।

पित्तसहित वात के आक्षेपरोग का लक्षण

पित्त के स्थान जो उदरादिक उनमें रहती जो वात उसको स्तम्भित कर दण्ड की भाँति कर दे अथवा कफ में मिली जो वायु वह धमनी नाड़ी में रहकर शरीर को स्तम्भित कर दे वह कष्टसाध्य है।

केवल वायु के आक्षेप का लक्षण

वायु हाथ, पैर, मस्तक, पीठ, गाँठ, इनको स्तम्भित कर दे और इनमें पीड़ा भी करे तो यह असाध्य है।

चोट लगने से उत्पन्न वात के आक्षेप के लक्षण

जिस स्थान में चोट लगी हो उसमें उत्पन्न जो वायु वह उसके सदृश साध्य जानिये।

इसका यत्न

खरेटी की जड़, दशमूल, यव, बेल की जड़, कुलत्थ इन सबको अष्टावशेष काढ़ा कर तेल मिलाय मधुरी आँच से पकाकर तेल तैयार करे और ये ओषधियाँ और मिलावे। सेंधा नोन, अगर, राल, देवदारु, मंजीठ, पद्माक, कूट, इलायची, बालछड़, पत्रज, तगर, गोरीसर, शतावरि, असगन्ध, सौंफ़, साठी की जड़ यह तेल के प्रमाण मुवाफ़िक

छाल पकावे फिर इस महाबला तेल का मर्दन करे तो सब प्रकार के आक्षेप के रोग, हिचकी, श्वास, अन्त्रवृद्धि, क्षीणता, टूटा हाड़, स्वेद इन सब रोगों को यह महाबला तेल दूर करता है।

अन्तरायामरोग का लक्षण

पैर की अंगुली, टखना, पेट, हृदय, गला, इनमें रहनेवाली वात बड़ी नसों के समूह को शरीर के भीतर पकाती है फिर उसके नेत्र फटकर निश्चल से हो जाते हैं और डाढ़ मुड़े नहीं, पसली टूटी सी हो जाय, कफयुक्त शरीर कमान की भाँति टेढ़ा हो जाय, जिसमें ये रोग हों उसको अन्तरायामरोग जानिये।

बाह्यायामरोग का लक्षण

बहुत बादी वस्तु खाने से कुपित हुई वात शरीर की सब नसें, कन्धे, पीठ इनको सुखाकर शरीर को कमान के सदृश टेढ़ा कर देती है और उसके हृदय और जाँघ को वह वात तोड़ डालती है, ये लक्षण जिसमें हों उसके बाह्यायामरोग कहिये और जो अदितरोग का यत्न पीछे लिखा है वही इस रोग का भी जानना चाहिए।

धनुस्तम्भ का लक्षण

कमान के समान शरीर हो जाय, शरीर का वर्ण और का और हो जाय, मुख मिच जाय, देह शिथिल हो जाय, चैतन्यता जाती रहे, पसीना आवे उसको धनुस्तम्भरोग कहते हैं। इस रोगवाला १० दिन जीता है।

कुब्जकरोग का लक्षण

कोप को प्राप्त वात हृदय को ऊँचा करके हृदय में पीड़ा अधिक करे उसको कुब्जकरोग कहते हैं।

इन तीनों रोगों का दूर करनेवाला प्रसारणी तैल इसी प्रकरण में लिखा है। उससे धनुस्तम्भ, बाह्यायाम, अन्तरायाम और सर्वप्रकार की वातव्याधि दूर होती है।

अपतन्त्रकरोग का लक्षण

बादी वस्तु के सेवन से कोप को प्राप्त हुई बात अपने स्थान को छोड़कर, हृदय में जाकर शिर और कनपटी में पीड़ा करती है और

कमान की भाँति शरीर को नवा देती है तब वह मोह को प्राप्त होकर बड़े कष्ट से ऊपर को श्वास ले और नेत्र फटें या मिच जायँ और कण्ठ कबूतर के सदृश हो जाय, संज्ञा जाती रहे जिसके ये लक्षण हों उसके अपतन्त्रकरोग जानिये।

अपतन्त्रक रोग का यत्न

कालीमिरच, सहँजने के बीज, बायबिड़ंग, अफीम, महुआ ये सब बराबर ले महीन पीस नास ले तो अपतन्त्रकरोग जाय। अथवा हड़ की छाल, खुरासानी बच, राल, सेंधा नोन, अमलबेत, इनको महीन पीस ६ माशा घृत के साथ अथवा अदरक के रस के साथ ले तो अपतन्त्रकरोग जाय।

अपतानकरोग का लक्षण

नेत्र फटे से हो जायँ, संज्ञा जाती रहे, कण्ठ में कफ बोले, संज्ञा हो आवे तब चैन पड़े और अज्ञान आवे तब और भी मोह हो यह भयङ्कररोग है और यह स्त्री के गर्भपात से होता है और पुरुष के बहुत रुधिर निकलने से होता है अथवा भारी चोट लगने से होता है। यह रोग असाध्य है।

इसका यत्न

दशमूल के काढ़े में पीपरि डालकर पिये तो अपतानकरोग जाय। अथवा तेल के मर्दन से जाय। अथवा सूखी वस्तु की नास ले तो यह रोग जाय। अथवा घृत के पीने से यह रोग जाय। अथवा स्नेह की वस्तु लेने से यह रोग जाय।

पक्षाघात का लक्षण

किसी कारण से वात कुपित होकर मनुष्य के आधे शरीर को पकड़ सब शरीर की नसों को सुखा देती है और आधे शरीर की नसों को तो अत्यन्त ही ढीली कर देती है अथवा सब शरीर की नसों को अत्यन्त ढीली और निकम्मी कर देती है उन नसों का ज्ञान जाता रहता है ये लक्षण हों तो उसको पक्षाघातरोग कहते हैं। और दाहिना अङ्ग अथवा बायाँ अङ्ग निर्जीव हो जाय वह पक्षाघात दो प्रकार का है। एक तो पित्तवात का दूसरा कफवात का। शरीर के बाहर और

भीतर दाह और मूर्च्छा हो तो पित्तवात का पक्षाघात जानिए और शरीर के भीतर और बाहर शीत लगे, सूजन हो, शरीर भारी रहे तो कफवात का पक्षाघात जानिए।

पक्षाघात का साध्य लक्षण

केवल वात से पक्षाघात हुआ हो तो कष्टसाध्य जानिए।

पक्षाघात का असाध्य लक्षण

गर्भिणी अथवा प्रसूता स्त्री के पक्षाघात हो तो असाध्य जानिए। अथवा बालक वृद्ध, क्षीण पुरुष, घाववाले के जिसका रुधिर निकल गया हो उसके और शून्य शरीरवाले के पक्षाघात हो तो भी असाध्य जानिये।

पक्षाघात का यत्न

उड़द, कोंच के बीज, अरण्ड की जड़, खरैटी की जड़ इनके काढ़े में भुनी हींग, सेंधा नोन मिलाकर पिये तो पक्षाघात जाय। अथवा पीपलामूल, चित्रक, पीपरि, सोंठि, रास्ना, सेंधा नोन, उड़द, इनका काढ़ाकर इस काढ़े के रस में तेल पकावे। जब रस जल जाय और तेलमात्र रह जाय तब मर्दन करे तो पक्षाघात जाय। यह ग्रन्थकादि तैल है। अथवा उड़द, कोंच के बीज, अतीस अरण्ड की जड़, रास्ना, सौंफ, सेंधा नोन, इनको महीन पीस काढ़ाकर इस काढ़े में तेल पकावे। जब रस जल जाय और तेल रह जाय तब मर्दन करे तो पक्षाघातरोग जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं। यह माषादि तैल है। अथवा कोंच के बीज, खरैटी की जड़, अरण्ड की जड़, उड़द, सोंठि, सेंधा नोन इनका काढ़ाकर छानके पिये तो पक्षाघात जाय। यह वैद्यविनोद में है। अथवा महुए का रस २८ माशा, गुग्गुल २० माशा, बीजबोल २० माशा, बकरी की मींगनी (बीट) २० माशा, कटेली का रस २० माशा इनको महीन पीस शरीर में लेप करे फिर कमर बराबर गढ़ा खोद गढ़े में अग्नि जलाकर लाल करे और गढ़े के आस-पास और नीचे आक के पत्ते डाले फिर उस पक्षाघात के लेप किये हुए मनुष्य को उस गढ़े में बैठावे। जब उसके पसीना आ जाय तो पक्षाघात उसी दिन जाता रहे।

निद्रानाशरोग का यत्न

भुनी भङ्ग का महीन चूर्ण पीस रात्रि में अनुमान मुवाफ़िक शहद से चाटे तो निश्चय निद्रा आवे और अतीसार, संग्रहणी भी जाय और क्षुधा अधिक लगे। अथवा पीपलामूल का चूर्ण गुड़ के साथ ले तो नष्ट हुई निद्रा भी आवे। अथवा कागलहरी की जड़ शिर में बाँधे तो निद्रा आवे। अथवा कोमल हाथों से पैर की पिंडली दाबे तो निद्रा आवे। अथवा बैंगन के भरते में शहद मिलायकर खाय तो निद्रा तत्काल आवे। अथवा अरण्ड का तेल और अलसी का तेल इन दोनों को बराबर ले काँसी की थाली में खूब घिसकर अंजन करे तो निद्रा अधिक आवे। अथवा बकरी के दूध से पैर के तलुवे धोवे तो निद्रा आवे और तलुओं का दाह अच्छा हो। अथवा कस्तूरी को स्त्री के दूध में महीन पीस अंजन करे तो बहुत दिन की गई हुई भी निद्रा आवे। अथवा सौंफ और भङ्ग को महीन पीस बकरी के दूध में सुहाता-सुहाता गर्म लेप करे तो निद्रा आवे। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं।

सर्वाङ्ग में वात हो उसका लक्षण और यत्न

सर्व अङ्गों में कोप को प्राप्त हुई वात सम्पूर्ण अङ्गों में पीड़ा करती है। वह सर्वाङ्गवात विषगर्भादि तैलों से दूर होती है।

सातों धातुओं में प्राप्त हुई वात का पृथक्-पृथक् लक्षण

त्वचा को शून्य और पीला करके शरीर को कृश और पीड़ित करती है।

रुधिर में प्राप्त हुई वात का लक्षण

शरीर में पीड़ा अधिक हो, वर्ण और से और हो जाय, शरीर कृश और भारी हो, अरुचि होय, मुख पर कील हो, भोजन पचे नहीं।

मांस, मेद और हाड़ों में प्राप्त हुई वात का लक्षण

मांस में प्राप्त वायु से शरीर भारी हो, पीड़ा हो और स्तम्भित हो। तथा मेदगत वायु शरीर में फोड़े करे। हाड़ों में रहनेवाली वायु से संधि-संधि में पीड़ा हो, मांस जल जाय और निद्रा आवे नहीं एवं मज्जा में प्राप्त वात को भी हाड़ की वात के समान जानिये।

वीर्य में प्राप्त हुई वात का लक्षण

स्त्रीसङ्ग करे तो वीर्य तत्काल गिरे, गर्भ को बिगाड़े अथवा न बिगाड़े।

इन सबका यत्न

रस में बिगड़ी वातवाले के तेल का मर्दन करे। रक्त में बिगड़ी वायुवाले के शीतल लेप करे। अथवा जुलाब देके वा रुधिर निकलवा के शान्त कर दे। मांस और मेदा में रहनेवाली वात को जुलाब से शान्त करिये। हाड़ों की बिगड़ी वायु को चिकनी वस्तु खिलाने से और लगाने से शान्त करिये, और मज्जा में बिगड़ी वात भी चिकनी वस्तु के खाने और लगाने से अच्छी होती है। वीर्य में बिगड़ी वातवाला पुष्टता की औषध खाने से अच्छा होता है।

कोष्ठ में प्राप्त हुई वात का लक्षण

उदर में रहनेवाली दुष्ट वायु मलमूत्र रोककर हृदयरोग, गुल्म, बवासीर, पसली का शूल इन सबको उपजाती है।

इसका यत्न

पाचनादिक औषध से इसका यत्न करे अथवा दूध पिलावे।

आमाशय में रहनेवाली वात का लक्षण

हृदय, पसली, पेट, नाभि इनमें पीड़ा हो, तृषा लगे, डकार बहुत आवे, विसूचिका और खाँसी हो तथा कण्ठ, मुख सूख जाय, श्वास हो।

इसका यत्न

दीपन और पाचन की औषध देवे, लङ्घन और वमन करावे, जुलाब करावे, खाने को पुराने मूँग, चावल दे अथवा रोहिष (रोहीड़ा), हड़ की छाल, कचूर, पुस्करमूल, बेल की गिरी, गिलोय, देवदारु, सोंठि, खुरासानी बच, अतीस, पीपरि, बायबिड़ंग ये सब बराबर ले इनका काढ़ा कर दे तो आमाशय की वायु जाय।

पक्वाशय में रहनेवाली वायु का लक्षण

आँत बोले, पेट में शूल और अफरा हो, मल-मूत्र कष्ट से उतरे, पीठ में पीड़ा हो।

गुदा में रहनेवाली दुष्टवात का लक्षण और यत्न

मल-मूत्र पवन से रुक जाय, पेट में शूल और अफरा हो, पथरी का रोग हो जाय, जाँघों में पीड़ा हो, यह रोग बस्तिकर्म से दूर होता है।

हृदय में प्राप्त हुई वात का यत्न

गिलोय, मिरच इन दोनों को महीन पीस गुनगुने जलसे पिये तो

यह वात जाय । अथवा देवदारु और सोंठि को महीन पीस गुनगुने जल से पिये तो यह वात जाय । अथवा असगन्ध, बहेड़े की छाल को महीन पीस गुड़ में मिलाय खाय तो यह वात जाय ।

कर्णादिक में प्राप्त वात का लक्षण और यत्न

यह वात कान आदि इन्द्रियों की नाशक है, सेंकने और तैल मलने से जाती है ।

शरीर की नसों में प्राप्त बात का लक्षण और यत्न

नसों में शूल होकर नसें इकट्ठी हो जायँ तो फ़स्द खुलवाना चाहिये ।

सन्धि में प्राप्त हुई वात का लक्षण और यत्न

वात की पीड़ा होकर सन्धियाँ बिगड़ जायँ तो सेंकने और तेल मलने से अच्छी होती हैं । अथवा इन्द्रायण की जड़ और पीपरि १० माशा गुड़ में खाय तो सन्धिगत वात जाय ।

बातव्याधि का सामान्य यत्न

नारायणतैल की विधि

असगन्ध, खरैटी की जड़, बेल की गिरि, पाटल, दोनों कटेली, गोखुरू, गँगेरन की छाल, नींब की छाल, अरलू, साँठी की जड़, खीप, अरणी इन सब औषधों को १० टके भर ले और १६ सेर पानी में डाल धीरे २ पकावे जब चतुर्थांश काढ़ा रह जाय तब उसमें ४ सेर तिल का तेल और तैल से चौगुना गौ का दूध डाले । फिर इसको मधुरी आँच से पकावे और पकते ही में कूट १ टके भर और इलायची, रक्तचन्दन, खुरासानी बच, बालछड़, शिलाजीत, सेंधा नोन, असगन्ध, खरैटी, रास्ना, सौंफ़, इन्द्रायण, सरिवन, पिठवन, माषपर्णी (बनउड़दी), मुद्गपर्णी (बनमूँग) ये सब दो दो टके भर डाले जब मधुरी आँच से सब रस जलकर तेलमात्र रह जाय तब उतारकर छान ले । इस नारायणतैल को मर्दन करे अथवा बस्तिकर्म करे तो पक्षाघात, हनुस्तम्भ, मन्यास्तम्भ, गलग्रह, बधिरता, गतिभङ्ग, कटिग्रह, गात्रशोष, नष्टशुक्र, विषमज्वर, अन्त्रवृद्धि, शिरोग्रह, पार्श्वशूल, गृध्रसी और संपूर्ण वातरोग दूर होते हैं ।

योगराज गुग्गुल की विधि

सोंठि, पीपरि, चव्य, पीपलामूल, चित्रक, भुनी हींग, अजमोद, सरसों, दोनों जीरे, सम्हालू, इन्द्रजव, पाढ़, बायबिड़ंग, गजपीपरि, कुटकी, अतीस, भारंगी, खुरासानी बच, अरुआ, पत्रक, देवदारु, कूट, रास्ना, नागरमोथा, सेंधानमक, इलायची, गोखुरू, हड़, धनियाँ, बहेड़ा, आमला, दालचीनी, खस, जवाखार ये सब समान भाग ले चूर्ण करे और चूर्ण के समान शुद्ध गुग्गुल डाले फिर खरल और मूसले को घी से चुपड़कर सबको कूटकर एकरस करे फिर चार चार माशे की गोली बनाकर घृत के चिकने बासन में रक्खे फिर रास्ना, साठी की जड़, सोंठि, गिलोय, अरण्ड की जड़ इनके काढ़े से इस योगराजगुग्गुल की एक गोली ले तो वात के सब रोग जायँ और किरमाला (अमलतास) पञ्चक के काढ़े से ले तो कफ के रोग जायँ तथा दारुहल्दी के काढ़े के साथ ले तो प्रमेह के रोग जायँ एवं गोमूत्र से ले तो पाण्डुरोग जाय और शहद के साथ ले तो वात और रक्त के रोग जायँ तथा पुनर्नवादि काढ़े से ले तो सब उदर के रोग जायँ। गुग्गुल का सेवन करनेवाला खटाई आदि न खाय। अथवा लहसुन के १ टके भर रस में बराबर का तेल मिलाय, अनुमान मुवाफ़िक़ सेंधा नोन डाल पिये तो वायु के सब रोग जायँ अथवा दूध के साथ वा घृत के साथ अथवा मांस के शोरुवे के साथ लहसुन १४ दिन तक खाय तो सब प्रकार की वात जाय और विषमज्वर, शूल, गोला, अग्नि की मन्दता, फिया, शिर का रोग, वीर्यरोग इनको यह लहसुनकल्प पूर्वोक्त ओषधियों के योग से दूर करता है। अथवा रास्ना, धमासा, खरैटी की जड़, अरण्ड की जड़, देवदारु, कचूर, खुरासानी बच, अड़ूसा, हड़ की छाल, चव्य, नागरमोथा, साठी की जड़, गिलोय, बिधारा, सौंफ़, गोखुरू, असगन्ध, अतीस, किरमाला की गिरी (अमलतास की गूदी), शतावरि, बड़ी पीपरि, सहँजने का छिलका, धनियाँ, दोनों कटेली ये सब बराबर ले इनका काढ़ा करे इसके साथ योगराजगुग्गुल ले तो सब प्रकार के वातविकार जायँ। यह महारास्नादि क्वाथ भावप्रकाश में लिखा है अथवा थूहर, अरण्ड, बकायन, सम्हालू, सहँजना, कनेर इन सबके पत्तों का रस और रस

से चौथाई तेल डाल पकावे फिर इसमें सोंठि डाले। जब ये जल जायँ और तेलमात्र रह जाय तब इस अष्टाङ्ग तैल का मर्दन करे, तो सब प्रकार की वात जाय।

विषगर्भ तेल

धतूरे की जड़, निर्गुण्डी, कड़ुई तूँबी की जड़, अरण्ड की जड़, असगन्ध, पँवाड़, चित्रक, सहँजने की जड़, कागलहरी, करिहारी की जड़, नींब की छाल, बकायन की छाल दशमूल, शतावरि, काकमाची (मकोय), गोरीसर, बिदारीकन्द, थूहर का पत्ता, आक का पत्ता, सनाय, दोनों कनेरों की छाल, आँधीझाड़ा, खीप ये सब औषधें तीन-तीन टके भर ले और इन औषधियों की बराबर काले तिल का तेल और इतना ही अरण्ड का तेल और इसमें चौगुना पानी डाले, फिर सब औषध कूटकर इसमें मिलाय मधुरी आँच से पकावे। जब ये सब औषधें जल समेत जल जायँ और तेलमात्र रह जाय तब उतार ले फिर इसमें सोंठि, मिरच, पीपरि, असगन्ध, रास्ना, कूट, नागरमोथा, खुरासानी बच, देवदारु, इन्द्रयव, जवाखार, पाँचों नोन, नीलाथोथा, कायफल, पाढ़, भारंगी, नौसादर, गन्धक, पुष्करमूल, शिलाजीत, हरताल ये सब औषधें धेले-धेले भर ले और सिंगीमुहरा १ टके भर ले, इन सबको महीन पीस तेल में डाले फिर इस विषगर्भतैल को मर्दन करे तो सब वात के रोग दूर हों। कुक्षि, भृकुटी पीठ, जाँघ और सन्धि, सन्धि की सूजन और गृध्रसीरोग, शिर का रोग, हड़फूटन, कर्णशूल, गण्डमाला इन सब रोगों को यह विषगर्भतैल दूर करता है।

महासुगन्धित लक्ष्मीविलास तेल

मंजीठ, देवदारु, चीढ़, कटेली, बच, तज, पत्रज, शोधी गन्धक, कचूर, हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, नागरमोथा ये सब टके-टके भर ले पीस औटाय रस निकाले फिर इस रस में १ सेर तेल डालकर मधुरो आँच से पकावे जब रस जलकर तेलमात्र रह जाय तब इस तेल में बालछड़, मुर्वा (मुरहठी), मेढ़ल, चम्पे की जड़, तज, पीपलामूल, नेत्रबाला, काला नोन, ये सब दो-दो टके भर ले और लोहबान, बेर, यव, असगन्ध, नखछड़ ये सब दो-दो टके भर ले और इलायची,

लवङ्ग, सफेद चन्दन, जायफल की कली, कंकोल, नागकेसर ये सब पैसे-पैसे भर और कस्तूरी ८ माशा लेकर सबको महीन पीस तेल में मधुरी आँच से पकावे। जब सब रस और औषध जलकर तेलमात्र रह जाय तब इसमें ८ माशा कपूर पीसकर डाले फिर इसका मर्दन करे तो सब प्रकार के वातरोग और सब प्रमेह, सूजन, गोला इन सबको यह तेल दूर करे। यह महासुगन्धित लक्ष्मीविलासतैल चक्रदत्त में लिखा है। अथवा सोंठि ७ टके भर और इसके बराबर एक लहसुन की पोटी ले, सोंठि को महीन पीस बराबर के घृत में भून ले, फिर लहसुन को पीस उसमें मिलाकर चोखा शहद ७ टके भर इसमें डाले। फिर इन सबको एक रस कर एक टके भर नित्य खाय तो पक्षाघात, हनुस्तम्भ, कटिभङ्ग, भुजों की पीड़ा और सब वायु के रोगों को यह लहसुन दूर करता है।

विजयभैरवतैल की विधि

मालकाँगनी, असालू, काला जीरा, अजवाइन, मेथी, तिल ये सब बराबर ले और तेल की घानी में इनका तेल निकलवा कर उस विजयभैरवतैल का मर्दन करे, तो सब वात के रोग जायँ। अथवा पारा, गन्धक, हरताल, मैनसिल ये सब बराबर ले तीन दिन तक काँजी में महीन पीस फिर एक हाथ कपड़े में इन चारों का लेप करे, फिर उस कपड़े की बत्तीकर उस पर सूत लपेटे फिर उस पर चौगुना तिल का तेल डालकर उस बत्ती को नोची कर जला दे, उसके नीचे लोहे का पात्र रक्खे उसमें जो टपके का तेल पड़े उसे दूसरे पात्र में भर ले, फिर इस विजयभैरवतेल का मर्दन करे तो सर्वप्रकार की वात का रोग जाय।

विजयभैरवरस

हड़ की छाल ३ टके भर, चित्रक १ टके भर और इलायची, तज, पत्रज, नागरमोथा ये चारों पैसे-पैसे भर ले और सम्हालू २० माशा, नागकेसर ८ माशा, सोंठि ४० माशा, कालीमिरच ४० माशा, पीपरि ४० माशा, पीपलामूल ४० माशा, शोधा सिंगीमुहरा ४० माशा, सार ४० माशा, पारा ४० माशा, शोधी गन्धक २० माशा, पहले पारे और गन्धक की कजली करे, फिर उस कजली में ये सब औषधें डाले, फिर इन सब

ओषधियों में पुराना त्रिवर्षी गुड़ ५० टके भर मिलाकर एक रस करे। फिर घृत में इसकी बेर के प्रमाण गोली बनाकर घृत के बासन में रक्खे। फिर १ तथा २ या ३ गोली नित्य दो महीने तक खाय तो कफ के और पित्त के सब रोग जायँ और इस रस को ४ महीने तक सेवन करे तो वायु के सब रोग जायँ। एक वर्ष सेवन करे तो सब रोग जायँ। दो वर्ष सेवन करे तो वृद्धता दूर होकर तरुण हो जाय। तीन वर्ष सेवन करे तो आयुर्बल बढ़े और शरीर नीरोग रहे। यह विजय भैरवरस है।

वातारिरस

पारा १ भाग, शोधी गन्धक २ भाग, त्रिफला ३ भाग, चित्रक ४ भाग, शोधा गुग्गल ५ भाग इन सबको अरण्ड के तेल में १ दिन तक खरल कर फिर इसमें हिंग्वष्टक चूर्ण डाले और एक दिन खरलकर फिर इसकी गोली झरबेरी प्रमाण बाँधे। फिर लवङ्ग, सोंठि और अरण्ड की जड़ के काढ़े से नित्य प्रति १ महीने तक यह वातारिरस खाय और ब्रह्मचर्य से रहे तो सब प्रकार की वात जाय तथा साधारण वात तो इसके ७ दिन सेवन करने ही से दूर हो।

समीरपन्नगरस

शोधी गन्धक, शोधा सिंगीमुहरा, सोंठि, कालीमिरच, छोटी पीपरि, पारा ये सब बराबर ले। फिर पारे और गन्धक की कजली करे और कजली में ये सब औषधें डालकर भाँगरे के रस की ७ पुट दे फिर इस समीरपन्नगरस की १ रत्ती प्रमाण गोली बाँधे। १ गोली अदरक के रस से ले तो सब प्रकार की वात जाय।

समीरगजकेशरीरस

नवीन चोखी अफ़ीम, कुचला, कालीमिरच ये सब बराबर ले फिर इन सबको महीन पीस १ रत्ती प्रमाण गोली पान के रस में बाँधे। १ गोली प्रभात ही खाकर ऊपर से पान चबावे तो सब प्रकार की वात जाय। सूजन, विसूचिका और मृगी ये सब जायँ। यह सब वैद्यरहस्य में लिखे हैं।

वृद्धचिन्तामणिरस

खुरासानी अजवाइन, सफ़ेद ज़ीरा, अजमोद, काकड़ासिंगी, अस-

गन्ध ये सब बराबर ले महीन पीस १ माशे प्रमाण गर्म जल के साथ ले तो सब प्रकार की वात दूर हो और श्वास, खाँसी, प्रलाप, अतिनिद्रा और अरुचि ये सब जायँ।

अमृतनाम गुटिका

चित्रक ३ टके भर, हड़ की छाल ३ टके भर और शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, सोंठि, मिरच, पीपरि, पीपलामूल, नागरमोथा, जायफल, बिधारा ये सब एक-एक टके भर और इलायची ५ टके भर, अभ्रक २० माशा, शोधा सिंगीमुहरा २० माशा, गुड़ ८ टके भर, प्रथम पारे और गन्धक की कजली कर इन सब ओषधियों को महीन पीस गुड़ समेत कजली में मिलावे और इसमें जल भाँगरे को १ पुट दे फिर १ या २ तथा ३ रत्ती के प्रमाण गोली बाँधे। १ गोली नित्य खाय तो सब प्रकार की वात, कोढ़, प्रमेह, मृगी, क्षयी, श्वास, सूजन, आमवात, पाण्डुरोग, बवासीर इन सब रोगों को यह रस दूर करता है। यह अमृतनामगुटिका योगतरङ्गिणी में है।

राक्षसरस

शोधी गन्धक, शोधा पारा इन दोनों को बराबर ले कजली करे और इसमें दूधिया के रस की १ पुट दे, फिर तुलसी के रस की १ पुट, बावची के रस की १ पुट, मोरशिखा के रस की १ पुट, मुलहठी के रस की १ पुट, बाराहीकन्द के रस की १ पुट, बहुफली के रस की १ पुट दे। फिर इसका रस सुखाकर पारे और गन्धक की कजली को कुक्कुट के अंडे में भर और अंडे को शोध ले। फिर अंडे को कपरौटी कर ७६ अंडों को सुखा ले। फिर उन अंडों को गजपुट में पकावे। इसी प्रकार तीन बार करे, फिर इसमें से १ रत्ती खाय तो सब प्रकार की वात जाय। यह क्षुधा को बहुत करता है। यह राक्षसरस रसार्णव में लिखा है।

वङ्गेश्वररस

शोधा पारा, शोधी गन्धक इनकी कजली करे और दोनों से आँधी शोधी हरताल डाले और इन सबकी बराबर राँग डाले। फिर इनको आकी के दूध में ७ दिन खरल करे। फिर सुखाकर काँच के आतशी शीशे में कपरौटी कर उसमें भर दे। फिर शीशे को बालुकायन्त्र में

१२ पहर पकाय शीतल करके काढ़े। फिर उसमें से आधी रत्ती प्रमाण पान में खाय तो सब प्रकार की वात, उन्माद, क्षीणता, मन्दाग्नि, कोढ़, व्रण और विषमज्वर ये सब जायँ। यह वङ्गेश्वररस योगतरङ्गिणी में है।

हरतालगुटिका

शोधी हरताल, शोधी गन्धक, शुद्ध पारा, शिंगरफ़, सुहागा, सोंठि, मिरच, पीपरि ये सब बराबर ले, पारे और गन्धक की कजली कर ये सब औषधें मिलावे फिर अदरक के रस की १ पुट देकर मूँग प्रमाण गोली बाँधे। १ गोली प्रभात ही खाय तो सब प्रकार की वात और सूतिकारोग, मन्दाग्नि, संग्रहणी, शीतज्वर ये सब रोग जायँ। यह हरतालगुटिका रसरत्नप्रदीप में है।

लहसुनपाक की विधि

लहसुन १ पैसे भर लेके उसको महीन जीरा सा कतर ले, फिर १ पैसे भर दूध और धेले भर पानी में चढ़ाकर आँच दे। जब दूध लहसुन में सूख जाय तब उसको खरल करे। जब लुगदी बँध जाय तब धेले भर घृत डाल आँच दे। जब सुर्खीपन हो आवे तब उतार ले और घृत अधिक रहे सो निकाल ले। फिर २ पैसे भर मिश्री की चाशनी करे। उसमें कस्तूरी आधी रत्ती, लवङ्ग ४ रत्ती, जायफल १ माशा, दालचीनी १ माशा, सुवर्ण का तबक १ माशा ये सब औषधें पीस चाशनी में मिलावे फिर वह लहसुन डाल चार गोली बाँधे। एक गोली प्रभात ही खाय और बहुत वात हो तो दूसरी गोली सायंकाल के समय खाय तो वात जाय। यदि अधिक दिन सेवन करना चाहे तो पथ्य से रहकर २१ दिन तक खाय या ४९ दिन खाय परन्तु गोली भी पूर्वोक्त प्रमाण से अधिक औषध लेकर बढ़ा ले। इस लहसुनपाक के खाने से सब प्रकार की वात दूर हों, शरीर पुष्ट हो और क्षुधा बढ़े। वातजरोग के ८४ भेदों समेत उत्पत्ति, लक्षण और यत्न सम्पूर्ण।

इति अष्टमस्तरङ्गः ८

—:(०):—

ऊरुस्तम्भरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

शीतल, गर्म, पितलानी, सूखी, भारी चिकनी इन वस्तुओं के खाने से, दिन के सोने और रात्रि के जागने से, अधिक क्षुधा से अथवा अजीर्ण में पीछे कही हुई वस्तुओं के खाने से पुरुष की वात कुपित होकर पित्त को बिगाड़ जंघाओं को स्तम्भित और शून्य करती है, मानो जंघा अङ्ग में हैं ही नहीं, हलने चलने न दे उसको ऊरुस्तम्भ-रोग कहते हैं।

ऊरुस्तम्भरोग का पूर्वरूप

निद्रा बहुत आवे, ध्यान लग जाय, कुछ ज्वरांश, रोमाञ्च, छर्दि, जंघाओं में पीड़ा ये लक्षण हों तो जानिये कि ऊरुस्तम्भ रोग होगा। इस रोग को धन्वन्तरिजी ने सुश्रुत में महावत-व्याधिरोग कहा है। इसका लक्षण लिखते हैं। दोनों पैर सूज जायँ और उनमें पीड़ा हो, बड़े कष्ट से उठें, दोनों जंघाओं में पीड़ा, दाह और धरती में पैर धरते ही पीड़ा हो, शीतलस्पर्श को न जाने, चला न जाय, काष्ठ की सी जंघा हो जायँ, टूटी सी दीखै ये लक्षण हों तो वातव्याधिरोग जानिये। इसी को ऊरुस्तम्भ भी कहते हैं।

ऊरुस्तम्भ का असाध्य लक्षण

जिस ऊरुस्तम्भ रोगवाले के दाह और पीड़ा हो, शरीर काँपे वह मर जाय।

ऊरुस्तम्भ का यत्न

त्रिफला, पीपलामूल, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, इनका महीन चूर्णकर ६ माशा नित्य शहद से खाय तो ऊरुस्तम्भरोग जाय। अथवा सोंठि, पीपरि, शिलाजीत, गुग्गुल ये सब ५ माशे गोमूत्र के साथ नित्य पिये तो यह रोग जाय। अथवा दशमूल के काढ़े के साथ गुग्गुल खाय तो रोग जाय। यह भावप्रकाश में लिखा है। अथवा भिलावां ५ माशा, गिलोय ५ माशा, देवदारु ५ माशा, सोंठि ५ माशा, हड़ की छाल ५ माशा, साठी की जड़ ५ माशा, दशमूल ८ माशा इनका काढ़ा ले तो यह रोग जाय। अथवा ५ माशा गुग्गुल को गोमूत्र के साथ १५ दिन ले तो यह रोग जाय। अथवा शहद, सरसों, बामी की मिट्टी इनको महीन पीस मर्दन करे तो ऊरुस्तम्भ जाय।

अथवा बच का चूर्ण १० माशा गर्म पानी से ले तो यह रोग जाय। और ऊरुस्तम्भवाला रुधिर न कढ़ावे और वमन, विरेचन तथा बस्तिकर्म न करे। यह वैद्यरहस्य में है। अथवा खस या नींबू का रस गुड़ के साथ या शहद के साथ पिये तो ऊरुस्तम्भ जाय। अथवा चव्य, हड़ की छाल, चित्रक, देवदारु, कणगज के फूल, सरसों इनका चूर्ण कर ६ माशा शहद के साथ ले तो ऊरुस्तम्भ जाय। यह सर्वसंग्रह में है।

आमवात रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

मन्दाग्निवाला पुरुष कुपथ्य से चिकना अन्न खाय, परिश्रम न करे तो उस पुरुष के वात से प्रेरित कच्चे अन्न का रस कफ के स्थान, हृदय में पहुँचकर कच्चा ही वात के द्वारा नसों में जाता है और नसों के छिद्रों को रोक अग्नि को मन्दकर हृदय को भारी करता है और कफ, वात कुपित होकर कोष्ठ तथा त्रिकसन्धि में प्रवेशकर शरीर को स्तम्भित करते हैं; उसी को आमवात कहते हैं।

लक्षण

अङ्ग में हड़फूटन, अरुचि, तृषा, आलस्य, शरीर भारी, ज्वर ये हों, और अन्न पचे नहीं, अङ्ग सुन्न पड़ जाय, जिसमें ये लक्षण हों उसको आमवात कहिए।

वायु बढ़े हुए का लक्षण

कोप को प्राप्त हुआ आमवात सर्वरोगों में कष्टसाध्य होता है, इसका दोष कहते हैं। हाथ, पैर, शिर और टांगों में से त्रिक और जंघाओं की सन्धियों में प्राप्त होकर पीड़ायुक्त सूजन करता है तब उन स्थानों में बिच्छू के लगने की सी बहुत पीड़ा हो, अग्नि मन्द हो, लार पड़े, उत्साह जाता रहे, मुख का स्वाद और का और हो जाय, दाह हो, मूत्र बहुत उतरे, कुक्षि में कठिनता होकर शूल हो, निद्रा आवे नहीं, वमन हो, तृषा अधिक लगे, भ्रम और मूर्च्छा हो, मल उतरे नहीं, शरीर जड़ हो जाय, आंत बोला करें, अफरा हो तथा वातव्याधि के कहे हुए और भी उपद्रव होते हैं। जिसमें पित्त अधिक हो उसमें दाह हो, पीलापन को लिये हो और वाताधिक्य में शूल हो और

कफाधिक्य हो, भारीपन हो, खुजली हो, एक दोष का साध्य और दो दोष का कष्टसाध्य तथा सर्वदेह में विचरनेवाला सन्निपात का शोथ असाध्य जानिये।

यत्न

अरण्ड के बीजों को दूध में पकाय, खीर बनाकर खाय तो आमवात और गृध्रसीरोग जायँ।

महारास्नादिक्वाथ

रास्ना, अरण्ड की जड़, अड़ूसा, धमाशा, कचूर, दारुहल्दी, खरैटी, नागरमोथा, सोंठि, अतीस, हड़ की छाल, गोखरू, सहँजना, चव्य, दोनों कटेली इनको बराबर ले और रास्ना तिगुनी ले फिर इनको जवकुटकर काढ़ाकर नित्य दे तो पक्षाघात, अर्दित, कम्प, कुबड़ापन, सन्धि-सन्धि की वात, पैर की पीड़ा, गृध्रसी, हनुग्रह, ऊरुस्तम्भ, वातरक्त, बवासीर, वीर्य का दोष, स्त्री का बन्ध्यापन इन सब रोगों को यह काढ़ा दूर करता है।

अजमोदादिक चूर्ण

अजमोद, कालीमिरच, छोटी पीपरि, बायबिड़ंग, देवदारु, चित्रक, सौंफ, सेंधा नोन, पीपलामूल ये सब औषध टके टके भर और सोंठि १० टके भर, बिधारा १० टके भर, हड़ की छाल ५ टके भर ले इन सबको महीन पीस और सबके बराबर गुड़ ले फिर इसकी झरबेरी बेर बराबर गोली बाँधे और नित्य गर्म पानी से ले तो आमवात, शूल, गृध्रसी, गोला, प्रतूनी, कटि, पीठ, जंघा और हड़फूटन, सूजन इन सब रोगों को यह अजमोदादि चूर्ण दूर करता है। जो पीछे वातव्याधि में योगराजगुग्गुल लिखा है उससे भी आमवात का रोग दूर होता है।

सोंठपाक

सोंठि ८ टके भर, गौ का घृत १ सेर, दूध ४ सेर ले फिर सोंठि को महीन पीस घृत में, बकरी के दूध में पकाकर खोया कर ले फिर ५० टके भर खाँड़ की चाशनी कर उस चाशनी में घृत से अच्छे प्रकार से भूँजे फिर इसमें सोंठि १ टके भर, नागकेसरि १ टके, भर डाले,

फिर इसका मोदक १ टके भर का बाँधे। एक एक मोदक दोनों समय खाय तो आमवात को दूर करे, शरीर को पुष्टकर पराक्रम करे।

मेथीपाक

मेथी ८ टके भर, सोंठि ८ टके भर इन दोनों को महीन पीस गौ के ४ सेर दूध में पकावे और इन दोनों को घृत में मरकोकर मावा करे फिर ४ सेर पक्की मिश्री की चाशनी कर उसमें यह मावा डाले और मिरच, चित्रक, पीपरि, सोंठि, पीपलामूल, धनियाँ, सौंफ, जायफल, कचूर, तज, पत्रज, नागरमोथा, इन सबको एक एक टके भर ले, महीन पीस चाशनी में डाले फिर सबको एकरसकर टके टके भर का मोदक बाँधे। १ मोदक नित्य खाय तो आमवात, वातव्याधि, विषम-ज्वर, प्रदर इन सब रोगों को यह दूर कर वीर्य की वृद्धि करता है।

अथवा लहसुन का रस १० माशा, गौ का घृत १० माशा इन दोनों को मिलाकर नित्य पिये तो आमवात जाय।

बृहत्सैन्धवादि तैल

सेंधा नोन २० माशा, हड़ की छाल २० माशा, पुष्करमूल २० माशा, महुआ २० माशा, पीपरि २० माशा, इन सबको महीन पीस फिर अरण्ड का तेल १ सेर, सौंफ का अर्क १ सेर, कांजी २ सेर, दही का मट्ठा ४ सेर इन सबको औषध समेत इकट्ठा कर कढ़ाई में चढ़ा-कर नीचे मन्द मन्द आँच दे। जब सब रस जल जाय और तेलमात्र रह जाय तब उतार ले। फिर इसमें से ६ माशा नित्य खाय अथवा लगावे तो आमवात जाय और क्षुधा की वृद्धि हो।

आमवातारि रस

पारा, शोधी गन्धक, सोंठि, कुटकी, त्रिफला, अमलतास की गूदी ये सब बराबर ले और हड़ की छाल अन्य औषधों से तिगुनी ले। प्रथम पारे और गन्धक की कजली करे फिर ये सब औषध मिलावे फिर इसमें से १ माशे प्रमाण सोंठि और अरण्ड की जड़ के काढ़े से ले तो आमवातरोग तत्काल जाय। दही, दूध, गुड़, मछली, मांस, उरद की वस्तु इनको आमवातवाला न खाय। यह भावप्रकाश में लिखा है।

व्याधिशार्दूल गुग्गुल

गुग्गुल १ सेर, हड़ की छाल का चूर्ण १ सेर, आमले का चूर्ण १

सेर, बहेड़े की छाल का चूर्ण १ सेर ये सब औषध ४ सेर पानी में डाल पीछे कढ़ाई में पकावे। जब जल का चतुर्थांश रह जाय तब उतार ले। फिर अग्नि के ऊपर चढ़ाकर कुछ गाढ़ा कर ले पीछे इसमें सोंठि १० माशा, मिरच १० माशा, पीपरि १० माशा, त्रिफला १० माशा, नागरमोथा १० माशा, देवदारु १० माशा, शोधी गन्धक १० माशा, शोधा जमालगोटा १००, पहले पारे और गन्धक को कजली करे। फिर कजली में ये सब औषधें मिलावे तदनन्तर ये सब गुग्गुल के रस में मिलाकर १ माशा गर्म जल के साथ ले तो आमवात को तत्काल दूर कर क्षुधा की वृद्धि करे। धातु को बढ़ावे, मुख सूजे नहीं और वात के रोग, भगन्दर, सूजन, शूल, बवासीर इन सब रोगों को दूर करे।

आमवातारि गुटिका

हड़ की छाल, सेंधा नोन, निशोत, इन्द्रायण की जड़, सोंठि, इन्द्रायण के फल की मींगी इन सबको महीन पीस लोहे के पात्र में जल भरकर उसमें ये औषधें डाले। फिर मधुरी आँच से पकाकर छोटे बेर के प्रमाण गोली बाँधे। १ गोली गर्म पानी से ले ऊपर से बहुत घृत डाल चावल खाय तो आमवात जाय। ये सब वैद्यरहस्य में लिखे हैं।

द्वात्रिंशक गुग्गुल

सोंठि, कालीमिरच, पीपरि, त्रिफला, नागरमोथा, बायबिड़ंग, चव्य, चित्रक, खुरासानी बच, इलायची, पीपलामूल, झाऊ की जड़, देवदारु, तुम्बुरु अर्थात् मीठे तोंबा के बीज, पुष्करमूल, कूठ, दोनों हल्दी (हल्दी-दारुहल्दी), सौंफ, सफेद जीरा, सोंठि, पत्रज, धमासा, काला नोन, जवाखार, सज्जी, गजपीपरि, सेंधा नोन ये औषधें बराबर ले फिर इन औषधों को महीन पीस गुग्गुल में मिलावे फिर इसको ६ माशा घृत अथवा शहद के साथ नित्य खाय तो आमवात, उदावर्त, बवासीर, कृमिरोग, विषमज्वर, उन्माद, अफरा, कोढ़, सूजन, पाण्डु-रोग इन सबको यह दूर करता है। धन्वन्तरिजो ने इसका नाम द्वात्रिंशक गुग्गुल कहा है। यह वीरसिंहावलोकन में है।

सिंहनाद गुग्गुल

चौबीस सेर पानी में त्रिफला डालकर औटावे जब पानी ६ सेर

रह जाय तो उसे छानकर फिर अग्नि पर चढ़ा के गाढ़ा कर ले और उसमें शोधा गुग्गुल १ सेर, तेल ८ टके भर, सोंठि १० माशा, मिरच १० माशा, पीपरि १० माशा, त्रिफला १० माशा, नागरमोथा १० माशा, देवदारु १० माशा, गिलोय १० माशा, निशोत १० माशा, दात्यूणी १० माशा, खुरासानो बच १० माशा, जिमींकंद १० माशा, पारा १० माशा, शोधी गन्धक १० माशा, धतूरे के बोज १६ माशा, इन सबको महीन पीस उस त्रिफले के जल में मिलाकर एकजीव करे फिर इसमें से १ माशा नित्य गर्म जल से ले तो क्षुधा बढ़े, धातु को बढ़ावे, शरीर को नीरोग करे और आमवात, मन्थवाय, कटि की वात, भगन्दर, पैरों की वात, जाँघ की वात, पथरी, मूत्रकृच्छ्र इन सब रोगों को यह गुग्गुल दूर करता है। यह योगतरङ्गिणी में है।

वातेश्वर रस

शोधी गन्धक २० माशा, ताम्रेश्वर २० माशा, पारा २० माशा, सार ८ माशा इन सबको इकट्ठा कर अरंड के पत्तों के ऊपर डाले फिर इनको खरल में पीस पीपरि, पोपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि इनका काढ़ा कर उस काढ़े की १६ पुट दे और बहेड़े के रस की २० पुट दे तथा गिलोय के रस की १० पुट दे फिर इन सब औषधियों के बराबर भुना सुहागा डाले और सुहागे से आधा बिडनोन डाले तथा बिडनोन के बराबर कालो मिरच डाले और सोंठि, पीपरि, त्रिफला, लवङ्ग ये सब मिरच के बराबर डाले फिर इन सबको महीन पीस एकरस करे। यह रस १ माशे नित्य पृथक् पृथक् अनोपान से खाय तो सर्वरोग मात्र को दूर कर क्षुधा को बहुत बढ़ाता है और आमवात को दूर कर स्थूल पुरुष को कृश और कृश पुरुष को पुष्ट करता है। इसकी ४ रत्ती की मात्रा है जो कण्ठ तक भी भोजन किया हो तो उसको भी तत्काल पचा देता है। यह सारसंग्रह में है। दही, मछली, गुड़, दूध, उरद का आटा ये सब वस्तु आमवातवाला न खाय।

पित्तव्याधि की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

कड़ुवा रस, खटाई, गर्मवस्तु, दाह करनेवाली तीक्ष्ण वस्तु इनके खाने से और उपवास, क्रोध और अधिक मैथुन करने से, बहुत नोन

के खाने से, घाम में सोने से और प्यास, भूख के रोकने से, खेद के करने से गर्मी का कोप होता है। भोजन की जीर्णता के समय शरद्-ऋतु में, ग्रीष्मऋतु में, मध्याह्न में, अर्द्धरात्रि के समय पित्त कोप को प्राप्त होकर ४० रोगों को पैदा करता है। उनके नाम और लक्षण। तरुणाई में श्वेत बाल हो जायँ १, लाल नेत्र रहें २, मूत्र लाल हो ३, नेत्र पीले रहें ४, मूत्र पीला उतरे ५, मल पीला हो ६, नख पीले हों ७, दाँत पीले हों ८, शरीर पीला रहे ९, अँधेरी आवे १०, सर्वत्र पीला दीखा करे ११, निद्रा थोड़ी आवे १२, मुख सूखे १३, मुख में दुर्गंध आवे १४, मुख तीखा रहे १५, गर्म श्वास निकले १६, मुख खट्टा रहे १७, डकार में धुआँ निकले १८, घुमनी आवे १९, इन्द्रिय शिथिल हो जायँ २०, क्रोध बहुत हो २१, दाह हो २२, अतीसार रहा करे २३, गर्मी सुहावे नहीं शीतलता सुहावे २४, किसी वस्तु से तृप्ति न हो २५, सर्व वस्तु से अप्रीति रहे २६, भोजन के पीछे जलन हो २७, क्षुधा बहुत लगे २८, नकसीर आदि हो २९, मल पतला हो ३०, मल गर्म उतरे ३१, मूत्र गर्म उतरे ३२, मूत्रकृच्छ्र हो ३३, वीर्य की अल्पता हो ३४, शरीर गर्म रहे ३५, पसीना बहुत आवे ३६, पसीने में दुर्गन्ध आवे ३७, हाथ-पैरों में रोग बहुत हों ३८, शरीर में हड़-फूटन हो ३९, फोड़ा-फुन्सी बहुत हों ४०, ये गर्मी के ४० रोग हैं।

इन सब पित्तरोगों का सामान्य यत्न

नींब की छाल आदि तिक्त वस्तुओं के खाने से और मिश्री आदि मीठी वस्तु खाने से, चन्दन आदि शीतल वस्तु के लगाने से, शीतल पवन से, शीतल छाया के रहने से, रात्रि में सोने से, खस के पंखे की पवन से, चन्द्रमा की चाँदनी से, तहखाने के रहने से, दूध के पीने से, जुलाब के लेने से, रुधिर के निकलवाने से, पित्तरोग दूर होते हैं।

भारी, मोठी, बहुत चिकनी, दही आदि शीतल वस्तुओं के खाने से और दिन के सोने से, बहुत बैठे रहने से कफ का कोप होता है तथा प्रभात समय और भोजन के पीछे वसन्तऋतु में कफ का कोप होता है।

कफ के २० रोगों का लक्षण

मुख मीठा रहे १, मुख कफ से लिपटा रहे २, लार पड़े ३, निद्रा बहुत आवे ४, कण्ठ में घुर घुर शब्द हो ५, कड़ुवे रस की इच्छा रहे ६, गर्म वस्तु की इच्छा रहे ७, बुद्धि की जड़ता हो ८, चैतन्यता थोड़ी रहे ९, आलस्य बहुत आवे १०, क्षुधा लगे नहीं ११, मन्दाग्नि हो १२, दिशा बहुत जाय १३, मल श्वेत हो १४, मूत्र बहुत उतरे १५, मूत्र श्वेत हो १६, वीर्य की अधिकता हो १७, निश्चल हो १८, शरीर भारी हो १९, शरीर ठंढा रहे २०, ये कफ के बीस रोग हैं।

कफ के २० रोगों का सामान्य यत्न

सूखी, कषैली, गर्म, कड़ुवी वस्तु के खाने से और खेद, कुल्ल और वमन के करने से, पसीना आने से, लंघन करने से, तृषा रोकने से, हुक्का पीने से, कुश्ती लड़ने से, जलक्रीड़ा से, चित्रक के खाने से, नास लेने से, मार्ग चलने मे, मैथुन करने से, जागने से कफ के २० रोग दूर होते हैं।

इति नवमस्तरङ्गः ९

—:०:—

वातरक्त की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

नोन, गर्म वस्तु, सड़ा मांस, खरी, बड़ी मूली, कुलथी, उड़द, बहुत तरकारी, मांस, मछली, दही, * विरुद्ध वस्तु इन सबके खाने से, आसव और कांजी के पीने से, क्रोध से, दिन के सोने से और हाथी, घोड़े, ऊँट के दौड़ाने से सुकुमार और सुखी पुरुष के वातरक्त का रोग कोप को प्राप्त होता है।

वातरक्त का स्वरूप

सब शरीर में रुधिर दग्ध हो जाय फिर यह रुधिर दुष्ट होकर दोनों पैरों में इकट्ठा होने लगे।

वातरक्त का पूर्वरूप

पसीना बहुत आवे अथवा आवे नहीं, शरीर काला पड़ जाय, शरीर में स्पर्श का ज्ञान का न हो, थोड़ो सी चोट में पीड़ा बहुत हो सन्धि सन्धि शिथिल हो जायँ, आलस्य बहुत आवे शरीर में फुंसी हों और घोंटू, जंघा, कटि, हाथ-पैरों की सन्धि में पीड़ा हो, शरीर

* विरुद्ध भोजन। मांस के साथ दुग्ध अथवा तिल के साथ दुग्ध पीना।

भारी रहे, सुन्न हो जाय, शरीर में दाह हो, वर्ण और का और हो जाय, शरीर में लाल चटें पड़ जायँ, ये लक्षण हों तो जानिए कि वातरक्त होगा।

वाताधिक वातरक्त का लक्षण

पैरों में शूलादिक बहुत हों, और फड़के, सूजन हो, रूखे और काले हों तथा २४ नाड़ी और अँगुली के मध्य में संकोच हो शरीर जकड़बन्द हो और काँपे तथा शरीर सूखा सा दीखे ये लक्षण हों तो वाताधिक का वातरक्त जानिए।

रक्ताधिक वातरक्त का लक्षण

जिसमें सूजन हो, पीड़ा बहुत हो, ललाई सहित हो और चिमचिमी तथा खुजली हो ये लक्षण हों उसके रक्ताधिक वातरक्त कहिए।

पित्ताधिक वातरक्त का लक्षण

जिसमें दाह, मोह और सूजन हो, पक जाय, गर्म बहुत हो, ये लक्षण हों उसको पित्ताधिक वातरक्त कहिए।

कफाधिक वातरक्त का लक्षण

शरीर शिथिल, भारी और चिकना हो जाय, शून्य और ठंडा हो, खुजली चले, ये लक्षण जिसमें हों उसको कफाधिक वातरक्त कहिए और जिसमें ये सब लक्षण मिले हों उसको सन्निपात का वातरक्त कहिए।

हाथों के वातरक्त का लक्षण

जैसे पैर के तलुए में होता है वैसे ही हथेली के ऊपर फुंसी आदि हो पीछे सब शरीर में होता है।

वातरक्त का असाध्य लक्षण

पैर के तालू से लेके घोंटू तक फुंसी हों और बल, मांस, अग्नि ये सब नष्ट हो जायँ तो वातरक्त असाध्य जानिए और इसको १ वर्ष का याप्य कहिए।

वातरक्त का उपद्रव

नींद आवे नहीं, रुचि जाती रहे, श्वास हो, मांस गल जाय, मस्तकपीड़ा, मूर्च्छा, तृषा, ज्वर, मोह, हिचकी हों, शरीर काँपे, अँगुली गल जायँ, विसर्प हो, फुंसी पक जायँ, पीड़ा हो, घुमनी आवे, अँगुलियाँ टेढ़ी हो जायँ, फोड़ा में दाह हो ये इसके उपद्रव हैं।

वातरक्त का यत्न

वातरक्तवाले के जोंक लगा अथवा शिंगी लगाकर या पचका करके अथवा फ़स्त करके रुधिर कढ़ाइए परन्तु रुधिर ऐसे अनुमान मुवाफ़िक कढ़ाइए जहाँ तक वायु बढ़े नहीं और दिन में सोना, क्रोध, खेद, मैथुन न करे और कड़ुवी, गर्म, भारी, रूखी और खटाई इतनी वस्तु वातरक्तवाला न खाय। पुराना यव, पुराना गेहूँ और पुराना धान खाय अथवा लवा, तीतर, बटेर, अरहर, चना, मूँग, मसूर, कुलत्थ, धनियाँ, मकोय, बथुवा, लूणाख्य, अनुनियाँ, चील, व पक्षिविशेष, बकरी का दूध और घृत इतनी वस्तुओं का खाना योग्य है। अथवा गुग्गुल ५ माशा गिलोय के काढ़े से ले अथवा अरण्ड का तेल १० माशा गिलोय के काढ़े में डालकर पिये तो वातरक्त जाय। अथवा मंजिष्ठादि काढ़े से वातरक्त जाय।

लघु मंजिष्ठादि काढ़ा

मंजीठ, त्रिफला, कुटकी, खुरासानी बच, दारुहल्दी, गिलोय, नींब की छाल ये सब बराबर ले जवकुट कर काढ़ा बनाकर नित्य ले तो वातरक्त, कोढ़, पामा, फोड़ा इन सब रोगों को यह दूर करे। एक मण्डल तक ले।

गुडूच्यादि क्वाथ

अथवा गिलोय, बावची, पवाँड़, नींब की छाल, हड़ की छाल, हल्दी, अड़ूसा, शतावरि, नेत्रबाला, अथवा सफेद कटेली, खरैटी, मुलहठी, महुआ, गोखुरू, पटोल अर्थात् परवल के पत्ते, खस, मंजीठ, रक्तचन्दन ये सब बराबर ले फिर जवकुट कर काढ़ा बनाकर नित्य ले तो वातरक्त, कोढ़, पामा, दाद इन रोगों को यह काढ़ा दूर करे। ये सब भावप्रकाश में हैं।

कैशोर गुग्गुल

अथवा शोधा भैंसागुग्गुल १ सेर, हड़ की छाल १ सेर, बहेड़े की छाल १ सेर, आमला १ सेर, गिलोय ३२ टके भर, इन सबको जवकुट कर ६४ सेर पानी में औटावे जब आधा रह जाय तब उतारकर छान ले फिर कढ़ाई में औटाके गाढ़ा करे फिर पारा १० माशा, बायबिड़ंग १० माशा, निशोत १० माशा, गिलोय १० माशा, दात्यूणी १०

माशा, पहले पारे और गन्धक की कजली करे। फिर कजली में ये औषधें महीन पीस मिलाय उस गुग्गुल में डाले। फिर सबको एकरस कर ४ माशे अथवा ८ माशे मंजिष्ठादि काढ़े से नित्य ले तो वातरक्त, फोड़ा, फुंसी, व्रण, खाँसी, गोला, कोढ़, सूजन, उदर रोग, पाण्डु-रोग, प्रमेह, मन्दाग्नि इन सब रोगों को यह दूर करता है और इसका खानेवाला खेद न करे, धूप में न रहे, अग्नि के पास न बैठे, खटाई न खाय, मैथुन न करे, मार्ग न चले तथा नोन और तेल न खाय।

अमृत भल्लातकावलह

अथवा १ सेर भिलावें ऐसे भारी ले जो जल में डूब जायँ उनका मुँह खोर से घिस १६ सेर पानी में डाल औटावे। इस औटते पानी में गिलोय २ सेर जवकुट कर डाले जब इस पानी का चतुर्थांश रह जाय तब इसमें गिलोय १० माशा, बावची १० माशा, नींब की छाल १० माशा, हड़ की छाल १० माशा, आमला १० माशा, हल्दी १० माशा, नागरमोथा २० माशा, तज २० माशा, इलायची २० माशा, सोंठि २० माशा, नागकेशर २० माशा, पित्तपापड़ा २० माशा, पत्रज २० माशा, नेत्रबाला २० माशा, खस २० माशा, सफेद चन्दन १६ माशा, गोखुरू २० माशा, कचूर २० माशा, रक्तचन्दन २० माशा, इनको महीन पीस डाले और भिलावें समेत एकजीकर अमृतबान में रक्खे। इसमें से ६ माशा नित्य जल के साथ ले तो वातरक्त, कोढ़, बवासीर, विसर्प, पामा, वात और रुधिर के सब विकार इतने रोगों को यह दूर करता है। इसका खानेवाला खेद, धूप में रहना, अग्नि के पास रहना न करे और खटाई तथा मांस न खाय, तेल न लगावे और मार्ग न चले।

अथवा अलसी वा अरंडी को दूध में पीस हाथ व पैरों में लेप करे तो वातरक्त जाय। अथवा गोरीसर, राल, मोम, मंजीठ ये सब बराबर ले तेल में पकावे फिर इसका मर्दन करे तो वातरक्त जाय। अथवा अरण्ड को जड़, गिलोय, अड़ूआ इनका काढ़ाकर उसमें गुग्गुल ४ माशे, अरण्ड का तेल १० माशा डालकर पिये तो वातरक्त, मूर्च्छा, मंथवायु, श्वास और फोड़ा इन सबको यह दूर करे। यह वैद्यरहस्य में

लिखा है। अथवा हरताल के चोखे पत्र ले उनको साठी के रस में दो दिन खरल करे फिर उसको गाढ़ा कर टिकरी कर सुखा ले और साठी की राख के बीच में उस हरताल की टिकरी को ठीकरे में धरे फिर उस ठोकरे को चूल्हे पर चढ़ाय ५ दिन रात मधुरी आँच दे फिर स्वाङ्गशीतल हो जाय तब काढ़े। जो वह हरताल श्वेत निकले और पूरी तोल उतरे तो इसमें से १ रत्ती गुडूच्यादि काढ़े के साथ ले तो वातरक्त और १८ प्रकार के कोढ़, फिरंगबाय, विसर्प, पामा, फोड़ा इन सबको यह दूर करे। इसका खानेवाला नोन, खटाई, कड़ुवा रस, धूप में तथा अग्नि के पास बैठना इतनी बातें छोड़ दे और सेंधा नोन, मीठा रस खाय। यह हरताल की क्रिया भावप्रकाश में लिखी है। यह तालकेश्वररस है।

शूलरोग की उत्पत्ति लक्षण और यत्न

वात १, पित्त २, कफ ३, सन्निपात ४, आम ५, वातकफ ६, कफपित्त ७, वातपित्त ८, इन भेदों से शूल आठ प्रकार का है।

वात के शूल की उत्पत्ति और लक्षण

खेद से, घोड़े आदि के दौड़ाने से, अति मैथुन करने से, बहुत जागने से, जलादिक के अत्यन्त पीने से और मटर, मूँग, अरहर, कोदों और सूखी वस्तु इनके अधिक खाने से, अजीर्ण में भोजन करने से, चोट लगने से तथा कषैली, तीखी, कड़ुवी, भीजा अन्न, विरुद्ध वस्तु, सूखा मांस इनके खाने से और मल-मूत्र, मैथुन के रोकने से, अधोवायु और मल के रोकने से, लंघन करने से, बहुत हँसने से वायु बढ़कर हृदय, दोनों पसलियाँ, मुख, सन्धि इन स्थानों में शूल चलावे, सन्ध्या समय बदली और शीतकाल में बहुत शूल हो, बारम्बार थँभ जाय और फिर होने लगे, मल-मूत्र रुक जाय, शूल चले, पीड़ा बहुत हो।

पित्त के शूल की उत्पत्ति और लक्षण

खारी और मिरच आदि बहुत तीक्ष्ण वस्तु, गर्म वस्तु, तिल, खली, कुलस्थ, खटाई इनके खाने से, क्रोध, खेद और मैथुन करने से, मदिरा और आसव के पीने से, धूप के सेवन से पित्त कुपित होकर शूल को प्रकट करता है तब तृषा, दाह, नाभि में पसीना, मूर्च्छा, भ्रम, क्रोध

ये होते हैं और मध्याह्न, अर्द्धरात्रि, ग्रीष्मऋतु, शरदृऋतु इतने समय में अधिक शूल हो तो जानिये कि पित्त का शूल है।

कफ के शूल की उत्पत्ति और लक्षण

अनूपदेश के मांस, मछली, पेड़ा आदि दूध की वस्तु, मैदा की वस्तु इनके खाने से और गाँडे के चूसने से, मधुर रस के पीने से कफ कोप को प्राप्त हो शूल को उत्पन्न करता है। हृदय दूखे, वमन सी आवे, खाँसी और पीड़ा, भोजन में अरुचि, पेट में पीड़ा, मंथवायु, शरीर भारी, भोजन करते में पीड़ा ये लक्षण हों और मल उतरे नहीं और वसंतऋतु में प्रभात समय बहुत हो तब जानिये कि कफ का शूल है।

सन्निपात के शूल का लक्षण

जो पीछे कहे हैं वे सब लक्षण मिलें तो सन्निपात का शूल जानो।

आम के शूल का लक्षण

अफरा और पेट में गुड़गुड़ शब्द हो, हृदय कटा जाय, वमन आवे, शरीर भारी हो जाय, लार गिरे और कफ के शूल के सब लक्षण मिलें तो आम का शूल कहिए।

वायुकफ के शूल का लक्षण

पेड़ू, हृदय, कण्ठ और दोनों पसलियों में शूल हो उसको वातकफ का शूल कहिए।

कफपित्त के शूल का लक्षण

कुक्षि, हृदय, नाभि इनमें शूल हो तो कफपित्त का शूल जानिए।

शूलरोग का उपद्रव

पीड़ा, तृषा, मूर्च्छा, अफरा, शरीर भारी, अरुचि, कास, श्वास ये हों तो शूल का उपद्रव जानिए।

शूल का भेद—परिणामशूल का लक्षण

जितने शूल के भेद हैं उतने ही परिणामशूल के भी हैं और यही उसकी उत्पत्ति है। इसमें इतना विशेष है कि जो कुपित वात है वह कफपित्त से मिल शूल को करती है।

इसका लक्षण

भोजन पचने के पीछे शूल उपजे उसको परिणामशूल कहते हैं।

अन्नद्रवशूल का लक्षण

भोजन किया हुआ कभी पच जाय और कभी न पचे।

जरत्पित्तशूल का लक्षण

जो भोजन पचने के समय शूल हो तो जरत्पित्तशूल कहिए।

शूलरोग का यत्न

शूलरोगवाले को वमन करावे और औषधों से पसीना लिवावे, पाचन देवे, बस्तिकर्म करावे, सज्जीखार आदि का चूर्ण और क्रव्यादि-रस देवे, गर्म गर्म कुलत्थ का सेंक करे और रेत को गर्मकर पानी डाल उसे सिझाय कपड़े में धर पोटरी बनाय सेंक करे। अथवा काकड़ा-सिंगी, कुलत्थ, तिल, यव, अरण्ड की जड़, अलसी, साठी की जड़, लहसुन के बीज इनको कांजी में गर्म कर शूल की जगह सेंक करे तो शूल जाय। अथवा तिलों को पीस, कांजी में गर्म कर, थोड़ा सा तेल डाल कपड़े की पोटरी से उसका सेंक करावे तो तत्काल शूल जाय। अथवा मेढल को कांजी में पीस नाभि में लेप करे तो शूल जाय। अथवा सोंठि, अरण्ड की जड़ इनका काढ़ा दे तो शूल जाय। अथवा सोंठि और हड़ के काढ़े में हींग, काला नोन डालकर पिये तो शूल जाय। अथवा गुड़ को औटाय उसमें जवाखार डालकर पिये तो शूल जाय। अथवा काँसा, रूपा, ताँबा इनके पात्र में जल भर शूल पर उस पात्र को फेरे तो शूल जाय। अथवा पित्त का शूल हो तो जुलाब से दूर हो। अथवा गुड़ और हड़ की छाल को पीस घृत मिलाय खाय तो पित्त का शूल जाय।

कफ के शूल का यत्न

आमले का चूर्ण शहद में चाटे तो कफ का शूल जाय। अथवा नींब की छाल का काढ़ा कर उसमें दारू डाल पिये तो कफ का शूल जाय। अथवा जवाखार, सेंधा नोन, काला नोन, साँभर नोन, पीपरि, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि, भुनी हींग इनको बराबर ले चूर्ण कर ६ माशा गर्म पानी से ले तो कफ का शूल जाय। जो यत्न कफ-शूल के हैं वही आमशूल के जान लेना। राई, त्रिफला, शहद और घृत से ले तो सब शूल दूर हों। अथवा दारुहल्दी, चोक (सत्यानाशी)

की जड़, कूट, सौंफ, हींग, सेंधा नोन इन सबको काँजी में पीस गर्म कर सुहाता लेप करे तो शूल जाय। अथवा बेल की जड़, अरण्ड की जड़, चित्रक, सोंठि, भुनी हींग, सेंधा नोन इन सबको महीन पीस चूर्ण कर ६ माशा गर्म पानी से ले तो शूल दूर हो। अथवा पक्के पेठे के टुकड़े कर धूप में सुखावे पीछे उन टुकड़ों को पीतल के पात्र में धर चूल्हे पर चढ़ाय आग लगाय युक्ति से कोयला करे राख न होने पावे, पीछे इन कोयलों को पीस उसमें २ माशे सोंठि का चूर्ण मिलाय जल से पिये तो असाध्य भी शूलरोग जाय। यह कूष्माण्डक्षार है। ये सब भावप्रकाश में लिखे हैं।

अजवाइन, सेंधा नोन, भुनी हींग, जवाखार, काला नोन, हड़ की छाल ये सब बराबर ले महीन चूर्ण कर ६ माशा गर्म पानी के साथ ले तो वायु का शूल जाय। अथवा काला नोन ४ माशा, जीरा १२ माशा, काली मिरच १६ माशा इन्हें महीन पीस अमलबेत के रस की ७ पुट दे पीछे बिजौरे के रस की ७ पुट दे फिर इसकी ५ माशे की गोली बाँध प्रतिदिन १ गोली गर्म जल से ले तो वायु का शूल जाय। अथवा सोंठि, हड़ की छाल, पीपरि, निशोत, काला नोन ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस ५ माशा गर्म जल से ले तो शूल, अफरा, बवासीर, आमवात इन सब रोगों को दूर करता है यह पञ्चमचूर्ण है।

अथवा सोंठि के काढ़े में अरण्ड का तेल डाल काला नोन, भुनी हींग इनको मिलाय पिये तो तत्काल शूल जाय। अथवा शंख का चूर्ण, काला नोन, भुनी हींग, सोंठि, काली मिरच, पीपरि ये सब बराबर ले चूर्ण कर ६ माशा गर्म जल से ले तो तत्काल शूल जाय। अथवा शोधा सिंगीमुहरा, चित्रक, सोंठि, काली मिरच, पीपरि, सफेद जीरा, भुनी हींग ये सब बराबर ले इनको महीन पीस इसमें भङ्गरे के रस की ३ पुट दे पीछे इसकी गोली चने प्रमाण बाँधे। १ गोली गर्म जल से ले तो शूल तत्काल जाय। अथवा शंख की भस्म, कंजा की जड़, भुनी हींग, सोंठि, काली मिरच, पीपरि, पाँचों नोन ये सब बराबर ले महीन पीस गर्म जल के साथ यह शूलनाशनचूर्ण ६ माशा ले तो शूल का रोग जाय।

अथवा चित्रक, भुनी हींग, पाढ़, सोंठि, काली मिरच, पीपरि, पाँचों नोन, सफेद ज़ीरा, धनियाँ, बालछड़, अजवाइन, पीपलामूल ये सब बराबर ले महीन पीस जंभीरी के रस की ५ पुट दे पीछे इसकी गोली बाँधे। १ गोली प्रतिदिन गर्म जल से ले तो शूल, हृदयशूल, पसलियों का शूल, अरुचि और ८० प्रकार की वायु, आम का शूल इन सबको यह चित्रकादि गुटिका तत्काल दूर करती है।

अथवा हड़ की छाल, सोंठि, काली मिरच, छोटी पीपरि, कुचला, शोधी गन्धक, भुनी हींग, सेंधा नोन ये सब बराबर ले महीन पीस चने प्रमाण गोली बाँधे। १ गोली प्रतिदिन गर्म जल से ले तो शूल, संग्रहणी, अतीसार, अजीर्ण, मन्दाग्नि इन सब रोगों को यह दूर करे। यह शूलनाशक गुटिका है।

अथवा कूट १ माशा, सोंठि १० माशा, काला नोन ५ माशा, भुनी हींग ५ माशा इन्हें महीन पीस सहँजने की जड़ के रस में अथवा लहसुन के रस में गोली बाँधे। १ गोली प्रतिदिन खाय तो शूल तत्काल जाय। यह कूटादिगुटिका है।

अथवा त्रिफला, सार, मुलहठी, महुआ इन सबको बराबर ले महीन पीस ५ माशा शहद, घृत में चाटे तो त्रिदोष का शूल जाय। अथवा शोधा पारा ४ माशा, शोधा सिंगीमुहरा ४० माशा, कालीमिरच ४० माशा, पीपरि ८० माशा, सोंठि ८० माशा, भुनी हींग ८० माशा, पाँचों नोन ५ टके भर, इमली का खार ८ टके भर, जंभीरी का रस और शंख को ७ बार दग्धकर पीछे उस शंख का चूर्ण ८ टके भर ले पीछे सबको इकट्ठा कर नींबू के रस में ५ दिन खरल करे पीछे इस शूलदावानल को ५ माशा गर्म जल से ले तो शूल तत्काल जाय।

अथवा हीरा कसीस ꠳। लाहौरी फिटकरी ꠳। सेंधा नोन ꠳। कलमी शोरा ꠳२ सेर इन्हें पीस टीकखीयन्त्र में इनको चुवाय चीनी के बासन में रस काढ़ पीछे प्रतिदिन १ माशे ले परन्तु लेते समय जीभ में घृत लगा ले और दाँत से लगने न पावे तो शूल, फिया, उदर के रोग, बवासीर, अजीर्ण, वायु के रोग इन सबको यह शंखद्राव दूर करता है।

अथवा शोधी गन्धक से आधा शोधा पारा इन दोनों के बराबर शोधा कन्टकवेधी ताँबे का पत्र इन तीनों को खरल में डालकर मर्दन करे फिर एक दिन पीछे इसका गोला कर हाँडी में नोन भर उसके बीच इस गोले को धर पकावे, ३ दिन अग्नि दे पीछे स्वाङ्गशीतल होने पर यह शूलगजकेसरी रस १ रत्ती नागरबेल के पत्ते से खवावे तो तत्काल शूलमात्र दूर हों।

अथवा सफेद जीरा, सोंठि, भुनी हींग, कालीमिरच, खुरासानी बच ये सब बराबर ले महीन पीस ६ माशा गर्मजल से ले तो शूल जाय। अथवा त्रिफला १ टके भर, शोधी गन्धक २० माशा, सार १० माशा इसको महीन पीस एकरस कर १० माशा शहद और १० माशा घृत इन दोनों के साथ तीन महीने तक यह गन्धकरसायन ले तो शूलमात्र, वातविकार, फोड़ा ये सब दूर हों।

अथवा गुड़ ४ माशा, आमला ४ माशा, हड़ की छाल ४ माशा, मण्डूर ४ माशा इन सबको महीन पीस १० माशा शहद और घृत के साथ खाय तो शूल, अन्नद्रव, जरत्पित्त, अमलपित्त परिणामशूल, इन सबको यह गुड़ाद्यमण्डूर दूर करे।

अथवा बायबिड़ंग, चित्रक, चव्य, त्रिफला, सोंठि, काली मिरच, पीपरि ये सब बराबर ले और इन सबकी बराबर मण्डूर ले और मण्डूर ही की बराबर गुड़ ले तथा सबसे १० गुना गोमूत्र ले फिर इनको कढ़ाई में भर मधुरी आँच से पकाय इनका एक पिंडा बनाकर चिकने बासन में रक्खे। इस तारामण्डूर को ६ माशा भोजन के पहिले खाय तो शूल, पक्तिशूल, कामलारोग, पाण्डुरोग, सूजन, मन्दाग्नि, बवासीर, संग्रहणी, कृमिरोग, गोला, उदररोग अम्लपित्त इन सबको दूर करता है।

अथवा हड़ की छाल, सुहागा, सोंठि, भुनी हींग, काली मिरच, चित्रक, शोधी गन्धक, सेंधा नोन ये सब बराबर ले और इन सबकी बराबर कुचला ले फिर इन सबको महीन पीस एकरस कर १ माशे जल के साथ ले तो शूल, अफरा, बद्धकोष्ठ, गोला, खाँसी, कफ के रोग अजीर्ण, मन्दाग्नि इन सबको यह शूलगजकेसरीगुटिका दूर करती है।

अथवा कञ्जा की जड़, भुनी हींग, भुना सुहागा, सोंठि ये सब बराबर ले महीन पीस ६ माशा गर्म पानी से ले तो महाशूल दूर हो। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं। अथवा निशोत, बायबिड़ंग, सहँजने की फली, कबीला, इड़ की छाल ये सब बराबर ले महीन पीस घोड़े के मूत्र में पकावे फिर ६ माशा मदिरा के साथ ले तो वायु का शूल जाय। यह चक्रदत्त में है। अथवा भुनी हींग, अमलबेत, पीपरि, कालानोन, अजवाइन, जवाखार, इड़ की छाल, सेंधा नोन, ये सब बराबर ले महीन पीस ६ माशा मदिरा के साथ खाय तो वात का शूल जाय। अथवा काला नोन, अमलबेत, सफेद जीरा ये सब एक एक से दूना ले महीन पीस बिजौरे के रस में गोली बाँधे फिर एक सौवर्चलादिगुटिका गर्म जल से ले तो शूल जाय।

अथवा बिजौरे की जड़ १० माशा महीन पीस घृत से पिये तो वात का शूल दूर हो। यह बीजपूरादियोग सर्वसंग्रह में है। अथवा भुनी हींग, अमलबेत, सोंठि, कालोमिरच, बड़ी पीपरि, अजवाइन, काला नोन, सेंधा नोन ये सब बराबर ले महीन पीस बिजौरे के रस में गोली बाँधे फिर १ गोली गर्म पानी से ले तो शूल जाय। यह हिंग्वादिगुटिका है।

अथवा सोंठि, कालीमिरच, बड़ी पीपरि, काला नोन इनको बराबर ले महीन पीस बिजौरे के रस तीन पुट दे के सुखा ले फिर ६ माशा शहद में चाटे तो त्रिदोष का शूल जाय। अथवा शंख की भस्म, काला नोन, भुनी हींग, सोंठि, कालोमिरच, बड़ी पीपरि ये सब बराबर ले महीन पीस ६ माशा गर्म जल से ले तो शूल जाय। अथवा हल्दी, सहँजने की छाल, सेंधा नोन, अरण्ड की जड़, भैंसागुग्गुल, सरसों, मेथी के दाने, सौंफ, असगन्ध, महुआ इन सबको बराबर ले महीन पीस काँजी के पानी में रोटी बनाय उसको पकाकर पेट पर सेंक करे तो पेट का शूल जाय। अथवा कौड़ी की राख, शोधा सिंगीमुहरा, सेंधानोन, सोंठि, कालीमिरच, पीपरि ये सब बराबर ले महीन पीस नागरबेल के रस में १ रत्ती प्रमाण गोली बाँधे। एक गोली नित्य खाय तो शूल जाय। यह शूलगजकेसरी रस है।

अथवा शुद्ध पारा, शोधी गन्धक, अभ्रक, ताम्रेश्वर, अमलवेत, शोधा सिंगीमुहरा ये सब बराबर ले महीन पीस अदरक के रस में ३ रत्ती प्रमाण की गोली बाँधे । १ गोली जल से ले तो वात का शूल जाय । यह अग्निमुखरस है ।

बड़े शंख को २१ बार गर्म कर नींबू के रस में बुझावे फिर उसका चूर्ण करे और इसमें इमली का खार १ टके भर, कचनोन ४ माशा, बिड़नोन ४ माशा, सोंठि ६ माशे, कालीमिरच ६ माशे, पीपरि ६ माशे, भुनी हींग ४ माशा, शोधा सिंगीमुहरा २० माशा, शोधी गन्धक ४ माशा, पारा ४ माशा इन सबको महीन पीसे फिर पारे और गन्धक की कजली कर उसमें ये औषधें मिलाय एकरस कर छोटे बेर के प्रमाण गोली बाँधे । १ गोली लवङ्ग के काढ़े के साथ ले तो शूल तत्काल दूर हो । यह शंखबटीरस है ।

अथवा सीप की भस्म १० माशा गर्म जल के साथ पिये तो भोजन के पीछे होता हुआ शूल बन्द हो जाय । अथवा शोधा पारा १ टके भर, शोधी गन्धक ४ माशा, शोधा सिंगीमुहरा ४ माशा, कालीमिरच ४ माशा, बड़ी पीपरि ४ माशा, काकड़ासिंगी ४ माशा, भुनी हींग ८ माशा, पाँचों नोन ३२ माशा, इमली का खार ३२ माशा, जंभीरी के रस में बुझाई हुई शंख की भस्म ३२ माशा ले प्रथम पारे और गन्धक की कजली कर पीछे उस कजली में ये सब औषधें मिलाय नींबू के रस में एकरस कर ४ माशा प्रमाण की गोली बाँधे । १ गोली जल से ले तो शूल, अजीर्ण, उदर के रोग, मन्दाग्नि इन सबको दूर करे ये यत्न सर्वसंग्रह में लिखे हैं । यह शूलदावानलरस है ।

पसुली के शूल का यत्न

सिंगीमुहरा, हरताल, हींग, राई, नोसादर, मेनसिल लहसुन, खुरासानी बच, एलुआ इनको बराबर ले महीन पीस गर्म जल से गर्म गर्म सुहाता लेप करे तो कुक्षिशूल जाय । इति आठ प्रकार के शूल, परिणामशूल, अन्नद्रव, वातरक्त और जरत्पित्तशूल का यत्न सम्पूर्ण ।

इति दशमस्तरङ्गः १०

—:०:—

उदावर्त्त रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

इन १३ वेगों को रोकनेवाले मनुष्य के उदावर्त्त का रोग उत्पन्न होता है। वे १३ वेग ये हैं—अधोवायु १, मल २, मूत्र ३, जम्भाई ४, अश्रुपात ५, छींक ६, डकार ७, वमन ८, मैथुन ९, क्षुधा १०, तृषा ११, श्वास १२, और निद्रा १३।

अनुक्रम से अधोवायु आदि १३ वेगों का लक्षण

मल-मूत्र रोकने के रोग, अफरा और उदर में अधिक वात के रोग ये लक्षण हों तो अधोवायु रोकने का उदावर्त्त जानिए।

मल रोकने के उदावर्त्त का लक्षण

पेट में गुड़गुड़ा शब्द रहे, शूल हो, पेड़ू में पीड़ा हो, मल उतरे नहीं, डकार बहुत आवें, मल मुख में निकल आवे ये लक्षण हों तो मल रोकने का उदावर्त्त जानिए।

मूत्र रोकने के उदावर्त्त का लक्षण

पेड़ू और इन्द्रिय में शूल हो, मूत्र कष्ट से उतरे, मस्तक में पीड़ा हो, पीड़ा से शरीर सीधा न हो, पेड़ू में अफरा हो तो मूत्र रोकने का उदावर्त्त जानिए।

जँभाई रोकने के उदावर्त्त का लक्षण

जिससे कन्धा और गला रुक जाय; मस्तक के विकार हों, जँभाई बहुत आवे, वायु के विकार हों और नेत्र, नासिका, कान इनमें पीड़ा बहुत हो ये लक्षण हों तो जँभाई रोकने का उदावर्त्त जानिए।

अश्रुपात रोकने के उदावर्त्त का लक्षण

आनन्द अथवा शोक के अश्रुपातों को रोके तो उसका माथा भारी रहे, नेत्र के रोग हों और पीनस हो।

छींक रोकने के उदावर्त्त का लक्षण

कन्धा मुड़े नहीं, माथे में शूल हो, आधाशीशी हो, सब इन्द्रियाँ दुर्बल हो जायँ।

डकार रोकने के उदावर्त्त का लक्षण

कण्ठ और मुख भोजन से भरा दीखे, अधिक मोह, शरीर में व्यथा और वायु के बहुत विकार हों और पवन निकले नहीं।

छर्दि रोकने के उदावर्त्त के लक्षण

शरीर में खुजली और चकत्ते पड़ जायँ, अरुचि हो, मुख पर झाईं

पड़ जायँ और सूजन, पाण्डुरोग, ज्वर, कोढ़ हो, हृदय दूखे तथा विसर्परोग हो।

शुक्र रोकने के उदावर्त्त का लक्षण

पेड़ू, गुदा, फ़ोते, इन्द्रिय इनमें पीड़ा और सूजन हो, मूत्र रुक जाय, वीर्य और रुधिर इन्द्रिय में से गिरने लगे, पथरी का रोग और नेत्र का विकार हो।

क्षुधा रोकने के उदावर्त्त का लक्षण

तन्द्रा, हाड़ों में फूटन, अरुचि, बिना श्रम के श्रम हो, शरीर क्षीण पड़ जाय और दृष्टि मन्द हो जाय।

तृषा रोकने के उदावर्त्त का लक्षण

कण्ठ, मुख सूखे, थोड़ा सुने व हृदय में पीड़ा हो।

श्वास रोकने के उदावर्त्त का लक्षण

दौड़ने में श्वास हो आवे उसके रोकने से ये लक्षण हों, हृदय दूखे, मोह बहुत हो तथा पेट में गोले का रोग हो।

निद्रा रोकने के उदावर्त्त का लक्षण

जँभाई बहुत आवें, अंग में हड़फूटन हो, नेत्र और माथा भारी रहे तथा तन्द्रा हो।

उदावर्त्त की उत्पत्ति

कोष्ठ की वायु रूखे, कषैले, कड़ुए भोजन से कुपित हो उदावर्त्त रोग को करती है।

उदावर्त्त का सामान्य लक्षण

जहाँ वायु का ऊर्ध्व भ्रम हो जाय उसको उदावर्त्त कहिए।

उदावर्त्त का विशेष लक्षण

कफ और मेदा को ले चलनेवाली नसें अधोवायु और मलमूत्र को ऊँचा ले जाकर मल को सुखा देती हैं उससे हृदय, पेड़ू में शूल हो, शरीर भारी रहे, अरुचि हो, अधोवायु और मलमूत्र अत्यन्त कष्ट से उतरे, श्वास, खाँसी, पीनस, दाह, मोह, तृषा, ज्वर, वमन, हिचकी, मस्तक का रोग, होलदिली हो, थोड़ा सुने और वात के बहुत से रोग हों तथा तृषा करके पीड़ित हो, शरीर क्षीण पड़ जाय, शूल बहुत चले, मल का वमन करे तो ऐसे उदावर्त्तवाला मर जाय।

क्रम से उदावर्त्त का यत्न

अधोवायु के रोकने से उपजे उदावर्त्तवाले को स्नेह पान करावे तो उदावर्त्त जाय। अथवा ओषधियों से पसीना लिवावे अथवा वमन करावे तो उदावर्त्त जाय।

मल रोकने के उदावर्त्त का यत्न

इनको जुलाब दे और शूल के दूर करनेवाली ओषधि दे और ऐसी ही अन्न दे, तेल का मर्दन करे तथा बस्तिकर्म करावे।

मूत्र रोकने के उदावर्त्त का यत्न

जवाखार ५ माशा, खुरासानी बच ५ माशा इनको पानी में महीन पीस पिलावे तो यह उदावर्त्त जाय। अथवा कटेली और अर्जुनवृक्ष की जड़ का काढ़ा ले तो मूत्र रोकने का उदावर्त्त जाय। अथवा तिवरसी का बीज पानी में पीस सेंधा नोन डालकर पिये तो मूत्र रोकने का उदावर्त्त जाय। अथवा मिश्री, ऊँख का रस, दूध, किशमिश इनका शर्बत पिये तो मूत्र रोकने का उदावर्त्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी का रोग ये सब जायँ।

जँभाई रोकने के उदावर्त्त का यत्न

स्नेह के पीने अथवा मर्दन करने और पसीना लेने से यह रोग और अन्य भी वात के रोग जायँ।

अश्रुपात रोकने के उदावर्त्त का यत्न

ऊँचे प्रकार से रुदन कर अश्रुपात करे तो यह रोग जाय। अथवा सुखपूर्वक अच्छे प्रकार से सोवे तो यह रोग जाय। अथवा मनोहर कथा को सुने तो यह रोग जाय।

छींक रोकने के उदावर्त्त का यत्न

काली मिरच, राई नकछिकनी आदि का नास ले अथवा सूर्य को देखकर छींक ले तो उदावर्त्त जाय। अथवा तेलमर्दन करावे अथवा पसीना लिवावे तो यह रोग जाय।

डकार रोकने के उदावर्त्त का यत्न

तेल के मर्दन और प्रस्वेद से यह रोग जाय।

छर्दि रोकने के उदावर्त्त का यत्न

इस रोगवाले को वमन और लंघन करावे तथा जुलाब दे, तेल का मर्दन करावे, बस्तिकर्म करावे, नास सुँघावे तो यह रोग जाय।

शुक्र रोकने के उदावर्त्त का यत्न

सुन्दर १६ वर्ष की स्त्री से संभोग करे तो यह रोग जाय। अथवा तेल को लगावे या मदिरा पिलावे या कूकरी अर्थात् कुतिया का मांस खिलावे अथवा साठी के चावल खिलावे या बस्तिकर्म करावे तो यह रोग जाय।

क्षुधा रोकने के उदावर्त्त का यत्न

चिकना, गर्म, हलका, रुचिकारी, हित भोजन करावे और सुगन्ध पुष्पों की माला धारण करावे तो यह रोग जाय।

तृषा रोकने के उदावर्त्त का यत्न

शीतलक्रिया सर्वहितकारी चादर फुहारा आदि जलक्रीड़ा करावे और शीतल जल में भीमसेनी कर्पूर डाल उसको शनैः शनैः पान करे तो यह रोग जाय।

श्रमश्वास रोकने के उदावर्त्त का यत्न

विश्राम करा उसका खेद दूर करे अथवा शोरुए के साथ चावल खिलावे तो यह रोग जाय।

निद्रा रोकने के उदावर्त्त का यत्न

गर्म दूध में मिश्री डाल सुहाता सुहाता रुचिपूर्वक पिये अथवा सुख से सोवे अथवा मनोहर कथा सुने तो यह रोग जाय।

रूखी वस्तु खाने से उत्पन्न उदावर्त्त का यत्न

हींग, शहद, सेंधा नोन इनको महीन पीस बत्तीकर घृत से चुपड़ जब तक सुहाय तब तक गुदा में धरे तो यह उदावर्त्त जाय। यह हिंग्वादिफलवर्ति है। अथवा मैनफल, पीपल, कूट, खुरासानी बच, सरसों, गुड़ इनको दूध में पीस बत्ती कर गुदा में सुहाती हुई रक्खे तो उदावर्त्त जाय। यह मदनफलादिवर्ति है।

अथवा खाँड़ ४ माशा, निशोत १० माशा, पीपल २० माशा, इनका चूर्ण कर भोजन के पहिले ६ माशा शहद के साथ ले तो गाढ़ा दुहरा मल उतरता हो, तो वह वन्द हो और उदावर्त्त जाय। यह नारायणचूर्ण है।

अथवा सोंठि, मिरच, पीपल पीपलामूल, निशोत, दात्यूणी

(जमालगोटा की जड़), चित्रक इन सबको बराबर ले महीन पीस ४ माशा गुड़ के साथ प्रभात ही जल से ले तो उदावर्त्त, फिया, गोला, सूजन, पाण्डुरोग ये दूर हों। यह गुडाष्टक है। अथवा सूखी मूली, साठी की जड़, छोटी पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि, दशमूल, किरमाली की गिरी (अमलतास को गूदी) इन ओषधियों को घृत में पकावे फिर इस घृत को खाय तो सब प्रकार के उदावर्त्त जायँ। ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं। यह शुष्कमूलकाद्यघृत है। अथवा शोधा जमालगोटा, पारा, शोधी गन्धक, भुना सोहागा, सोंठि, मिरच, बड़ी पीपल ये सब बराबर ले प्रथम पारे और गन्धक की कजली करे फिर ये सब ओषधि कजली में मिलाय ४ रत्ती या १ माशे मिश्री के साथ ले तो उदावर्त्त, अफरा, उदररोग, गोला इन सबको दूर करे। यह नाराचरस वैद्यरहस्य में है।

अथवा निशोत, थूहर के पात, तिल आदिक गर्मवस्तु के सेवन से उदावर्त्त जाय। अथवा निशोत, दात्यूणी (जमालगोटा की जड़), तज, थूहर, शंखाहूली, अमलतास, कबीला, कंजा की जड़, चोक इन सबको बराबर ले जवकुटकर काढ़ा करे उसमें १० माशा तेल डाल नित्य ७ दिन तक पिये तो उदावर्त्त, उदररोग, अफरा विषरोग, गोला इनको यह दूर करे।

आनाहरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

उदर में आम के या मल के बढ़ने से, अधोवायु के रोकने से, शरीर में दुष्टपवन के बढ़ने से मनुष्यों के उदर में आनाह नाम अफरा रोग होता है। उसमें तृषा, पीनस, शिर के सम्पूर्ण विकार, उदरशूल हों, शरीर भारी रहे, हृदय दूखे, डकार न आवे ये लक्षण हों तो आम का अफरा कहिए।

मल बढ़ने के अफरा का लक्षण

शरीर जकड़ जाय और दिशा के समय कटि और पीठ में पीड़ा, हो, मूर्च्छा हो, मल की छर्दि करे, श्वास और विसूचिका हो और पीछे कहे हुए लक्षण भी हों तो मल बढ़ने का अफरा जानिए।

अफरे का यत्न

जो उदावर्त्त का यत्न पीछे लिखा है वही अफरे का भी जानना परन्तु कुछ विशेष है सो कहते हैं। निशोत २ भाग, पीपल ४ भाग, बड़ी हड़ की छाल ५ भाग, इनको महीन पीस इन सबके बराबर गुड़ मिलाय ३ माशा प्रमाण गोली कर १ गोली नित्य जल के साथ १५ दिन तक ले तो अफरे का रोग जाय। अथवा सोंठि, काली मिरच, बड़ी पीपल, सेंधा नोन, सरसों, धमासा, कूट, मेढ़ल ये सब बराबर ले महीन पीस गुड़ में मिलाय पकावे फिर उसकी अँगूठे के बराबर मोटी बत्तीकर उसमें घृत लगाय गुदा में धरे तो अफरा, उदावर्त्त, उदररोग, पेड़ू का रोग और गोले का रोग दूर हो। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं।

गुल्मरोग की उत्पत्ति लक्षण और यत्न

मिथ्या आहार और मिथ्या विहार के कुपथ्य से वात, पित्त, कफ दुष्ट होकर पुरुष अथवा स्त्री के पेट से ले पेड़ू तक गोले के सदृश एक गाँठ को उत्पन्न करते हैं वह गोला वात, पित्त, कफ सन्निपात और रुधिर इन भेदों से ५ प्रकार का है। कोष्ठ के जिन स्थानों में गुल्म होता है वे स्थान ये हैं। दोनों पसलियों में, नाभि में, हृदय में, और पेड़ू में।

गुल्म का सामान्य लक्षण

हृदय और पेड़ू के बीच में गाँठ हो, फिरे अथवा न फिरे, गोल हो और बढ़ती जाय उसको गुल्म कहते हैं। इस रोग में अरुचि हो, मल-मूत्र दुहरा उतरे, वायु बढ़े, आँत बोलें, अफरा हो और पवन की ऊर्ध्व-गति हो जिसमें ये लक्षण हों उसको गुल्मरोग कहते हैं।

वायुगोले की उत्पत्ति और लक्षण

रूखे अन्न के खाने से, विषमाशन से, मूत्र रोकने से, शोच करने से चोट लगने से, मल की क्षीणता से, लंघन से, विरुद्ध चेष्टा से, बल-वान् के साथ युद्ध करने से वायुगोला उत्पन्न होता है।

वायु के गुल्म का लक्षण

जो गोले के स्थान में पीड़ा घटे-बढ़े और अधोवायु की प्रवृत्ति अच्छी तरह से न हो, मल उतरे नहीं, मुख और गला सूखे, शरीर की कान्ति काली हो जाय, शीतज्वर हो और हृदय, कुक्षि, पसली, शिर

इन सबमें पीड़ा हो तथा हृदय में भोजन पचने के पीछे पीड़ा अधिक हो तथा भोजन करने के पीछे थोड़ी हो और रूखे, कषैले और कड़ुए रस से पीड़ा बढ़े ये लक्षण हों तो वात का गुल्म कहिए।

पित्त के गोले की उत्पत्ति

कड़ुआ, तीखा, खट्टा, गर्म इन रसों के सेवन से, क्रोध के करने और मद्य के पीने से, अग्नि और धूप के सेवन से, आम के बढ़ने से, चोट के लगने से, रुधिर के बिगड़ने से पित्त का कोप होता है।

पित्त के गोले का लक्षण

ज्वर, तृषा, शरीर में पीड़ा, शूल, दाह, व्रण, गोले में हाथ के लगने से अधिक पीड़ा और भोजन के पचने के समय बहुत प्रस्वेद हो ये लक्षण हों तो पित्त का गोला जानिए।

कफ के गोले की उत्पत्ति

ठण्ढी, भारी, चिकनी वस्तुओं के खाने से और बैठे रहने वा दिन में सोने से कफ का गोला उत्पन्न होता है और ये सब कारण मिले हों तो सन्निपात का गोला उत्पन्न होता है।

कफ के गोले का लक्षण

जिसमें शीतज्वर वा शरीर में पीड़ा हो, कड़ुआ, खट्टा, वमन, खाँसी, भोजन में अरुचि ये लक्षण हों तो कफ का गोला जानिए।

आर्तवजन्य गुल्म का लक्षण

जिस स्त्री का कच्चा गर्भ गिर पड़े उसके कुपथ्य भोजन से, प्रथम गर्भ के ऋतुसमय अथवा ऋतु बिना भी वायु रुधिर को ग्रहण कर गोले को उत्पन्न करे। उस गोले में अति पीड़ा, दाह हो और पित्त के गोले के सम्पूर्ण लक्षण मिलें तथा वह अङ्ग बिना ही सब पेट में फिरे और शूल हो एवं गोले में गर्भ के सम्पूर्ण लक्षण मिलें तो उसको आर्तव रुधिर से उपजा गोला जानिए। परन्तु उस स्त्री का दशवाँ महीना व्यतीत हो चुके तब वैद्य उस गोले का उपाय करे।

गुल्मरोग का असाध्य लक्षण

जिस मनुष्य का गोला फिरे अथवा न फिरे और पीड़ा अधिक व शरीर में दाह हो, पथरी की सी गाँठ ऊँची हो वह गाँठ मल को बिगाड़ शरीर को दुर्बल कर अग्नि के बल को नष्ट कर दे तो उस गोले को त्रिदोष का जानिए यह असाध्य है।

गोले का असाध्य लक्षण

गोला क्रम से बढ़े, शूल चले, कछुए के समान कठोर हो, शरीर दुर्बल हो जाय, भोजन से रुचि जाती रहे, कड़ुआ खट्टा वमन करे, ज्वर, तृषा, तन्द्रा, पीनस, अतीसार, हृदय, नाभि और हाथ-पैरों में सूजन होती है। इस गोलेवाले मनुष्य को असाध्य जानिए।

गोले का यत्न

गर्म दूध में अरण्ड का तेल और हड़ का चूर्ण डाल नित्य पिये तो जुलाब लगकर गोला जाय। अथवा तेल के मर्दन से गोला जाय। अथवा सज्जी, कूट, जवाखार, केवड़े का खार इनका चूण कर इनमें अरण्ड का तेल मिलाय पिये तो वात का गोला जाय।

पित्त के गोले का यत्न

निशोत के चूर्ण का सेवन करावे या त्रिफले का सेवन करावे। अथवा केले को मिश्री के साथ अथवा शहद के साथ दे तो पित्त का गोला जाय।

वात व कफ के गोले का यत्न

भुनी हींग, पीपलामूल, धनियाँ, सफेद जीरा, खुरासानी बच, चव्य, चित्रक, पाढ़, कचूर, अमलबेत, काला नोन, साँभर नोन, सेंधा-नोन, जवाखार, सज्जी, अनारदाना, हड़ की छाल, पुहकरमूल, तन्तरीक, झाऊ की जड़ ये सब बराबर ले महीन पीस इसमें अदरक के रस की ७ पुट दे फिर बिजौरे के रस की ७ पुट दे फिर २ माशा नित्य ले तो गोला, अफरा, बवासीर, उदावर्त्त, उदररोग इन सबको यह दूर करता है। यह हिंग्वादि चूर्ण है।

अथवा सज्जी ४ माशे, गुड़ ४ माशे इनको मिलाकर नित्य खाय तो गोला जाय। अथवा पलाश का खार, थूहर का खार, आँधीझाड़े का खार, इमली का खार, आक का खार, तिल का खार, जवाखार, सज्जी इनको महीन पीस ५ माशा अथवा १० माशा प्रमाण गर्मजल के साथ ले तो गोला और शूल के रोगों को दूर करे। यह क्षाराष्टक है।

अथवा साँभर नोन, कचनोन, जवाखार, काला नोन, सुहागा, सज्जी ये सब बराबर लें महीन पीस थूहर के दूध में १ दिन भिगो

रक्खे फिर धूप में सुखाकर तीन दिन आक के दूध में भिजोवे और धूप में सुखावे तदनन्तर आक के पत्तों में लपेट मिट्टी के बासन में भर गजपुट में पका ले फिर सोंठि, कालीमिरच, बड़ी पीपल, त्रिफला, अजवाइन, सफेद जीरा, चित्रक इनको उन खारों के बराबर ले महीन पीस उनमें मिलावे फिर इसको ८ माशा प्रमाण गर्मजल से ले तो गोला, अजीर्ण, सूजन, उदर के सब रोग, मन्दाग्नि, उदावर्त्त, फिया इन सबको यह दूर करता है। यह वज्रक्षार चूर्ण है।

अथवा ग्वार के पट्ठे का गूदा ले उसमें सोंठि, कालीमिरच, बड़ी पीपल, सेंधा नोन इनको महीन पीस मिलाय १० माशा प्रमाण घृत के साथ नित्य खाय तो गोला और फिया दूर हों। अथवा ग्वार के पट्ठे के एक मन गूदे में २०० टके भर गुड़ डाले और सोंठि २॥ टके, मिरच २॥ टके, छोटी पीपल २॥, टके, तज २॥ टके, पत्रज २॥ टके, चव्य २॥ टके, इलायची २। टके, कचूर २। टके, त्रिफला २। टके, चित्रक २। टके, नागकेसर २। टके, झाऊ की जड़ २। टके, अजमोद २। टके, सफेद जीरा २। टके, देवदारु २। टके, बेर का छिलका २। टके, असगन्ध २। टके, रास्ना २। टके, विधारा २। टके और इन्द्रयव २। टके भर इनको महीन पीस ग्वार के पट्ठे के रस में डाले फिर इनको एकरसकर चिकने बासन में भर २१ दिन पृथ्वी में गाड़े फिर निकालकर २ टके भर खाय तो गोला, उदावर्त्त, उदर के विकार, बिसूचिका, गृध्रसी, श्वास, खाँसी, पाण्डुरोग, वात के सब विकार इनको यह दूर करे। ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं। यह ग्वार के पट्ठे का आसव है।

अथवा शोरा ४ माशा, अदरक ४ माशा इनको नित्य खाय तो गोला जाय। अथवा सीप की भस्म ४ माशा, गुड़ ४ माशे नित्य खाय तो गोला जाय। यह सीपप्रयोग है।

अथवा लहसुन २। टकेभर की दूध में खीर करके नित्य खाय तो गोला जाय। अथवा अरण्ड की जड़, चित्रक, सोंठि, पीपलामूल, बायबिड़ंग, सेंधानोन, भुनी हींग इनका काढ़ा दे तो गोला अफरा और शूल जाय।

अथवा अजवाइन १६ माशे, सफेद जीरा २० माशा, धनियाँ २० माशा, कालीमिरच २० माशा, कुड़ा की छाल १० माशा, अजमोद २० माशा, कालाजीरा २० माशा, भुनी हींग २४ माशा, जवाखार ३२ माशा, सज्जी ३२ माशा, पाँचोंनोन ३२ माशा, निशोथ ३२ माशा, दात्यूणी ४० माशा, कचूर ४० माशा, पुष्करमूल ४० माशा, बायविड़ंग ४० माशा, अनारदाना ४० माशा, हड़ की छाल ४० माशा, चित्रक ४० माशा, अमलबेत ४० माशा, सोंठि ४० माशा, इन सबको महीन पीस बिजौरे के रस की १० पुट दे फिर ४ माशा प्रमाण की गोली बाँधे। १ गोली घृत के साथ अथवा दूध के साथ नित्य खाय तो पित्त के गोले को और मद्य के साथ वायु के गोले को दूर करे तथा हृदय के रोग संग्रहणी, शूल, कृमि, बवासीर इन रोगों को भी यह कांकायन-गुटिका दूर करती है।

अथवा लवणभास्कर चूर्ण, जो पीछे लिखा है, उसके खाने से गोले का रोग जाय। अथवा छोटी पीपल, *भारंगी, पीपलामूल, देवदारु, कंजा की जड़, तिल इनका काढ़ा ले तो गोले का रोग जाय। अथवा तिलों का काढ़ा ले तो गोला जाय। अथवा भारंगी, गुड़, घृत, बड़ी पीपल, तिल, सोंठि, मिरच इनका काढ़ा ले तो गोले का रोग जाय। यह कणादिक्वाथ है। अथवा मैनसिल, हरताल, सोनामक्खी, आमला-सार गन्धक, ताम्रेश्वर, पारा ये सब बराबर ले पहिले पारे और गन्धक की कजली करे फिर उस कजली में ये सब ओषधियाँ डाले फिर पीपल के काढ़े के रस में १ दिन खरल करे तथा थूहर के दूध में १ दिन खरल करे फिर ४ माशा प्रमाण शहद में अथवा गोमूत्र में यह विद्याधररस ले तो गोला और शूल का रोग जाय।

अथवा पारा, शोधी गन्धक, भुना सुहागा, त्रिफला, सोंठि, काली-मिरच, पीपल, शोधा हरताल, शोधा सिंगीमुहरा, ताम्रेश्वर, शोधा जमालगोटा ये सब बराबर ले पहिले पारे और गन्धक की कजली करे फिर उस कजली में ये ओषधियाँ पीसकर मिलावे और इसमें

*जिन ओषधियों का प्रमाण चूर्ण या काढ़ा आदि में नहीं लिखा है, वहाँ पर सम्पूर्ण ओषधियों को समभाग लेना।

भाँगरे के रस की ३ पुट दे और तीन दिन तक खरल करे फिर इसकी १ रत्ती प्रमाण गोली बाँधे। १ गोली इस गुल्मकुठाररस की अदरक के रस में ले तो गोला जाय। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं।

अथवा हाथ में फ़स्त आदि लिवावे तो गोले के सर्वरोग जायँ। अथवा भुनी हींग, अनारदाना, बिड़नोन ये सब बराबर ले बिजौरे के रस में खरल करे फिर १० माशा मद्य के साथ नित्य ले तो वायुगोला जाय। अथवा सज्जी, कूट, जवाखार ये सब बराबर ले महीन पीस १० माशा तेल के साथ पिये तो गोला जाय।

योनि में शूल होता हो उसका यत्न

त्रिफला, निशोत, दन्ती, दशमूल ये सब पृथक् पृथक् टके भर ले फिर इनको जवकुट कर २० माशा का काढ़ा कर, छान, उसमें अरण्ड का तेल डाल, घृत मिलाय, दूध से पिये तो योनि का शूल जाय। यह मिश्रकस्नेह योगतरङ्गिणी में लिखा है।

अथवा ४ माशा अजवाइन को महीन पीस २० माशा गुड़ में मिलाय मट्ठे के साथ नित्य ले तो गोला जाय, क्षुधा लगे, मल-मूत्र उतरे। यह वृन्द में लिखा है। अथवा अजवाइन, भुनी हींग, सेंधानोन, जवाखार, कालानोन, हड़ की छाल ये सब बराबर ले, महीन पीस १० माशा बारू के साथ नित्य ले तो गोला और शूल जाय। अथवा भुनी हींग १ भाग, सेंधानोन २ भाग, पीपलामूल ४ भाग, कंकोलमिरच ५ भाग, अजवाइन ६ भाग, हड़ की छाल ७ भाग, अनारदाना ८ भाग, आम की जड़ का छिलका ९ भाग, चित्रक १० भाग, सोंठि ११ भाग, फिटकरी १२ भाग, इन सबको महीन पीस ६ माशा नित्य पानी से ले तो गोला, अरुचि, हृद्रोग, अफरा, बवासीर, वात के सब विकार इनको यह हिंगुद्वादशक चूर्ण दूर करे।

अथवा खुरासानी बच, हड़ की छाल, भुनी हींग, सेंधानोन, अमलबेत, जवाखार, अजवाइन इनको बराबर ले महीन पीस ६ माशा गर्म पानी से ले तो शूल और गोला दूर हों यह वचाद्यचूर्ण है।

अथवा २५ बड़ी हड़ों को १६ सेर जल में पकावे और जल ही में दन्ती १६ टके भर, चित्रक इनको डाल मधुरी आँच से पकावे जब

जल का चतुर्थांश रह जाय फिर उसमें हड़ों समेत १६ टकेभर गुड़ डाल फिर औटावे जब आधा रह जाय तब इसमें बड़ी पीपल १ टके, सोंठि १ टके, घृत ४ टके, शहद ४ टके, तजकलमी १ टके, पत्रज १ टके, नागकेसर १। टके, छोटी इलायची १ टके भर इन सबको एकरसकर अवलेह करे फिर १ टके भर नित्य खाय तो जुलाब लगे और गोला, संग्रहणी, पाण्डुरोग, सूजन, विषमज्वर, कोढ़, बवासीर, अरुचि, फिया, हृद्रोग ये सब जायँ। यह दन्ती हरीतकी है।

अथवा शंखद्राव से भी गोला जाय अथवा बड़ी पक्की जम्भीरी २०० ले उसका रस निकाल घृत के चिकने बासन में रक्खे फिर भुनी हींग २ टके, सेंधानोन १ टके, सोंठि १ टके, कालीमिरच १ टके, कालानोन ४ टके, अजवाइन १ टके, सरसों ८ टके भर इन सब ओषधियों को महीन पीस उस रस में डाल फिर दो दिन घूरे में गाड़ रक्खे फिर १ टके भर प्रतिदिन खाय तो गोला, फिया, विद्रधि, अष्ठीला, वात-कफ का अतीसार, पसली का शूल, हृदयरोग, बद्धकोष्ठ, जहर, उदररोग, वात-कफ का रोग ये सब दूर हों। यह जम्भीरीद्राव है। यह यत्न भावप्रकाश में लिखा है।

अथवा नदीकुड़ा, आक, सहँजना, कटेली, थूहर, बल, बकायन, आँधीझाड़ा, कदम्ब, अड़ूसा इन सबका खार और साँभरनोन बराबर ले और इसमें अनुमान मुवाफ़िक्क भुनी हींग डाल फिर इनको १० माशा गर्म पानी से ले तो गोला, शूल, उदर के रोग ये सब जायँ। यह नादेयीक्षार है। यह योगशतक में है।

अथवा सौंफ, कंजा की जड़, तज, दारुहल्दी, बड़ी पीपल इनका काढ़ा दे और तिल, गुड़, सोंठि, मिरच, भुनी हींग, भारंगी ये सब औषध काढ़े में डाल औटाकर दे तो रुधिर का गोला और स्त्रीधर्म जाता रहा हो उसको यह दूर करता है। अथवा जवाखार, सोंठि, कालीमिरच, बड़ी पीपल इनको औटाके पिलावे तो रुधिर का गोला जाय। अथवा शुद्ध पारा १ भाग, बंग की भस्म १ भाग, शोधी गन्धक ४ भाग, ताम्रेश्वर ४ भाग इन सबको दो दिन तक आक के दूध में खरल करे फिर इसका गोला कर, सरवे में धर, गजपुट में, पकावे फिर

इसको ठण्डा करके निकाले। इस बंगेश्वररस को २ रत्ती प्रमाण घृत के साथ ले तो गोला, फिया, उदर के रोग ये सब दूर हों।

मछली का मांस, सूखी तरकारी, दाल, मठा, फल इन वस्तुओं को गोलेवाले न खायँ। यह सर्वसंग्रह में लिखा है।

यकृत, प्लीहारोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

यकृत, प्लीहा ये दोनों शरीर के अङ्ग हैं। दाहिनी पसली में यकृत् रहता है, हृदय के नीचे और बाईं पसली में प्लीहा रहता है। इसको लौकिक में "फिया" कहते हैं। ये दोनों रुधिर के स्थान होते हैं और रुधिर चलनेवाली नसों में इनका मुख्य ठिकाना है।

प्लीहारोग की उत्पत्ति और लक्षण

जो मनुष्य गर्म अथवा दही आदि कफकारी वस्तु बहुत खाय उसके रुधिर और कफ दोनों बढ़कर मन्दज्वर और मन्दाग्नि करते हैं। कफ, पित्त के जिसमें लक्षण हों उसके शरीर का बल जाता रहे, शरीर पीला पड़ जाय उसको फिया कहते हैं। वह फिया वात, पित्त, कफ, रुधिर इन भेदों से चार प्रकार का है।

वात के फिया का लक्षण

उदर में नित्य अफरा, उदावर्त्त और पीड़ा रहे तो वात का फिया जानिये।

पित्त के फिया का लक्षण

ज्वर रहे, तृषा बहुत लगे तथा दाह, मोह हो, शरीर पीला हो जाय तो पित्त का फिया जानिए।

कफ के फिया का लक्षण

सब इन्द्रियाँ शिथिल हो जायँ, भ्रम हो, शरीर का रंग और का और हो जाय, मोह हो, शरीर भारी रहे, उदर लाल हो जाय ये लक्षण कफ और रुधिर के फिया के जानिए। और त्रिदोष का फिया हो तो असाध्य जानिये और यही लक्षण यकृतरोग का भी जानना।

फिया का यत्न

जवाखार ऊँटनी के दूध के साथ ले तो फिया जाय। अथवा सीप की भस्म दही के साथ खाय तो फिया जाय। अथवा ५ माशा पीपल दूध के साथ नित्य खाय तो फिया जाय। अथवा आक के पत्तों की

राख नोन मिलाय मट्ठ के साथ पिये तो फिया जाय। अथवा भुनी हींग, काली मिरच, पीपल*, सोंठि, कूट, जवाखार, सेंधानोन ये सब बराबर ले महीन पीस १० माशा बिजौरे के रस से प्रतिदिन ले तो फिया जाय। अथवा छोले के खार में भिजोई हुई पीपल १० माशा ले तो फिया और गोला जाय। अथवा शङ्ख की भस्म ४ माशे जम्भीरी के रस के साथ ले तो फिया जाय। अथवा बाँयें हाथ की फ़स्त खुलवावे तो फिया जाय। दाहिने हाथ की फ़स्त खुलवावे तो यकृत जाय। अथवा पक्के आम के रस में शहद को मिलाके पिये तो फिया जाय। अथवा अजवाइन, चित्रक, जवाखार, पोपलामूल, दन्ती, पीपल, मदिरा के साथ नित्य पिये तो फिया जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं। अथवा सेंधानोन २० माशा जल में औटाय नित्य पिये तो फिया जाय। यह वैद्यरहस्य में है। अथवा जवाखार, बायबिड़ंग, पीपल, कंजा को जड़, अमलबेत, ये बराबर ले महीन पोस ८ माशा नित्य गर्म जल के साथ ले तो फिया जाय। अथवा पीपल, सोंठि, दन्ती ये सब बराबर ले और इनसे दूनी हड़ की छाल ले सबको महीन पीस गुड़ के साथ पानी से ले तो फिया जाय। अथवा बायबिड़ंग, इन्द्रायण की जड़, सेंधानोन, चित्रक ये बराबर ले और इनसे दूनी देवदारु और तिगुनो सोंठि ले और साठी की जड़, बायबिड़ंग बराबर ले तथा निशोत चौगुनी ले इनको महीन पीस ५ माशा गर्म पानी के साथ ले तो फिया जाय। अथवा सहँजने की जड़, सेंधानोन, चित्रक, पीपल इनका काढ़ाकर पिये तो फिया जाय। अथवा शुद्ध भिलावां, हड़ की छाल, सफ़ेद जीरा ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस इनमें बराबर का गुड़ मिलाय २० माशा नित्य ७ दिन तक खाय तो फिया जाय। अथवा लहसुन, पीपलामूल, हड़ की छाल ये बराबर ले महीन पीस १० माशा गोमूत्र के साथ ले तो फिया जाय। यह चक्रदत्त में लिखा है। अथवा रोहिष (रोहीड़ा) की जड़, हड़ की छाल ये बराबर ले महीन पीस १० माशा गोमूत्र के

*जिस काढ़ा में पीपल का प्रयोग आवे वहाँ पर बड़ी पीपल छोड़ना और जिस जगह चूर्ण, अवलेह का प्रयोग हो उस जगह छोटी पीपल छोड़ना।

साथ ले तो फिया और उदर रोग, प्रमेह, बवासीर, कफ के रोग, कोढ़ ये सब जायँ यह योगतरङ्गिणी में है। अथवा साँभरनोन, हल्दी, राई इन तीनों को एक एक टके भर ले और १०० टके भर मट्ठे को चिकने बासन में भर ५ दिन तक रक्खे फिर ५ टके भर ३ दिन तक पिये तो फिया जाय। यह तक्रसन्धान भावप्रकाश में है।

अथवा १०० टके भर रोहिष और ४ सेर बेर की जड़ को कूट कर १६ सेर पानी में औटावे जब पानी चौथाई रह जाय तब उतार छान ले फिर उस पानी में १ सेर गौ का घृत डाले तथा बकरी का दूध ४ सेर डाले और सोंठि १० माशा, काली मिरच १० माशा, पीपल १ माशा, त्रिफला १० माशा, भुनी हींग १० माशा, अजवाइन १० माशा, साठी की जड़ १० माशा, तुम्बुरु (तोंबा) १० माशा, बायबिड़ंग १० माशा, कालानोन १० माशा, अनारदाना १० माशा, देवदारु १० माशा, इन्द्रायण की जड़ १० माशा, जवाखार १० माशा, पुष्करमूल १० माशा, झाऊ की जड़ १० माशा, खुरासानी बच १० माशा, चव्य १० माशा, इन सबको महीन पीस घृत में मधुरी आँच से पकावे जब ये औषध और दूध जल जायँ और घृत मात्र रह जाय तब उसको अमृतबान में छान के भर रक्खे फिर इस घृत में ३ टके भर पथ्य के साथ खाय तो फिया, प्लीहोदर, कुक्षिशूल, पसलो का शूल, अरुचि, बद्धकोष्ठ, पाण्डुरोग, छर्दि, अतीसार, विषमज्वर इन सबको यह दूर करता है। यह महारोचक घृत चक्रदत्त में है।

अथवा चित्रक १०० टके भर ले उसका काढ़ाकर उसमें काँजी का पानी २०० टके और दही का मट्ठा ४०० टके, पीपलामूल १ टके, चव्य १ टके, चित्रक १ टके, सोंठि १ टके, तालीसपत्र १ टके, जवाखार १ टके, सेंधानोन १ टके, दोनों जीरा २ टके, दोनों हल्दी २ टके, कालीमिरच १ टके भर इन सबको महीन पीस चित्रक के काढ़े में मिलावे पीछे इसमें १ सेर घृत मिलावे। जब पानी आदि सब जल जायँ, घृतमात्र रह जाय, तब इसे उतार छानकर अमृतबान में भर रक्खे फिर उसका सेवन करे तो फिया, गोला, उदररोग, अफरा, पाण्डुरोग अरुचि, विषमज्वर पेड़ू का शूल, सूजन, मन्दाग्नि इन

रोगों को यह दूर कर बल को बढ़ाता है। यह चित्रकाद्य घृत वृन्द में लिखा है।

जो फिया का यत्न है वही यकृत् का भी जानना। अथवा जवाखार, बायबिड़ंग, पीपल, कंजा की जड़ इनके काढ़े से यकृत् और फिया दोनों जायँ।

हृद्रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

बहुत गर्म और भारी, बहुत खट्टी, कषैली, बहुत तीखी वस्तुओं के खाने से, बहुत श्रम करने से भारी चोट के लगने से, बहुत पिटने और अति चिन्ता करने से, मलमूत्र के रोकने से, हृदय का रोग उत्पन्न होता है। 'वह रोग वात १, पित्त २, कफ ३, सन्निपात ४, कृमि ५, इन भेदों से पाँच प्रकार का है।

हृद्रोग का सामान्य लक्षण

अन्न खाने का रस जो प्रथम हृदय में जाय उस रस को वात, पित्त, कफ बिगाड़कर हृदय में पीड़ा करते हैं उसको वैद्य हृद्रोग कहते हैं।

वात के हृद्रोग का लक्षण

हृदय में पत्थर और कुल्हाड़े की सी चोट लगे ये लक्षण हों तो वात का हृद्रोग जानिये।

पित्त के हृद्रोग का लक्षण

तृषा बहुत लगे, दाह हो, हृदय दूखे, कण्ठ से धुआँ निकले, मूर्च्छा हो, शरीर शीतल हो जाय, पसीना आये, मुख सूख जाय। ये लक्षण जिसमें हों उसको पित्त का हृद्रोग जानिये।

कफ के हृद्रोग का लक्षण

हृदय भारी रहे, मुख में से कफ बहुत निकले, भोजन से रुचि जाती रहे, शरीर जकड़ा सा हो जाय, मुख मीठा रहे, मन्दाग्नि हो, हृदय में कफ जम जाय। ये लक्षण हों तो कफ का हृद्रोग जानिये। और ये सब लक्षण मिले हों तो सन्निपात का हृद्रोग जानिये।

कृमि के हृद्रोग का लक्षण

आँतों में कृमि हों, पीछे कुपथ्य का करनेवाला मनुष्य तिल, दूध,

गुड़ आदि मीठी वस्तु खाय तो उसके मर्म स्थानों में पीड़ा होय, हृदय दूखे, हृदय सड़ जाय तब उसकी आत्मा बहुत दुःख पावे। ये लक्षण जिसमें हों और मन में क्लेद हो, थूके बहुत, हृदय में शूल चले, भोजन में अरुचि हो, नेत्र काले पड़ जायँ, शरीर सूख जाय तो कृमि के हृद्रोग का लक्षण जानिये।

हृद्रोग के उपद्रव

सब इन्द्रियों का ज्ञान जाता रहे, शरीर में पीड़ा हो, घुमेर आवे, शरीर सूख जाय।

हृद्रोग का यत्न

बहेड़े के वृक्ष की छाल का चूर्ण २ टके भर प्रतिदिन दूध अथवा घृत या गुड़ के पानी के साथ पिये तो हृद्रोग, जीर्णज्वर, रक्तपित्त इनको दूर करे। अथवा हड़ की छाल, खुरासानी बच, रास्ना, पीपल, सोंठि, कचूर, पुष्करमूल ये सब बराबर ले महीन पीस १० माशा जल के साथ ले तो हृद्रोग दूर हो अथवा हिरन के सींग को पुटपाक कर गो के घृत के साथ खाय तो हृद्रोग, शूलमात्र दूर हों यह हिरन के सींग का पुटपाक है।

अथवा खरैटी, गंगरेन की छाल, काहू वृक्ष का बकला, मुलहठी ये औषध बराबर ले महीन पीस १० माशा का काढ़ा कर नित्य ले तो हृद्रोग, वातरक्त, रक्तपित्त इन सबको दूर करे। यह भावप्रकाश में लिखा है। अथवा कूट, बायबिड़ंग इनको महीन पीस १० माशा गो-मूत्र के साथ ले तो हृदय के कृमि गिर पड़ें और हृद्रोग जाय। अथवा गंगरेन की जड़ और काहू वृक्ष का बकला, पुष्करमूल, इनको महीन पीस १० माशा दूध के साथ अथवा शहद के साथ ले तो हृद्रोग श्वास, कास, छर्दि, हिचकी, इनको दूर करे। अथवा हड़ की छाल, बच, रास्ना, पीपल, सोंठि, कचूर, पुष्करमूल इनका चूर्ण ले तो हृद्रोग जाय। यह हरीतक्यादि चूर्ण है।

अथवा दशमूल के काढ़े में अरण्ड का तेल और साँभर नोन डालकर पिये तो हृद्रोग जाय। अथवा पुष्करमूल, सोंठि, कचूर, हड़ की छाल, जवाखार ये सब बराबर ले इनका काढ़ा कर उसमें

घृत डाल पिये तो वात का हृद्रोग जाय। यह वैद्यरहस्य में है अथवा भुनी हींग, बच, बायबिड़ंग, सोंठि, पीपल, हड़ की छाल, चित्रक, जवाखार, काला नोन, पुष्करमूल ये सब बराबर ले महीन पीस १० माशा शहद के साथ ले तो हृद्रोग, श्वास, कास, राजरोग, हिचकी ये सब रोग दूर हों। अथवा भुनी हींग, सोंठि, चित्रक, कूट, जवाखार, हड़ की छाल, बच, बायबिड़ंग, काला नोन, शुद्ध पारा, पुष्करमूल ये सब बराबर ले महीन पीस ४ माशा जल के साथ ले तो हृद्रोग, अजीर्ण विसूचिका ये सब दूर हों। यह रसप्रदीप में है।

इत्येकादशस्तरङ्गः। ११।

—:०:—

मूत्रकृच्छ्र रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

खेद के करने से, तीक्ष्ण और रूखी वस्तु के खाने से, मद्य के पीने से, नाचने से, दुष्ट घोड़े पर चढ़ने से, नदी के जीवों के मांस खाने से, भोजन पर भोजन करने से, अजीर्ण से मनुष्य के मूत्रकृच्छ्र रोग उत्पन्न होता है। वह ८ प्रकार का है। वात १, पित्त २, कफ ३, सन्निपात ४, चोट लगना ५, मल का रोकना ६, शुक्र रोकना ७, पथरी ८।

मूत्रकृच्छ्र का सामान्य लक्षण

कोप को प्राप्त हुए वात, पित्त, कफ आप अपने ही कारण से पेट में प्राप्त हो, मूत्र के मार्ग में बहुत पीड़ा करके, बड़े कष्ट से टीस चलकर मूत्र उतारते हैं और मूत्र बन्द होने में तो कम और मूत्र करने में अधिक पीड़ा हो उसको मूत्रकृच्छ्र कहते हैं।

वात के मूत्रकृच्छ्र का लक्षण

जाँघों और पेड़ू की सन्धि में तथा पेड़ू और इन्द्रिय में पीड़ा अधिक हो, थोड़ा थोड़ा बार बार मूते ये लक्षण जिसमें हों उसको वात का मूत्रकृच्छ्र जानिये।

पित्त के मूत्रकृच्छ्र का लक्षण

पीला, लाल और गर्म मूत्र बहुत कष्ट से टीस चलकर उतरे उसको पित्त का मूत्रकृच्छ्र कहिये।

कफ के मूत्रकृच्छ्र का लक्षण

पेड़ू और लिङ्ग दोनों भारी हों, दोनों में सूजन हो और मूत्र में

झाग आवे तथा मूत्र कष्ट से उतरे। ये लक्षण जिसमें हों उसको कफ का मूत्रकृच्छ्र कहिये। और जिसमें ये सब लक्षण मिले हों उसको सन्निपात का मूत्रकृच्छ्र कहिये।

चोट लगने के मूत्रकृच्छ्र का लक्षण

मूत्र को ले चलनेवाली नसों में किसी प्रकार की चोट लगने से मूत्र रुक जाय और वायु के मूत्रकृच्छ्र के लक्षण इसमें मिलें तो मनुष्य मर जाय।

मल रोकने के मूत्रकृच्छ्र का लक्षण

जो पुरुष मल की बाधा को रोके उसके वायु कुपित होकर पेड़ू और पेट में अफरा करे, इन्द्रिय के स्थान में पीड़ा अधिक करे, मूत्र बहुत कष्ट से उतरे ये लक्षण हों तो मल का मूत्रकृच्छ्र जानिये।

वीर्य रोकने के मूत्रकृच्छ्र का लक्षण

वीर्य के रोकने से मूत्र का मार्ग रुक जाय तो पुरुष के पेड़ू और लिङ्ग में शूल हो, वीर्य को लिये बड़े कष्ट से मूत्र उतरे तो वीर्य रोकने का मूत्रकृच्छ्र कहिये।

पथरी के मूत्रकृच्छ्र का लक्षण

पथरी और शर्करा नाम दोनों रेत अण्ड में रहते हैं इन्हीं से मूत्रकृच्छ्र होता है। वह पथरी पित्त से पची वायु करके रूखी, कफ से रहित, पथरी का रूप हो निकल मूत्र को रोकती है।

शर्करा का उपद्रव

हृदय में पीड़ा हो, शरीर काँपे, कोष में शूल चले, मन्दाग्नि और मूर्च्छा हो। ये लक्षण हों तो मनुष्य मर जाय।

मूत्रकृच्छ्र का यत्न

गोखुरू, अमलतास की गिरी, डाभ की जड़, कास की जड़, जवासा, आमला, पाषाणभेद, हड़ की छाल ये सब बराबर ले जवकुट कर काढ़ा कर शहद मिलाय गोक्षुरादिक्वाथ प्रतिदिन ले तो मूत्रकृच्छ्र और पथरी का असाध्य भी रोग जाय।

अथवा इलायची, पाषाणभेद, शिलाजीत, पीपल, गोखुरू, तिवर्सी का बीज सेंधानोन केसर ये सब औषध बराबर ले महीन पीस ४

माशा इक्कीस दिन चावल के पानी के साथ अथवा पुराने गुड़ के पानी के साथ प्रतिदिन ले तो मूत्रकृच्छ्र जाय अथवा दूध में पुराना गुड़ अथवा मिश्री डाल कुछ गर्मकर पिये तो मूत्रकृच्छ्र जाय।

चोट लगने के मूत्रकृच्छ्र का यत्न

आमले के रस में शहद मिलाय पीवे अथवा ऊख के रस में शहद डाल पीवे तो मूत्रकृच्छ्र जाय।

मल रोकने के मूत्रकृच्छ्र का यत्न

गोखुरू का काढ़ाकर शहद, जवाखार मिलाकर पीवे तो मूत्रकृच्छ्र जाय। अथवा त्रिफला २० माशा, बेर के जड़ की छाल २० माशा इन दोनों को रात्रि में भिगो प्रभात ही उसी पानी में पीस सेंधानोन डाल पीवे तो मूत्रकृच्छ्र जाय। अथवा जवाखार ५ माशे, मिश्री ५ माशे उन्हें पीस जल से ले तो मूत्रकृच्छ्र निश्चय जाय। अथवा मुनक्का किशमिश २० माशा, मिश्री ४० माशा, दही का मट्ठा ४० माशा ये तीनों मिलाय पीवे तो मूत्रकृच्छ्र जाय अथवा गोखुरू का जड़ समेत काढ़ाकर शहद, मिश्री मिलाय पीवे तो मूत्रकृच्छ्र जाय। ये यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं अथवा गिलोय, सोंठि, आमला, असगन्ध, गोखुरू ये सब बराबर ले इन्हें जवकुट कर १ तोले का प्रतिदिन काढ़ाकर पीवे तो मूत्रकृच्छ्र जाय। अथवा पक्के नींबू का रस गो के कच्चे दूध में डाल प्रतिदिन इच्छापूर्वक पीवे तो स्त्री के योनिदोष से उत्पन्न रोग और दाह, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र इनको दूर करे। अथवा हड़ की छाल, गोखुरू, अमलतास की गिरी, पाषाणभेद, धमासा, अड़ूसा ये सब बराबर ले जवकुट कर २० माशा का काढ़ा कर शहद डाल प्रतिदिन पिये तो दाहसंयुक्त मूत्रकृच्छ्र, बद्धकोष्ठ इनको हरीतक्यादि क्वाथ दूर करे।

कष्ट से रुधिर मूतता हो उसका यत्न

डाभ की जड़, कास की जड़, दूब की जड़, सरकंडे की जड़, ऊख की जड़, इस तृणपञ्चक का काढ़ा कर दे तो रुधिर का मूतना अच्छा हो।

अथवा पक्के पेठे के रस में मिश्री मिलाय पीवे तो मूत्रकृच्छ्र जाय। यह कूष्माण्डरस है।

अथवा कटेली के रस में शहद डाल पीवे तो मूत्रकृच्छ्र जाय। अथवा २८ टके भर गोखुरू को अष्टगुणित जल में औटाय अधोटा-कर पीछे छान इसमें गुग्गुल ७ टकेभर डाल फिर पकावे और इसमें सोंठि १ टका कालीमिरच १ टका, पीपल १ टका भर और हड़ की छाल ४ माशा, बहेड़े की छाल १ टका, आमला ४ माशा, नागरमोथा ४ माशा इन सबको महीन पीस गुग्गुल में डाले पीछे इनको एक जीव-कर ५ माशे प्रतिदिन जल से ले तो मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, प्रमेह, प्रदर, वातरक्त, वीर्यदोष इनको यह गोक्षुरादिगुग्गुल दूर करे।

अथवा जीरा १ टकेभर, गुड़ १ टकेभर प्रतिदिन खाय तो मूत्रकृच्छ्र जाय। अथवा जवाखार ९ माशा गौ के मट्ठे से पीवे तो मूत्रकृच्छ्र पथरी दोनों जायँ। यह जवाखारतक्रयोग है।

अथवा शुद्धपारा १ भाग, शोधी गन्धक ४ भाग इन दोनों की कजली करे पीछे इस कजली को बड़ी कौड़ी में भरे और भुने सुहागे को जल से पीस कौड़ी के मुख में लगावे, पीछे उस कौड़ी को कुल्हड़े में धर गजपुट में फूँक दे, शीतल होने पर उस कौड़ी को कुल्हड़े में से निकाल महीन पीस ४ रत्ती प्रमाण यह लघु-लोकेश्वर रस और २१ काली मिरच पीस मिलाय घृत के साथ खाय तो मूत्रकृच्छ्र जाय। यह सर्वयत्न भावप्रकाश और वैद्यरहस्य में लिखे हैं।

अथवा निरूहबस्ति वा उत्तरबस्ति के करने से मूत्रकृच्छ्र जाय। अथवा शतावरि, कास की जड़, डाभ की जड़, गोखुरू, बिदारीकन्द, सालर की जड़, कसेरू इनका काढ़ाकर शहद और मिश्री मिलाय पिये तो मूत्रकृच्छ्र जाय। यह चक्रदत्त में लिखा है। अथवा तिवर्सी का बीज, महुआ, दारुहल्दी इनका काढ़ाकर पिये तो पित्त का मूत्रकृच्छ्र जाय। अथवा केले के रस में गोमूत्र डाल पिये तो कफ का मूत्रकृच्छ्र जाय। अथवा इलायची को महीन पीस जल से ले तो कफ का मूत्र-कृच्छ्र जाय। अथवा मूँगे की भस्म ५ माशा चावल के पानी से पिये तो कफ का मूत्रकृच्छ्र जाय। अथवा गोखुरू, सोंठि इनका काढ़ा ले तो सब प्रकार का मूत्रकृच्छ्र जाय। यह वृन्द में है। अथवा बड़ी कटेली,

पाढ़, मुलहठी, महुआ, इन्द्रयव इनका काढ़ा कर पिये तो सन्निपात का मूत्रकृच्छ्र जाय।

शुक्र रोकने के मूत्रकृच्छ्र का यत्न

शिलाजीत शहद में मिलाय के खाय तो शुक्र रोकने का मूत्रकृच्छ्र जाय। यह चक्रदत्त में है। अथवा उत्तम स्त्री से प्रसङ्ग करे तो यह मूत्रकृच्छ्र जाय। अथवा खरैटी की जड़ का काढ़ा ले तो सम्पूर्ण मूत्र-कृच्छ्र जायँ। अथवा गोखुरू का पञ्चाङ्ग १०० टके भर ले उसको कूट अठगुने पानी में ओटावे जब चतुर्थांश रहे तब उसमें ५० टके-भर मिश्री की अवलेह की सी चाशनी करे उसमें सोंठि २ टका, पीपल २ टका, इलायची २ टका, जवाखार २ टका, केसर २ टका, काहू वृक्ष का बक्कल २ टका, तिवर्सी का बीज २ टका, वंशलोचन ८ टका भर इन सब ओषधियों को महीन पीस इस चाशनी में डाले फिर १ टके भर प्रतिदिन खाय तो मूत्रकृच्छ्र, दाह, बद्धकोष्ठ, पथरी, रुधिर का मूतना, मधुप्रमेह इन सबको यह गोक्षुरावलेह दूर करे, यह सब यत्न सर्वसंग्रह में लिखे हैं।

मूत्राघातरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

मनुष्य मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात में शंका करते हैं। इसका भेद कहते हैं। मूत्रकृच्छ्र में बहुत और मूत्रबन्ध में थोड़ा कष्ट होता है और मूत्राघात में मूत्रबन्ध तो बहुत परन्तु मूतने में पीड़ा थोड़ी होती है इतना भेद है।

मूत्रघात की उत्पत्ति और लक्षण

कुपथ्य से कोप को प्राप्त हुए वात, पित्त, कफ करके मूत्राघात होता है। वह मूत्राघात रोग १३ प्रकार का है। वातकुण्डलिका १, अष्ठीला २, वातबस्ति ३, मूत्राघात ४, मूत्रजठर ५, मूत्रोत्सङ्ग ६, मूत्रक्षय ७, मूत्रग्रन्थि ८, मूत्रशुक्र ९, उष्णवात १०, मूत्रसाद ११, विड्घात १२ और बस्तिकुण्डलिका १३।

वातकुण्डलिका का लक्षण

रूखी वस्तु के खाने से मल-मूत्र और शुक्र के धारण से वात पेड़ू में जाकर पीड़ा करे और मूत्र की नसों में जाय बिचरे और कोपित

हो जाय, कफ मूत्र के छिद्र को रोके और इन्द्रिय के मुख में बात कुण्डल के आकार हो रहे तब पुरुष थोड़ा थोड़ा मूते और मूतने में पीड़ा बहुत हो यह लक्षण हों उसके वातकुण्डलिका रोग कहिये। यह असाध्य है।

अष्ठीला का लक्षण

पेड़ू में अफरा हो, गुदा की पवन चले नहीं, गुदा में पवन की गाँठ पत्थर सी हो जाय, उस स्थान में पीड़ा बहुत हो और वह पवन मलमूत्र को रोक दे तो अष्ठीला का लक्षण जानिये।

वातबस्ति का लक्षण

जो पुरुष मूत्र के वेग को रोके उसके पवन पेड़ू में जाय मूत्र की नसों के मुख को रोक दे, मूत्र उतरने दे नहीं, पेड़ू और कुक्षि में पीड़ा करे उसको वातबस्तिरोग कहते हैं। यह रोग कष्टकारी है।

मूत्रातीतरोग का लक्षण

मूत्र को बहुत बार रोके और देर तक मूत्र न करे तब पुरुष के मूत्र मन्द उतरे इसको मूत्रातीत कहते हैं।

मूत्रजठररोग का लक्षण

जो पुरुष मूत्र के वेग को रोके उसकी गुदा की अपान वायु उदर को पवन से भरकर नाभि के नीचे अफरारोग को करके बहुत पीड़ा करे उसको मूत्रजठररोग कहते हैं।

मूत्रोत्सङ्ग का लक्षण

पेड़ू अथवा लिङ्ग की नसों में आये हुए मूत्र रोकनेवाले पुरुष के मूत्र के द्वारा पीड़ासहित अथवा बिना पीड़ा थोड़ा रुधिर उतरे उसको मूत्रोत्सङ्गरोग कहते हैं।

मूत्रक्षय का लक्षण

जिसका शरीर खेद से सूख जाय उसके पेड़ू में रहनेवाले वात, पित्त, कफ पीड़ा और दाहसहित मूत्र को नाश करते हैं उसको मूत्रक्षयरोग कहते हैं।

मूत्रग्रन्थिरोग का लक्षण

पेड़ू के बीच में गोल स्थिर और छोटी आमले के प्रमाण बहुत कड़ी वायु की गाँठ अकस्मात् उपज आवे उसको मूत्रग्रन्थि कहते हैं

मूत्रशुक्ररोग का लक्षण

मूत्र का वेग लग रहा हो और मैथुन करने को स्त्री के पास जाय तब उसकी वायु शुक्र को स्थान से भ्रष्ट करती है। मूत्र के पहले अथवा मूत्र के पीछे अरने उपले की राख के पानी सदृश गिरे उसको मूत्रशुक्र कहते हैं।

उष्णवातरोग का लक्षण

स्त्री के सङ्ग से, खेद से, धूप में रहने से पुरुष के पेड़ू में रहनेवाले वात, पित्त, पेड़ू, इन्द्रिय, गुदा को दग्ध करें तब हल्दी के सदृश मूत्र उतरे अथवा रुधिर लिये बड़े कष्ट से मूत्र उतरे उसको उष्णवात कहते हैं।

मूत्रसादरोग का लक्षण

पुरुष के कुपथ्य करके पेड़ू में रहता वायु पित्त और कफ को बिगाड़ता है तब उसके मूत्र बहुत कष्ट से उतरे, पीला, लाल, सफेद, बहुत गाढ़ा, गर्म, गोरोचन के सदृश, चूने की राख सदृश थोड़ा उतरे और शरीर सूख जाय उसको मूत्रसाद कहते हैं।

विड्विघातरोग का लक्षण

जो पुरुष बहुत रूखा अन्न खाय सो दुर्बल हो मलसहित मूते और उसके मूत्र में मल की सी गन्ध आवे तथा बहुत कष्ट से मूत्र उतरे उसको विड्विघातरोग जानिए।

बस्तिकुण्डलरोग का लक्षण

बहुत जल्दी दौड़ने से, लंघन करने से, बहुत खेद से पेड़ू में किसी प्रकार की चोट लगने से पेड़ू में गाँठ पड़ जाय तब उठने में पीड़ा हो और गाँठ बढ़ी हुई हिले नहीं, गर्भ की भाँति रहे, शूल हो, फड़के, दाह अधिक हो, उस गाँठ को हाथ से दाबे तो मूत्र की बूँद उतरे और बहुत पीड़ा हो, तब मूत्र की धार निकले तथा शस्त्र की चोट लगने की सी पीड़ा हो इसको बस्तिकुण्डल कहते हैं, यह असाध्य है। इस रोगवाला मर जाता है।

मूत्रघातरोग का यत्न

नरसल की जड़, डाभ की जड़, कास की जड़, साँठी की जड़, खरैटी की जड़, इसका काढ़ा करे फिर शहद डाल ठण्ढा कर पिये तो

मूत्राघात जाय। अथवा कपूर को जल से महीन पीस वस्त्र में उसका लेपकर उसकी बत्ती करे उस बत्ती को इन्द्रिय में धरे तो यह रोग जाय। अथवा धनियाँ, गोखुरू इन दोनों का काढ़ाकर उस काढ़े में घृत पकाय खाय तो मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र और शुक्रदोष ये तीनों जायँ। यह धान्यगोक्षुर घृत है।

जितना यत्न मूत्रकृच्छ्र और पथरी का है उतना ही मूत्राघात का जान लीजिए, यह भावप्रकाश में लिखा है। अथवा तिवर्सी के बीज २० माशा, धनियाँ २० माशा, इन्हें रात्रि में भिगोकर प्रातःकाल ही उसी पानी में पीस छान ४ माशा सेंधा नोन डालकर पिये तो मूत्राघात जाय। अथवा पाटलवृक्ष का खार १० माशा, काला नोन ५ माशा ये दोनों मदिरा के साथ पिये तो मूत्राघात जाय। अथवा मद्य में खट्टे अनार का रस और इलायची डालकर पिये तो यह रोग जाय, यह वृन्द में लिखा है अथवा शिलाजीत का सेवन करे तो मूत्राघात जाय अथवा कोंच के बीज २० माशा, खरैंटी ४० माशा, पीपल ४ माशा, तालमखाना ५ माशा, मिश्री ४० माशा, मुनक्का और किशमिश ४० माशा इनको महीन पीस गर्म दूध में शहद, घृत डाल पिये तो शुक्र के रोकने का मूत्राघात जाय और यह प्रयोग बन्ध्या के पुत्र उत्पन्न करनेवाला है। यह सर्वसंग्रह में लिखा है। अथवा चित्रक ।, गोरीशर २० माशा, खरैंटो ४० माशा, दाख ऽ=, इन्द्रायण की जड़ २० माशा, त्रिफला २० माशा, बड़ा आमला १०० इनका १६ सेर पानी में काढ़ा करे जब इसका चतुर्थांश रह जाय तब उतारकर छान ले पीछे इस काढ़े में ४ सेर घृत डालकर पकावे जब औषध और पानी जल जाय, केवल घृतमात्र रह जाय तब छान ले फिर इसमें बंशलोचन ऽ= डालकर ऽ= प्रतिदिन ले तो सर्वप्रकार के वीर्य के दोषों को दूर करे और स्त्री के गर्भ करे और मूत्राघात, प्रदर, योनि के दोष, मूत्रकृच्छ्र इन सब रोगों को दूर करे। यह चरक में लिखा है। यह चित्रकाद्य घृत है।

अथवा त्रिफला के काढ़े में गुड़, दूध डालकर पिये तो मूत्राघात जाय। अथवा पाढ़ल, अरलू, नींब की छाल, हल्दी, गोखुरू, पलाश का बक्कल ये सब बराबर लें इनका काढ़ा कर उसमें गुड़ डालकर पिये

तो मूत्राघात जाय। अथवा सुन्दर चतुर स्त्री से मैथुन करे तो मूत्राघात जाय। ये सब आत्रेय में लिखे हैं।

मूत्ररोधरोग का लक्षण

जो यत्न मूत्राघात और मूत्रकृच्छ्र के हैं वही इसके भी जान लीजिए और कुछ विशेष हैं वे कहते हैं। ककड़ी के बीज, त्रिफला, सेंधा नोन ये सब बराबर ले महीन पीस २० माशा गर्म जल के साथ पिये तो मूत्ररोध जाय। अथवा तिल के काकड़े को जला के खार निकाल ८ माशा दही और शहद के साथ ले तो मूत्र के चार रोग जायँ।

मूत्र बहुत गर्म उतरे उसका यत्न

चमेली की जड़ को बकरी के दूध में पीसकर पिये तो यह रोग जाय अथवा कमल की जड़ को गोमूत्र में पीस उसमें तिल मिलाय पिये तो मूत्ररोध जाय, यह आत्रेय में लिखा है।

अश्मरी रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

अश्मरी को लोक में पथरी कहते हैं। यह पथरीरोग चार प्रकार का है। वात का १, पित्त का २, कफ का ३, वीर्य के रोकने का ४ इन चारों में जो कफ मिला है वह यमरूप है।

पथरी की उत्पत्ति

पेड़ू में रहनेवाली वायु पेड़ू के वीर्य, मूत्र, पित्त, कफ इनको सुखा कर क्रम से पथरी को उत्पन्न करती है। यहाँ यह दृष्टान्त है कि जैसे गौ के पित्ते में गोरोचन बढ़ जाय वैसे ही मनुष्य के पथरी पड़ जाती है।

पथरी का पूर्वरूप

पथरी का रोग सन्निपात से उत्पन्न होता है। पथरीवाले पुरुष के मूत्र में मस्त बकरे की सी गन्ध आवे, पेड़ू में अफरा हो, पीड़ा बहुत हो, मूत्र बहुत कष्ट से उतरे, ज्वर हो और भोजन में अरुचि हो यह पथरी के पूर्वरूप का लक्षण है।

पथरीरोग का सामान्य लक्षण

नाभि में मूत्र की नसों में, पेड़ू में पीड़ा बहुत हो, मूत्र की धार बँधी गिरे नहीं और मूत्र का मार्ग रुक जाय। जब यह पथरी मूत्र के मार्ग से सरक जाय तब उस पुरुष को सुख हो, मूत्र अच्छे प्रकार

पीला उतरे और जब वह कोप को प्राप्त हो तब बड़ी पीड़ा सहित रुधिर मिला मूत्र उतरे।

अधिकवातवाली पथरी का लक्षण

जिसमें मूत्र के समय अधिक पीड़ा हो, दाँतों को चाबे, मूत्र करते में इन्द्रिय काँपे, इन्द्रिय और नाभि में पीड़ा हो, मूतते पुकार उठे और मल कर दे, मूत्र बूँद बूँद उतरे, पथरी का रंग काला हो और पथरी में काँटे से हों उसको वात की पथरी कहते हैं।

कफ-पित्त की पथरी का लक्षण

पेड़ू अग्नि के समान जले मानो पक गया है और पथरी बादाम के छिलके के समान और पीला, लाली, सफ़ेदी लिये हो ये लक्षण हो तो कफ-पित्त की पथरी जानिये।

कफ की पथरी का लक्षण

पेड़ू में पीड़ा बहुत हो और पेड़ू शीतल, भारी हो और उसकी पथरी चिकनी, गोली, सफ़ेद, कुक्कुट के अण्डे की बराबर हो जिसमें ये लक्षण हों उसको कफ की पथरी कहिये।

शुक्र के रोकने की पथरी का लक्षण

जिस पुरुष को मैथुन करने की इच्छा हो और वह शुक्र को रोके, किसी प्रकार जाने न दे उसके शुक्र की पथरी उत्पन्न होती है। इन्द्रिय और फ़ोते के बीच में वह पवन वीर्य को सुखाकर पथरी करे फिर वह पथरी पेड़ू में पीड़ा करे, मूत्र महाकष्ट से उतरे, फ़ोते सूज जायँ, उसका वीर्य जाता रहे, इन्द्रिय में पीड़ा करे तो इन्द्रिय के द्वारा शुक्र निकले अथवा वह इन्द्रिय पीड़ित करे तब वात उस पथरी के निकट महीन शुक्र के रेत के सदृश टुकड़े कर दे इसको शर्करा कहते हैं।

पथरी का उपद्रव

शरीर दुर्बल होकर पीला हो, कुक्षि में शूल चले, अरुचि हो, शरीर पीला हो जाय, मूत्रघात हो और नाभि सूज जाय, मूत्र रुक जाय ये इसके उपद्रव हैं।

पथरी रोग का यत्न

सोंठि, अरणी, पाषाणभेद, कूट, बरणा, गोखुरू, अरण्ड की छाल, अमलतास की गिरी ये सब बराबर ले जवकुट कर २० माशा का

काढ़ाकर उसमें भुनी हींग, जवाखार, सेंधा नोन ये तीनों डाल पथरी-वाला पिये तो पथरी और मूत्रकृच्छ्र ये दोनों जायँ और यह कोष्ठ की वात, उपदंश, बवासीर इनको भी दूर करता है और दीपन पाचन है। यह शुण्ठ्यादि क्वाथ है।

अथवा इलायची, पीपल, महुवा, पाषाणभेद, पित्तपापड़ा, गोखुरू, अड़ूसा, अरण्ड की जड़ ये सब बराबर ले जवकुट कर इनका काढ़ा करके उसमें शिलाजीत डालकर पिये तो पथरी और मूत्रकृच्छ्र को दूर करे। यह एलादिक्वाथ है।

अथवा पेठे के रस में भुनी हींग, जवाखार डालकर पिये तो पेड़ू की पीड़ा और पथरी जाय। अथवा अरणी की छाल, पाषाणभेद, सोंठि, गोखुरू इनका काढ़ा कर जवाखार डाल पिये तो पथरी जाय। अथवा गोखुरू के चूर्ण में २२ माशा शहद मिलाकर भेड़ के दूध में पिये तो पथरी जाय। अथवा बरणा की जड़ का काढ़ा कर उसमें गुड़ डालकर पिये तो पथरी का रोग और पेड़ू का शूल दूर हो। अथवा अदरक का रस, जवाखार, हड़ की छाल, मलयागिरि चन्दन इनका काढ़ाकर दही डालकर पिये तो पथरी जाय। अथवा बरणा का बक्कल १०० टके भर ले उसमें चौगुना पानी डाल औटावे जब चतुर्थांश रह जाय उसमें १०० टके भर गुड़ की चाशनी कर चिकने बासन में धरे उसमें सोंठि १ टके भर, पेठे के बीच ४ माशा, बहेड़े की मींगी ४ माशा, बथुए के बीच १ टके, सहँजने के बीज १ टके, किशमिश २ टके, इलायची १ टके, हड़ की छाल १ टके, बायबिड़ंग १ टके भर इनका चूर्णकर उसमें डाल एकरस कर प्रति-दिन खाय तो पथरी का रोग जाय। यह बरणादि गुड़ का अवलेह है।

अथवा मंजीठ तिवर्सी का बीज, सफ़ेद जीरा, सौंफ़, आमला, बेर की मींगी, शोधी गन्धक, आँवलासार, मैनसिल ये सब बराबर ले महीन पीस ५ माशा प्रतिदिन शहद के साथ खाय तरे पथरी निश्चय जाय। अथवा २। टके भर कुलत्थ का काढ़ा कर उसमें सेंधा नोन २ माशे, शरफोंका का रस २ माशे मिलाकर पिये तो पथरी जाय ये सब

भावप्रकाश में लिखे हैं। अथवा हल्दी का चूर्ण २० माशा, गुड़ ४० माशा इनको १ माशे कांजी में डाल पिये तो पथरी जाय। अथवा काला नोन, दूध, तिलेठी की राख ये सब मदिरा में मिलाकर ३ दिन पिये तो पथरी जाय। यह चक्रदत्त में लिखा है। अथवा तिलेठी की राख १० माशा, शहद २० माशा इनको दूध के साथ १५ दिन पिये तो पथरी निश्चय झड़ पड़े। अथवा गोपालकाकड़ी (एरण्डकाकड़ी) की जड़ २ टंक ले उसको रात में भिगो रक्खे प्रातःकाल उसी पानी में पीस ७ दिन पिये तो पथरी इन्द्रिय द्वारा झड़ पड़े। यह राज-मार्तण्ड में लिखा है। अथवा कुलत्थ, सेंधा नोन, बायबिड़ंग, खार, मिश्री, साटो (पथरचटा) का रस, जवाखार, पेठे का रस, तिल का खार, पेठे के बीज, गोखुरू इन सबका काढ़ाकर इसमें गो का घृत पकाकर १ टके भर नित्य खाय तो पथरी, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, शुक्रबन्ध इन सब रोगों को यह दूर करे। यह कुलत्थाद्य घृत वृन्द में लिखा है।

मूँग, यव, गेहूँ, चावल, दूध, घृत, टेढ़रु, सेंधा नोन ये इस रोग में पथ्य हैं।

प्रमेहरोग की उत्पत्ति और लक्षण

अधिक बैठने, बहुत सोने, नवीन पानी के पीने और बकरा, भेड़ा का मांस, गुड़ आदि बहुत मिठाई और बहुत दही और कफकारी वस्तुओं के खाने, श्रम और बहुत मैथुन करने, धूप के रहने, विरुद्ध और गर्म भोजन के करने, बहुत मदिरा के पीने, कड़ुआ रस के खाने से पुरुष के प्रमेहरोग उत्पन्न होता है।

कफ, पित्त और वायु के प्रमेह की संप्राप्ति

पेड़ू में प्राप्त मेदा, मांस और शरीर के जल को कफ दूषित करके कफप्रमेह को करता है। ऐसे ही पित्त गर्म वस्तु से कोप कर पेड़ू में प्राप्त मेदा मांस जल को दूषित कर पित्तप्रमेह को करता है। ऐसे ही वायु भी अपनी अपेक्षा आपसे क्षीण कफ को पेड़ू में प्राप्तकर और शुद्ध मांस-स्नेह को और शरीर के जल को पेड़ू की नसों के मुख में प्राप्त कर वायु के प्रमेह को करे। कफ के १० प्रमेह साध्य हैं,

क्योंकि सामान्य यत्न से जाते हैं और पित्त के ६ प्रमेह याप्य हैं अर्थात् यत्न से दबे रहते हैं इसका विषम यत्न है, क्योंकि दोष दूष्य के विषमपने से ऐसा दोष दूषित है। और दूष्य रस मांसादिक हैं, शीतल मधुरादिक पित्तहारी द्रव्य हैं और रस, मांस, मेदा इनको उपजाते हैं। वायु के ४ प्रमेह असाध्य हैं वे दूर नहीं होते क्योंकि मज्जा को आदि ले वे गंभीर धातु हैं और सर्वशरीरव्यापी हैं तथा शरीर के विनाशकारी हैं इस कारण वायु का प्रमेह असाध्य है।

बीस प्रकार के प्रमेहों के नाम

उदकप्रमेह १, इक्षुप्रमेह २, सान्द्रप्रमेह ३, सुराप्रमेह ४, पिष्टप्रमेह ५, शुक्रप्रमेह ६, सिकताप्रमेह ७, शीतप्रमेह ८, शनैःप्रमेह ९, लालाप्रमेह १० ये दश तो कफ के प्रमेह हैं और क्षारप्रमेह १, नीलप्रमेह २, कालाप्रमेह ३, हारिद्रप्रमेह ४, मांजिष्ठप्रमेह ५, रक्तप्रमेह ६, ये छः पित्त के प्रमेह हैं और वसाप्रमेह १, नीलप्रमेह २, कामप्रमेह ३, हस्तोप्रमेह ४ ये चार वायु के हैं। ये २० प्रमेह वाग्भट्ट, सुश्रुत, चरक, भावप्रकाशादि के मत से हैं और आत्रेयजी के मत से विशेष हैं वे ये हैं। पूयप्रमेह १, तक्रप्रमेह २, पिड़िकाप्रमेह ३, शर्कराप्रमेह ४, घृतप्रमेह ५ और अतिमूत्रप्रमेह ६।

प्रमेह का पूर्वरूप

दाँत, तालू, जीभ इनमें मैल अधिक हो, हाथ-पैर में दाह और देह चिकनी हो, तृषा बहुत लगे, मुँह मीठा रहे, ये लक्षण हों तो जानिए कि इसके प्रमेह होगा।

प्रमेह का सामान्य लक्षण

बहुत ठण्ढा और पतला मूत्र हो तब जानिए कि इसके प्रमेह होगा।

कफ के १० प्रमेहों में प्रथम उदक प्रमेह का लक्षण

निर्मल, सफेद और बहुत शीतल, गन्धरहित, जल के सदृश, कुछ एक भदरगा और चिकना मूते उसको उदकप्रमेह कहते हैं।

इक्षुप्रमेह का लक्षण

साँठे के रस के समान मीठा हो उसको इक्षुप्रमेह कहते हैं।

सान्द्रप्रमेह का लक्षण

जैसे बासी पानी बासन में धरा हुआ ठण्ढा होता है वैसा ही मनुष्य मूते तो उसको सान्द्रप्रमेह कहते हैं।

सुराप्रमेह का लक्षण

जिसके मूत्र में दारू की सी वास आवे और उसका मूत्र ऊपर तो निर्मल हो और नीचे भदरगा हो उसको सुराप्रमेह कहते हैं।

पिष्टप्रमेह का लक्षण

चावल आदि के चूरन के पानी के सदृश सफेद कष्टपूर्वक मूत उतरे और मूतते हुए रोमांच हो उसको पिष्टप्रमेह कहते हैं।

शुक्रप्रमेह का लक्षण

वीर्य सहित मूते उसको शुक्रप्रमेह कहते हैं।

सिकताप्रमेह का लक्षण

जिसके मूत्र में बालू के कणकों के समान कफ की फुटक आवें उसको सिकताप्रमेह कहते हैं।

शीतप्रमेह का लक्षण

बारबार बहुत शीतल मूते उसको शीतप्रमेह कहते हैं।

शनैःप्रमेह का लक्षण

शनैः शनैः निपट मन्द मूते उसको शनैः प्रमेह कहते हैं।

लालाप्रमेह का लक्षण

लार की ताँतसहित मूते उसको लालाप्रमेह कहते हैं। ये दश कफ के प्रमेह हैं।

पित्त के ६ प्रमेहों में प्रथम क्षार प्रमेह का लक्षण

जिसके मूत्र में खार की सी गन्ध और वर्ण हो तथा खार के पानी के सदृश मूते उसको क्षारप्रमेह कहिए।

नीलप्रमेह का लक्षण

नील रंग के समान मूत उतरे उसको नीलप्रमेह कहिए।

कालाप्रमेह का लक्षण

स्याही के समान काला मूते उसको कालाप्रमेह कहिए।

हारिद्रप्रमेह का लक्षण

हल्दी के रंग के समान कड़ुआ, दाह को लिये मूते उसको हारिद्र प्रमेह कहिए।

मांजिष्ठप्रमेह का लक्षण

मंजीठ के पानी के रंगसदृश मूते और दुर्गन्ध बहुत आवे उसको मांजिष्ठप्रमेह कहिए।

रक्तप्रमेह का लक्षण

रुधिर के समान दुर्गन्धयुक्त बहुत मूते उसको रक्तप्रमेह कहिए। ये छः पित्त के प्रमेह हैं।

वायु के ४ प्रमेहों में प्रथम वसाप्रमेह का लक्षण

शुद्ध मांस के घृत और उसके रंग को लिये मूते उसको वसा-प्रमेह कहिए।

मज्जाप्रमेह के लक्षण

हाड़ की मज्जा को लिये और उसके रंग के सदृश बारम्बार मूते उसको मज्जाप्रमेह कहते हैं।

क्षौद्रप्रमेह का लक्षण

कसैला और शहद के सदृश मीठा और खारी जिसका मूत्र हो उसके क्षौद्रप्रमेह जानिए। जिस पुरुष के प्रमेह हो और वह यत्न न करे और प्रमेह बहुत दिन का हो जाय और प्रमेहवाला कुपथ्य करे उसके मधुप्रमेह होता है। यह असाध्य है।

कफ के प्रमेह का उपद्रव

अन्न पचे नहीं, भोजन में अरुचि और छर्दि हो तथा निद्रा, खाँसी बहुत आवे, पीनस हो यह कफ के प्रमेह के उपद्रव हैं।

पित्त के प्रमेह का उपद्रव

पेड़ू और इन्द्रिय में पीड़ा हो, अण्डकोश फटने लगें, तथा ज्वर, दाह, तृषा, मूर्च्छा, अतीसार हों, खट्टी डकार आवें ये पित्तप्रमेह के उपद्रव हैं।

वायु के प्रमेह का उपद्रव

जिसमें उदावर्त रोग हो, शरीर काँपे, हृदय दूखे, सब रसों के खाने की इच्छा रहे, पेट में शूल हो, निद्रा आवे नहीं, शरीर सूज जाय, खाँसी और श्वास हो ये वातप्रमेह के उपद्रव हैं।

प्रमेह का असाध्य लक्षण

वात, पित्त, कफ के उपद्रव संयुक्त जिस पुरुष के प्रमेह हो उसको

असाध्य जानिए। वह मर जाय और प्रमेह की जो दश पिड़िका कही हैं उनसे युक्त पुरुष भी मर जाय।

आत्रेयजी के मत के प्रमेहों के नाम और लक्षण

पूयप्रमेह १ तक्रप्रमेह २ पिड़िकाप्रमेह ३ शर्कराप्रमेह ४ घृतप्रमेह ५ और अतिमूत्रप्रमेह ६।

पूयप्रमेह का लक्षण

पीब के समान मूते उसको पूयप्रमेह जानिए।

तक्रप्रमेह का लक्षण

जिसका मूत्र मट्ठे के समान उतरे और मूत्र में मट्ठे ही की सी बास आवे उसको तक्रप्रमेह जानिए।

पिड़िकाप्रमेह का लक्षण

जिसके मूत्र में वीर्य की फुटक पड़ें उसको पिड़िकाप्रमेह कहिए।

शर्कराप्रमेह का लक्षण

जिसका मूत्र मिश्री के सदृश मीठा हो और मिश्री के वर्ण के सदृश हो उसे शर्कराप्रमेह कहिए।

घृतप्रमेह का लक्षण

जिसके मूत्र का रंग घृत के सदृश हो उसको घृतप्रमेह कहिए।

अतिमूत्रप्रमेह का लक्षण

जिस पुरुष के रात्रि-दिन बहुत मूत्र उतरे और वह मनुष्य निर्बल पड़ जाय उसको अतिमूत्रप्रमेह कहिए। ये छः प्रमेह आत्रेयजी के मत के हैं।

प्रमेह की दश पीड़िकाओं के नाम और लक्षण

शराविका १, कच्छपिका २, जालिनी ३, विनता ४, अलजी ५, मसूरिका ६, सर्षपिका ७, पुत्रिणी ८, विदारिका ९, विद्रधि १०।

पिड़िका का लक्षण

शरीर के ढूँगा आदि पुष्ट स्थान के मर्म स्थान बिषे १० सन्धि में उपजें उनको पिड़िका कहिए।

शराविका का लक्षण

फुंसी ऊपर तो ऊँची और बीच में गढ़ा हो अर्थात् सरवे के समान शोथ हो उसको शराविका कहिए।

कच्छपिका का लक्षण

पीछे कहे शरीर के पुष्ट स्थानों में सरसों के प्रमाण दाह को लिए कछुआ के आकार जो फुंसी हो उसको कच्छपिका कहते हैं।

जालिनी का लक्षण

जिस फुंसी में दाह बहुत हो और वह मांस के समूह में हो उसको जालिनी कहिए।

विनता का लक्षण

जिस फुंसी के भीतर पीड़ा हो और वह फुंसी बड़ी हो और पीठ पीछे अथवा उदर में हो उसे विनता कहिए।

अलजी का लक्षण

जो फुंसी लाल और काली हो बहुत फाटे, पीड़ा अधिक हो उसको अलजी कहिए।

मसूरिका का लक्षण

जो फुंसी मसूर के प्रमाण हो और मसूर ही का सा रंग हो उसको मसूरिका कहिए।

सर्षपिका का लक्षण

जो फुंसी सरसों के प्रमाण हो और सरसों ही का सा रंग हो उसको सर्षपिका कहिए।

पुत्रिणी का लक्षण

जो फुंसी उठते ही बड़ी उठे उसको पुत्रिणी कहिए।

विदारिका का लक्षण

जो फुंसी विदारीकन्द के सदृश गोल हो और कड़ी हो और वैसा ही रंग हो उसको विदारिका कहिए।

विद्रधि का लक्षण

विद्रधि रोग ६ प्रकार का है। उसके लक्षण पीछे लिखे हैं वे यहाँ भी जान लीजिए। दश पिड़िका प्रमेहवाले रोगी के होती हैं और जिसका मेद दुष्ट हो उसके बिना प्रमेह भी होती हैं।

पिड़िका के १० उपद्रव

तृषा, खाँसी, मांस का संकोच, हिचकी, मन्दज्वर, विसर्प, मर्म का रोकना ये इनके उपद्रव हैं।

पिड़िका का असाध्य लक्षण

गुदा, हृदय, मस्तक, कन्धा, मर्मस्थान इन स्थानों में मन्दाग्निवाले के फुंसी हो तो असाध्य जानिए। कई आचार्यों के मत से स्त्री के प्रमेहरोग नहीं होता; क्योंकि स्त्री के महीने महीने स्त्रीधर्म होता है उससे शरीर के सब रोग जाते रहते हैं।

प्रमेह जाता रहा हो उसका लक्षण

जिसका मूत्र निर्मल हो और पतला पानी के समान हो, कड़ुआ और तीखा हो जाय उसका प्रमेह गया जानिये।

रक्तपित्त और रक्तप्रमेह का भेद

जिसके शरीर का वर्ण हल्दी के समान हो जाय और मूत्र रुधिर के समान उतरे उसके रुधिरप्रमेह जानिये या रक्तपित्त का कोप जानिए।

प्रमेह रोग का यत्न

सावाँ, गेहूँ, चना, अरहर, कुलत्थ, यव, मूँग, मोठ, साठी चावल प्रमेहवाला इतनी वस्तु पुरानी खाय और तीखा, शाकपत्र, हरिण का मांस प्रमेहवाले को कुपथ्य हैं। गुड़ आदि मीठी वस्तु, दूध, घृत, तेल, मट्ठा, मदिरा, खटाई, साठी का रस, पिसा अन्न, अनूपदेश का मांस प्रमेहवाला इतनी वस्तु न खाय।

कफ के १० प्रमेहवालों का काढ़ा

नागरमोथा, हड़ की छाल, पठानी लोध, कायफल इनको बराबर ले जवकुट कर २० माशा का काढ़ा प्रतिदिन शहद डाल पीवे तो पित्त, कफ के प्रमेह जायँ। अथवा खस, लोध, काहू का बक्कल, रक्तचन्दन इनको बराबर ले जवकुटकर २० माशा का काढ़ा प्रतिदिन शहद डाल पीवे तो पित्त का प्रमेह जाय। यह यत्न भावप्रकाश में है।

जलप्रमेह का यत्न

धववृक्ष का बक्कल, कदम्ब का बक्कल, रक्तचन्दन, सालर वृक्ष का बक्कल इनका काढ़ा ले तो जलप्रमेह जाय।

रक्तप्रमेह का यत्न

बासी पानी में किशमिश का शर्बत करे उसमें मुलहठी, सफेद चन्दन डालकर पिये तो रक्तप्रमेह जाय।

क्षारप्रमेह का यत्न

सुन्दर स्त्री के साथ संभोग करने से क्षारप्रमेह जाय। अथवा धव-वृक्ष का बक्कल, काहू का बक्कल, अड़ूसे का बक्कल, कसेरू, केले के भीतर का सफेद बक्कल, कमल की जड़, किशमिश इन सबका काढ़ा दे तो क्षारप्रमेह जाय।

तक्रप्रमेह का यत्न

पठानीलोध, काहू का बक्कल, खस, नींब के पत्ते, आमला, रक्त, चन्दन इन सबका काढ़ा करके गुड़ डाल पिये तो तक्रप्रमेह और पिड़िकाप्रमेह ये दोनों जायँ।

शुक्रप्रमेह का यत्न

दूब, मूर्वा (मुरहरी), डाभ की जड़, कास की जड़, दन्ती, मंजीठ, सालर का बक्कल इनका काढ़ा ले तो शुक्रप्रमेह और रुधिर-प्रमेह ये दोनों जायँ।

घृतप्रमेह का यत्न

त्रिफला, अमलतास की गिरी और उसी की जड़, मूर्वा, सहँजने के पत्ते, नींब के पत्ते, केले का सफेद बक्कल, मुनक्का, दाख इनका काढ़ा दे तो घृतप्रमेह जाय।

इक्षुप्रमेह का यत्न

कूट, पित्तपापड़ा, कुटकी, मिश्री इनका काढ़ा दे तो इक्षुप्रमेह जाय। अथवा अरणी की जड़, पाढ़ल, धमासा, अरलू, छीला की जड़ इनका काढ़ा ले तो इक्षुप्रमेह जाय।

पित्तप्रमेह का यत्न

कमल की जड़, काहू का बक्कल, इन्द्रयव, धव और इमली का बक्कल, आमला, निंबौली इनमें मिश्री डाल पिये तो पित्त का प्रमेह जाय। अथवा बायबिड़ंग, राल, काहू का बक्कल, कायफल, कदम्ब का बक्कल, लोध, विजयसागर इनका काढ़ा ले तो पित्त का प्रमेह जाय। सर्वप्रमेहमात्र और मूत्रग्रह को यह दूर करे। अथवा करिहारी और हड़ की छाल, हल्दी, काहू का बक्कल ये सब बराबर ले महीन पीस इनकी बराबर मिश्री मिलाकर १० माशा शहद के साथ खाय तो सब प्रकार के प्रमेह जायँ।

मधुप्रमेह का यत्न

बड़, अरलू, चिरौंजी, आमला, बड़ी पीपल, अमलतास इन सबों की जड़ का बक्कल, मुलहठी, नींब की छाल, पटोल, बड़ का छिलका, दन्ती, मेढ़ासिंगी, चित्रक, कणगच की जड़, इन्द्रयव, त्रिफला, शोधी भिलावाँ, सोंठि, कालीमिरच, तज, पत्रज, इलायची ये सब बराबर ले महीन पीस १० माशा शहद के साथ ले तो मधुप्रमेह जाय। अथवा बड़ की जटा आदि इन ओषधियों का काढ़ा दे अथवा इनके तेल का मर्दन करे या इनका घृत बनाकर खाय तो मधुप्रमेह जाय। यह न्यग्रोधाद्यचूर्ण है।

अथवा शोधी सोनामक्खी, पाषाणभेद, शोधा शिलाजीत, चंदन, कचूर, पीपल, वंशलोचन ये सब बराबर ले महीन पीस १० माशा ओषध ४० माशा शहद मिलाय गो के दूध के साथ प्रतिदिन पिये तो मधुप्रमेह और मूत्र का अवरोध इन सबको दूर करे। यह सब यत्न आत्रेय में लिखे हैं।

चन्द्रप्रभा गुटिका

कचूर ४ माशा, बच ४ माशा, नागरमोथा ४ माशा, चिरायता ४ माशा, देवदारु ४ माशा, हल्दी ४ माशा, अतीस ४ माशा, दारुहल्दी ४ माशा, पीपलामूल ४ माशा, चित्रक ४ माशा, धनियाँ ४ माशा, त्रिफला ४ माशा, चव्य ४ माशा, गजपीपल ४ माशा, जवाखार ४ माशा, सज्जी ४ माशा, सेंधानोन ४ माशा, कालानोन ४ माशा, सांभरनोन ४ माशा, सार २० माशा, मिश्री ८ माशा, शोधा शिलाजीत १६ माशा, शोधा गुग्गुल १६ माशा इन सबको पृथक्-पृथक् महीन पीसे फिर सबको मिलाय एक रस करे फिर शुद्धपारा ४ माशा, शोधी गन्धक ४ माशा, अभ्रक ४ माशा ले फिर पारे और गन्धक की कजली कर सब ओषध इसमें मिलावे फिर ४ माशे शहद और घृत के साथ ले तो सर्व प्रमेहमात्र, बवासीर, क्षयी, वीर्य का दोष, नेत्र और दाँत का रोग, खाँसी, पाण्डुरोग, पादशूल, उदर का रोग, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, फिया (तिल्ली), कोढ़ इन सबको यह चन्द्रप्रभा गुटिका दूर करती है।

अथवा त्रिफला ४ टके, जीरा ४ टके, धनियाँ ४ टके, दालचीनी २ टके, लवङ्ग २ टके, नागकेसर २ टके, तुखमलैआ के बीज २ टके, कोंच के बीज ४ टके, छोटी इलायची २ टकेभर इन सबको महीन पीस एकरस कर फिर इनको मिश्री और घृत में मिलाय १ टके भर का लड्डू बाँधें। १ लड्डू प्रभात खाय तो प्रमेहमात्र दूर हों। यह प्रमेहारिचूर्ण है।

मधुप्रमेह का यत्न

शोधा पारा, शोधी गन्धक, काहू का बक्कल, मिश्री इनको बराबर ले खरल में महीन पीस सालर की जड़ की ३ पुट दे फिर खरलकर इसकी १ माशे प्रमाण की गोली बाँधे। १ गोली नित्य खाय तो मधुप्रमेह जाय। अथवा पठानीलोध ४ माशा शहद से अथवा खरेटी के काढ़े के साथ ले तो प्रमेह जाय। अथवा गिलोयसत, त्रिफला, सार ये तीनों मिलाय ४ माशा शहद मिलाय खाय तो प्रमेह जाय। अथवा मिश्री, सिंघाड़ा, रेवंदचीनी सब बराबर ले महीन पीस १० माशा जल से नित्य ले तो बहुत दिवस का भी प्रमेह जाय। अथवा बङ्गेश्वर-रस १ रत्ती शहद से और इसके ऊपर पक्के गूलर के फल का चूर्ण शहद से ले तो असाध्य भी प्रमेह जाय। अथवा पक्के गूलर का फल ४ माशा सेंधानोन के साथ खाय तो असाध्य भी प्रमेह जाय।

बङ्गेश्वररस की क्रिया

राँगा चोखा ऽ। गलावे गलती समय ऽ= शुद्धपारा डाले पीछे इसकी थाली में पतली पापड़ी जमावे फिर उसका छोटा छोटा टुकड़ा कर जुदा रक्खे। पीछे पाँच पाँच सेर के बड़े बड़े गोबर के दो उपले पाथ एक उपले के ऊपर २ सेर कसेरू का चूर्ण बिछावे और युक्ति से उसमें मेहँदी का १ सेर चूर्ण मिलावे पारा * और राँगा के टुकड़ों को युक्ति से धर ऊपर दूसरा उपला धरे पीछे उसे युक्ति से निर्वातस्थान में फूँक दे फिर ठंढाकर जब उसका फूल सफेद हो जाय, पूरी तोल उतरे

* जहाँ पर पारा डाले वहाँ पर शिगरफ़ का निकाला हुआ डाले पीछे शुद्धि की अपेक्षा न होगी।

तब काढ़ ले यह बङ्गेश्वररस की क्रिया है। यह बङ्गेश्वररस पृथक्-पृथक् अनोपान से सर्वरोगमात्र को दूर करता है।

सुपारीपाक

दक्षिणी सुपारी ८ टके भर महीन पीस गौके ८ टके भर घृत में उसन ३ सेर गौ के दूध में उसका खिलवाँ मावा करे पीछे इस मावे में नागकेसर २० माशा, नागरमोथा २० माशा, सफेद-चन्दन २० माशा, सोंठि २० माशा, कालीमिरच २० माशा, पीपल २० माशा, आँवला २० माशा, कोहले के बीज २० माशा, जायफल २० माशा, लवङ्ग २० माशा, धनियाँ २० माशा, चिरौंजी २० माशा, तज २० माशा, पत्रज २० माशा, इलायची २० माशा, दोनों जीरा ४० माशा, सिंघाड़ा २० माशा, वंशलोचन २० माशा, इन सबको महीन पीस मावे में मिलावे पीछे, ५० टके भर मिश्री की चाशनी करे उसमें सब औषधियों समेत उस मावे को डाले पीछे उसकी १। टके प्रमाण की गोली बाँधे। १ गोली प्रभात और १ संध्या समय खाय तो प्रमेह, जीर्णज्वर, अम्लपित्त, बवासीर, मन्दाग्नि, शुक्र के दोष और प्रदर इनको यह सुपारीपाक दूरकर शरीर को पुष्ट करता है।

गोखुरूपाक

गोखुरू ।। सेर ले महीन पीस गौ के १ सेर घृत में मकरोवे फिर ५ सेर गौ के दूध में इसका खिलवाँ मावा करे। उस मावे में बेल की गिरी १० माशा, कालीमिरच १० माशा, जायफल १० माशा, समुद्रशोष १० माशा, इलायची १० माशा, भीमसेनी कपूर ३ माशा, पत्रज १० माशा, दालचीनी १० माशा, हल्दी १० माशा, कूट १० माशा, ताल-मखाना १० माशा, अफीम ३ माशा इन ओषधियों से आधी भाँग ले। फिर इन्हें महीन पीस उस मावे में डाले। पीछे ४ सेर मिश्री की चाशनी करे इस पानी में ओषधियों समेत मावा मिलावे। पीछे ५ टंक प्रमाण की गोली बाँधे। १ गोली नित्य सधती खाय तो प्रमेह को दूर कर वीर्यस्तम्भ हो, स्त्रियों को बहुत प्रसन्न करे। अथवा चित्रक, शोधी गन्धक, सोंठि, कालीमिरच, शुद्धपारा, शोधा सिंगीमुहरा, त्रिफला, नागरमोथा ये सब बराबर ले पहिले पारे और गन्धक की कजली करे

पीछे इस कजली में ये औषधें महीन पीस मिलावे। फिर इसमें भाँगरे के रस की एक पुट दे खरल करे पीछे ४ माशा प्रमाण की गोली बाँधे। १ गोली नित्य प्रभातसमय खाय तो अठारह प्रकार का कोढ़ जाय। ये यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं। यह पञ्चाननगुटिका है।

अथवा भीमसेनी कपूर १ माशे, कस्तूरी १ माशे, अफीम ४ माशे, जावित्री ४ माशे इन सबको नागरबेल के पत्तों के रस में पीसे। पीछे १ रत्ती प्रमाण की गोली बाँधे। १ गोली नित्य दूध, मिश्री के साथ खे तो प्रमेहमात्र दूर हों और वीर्यस्तम्भ हो।

घृतप्रमेह का यत्न

गिलोय, चित्रक, पाढ़, कुड़ा की छाल, भुनी हींग, कुटकी, कूठ ये सब बराबर ले महीन पीस १० माशा घृत में ले तो घृतप्रमेह जाय। अथवा आँवला, हल्दी बराबर ले २० माशा रात में भिजोय प्रभात ही उसी पानी में पीस शहद मिलाय प्रतिदिन पिये तो प्रमेहमात्र जायँ। अथवा शुद्धपारा, शोधी गन्धकसार, शोधी सोनामक्खी, सोंठि, मिरच, बड़ी-पीपल, त्रिफला, शिलाजीत, बेर की मींगी, हल्दी, कैथ ये सब बराबर ले प्रथम पारे और गन्धक की कजली कर उसमें ये औषधें महीन पीस मिलावे फिर भाँगरे के रस की २१ पुट दे फिर ५ माशा प्रतिदिन खाय तो प्रमेहमात्र दूर हों। यह मेघनादरस है।

अथवा शुद्ध पारा और अभ्रक बराबर ले आँवले के रस में ७ दिन खरल करे पीछे १ रत्ती नित्य खाय तो प्रमेहमात्र जायँ यह हरिशंकर रस है।

अथवा छोटी इलायची, भीमसेनी कपूर, भारंगी, जायफल, बड़ा गोखुरू, सालर का बक्कल, मोचरस, शुद्ध पारा, अभ्रक, बङ्गसार इन सबको बराबर ले खरल में महीन पीस २ रत्ती नित्य शहद से ले तो प्रमेहमात्र जाय। यह प्रमेहकुठाररस है।

अथवा बकायन के बीज २० माशा चावल के पानी में पीसे उस में गो का घृत मिलाय प्रतिदिन पिये तो बहुत दिन का भी प्रमेह जाय। यह यत्न सर्वसंग्रह में लिखा है।

आत्रेय के मत से प्रमेहपिड़िका का लक्षण और यत्न लिखते हैं

पित्त की पिड़िका पीली अथवा लाल हो, दाह और ज्वर हो तथा वायु की पिड़िका काली हो, शरीर काँपे, मूतते समय शूल हो, पुरुष विकल हो जाय एवं कफ की पिड़िका सफेद, भदरंगी, शीतल हो, विलम्ब से पके तथा सूजन लिये होती है और ये सब लक्षण मिले हों उसको सन्निपात की पिड़िका कहते हैं।

पिड़िका का यत्न

धव, काहू, कदम्ब, बेर, शीशम, नींब इनके बकल का काढ़ा कर उसके पानी से उस पिड़िका को धोवे तो पिड़िका अच्छी हो।

इन्द्रिय के ऊपर राद पड़ गई हो उसका यत्न

काहू, कदम्ब इनका बक्कल और तेंदू की अंतरछाल इनके काढ़े से धोवे तो इन्द्रिय की राद अच्छी हो।

इन्द्रिय के ऊपर वायु की पिड़िका हो उसका यत्न

भाँगरे का रस, तुलसी का पत्र, पटोल का पत्र इनको काँजी से पीस लेप करे तो वायु की पिड़िका जाय।

पित्त की पिड़िका का यत्न

मुलहठी, कूट, रक्तचन्दन, खस, रोहिष, गेरू, कमलगट्टा ये दूध में पीस पित्त की फुंसियों में लेप करे तो दाह जाय।

इन्द्रिय की फुंसी पक जाय उसका यत्न

शीतल जल से १०० बार के धोये मक्खन का लेप करे तो उसका दाह दूर हो। अथवा कदम्ब, काहू, दाड़िम, खैर, आँवला इनके पत्तों को गर्म जल से पीस लेप करे तो फुंसियों की सन्धि जाय। अथवा त्रिफले के पानी के धोने से राद जाय। अथवा काँजी, मट्ठा, शीतल जल इनके धोने से राद जाय। यह यत्न आत्रेय में लिखा है।

रसरत्नाकर का यत्न

कपास की मींगी भैंस के मट्ठे में ७ दिन खरल करे फिर उसमें से २ माशे नित्य खाय तो लालाप्रमेह जाय।

मूत्रप्रमेह का यत्न

मारा हुआ पारा, बङ्ग अथवा बङ्गेश्वर, सार, अभ्रक इन सबको

बराबर ले शहद में एक दिन खरल करे फिर १ माशे शहद से नित्य खाय तो बहुमूत्र प्रमेह जाय। इस रस के लेने के पीछे पक्के गूलर के फल का १० माशा चूर्ण ऊपर से ले तो बहुमूत्र प्रमेह जाय। यह तालकरस है।

अथवा पंचवक्त्र रस २ माशे ले तो मूत्रप्रमेह जाय। यह सब रसरत्नाकर में है।

इति द्वादशतरङ्गः ॥ १२ ॥

—:(०):—

मेदरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

बहुत आराम के करने, बैठे रहने, दिन के सोने से तथा कफकारी वस्तु, मधुर अन्न, घृत आदि चिकनी वस्तु के खाने से मेद बढ़ता है तब पुरुष कुछ काम नहीं कर सकता, क्योंकि और जो हाड़, मज्जा, वीर्य आदि धातु हैं वे मेद के बढ़ने से पुष्ट नहीं होती हैं और पुरुष निकम्मा हो जाता है।

मेद के अन्य दोष

जिसके मेद हो उसके क्षुद्र श्वास, तृषा, मोह हो, कराहता होवे, शरीर में पीड़ा हो, छींक और पसीना आवे, शरीर में दुर्गन्ध हो, मैथुन करने की सामर्थ्य न हो ये मेदवाले के लक्षण हैं।

मेद का स्थान

प्राणीमात्र के उदर में मेद रहता है वही मेद उदर को बढ़ाता और दीप्यमान करता है, क्योंकि मेद से ढके मार्गवाली वायु कोष्ठ ही में विचरती अग्नि को देदीप्त कर भोजन ही की वासना रक्खे तब मनुष्य के बहुत खाने से अनेक भयंकर रोग बहुत दिनों में उत्पन्न होते हैं। तदनन्तर उदर में रहनेवाली अग्नि और पवन से स्थूल हुए मेदवाले पुरुष को दग्ध करें फिर मेद के बहुत बढ़ने से पेट में रहनेवाले वात, पित्त अग्नि बहुत विकारों को उत्पन्न कर उस पुरुष को मारते हैं।

स्थल का लक्षण

मेद और मांस जब बहुत बढ़ें तब पुरुष के चूतड़, उदरस्थान बढ़

के थलथल हालें और पुरुष का बल, मांस उत्साह जाता रहे उसको स्थूल कहते हैं। स्थूल पुरुष के विसर्प, भगन्दर, विषमज्वर, अतीसार, बवासीर, पामा आदि भयंकर और भी रोग होते हैं।

मेंदवाले रोगी का यत्न

पुराना चावल, मूँग, कुलत्थ, कोदों इनको खाय और लिखना, बस्तिकर्म, खेद, चिन्ता, कुश्ती, मार्ग चलना, शहद और यव का खाना, जागना, खारा रस, अरण्ड के पत्तों की तरकारी, हींग, चावल का माँड़ इतनी वस्तुएँ इस रोगवाले को खानी योग्य हैं। अथवा गिलोय, त्रिफला इनके काढ़े से मेदरोग जाय। अथवा गिलोय, त्रिफला इनके काढ़े में सार और शहद मिलाय पीवे तो मेदरोग जाय। अथवा गर्म अन्न खाय और चावल का माँड़ पिये तो मेदरोग जाय। अथवा बासी ठण्ढे पानी में शहद डाल पीवे तो मेदरोग जाय। अथवा सोंठि, मिरच, पीपल, चित्रक, त्रिफला, नागरमोथा, बायबिड़ंग इनके काढ़े में गुग्गुल डाल पीवे तो यह रोग जाय। अथवा पीपल शहद से प्रति-दिन खाय तो मेदरोग जाय। अथवा बड़वानलरस, शुद्ध पारा, ताम्रे-श्वर, सार, बीजाबोल इन्हें बराबर ले महीन पीस कूकरभाँगरे के रस में ३ दिन खरल करे पीछे २ रत्ती प्रमाण यह बड़वानल रस प्रतिदिन शहद से चाटे तो मेदरोग जाय।

अथवा धतूरे के पत्तों के रस का मर्दन करे तो मेदरोग जाय। यह वैद्यरहस्य में है अथवा चव्य, सफेद जीरा, सोंठि, कालीमिरच, बड़ी पीपल, भुनी हींग, कालानोन ये सब बराबर ले महीन पीस यव के सत्तू के साथ १० माशा प्रतिदिन खाय तो मेदरोग जाय। यह चक्रदत्त में है। अथवा बायबिड़ंग, सोंठि, जवाखार, पीपल, सार इन्हें महीन पीस उसमें ४ माशा यव और आँवला का चूर्ण मिलाय शहद से ले तो यह रोग जाय। अथवा बेर के पत्तों को काँजी के पानी में डाल और इसमें अरणी का रस और शिलाजीत डालकर पिये तो मेद रोग जाय। अथवा गिलोय, इलायची, कुड़ा की छाल, आँवला ये सब अनुक्रम से एक से एक अधिक और इन सबके बराबर गुग्गुल ले फिर इनको एकरस करके ५ माशा शहद के साथ ले तो मेदरोग और

भगन्दरादि सब जायँ। यह चक्रदत्त में है। यह अमृतगुग्गुल है। अथवा त्रिफला, निशोत, मुलहठी, अतीस, चित्रक, अड़ूसा, नींब का बक्कल, अमलतास की गिरी, पीपलामूल, दोनों हल्दी, गिलोय, इन्द्रायण, पीपल, कूट, सरसों, सोंठि ये सब बराबर ले इनका काढ़ा कर उसमें तुलसी का रस अनुमान मुवाफ़िक डाले फिर इसमें तेल पकाय इस तेल का मर्दन करे अथवा बदल दे बस्तिकर्म करे तो मेद और कफ के रोग दूर हों। यह चक्रदत्त में है। यह त्रिफलाद्यतैल है।

पसीने की दुर्गन्ध का यत्न

अड़ूसे के पत्तों के रस में शंख का चूर्ण मिलाय लेप करे तो शरीर की दुर्गन्ध जाय। अथवा बेल के पत्तों में शंख का चूर्ण मिलाय लेप करे तो शरीर की दुर्गन्ध जाय।

काँख में बास आती हो उसका यत्न

नींबू के पत्तों के रस का लेप करे तो काँख की दुर्गन्ध जाय। अथवा हल्दी को अधजली कर पानी में पीसकर लेप करे तो काँख की दुर्गन्ध जाय अथवा नागकेसर, सिरस का बक्कल, पठानीलोध, खस, हड़ की छाल इनको पानी में पीस उबटन करे तो शरीर की दुर्गन्ध जाय। अथवा बेर के पत्तों को जल में महीन पीस शरीर में मर्दन कर स्नान करे तो शरीर की दुर्गन्ध जाय। ये यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं।

शरीर की दुर्गन्ध दूर होने का उबटन

ताम्बूल, हड़ की छाल, कूट इनको पानी में पीस शरीर में मर्दन करे तो शरीर की दुर्गन्ध जाय। यह वृन्द में लिखा है।

स्त्री का अच्छा रंग करने का लेप

हड़ की छाल, पठानीलोध, नींब के पत्ते, अनार का छिलका, आम का बक्कल इनको जल में महीन पीस शरीर में लेप करे तो शरीर की कान्ति बढ़े। यह काशीनाथपद्धति में लिखा है।

काँख की दुर्गन्ध दूर होने का दूसरा यत्न

कूट, दोनों हल्दी इनको गौ के मूत्र अथवा गोबर में पीस लेप करे तो काँख की दुर्गन्ध जाय। और इससे कोढ़ भी जाय। यह चक्रदत्त में है।

शरीर की दुर्गन्ध दूर होने का यत्न

कुलत्थ, कूट, छारछबीला, सफेद चन्दन, भुने यव का चूर्ण, तज, बच इनको जल से महीन पीस शरीर में लेप करे तो शरीर की दुर्गन्ध जाय। यह शार्ङ्गधर में है।

कार्श्यरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

कार्श्यरोग को लौकिक में क्षीण कहते हैं। बादी और सूखे अन्न के खाने से, लंघन, मैथुन और खेद करने से, भय से और धन पुत्रादिक के नष्ट होने के शोच से पुरुष के कार्श्यरोग उत्पन्न होता है।

कार्श्यरोग का लक्षण

कूला, उदर और कन्धे सूख जायँ, नसें निकल आवें, हाड़, चमड़ा शरीर में बाकी रह जाय, शरीर दुर्बल हो जाय ये लक्षण हों तो मनुष्य के क्षीणता का रोग जानिए।

अत्यन्तक्षीण मनुष्य के रोग

संग्रहणी, अफरा आदि रोग हों और बहुत से पुरुष देखने को दुर्बल होते हैं उनके शरीर में मेद का भाग तो थोड़ा और वीर्य का भाग बहुत हो वे मैथुन बहुत करें और बन्धेज भी बहुत रहें और स्त्रियों के गर्भ स्थित कर दें तथा कोई देखने में तो शरीर के पुष्ट परन्तु बल से हीन और मैथुनादिक में सामर्थ्य रहित होते हैं उनको क्षीण कहते हैं। उनके शरीर में मेद का भाग तो बहुत और वीर्य का भाग थोड़ा होता है। उनको भी क्षीण ही कहिए।

कृशनाम क्षीणता का यत्न

जितनी बलकारी[1] और बन्धेज की औषध हैं और जितने पुष्टकारी घृत, दूध, मांस आदिक पदार्थ हैं उनसे क्षीणता का रोग दूर होता है।

क्षीणता का असाध्य लक्षण

जिस पुरुष के स्वतः स्वभाव से क्षीणता और मन्दाग्नि हो और सदा शरीर दुर्बल रहे उसका यत्न नहीं है। ये सब भावप्रकाश में कहे हैं।

१—पुष्टता के यत्न इस ग्रन्थ की समाप्ति में कहे हैं।

उदररोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

सब उदररोग ८ प्रकार के हैं, वे मन्दाग्निवाले पुरुष को निश्चय ही होते हैं और अजीर्ण से अनन्त रोग उपजते हैं। ऐसी ऐसी वस्तुओं के खाने से उदररोग होता है और दोषों का समूह मल और आम का संचय कोष्ठ में हो तो पुरुष के उदररोग होता है।

उदररोग की उत्पत्ति

कुपथ्य से सञ्चित वात, पित्त, कफ जल के ले चलनेवाली नसों को रोके और हृदय की पवन अग्नि, गुदा की पवन इनको बहुत दूषित कर ८ प्रकार के उदररोग को उत्पन्न करते हैं।

उदररोग का सामान्य लक्षण

पेट में अफरा हो, चलने फिरने की सामर्थ्य जाती रहे, शरीर दुर्बल हो, मन्दाग्नि हो, शरीर में सूजन और हाड़ों में हड़फूटन हो, मल-मूत्र अच्छे प्रकार न उतरे और शरीर में दाह हो ये लक्षण हों तो जानिए कि इसके उदररोग है।

आठ प्रकार के उदररोग

वात का १, पित्त का २, कफ का ३, सन्निपात का ४, फिया (तिल्ली) का ५, मल बन्द होने का ६, चोट लगने का ७, जलोदर का ८।

वातोदर का लक्षण

जिस पुरुष के पैर, हाथ, नाभि में सूजन हो, कोख, पसुली, कटि, पीठ और सन्धि-सन्धि में पीड़ा हो, रूखा खाँसे, शरीर भारी रहे, मल उतरे नहीं, शरीर की त्वचा, नख, नेत्र काले पड़ जायँ, पेट में पीड़ा और अफरा हो, पेट बोला करे ये लक्षण हों तो वात का विकार जानिए।

पित्तोदर का लक्षण

जिसके ज्वर, मूर्च्छा, दाह और तृषा हों, मुख कड़ुआ रहे, घुमेर, अतीसार ये सब रोग हों और शरीर की त्वचा पीली, हरी हो, शरीर में पसीना आवे और दाह हो, धुएँ को लिये डकार आवे, त्वचा का स्पर्श कोमल हो, त्वचा पकी सी हो जाय ये लक्षण हों तो पित्त का उदररोग जानिए।

कफोदररोग का लक्षण

जिसके शरीर में पीड़ा हो, सोवे बहुत, सूजन हो, शरीर भारी रहे, हिया दूखे, भोजन में अरुचि हो, देर में पचे, शरीर ठंढा रहे और पेट बोला करे, ये लक्षण हों उसके कफोदर कहिए और जिसमें ये सब लक्षण मिले हों उसे सन्निपात का उदररोग कहिए।

दुष्योदर का लक्षण

जिस पुरुष का शत्रु किसी प्रकार सिंह का नख, मूँछ का बाल, किसी दुष्ट जानवर का मल, मूत्र, रुधिर, वीर अथवा जहर किसी अन्नपानादि में मिलाकर खिवा दे उसके दुष्योदर उत्पन्न होता है। शरीर का रुधिर, वात, पित्त, कफ ये सब कुपित होकर दुष्योदर सन्निपात का भयंकर उदररोग उत्पन्न करते हैं। फिर वह उदररोग वर्षा ऋतु में कोपित होकर पुरुष को बहुत दुःखित व मूर्च्छितकर मृत्यु तुल्य कर दे उसको दुष्योदर कहिये।

प्लीहोदर अर्थात् फिया का लक्षण

गर्म वस्तु के खाने और पीने से दुष्ट हुआ रुधिर कफ से प्लीहा को बढ़ाता है, पीछे बढ़ा फिया बाईं पसुली में उदर के रोगों को उत्पन्न करता है इससे पीड़ित मनुष्य के मन्दाग्नि, जीर्णज्वर हो, बल जाता रहे, ये लक्षण हों तो प्लीहोदर कहिए।

मल के बद्धगुदोदर का लक्षण

जो पुरुष बिना शोधा अन्न खाय जिसमें बाल, काँकर, रेत, धूलि ये मिले हों उसके दोषों को लिये मल का संचय होवे तब उस पुरुष के कष्ट से थोड़ा गुदा के द्वारा मल उतरे और उस पुरुष का हृदय, नाभि बढ़ जाय उसको वैद्य बद्धगुदोदर कहते हैं।

क्षतोदर का लक्षण

जो पुरुष पाषाण आदि रेत से मिला अन्न खाय उस पुरुष की आतों को काट कर अन्न जल के सदृश होकर गुदा के द्वारा निकले और उसकी गुदा रात दिन बहा करे तथा उसकी पेड़ू बढ़े और पेड़ू में पीड़ा हो उसको क्षतोदर कहते हैं। क्षतोदर और बद्धगुदोदर में कुछ थोड़ा सा अन्तर है।

जलोदर का लक्षण

घृत को खाय, बस्तिकर्म कराय, जुलाब ले, वमन करके जो पुरुष शीतल जल पिये उसके जल की बहनेवाली नसें दूषित होकर स्नेह से लिपी हुई नसों में जलोदर को उत्पन्न करती हैं तथा उस शीतल जल से उत्पन्न हुआ जलोदर नाभि की ओर पास गोल और चिकना हो पानी की मशक समान बहुत बढ़े तब मनुष्य उससे बहुत दुःखी हो और उसका शरीर काँपे ये लक्षण हों उसको जलोदर कहिए।

ये सब आठों उदररोग उत्पन्न होते ही कष्टसाध्य हैं और बलवान् पुरुष के जलोदर तत्काल हो सो साध्य है।

उदररोगों का असाध्य लक्षण

बद्धगुदोदर हो तो एकपक्ष उपरान्त असाध्य जानिए और जलोदर असाध्य ही है अथवा पसलियों में शूल चले, नेत्रों के ऊपर सूजन हो, इन्द्रिय बाँकी हो, शरीर की त्वचा गल जाय, शरीर का रुधिर और मांस सब जाता रहे और अग्नि मन्द हो जाय वह पुरुष असाध्य जानिए।

पुनः असाध्य लक्षण

पसलियों में शूल चले, पसली टूटी सी हो जाय, अन्न से रुचि जाती रहे, शरीर में सूजन हो, अतीसार हो और उदर खाली हो परन्तु भरा सा दीखे तो उदररोग असाध्य जानिए।

वातोदर का यत्न

दशमूल के काढ़े में अरण्ड का तेल डाल पिये तो वातोदर जाय। अथवा त्रिफले के रस में गोमूत्र डाल पीवे तो वातोदर जाय। अथवा कूट, दन्ती, जवाखार, पाढ़, काला नोन, सेंधा नोन, साँभर नोन, खुरासानी बच, सोंठि ये सब बराबर ले महीन पीस ६ माशा गर्मजल से ले तो वातोदर जाय। यह कूटादि चूर्ण है।

अथवा इकड़िया (एकपोत्या) लहसुन १०० टके भर ले उसको पीस १६ सेर पानी में ओटावे, ओटते ही में सोंठि १ टका, काली-मिरच १ टका, पीपल १ टका, साँठी की जड़ १ टका, काला नोन १ टका, बिड़नोन १ टका, त्रिफला ३ टका, दन्ती १ टका, सहँजने का बक्कल १ टका, अजवाइन १ टका, गजपीपल १ टका, निशोत ६

टका भर ले इन्हें महीन पीस उस लहसुन के काढ़े में डाले और इसमें
तेल २ सेर डाल मधुरी आंच से पकावे, जब सब रस और ओषध जल
जायँ तेलमात्र रह जाय तब उतार बासन में भर राखे पीछे २० माशा
प्रातःकाल बलानुसार पीवे तो सब उदर के रोग, मूत्रकृच्छ्र, उदावर्त,
अण्त्रवृद्धि, पार्श्वशूल, आमशूल, अरुचि, फिया, अष्ठीला, हड़फूटन ये
सब वायु के रोग महीना भर सेवन करने से जायँ।

पित्तोदर का यत्न

जुलाब के लेने से पित्तोदर जाय।

कफोदर का यत्न

निशोत का चूर्ण १० माशा ऊटनी के दूध में डाल और अरण्ड
का तेल २० माशा, और पीपल, पीपलामूल, चित्रक ये सब ओषध अधेले
भर डाल उस दूध को एक महीने गर्म कर पिये तो कफोदर जाय।

सन्निपात के उदररोग का यत्न

सोंठि, त्रिफला इनका काढ़ा कर उसमें दही और तेल अथवा घृत
डाल पकावे, पीछे उस तेल अथवा घृत को खाय तो सन्निपात का
उदररोग जाय। अथवा गर्म दूध में अरण्ड का तेल और गोमूत्र डाल
पीवे तो वायु का उदररोग जाय। अथवा मठ्ठे में कालानोन, पीपल
डाल पीवे तो वातोदर जाय। अथवा मिश्री, कालीमिर्च जल से पीवे
तो पित्तोदर जाय। अथवा अजवायन, झाऊ की जड़, सफेद जीरा,
सोंठि, कालीमिर्च, छोटी पीपल इनको महीन पीस ६ माशा गर्म
पानी के साथ ले तो कफोदर जाय। अथवा सोंठि, कालीमिरच, बड़ी
पीपल, जवाखार, सेंधा नोन इन्हें महीन पीस ६ माशा गर्म पानी से
पिये तो सन्निपात का उदररोग जाय।

नारायणचूर्ण

अजवाइन, झाऊ का बक्कल, धनियाँ, त्रिफला, बड़ी पीपल, काला-
जीरा, अजमोद, पीपलामूल, बायबिड़ंग ये सब बराबर ले और दन्ती
एक ओषध के हिस्से से त्रिगुणित ले और निशोत एक ओषध के
भाग से दूनी ले तथा इन्द्रायण एक ओषध के भाग से दूनी ले थूहर
का दूध सबसे चौगुना ले इन सबको महीन पीस थूहर के दूध की १

पुट दे फिर सुखाकर ६ माशा गर्म पानी से ले तो उदर और वायु के रोगों को दूर करे और इसको बेर के बक्कल के काढ़े के साथ ले तो वायु के रोगों को दूर करे, और दारू से ले तो अफरा जाय, एवं मठा से ले तो बद्धकोष्ठ जाय, दाड़िम के रस के साथ ले तो बवासीर जाय और गर्म पानी से ले तो अजीर्ण जाय। यह चूर्ण भगन्दर, पाण्डु, खाँसी, श्वास, क्षयो, संग्रहणी, कोढ़, मन्दाग्नि और विषमात्र को दूर करे। जैसे भगवान् का सुदर्शन चक्र दैत्यों को मारे वैसे ही यह नारायण चूर्ण रोगों को दूर करता है।

थूहर का दूध, दन्ती, त्रिफला, बायबिड़ंग, कटेली, चित्रक, कूकर भाँगरा ये सब दो सेर ले और इससे चौगुना पानी डाले और १ सेर गौ का घृत डाल मधुरी आँच से पकावे। जब ये सब जल जायँ और घृतमात्र रह जाय तब उतार पात्र में भर रक्खे फिर इसमें से १० माशा ले तो जुलाब लग जाय और उदर के रोगों को दूर करे। यह नाराचघृत है।

अथवा साँठी की जड़, दारुहल्दी, परवर, कुटकी, हड़ की छाल, नींब की छाल, देवदारु, सोंठि, गिलोय ये सब बराबर ले इनको जवकुटकर काढ़ा बनाकर प्रतिदिन गोमूत्र और गुग्गुल डाल पिये तो कफोदर, पसली का शूल, श्वास, पाण्डुरोग ये सब जायँ। ये सब भावप्रकाश में लिखे हैं। यह पुनर्नवादिकाथ है।

अथवा अजवायन १४ टके, भुना सुहागा २ टके भर इनका चूर्ण कर ९ माशा गर्म जल से ले तो उदर के सब रोग जायँ। अथवा पीपल ५ टके भर ले और उसको थूहर के दूध में १७ दिन तक भिगो रक्खे, फिर छाया में सुखाकर महीन पीस ४ माशे जल से एक दिन के अन्तर से ले और इसके ऊपर मठा, चावल खाय तो उदर का रोग जाय। यह उदरामयहरचूर्ण है।

अथवा पीपल १००० ले उसमें थूहर के दूध की ७ पुट दे। अथवा हड़ के चूर्ण में थूहर के दूध की सात पुट दे फिर उसमें से ५ माशा गोमूत्र के साथ ले तो उदर के सब रोग जायँ। अथवा दन्ती, पीपल, सोंठि ये सब बराबर ले और इन सबसे दूना चूख ले तथा इनसे चौथाई

बिड़नोन ले फिर इनको महीन पीस ५ माशा गर्म पानी से ले तो फिया, गोला, मन्दाग्नि, पाण्डुरोग, उदररोग इन सबको दूर करे। अथवा आक के पत्तों में सेंधा नोन डाल मटकी में भर उसके मुँह को बन्द कर फूँक दे फिर उसको पीस २० माशा प्रतिदिन मट्ठे से अथवा ग्वार के पट्ठे से ले तो उदररोग जायँ अथवा गुड़ और हड़, वा गुड़ और पीपल १० माशा नित्य खाय तो उदररोग, सूजन, पीनस खाँसी, अरुचि, जीर्णज्वर, बवासीर, संग्रहणी, कफ और वायु के रोग इन सबको यह दूर करे। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में हैं।

जलोदर का यत्न

नीलाथोथा, आमलासार गन्धक, पीपल, हड़ की छाल ये सब बराबर ले इनको महीन पीस थूहर के दूध में ५ दिन खरल करे फिर १ माशे प्रतिदिन गर्म जल से ले तो जलोदररोग जाय। इस रस के ऊपर चावल खाय और इमली का शर्बत पिये। यह उदरारिरस योगतरङ्गिणी में है।

अथवा सोंठि, कालीमिरच, पीपल, पाँचों नोन, सज्जी ये सब बराबर ले इन सबकी बराबर शोधा जमालगोटा ले इन सबमें दन्ती के रस की ३ पुट दे फिर बिजौरे के रस की ३ पुट दे खरलकर फिर छाया में सुखावे फिर आधरत्ती प्रमाण उसमें से खाय तो उदररोग, फिया, गोला, अफरा, शूल, बवासीर, इन सबको दूर करे और इसको नेत्र में आँजने से सर्प का विष दूर होता है। यह उदयभास्कररस रस-रत्नप्रदीप में है।

अथवा आक का दूध २ टके भर, कुड़ा की छाल १ टके, थूहर का दूध ६ टके, निशोत १ टके, हड़ की छाल १ टके, कबीला १ टके भर इन सबको महीन पीस इकट्ठा कर ५ सेर पानी में घृत समेत मधुरी आँच से पकावे जब पानी आदि सब जल जायँ और घृतमात्र रह जाय तब उतार बासन में भर रक्खे फिर इस घृत के जितने बूँद खाय उतने ही दस्त जुलाब में आवें और उदररोग, सूजन, भगन्दर, गोला इन सबको यह घृत दूर करे। यह बिन्दुघृत वैद्यविनोद में है।

इति त्रयोदशस्तरङ्गः १३

—:०:—

शोथनामरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

जो पुरुष वमन, विरेचन और ज्वरादि से अथवा लंघनादि से दुर्बल हो उसके खारी, खट्टी, तीखी, भारी वस्तु तथा दही, कच्ची और मोटी वस्तु, शाक और विरुद्ध वस्तु, गेहूँ की मैदा की वस्तु, विष का मिला अन्न इनके खाने से और बवासीर के रहने से पेट में आम होता है। जुलाब लेने से और चोट के लगने से, कच्चे गर्भ के पड़ने से, जुलाब आदि पाँच कर्म में कुपथ्य के करने से दुर्बल मनुष्य के शोथ का रोग होता है। वह शोथ का रोग ९ प्रकार का है। वात का १, पित्त का २, कफ का ३, वातपित्त का ४, वातकफ का ५, कफपित्त का ६, सन्निपात का ७, चोट लगने का ८, विष का ९।

शोथ का पूर्वरूप

शरीर में वात रहे व सोने से नसों में पीड़ा हो और शरीर भारी रहे तो इन लक्षणोंवाले के शोथ का रोग होगा।

शोथ का सामान्य लक्षण

अपने कारण से दुष्ट हुए वात, रक्त, पित्त, शरीर की बाहरी नसों में कफ को प्राप्तकर शरीर के त्वचा, मांस के समूह को बहुत फुला देते हैं इससे इसको शोथ का रोग कहते हैं। यह शोथ का रोग शरीर को भारी करे और मन में आवे जहाँ हो जाय और शोथ में उष्णता हो, नसें निकल आवें, रोमाञ्च हो, शरीर का वर्ण और का और हो जाय ये लक्षण हों तो शोथ का रोग जानिए। अथवा कालीसूजन हो जाय तो वह सेंक आदि के करने से अच्छी हो और दिन में सूजन बहुत हो तो वात की सूजन जानिए।

पित्त की सूजन का लक्षण

शरीर की त्वचा कोमल, गन्धयुक्त, पीली और ललाई लिये हो, शरीर घूमे, ज्वर हो, पसीना बहुत आवे, तृषा लगे, मद हो, शरीर का स्पर्श न सुहावे, नेत्र लाल हों, शरीर की त्वचा में दाह बहुत हो ये लक्षण हों तो पित्त की सूजन कहिए।

कफ की सूजन का लक्षण

जिस सूजन में शरीर भारी रहे और त्वचा पीली हो, नींद अधिक आवे, अग्नि मन्द हो, सूजन ऊँची न हो, भोजन से रुचि जाती रहे,

रात्रि में बढ़ जाय ये लक्षण कफ की सूजन के कहिए। अन्यान्य दोषों के जिसमें लक्षण मिले हों, उसे दो दोषों की सूजन कहिए और जिस सूजन में सर्वदोषों के लक्षण मिलें उसको सन्निपात की सूजन कहिए।

चोट लगने से उपजी सूजन का लक्षण

शस्त्रादिक के लगने से, शीत पवन लगने से, दही के खाने से, भिलावाँ के लगने से, कौंच लगने से, जमींकन्द आदि के लगने से उपजी सूजन एक जगह से सब शरीर में फैल जाय और उसमें दाह बहुत हो, लाल हो आवे और पित्त के सर्व लक्षण सूजन में हों उसे शस्त्रादिक के लगने की सूजन जानिए।

विषैले जानवर से उपजी सूजन का लक्षण

विषैले जानवर के मूत्र के स्पर्श करने से, दाँत के लगने से, दाँत काटने से, नख के लगने से, विषैले जानवर के मल-मूत्र, वीर्य के स्पर्श करने से, विषवृक्ष की पवन के स्पर्श करने से, जहर के खाने से अथवा लगने से सूजन हो।

इन सबका लक्षण

जिस सूजन में पीड़ा बहुत हो, शरीर में बहुत फैले, दाह हो तब जानिए कि यह विष की सूजन है।

सूजन का उपद्रव

श्वास, तृषा, छर्दि हो, शरीर दुर्बल हो जाय, ज्वर हो, भोजन से रुचि जाती रहे ये उसके उपद्रव हैं इसका यत्न न करे।

सूजन का कष्टसाध्य लक्षण

पेड़ू से ले स्तनों तक सूजन हो तो कष्टसाध्य है और सर्व शरीर में हों वह असाध्य है।

सूजन का पुनः असाध्य लक्षण

पुरुष के तो प्रथम पैर से ले मुख के ऊपर तक सूजन चढ़े और स्त्री के प्रथम मुख से पैर तक हो वह सूजन असाध्य है। इसका यत्न नहीं है। प्रथम पेड़ू में हो और फिर सर्वत्र फैले वह भी असाध्य है।

शोथरोग (सूजन) का यत्न

सोंठि, साठी की जड़, अरण्ड की छाल, बड़ी पीपल, पीपलामूल,

चव्य, चित्रक इनका काढ़ा ले तो वायु का शोथ जाय। अथवा परवर के पत्ते, त्रिफला, नींब की छाल, दारुहल्दी इनका काढ़ा गुग्गुल डाल ले तो पित्त की सूजन जाय और तृषाज्वर को भी यह काढ़ा दूर करता है।

कफ की सूजन का यत्न

बड़ी पीपल अथवा हड़ को थूहर के दूध में भिगोवे, ३ दिन पीछे इन्हें सुखाकर महीन पीस १० माशा नित्य १० दिन ले तो कफ और सन्निपात की सूजन जाय।

भिलावें की सूजन का यत्न

तिल और गीली मिट्टी भैंस के दूध में अथवा मक्खन में पीस लेप करे तो भिलावें की सूजन दूर हो। अथवा मुलहठी, काले तिल, भैंस का दूध इनको मक्खन में पीस लेप करे तो भिलावें की सूजन जाय। अथवा सालरवृक्ष के पत्तों को पीस लेप करे तो भिलावें की सूजन जाय। विष को सूजन का यत्न विष के प्रकरण में लिखेंगे।

शोथरोग का सामान्य यत्न

हड़ की छाल, हल्दो, भारंगी, गिलोय, चित्रक, दारुहल्दी, साँठी की जड़, देवदारु, सोंठि इनका काढ़ा ले तो उदर, पैर, मुँह इनको सूजन तुरन्त दूर हो। यह पथ्यादिक्वाथ है।

फोते की सूजन का यत्न

त्रिफले के काढ़े में गोमूत्र डाल पीवे तो फ़ोते की सूजन जाय। अथवा विष खपरे की जड़, देवदारु, सोंठि इनके काढ़े से सूजन जाय। अथवा दन्ती, निशोत, सोंठि, कालीमिरच, बड़ी पीपल, चित्रक इनका काढ़ा ले तो सूजन जाय। अथवा सोनामक्खी, विषखपरा, नींब की छाल, गोमूत्र इनका काढ़ा ले तो सूजन जाय। अथवा साँठी की जड़, दारुहल्दी, सोंठि, सहँजने की जड़, सरसों इन्हें काँजी के पानी में पीस गर्म कर लेप करे तो सब प्रकार कीं सूजनमात्र दूर हों। अथवा गुड़, अदरक या गुड़, सोंठि अथवा गुड़, हड़ की छाल या गुड़, छोटो पोपल इन्हें महीन पीस १० माशा से एक टके भर तक नित्य बढ़ती १ महीने भर ले तो सूजन, पीनस, कण्ठरोग, श्वास, खाँसी, अरुचि, जोर्णज्वर, बवासीर, संग्रहणी, कफवायु के विकार इन सबको यह दूर करे।

अथवा बड़ी पीपल, सोंठि को महीन पीस इनकी बराबर गुड़ मिलाय खाय तो सूजन, आँव, अजोर्ण, शूल इनको दूर करे। अथवा गुड़ ३ टके, सोंठि ३ टके, पोपल ३ टके, मण्डूर १ टके, तिल १ टके भर इन सबको महीन पीस एक जीव करे पीछे १० माशा प्रतिदिन खाय तो सर्वप्रकार की सूजन जाय। अथवा सूखी मूली, साँठी की जड़, दारुहल्दी, रास्ना, सोंठि इनका काढ़ा कर उस रस में तेल पका ले पीछे इस तेल का मर्दन करे तो शूल संयुक्त सूजन जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं।

सूजन की दाह दूर करने का लेप

बहेड़े की मींगी को पानी में पीस लेप करे तो सूजन की दाह दूर हो। अथवा साँठी की जड़, दारुहल्दी, गिलोय, पाढ़, सोंठि, गोखुरू ये सब बराबर ले महीन पोस १० माशा गोमूत्र से पीवे तो सर्व प्रकार की सब शरीर में फैली हुई सूजन दूर हो तथा आठ प्रकार के उदर-रोग और व्रणमात्र जायँ। यह पुनर्नवादि चूर्ण है।

अथवा साँठी की जड़, हड़ की छाल, नींब की छाल, दारुहल्दी, कुटकी, परवर, गिलोय, सोंठि इनका काढ़ा कर गोमूत्र डाल पीवे तो सर्वाङ्ग शोथ, खाँसो, श्वास, उदररोग, पाण्डुरोग इन सबको दूर करे। यह पुनर्नवादिक्वाथ है।

अन्त्रवृद्धिरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

अन्त्रवृद्धि ६ प्रकार को है। वायु की १, पित्त को २, कफ की ३, रुधिर की ४, मेद की ५, मूत्र की ६ तथा अन्त्रवृद्धि एक प्रकार की और है।

अन्त्रवृद्धि का सामान्य लक्षण

अधोगामी पवन अपने ही कारण से कुपित हो अण्डकोश में और जाँघों की सन्धियों में प्राप्त हो उनमें ही विचरती हुई सूजन और शूल को करे और पीछे उन दोनों अण्डकोशों और उनकी खाल के भंडारे को बहनेवाली नसों में वह दुष्ट पवन प्राप्त हो उन नसों को पीड़ित कर और उन दोनों अण्डकोशों और उनके भंडारों को बढ़ावे उसे वैद्य अन्त्रवृद्धि कहते हैं।

वायु की अन्त्रवृद्धि का लक्षण

वायु से भरी हुई लुहार की धौंकनी का सा स्पर्श हो, रूखी हो और बिना कारण ही उसमें पीड़ा हो उसको वायु की अन्त्रवृद्धि कहिए।

पित्त की अन्त्रवृद्धि का लक्षण

जिसका रंग पक्के गूलर के फल के समान हो और जिसमें दाह और पाक हो उसे पित्त की अन्त्रवृद्धि कहिए।

कफ की अन्त्रवृद्धि का लक्षण

जो अन्त्रवृद्धि शीतल, भारी, चिकनी हो और उसमें खुजली चले, कड़ी हो और उसमें पीड़ा थोड़ी हो, तो कफ की अन्त्रवृद्धि जानिए।

रुधिर-दोष की अन्त्रवृद्धि का लक्षण

काली हो, फोड़े जिसमें बहुत हों और पित्त की अन्त्रवृद्धि के लक्षण मिलें उसे रक्तदोष की अन्त्रवृद्धि कहिए।

मेद की अन्त्रवृद्धि का लक्षण

जिसमें सब कफ के से लक्षण हों और कोमल ताड़ के फल सदृश हो उसे मेद की अन्त्रवृद्धि कहिए।

मूत्र रोकने की अन्त्रवृद्धि का लक्षण

जो पुरुष मूत्र के वेग को रोके और मार्ग चले उसके मशक के सदृश कोमल अण्डकोश बढ़ें और उनमें पीड़ा हो तथा मूत्र कष्ट से उतरे उसे मूत्र रोकने की अन्त्रवृद्धि कहिए।

सामान्य अन्त्रवृद्धि की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

वायुकोपकारी वस्तुओं को भोजन करे, शीतल जल में स्नान करे, मल-मूत्र के वेग को रोके, युद्ध में रहे, भार को उठावे, मार्ग चले, अङ्गों को तोड़े और कोई भयंकर वस्तु को करे इन कारणों से पवन संकुचित हो शरीर की छोटी आँतों के अवयवों को अपने स्थान से नीचे प्राप्त कर पेड़ू और जाँघ की सन्धि में अफरा करे पीछे मनुष्य अण्डकोश को हाथ से खींचे तब वह अण्डकोश बोलिके अपने स्थान में बैठ जाय और फिर किसी तरह अफरा हो तब बाहर निकल आवे जिस पुरुष के वायु का संचय बहुत हो उसके आँतों का अवयव

मिलकर अन्त्रवृद्धि को करता है। वह अन्त्रवृद्धि वायु की वृद्धि के तुल्य है। यह रोग असाध्य है।

अन्त्रवृद्धि का यत्न

दूध में अरण्ड का तेल डाल १ महीने तक पीवे तो वायु की अन्त्र-वृद्धि जाय। अथवा गुग्गुल, अरण्ड का तेल ये दोनों गोमूत्र में मिला-कर पीवे तो पित्त की अन्त्रवृद्धि जाय। अथवा रक्तचन्दन, महुआ, कमलगट्टा, खस, कमल की जड़ ये सब बराबर ले दूध में महीन पीस अण्डकोश में लेप करे तो पित्त की अन्त्रवृद्धि, दाह, पीड़ा इनको दूर करे। अथवा सोंठि, कालीमिरच, पीपल, त्रिफला इनका काढ़ा ले उसमें जवाखार, सेंधानोन डाल पीवे तो कफ की अन्त्रवृद्धि जाय। अथवा रूखी कड़ुवी तूँबी का सुहाता-सुहाता लेप करे और अरण्ड के पानी का तरेड़ा दे तो सर्व प्रकार की अन्त्रवृद्धि जाय। अथवा बारम्बार जोंक लगाकर उस जगह का रुधिर कढ़वाया करे, तो रक्तकोप की अन्त्रवृद्धि जाय। अथवा जुलाब से रक्त की अन्त्रवृद्धि जाय। अथवा मिश्री शहद पानी में मिलाकर पीवे तो रक्तकोप की अन्त्रवृद्धि जाय। अथवा शीतल द्रव्य के लेप से रक्त और रक्तपित्त की अन्त्रवृद्धि जाय। अथवा सिझाये तुलसी के पत्तों का सुहाता-सुहाता लेप करे तो मेद की अन्त्रवृद्धि जाय।

गोशा उतर गया हो उसका यत्न

भेंड़ का घृत कांसी की थाली में मथ उसमें राल मिलाय फिर मथे और उसमें थोड़ा शिंगीमुहरा मिलाकर गोशे पर मर्दन करे तो गोशा अच्छा हो जाय।

अन्त्रवृद्धि की औषध

खैर का गूदा ६० माशा, खुरासानी बच ४० माशा, सोंठि ६० माशा, गो का दूध ८ पैसे भर इनमें सालममिश्री ८ पैसे भर मिला-कर १६ माशा नित्य २१ दिन तक अण्डकोशों में लेप करे तो अन्त्र-वृद्धि जाय। अथवा अण्डकोशों की सींवन को पसलियों के नीचे महीन शस्त्र से वेधे तो मूत्र की अन्त्रवृद्धि जाय। ये सर्व यत्न भावप्रकाश में हैं। अथवा रास्ना, मुलहठी, गिलोय, अरण्ड की जड़, अमलतास की

गिरी, गोखुरू, पटोल, अड़ूसा इनका काढ़ाकर अरण्ड का तेल डाल पीवे तो अन्त्रवृद्धि जाय। अथवा हड़ की छाल, चिरायता, धनियाँ ये सब पैसे भर, लवङ्ग पौन पैसे भर, सोनामक्खी ४ माशा इन सबकी बराबर मिश्री ले और मिश्री की बराबर शहद मिलाय प्रति दिन १० माशा खाय तो अन्त्रवृद्धि जाय। यह वैद्यरहस्य में लिखा है।

वर्ध्मरोग (बद) की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

बहुत भारी और कफकारी वस्तु खाय अथवा भारी, पित्तकारी मांस खाने और मिथ्याविहार स्त्रीप्रसंङ्गादि से कुपित हुई पित्तसंयुक्त वायु पेड़ू और जाँघों की सन्धि में सूजन लिये गाँठ को उत्पन्न करती है वह गाँठ ज्वर और शूल को करे तथा अङ्गों में पीड़ा करे उसको वैद्य वर्ध्म (बद) कहते हैं।

बद का यत्न

हड़ की छाल, बड़ी पीपल, सेंधानोन इन सबको बराबर ले महीन पीस अरण्ड के तेल में भूने पीछे ६ माशा इसमें से खाय तो बदरोग जाय अथवा सफेद जीरा झाऊवृक्ष का बक्कल, कूठ, गेहूँ, बेर के पत्ते इन्हें काँजी में महीन पीस बद पर लेप करे तो बद का रोग जाय। यह भावप्रकाश में है। अथवा तत्काल के मारे हुए कौआ के भीतर के मल को थोड़ा गर्मकर बद पर बाँधे अथवा लेप करे तो तत्काल बद अच्छी हो। यह वैद्यरहस्य में है। अथवा कुंदरू को भेंड़ के दूध में पीस लेप करे तो बद अच्छी हो।

गलगण्ड १, गण्डमाला २, अपची ३, ग्रन्थि ४, अर्बुद ५ इन सब रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

जिसके गले में अण्डे की सी कठोर सूजन हो, लटके और बड़ी हो या छोटी हो उसे वैद्य गलगण्डरोग कहते हैं।

गलगण्ड का सामान्य लक्षण

वायु और कफ दोनों गले में दुष्ट होकर गले के बीच मेद को पकड़ शनैः शनैः अण्ड की तरह अपने चिह्न को लिये लिच-पिचाय देते हैं उसे गलगण्ड कहिये। वह गलगण्ड ३ प्रकार का है। वात १ कफ २ मेद ३।

वायु के गलगण्ड का लक्षण

जिसमें पीड़ा बहुत हो, गले की नसें काली हों या लाल हों, उसमें कठोरता हो और देर से बढ़े तथा पके नहीं, मुँह विरस हो जाय एवं उसका तालू और गला सूखे ये लक्षण जिसमें हों उसे वायु का गल-गण्ड कहिए।

कफ के गलगण्ड का लक्षण

गले में अण्डकोश की भाँति लटकती हुई सूजन स्थिर रहे और भारी हो, खुजली बहुत हो तथा शीतल हो, देर से बढ़े और देर से पके, पीड़ा कम हो और उसका मुख मीठा हो, तालू और गला कफ से लिपासा रहे उसे कफ का गलगण्ड कहिए।

मेद के गलगण्ड का लक्षण

जो गलगण्ड चिकना, कोमल, पीला हो और उसमें खुजली और पीड़ा हो, गले में घिया की भाँति लटके, उसकी जड़ थोड़ी हो, रोगी की देह के अनुसार घटे, बढ़े और उसका मुख चिकना हो, गले में ही बोले ये लक्षण हों तो उसको मेद का गलगण्ड कहिए।

गलगण्ड का असाध्य लक्षण

जिसके श्वास कठिनता से आवे और सब शरीर कोमल हो, स्वर अच्छा न निकले और वह १ वर्ष नाँघि जाय, भोजन से रुचि जाती रहे, शरीर क्षीण हो जाय तो वह गलगण्डवाला मर जाय।

गलगण्ड का लक्षण

जिसके गले, काँख, कन्धों, पेड़ू और जाँघों की सन्धियों में बेर अथवा आँवले के प्रमाण मेद और कफ की बहुत सी गाँठें पड़ जायँ उसे वैद्य गण्डमाला का रोग कहते हैं।

अपची का लक्षण

जो गण्डमाला बहुत दिनों की हो जाय और उसमें ये लक्षण हों कि गाँठ पक जाय और बहने लग जाय तथा बहुत बढ़ जाय तो उसे अपची कहिए।

अपची का असाध्य लक्षण

पसुली में शूल हो, खाँसी, ज्वर और वमन हो ये लक्षण हों तो असाध्य जानिये।

ग्रन्थि (गाँठ) का लक्षण

वात, पित्त, कफ ये रुधिर, मांस, मेद और नसों को दूषित कर गोल और ऊँची सूजन को लिये गाँठ को पैदा करते हैं उसे वैद्य ग्रन्थिरोग कहते हैं। ये गाँठें ५ प्रकार की हैं। वायु की १, पित्त की २, कफ की ३, मेद की ४, नसों ५।

वायु की गाँठ का लक्षण

प्रथम वह गाँठ त्वचा को खैंचकर बड़ी हो पीछे उसमें चटके चलें, व्यथा बहुत हो, जब फूटे तब निर्मल रुधिर निकले।

पित्त की गाँठ का लक्षण

जिसमें आगसी बले और खिंचाव और जलन अधिक हो, जिसका लाल अथवा पीला रंग हो और जो फूटे तो उसमें से बहुत बुरा रुधिर निकले उसे पित्त की गाँठ कहिये।

कफ की गाँठ का लक्षण

जो गाँठ शीतल हो और जिसका वर्ण आरसी सा हो, थोड़ी पीड़ा हो, खुजली जिसके बहुत हो, पत्थर के सदृश गाँठ हो, देर में बढ़े और फूटने पर भदरंगी राद और रुधिर निकले ये लक्षण हों तो कफ की गाँठ कहिये।

मेद की गाँठ का लक्षण

जो गाँठ शरीर के सदृश बढ़े घटे और चिकनी हो, बड़ी हो उसमें खुजली चले, पीड़ा बहुत हो और जब वह फूटे तब खली और घृत के सदृश मल निकले उसे मेदे की गाँठ कहिए।

नसों की गाँठ का लक्षण

जो गाँठ निर्बल पुरुष के खेद से उपजे, नसों को संकोचित करे, वायु की गाँठ को उपजावे, ऊँची और गोल हो, उसमें पीड़ा हो, कोमल हो अथवा कड़ी हो, पीड़ा भी नहीं हो और मर्मस्थान में हो तो निश्चय असाध्य है या कष्टसाध्य है।

मर्मस्थान कहते हैं

गला, गाल, कन्धे, शरीर की सन्धि, हृदय, गुदा का निकट स्थान और पीठ ये मर्मस्थान हैं।

अर्बुदरोग की उत्पत्ति

जो पुरुष मांस बहुत खाता हो और अन्नादि थोड़ा खाय उसके

वायु, पित्त, कफ दुष्ट होकर रुधिर और मांस को बिगाड़ शरीर में अथवा शरीर के एकदेश में बड़ी गोल स्थिर मांस की गांठ करते हैं। उसमें थोड़ी पीड़ा हो और उसकी जड़ थोड़ी देर से बढ़े, पके नहीं उसको वैद्य अर्बुदरोग कहते हैं। वह अर्बुद रोग २ प्रकार का है। रक्तार्बुद १ मांसार्बुद २।

रक्तार्बुद का लक्षण

अपने कारण से दुष्ट हुआ पित्त रुधिर और नसों को संकुचितकर उनमें पीड़ा करे और उनके मांस का पिण्डकर मांस के अंकुरों से उसको ढके और बढ़ावे पीछे उसे कुछेक पकाय रुधिर संयुक्त निरन्तर बहुत बहावे उसे रुधिर का अर्बुद कहिये। यह असाध्य है रक्त का नाश होने से शरीर में और उपद्रव पाण्डुरोग आदि को करता है इसे रक्तार्बुद कहिये।

मांसार्बुद का उत्पत्ति संयुक्त लक्षण

जिस पुरुष के मूका घूंसा आदि किसी तरह की शरीर में चोट लगे उस जगह का मांस दुष्ट होकर वहाँ पीड़ा रहित सूजन करे और उस सूजन का देह के सदृश रंग हो, चिकनी हो, पके नहीं, पत्थर के सदृश कठोर और स्थिर हो उसे मांसार्बुद कहिये। यह भी असाध्य है।

अध्यर्बुद का लक्षण

जो अर्बुद मर्मस्थान में उपजे अथवा नसों में उपजे और वह छोटा भी हो उसे अध्यर्बुद कहिये।

अर्बुदरोग के न पकने का कारण

यह कफ, मेद की अधिकता से नहीं पकता इससे असाध्य है।

गलगण्ड आदि रोगों का अनुक्रम से यत्न

सरसों, सहँजने के बीज, सन के बीज, अलसी, यव, मूली के बीज इन्हें बराबर ले खट्टे मट्ठे में महीन पीस लेप करे तो गलगण्ड, गण्ड-माला, गांठ इन सब रोगों को तत्काल दूर करे। अथवा सरसों जल-कुम्भी की राख इन दोनों को तेल में पीस लेप करे तो गलगण्ड जाय। अथवा शंखाहूली को जल से पीस, छान प्रातःकाल १५ दिन पीवे

और ऊपर से बहुतसा गो का घृत खाय तो गलगण्डरोग जाय। अथवा कुटकी को महीन पीस पके घिया के फल में रात्रि में भिगोय राखे पीछे उसी जल में उसे महीन पीस, छान ७ दिन पीवे तो गलगण्ड रोग जाय। अथवा गिलोय, नींब की छाल, बालछड़, तनु की छाल, पीपल, दोनों खरेंटी, देवदारु ये सब बराबर ले इनके काढ़े के रस में तेल पकावे पीछे इस तेल को २० माशा नित्य १५ दिन पीवे तो गलगण्ड जाय। यह अमृतादि तैल है।

अथवा यव, मूँग, परवर, कड़ुवी वस्तु, रूखा अन्न, वमन, रुधिर का कढ़ाना ये सब गलगण्डवाले को अच्छे हैं। अथवा जलकुम्भी, सेंधा नोन, पीपल इन्हें महीन पीस प्रातः समय सोंठि डाल पीवे तो गण्डमाला जाय। अथवा बरुणा की जड़ के काढ़े में शहद डाल पीवे तो गण्डमाला जाय। अथवा कचनार का बक्कल ५ टके, सोंठि १ टके, पीपल १ टके, मिरच १ टके, हड़ की छाल ५ टके, बहेड़े की छाल ५ टके, आँवला ५ टके भर, बरुणा की छाल १० माशा, तज ४ माशा, पत्रज ४ माशा, इलायची ४ माशा इन्हें महीन पीस इनकी बराबर शोधा गुग्गुल मिलाय सबको एक रस कर ४ माशे प्रभात ही जल से नित्य ले तो गलगण्ड, अर्बुद, गांठ, गोला, कोढ़, भगन्दर इन रोगों को पृथक् पृथक् अनोपान से यह कचनार गुग्गुल दूर करता है।

अथवा बायबिड़ंग की जड़ का काढ़ा कर उसमें जलभाँगरे का रस डाले पीछे अनुमान मुवाफ़िक़ तेल डाल मधुरी आँच से पकावे जब रस जल जाय और तेलमात्र रह जाय तब इसमें सिंदूर डाल उतार ले पीछे इसका लेप करे तो कण्ठमाला जाय। यह चक्रमर्द तैल है।

अथवा चिरमिटी (सफ़ेद घुँघचिल) का पञ्चाङ्ग ले जल में महीन पीस अनुमान मुवाफ़िक़ उसमें तेल डाल मधुरी आँच में पकावे जब रस जल जाय तेलमात्र रहे तब इस गुञ्जातैल का मर्दन करे तो कण्ठमाला जाय।

अपची का यत्न

सरसों, नींब के पत्ते, भिलावाँ इन्हें काली बकरी के मूत्र में महीन पीस लेप करे तो अपची जाय। अथवा रक्तचन्दन, हड़ की छाल,

लाख, खुरासानी बच, कुटकी इन्हें पानी में पीस इसमें तेल पकावे पीछे इस चन्दनादि तैल का मर्दन करे तो अपचीरोग जाय।

अथवा सोंठि, कालीमिरच, बड़ी पीपल, बायबिड़ंग, महुआ, सेंधा-नोन, देवदारु इन्हें पानी से महीन पीस इसमें तेल डाल मधुरी आँच से पकावे जब पानी जल जाय और तेलमात्र रह जाय तब इस शुण्ठयादि तेल की नास ले तो अपची जाय।

गाँठ का यत्न

मूली का खार, शंख का चूर्ण इन्हें पानी में पीस लेप करे तो गाँठ और अर्बुद को दूर करता है। और जात्यादिघृत आगे व्रणरोग में कहा है उससे गाँठ आदि व्रणमात्र सब जायँ।

अर्बुद रोग का यत्न

हल्दी, पठानीलोध, पतङ्ग, धमासा, मैनसिल इन्हें शहद में महीन पीस लेप करे तो मेद का अर्बुदरोग जाय। अथवा मूली का खार, हल्दी, शंख का चूर्ण इन्हें जल में महीन पीस लेप करे तो अर्बुद जाय। अथवा कूट, खारीनोन, बड़ का दूध इन्हें महीन पीस लेप करे और ऊपर बड़ के पत्ते ७ दिन बाँधे तो अर्बुद जाय। अथवा सहँजने की जड़ और सहँजने के बीज, सरसों, तुलसी के पत्ते, यव, कनेर का बक्कल, इन्द्रयव ये सब बराबर ले मट्ठे से महीन पीस लेप करे तो अर्बुद जाय। ये सब भावप्रकाश में लिखे हैं। अथवा लाल अरण्ड की जड़, छीले की जड़ इन दोनों को चावल के पानी में पीस लेप करे तो गलगण्ड जाय। अथवा अमलतास की जड़ चावल के पानी में पीस लेप करे तो कण्ठ-माला जाय। अथवा सँभालू की जड़ जल से पीस लेप करे तो कण्ठ-माला जाय। अथवा सरसों, शूकर की विष्ठा इन्हें बराबर ले पीछे कड़ुवा तेल मिलाय महीन पीस ठिकरे में धरे फिर लेप करे तो कण्ठमाला जाय। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं।

इतिचतुर्दशस्तरङ्गः ॥१४॥

—:०:—

श्लीपदरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

जिसके पेड़ू और जाँघों की सन्धि में बहुत सूजन हो उससे बैठने में पीड़ा बहुत हो और उस पीड़ा से ज्वर होवे वह सूजन वहाँ से बढ़ती हुई क्रम से पैर तक आवे इसे वैद्य श्लीपद कहते हैं। कोई एक आचार्य हाथ, कान, आँखें, ओष्ठ, नाक इनमें भी सूजन हो तो उसे श्लीपद कहते हैं। श्लीपद रोग ४ प्रकार का है—वायु १, पित्त २, कफ ३, सन्निपात ४।

वायु के श्लीपद का लक्षण

काला और रूखा होकर फट जाय और उसमें बहुत पीड़ा और ज्वर हो।

पित्त के श्लीपद का लक्षण

जिसका पीला रंग हो और दाह ज्वर को लिये हो और कोमल स्पर्श हो उसे पित्त का श्लीपद जानिये।

कफ के श्लीपद का लक्षण

चिकना, पीला और स्थिर हो, सफेदी लिये हो तो कफ का श्लीपद जानिये। तीनों श्लीपद कफ की अधिकता से उत्पन्न होते हैं क्योंकि बिना कफ भारीपन और बड़ापन नहीं होता है।

सन्निपात के श्लीपद का लक्षण

जिस श्लीपद में छिद्र बहुत हों, टपकने लग जाय और बाँबी की तरह हो वह श्लीपद सन्निपात का जानिये। यह असाध्य है।

श्लीपद का यत्न

इस रोगवाले को लङ्घन, लेप, स्वेद, जुलाब, रुधिर का कढ़ाना, गर्म वस्तु का खाना ये सब अच्छे हैं। अथवा सरसों, सँहजने की जड़, देव-दारु, सोंठि इन्हें गोमूत्र में पीस लेप करे तो श्लीपद जाय। अथवा सांठी की जड़, सोंठि, सरसों इन्हें कांजी में पीस लेप करे तो श्लीपद जाय। अथवा धतूरे की जड़, अरण्ड की जड़, सँभालू की जड़, सांठी की जड़, सहँजने की जड़, सरसों इन्हें पानी में महीन पीस लेप करे तो श्लीपद जाय। अथवा सहदेई को तालफल के रस में पीस लेप करे तो श्ली-पद जाय। अथवा शाखोटक (सिहोरा) के बक्कल के काढ़े में गोमूत्र डाल पीवे तो श्लीपद जाय। अथवा हल्दी और गुड़ ये दोनों बराबर

ले महीन पीस एकरस कर गोमूत्र से पीवे तो श्लीपद, दाह, कोढ़ इनको दूर करे। अथवा सांठी की जड़, त्रिफला, पीपल ये सब बराबर ले महीन पीस १० माशा शहद से ले तो बहुत दिनों का भी श्लीपद जाय। अथवा बड़ी हड़ के चूर्ण में अरण्ड का तेल मिलाय उसमें गोमूत्र डाल १५ दिन पीवे तो श्लीपद जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं। अथवा भदायरा पीपल, सोंठि, कालोमिरच, बायबिड़ंग इन्हें पानी में महीन पीस पीछे अनुमान का तेल मिलाकर मधुरी आँच से पकावे जब पानी जल जाय और तेलमात्र रह जाय तब उतार ले इसका मर्दन करे तो श्लीपद रोग जाय। अथवा धतूरे के बीज को एक से बढ़ता बीस तक खाय उसके ऊपर शीतल जल पीवे तो श्लीपद जाय। ये सब भावप्रकाश में लिखे हैं। अथवा मंजीठ, महुआ, रास्ना, जल साँठी की जड़ इन्हें काँजी में महीन पीस लेप करे तो पित्त का श्लीपद जाय। अथवा अँगूठे के ऊपर की नसों का रुधिर कढ़ावे तो पित्त का श्लीपद जाय। अथवा कसोंधी की जड़ १० माशा लेकर गोघृत के साथ पीवे तो श्लीपद जाय। अथवा पीपल, त्रिफला, देवदारु इन्हें महीन पोस १० माशा काँजी के पानी में नित्य ले तो श्लीपद, अजीर्ण, वायु के रोग, फिया इन सब रोगों को यह दूर कर भूख को बहुत बढ़ाता है। यह पिप्पल्यादिचूर्ण वृन्द में है।

विद्रधिरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

हाड़ों में रहनेवाले वायु, पित्त, कफ, शरीर की त्वचा, रुधिर, मांस, मेद इन्हें बिगाड़कर शनैः शनैः पुरुष के भयंकर सूजन पैदा करते हैं। वह सूजन गोल हो, पीड़ा को लिये हो, बहुत गहरी और बड़ी हो ये लक्षण जिसमें हों उसे वैद्य विद्रधिरोग कहते हैं। वह रोग ६ प्रकार का है—वायु १, पित्त २, कफ ३, सन्निपात ४, चोट लगने ५, रक्तविद्रधि ६।

वायु की विद्रधि का लक्षण

जो सूजन काली अथवा लाल हो, क्षणभर में थोड़ी हो और उठते ही पकने लग जाय ये लक्षण हों तो वायु की विद्रधि कहिए।

पित्त की विद्रधि का लक्षण

जो सूजन पके पर गूलर के फल सदृश हो, काली हो, ज्वर, दाह को लिये हो और तुरन्त पक जाय तो पित्त की विद्रधि कहिए।

कफ की विद्रधि का लक्षण

पाण्डुवर्ण हो, शीतल और चिकनी हो उसमें पीड़ा थोड़ी हो, बहुत दिनों में पके उसको कफ की विद्रधि जानिए।

सन्निपात की विद्रधि का लक्षण

जिस सूजन में अनेक वर्ण, नानाप्रकार के स्राव हों तथा सूजन गला की घाँटी के निकट और विषम हो, कभी घटे, कभी बढ़े और उसका पकना भी विषमता से हो (कभी जल्दी, कभी देर से पके) तो सन्निपात की विद्रधि जानिए।

चोट लगने की विद्रधि का लक्षण

जिस स्थान में चोट लगे वहाँ की वायु पित्तसंयुक्त हो रुधिर को बिगाड़कर उस स्थान में सूजन को करती है उससे ज्वर, तृषा, दाह हो और उस विद्रधि में पित्त के भी लक्षण मिले हों तो उसे चोट लगने की विद्रधि कहिए।

रक्त की विद्रधि का लक्षण

सूजन काली हो, उसमें फोड़े बहुत हों और पीड़ा, दाह, ज्वर, ये भी हों और पित्त की विद्रधि के सब लक्षण मिलें उसको रक्त की विद्रधि कहिए।

साध्यासाध्य जानने के लिये अन्तर्विद्रधि का लक्षण

पृथक् पृथक् अथवा मिले हुए वायु, पित्त, कफ ये कुपथ्य से कोप को प्राप्त हो शरीर में एक गाँठ गोला के आकार बाँबी की भाँति ऊँची उत्पन्न करते हैं उसको वैद्य अन्तर्विद्रधि कहते हैं। यह अन्तर्विद्रधि १० प्रकार की है—गुदा में १, पेड़ू के मुख में २, नाभि में ३, कुक्षि में ४, पेड़ू और जाँघ की सन्धि में ५, मलाशय का पश्चिमी भाग ६, फिया (तिल्ली) में ७, हृदय में ८, नाभि की दाहिनी ओर ९, तृषा के स्थान में १०।

गुदादि विद्रधियों का लक्षण

गुदा विद्रधि हो तो पवन अच्छी तरह सरे नहीं वा पवन रुक जाय १, पेड़ू के मुख में विद्रधि हो तो मूत्रकृच्छ्र का रोग होता है २, नाभि में विद्रधि हो तो हिचकी बहुत आवें और पेट में अफरा रहे ३, काँख में विद्रधि हो तो उस जगह वायु का कोप हो ४, पेड़ू और जाँघ

की सन्धि में विद्रधि हो तो कटि में पीड़ा बहुत हो ५, मलाशय के पीछे की तरफ़ के स्थान में विद्रधि हो तो पसलियों का संकोच हो और उस जगह पीड़ा बहुत हो ६, फिया में विद्रधि हो तो श्वास नहीं आवे ७, हृदय में विद्रधि हो तो सब अङ्गों में पीड़ा हो सब अङ्ग रुक जायँ और खाँसी हो ८, और नाभि की दाहिनी ओर विद्रधि हो तो श्वास का रोग हो ९, और तृषा के स्थान में विद्रधि हो तो जल बहुत पीवे, धापे नहीं १० ।

विद्रधि का असाध्य लक्षण

नाभि के ऊपर जो विद्रधि पक के फूटे उसकी राद ऊपर जाती और नाभि के नीचे की जो विद्रधि पक के फूटे उसकी राद नीचे जाती है। जिसके विद्रधि की राद नीचे जाती है वह प्राणी जीता नहीं है और जिसके विद्रधि की राद फूटकर ऊपर जाय वह प्राणी अच्छा हो जाता है।

पुनः असाध्य लक्षण

हृदय, नाभि और पेड़ू में विद्रधि का होना अच्छा नहीं है। और स्थान में हो सो अच्छी है। विद्रधि कच्ची वा पक्की वा दग्ध हो गई हो उसको सूजन की तरह देख लीजिए।

भीतर की विद्रधि का असाध्य लक्षण

अफरा, वमन, हिचकी, तृषा बहुत हो तथा पीड़ा अधिक हो ये लक्षण हों तो वह प्राणी मर जाय।

विद्रधि का काष्टसाध्य लक्षण

विद्रधि कच्ची हो, वायु की हो, बड़ी हो अथवा छोटी हो व मर्मस्थान में हो तो कष्टसाध्य जानिए और जो विद्रधि सन्निपात की हो और हृदय, नाभि, पेड़ू में हो तथा मूठी प्रमाण हो तो असाध्य जानिए। मूठी प्रमाण मांस और रुधिर का गोला भी होता है परन्तु विद्रधि तो पक जाती और गोला नहीं पकता है यही, इसमें भेद है।

विद्रधि का लक्षण

सर्व विद्रधिमात्र में जोंक लगाकर उसका रुधिर कढ़ावे तो विद्रधि अच्छी हो। अथवा जुलाब से पित्त की विद्रधि जाय। अथवा विद्रधि

पकी न हो तो उसका सूजन का सा यत्न करे। अथवा अरण्ड की जड़ का काढ़ा कर उसमें तेल अथवा घृत पकाय उससे सुहाता-सुहाता सेंक करे तो वायु की विद्रधि जाय। अथवा यव, गेहूँ, मूँग इनका चूर्ण घृत से पका कर लेप करे तो वायु की विद्रधि बिना पकी भी अच्छी हो। अथवा असगन्ध, खस, महुआ, रक्तचन्दन इनको दूध से महीन पीस इसमें घृत मिलाय गुनगुना कर लेप करे तो पित्त की विद्रधि जाय। अथवा ईंट का रेत, लोहे का मैल, गोबर इन्हें महीन पीस गोमूत्र में सिझाय इसका सुहाता-सुहाता सेंक करे अथवा लेप करे तो कफ की विद्रधि जाय। अथवा दशमूल के काढ़े में तेल अथवा घृत डाल उसका तरेड़ा दे तो विद्रधि के व्रण की सूजन और उसका शूल जाय। अथवा रक्तचन्दन, मंजीठ, हल्दी, महुआ, गेरू इन्हें दूध में सिझाय लेप करे तो रुधिर की और चोट लगने की विद्रधि जाय तथा इसी पूर्वोक्त क्वाथ को पीवे तो कोष्ठ की विद्रधि जाय। अथवा कालाजीरा, इन्द्रायण, तोरई का फल, सफेद पुनर्नवा की जड़, बरने की जड़ में इनको जल औटाय पीवे तो अन्तर्विद्रधि जाय। अथवा सहँजने की जड़ का रस शहद मिलाकर पीवे तो अन्त्र की विद्रधि जाय। अथवा सहँजने की जड़ के काढ़े में सेंकी हींग, सेंधा नोन डाल प्रभात ही पीवे तो अन्त्र की विद्रधि जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं।

व्रणशोथरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

व्रणशोथ रोग ६ प्रकार का है, वायु का १, पित्त का २, कफ का ३, सन्निपात का ४, रुधिर के दुष्टपने का ५, किसी तरह चोट लगने का ६ इन कारणों से प्रथम व्रण होकर उसमें शोथ होता है।

व्रणशोथ का लक्षण

वायु का शोथ-व्रण विषम पके, पित्त का व्रण तत्काल पके, कफ का व्रण देर से पके, रुधिर और चोट लगने का भी तत्काल ही पकता है।

बिना पके व्रणशोथ का लक्षण

जिस व्रणशोथ में गर्मी और सूजन थोड़ी हो, कड़ा हो, उसका त्वचा के सदृश वर्ण हो और उसमें पीड़ा कम हो ये लक्षण हों तो जानिए कि व्रणशोथ कच्चा है।

पके व्रणशोथ का लक्षण

सूजन अग्नि की तरह जले और खार की तरह पके, चींटी और छुरी की तरह काटे, दण्ड की तरह मारे और हाथ से मीड़ने और सुई से बेधने की सी पीड़ा हो और उसमें दाह बहुत हो, उसका रंग और सा हो जाय, अँगुली के दबाने से पीड़ित हो, बैठने, सोने और खड़े रहने से बिच्छू के काटने की सी पीड़ा हो और वह सूजन गाढ़ी हो और कितने ही उसके पकने के यत्न करे परन्तु फूटे नहीं और उस सूजन में ज्वर, तृषा, अरुचि हो ये लक्षण जिसमें हों तो जानिए कि यह सूजन पक गई।

पके व्रणशोथ का लक्षण

जिस व्रण में पीड़ा न हो, ललाई थोड़ी हो, बहुत ऊँचा न हो, उसकी सूजन में तह पड़ जायँ और पीड़ा हो, खुजली बहुत चले सर्व उपद्रवों के दूर होने पर भी वह सूजन न जाय, त्वचा फटने लगे, उसमें अँगुली लगने से पीड़ा हो और राद निकले ये लक्षण हों तो जानिए कि व्रणशोथ पक गया है। उसमें भी वायु बिना पीड़ा नहीं, पित्त बिना पकना नहीं, कफ बिना राद नहीं होती इस कारण पकने के समय ये तीनों ही होते हैं।

परिपाक अवस्था में मतान्तर से और भी लक्षण

उसके यत्न करने में ढील करे तो पित्त बढ़कर कफ को ग्रहण कर रुधिर को पकाय राद को करे। राद के न निकलने से यह दोष है। जैसे तृणों के समूह को पवन से प्रेरित अग्नि दग्ध करती है वैसे ही वह राद उसके शरीर के मांस और नसों को खा जाती है।

व्रण के कच्चे, पक्के ज्ञान के अर्थ वैद्य के गुण-दोष

जो कच्चे और पके हुए व्रण को जाने वही वैद्य है और उसको न जाने वह चोर की वृत्ति करनेवाला वैद्यरूप चोर है। और जो वैद्य फोड़े या व्रण को कच्चा फाड़े और पक्के को न फाड़े और जिसे कच्चे, पक्के का ज्ञान न हो उसे चाण्डाल जानिए, यह माधवी का पाठ है।

व्रणरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

व्रण ८ प्रकार का है। वायु, पित्त, कफ के दोषों का १ शस्त्रादिक

के लगने का २, वायु, पित्त, कफ का ३, रुधिर का ४, वायु, पित्त का ५, वायु, कफ का ६, कफ, पित्त का ७, सन्निपात का ८।

वायु के व्रण का लक्षण

व्रण स्थिर और कठिन हो, मन्द स्रवे, पीड़ा बहुत हो, अधिक फरके, काला हो ये लक्षण हों उसको वायु का व्रण कहिए।

पित्त के व्रण का लक्षण

तृषा, मोह, ज्वर हो, गीलापन, दाह, पीड़ा हो, फटने से दुर्गंध लिये राद निकले ये लक्षण हों उसे पित्त का व्रण कहिए।

कफ के व्रण का लक्षण

जिसमें अधिक आलस्यपना हो, भारी और चिकना हो, जिसमें पीड़ा कम हो, पीला वर्ण, देर से पके ये लक्षण हों, उसे कफ का व्रण कहिए।

रुधिर के व्रण का लक्षण

व्रण लाल हो और उसमें रुधिर बहुत निकले। जिस व्रण में वायु, पित्त के लक्षण हों उसे वायु, पित्त का कहिए। जिसमें वायु, कफ के लक्षण हों उसे वात, कफ का जानिए। जिसमें कफ, पित्त के लक्षण हों उसे कफ, पित्त का कहिए। जिसमें सर्वलक्षण मिलें उसे सन्निपात का कहिए।

शुद्धव्रण का लक्षण

जीभ के नीचे पेंदे के सदृश जिसकी कान्ति हो। अति कोमल, निर्मल और चिकना हो, पीड़ा न हो जिसकी अच्छी व्यवस्था हो और उसमें राद आदि न निकले तब जानिए कि यह व्रण शुद्ध हुआ।

दुष्टव्रण का लक्षण

जिसमें राद और रुधिर की दुर्गन्ध निकला करे तथा सूजन और स्थिरपना रहे उसे दुष्टव्रण कहिए।

अंकुरित शुद्ध व्रण का लक्षण

जिस व्रण का पीला अथवा धूसरा व्रण हो और राद आदि और अंकुर निकलने लग जायँ उसको अंकुरित व्रण जानिए।

अच्छी तरह व्रण भरता हो उसका लक्षण

जिस व्रण में अंकुर शुद्ध निकलें, गाँठ न हो और सूजन हो उसे भले प्रकार भरा व्रण जानिए।

व्रण के सुखसाध्यादिक लक्षण

जो व्रण मर्मस्थान में न हो, त्वचा और मांस में हो तथा तरुण, बुद्धिमान् और पथ्य से चलता हो ऐसे पुरुष के शीतकाल में हुआ व्रणसुखसाध्य है। वायु, पित्त, कफ का तो व्रण हो, और मेद, मज्जा और मस्तक की गूदी के सदृश स्रवे तो वह अच्छा हो। और शस्त्रादिक की चोट से उत्पन्न व्रण में जो बसा, मेदा, मज्जा और मस्तक की गूदी के सदृश मैल निकले तो वह व्रण अच्छा हो। कोढ़ी, विष खानेवाले और मधुप्रमेहवाले पुरुषों के व्रण हो सो कष्ट से अच्छा हो।

पुनः व्रण का असाध्य लक्षण

जिस व्रण में दाह बहुत हो तथा बाहर से शीतल हो और उस पुरुष का मांस, रुधिर सूख गया हो और श्वास, खाँसी, अरुचि हो, बूढ़ा हो और उस व्रण में राद, रुधिर ही निकला करे, मर्मस्थान में हो तो ऐसा व्रण अच्छा नहीं होता है। वैद्य अपना यश चाहे तो यत्न न करे।

आगन्तुक व्रण की उत्पत्ति और लक्षण

तलवार, शेल, तीर, छुरी, गोली, बाण, फरसा आदि शस्त्र के किसी अङ्ग में लगने से नानाप्रकार की आकृति के व्रण (घाव) होते हैं उन्हीं को आगन्तुक व्रण कहते हैं। वे छः प्रकार की आकृति के हैं— छिन्न १, भिन्न २, विद्ध ३, क्षत ४, विचित ५ और घृष्ट ६।

छिन्नव्रण का लक्षण

जो पुरुष तलवार आदि शस्त्र से टेढ़ा कटा हो अथवा सीधा कटा हो और घाव बड़ा हो तथा मनुष्य के शरीर को पृथ्वी पर डाल दे उसको वैद्य छिन्नव्रण कहते हैं।

भिन्नव्रण का लक्षण

बरछी, शेल, तीर, छुरी, तलवार आदि के लगने से जिसका कोठा किसी तरह कट जाय उस कटे कोठे से रुधिर चले और रुधिर से उदर भर जाय तब ज्वर, दाह को करता है। पीछे वह रुधिर इन्द्रिय, गुदा, मुख, नासिका के द्वारा निकले और मूर्च्छा, श्वास, तृषा, अफरा, अरुचि आदि पैदा करे और मल, मूत्र रुक जायँ, पसीना आवे, नेत्र लाल हो

जाय, मुख में रुधिर की बास, शरीर में दुर्गन्ध आवे, हृदय और पसुली में शूल हो जिसमें ये लक्षण हों उसको भिन्नव्रण कहिए।

विद्धव्रण का लक्षण

जिस पुरुष के भीतर शस्त्र की नोक लगे और उसका अङ्ग फट जाय उसे वैद्य विद्धव्रण कहते हैं।

जिस घाव में तीर आदि रह गये हों उसका लक्षण

जो घाव काला और सूजन संयुक्त हो, फुंसियों को लिये हो, घाव का मांस बुद्बुदे के समान ऊँचा हो और उसमें पीड़ा हो तो उस घाव को शस्त्रसमेत जानिए।

कोष्ठ में तीर रह गया हो उसका लक्षण

शरीर की सातों त्वचा और शरीर की नसों को नाँघिकर पीछे उन नसों को विदीर्ण करे और कोष्ठ के विषे रहा शस्त्र अफरा को करे और व्रण के मुख में अन्न और मल-मूत्र को ले आवे तब जानिये इसके कोष्ठ में शल्य है।

असाध्यकोष्ठ में रहे रुधिर और मल का लक्षण

कोष्ठ में रहनेवाला रुधिर पीला होकर शरीर को पीला करे तथा हाथ, पाँव, मुँह शीतल हों, उसकी नाक की श्वास शीतल चले, नेत्र लाल हों ये लक्षण हों तो उसे असाध्यकोष्ठ का रक्त और मल जानिये। यह असाध्य है।

क्षतव्रण का लक्षण

जिसमें अतिछिन्न, अतिभिन्न के लक्षण नहीं मिलें दोनों के लक्षण मिले हों वह व्रण विषम है।

पिच्चितव्रण का लक्षण

जो अङ्ग मुद्गर, किवाड़ आदि किसी भारी वस्तु से पिचल जाय और हाड़ों में व्रण हो जाय उसको पिच्चितव्रण कहिये।

धृष्टव्रण का लक्षण

जिसके ईंट, पत्थर, भीत आदि किसी तरह की रगड़ से शरीर का चाम घिस जाय, शरीर से दूर हो जाय, उसमें चेप निकला करे और दाह होय उसको धृष्टव्रण कहिये।

जिसके मांस, नस, मर्मस्थान में चोट लगी हो उसका सामान्य लक्षण

जिसके भ्रम हो, प्रलाप हो, गिर पड़े, मोह हो, चैतन्यता जाती रहे, ग्लानि और दाह हो, अङ्ग शिथिल हो जाय, पीड़ा बहुत हो, मांस के जल सदृश जिसका रुधिर हो और सर्व इन्द्रियों का धर्म जाता रहे तथा पीछे कहे ५ मर्मस्थानों में चोट लगे उसका भी यह लक्षण कहिये।

मर्मस्थान, नस, सन्धि, हाड़ ये व्रण से बिंध गये हों उनके पृथक्-पृथक् लक्षण

इन्द्र का धनुष और सावन की बीरबहूटी के सदृश जिसमें रुधिर निकले उसे क्षतव्रण कहिये। वह व्रण वायु के अनेक रोगों को करता है। तीर तलवार आदि शस्त्र से नस बिंध जाय उससे उपजे हुए व्रण ये शरीर कुबड़ा हो जाय, अङ्ग-अङ्ग में पीड़ा हो, चला न जाय और बहुत काल पीछे उसमें अंकुर आवें तब जानिये कि नस बिंध जाने का व्रण है। जिस व्रण में सूजन बहुत हो, बल जाता रहे और सन्धि-सन्धि में घाव लगे हों, तो सन्धि का हिलना जाता रहे और उसमें पीड़ा हो, रात-दिन चैन नहीं पड़े उसके हाड़ में शस्त्रादिक से उत्पन्न व्रण जानिये और जिसके मर्मस्थान में चोट लगने से व्रण हो उसके शरीर का व्रण पीला हो और वह व्रण स्पर्श नहीं सहे।

व्रण के १६ उपद्रव कहते हैं

विसर्प रोग १ पक्षाघात २ शिर घूमे नहीं ३ अपतान ४ प्रमेह ५ उन्माद ६ व्रण में पीड़ा ७ ज्वर ८ तृषा ९ कन्धा नवे नहीं १० खाँसी ११ वमन १२ अतीसार १३ हिचकी १४ श्वास १५ काँपनी १६ ये व्रण के उपद्रव हैं।

अग्निदग्ध की उत्पत्ति और लक्षण

अग्निदग्ध दो प्रकार का है। तैलादिक से दग्ध हुआ १ लोह, अग्नि आदि से दग्ध हुआ २। अग्निदग्ध ४ प्रकार का है प्लुष्ट १, दुर्दग्ध २, सम्यक्दग्ध ३ और अतिदग्ध ४।

प्लुष्टदग्ध का लक्षण

अग्नि से दग्ध हो जिसका वर्ण पलट जाय वह प्लुष्ट है।

दुर्दग्ध का लक्षण

जिसमें दाह, पीड़ा और फोड़े हो जायँ और बहुत दिनों में मिटें उसको दुर्दग्ध कहिये।

सम्यक्दग्ध का लक्षण

जिसके अङ्ग का ताँबे का सा व्रण हो और वह वृद्ध हो तथा दाह, पीड़ा हो और फैले नहीं उसको सम्यक्दग्ध कहिये।

अतिदग्ध का लक्षण

जिसकी त्वचा, मांस सब दग्ध हो जायँ और इससे शरीर पृथक् हो जाय तथा नसें, स्नायु, हाड़, सन्धि ये सब दग्ध हो जायँ और उनमें पीड़ा हो, दाह, ज्वर, तृषा, मूर्च्छा हो और जिसमें अंकुर देर से आवे, वर्ण और सा हो जाय तो अतिदग्ध कहिये।

इन दोषों से उत्पन्न व्रण का यत्न

इसके मुख्य यत्न ११ प्रकार के हैं, वे क्रम से कहते हैं। परन्तु सुश्रुत, चरक में व्रण के यत्न ६० प्रकार के हैं। लेप १, ओषधियों के गुनगुने जल से तरेड़ा २, बांस की लकड़ी से अंगूठा मसल उसके पसीना लिवावे ३, किसी तरह रुधिर कढ़ाना ४, ओषधियों की पट्टी बाँध उसके पसीना लिवावे ५, उसे पकाना ६, शस्त्रादिक से चीर देना ७, व्रण को अँगूठे से दाब उसकी राद काढ़ना ८, व्रण का शोधना ९, उसके अंकुर लाना १० और उसको त्वचा के वर्ण सदृश कर देना ११।

वायु की सूजन दूर करने का लेप

बिजौरे की जड़, बालछड़, देवदारु, सोंठि, रास्ना, अरलू ये सब बराबर ले इन्हें जल से महीन पीस गुनगुना लेप करे तो वह सूजन दूर हो।

पित्त की सूजन का लेप

महुआ, रक्तचन्दन, दूब, आंवला, कमल की जड़, खस, नेत्रबाला, पद्माक ये सब बराबर ले जल से महीन पीस शीतल ही लेप करे तो पित्त की सूजन जाय, अथवा बड़, गूलर, पीपल, पाकर, बेत की जड़ इनका बक्कल ले इन्हें जल से महीन पीस इसमें ओषधियों से दशवां हिस्सा घृत मिलाय लेप करे तो पित्त की सूजन जाय।

कफ की सूजन का लेप

अजमोद, बावची, मेढ़ासिंगी, मंजीठ, राल, असगन्ध, शतावरि इन्हें जल से पीस गुनगुना लेप करे तो कफ की सूजन जाय। अथवा पीपल, पुरानी खस, सहँजने का बक्कल, रेत, हड़ की छाल इन्हें गोमूत्र से महीन पीस गुनगुना लेप करे तो कफ की सूजन जाय। रात में लेप नहीं करना चाहिए।

ओषधियों के गुनगुने जल से तरेड़ा देने का अनुक्रम

हड़ के बक्कल को औटाय इसका सुहाता उस सूजन के दाह पर तरेड़ा दे तो दाह तत्काल दूर हो अथवा वायु के दूर करनेवाली ओषधों के काढ़े से उसपर तरेड़ा दे अथवा तेल का तरेड़ा दे अथवा मांस के रस का तरेड़ा दे अथवा गर्म गर्म घृत का अथवा गर्म गर्म कांजो का तरेड़ा दे तो वायु की सूजन दूर हो।

पित्त की सूजन दूर करने का तरेड़ा

शीतल ओषधियों के काढ़े का तरेड़ा दे तथा दूध, घृत, खाँड़, सांठे के रस के तरेड़े से पित्त की सूजन जाय।

कफ की सूजन का तरेड़ा

कफ को दूर करनेवाली ओषधियों का गर्म गर्म तरेड़ा दे तो कफ की सूजन जाय। रक्तपित्त और सूजन का यत्न एक ही है। और व्रण की सूजन को अँगूठे आदि से मसलकर पसीना लिवावे जो व्रण कड़ा हो उसे अँगूठा अथवा बाँस की साफ लकड़ी से शनैः शनैः मसलवावे तो वह ढीला पड़ अच्छा हो जाय और उसका वर्ण और सा हो जाय, काला हो, पीड़ा बहुत हो, ऐसी व्रण की सूजन में अथवा किसी विषैले जानवर के काटने की सूजन में जोंक लगाय उसका रुधिर कढ़ाय डाले अथवा पछना दिवाय रुधिर कढ़ाय दे। यह एक ही यत्न सब यत्नों की बराबर है।

कच्चे व्रण के पकाने की औषध

दशमूल, खरैटी, रास्ना, असगन्ध, खीप (प्रसारिणी), अरण्ड की जड़ अथवा फल, निर्गुण्डी, साँठो, सहँजना, पीपल, सेंधानोन, सोंठि, सन के बीज, कपास के बीज, अलसी, कुलत्थ, तिल, यव, सरसों

मूली के बीज, सौंफ, नींब के पत्ते, नागरबेल के पत्ते, गुलाब के पत्ते आदि महीन पीस गर्म कर बाँधे अथवा इनके काढ़े का तरेड़ा दे तो वायु के व्रण की सूजन जाय।

व्रणशोथ के दूर करने का लेप

साँठी की जड़, देवदारु, हल्दी, सोंठि, सहँजने का बक्कल, सरसों इन्हें खटाई से महीन पीस गुनगुना कर लेप करे तो सर्व प्रकार के व्रणशोथ दूर हों।

व्रण के पकाने की विधि

व्रण लेपादि करके न पके तो सन की जड़, सहँजने का फल, तिल, सरसों, अलसी, यव, गेहूँ, नींब के पत्ते इन्हें सिझाय व्रण में बाँधे तो व्रण जाय।

पके व्रण में चीरा देने की विधि

जिस व्रण में राद पड़ गई हो उसको चतुर वैद्य द्वारा शस्त्रों से तीन चीरा दिवाय उसकी राद कढ़वाय दे पीछे मरहम आदि लगावे तो व्रण अच्छा हो।

इतने मनुष्यों के चीरा नहीं लगावे

बालक के, वृद्ध के, जिससे चीरा न सहा जाय, क्षीण पुरुष के, भयवाले के, स्त्री के, मर्मस्थान में इनके चीरा न दिया जाय किन्तु औषधियों से भेदन कर उसकी राद कढ़ाय अच्छा करे। भेदन औषध ये हैं। कणगच की जड़, चित्रक, दन्ती, भिलावाँ, कनेर, कबूतर को बीट, गीध की बीट इनमें से किसी का लेप करे तो व्रण आप ही फूट राद निकल अच्छा हो। अथवा खारी नोन, जवाखार, सज्जी, आँधीझाड़े का खार इनमें से किसी का लेप करे तो व्रण की राद निकल जाय। अथवा व्रण कड़ा हो तो हाथी दाँत को जल में घिस उसकी बूँद व्रण पर धरे तो सूजन दूर होकर उसकी राद निकल जाय।

पीड़न कहते हैं

जिसमें राद पड़ गई हो और मर्मस्थान में हो ऐसे व्रण में चीरा न देना किन्तु इन औषधों का लेप कर उसकी राद निकलवाने से

वह व्रण अच्छा हो जाता है। ओषधें ये हैं। यव, गेहूँ, उड़द इन्हें महीन पीस पानी से गुनगुना कर लेप करे और व्रण के मुख में से राद काढ़ डाले पीछे उसके मरहम आदि लगावे तो वह व्रण अच्छा हो।

व्रण का शोधन

जो व्रण कच्चा हो तो पटोल के पत्ते अथवा नींब के पत्ते इन्हें सिझाय इनके पानी से व्रण को धोवे तो व्रण अच्छा हो। अथवा दशमूल के काढ़े से व्रण धोवे तो वायु का व्रण अच्छा हो। अथवा गूलर के बकले के काढ़े से व्रण धोवे तो व्रण अच्छा हो। और अमलतास के बक्कल के काढ़े से धोवे तो कफ का व्रण अच्छा हो। और पीपल, गूलर बड़, बेल इनके बक्कल के काढ़े से व्रण की सूजन और उपदंश को धोवे तो व्रण अच्छा हो। अथवा तिल, सेंधानोन, मुलहठी, नींब के पत्ते, दोनों हल्दी, निशोत, नागरमोथा इन्हें बराबर ले जल से पीस इनका लेप करे तो व्रण पक के उसकी राद निकल जाय। अथवा नींब के पत्ते, तिल, दन्ती, निशोत, सेंधानोन इनमें शहद मिलाय महीन पीस लेप करे तो दुष्टव्रण अच्छा हो। अथवा नींब के पत्तों को सिझाय बाँधे तो दुष्ट व्रण अच्छा हो अथवा हड़, निशोत, सेंधानोन, दन्ती, कलिहारी की जड़ इन्हें शहद में पीस इनकी बत्ती व्रण में दे तो दुष्ट व्रण अच्छा हो। अथवा व्रण का मुख सूक्ष्म हो तो नींब के पत्तों के रस आदि औषधों की बत्ती दे तो व्रण अच्छा हो। अथवा नींब के पत्ते, घृत, शहद, दारुहल्दी, महुआ इनकी बत्ती कर व्रण में दे तो व्रण अच्छा हो। अथवा तिलों को औटाय उसकी बत्ती दे तो व्रण अच्छा हो।

व्रण के रोपणनाम अंकुर लाने का यत्न

जिन व्रणों की राद निकल गई हो और व्रण भरें नहीं उनको नींब के पत्ते औटाय उस पानी से धोवे फिर शहद मिलाय तेल का फाहा उस पर धरे तो व्रण भर जाय। अथवा असगन्ध, कायफल, मुलहठी, मंजीठ, धवई के फूल इन्हें महीन पीस व्रण में बाँधे तो व्रण भर कर अच्छा हो।

व्रण के दाह शूल के दूर करने का लेप

यव का आटा, शहद, तेल, घृत ये सब मिलाय थोड़ा गर्म कर लेप करे तो व्रण का दाह, शूल जाय।

व्रण के कृमि दूर होने का लेप

कणगच की जड़, नींब की छाल, निर्गुण्डी इन्हें महीन पीस लेप करे तो व्रण के कृमि जायँ अथवा लहसुन का लेप करे तो व्रण के कृमि जायँ अथवा हींग, नींब की छाल का लेप करे तो व्रण के कृमि मरें।

व्रण में छूत पड़कर खाज, पीड़ा हो, कृमि पड़ गये हों उसकी धूनी

नींब के पत्ते, बच, हींग, घृत, नोन, सरसों इन्हें एक साथ घृत में महीन पीस इनकी धूनी दे तो व्रण की छूत, खाज, कृमि जायँ, ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं।

व्रण के भरने का मरहम

कड़ुआ तेल २॥ पैसे भर, पानी २॥ पैसे भर इन दोनों को कांसी की थाली में १ दिन तक हाथ से मथे पीछे इसमें राल ५ पैसे भर, नीलाथोथा १० माशा, विरोजा ५ माशा, मिरच ५ माशा ये सब महीन पीस इसमें मिलावे फिर इन्हें महीन पीस हाथ से मथकर व्रण में लगावे तो व्रण तत्काल भर आवे।

तलवार आदि शस्त्र लगने से उत्पन्न व्रण का यत्न

जिन मनुष्यों के तलवार आदि नाना प्रकार के शस्त्रों की धार के लगने से त्वचा फटि जाय अथवा त्वचा की नानाप्रकार की आकृति हो जाय तो उसे अच्छे चतुर सथिये के पास निर्वात स्थान में पाट के सूत से सिलाय पीछे उन टाँकों के व्रण के स्थान में गेहूँ की मैदा में पानी घृत मिलाय पकाय ले जब पानो जल जाय घृतमात्र रह जाय तब उसकी लोई बनाय सुहाता सुहाता सेंक करे तो वह व्रण तत्काल अच्छा हो। अथवा कुटकी, मोम, हल्दी, मुलहठी, कणगच की जड़, पत्ते और फल, पटोल, चमेली और नींब के पत्ते इन्हें घृत में डाल पकावे जब पानी जल जाय घृतमात्र आय रहे तब इस घृत का सुहाता सुहाता सेंक करे तो यह व्रण तत्काल अच्छा हो। ये सब वैद्यरहस्य में लिखे हैं।

अथवा शस्त्रादिकों से जिसका रुधिर बहुत निकल गया हो उसके वायु की पीड़ा हो आवे उसके दूर करने के वास्ते घृत पान कराइये और जिसका खड्गादिक करके गात्र छिन्न हो जाय उसके गंगेरन की जड़ का रस उसमें भर दे तो वे व्रण तत्काल भर जायँ और अच्छे हों। इस व्रणवाले को शीतल यत्न सब अच्छे हैं। और शस्त्र लगने से जिसका रुधिर आमाशय में जाय तो उस पुरुष को वमन करावे तो अच्छा हो और पेड़ू में रुधिर जाय तो वह जुलाब से अच्छा हो। बाँस की छाल अरण्ड का बक्कल, गोखुरू, पाषाणभेद इनका काढ़ा कर उसमें सेंकी हींग, सेंधा नोन डाल पीवे तो कोठे का रुधिर निकल बहे और अच्छा हो। अथवा यव, कुलत्थ, सेंधा नोन, रूखा अन्न इनका खाना अच्छा है। अथवा चमेली के पत्ते, नींब के पत्ते, पटोल, कुटकी, दारु-हल्दी, गोरीसर, मंजीठ, हड़ की छाल, मोम, नीलाथोथा, शहद, कण-गच के बीज ये सब बराबर ले इनकी बराबर गौ का घृत ले और इनसे अठगुना पानी ले इन्हें मधुरी आँच से पकावे जब पानी जल जाय घृतमात्र रह जाय तब इस घृत की बत्ती कर व्रण में लगावे तो गम्भीर आदि सब व्रण अच्छे हों। या जात्यादिघृत है।

अथवा चमेली, नींब, पटोल, अमलतास इनके पत्ते, मोम, महुआ, कूट, दारुहल्दी, देशी हल्दी, कुटकी, मंजीठ, पद्माक, हड़ की छाल, पठानी लोध, तज, कमलगट्टा, गोरीसर नीलाथोथा, अमलतास की गिरी ये सब तीन-तीन माशा ले इनका काढ़ा कर इनके रस में मधुरी आँच से तिल का तेल पकावे, जब काढ़े का रस जल जाय तेलमात्र रह जाय, तब उस तेल को उतार अच्छे बासन में धर रक्खे पीछे इस तेल की बत्ती कर किसी तरह से व्रण में लगावे तो व्रण तत्काल भरे, अच्छा हो। यह जात्यादितैल है।

अथवा चित्रक, लहसुन, हींग, सरफोंका जो गौड़देश में प्रसिद्ध है और कलिहारीजड़ी की जड़, सिन्दूर, अतीस, कूट, ये सब ओषधि छह छह माशा, कड़ुवा तेल ३२ माशा इन ओषधियों के मुवाफ़िक पानी डाल मधुरी आँच से पकावे जब पानो जल जाय तेलमात्र रह जाय तब इस तेल को बासन में भर रक्खे पीछे इसको कपड़े की बत्तीआदि

से किसी तरह व्रण में लगावे तो व्रणमात्र, दुष्टव्रण, नाड़ीव्रण इनको यह तैल तत्काल दूर करता है। यह विपरीतमल्ल तैल है।

अथवा गिलोय, पटोल की जड़, त्रिफला, बायबिड़ंग इन्हें बराबर ले महीन पीस इनकी बराबर गुग्गुल मिलाय एक जीव कर १ माशा पानी से नित्य खाय तो व्रणमात्र, वातरक्त, गोला, उदररोग, सूजन इनको यह दूर करता है। यह सब यत्न भावप्रकाश में हैं। यह अमृतादि गुग्गुल है।

६ प्रकार के अग्निदग्ध का अनुक्रम से यत्न

जो अग्नि से किसी तरह जल गया हो उसको अग्नि से तपावे तो वह पुरुष तत्काल अच्छा हो। अथवा उस पुरुष के जले स्थान पर अगर आदि गर्म ओषधियों का लेप करे तो वह अच्छा हो यह प्लुष्ट का यत्न है।

दुर्दग्ध का यत्न

ओषधियों के घृत को अथवा इसी घृत को गर्म करे पीछे उसे ठण्ढा कर लेप करे तो दुर्दग्ध अच्छा हो।

सम्यक्‌दग्ध का यत्न

तवाखीर, बड़ की जड़, रक्तचन्दन, रसौत, गेरू, गिलोय इन्हें घृत से महीन पीस लेप करे तो सम्यक्‌दग्ध अच्छा हो।

अतिदग्ध का यत्न

बुरे मांस को दूर कर पीछे साठी चावल, तेंदू इन्हें घृत में महीन पीस लेप करे ऊपर गिलोय का पत्ता बाँधे तो अतिदग्ध अच्छा हो। अथवा मोम, महुआ, पठानी लोध, राल, मंजीठ, रक्तचन्दन, मूर्वा ये सब बराबर ले महीन पीस गौ के घृत में पकावे पीछे इस घृत का लेप करे तो अतिदग्ध अच्छा हो और सर्व शरीर में मांस और हो आवे। यह सिक्थादिघृत है।

अथवा पटोल के पञ्चाङ्ग का काढ़ा कर उसमें कड़ुआ तेल पकावे जब काढ़े का रस जल जाय तेलमात्र रह जाय तब उतार उस तेल को लगावे तो अग्नि के जरे का दाह और स्राव और फोड़े सब अच्छे हों। ये सर्व यत्न भावप्रकाश में हैं। अथवा पुराना गीला खाने का चूना दही

के पानी में पीस जरे ऊपर लगावे तो वह अच्छा हो और तेल का जला हो तो उसके फफोले भी दूर हों अथवा यव को जलाय तिलों के तेल में पीस जले ऊपर लेप करे तो अच्छा हो। अथवा भुने जीरे को महीन पीस उसी की बराबर मोम, राल, घृत मिलाय लेप करे तो अग्नि का जला तत्काल अच्छा हो।

तेल आदि से जले का यत्न

अथवा तिल का तेल ॥ भर और खाने का चूना गीला पुराना ४ पैसे भर दोनों को हाथ से एक पहर मसल राब-सा कर रुई के पहल से जले पर लगावे तो जला हुआ तत्काल अच्छा हो।

व्रणग्रन्थिरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

बिना खेद ही शरीर से निकले हुए दुष्ट रुधिर को पवन शोष कर गाँठ उत्पन्न करे। उस गाँठ में दाह, खुजाल बहुत हो उसको व्रण-ग्रन्थि कहिए।

व्रणग्रन्थि का यत्न

कबीला, बायबिड़ंग, तज, दारुहल्दी इन्हें जल से महीन पीस और उसमें तिल का तेल डाल मधुरो आँच से पकावे जब पानी जल जाय तेलमात्र रह जाय तब इस तेल का लेप करे तो व्रणग्रन्थि जाय।

भग्नरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

हाड़ के टूटने को भग्न कहते हैं वह दो प्रकार का है। काण्ड का १, सन्धि का २–काण्ड का तो नल, कपाल, पहुँचा आदि ले और सन्धि का ६ प्रकार का है। उत्पिष्ट १, विश्लिष्ट २, विवर्त्तित ३, तिर्यक्गति ४, क्षिप्त ५, अधः ६।

शरीर के किसी स्थान की सन्धि टूट जाने का सामान्य लक्षण

उठते, पसारते, इकट्ठा करते सन्धि में पीड़ा बहुत हो और उस जगह स्पर्श नहीं सुहावे तो जानिए कि सन्धि टूटी है।

उत्पिष्टसन्धि टूटने का लक्षण

हाड़ों की सन्धि टूटी हो उस जगह चारों ओर सूजन बहुत हो और पीड़ा हो तो जानिए कि उत्पिष्टसन्धि टूटी है।

विश्लिष्टसन्धि टूटने का लक्षण

उस जगह सूजन हो और रात्रि में पीड़ा, सूजन अधिक हो उसको विश्लिष्टसन्धि टूटी जानिए।

विवर्त्तितसन्धि टूटी का लक्षण

पसलियों में पीड़ा बहुत हो और उस स्थान में सूजन, पीड़ा रहा करे तो विवर्चितसन्धि टूटी जानिए।

तिर्यक्गति सन्धि टूटी का लक्षण

उस जगह सूजन हो, पीड़ा बहुत हो तो त्रियक्गति सन्धि टूटी जानिए।

क्षिप्तसन्धि टूटी का लक्षण

जाँघों में कभी थोड़ा, कभी बहुत विषम शूल हो उसकी क्षिप्त-सन्धि टूटी जानिए।

अधःसन्धि टूटी का लक्षण

जो सन्धि नीचे की टूटी हो उसके नीचे पीड़ा हो उसे अधःसन्धि जानिए।

सन्धि बिना नल, कपाल, वलय के हाड़ टूटे हुओं का लक्षण

नरसल की भाँति वे हाड़ छिद्र-छिद्र लिये हों, सूधे हों उसे नल कहिए।

हाड़ टूटना

कर्कट १, अश्वकर्ण २, विचूर्णित ३, पिच्चित (यन्त्रित किया) ४, अस्थिछल्लिका ५, काण्ड के विषय भग्न ६, अतिपातित ७, मज्जा-गत ८, प्रस्फुटित ९, वक्र १०, छिन्न ११, द्विधा करना १२, जैसे इनके नाम हैं वैसे ही लक्षण जान ले।

हाड़ टूटा हो उसका लक्षण

अङ्ग शिथिल हो जाय, उस जगह स्पर्श सुहावे नहीं, वहाँ शरीर फरके, शरीर में पीड़ा और शूल हो, रात दिन कभी भी चैन न पड़े, ये लक्षण हों तब जानिए कि इसका किसी प्रकार से हाड़ टूटा है।

भग्नरोग का कष्टसाध्य लक्षण

अग्नि मन्द हो जाय, कुपथ्य करा करे, वायु का शरीर हो और जिसमें ज्वर अतीसारादिक भी हों वह भग्नरोगी कष्ट से बचे।

भग्नरोग का असाध्य लक्षण

जिसका मस्तक फट गया हो, कटि टूट गई हों, सन्धि खुल जाय, जाँघ पिस जाय, ललाट चूर्ण हो जाय, स्तन की जगह टूट जाय और हृदय, गुदा, कनपटी, माथा फट जाय वह असाध्य जानिए।

पुनः असाध्य लक्षण

हाड़ को अच्छे प्रकार कड़ा बाँधे और वह बुरी तरह बँध जावे और उसमें चोट आ जावे तथा मैथुनादिक करे तो वह हाड़ टूटना असाध्य हो जाय।

शरीर में स्थान-स्थान के हाड़ों में चोट लगने का चिह्न

कण्ठ, तालु, कनपटी, कन्धे, शिर, पैर, कपाल, नाक, आँख इन स्थानों में किसी तरह की चोट लगे तो उस जगह के हाड़ झुक जायँ और पहुँचा पीठ आदि के सूधे हाड़ टेढ़े हो जायँ एवं कपाल आदि के जो गोल हाड़ हैं वे फट जायँ, दाँत आदि छोटे हाड़ टूट जायँ।

भग्नरोग (हाड़सन्धि का टूटना) का यत्न

प्रथम चोट आदि किसी तरह से हाड़ और सन्धि टूटी जाने तो उसी समय उस जगह शीतल पानी डाले पीछे बुद्धिमान् मनुष्य उसके ओषधियों का सेंक करे अथवा पट्टी बाँधे। उसका जो इलाज करे वह शीतल करे और पट्टी न ढीली और न बहुत कड़ी बाँधे, अच्छी तरह साधारण बाँधे। टूटी जगह हाड़ के जोड़ को ठीक करके बाँधे। ओषधियों को गीली कर अथवा चोट की जगह गीली प्याज लगावे तो टूटी हाड़सन्धि अच्छी हो। अथवा मँजीठ, महुआ इन दोनों को ठण्डे पानी से महीन पीस टूटे हाड़ पर लेप करे तो अच्छा हो। अथवा सौ बार के धोये घृत में साठी चावल पीस कर लेप करे तो अच्छा हो। अथवा बेर, पीपल की लाख, गेहूँ, काहूवृक्ष का बक्कल ये घृत में पीस २० माशा दूध से पीवे तो सन्धि और हाड़ टूटा अच्छा हो। अथवा लाख, काहू का बक्कल, असगन्ध, खरैटी, गुग्गुल, ये सब बराबर ले इनको एक जीव कर १० माशा दूध के साथ ले तो अच्छा हो अथवा गेहूँ को ठीकरे में धर अधजला कर ले कि महीन पीस ४० माशा शहद के साथ २० माशा नित्य ७ दिन तक चाटे तो टूटा हाड़ अच्छा हो। अथवा मेदा लकड़ी, आँवला, तिल इन्हें ठण्डे पानी से महीन पीस उस जगह लेप करे और इसमें घृत भी मिलावे तो टूटा हाड़ और टूटी सन्धि अच्छी हो और मनुष्य के मांस की चोखी मिठाई अनुमान मुवाफिक ले शहद से उसको चटावे तो टूटा हाड़, टूटी सन्धि अच्छी

हो और चोटवाले को मांस का शोरवा, दूध, घृत, पुष्टता की औषध दे, तो ये सब अच्छी होती हैं और इतनी वस्तु उसको अच्छी नहीं हैं नोन कड़ुवी वस्तु, खीर, खटाई, मैथुन, धूप, रूखा अन्न। बालक की और तरुण की चोट शीघ्र अच्छी हो और वृद्ध, रोगी की चोट शीघ्र अच्छी नहीं होती है। अथवा लाख १० माशा दूध से १५ दिन पीवे तो टूटा हाड़ अच्छा हो। अथवा पीली कौड़ियों का चूना २ या ३ रत्ती औटाये दूध से पीवे तो टूटी हाड़ जुड़े। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में हैं।

अथवा बेर का बक्कल, त्रिफला, सोंठि, मिरच, पोपल इन सबकी बराबर गुग्गुल डाल सबको एक जीव कर १० माशा नित्य १५ दिन दूध से ले तो शरीर वज्र का हो जाय। अथवा बेर का बक्कल ८ माशा महीन पीस शहद से १ महीना भर ले तो शरीर वज्र का हो यह योगतरङ्गिणी में है।

मुग्दर आदि की चोट का यत्न

मेथी, मैदा लकड़ी, सोंठि, आमला इन्हें गोमूत्र में महीन पीस चोट पर लेप करे तो चोट अच्छी हो।

नाड़ीव्रण की उत्पत्ति और लक्षण

जो अज्ञान वैद्य या सन्थिया व्रण को कच्चा जान न उसका यत्न करे और न उसकी राद निकाले तो वह राद नसों में प्रवेश कर उनके स्थानों को बिगाड़ती है। वह राद बाहर नहीं निकलती है फिर वह राद अधिक हो नाड़ियों में (जैसे नल में जल बढ़े वैसे) बढ़ती है इससे इस रोग का नाम नाड़ीव्रण है। नाड़ीव्रण रोग ५ प्रकार का है। वायु का १, पित्त का २, कफ का ३, सन्निपात का ४, शस्त्रादिक की चोट लगने का ५।

वायु के नाड़ीव्रण का लक्षण

जिसका कठोर, महीन मुख हो, शूल हो, जिसके मुँह में राद रहे, रात में बहुत रहे ये लक्षण हों उसे वायु का नाड़ीव्रण कहिए।

पित्त के नाड़ीव्रण का लक्षण

जिसमें तृषा, ज्वर और दाह हो गर्म तथा पीली राद निकले उसके पित्त का नाड़ीव्रण कहिए।

कफ के नाड़ीव्रण का लक्षण

जिस व्रण के मुख में रुधिर को लिये अधिक बदरंगी, सफेद राद निकले और उसमें खाज आवे, पीड़ा भी हो परन्तु रात में बहुत हो ये लक्षण हों उसे कफ का नाड़ीव्रण कहिए।

सन्निपात के नाड़ीव्रण का लक्षण

जिस व्रण में राद, ज्वर, श्वास, मूर्च्छा हो और मुख सूखे, राद की गति गम्भीर हो, जिसका अन्त ही न मिले ऐसी राद निकले वह नाड़ीव्रण कालरात्रि के समान है मानों मार ही डालेगा, ये लक्षण सन्निपात के नाड़ीव्रण का कहिये।

शस्त्रादिकों की चोट से उत्पन्न नाड़ीव्रण का लक्षण

जिसके शरीर में तीर, गोली इत्यादि लगी हों और वे किसी तरह शरीर में रह जाय उनको वैद्य या सथिया निकाले उससे उस जगह व्रण पड़ जायँ और उस व्रण में झाग समेत रुधिर, राद निकला करे, किसी तरह शरीर हिलने से पीड़ा रहे उसे शस्त्रादिक की चोट लगने का नाड़ीव्रण कहिए।

नाड़ीव्रण का असाध्य और कष्टसाध्य लक्षण

त्रिदोष का नाड़ीव्रण अच्छा नहीं होता है और चार प्रकार का नाड़ीव्रण अच्छा है वह वैद्य के यत्न से अच्छा हो जाता है।

नाड़ीव्रण का यत्न

सूक्ष्ममुख के व्रण में राद निकला करे तो थूहर के दूध अथवा आक के दूध में दारुहल्दी भिगोय उसको घिस बत्ती कर व्रण के मुख में दे तो व्रण भर जाय। अथवा अमलतास की जड़, हल्दी, मंजीठ इन्हें शहद में महीन पीस उसको बत्ती कर व्रण में युक्ति से दे तो व्रण अच्छा हो। अथवा चमेली के पत्तों का रस, आक की जड़, अमलतास, दन्ती, सेंधानोन, जवाखार इन्हें महीन पीस इनकी बत्ती व्रण के मुख में युक्ति से दे तो व्रण भर कर अच्छा हो। अथवा जात्यादिघृत व जात्यादितेल से भी नाड़ीव्रण जाता है। अथवा त्रिफला, सोंठि, मिरच, पीपल और इनकी बराबर शोधा गुग्गुल ले इन्हें महीन पीस एकजीव कर १० माशा नित्य ४९ दिन शीतल जल से ले और पथ्य से रहे तो सब प्रकार के नाड़ीव्रण जायँ। अथवा गुग्गुल, सिंदूर इन दोनों को

महीन पीस इन्हें यत्न से व्रण में भरे तो नाड़ीव्रण अच्छा हो। ये यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं। अथवा आँधीझाड़े के बीज, तिल इन्हें महीन पीस यत्न से नाड़ीव्रण में लेप करे तो वायु का नाड़ीव्रण अच्छा हो। अथवा तिल, मँजीठ, हाथी का दाँत, हल्दी इन्हें महीन पीस पित्त के व्रण में लेप करे तो नाड़ीव्रण जाय। अथवा तिल, मुलहठी, दन्ती, नींब की छाल तथा पत्ते, सेंधानोन इन्हें महीन पीस लेप करे तो नाड़ीव्रण जाय। अथवा तिल, शहद, घृत इकट्ठा कर लेप करे तो घाव का व्रण अच्छा हो। अथवा शहद की बत्ती अथवा नोन की बत्ती से दुष्टव्रण अच्छा हो। अथवा सज्जी, जवाखार, कबीला, मेंहदी, सुहागा, सफेद खेरसार ये भी बराबर ले गौ के घृत में महीन पीस १ दिन पीछे व्रण में भरे तो व्रण के कृमि मर जायँ और खाज जाती रहे और व्रण भर अच्छा हो। यह स्वर्जिकाघृत चक्रदत्त में लिखा है।

अथवा सम्भालू के पत्तों के रस में तेल पकाकर उस तेल की बत्ती व्रण में दे तो व्रण अच्छा हो। यह निर्गुण्डीतेल वृन्द में है।

सफेद मरहम की विधि

राल १ पैसे भर, सफ़ेद मोम २ पैसे भर, मुरदाशंख १ पैसे भर इन्हें महीन पीस पीछे गौ का घृत ६ पैसे भर गर्म कर उसमें मोम पिघलाय शुद्ध करे पीछे वह औषध भी मोम के घृत में उसी समय डाले, पीछे उन सबको काँसे की थाली में डाल जल से खूब १०८ बार हाथ से रगड़ कर धोवे, पीछे व्रण में लगावे तो व्रण अच्छा हो। अथवा शोधापारा, आँवलासार गन्धक ये सब बराबर ले इन दोनों की बराबर मुरदाशंख और इन तीनों की बराबर कबीला ले और इनमें थोड़ा नीलाथोथा डाले और इन सबसे चौगुना गौ का घृत मिलाकर नींब के पत्तों का रस अनुमान मुवाफ़िक डाले, पीछे सबको घृत में खूब दो दिन तक पीसे फिर व्रण में लगावे तो व्रणमात्र सब अच्छे हों। यह वैद्यरहस्य में है। अथवा सफ़ेद मोम, मस्तगी, गोंद, मेढल, नीलाथोथा, सुहागा, सज्जी, सिंदूर, कबीला, मुरदाशंख, गुग्गुल, कालीमिरच, सोनगेरू, इलायची, बेर, शिंगरफ़, शोधीगन्धक ये सब बराबर ले मोम बिना सबको पृथक्-पृथक् महीन पीसे और मोम को गौ के घृत में

अग्नि से तपाकर शुद्ध कर ले फिर सब औषधें मोम में मिलाय खरल में २ दिन महीन पीस एकजीव करे तो सब शस्त्रव्रण और दुष्टव्रण भी इसके लगाने से अच्छे हों। ये वैद्यकुतूहल में लिखे हैं। अथवा नीलाथोथा, मुरदाशंख, सफेद खैरसार, सिन्दूर, शिंगरफ, मोम, केसर, गो का घृत ये सब बराबर ले पीछे गो के घृत को गर्म कर नीचे उतार इसमें पहले नीलाथोथा पीस डाले पीछे उसी समय इसमें मोम डाले फिर पिघलाय ले फिर इसमें ये औषध महीन पीस डाल इन सबको एकजीव कर काँसे की थाली में बहुतसा जल डाल उसमें मोम सहित हथेली से १ दिन तक अच्छी तरह मर्दन करे पीछे इस मरहम को व्रणमात्र में लगावे तो व्रणमात्र और चाँदा आदि सब अच्छे हों। यह भी वैद्यकुतूहल में है। अथवा शिंगरफ़ ३ पैसे भर, सफेदमोम ३ पैसे भर, सज्जी १ पैसे भर, नींब के पत्तों की टिकड़ी कर गो के घृत में पकावे और मोम घृत में पिघलाय मुरदाशंख १ पैसे भर ले पीछे इन्हें महीन पीस एकजीव कर व्रण में लगावे तो व्रणमात्र अच्छे हों।

हाथ पाँव आदि फटकर बेवाँई सी पड़ जायँ उसका मरहम

राल १ पैसेभर, कत्था १ पैसे भर, कालीमिरच १ पैसे भर, गो का घृत २ पैसे भर, चमेली का तेल ४ पैसेभर इन सब औषधों को महीन पीस लोहे के करछुले में मरहम कर ले, पीछे इसको लगावे तो हाथ पैर आदि का फटना निश्चय अच्छा हो।

नींब का मरहम

नींब के पत्तों का रस १ सेर काढ़े, पीछे गो का घृत पाव भर करछुले में चढ़ाय उसको गर्म करे, जब गर्म हो जाय तब उसमें राल ४ पैसे भर डाल पिघलावे जब वह पत्तों का रस उसमें सूख जाय और गाढ़ा हो जाय तब कत्था १ पैसे भर, नीलाथोथा १ पैसे भर, मुरदाशंख १ पैसे भर इन्हें महीन पीस उसमें डाल एकजीव कर पीछे कपड़े में लगाकर व्रण के ऊपर लगावे तो व्रण निश्चय अच्छा हो।

व्रण के स्थान की त्वचा का वर्ण अच्छे करने की औषध

मैनसिल, मंजीठ, लाख, दोनों हल्दी ये बराबर ले इन्हें घृत, शहद में महीन पीस त्वचा में लेप करे तो व्रण की त्वचा का शरीर का सा वर्ण हो ५।

इति पञ्चदशस्तरङ्गः ॥ १५ ॥

—:०:—

भगन्दररोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

गुदा के आसपास चारों ओर दो-दो अंगुल में फुंसी हों और फूटें, तब वहाँ पीड़ा हो और उस जगह फुंसी बहा करें उसको भगन्दर कहिए और भग गुदा और बस्ति के बीच का भाग है। भग की तरह यह रोग होता है इस वास्ते इसे वैद्य भगन्दर कहते हैं। भगन्दर पाँच प्रकार का है। वायु का १, पित्त का २, कफ का ३, सन्निपात का ४ और शस्त्रादिक की चोट लगने का ५।

वायु के शतपोनक भगन्दर का लक्षण

जो पुरुष कषैला और रूखा बहुत भोजन करे उसकी वायु कोप को प्राप्त हो गुदा के पास फुंसी करे और आलस्य कर पुरुष उसका यत्न न करे तब वह फुंसी पक कर पीड़ा बहुत करे और जब वह फूटे तब उसमें राद आदि मल-मूत्र वीर्य ये भी निकला करें और उसमें चलनी के सदृश सौ छिद्र हो जायँ। इससे इसको शतपोनक भगन्दर कहते हैं।

पित्त के उष्ट्रग्रीव भगन्दर का लक्षण

गर्म वस्तु के खाने से पित्त कुपित होता है तब गुदा के चौगिर्द दो अंगुल की जगह में लाल फुंसियाँ तत्काल पक जायँ और उनमें से गर्म-गर्म राद निकले तथा वे फुंसियाँ ऊँट की गर्दन के सदृश ऊँची हो उसको पित्त का उष्ट्रग्रीव भगन्दर कहते हैं।

कफ के परिस्रावी भगन्दर का लक्षण

उसमें खुजली बहुत चले और गाढ़ी राद निकले तथा पीड़ा थोड़ी रहे, फुंसियाँ सफेद होकर स्रवा करें उसको परिस्रावी कफ का भगन्दर कहिए।

सन्निपात के शम्बुकावर्त भगन्दर का लक्षण

उस फुंसी में बहुत प्रकार की तो पीड़ा हो और बहुत प्रकार के वर्ण होकर स्रवा करे तथा वही फुंसी मुनक्का, दाख के सदृश हो और शंख के भीतर की नाभि के सदृश हो उसे सन्निपात का शम्बुकावर्त भगन्दर कहिए।

शस्त्रादिक की चोट लगने के भगन्दर का लक्षण

गुदा के पास काँटे आदि लगे हों अथवा वहाँ खुजलाने से नखा-

दिक लग जायँ अथवा वहाँ के बाल बनाने में छूरा की धार लग जाय तब वहाँ फुंसी होकर फूटे तब उसकी राद की चेप से वहाँ और फुंसियाँ हो जायँ और वे अच्छी न हों, स्रवा ही करें उसे उन्मार्गसंज्ञक शस्त्र को चोट लगने का भगन्दर कहिए।

भगन्दर का कष्टसाध्य लक्षण

भगन्दर तो सब ही कठिनता से अच्छे होते हैं परन्तु सन्निपात का और चोट लगने का भगन्दर तो अच्छा होता ही नहीं है।

भगन्दर का यत्न

गुदा की जगह भगन्दर उपजा जाने तब वैद्य जोंक आदि लगाकर उस जगह का रुधिर तत्काल निकाल डाले तो वे फुंसियाँ पकें नहीं अथवा उस जगह फुंसी उपजी जाने तो वहाँ साँठी की जड़, गिलोय, सोंठि, मुलहठी, बड़ के कोमल पत्ते इन्हें महीन पीस सुहाता-सुहाता गर्म लेप करे तो भगन्दर की फुंसियाँ अच्छी हों। अथवा तिल, नींब का बक्कल, महुआ इन्हें महीन पीस शीतल जल से लेप करे तो पित्त का भगन्दर अच्छा हो। अथवा चमेली के पत्ते, बड़ के पत्ते, गिलोय, सोंठि, सेंधानोन, इन सबको मट्ठे में महीन पीस भगन्दर में लेप करे, तो भगन्दर अच्छा हो। अथवा हल्दी, आक का दूध, सेंधानोन, गुग्गुल, नींब के पत्ते इन्हें ओटाकर इनमें अनुमान मुवाफ़िक तेल डाल पकावे जब जलमात्र जल जाय और तेलमात्र रहे, तब इस तेल का मर्दन करे तो भगन्दर जाय। अथवा गुग्गुल, त्रिफला, पीपल इन्हें बराबर ले महीन पीस ५ माशा जल से ले तो शोथ, गोला, बवासीर, भगन्दर इनको यह दूर करता है। यह नवकार्षिक गुग्गुल है।

अथवा बहुत चतुर वैद्यों वा साथियों से चीरा दिवाये और मरहम आदि लगाकर व्रण का यत्न करे तो भगन्दर अच्छा हो। भगन्दरवाला इतनी वस्तु न करे खेद, मैथुन, युद्ध, घोड़े की सवारी और नवीन अन्न का भोजन और भगन्दर अच्छा हो गया हो तो भी १ वर्ष तक इतने कार्य न करे। यह भावप्रकाश में लिखा है। अथवा रसौंत, दोनों हल्दी, मंजीठ, नींब के पत्ते, निशोत, तेजबल, दन्ती इन्हें महीन पीस भगन्दर में लेप करे और इन्हीं से उसे धोवे तो भगन्दर अच्छा हो। अथवा

कुत्ते का हाड़, केंचुआ इन्हें गधे के रुधिर से महीन पीस लगावे तो भगन्दर अच्छा हो। अथवा बिलाई के हाड़ की राख, कुत्ते के हाड़ की राख इन्हें लोहे के पात्र में गौ के घृत से घिस लेप करे तो भगन्दर जाय। अथवा बिलाई के हाड़ को त्रिफले के रस से महीन पीस भग-न्दर में लेप करे तो भगन्दर जाय।

रूपराजरस की विधि

पारा १ भाग, ताँबे का मैल ४ भाग इन दोनों को इकट्ठा कर काग-जहरी के रस में ५ दिन खरल करे पीछे इन्हें ताँबे के सम्पुट में धर उसके आसपास और ऊपर रेत से हाँडी भरे फिर उसके नीचे लकड़ियों की ८ प्रहर आँच देवे, स्वाङ्गशीतल होने पर सम्पुट से निकाल घृत, शहद में डुबोये पीछे उन्हें पक्की मूसी में धर उसकी अन्धमूसी कर धौंकनी से खूब धौंकावे जब वह चक्कर खाय फिरे तब उसमें से निकाल ले, तब यह रस सिद्ध होता है। इसमें से ३ रत्ती रस शहद से ले तो भगन्दर निश्चय अच्छा हो। ऊपर से त्रिफले का काढ़ा पीवे और पथ्य से रहे।

रविसुन्दररस

पारा १ भाग, आमलासार गन्धक २ भाग लेकर इन दोनों की खरल में कजली करे फिर ग्वार के पट्ठे के रस में खरल करे पीछे इसका गोला कर ताँबे के सम्पुट में धरे और उस सम्पुट को हाँडी के चारों ओर आसपास राख भर बीच में धरे, पीछे उसके नीचे १ दिन तक अग्नि लगावे और स्वाङ्गशीतल होने पर उसको काढ़े फिर उसमें जँभीरी के रस की ७ पुट दे पीछे उसे १ रत्ती शहद और घृत से चाटे तो भगन्दर जाय। ऊपर से मूसली, लहसुन पीवे इसके खाने के ऊपर मीठा आहार, दिन में सोना, मैथुन और शीतल भोजन न करे। यह रससिन्धु में लिखा है।

उपदंशरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

हथरस के करने से, इन्द्रिय में किसी तरह नख दाँत लगने से अथवा स्त्रियों की भग के ऊपर कठोर बालों के उखाड़ने से अथवा योनि का छिद्र महीन होने से, स्त्रियों की योनि दूषित होने से अथवा लिङ्गेन्द्रिय के न धोने से, बहुत मैथुन करने से

नाना प्रकार के कुपथ्य करने से पुरुष की लिङ्गेन्द्रिय में ५ प्रकार का उपदंश होता है। वायु १, पित्त २, कफ ३, सन्निपात ४ और लिङ्गेन्द्रिय में किसी तरह नख, दन्तादिक की चोट लगने का ५।

वायु के उपदंश का लक्षण

लिङ्गेन्द्रिय में गर्मी से पीड़ा हो, बेवाई के सदृश फट जाय, फड़के और उस जगह काली फुंसियाँ हों तो जानिए कि वायु का उपदंश है।

पित्त के उपदंश का लक्षण

उस जगह पीली फुंसियाँ हो जायँ, उनमें चेप बहुत निकले, कण्ठ में दाह हो अथवा फुंसियाँ लाल हों तो पित्त का उपदंश जानिए।

कफ के उपदंश का लक्षण

जिसमें खाज बहुत हो, सफ़ेद फुंसियाँ हों और गाढ़ी राद स्रवे उसे कफ का उपदंश कहिए, और ये सब लक्षण जिसमें मिले उसे सन्निपात का उपदंश जानिए।

उपदंश का असाध्य लक्षण

जो लिङ्गेन्द्रिय का मांस बिखर जाय, उसमें कृमि पड़ जायँ, इन्द्रिय गल जाय, अण्डकोश अवशेष रह जायँ वह उपदंश असाध्य जानिए। अथवा उपदंशवाला यत्न करे नहीं और विषय करता रहे उसके समय पाय लिङ्गेन्द्रिय बिषे सूजन हो आवे, इन्द्रिय पक जाय, उसमें कृमि पड़ जायँ और इन्द्रिय गल जाय वह पुरुष मर जाय।

लिङ्गार्श का लक्षण

जिस पुरुष की लिङ्गेन्द्रिय के ऊपर धान के अंकुर सदृश अंकुर हो जायँ व कुत्ते की शिखा के सदृश हो जायँ तथा लिङ्गेन्द्रिय में और उसकी सन्धि की नसों में पीड़ा बहुत हो, उसकी सन्धि और इन्द्रिय चूने लगे इसे लिङ्गार्श कहिए।

उपदंश का यत्न

जोंक लगाकर उस जगह का रुधिर कढ़ावे और उसको पकने न दे तो उपदंश जाय। अथवा साँठी की जड़, गिलोय, सोंठि, मुलहठी, बड़ के कोमल पत्ते इन्हें औटाय इनके पानी से लिङ्गेन्द्रिय को धोये तो उपदंश जाय। अथवा लिङ्गेन्द्रिय की फ़स्त खुलवावे तो उपदंश

जाय। अथवा बड़ के कोमल पत्ते, महुआ का बक्कल, जामुन का बक्कल, पठानी लोध, हड़ की छाल, हल्दी ये सब बराबर ले इन्हें जल में महीन पीस लिङ्गेन्द्रिय में लेप करे तो सब व्यथा जायँ। अथवा लिङ्गेन्द्रिय पक जाय और इन्हीं औषधों से धोवे तो उपदंश जाय। अथवा त्रिफला के काढ़े से धोवे अथवा भाँगरे के रस से धोवे अथवा कमल के पानी से धोवे अथवा लेप करे तो उपदंश जाय। अथवा सहँजने के बक्कल का चूर्ण अथवा दन्ती के बक्कल का चूर्ण महीन पीस लिङ्गेन्द्रिय में लेप करे तो उपदंश जाय। अथवा सुपारी पानी में घिस लगाये तो उपदंश जाय। अथवा कड़ाही में त्रिफला को जलाय उसको राखकर शहद से उपदंश पर लेप करे तो यह रोग दूर होवे। अथवा पटोल, नींब की छाल, त्रिफला, चिरायता, खैरसार, बिजैसार, गुग्गुल ये बराबर ले पीछे इन्हें औटाय पीवे तो उपदंश जाय। अथवा चिरायता, नींब की छाल, त्रिफला, पटोल, कणगच की जड़, आँवला, खैरसार, बिजैसार इनके काढ़े के पानी में घृत पकावे जब पानी जल जाय घृतमात्र रह जाय तब इस घृत का लेप करे अथवा भोजन में खाय तो उपदंश जाय। यह भूनिम्बादि घृत है।

अथवा जो घृत कोढ़ और व्रण के यत्न में लिखा है वह लगावे अथवा भोजन में खाय तो उपदंश जाय। अथवा जुलाब के लेने से उपदंश जाय। अथवा जंगी हड़ ८ पैसे भर, सफ़ेद कत्था १ पैसे भर, नीलाथोथा १ पैसेभर इन्हें महीन पीस पीछे पके हुए १०० नींबुओं के रस में खरल करे फिर सुखाकर इसकी १ माशे भर की गोली करे। १ गोली नित्य १५ दिन दही के साथ ले और पथ्य से रहे तो उपदंश निश्चय जाय। अथवा नीलाथोथा १ भाग, कत्था २ भाग, मुरदाशंख २ भाग, सुपारी को राख २ भाग इन्हें महीन पीस उपदंश के छालों पर बुरकावे तो उपदंश जाय। अथवा पारा, गन्धक, हरताल, सिंदूर, मैन-सिल इन्हें ताँबे के पात्र में ताँबे के घोटे से घृत में पीस ३ दिन पीछे इसे लगावे तो उपदंश जाय। अथवा अपस्मार दूर होने का यत्न जो पीछे लिखा है उससे लिङ्गार्श का यत्न वैद्य करे। ये सब भावप्रकाश में लिखे हैं।

शूकरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

जो मूर्ख पुरुष विना विचारे मूर्ख के कहने से लिङ्गेन्द्रिय को पट्टी, लेपादिक कर बढ़ाया चाहे उस पुरुष के लिङ्ग में शूकरोग उत्पन्न होता है। वह अठारह प्रकार का है-सर्षपिका १, अष्ठीलिका २, ग्रथित ३, कुम्भिका ४, अलजी ५, मृदित ६, सम्मूढ़पिड़िका ७, अवमन्थ ८, पुष्करिका ९, स्पर्शहानि १०, उत्तमा ११, शतपोनक १२, त्वक्पाक १३, शोणितार्बुद १४, मांसार्बुद १५, मांसपाक १६, विद्रधि १७, तिलकालक १८।

सर्षपिका शूकरोग का लक्षण

जिसके किसी तरह से लिङ्ग में कफरक्त करके सरसो सदृश फुंसियाँ हो जायँ उसे सर्षपिका शूकरोग कहिए।

अष्ठीलिका शूकरोग का लक्षण

लिङ्ग के बिषे कड़ी और टेढ़ी पीड़ा को लिये वायु से फुंसियाँ हों उसे अष्ठीलिका शूकरोग कहिए।

ग्रथित शूकरोग का लक्षण

लिङ्गेन्द्रिय बिषे कफ से फुंसियाँ हो जायँ उसे ग्रथित शूकरोग कहिए।

कुम्भिका शूकरोग का लक्षण

रक्तपित्त से जिसके लिङ्ग में जामुन की गुठली के सदृश फुंसियाँ हो जायँ उसे कुम्भिका शूकरोग कहिए।

अलजी शूकरोग का लक्षण

इन्द्रिय में प्रमेह की फुंसियाँ हो जायँ उसे अलजी कहिए।

मृदित शूकरोग का लक्षण

इन्द्रिय किसी तरह मसल गई हो और उसमें वायु करके पीड़ा हो आवे उसे मृदित शूकरोग कहिए।

संमूढ़पिड़िका शूकरोग का लक्षण

जिसके दोनों हाथों से इन्द्रिय पीड़ी गई हो उससे फुंसियाँ हो आवें उसे समूढ़पिड़िका शूकरोग कहिए।

अवमन्थ शूकरोग का लक्षण

लिङ्ग के बिषे कफ और रुधिर के दुष्टपने से बड़ी और बहुत फुंसियाँ

हों, उनमें पीड़ा हो तथा रोमाञ्च हो आवे उसे अवमन्थ शूकरोग कहिए।

पुष्करिका शूकरोग का लक्षण

जिसकी सुपारी के ऊपर पित्त रुधिर के कोप से फुंसियाँ बहुत हो जायँ उसे पुष्करिका शूकरोग कहिए।

स्पर्शहानि शूकरोग का लक्षण

जिसकी इन्द्रिय किसी कारण से हाथ आदि का स्पर्श न सहे उसको स्पर्शहानि शूकरोग कहिए।

उत्तमा शूकरोग का लक्षण

जिसके अजीर्ण से मूँग, उड़द के सदृश रक्तपित्त के कोप से लिंग में फुंसियाँ हो जायँ उसे उत्तमा शूकरोग कहिए।

शतपोनक शूकरोग का लक्षण

जिसके लिंग के विषे किसी कारण से वात, रुधिर के कोप से अधिक छिद्र पड़ जायँ उसे शतपोनक शूकरोग कहिए।

त्वक्पाक शूकरोग का लक्षण

वायु, पित्त, कफ से इन्द्रिय पक जाय, उसमें दाह हो, पीड़ा से शरीर में ज्वर हो आवे उसे त्वक्पाक शूकरोग कहिए।

शोणितार्बुद शूकरोग का लक्षण

जिसकी इन्द्रिय में काली, लाल, फुंसियाँ हो आवें और वहाँ पीड़ा हो उसको शोणितार्बुद शूकरोग कहिए।

मांसार्बुद शूकरोग का लक्षण

जिसकी इन्द्रिय का मांस बिखर जाय और वहाँ पीड़ा अधिक हो तो उसे सर्वदोष के कोप का मांसार्बुद शूकरोग कहिए।

मांसपाक शूकरोग का लक्षण

जिसकी इन्द्रिय का मांस सड़ जाय और राद बहने लगे व पीड़ा अधिक हो उसे मांसपाक शूकरोग कहिए।

विद्रधि शूकरोग का लक्षण

जिसके लिङ्ग में सन्निपात के कोप से फुंसियाँ उठें उसे विद्रधि शूकरोग कहिए।

तिलकालक शूकरोग का लक्षण

इन्द्रिय में काले और अनेक रंगों को लिये विषयुक्त फुंसियाँ होकर पकने लग जायँ और उनमें राद पड़कर इन्द्रिय गल जाय तो सन्निपात के कोप से हुआ तिलकालक शूकरोग कहिए।

शूकरोग का असाध्य लक्षण

मांसार्बुद १, मांसपाक २, विद्रधि ३, तिलकालक ४, ये चार अच्छे नहीं होते हैं।

शूकरोग का यत्न

अठारहों शूकरोगों का विष दूर करनेवाला यत्न करे अथवा लिङ्गेन्द्रिय में जोंक लगाकर दुष्ट रुधिर निकलवावे तो शूकरोग जाय। अथवा इन्द्रिय का अच्छा जुलाब दे तो शूकरोग जाय। अथवा लघु-भोजन से शूकरोग जाय। अथवा त्रिफला के काढ़े से गुग्गुल खाय तो शूकरोग जाय। अथवा अच्छी औषधों के लेप और सेंक से तथा शीतलयत्न से यह रोग जाय। अथवा दारुहल्दी, तुलसी, मुलहठी, धमासा इन्हें तेल डाल पकावे जब औषधें सीझ जायँ तब इस तेल का मर्दन करे तो शूकरोग जाय। अथवा खरैटी के तेल का मर्दन करे तो शूकरोग जाय। यह सर्वसंग्रह में लिखा है।

कुष्ठरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

विरुद्ध अन्न-पान के खाने-पीने और पतली, चिकनी, भारी वस्तु के खाने, धूप में रहने, श्रम करने, वमन और मल-मूत्र के वेगों के रोकने, बहुत अग्नि के तापने, बहुत भोजन करने, शीत-उष्ण के न गिनने, श्रम करने, भय लगने और धूप, भय, श्रम से दुःखितावस्था में तत्काल शीतल पानी पीने, अजीर्ण में भोजन करने, वमन और जुलाब आदि में कुपथ्य करने, नवीन जल पीने और दही, मछली, नोन, खटाई, उड़द, मूली, पिसा अन्न, तिल, हल्दी, गुड़ इनके बहुत खाने, दिन के सोने और ब्राह्मण के शाप से, अनेक प्रकार के अधिक खाने से, गुरु-पत्नी के साथ भोग करने से और अनेक प्रकार के पापों के करने से, मनुष्यों के वायु, पित्त, कफ और सातों धातुएँ दुष्ट होकर शरीर के रुधिर और मांस के जल को दूषित कर १८ प्रकार के कोढ़ के कारण प्रकट करती हैं।

अठारह प्रकार के कोढ़ों के नाम

कपाल १, उदुम्बर २, मण्डल ३, ऋक्षजिह्व ४, पुण्डरीक ५, सिध्म (विभूति) ६, काकण ७, एककुष्ठ ८, गजचर्म ९, चर्मदल १०, विचर्चिका ११, पामा १२, दाद १३, विस्फोटक १४, वैपादिक १५, किटिभ १६, अलस १७ और शतारु १८।

कुष्ठरोग का पूर्वरूप

पहले व्रण हों वे कोमल हों अथवा बहुत खरदरा अथवा रूखा जिनका स्पर्श हो, व्रणों में दाह हो खुजली चले वा त्वचा सूख जाय, व्रणों में पीड़ा हो, व्रण ऊँचा हो, शूल बहुत हो और तत्काल उसकी उत्पत्ति हो और बहुत दिन तक रहे तथा कुपथ्य तो थोड़ा करे परन्तु कोप बहुत हो और वायु के होने से रोमाञ्च हों, उसमें रुधिर काला निकले जिसमें ये लक्षण हों तो जानिए कि इसके कोढ़ होगा।

कोढ़ का सामान्य लक्षण

पूर्वजन्म के पाप से मनुष्यों की कुबुद्धि से विकूर्चित होकर कुपथ्य करे पीछे उन कुपथ्यों से कोप को प्राप्त हुए वायु, पित्त, कफ शरीर की नसों में प्राप्त होकर त्वचा, रुधिर और मांस को दूषित करें और शरीर को त्वचा का स्वरूप और सा ही कर दें उसको वैद्य कोढ़ कहते हैं तथा वायु शरीर में बहुत कोप कर कपालकुष्ठ को पैदा करती है। कफ कुपित हो मण्डल नाम कोढ़ को करता है। वायु, पित्त, कुपित हों तो विचर्चिका और ऋक्षजिह्व नाम कोढ़ को पैदा करते हैं। वायु, कफ, कुपित हो गजचर्म, किटिभकुष्ठ, सिध्म, अलसकुष्ठ और वैपादिक इनको पैदा करते हैं। पित्त, कफ कुपित हो दाद, शतारु, पुण्डरीक, विस्फोटक, कोढ़, पामा और चर्मदलकोढ़ इनको पैदा करते हैं और सब वायु, पित्त, कफ शरीर में कोप को प्राप्त होकर काकण नाम कोढ़ को पैदा करते हैं।

कापालिक महाकुष्ठ का लक्षण

जिसके शरीर की त्वचा काली, लाल, फटी, रूखी, कठोर और सूखी हो और उसमें पीड़ा बहुत हो उसको वैद्य कपाल नाम कोढ़ कहते हैं। यह कोढ़ विषम है देर से जाता है।

औदुम्बर कोढ़ का लक्षण

जिसके शरीर की त्वचा में दाह और ललाई बहुत हो, खुजली बहुत चले, रोम रोम में पीड़ा हो, शरीर की त्वचा गूलर के फल सदृश हो जाय उसे औदुम्बर कोढ़ कहिए।

मण्डल कोढ़ का लक्षण

जिसकी त्वचा सफ़ेद और लाल हो स्थिर रहे, चिकनी और ऊँची हो, गीली रहा करे उसे मण्डल कोढ़ कहिए।

सिध्म (विभूति) कोढ़ का लक्षण

जिसकी त्वचा सफ़ेद, ताँबे के सदृश हो, सूक्ष्म हो, उसमें खुजली चले और महीन महीन त्वचा उतर जाय तथा वह विभूति मुख्य हृदय में बहुत हो, घिया के फूल के सदृश हो उसे वैद्य सिध्मनाम (विभूति) कोढ़ कहते हैं।

काकड़ कोढ़ का लक्षण

जिसकी त्वचा रेशम के सदृश हो, बीच में काली और अन्त में लाल हो, पके नहीं, पीड़ा बहुत हो उसे काकण कोढ़ कहते हैं। यह सन्निपात के कोप से होता है परन्तु अच्छा हो जाता है।

पुण्डरीक कोढ़ का लक्षण

जिसकी त्वचा सफ़ेद ललाई लिये कमल की पाँखुरी सदृश हो उसके कफ के कोप से हुआ पुण्डरीक कोढ़ जानना।

ऋक्षजिह्व कोढ़ का लक्षण

जिसकी त्वचा रुधिर पर्यंत में लाल हो और जिसमें काली भी हो उसे ऋक्षजिह्व कोढ़ कहते हैं।

११ क्षुद्रकोढ़ों में एककुष्ठ नाम कोढ़ का लक्षण

जिसकी त्वचा में पसीना नहीं आवे, जिसका स्थान बड़ा हो, मछली के टूक सदृश हो उसे एककुष्ठ नाम कोढ़ कहते हैं।

गजचर्म कोढ़ का लक्षण

हाथी की चर्म सदृश जिसकी त्वचा बदरंगी हो उसे गजधर्म कोढ़ कहिए।

चर्मदल कोढ़ का लक्षण

जिसकी त्वचा शूलयुक्त लाल हो, खुजली चले, फोड़े फटे से हों और हाथ का स्पर्श न सहा जाय, उसे चर्मदल जानों।

विर्चाचिका कोढ़ का लक्षण

जिसकी त्वचा में खाज को लिये काली फुंसियाँ हों, उनमें चेप निकले और हाथ, पैर में हों, उसे विचर्चिका कोढ़ कहिए।

पामा कोढ़ का लक्षण

जिसके शरीर में छोटी-छोटी और बहुत फुंसियाँ हों, उनमें चेप निकले, खाज हो और लाल फुंसियाँ हों और दाह हो उसे पामा कोढ़ कहिए।

दाद कोढ़ का लक्षण

जिसमें खाज हो और फुंसियाँ लाल हों, त्वचा से ऊँची हों ये लक्षण हों तो उसे दादकोढ़ कहिए।

दाद के भेद कच्छदाद का लक्षण

जिसके हाथ, पैर, काँछ और कटि में फुंसियाँ हों तथा उनमें दाह हो उसे कच्छदाद कोढ़ कहिए।

विस्फोटक कोढ़ का लक्षण

जिसकी त्वचा में काले, लाल और छोटे-छोटे फोड़े हों उसे विस्फोटक कोढ़ कहिए।

किटिम कोढ़ का लक्षण

जिसकी त्वचा में सूखे व्रण के समान लाल और खरदरा कठोर स्पर्श हो उसे किटिभ कोढ़ कहिए।

वैपादिक कोढ़ का लक्षण

जिसमें खुजली चले, दाह और पीड़ा को लिए पैर ही में हो उसे वैपादिक कोढ़ कहिए।

अलस कोढ़ का लक्षण

जिसकी त्वचा में खुजली को लिये लाल फुंसियाँ हों उसे अलस कोढ़ जानिए।

शतारु कोढ़ का लक्षण

जिसकी त्वचा में लाल, काली और दाह को लिये फुंसियाँ हों उसे शतारु कोढ़ कहिए।

शरीर की सात धातुओं में प्राप्त हुए कोढ़ के पृथक्-पृथक् लक्षण

रसधातु में प्राप्त हुए कोढ़ का लक्षण

त्वचा में स्थित कोढ़ की त्वचा का स्वरूप और सा हो जाय, त्वचा रूखी हो, सूख जाय, रोमाञ्च हो और पसीना बहुत आवे ये लक्षण हों तो रसधातु में प्राप्त हुआ कोढ़ जानिए।

रुधिर में प्राप्त कोढ़ का लक्षण

जिसमें खाज हो और राद निकले तब जानिए रुधिर में प्राप्त हुआ कोढ़ है।

मांस में प्राप्त कोढ़ का लक्षण

जो कोढ़ बहुत पुष्ट हो और मुँह बहुत सूखे, फुंसियाँ कठोर और पीड़ायुक्त हों तो मांस में प्राप्त हुआ कोढ़ जानिए।

मेद में प्राप्त कोढ़ का लक्षण

हाथ नष्ट हो जायँ, कुहनी आय रहे, चला न जाय, सब अङ्ग टूटने लगें, थोड़ी चोट सर्वत्र फैल जाय, मुँह सूखे, फुंसियाँ कठोर और पीड़ा युक्त हों तो उसे मेद में प्राप्त हुआ कोढ़ जानिए।

हाड़मींगी में प्राप्त कोढ़ का लक्षण

नाक गल जाय, नेत्र लाल हो जायँ, व्रणों में कृमि पड़ जायँ, कण्ठ का स्वर घों-घों हो जाय और व्रणों में पीड़ा हो तब जानिए हाड़मींगी में प्राप्त हुआ कोढ़ है।

वीर्य में प्राप्त कोढ़ का लक्षण

जिसके माता पिता के वीर्य में कोढ़ के बहुत दोष हों तो उनसे हुई सन्तति के भी कोढ़ होता है।

कोढ़ का साध्यासाध्य लक्षण

जो कोढ़ वायु, कफ का हो और त्वचा, रुधिर, मांस में रहता हो तो साध्य जानिए और जो कोढ़ मेद में प्राप्त हो कृमि पड़ जायँ, दाह हो, मन्दाग्नि हो जाय और त्रिदोष का हो वह असाध्य जानिए। शुक्र में प्राप्त हुआ कोढ़ भी असाध्य होता है।

कोढ़ का असाध्य लक्षण

कोढ़ बिखर जाय, चूने लग जाय, स्वर घों-घों हो जाय ऐसे को वमन, विरेचन नहीं करने दे।

श्वित्र (कुष्ठभेद) की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

जो कोढ़ की उत्पत्ति है वही श्वित्र की भी उत्पत्ति है। श्वित्र भी लाल हो, चुवे नहीं, कोढ़ चुवे इसमें यही भेद है। श्वित्र का भेद एक किलास है यह लाल होता है। श्वित्र दो प्रकार का है। वायु, पित्त, कफ का १, और व्रण का २।

श्वित्रकोढ़ का साध्यासाध्य लक्षण

महीन हो, काले बालों में हो, एक दोष का हो, नवीन उत्पन्न न हो, अग्नि से उपजा हो ऐसा श्वित्र कोढ़ साध्य जानिए। इसमें और लक्षण हों तो श्वित्र असाध्य जानिए।

अथवा कुष्ठी के मिलाप से मनुष्यों के कुष्ठ लग जाता है ऐसे ही और भी रोग लग जाते हैं। रोगवालों का प्रसंग करे, इकट्ठा भोजन करे, इकट्ठा सोवे, आपस में वस्त्र पहिरे, आपस में किसी वस्तु का लेप करे तो इतने रोग लग जाते हैं—श्वास १, कोढ़ २, ज्वर ३, राजरोग ४, नेत्ररोग ५ और शीतला आदि।

पुनः कोढ़ का असाध्य लक्षण

गुह्य स्थान और मुख, हाथों पर का कोढ़ दूर नहीं होता।

कोढ़ रोग का यत्न

हड़ की छाल, कणगच की जड़, सरसों, हल्दी, चाब, बावची, सेंधानोन, बायबिड़ंग, ये सब बराबर ले इन्हें गोमूत्र में महीन पीस कोढ़ में लेप करे तो कोढ़ दूर हो। यह पथ्यादिलेप है।

अथवा बावची को महीन पीस अदरक के रस की उसमें पुट दे पीछे इस कोढ़ के ऊपर उबटन करे तो कोढ़ जाय। अथवा नींब के फूल के समय तो नींब के फूल ले और फल, बक्कल, जड़ और पत्ते ले और दोनों हल्दी, त्रिफला, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, ब्राह्मी, गोखुरू, शोधा भिलावाँ, चित्रक, बायबिड़ंग, सार, बाराहीकन्द, गिलोय, बावची, अमलतास, मिश्री, कूट, इन्द्रयव, पाढ़, खैरसार, ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस नागरमोथा के रस की पुट दे पीछे नींब के पञ्चाङ्ग के रस की ७ पुट दे, फिर भाँगरे के रस की ७ पुट दे तदनन्तर छाया में सुखाय महीन पीस चूर्ण कर ले, पीछे अच्छा दिन देखके कोढ़वाले को शहद के साथ अथवा खैरसार के काढ़े के साथ प्रभात समय गर्म पानी से अधेलाभर के प्रमाण जुलाब दे पीछे थोड़ा-थोड़ा टके भर तक बढ़ाता जाय और घृत समेत इसके ऊपर हल्का भोजन करे तो इतने रोगों को यह दूर करे—व्योत्री, उदुम्बर, पुण्डरीक, कपाल, दाद, किटिभ, अलश, शतारु, विस्फोटक ये सब जाति के कोढ़ हैं और

विसर्परोग, भगन्दर, श्लीपद, वातरक्त और व्रणमात्र, प्रमेहमात्र, प्रदर, विषमात्र, उदर के रोग इत्यादि। यह ब्रह्माजी का कहा हुआ निम्बपञ्चकावलेह है इसका सेवन मार्कण्डेयादि ऋषियों ने किया है।

अथवा बावची ५ टके, शोधा गुग्गुल ५ टके, शोधी सोनामक्खी ३ टके, सार २ टके, गोरखमुण्डी ३ टके, त्रिफला ३ टके, कणगच १ टके, खैरसार ५ टके, गिलोय २ टके, निशोत २ टके, नागरमोथा २ टके, बायविड़ंग १ टके, हल्दी २ टके, तज १ टके, नींब का पञ्चाङ्ग ५ टके, चित्रक २ टके भर इन सबको महीन पीस ८ माशा प्रमाण शहद, घृत के साथ गोली करे पीछे प्रभात हो १ गोली गोमूत्र से ले तो कोढ़मात्र और वातरक्त, पाण्डुरोग, उदररोग, प्रमेह, गोला आदि रोगों को यह दूर करे। यह वृद्धता को दूर कर तरुणता को करता है। यह स्वयंभवगुग्गुल है।

अथवा चित्रक, त्रिफला, सोंठि, मिरच, पीपल, जीरा, कलौंजी, खुरासानी बच, सेंधानोन, अतीस, कूट, चव्य, इलायची, जवाखार, बायबिड़ंग, अजमोद, नागरमोथा, देवदारु, ये सब बराबर ले और इन सबकी बराबर शोधा गुग्गुल ले पीछे इन सबको महीन पीस एकजीव करे फिर घृत से ४ माशे भर की गोली करके एक गोली भोजन के समय खाय तो कोढ़मात्र, कृमि, व्रणमात्र, संग्रहणी, बवासीर, गृध्रसी, गोला आदि को यह दूर करता है। यह कैशोरगुग्गुल है।

अथवा २ सेर शोधा मिलावाँ १६ सेर पानी में औटावे पीछे औटते में गिलोय २ सेर कूट कर डाले जब इस पानी का चतुर्थांश रहे तब उतार उसमें गो का घृत १ सेर और गो का दूध ४ सेर डाले पीछे मिश्री १ सेर डाल फिर शहद आध सेर डाल पीछे मधुरी आँच से पकावे ये सब ठंडी हों तब इसको आँच पर से उतार ये ओषधियाँ डाले—बावची, पवाँर के बीज, नींब की छाल, हड़ की छाल, आँवला, सेंधानोन, नागरमोथा, तज, इलायची नागकेसर, पित्तपापड़ा, पत्रज, नेत्रबाला, खस, चन्दन, गोखुरू, कचूर, रक्तचन्दन इन प्रत्येक ओषधियों को आठ-आठ माशा प्रमाण ले महीन पीस उस रस में मिलाय एकजीव करे पीछे इसे १ टके भर प्रातःकाल जल के साथ नित्य ले

तो सर्व कुष्ठमात्र, वातरक्त, बवासीर आदि को यह दूर करता है। इस अमृतभल्लातक का खानेवाला इतने काम न करे। खेद न करे, धूप में न रहे, अग्नि के पास न जाय, खटाई, मांस, दही न खाय, तेल न लगावे, मार्ग न चले। यह अमृतभल्लातकावलेह है।

अथवा नींब का बक्कल, गोरीसर, मंजीठ, कुटकी, त्रायमाण, त्रिफला, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, बावची, जवासा, बच, खैरसार, रक्त-चन्दन, पाढ़, सोंठि, भारंगी, अड़ूसा, चिरायता, कुड़ा की छाल, निशोत, इन्द्रायण की जड़, मूर्वा, बायबिड़ंग, इन्द्रयव, चित्रक, मानपात, गिलोय, बकायन, पटोल, दोनों हल्दी, पीपल, अमलतास की गिरी, सतोन्यवेद, शोधी विरमिटी, करिहारी की जड़, रास्ना, साँठी की जड़, दन्ती, शोधा जमालगोटा, भाँगरा, कटसैला, अखरोट, शाखो-टक ये सब ओषधियाँ पृथक्-पृथक् टके-टके भर ले जवकुट कर १६ सेर पक्के पानी में औटावे जब इसका चतुर्थांश रहे तब उतार छान ले पीछे १००० शोधा भिलावाँ १६ सेर पानी में औटाय ले जब इसका भी चतुर्थांश रहे तब जुदा रक्खे पीछे इन दोनों को इकट्ठा मिलाय ले पीछे इन दोनों के रस में १०० टके भर गुड़ की चाशनी बनावे उसमें सोंठि, मिरच, पीपल, त्रिफला, नागरमोथा, बायबिड़ंग, चित्रक, सेंधा-नोन, चन्दन, कूट, अजमोद, तज, पत्रज, नागकेसर, इलायची ये प्रत्येक ओषधियाँ एक-एक टके भर ले महीन पीस डाले फिर एक-जीव करे पीछे अच्छा दिन देखि २ टके भर नित्य खाय तो सर्वकोढ़-मात्र, बवासीर, व्रणमात्र, कृमिरोग, रक्तपित्त, उदावर्त, कास, श्वास, भगन्दर इन रोगों को यह दूर करता है। और आमवात को दूर कर पुष्टई को करता है तथा शरीर की परमकान्ति को कर भूख को बढ़ाता है। इसका खानेवाला खटाई आदि कुपथ्य न करे, गर्म वस्तु न खाय। यह भल्लातकावलेह।

अथवा मंजीठ, त्रिफला, कुटकी, बच, दारुहल्दी, नींब की छाल, गिलोय इन्हें बराबर ले जवकुटकर काढ़ा बनाकर नित्य ले तो कोढ़-मात्र, वातरक्त, विसर्प, विस्फोटक, इन्हें दूर करता है। यह लघुमंजि-ष्ठादिक्वाथ है।

अथवा मंजीठ, बावची, पवाँड़, नींब की छाल, इड़ की छाल, हल्दी, आँवला, अड़ूसा, शतावरि, खरैटी, गंगेरन की छाल, मुलहठी, महुआ, कटेली, पटोल, खस, गिलोय, रक्तचन्दन ये सब बराबर ले जवकुट कर काढ़ा बना पीवे तो यह कुष्ठमात्र और वातरक्त को दूर करता है। यह मध्यमंजिष्ठादिक्वाथ है।

अथवा मंजीठ, इन्द्रयव, गिलोय, नागरमोथा, बच, सोंठि, हल्दी, दोनों कटेली, नींब की छाल, पटोल, कूट, कुटकी, भारंगी, बायबिड़ंग, चित्रक, मूर्वा, देवदारु, जलभाँगरा, पीपल, त्रायमाण, पाढ़, शतावरि, खैरसार, विजयसार, त्रिफला, चिरायता, बकायन, अमलतास की गिरी, निशोत, बावची, रक्तचन्दन, वरुणा, दन्ती, शाखोट, अड़ूसा, पित्तपापड़ा, गौरीसर, अतीस, जवासा, इन्द्रायण की जड़ ये सब बराबर ले जवकुटकर काढ़ा बनाकर नित्य ले तो अठारह प्रकार के कोढ़मात्र, वातरक्त, रुधिर के विकारमात्र, विसर्परोग, त्वचा का शून्यपना, इन सब रोगों को दूर करता है। यह बृहन्मंजिष्ठादिक्वाथ है।

अथवा कालीमिरच, निशोत, नागरमोथा, हरताल, मैनसिल, देवदारु, दोनों हल्दी, बालछड़, कूट, रक्तचन्दन, इन्द्रायण की जड़, कलौंजी, आक का दूध, गोबर का रस ये सब औषध धेले-धेले भर ले शिंगीमोहरा १ पैसे भर, कड़ुआतेल १ सेर, पानी ४ सेर, गोमूत्र ८ सेर ले पीछे इन सबको मधुरी आँच से औटावे जब ये सब जल आदि जल जायँ तेलमात्र आय रहे तब उतार छान ले पीछे इसका मर्दन करे तो सर्वकुष्ठमात्र को यह दूर करता है। यह लघुमरिचादि तेल है।

अथवा कालीमिरच, निशोत, दन्ती, आक का दूध, गोबर का रस, देवदारु, दोनों हल्दी, बालछड़, कूट, रक्तचन्दन, इन्द्रायण की जड़, कलौंजी, हरताल, मैनसिल, कनेर की जड़, चित्रक, कलिहारी की जड़, नागरमोथा, बायबिड़ंग, पवाँड़, सिरस की जड़, कुड़ा की छाल, नींब की छाल, सतोना की छाल, गिलोय, थूहर का दूध, अमलतास की गिरी, खैरसार, बावची, बच, मालकाँगनी ये सब औषध दो-दो टके भर, सिंगीमुहरा ४ टके भर, कड़ुआतेल ४ सेर, गोमूत्र १६ सेर

ले इन सबको इकट्ठा चढ़ाय मधुरी आँच मे पकावे जब गोमूत्र आदि सब जल जायँ तेलमात्र रह जाय तब उतार छान ले पीछे इस तेल का मर्दन करे तो कोढ़मात्र को दूर करे और इसका मर्दन यौवनपने को करता है और यह तेल मनुष्य, घोड़ा, हाथी आदि के वायुमात्र के रोगों को भी दूर करता है। यह मरिचादितैल है।

अथवा हरताल का चोखा पत्र कर चित्रक के रस से १ दिन खरल करे पीछे साठी के रस से एक दिन खरल करे पीछे इसकी टिकड़ी कर अच्छी तरह सुखावे फिर इस हरताल को साठी के पञ्चाङ्ग के खार के बीच में धर चूल्हे पर चढ़ावे और इस हरताल का धुआँ न निकलने दे फिर उसकी टिकड़ी को उस साठो के खार के बीच खूब दाब दे पीछे उसके नीचे निरन्तर एक रात दिन तक मधुरी आँच दे अथवा ४ दिन तक दे फिर स्वाङ्गशीतल हुई उस टिकड़ी को खार में से अच्छे प्रकार चतुर मनुष्य निकाले वह हरताल तोल में पूरी उतरे, निर्धूम और सफेद हो तो इसमें से २ रत्ती मनुष्य खाय उसके ऊपर मरिचादिक क्वाथ ले तो अठारह प्रकार के कोढ़, वातरक्त, उपदंश, फिरंगवायु इनको यह हरताल दूर करता है और इसका खानेवाला नोन, खटाई, कड़ुआ रस न खाय। धूप में न सोवे। यदि नोन बिना नहीं रहा जाय तो सेंधानोन खाय और मीठा बहुत खाय। यह हरताल की विधि है। इसी को तालकेश्वर रस कहते हैं।

अथवा पारा, शोधीगन्धक, ताम्रेश्वर, सार, गुग्गुल, चित्रक, शिलाजीत, कुचिला, बच, अभ्रक ये सब बराबर और कणगच के बीज एक औषध के भाग से चौगुना ले। प्रथम पारे और गन्धक की कजली करे फिर कजली में सब औषध मिलाय एकजीव करे पीछे इसमें से ८ माशा शहद घृत के साथ नित्य खाय ऊपर से चावल, दूध ही खाय तो गलितकुष्ठ जाय और शरीर उसका महासुन्दर कामदेव के सदृश हो जाय। यह रस खाय तो स्त्रीप्रसंग न करे। यह गलितकुष्ठारिरस है।

विभूति का यत्न

कूठ, मूली के बीज, सरसों, हल्दी, केसर इन्हें सिरस के जल में

पकाय लेप करे तो बहुत दिन की भी विभूति जाय। अथवा केले का खार, हल्दी, दारुहल्दी, मूली के बीज, हरताल, देवदारु, शंख का चूर्ण ये सब बराबर ले इन्हें नागरबेल के पत्तों के रस में महीन पीस लेप करे तो विभूति दूर हो।

चर्मदलकोढ़ का यत्न

अमचूर में किंचित् सेंधानोन डाल जल से ताँबे के पात्र में ताँबे के घोटे से खूब पीस लेप करे तो चर्मदलकोढ़ जाय।

पामाकोढ़ का यत्न

जीरा १ टके भर, सिंदूर ५ टके भर इन दोनों को कड़ुए तेल में खूब पीस पकाय लेप करे तो पामा अच्छी हो। अथवा मंजीठ, त्रिफला, लाख, कलिहारी की जड़, हल्दी, आँवलासार गन्धक इन्हें बराबर ले महीन पीस धूप में खूब गर्म करे फिर इसका लेप करे तो पामा अच्छी हो। अथवा पारा, दोनों जीरा, दोनों हल्दी, कालीमिरच, सिंदूर, आँवलासार गन्धक, मैनसिल ये बराबर ले पीछे पारे गन्धक की कजली कर इस कजली में ये औषध महीन पीस गौ के घृत में १ दिन खरल करे पीछे इसका मर्दन करे तो पामा दूर हो। अथवा पारा, आँवलासार गन्धक, नीलाथोथा, कत्था, मेंहदी, खुरासानी अजवाइन, मोम, मालकाँगनी ये सब बराबर ले पीछे पारे गन्धक की कजली कर और मोम को घृत में जुदा पिघलावे पीछे ये औषध पृथक् पीस कजली में मिलावे पीछे सब औषध गौ के घृत में इकट्ठी कर १ दिन तक पीसे पीछे इसका मर्दन करे तो पामा आदि रुधिर के सब रोग जायँ। अथवा शोधी आँवलासार गन्धक ८ माशा, नीलाथोथा ३ माशे इन दोनों को पानी से महीन पीस गोली बाँधे पीछे इस गोली को महीन कपड़े में बाँध पोटली करे और इस पोटली को गेहूँ की अलोनी ३ या ४ बाटी में सेंके फिर महीन पीस घृत में चुपड़ खावे अथवा इसका बूरे से चूरमाकर ५ दिन खाय तो पामा आदि रुधिर के सब विकार जायँ। अथवा सेंधानोन, पवाँड़ के बीज, सरसों, पीपल इन्हें कांजी के पानी में महीन पीस लेप करे तो पाँव की खुजली दूर हो।

कच्छदाद की औषधि

आक के पत्तों का रस और हल्दी के काढ़े का रस इनमें सरसों

का तेल पकावे पीछे इस तेल का मर्दन करे तो कच्छदाद जाय। यह अर्कतैल है।

अथवा मैनसिल, हीराकसीस, आँवलासार गन्धक, सेंधा नोन, सोनामक्खी, पत्थरफोड़ा, सोंठि, पीपल, कलिहारी, कनेर, बायबिड़ंग, चित्रक, दन्ती, नींब के पत्ते ये सब औषध धेला-धेला भर ले इन्हें जल से महीन पीस इनके पानी में कड़ुआ तेल २ सेर पकावे और उसी में आक और थूहर का दूध आध-आध पाव डाले और गोमूत्र ४ सेर डाले पीछे इसको मधुरी आँच से पकावे जब ये सब जल जायँ तेल-मात्र आय रहे तब इसका मर्दन करे तो असाध्य कच्छदाद जाय और पामा, खुजली और भी रुधिर के सब रोग जायँ। यह 'कच्छुराक्षस-नाम तैल है।

दाद का यत्न

कूट, बायबिड़ंग, पवाँड़ के बीज, तिल, सेंधानोन, सरसों ये सब बराबर ले इन्हें खटाई से महीन पीस लेप करे तो दाद, कोढ़ दूर हो। अथवा दूब, हड़ की छाल, सेंधानोन, पवाँड़ के बीज, कनेर की छाल ये सब बराबर ले पीछे इन्हें कांजो में अथवा मट्ठे में महीन पीस लेप करे तो दाद, कच्छ, और खाज जायँ।

श्वित्रनाम कोढ़ का यत्न

बहेड़े की छाल, हड़ की छाल, कठुम्बर, बावची इनका काढ़ा ले तो श्वित्रनाम कोढ़ जाय। अथवा हरताल, मैनसिल, त्रिरमिटी, चित्रक इन्हें गोमूत्र में महीन पीस लेप करे तो श्वित्र नाम कोढ़ जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं। अथवा हल्दी ८ टके भर, गौ का घृत ६ टके, गौ का दूध ४ सेर, मिश्री ५ टके, सोंठि १ टके, कालीमिरच १ टके, पीपल १ टके, तज १ टके, नागकेसर १ टके, बायबिड़ंग १ टके, निशोत १ टके, त्रिफला ३ टके, केसर १ टके, नागरमोथा १ टके ले पीछे इन्हें महीन जुदा-जुदा पीस घृत में मकरोय हल्दी और दूध में उसका खेरवा मावा करे पीछे इस मावे समेत खाँड़ की चाशनी कर उसमें सब ओषधि डाले पीछे इसकी गोली टकाभर की

बाँधे १ गोली नित्य खाय तो कोढ़, खुजली, फोड़े की दाद इन रोगों को यह दूर करता है। यह हरिद्राखण्ड है।

हरताल मारने की विधि

तबकिया हरताल चोखा ले उसमें दशवाँ हिस्सा सुहागा मिलाय उसकी बाफता के कपड़े में चार पोटली करे पीछे वह पोटली जम्भीरी के रस के बीच में धर दोलिकायन्त्र कर उसके नीचे दो प्रहर अच्छी गाढ़ी आँच दे औटावे पीछे इसी तरह कांजी के पानी में औटावे फिर पेठे के पानी में औटावे पीछे तेल में औटावे और इसी तरह त्रिफले के पानी में औटावे पीछे इस हरताल को किसी तरह की खटाई में धोय ले फिर इसे छिलके के बक्कल के रस में २ दिन रात्रि में खरल करे पीछे धूप में सुखाय इसका गोला करे फिर गोले को सकारे के सम्पुट में खूब यत्न से मिलाय सरवे को थाम दे पीछे गजपुट में अरने उपले की आँच दे शीतल होने पर उसमें से हरताल को निकाल बकरी के दूध में १ दिन खरल करे पीछे फिर इसका गोला कर धूप में सुखावे फिर पलाश की ४ सेर राख पक्की हाँड़ी में भरे और उसके बीच में हरताल का गोला धर खूब राख मुँह तक दाबकर भरे पीछे उस हाँड़ी को चूल्हे पर चढ़ाय नीचे आँच दे उसका धुआँ न निकलने दे इसी तरह अनुक्रम से मन्द, मध्य और अत्यन्त गाढ़ी ३२ प्रहर आँच दे पीछे स्वाङ्ग शीतल होने पर हरताल को निकाले। हरताल सफेद, निर्धूम, तोल की पूरी निकले तो इसे पुराने गुड़ के साथ १ रत्ती खाय ऊपर चने की रोटी, साठी चावल गौ का घृत ये इक्कीस दिन खाय और नोन खटाई न खाय तो १८ प्रकार के कोढ़ वातरक्त, फिरंग वायु इनको यह हरताल दूर करता है। यह हरतालमारणविधि है।

अथवा पारा ८ माशा, शोधीगन्धक ८ माशा, हरताल ८ माशा, मैनसिल ८ माशा, बावची २० माशा, धमाशा ८ माशा, सिंदूर ८ माशा, दोनों हल्दी २० माशा इन सबको गौ के घृत से खूब महीन पीस लेप कर २ प्रहर धूप में बैठे फिर स्नान करे तो कोढ़, दाद, कृमि ३ दिन में दूर हों। अथवा छीले की जड़ के सूखे बक्कल २५ टके भर की राख कर उसको नवीन पक्की अच्छी हाँड़ी में भर उसके बीच तब-

किया चोखा हरताल २५ माशे भर यत्न से धर गाड़ दाब दे फिर उस हाँडी के ऊपर सरवा ढक पीछे उस हाँड़ी को चूल्हे पर चढ़ाय उसके नीचे १ प्रहर तक अत्यन्त अग्नि जलावे फिर स्वाङ्ग शीतल होने पर नये वस्त्र से छान ले फिर इस राख को १ रत्ती प्रमाण ले पिसा हुआ जीरा १ माशे ले इन दोनों को एक कर पके नागरबेलि के पत्तों के साथ शीतल जल से खाय। इसके ऊपर चने की अलोनी रोटी एक मण्डल तक खाय। इसका खानेवाला पवन, धूप से बचता रहे तो अठारह प्रकार के कोढ़, वातरक्त, व्रणमात्र, पिड़िका, वातव्याधि इन सब रोगों को यह दूर करता है।

दाद का यत्न

पवाँड़ के बीज, बावची, सरसों, तिल, कूट, दोनों हल्दी, नागरमोथा ये सब बराबर ले इन्हें मट्ठे में खूब महीन पीस लेप करे तो दाद, कंडू, व्योंची ये सब दूर हों।

कोढ़ के दूर होने का लेप

नीलाथोथा, सुहागा ये दोनों ८ माशा, बावची २० माशा इन तीनों को महीन पीस जलभाँगरे के रस की इसमें ७ पुट दे फिर इसका लेप करे तो कोढ़ जाय। ये सर्वयत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं।

महालेप

पारा एक टके भर, शंख का खार १ टके, आँधीझाड़े का खार १ टके, तिलों का खार १ टके, साठी का खार १ टके, हड़ का खार १ टके, अड़ूसे का खार १ टके भर और पटोल का खार, अरण्य का खार, जवाखार, सुहागा, सज्जी, नौसादर, आँवलासार गन्धक, पाँचों नोन, कूट, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, डाँसरे की जड़, आक की जड़, नीलाथोथा, करिहारी की जड़, हल्दी, जिमींकन्द, गोरखमुण्डी का खार, काहू का खार, पीपल का खार, राई, सरसों, सिंदूर, शिलाजीत, पापड़खार, कबीला, पठानीलोध, थूहर की जड़, आम्र की जड़, चित्रक, आक के पञ्चांग का खार ये सब औषध पृथक्-पृथक् एक-एक टके भर ले फिर इन सब ओषधियों को महीन पीस इकट्ठा कर गोमूत्र में मिलाय ताँबे के बड़े पात्र में रक्खे फिर इसमें इतनी वस्तु और डाले

भैंस, घोड़ा, बकरा, हाथी, ऊँट इनका मूत्र और नींबू का रस, जँभीरी का रस, बिजौरे का रस, नारंगी का रस, चने का खार, सहँजने का रस, राई के संयोग की सातों धातु की कांजी ये सब उसके अनुमान मुवाफ़िक डाले फिर उसका मुँह ढाँक २१ दिन अच्छे प्रकार से धर रक्खे फिर इसका लेप करे तो सर्व कोढ़मात्र दूर हों और गण्डमाला, विसर्प, बवासीर, ब्यौंत्री, वायु के सब रोग १ महीने में जायँ। यह रससारसंग्रह में लिखा है।

इति षोडशस्तरङ्गः ॥ १६ ॥

--:(०):--

शीत, पित्त, उदर्द, कोढ़, उत्कोष्ठ और पित्ती रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

शीतल पवन के स्पर्श करने से कफ और वात दुष्ट होकर पित्त सहित अनेक कारण करके त्वचा में और बाहर वायु और कफ करके शीतपित्तादिक के रोगों को पैदा करते हैं।

शीतपित्तादिक का पूर्वरूप

तृषा लगे, अरुचि हो, वमनसी आवे, देह में पीड़ा हो, शरीर भारी हो, नेत्र लाल हो जायँ ये लक्षण हों तो जानिए कि शीतपित्तादिक का रोग होगा।

शीतपित्त और उदर्द का लक्षण

जैसे कीड़े के काटने से चकत्ते हो आवें वैसे त्वचा के ऊपर चकत्ते बहुत हो जायँ और उनमें खुजली हो और पीड़ा बहुत हो और छर्दि और ज्वर हो, दाह लग जाय तो जानिए कि शीतपित्त है और इसी को उदर्द कहिए। वायु की अधिकता हो तो शीतपित्त जानिए। कफ की अधिकता हो तो उदर्द जानिए। यह शिशिरऋतु में बहुत होता है।

कोढ़ उत्कोष्ठ का लक्षण

वमन को रोके तो पित्त, कफ दुष्ट होकर लाल-लाल खुजली को लिए शरीर में चकत्ते कर दें उसे कोढ़ कहिए। यह थोड़ी देर रहे और यही बहुत देर रहे तो उत्कोष्ठ कहिए।

शीतपित्त, उदर्द, कोढ़ और उत्कोष्ठ रोग का यत्न

ओषधियों से वमन कराय दे तो शीतपित्त, उदर्द दूर हों। अथवा पटोल, नींब की छाल, अड़ूसा, त्रिफला, गुग्गुल, पीपल इनका

काढ़ा दे तो शीतपित्त, उदर्द जायँ। अथवा जुलाब दे तो यह रोग जाय। अथवा कड़ुवे तेल का मर्दन करे और शरीर को गर्म पानी से धोवे तो शीतपित्त और उदर्द जायँ। अथवा त्रिफला शहद से खाय तो शीतपित्त, उदर्द जायँ। अथवा मिश्री के संयोग से कुटकी का जुलाब ले तो शीतपित्त और उदर्द जायँ। अथवा गुड़ आँवला खाय अथवा अजवाइन, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, जवाखार इनका चूर्ण ८ माशा ७ दिन गर्म पानी से ले तो शीतपित्त, उदर्द जायँ। अथवा अदरक का रस, पुराना गुड़ खाय तो शीतपित्त, उदर्द जायँ। अथवा सरसों, हल्दी, पवाँड़ के बीज, तिल इन सबको कड़ुए तेल में महीन पीस लेप करे तो शीतपित्त, उदर्द जायँ। अथवा अजमोद २० माशा, गुड़ २० माशा इन दोनों को इकट्ठा कर ५ दिन व ७ दिन नित्य खाय तो शीतपित्त, उदर्द जायँ। अथवा बकायन का बकला ४ माशा महीन पीस गौ के घृत के साथ पीवे तो शीतपित्त, उदर्द जायँ। अथवा रुधिर कढ़ाइए तो शीतपित्त, उदर्द जायँ। अथवा आँवले और नींब के कोमल पत्तों को घृत में तल ४ माशा प्रमाण मनुष्य १५ दिन खाय तो फोड़े का रोग, पित्ती, कृमी, शीतपित्त, खुजली के रोग, गर्मी का रोग इन्हें दूर करता है। अथवा छीली अदरक के छोटे छोटे टूक १ सेर करे और गौ का घृत २ सेर ले और गौ का दूध २२ सेर ले मावा कर उसमें अदरक के टूक घृत से चुपड़ कर डाले पीछे उस मावे के नीचे आँच दे उसका खरा मावा करे और मिश्री १ सेर की चाशनी पतली अवलेह की सी कर उसमें मावे को डाल और ये औषध महीन पीस डाले पीपलीमूल, मिरच, सोंठि, चित्रक, बायबिड़ंग, नागरमोथा, नागकेसर, तज, इलायची, पत्रज, कचूर ये सब औषध पृथक् पृथक् एक एक टके भर ले इन्हें महीन पीस मिश्री की चाशनी में डाले पीछे इसको नित्य १ टके भर प्रभात और सन्ध्या को खाय तो शीतपित्त, उदर्द, कुष्ठ, राजरोग, रक्तपित्त, खाँसी, अरुचि, वायु का गोला, उदावर्त, सूजन, खुजली, कृमिरोग, उदर के रोग इन रोगों को यह अवलेह दूर करता है और बल वीर्य को बढ़ाता है और शरीर को पुष्ट करता है। यह आर्द्रकावलेह भावप्रकाश में लिखा है।

अथवा सेंधानोन घृत में महीन पीस शरीर में मर्दन करे पीछे लाल कामली ओढ़े तो पित्ती का रोग जाय। अथवा गौ का घृत, गेरू, सेंधानोन, कुसुम्भ के फूल ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस शरीर में उबटन करे तो पित्ती दूर हो। अथवा चिरायता, अडूसा, कुटकी, पटोल, त्रिफला, रक्तचन्दन, नींब की छाल इनका काढ़ा ले तो पित्तीरोग, फोड़ा, दाह, ज्वर, मुखशोष, तृषा के रोग, वमन इन सब रोगों को यह काढ़ा दूर करता है। अथवा अरने उपले की राख शरीर में मर्दन करे तो पित्ती जाय। अथवा फिटकरी नागरबेलि के पत्तों के रस में पीस शरीर में मर्दन करे तो पित्ती जाय। अथवा लहसुन १ टकेभर खाय। अथवा त्रिफला ५ टके भर महीन पीस शहद से चाटे तो पित्ती जाय। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में हैं। अथवा मेथीदाना १ टके भर, कालीमिरच १ टके भर, हल्दी १ टके भर इन सबको महीन पीस पीछे इनमें अदरक के रस की ३ पुट दे पीछे ८ माशा प्रमाण की गोली कर १ गोली नित्य खाय तो पित्ती के सर्वविकार दूर हों। यह वैद्यरहस्य में लिखा है।

अम्लपित्त की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

नोन, खटाई, गर्म वस्तु के खाने से पित्त कोप को प्राप्त हो अम्लपित्त को पैदा करता है। वह अम्लपित्त रोग तीन प्रकार का है। वायु १, कफ २, कफवायु ३।

अम्लपित्त का लक्षण

अन्न न पचे, विना खेद किये श्रम हो, वमन सी आवे, कड़ुवी खट्टी डकार आवे, शरीर भारी हो, हृदय कण्ठ में दाह हो, भोजन में अरुचि हो ये लक्षण हों तो अम्लपित्त कहिए। वह अम्लपित्त दो प्रकार का है। एक तो ऊर्ध्वगामी जो मुख में हो होकर जाय और दूसरा अधोगामी गुदा द्वारा जाता है।

ऊर्ध्वगामी अम्लपित्त का लक्षण

जो वमन करे सो हरा, पीला, काला, लाल, अत्यन्त निर्मल, मांस के जलसदृश हो और अम्लपित्त कफ से मिला हो तो बहुत चिकना छादे और कड़ुआ, सलोना, तीखा छादे।

अधोगामी अम्लपित्त का लक्षण

जिसके मल में नाना प्रकार के वर्ण हों और तृषा, दाह, मूर्च्छा, मोह हो, हृदय दूखे, वमन सी आवे, शरीर में चकत्ते हो आवें, अग्नि मन्द हो जाय, रोमाञ्च हो, पसीना आवे, शरीर पीला हो जावे ये लक्षण हों तब जानिये अधोगामी अम्लपित्त है।

भोजन किये पीछे अम्लपित्त का लक्षण

भोजन करे अथवा भोजन न करे तो भी तीखा, खट्टा वमन करे, शरीर में खाज हो, चकत्ते पड़ जायँ, डकारें बहुत आवें और कण्ठ, कुक्षि में दाह, शिर में पीड़ा, हाथ पैरों में दाह, भोजन में अरुचि तथा ज्वर हो ये लक्षण हो तब जानिए इसके अम्लपित्त का रोग है।

अम्लपित्त में दोषों का मिलाप होना

अम्लपित्त में वायु और कफ का मिलाप हो तो वैद्य मोह को प्राप्त होता है।

दोषभेद

जिसमें कम्प हो, प्रलाप, मूर्च्छा, शरीर में चिमचिमाहट हो, शरीर में पीड़ा और शूल हो, अँधेरी, घुमेर, मोह और हर्ष हो तब जानिए कि अम्लपित्त में वायु का मिलाप है। अथवा कफ थूके, शरीर भारी रहे, अरुचि हो, शरीर में शीत लगे, वमन हो, अग्नि और बल जाता रहे, शरीर में खुजली चले और नींद बहुत आवे ये लक्षण हों तब जानिए कि अम्लपित्त में कफ मिला है।

अम्लपित्त का साध्यासाध्य लक्षण

अम्लपित्तरोग नवीन उपजा हो तो यत्नसाध्य है और यही बहुत दिन का हो और पथ्य में न चले तो असाध्य जानिए।

अम्लपित्त का यत्न

अम्लपित्त रोगवाले को पटोल, नींब की छाल, अड़ूसा ये सब बराबर ले इनका काढ़ा कर इससे वमन करावे तो अम्लपित्त जाय। अथवा मेढ़ल, शहद, सेंधा नोन इनसे वमन करावे तो अम्लपित्त जाय। अथवा जुलाब से अम्लपित्त जाय। अथवा निशोत, शहद, आँवला इनका जुलाब दे तो अम्लपित्त जाय। अथवा ऊर्ध्वगामी अम्लपित्त हो तो जुलाब, वमन करावे और अधोगामी अम्लपित्त हो तो जुलाब

देना अथवा यव या गेहूँ का सत्तू अथवा चावल का सत्तू मिश्री के संयोग से खाय तो अम्लपित्त जाय। अथवा यव, अड़ूसा, आँवला, तज, पत्रज, इलायची इनका काढ़ा कर शहद डाल पीवे तो तत्काल अम्लपित्त जाय। अथवा गिलोय, नींब की छाल, पटोल इनका काढ़ा कर शहद डाल पीवे तो महाभयंकर भी अम्लपित्त जाय। अथवा अड़ूसा, गिलोय, पित्तपापड़ा, चिरायता, नींब की छाल, जलभाँगरा, त्रिफला, कुलत्थ इन्हें शीतल जल से ले तो अम्लपित्त जाय। यह अम्लपित्त चूर्ण है।

विसर्परोग की उत्पत्ति और लक्षण

नोन, खटाई और गर्म वस्तु के खाने से विसर्परोग पैदा होता है। वह फैला हुआ विसर्परोग सात प्रकार का है। वायु १, पित्त २, कफ ३, सन्निपात ४, वातपित्त ५, वातकफ ६, कफपित्त ७।

विसर्परोग का लक्षण

नोन, खटाई, गर्म वस्तु आदि को बहुत खाने से वायु, पित्त, कफ कोप को प्राप्त होकर शरीर के रुधिर, मांस आदि सातों धातुओं को बिगाड़ शरीर में छोटी, बड़ी फुंसियों के मण्डल को फैला देते हैं। इसी से वैद्य इस रोग का नाम विसर्प कहते हैं।

वायु के विसर्परोग का लक्षण

कुपथ्य के करने से वायु कोप को प्राप्त हो शरीर में कई जगह छोटी बड़ी फुंसियाँ पैदा करे, तब वे फुंसियाँ शरीर में फैल जायँ और उनमें पामा रोग के सदृश पीड़ा, खुजली बहुत हो।

पित्त के विसर्परोग का लक्षण

कुपथ्य से पित्त कोप को प्राप्त हो तब शरीर में छोटी बड़ी फुंसियाँ हों और उनमें पित्तज्वर के सब लक्षण मिलें और वे फुंसियाँ बहुत जल्दी फैल जायँ और बहुत लाल हों तो पित्त का विसर्प जानिए।

कफ के विसर्परोग का लक्षण

कुपथ्य से कफ कोप को प्राप्त हो शरीर में छोटी बड़ी फुंसियों को फैला दे फिर उनमें खुजली बहुत हो और वे फुंसियाँ चिकनी हों और कफज्वर के सब लक्षण उनमें मिलें तो कफ का विसर्प जानिए।

सन्निपात के विसर्परोग का लक्षण

कुपथ्य के करने से सन्निपात कोप को प्राप्त हो शरीर में छोटी, बड़ी फुंसियों को पैदाकर शरीर में तत्काल फैलाय दे और उन फुंसियों में पीछे कहे सब लक्षण मिलें और सन्निपातज्वर के भी सब लक्षण हों तो सन्निपात का विसर्प कहना चाहिए।

वातपित्त के विसर्परोग का लक्षण

जिसके शरीर में वातपित्त कुपथ्य के करने से कोप को प्राप्त होकर शरीर में छोटी, बड़ी फुंसियों को पैदा करें और वे शरीर में फैल जायँ तब उन फुंसियों को अग्न्याख्य नाम कहिए। अग्नि सदृश उनका रूप हो और वायुपित्तज्वर के लक्षण मिलें और छर्दि, मूर्च्छा, अतीसार, तृषा, भ्रम ये भी हों, शरीर के हाड़ टूटे, अँधेरी आवे, अरुचि हो, सब शरीर अग्नि के सदृश जले, जिस स्थान में होवें उसको काला, नीला अथवा लाल करें, मर्मस्थान में फैल जायँ, उसका अङ्ग बहुत पीड़ा को प्राप्त हो, संज्ञा जाती रहे, नींद न आवे तो यह विसर्परोग असाध्य जानिए। शरीर में चैन न पड़े, मन, देह सब बिगड़ जायँ, शरीर का ज्ञान जाता रहे यह विसर्परोग अत्यन्त असाध्य है।

वातकफ के विसर्परोग का लक्षण

वायु, कफ कुपथ्य करने से कोप को प्राप्त हो शरीर में छोटी, बड़ी फुंसियों को पैदाकर फैलाय दें तो उन फुंसियों का ग्रन्थाख्य नाम कहिए। वे गाँठि सदृश होती हैं और कफ से रुकी, थकी पवन कफ को बहुत प्रकार भेदन करे पीछे त्वचा, मांस, नसों में प्राप्त हुए रुधिर और शीत को करे, छोटे, बड़े, गोल, भारी, खरदरे, चकत्तों की माला को पैदा करे, उसमें बहुत सी पीली, लाल, ज्वर को लिये फुंसियाँ हों और श्वास, खाँसी, मुखशोष, हिचकी, वमन, भ्रम, मोह, शरीर का रंग और का और, मूर्च्छा, अङ्ग में हड़फूटन, मन्दाग्नि ये भी जिसमें हों तो जानिए कि वायु कफ का विसर्परोग है।

कफपित्त के विसर्परोग का लक्षण

कफपित्त अपने कारण से कोप को प्राप्त हो शरीर में छोटी, बड़ी फुंसियों को पैदाकर फैलाय दें उन फुंसियों को वैद्य कर्दम नाम महा-

भयंकर विसर्परोग कहते हैं। उसमें ये लक्षण होते हैं–ज्वर, शरीर में पीड़ा, अङ्ग में हड़फूटन, प्रलाप, भ्रम, भूख जाती रहे, हाड़ हाड़ टूटें, तृषा हो, शरीर भारी रहे, आँव पड़े, इन्द्रियाँ पक जायँ, अङ्ग-अङ्ग में पीड़ा हो, फुंसियाँ सब शरीर में फैल जायँ, बहुत लाल, चिकनी, काली सूजन को लिये भारी हों, देर से पकें, गम्भीर कफ हो और दाह बहुत हो, राद बहुत निकले, काँपे, शरीर की नसें निकली रहें और जिसमें मुर्दा की सी दुर्गन्ध आवे ये लक्षण हों उसे कर्दमनाम विसर्प-रोग कहिए।

शस्त्रादिक के घाव से उपजे विसर्प का लक्षण

शस्त्रादिक की चोट लगने से कोप को प्राप्त हुई वायु रुधिर समेत पित्त को दुष्ट कर कुलत्थ के समान शरीर में फुंसियों को पैदा करे फिर उन फुंसियों के फोड़े हो जायँ और उनमें सूजन और ज्वर हो, रुधिर काला हो तो शस्त्रघात का विसर्प कहिए।

विसर्परोग का उपद्रव

ज्वर, अतीसार, वमन, तृषा हो, मांस बिखर जाय, बुद्धि ठिकाने नहीं रहे, अरुचि हो, अन्न न पचे ये इसके उपद्रव हैं।

विसर्परोग का साध्यासाध्य लक्षण

वायु, पित्त, कफ को विसर्प और अग्नि से उपजा विसर्प तथा मर्म-स्थान में उपजा विसर्प असाध्य होता है।

विसर्परोग का यत्न

जुलाब, वमन, ओषधियों को सेवना, रुधिर कढ़ाना ये सब विसर्प रोग को अच्छे।

वायु के विसर्परोग का यत्न

रास्ना, कमलगट्टा, देवदारु, रक्तचन्दन, महुआ, खरैटी इनको बराबर ले पीछे दूध या घृत से महीन पीस लेप करे तो विसर्परोग जाय।

पित्त के विसर्परोग का यत्न

किसोरा, सिंघाड़ा, कमलगट्टा, जल का सिवार, रक्तचन्दन इन्हें महीन पीस धोये घृत या शीतल जल से लगावे तो विसर्परोग जाय।

कफ के विसर्परोग का यत्न

त्रिफला, कमलगट्टा, खस, लजालू, कनेर की जड़, नरसल की

जड़, जवासा इन्हें जल से महीन पीस लेप करे तो कफ का विसर्प-रोग जाय।

दशाङ्ग लेप

तगर, सिरस की जड़, मुलहठी, रक्तचन्दन, इलायची, बालछड़, दोनों हल्दी, नेत्रबाला इन्हें जल से महीन पीस गो का घृत डाल लेप करे तो सब प्रकार के विसर्प जायँ। अथवा चिरायता, अड़ूसा, कुटकी पटोल, त्रिफला, रक्तचन्दन, नींब की छाल ये सब बराबर ले इन्हें जव-कुटकर ८ माशा काढ़ा दे तो विसर्प, दाह, ज्वर, सूजन, खुजली, फोड़े, वमन इतने रोगों को यह काढ़ा दूर करता है। अथवा कणगच, सतोन्य का बक्कल, करिहारी की जड़, थूहर का दूध, आक का दूध, चित्रक, जलभाँगरा, हल्दी, सिंगोमुहरा ये सब बराबर दो टके भर और गो का मूत्र २ सेर, पानी २ सेर तिलों का तेल १ सेर ले, पीछे इन्हें इकट्ठा कर इसके नीचे मधुरी आँच दे जब सर्वरस जल जाय तेलमात्र रह जाय तब इसका मर्दन करे तो विसर्प, फोड़ा, ब्योंची इनको यह तेल दूर करता है। ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं। अथवा बड़ की जटा, नागरमोथा, केले के मध्य का गाभा इनको धोये घृत से लेप करे तो विसर्प और गाँठ दूर हों। अथवा सिरस के बक्कल को सौ बार धोये घृत से महीन पीस लेप करे तो विसर्परोग और गाँठ इनको दूर करता है। कोढ़, फोड़ा और शीतला ये सब जोंक के लगाने से निश्चय जायँ। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में हैं।

स्नायुरोग (बालारोग) की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

दुष्ट जल के पीने, दुष्ट अन्न के खाने से कोप को प्राप्त हुई वायु हाथ पैरों में फफोले अथवा सूजन को करे पीछे उस फफोले की वायु उस फफोले को फोड़कर उसी जगह प्राप्त हो पित्त की नसों को सुखाय ताँत सदृश डोरा को करती है। वह ताँत सदृश डोरा शनैः शनैः बाहर निकल पड़ता है और जो वह टूट जाय तो कोप को प्राप्त होता है। बाहर निकल आवे तो अच्छा हो जाता है। और वही अन्य स्थान हाथ आदि में हो जाता है—इससे टोंटा, लँगड़ा भी हो जाता है।

बाला का यत्न

२० माशा हींग को शीतल जल से ३ दिन खाय तो बाला का

रोग कभी न हो। अथवा गौ का घृत ऽ। भर नित्य तीन दिन पीवे तो बाला का रोग जाय। अथवा निर्गुण्डी का रस ३ दिन ४ पैसे भर नित्य पीवे तो बाला का रोग जाय। अथवा कलौंजी की जड़ शीतल जल से ७ दिन पीवे तो बाला का रोग जाय। अथवा अरण्ड की जड़ का रस गौ के घृत से ७ दिन तक पीवे तो बाला का रोग जाय। अथवा अतीस, नागरमोथा, भारंगी, सोंठि, पीपल, बहेड़े की छाल ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस ८ माशा नित्य सात दिन गर्म पानी से ले तो बाला का रोग जाय। अथवा सहँजने की जड़ और पत्तों को काँजी के पानी से पीस सेंधा नोन मिलावे पीछे उस पर बाँधे तो बाला का रोग जाय। अथवा काँटेवाली जाती की कंकाजड़ को जल से पीस बाला पर ७ दिन बाँधे तो निश्चय बाला का रोग जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं।

अथवा कूट, सोंठि, सहँजने की जड़ इन्हें पानी से महीन पीस बाला के ऊपर लेप करे अथवा इन ओषधियों को पीवे तो बाला का रोग जाय। अथवा धतूरे के पत्ते तेल लगाय बाला के ऊपर बाँधे तो बाला का रोग जाय। अथवा बबूल के बीज को काँजी से सिझाय बाला के ऊपर बाँधे तो बाला का रोग जाय। अथवा बाला के मन्त्र से बाला जाय। मन्त्र-विरूप नाम बावन के पूत सूत काढ़ि किये बहुत पाक फूट पीड़ा करे विरूपनाथ की आज्ञा फुरै॥ इस मन्त्र से बाला ऊपर गुड़ को ७ बार मन्त्रित कर बालावाले को खिलावे तो बाला जाय। ये यत्न वैद्यरहस्य में हैं। अथवा कबूतर की बीट की शहद से गोली बाँध ७ दिन निगलाय दे तो बाला कभी भी न हो। यह वैद्यरहस्य में लिखा है। अथवा शहद में सज्जी पीस लेप करे तो बाला का रोग जाय।

विस्फोटक रोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

कड़ुवी, खटाई, गर्म, रूखी, खारी वस्तु के खाने से, अजीर्ण से, धूप में रहने से, भोजन पर भोजन करने से, शीत, उष्ण, वर्षादि जहाँ बहुत हों अथवा न हों या इनकी विपरीतता से कोप को प्राप्त हुए वायु, पित्त, कफ ये दोष से शरीर की त्वचा में प्राप्त हो शरीर के रुधिर

और मांस और हाड़ को दूषित करते हैं। शरीर में भयंकर फोड़े को पैदा कर पहले ज्वर को उपजाते हैं इसे विस्फोटकरोग कहिए।

विस्फोटकरोग का लक्षण

ज्वर को लिये फोड़े में आग सी जले ऐसा फोड़ा पके तो रक्तपित्त से उपजे फोड़े शरीर में सर्वत्र हों अथवा कहीं होयँ उसे विस्फोटक कहिए।

वायु के विस्फोटक का लक्षण

मथवाय हो, फोड़े में पीड़ा बहुत हो, ज्वर, तृषा और हड़फूटन हो, व्रण काला हो ये लक्षण हों तो वायु का विस्फोटक जानिए।

पित्त के विस्फोटक का लक्षण

फोड़े में ज्वर, दाह, पीड़ा हो, जल्दी फूटे और पकि आवे, तृषा लगे, फोड़े के पीले, लाल व्रण हों ये लक्षण हों तो पित्त का विस्फोटक जानिए।

कफ के विस्फोटक का लक्षण

छर्दि, अरुचि हो, देर से पके वह कफ का विस्फोटक है।

वात-पित्त के विस्फोटक का लक्षण

बहुत पीड़ा हो और वात-पित्त के लक्षण मिलते हों उसे वात-पित्त का विस्फोटक जानिए।

वायु-कफ के विस्फोटक का लक्षण

शरीर भारी हो, खुजली चले तो वायु-कफ जानिए।

पित्त-कफ के विस्फोटक का लक्षण

खुजली, दाह, ज्वर, छर्दि हो तो कफ पित्त का जानिए।

सन्निपात के विस्फोटक का लक्षण

फोड़े के बीच में गढ़े हों और ऊँचे भी हों और फोड़े गाढ़े हों, थोड़े पकें, फोड़ों में दाह हो, ललाई बहुत हो, तृषा, मोह, मूर्च्छा हो, फोड़ों में पीड़ा और ज्वर, प्रलाप हो, शरीर काँपे ये लक्षण हों उसे सन्निपात के लक्षण का कहिए ये असाध्य हैं।

रुधिर के विस्फोटक का लक्षण

जिसमें पित्त के फोड़े के सब लक्षण हों, फोड़े का चिरमिठी के सदृश वर्ण हो, रुधिर निकले, दाह हो तो यह रोग यत्न से भी अच्छा नहीं होता है।

विस्फोटक के उपद्रव

तृषा, श्वास, मांस का संकोच और उसमें दाह हो, हिचकी आवें, ज्वर हो, मर्मस्थल में फोड़े फैल जायँ ये इसके उपद्रव हैं।

विस्फोटक का साध्यासाध्य लक्षण

एक दोष का साध्य, दो दोष का कष्टसाध्य, त्रिदोष का और जिसमें बहुत उपद्रव हों वह असाध्य है।

विस्फोटक रोग का यत्न

विस्फोटक रोगवाले को लंघन और वमन करावे और जुलाब देवे और पुराने शालि चावल, यव, गेहूँ, मूँग, मसूर, अरहर ये अच्छे हैं। अथवा दशमूल का काढ़ा, रास्ना, दारुहल्दी, खस, कटेली, गिलोय, धनियाँ, नागरमोथा इनका काढ़ा दे तो वायु का विस्फोटक जाय। अथवा दाख खँभारि, छुहारा, पटोल, नींब की छाल, अड़ूसा, कुटकी, चावल की खील, जवासा इनका काढ़ा दे तो पित्त का विस्फोटक जाय। अथवा चिरायता, खुरासानी बच, अड़ूसा, त्रिफला, इन्द्रयव, कुड़ा की छाल, पटोल इनका काढ़ा शहद मिलाय दे तो कफ का विस्फोटक जाय। अथवा चिरायता, कुटकी, नींब की छाल, मुलहठी, नागरमोथा, पटोल, पित्तपापड़ा, खस, त्रिफला, कुड़ा की छाल इनका काढ़ा दे तो सब प्रकार का विस्फोटक जाय। अथवा चावल, कुड़ा की छाल, इन्हें जल से महीन पीस फोड़े के ऊपर लेप करे तो विस्फोटक जाय। अथवा गिलोय, पटोल, चिरायता, अड़ूसा, नींब की छाल, पित्तपापड़ा, खैरसार इनका काढ़ा दे तो विस्फोटक रोग का ज्वर जाय। अथवा चन्दन, नागकेशर, गौरीसर, चौराई की जड़, सिरसा का बक्कल, चमेली के पत्ते इन्हें जल से महीन पीस फोड़ों के ऊपर लेप करे तो विस्फोटक जाय। अथवा कमलगट्टा, रक्तचन्दन, पठानीलोध, खस, गौरीसर इन्हें जल से महीन पीस लेप करे तो विस्फोटक जाय। अथवा जियापोता की मींगी जल से महीन पीस लेप करे तो विस्फोटक काँखोलाई, गले की गाँठि, कान की गाँठि और फोड़ा, फुंसीमात्र को यह लेप दूर करता है। ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं। अथवा दशाङ्ग लेप किशोरगुग्गुल इससे भी रोग जाते हैं।

फिरंगरोग की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

फिरंगरोग उपदंश वायु का भेद है वह बहुत गर्मीवाली स्त्रियों के संग से अथवा उसका सङ्ग किसी और ने किया हो सो जहाँ मूते वहाँ यह भी मूते अथवा उसका किसी तरह भोजनादिक में सङ्ग करे तो वायु अपने कारण से कोप को प्राप्त हो इस रोग को प्रकट करे अथवा जो क्षीणपुरुष हो और मैथुन बारम्बार करे तब वह अत्यन्त क्षीण होवे तब इसके बंधेज न रहे और वायु से नानाप्रकार की शरीर में पीड़ा हो तब इसके वायु, पित्त, कफ ये सब अत्यन्त कोप को प्राप्त हों और यह आगन्तुकनाम फिरंगवायु को करें। वह फिरंगवायु तीन प्रकार की है। शरीर की मध्य नसों में धँस जाय।

शरीर की त्वचा के बाहर हो उसका लक्षण

लिङ्गेन्द्रिय के ऊपर फुंसी और फटने आदि के चिह्न हों और वहाँ थोड़ी पीड़ा हो तो सुखसाध्य है। यह यत्न करने से मिट जाय।

शरीर की सन्धियों और नसों में धँस जाय उसका लक्षण

शरीर में कीड़े के काटने की सी चटें पड़ जायँ, मोरियाँ जाँघ पीठ इनमें बहुत पीड़ा और सूजन हो सो कष्टसाध्य है।

शरीर के बाहर हो उसका लक्षण

ये सब कहे लक्षण हों और बहुत दिनतक रहे सो महाकष्टसाध्य है।

फिरंगवायु का उपद्रव

शरीर क्षीण पड़ जाय, बल जाता रहे, नाक गलि जाय, अग्नि मन्द हो जाय, मांस, रुधिर सूखि जाय, हाड़मात्र रह जायँ ये इसके उपद्रव हैं। ये अच्छे नहीं हैं।

फिरंगवायु का यत्न

रसकपूर के साधने की और खाने की विधि। रसकपूर ४ रत्ती ले गेहूँ के आटे को पानी से उसने उसके बीच रसकपूर को धर उसकी गोली करे पीछे लवङ्ग को महीन पीस उसके चूर्ण में गेहूँ के चून की गोली रसकपूरसमेत लपेटे पीछे उस गोली को शीतल जल से निगल जाय दाँत न लगावे इसके ऊपर कत्थे चूने बिना नागरबेल के पत्ते चबावे और नोन खटाई न खाय, खेद न करे, धूप में न रहे इसी तरह ३ दिन करे तो फिरंगवायु जाय।

संप्रसारण गुटिका

पारा ४ माशा, खैरसार ४ माशा, अकरकरा ८ माशा, शहद १२ माशा इन सबको महीन पीस एकजीव करे पीछे इनकी ७ गोली करे १ गोली नित्य प्रभात शीतल जल से ले तो फिरंगवायु जाय और उसके ऊपर नोन खटाई न खाय। अथवा पारा ८ माशा, आँवलासार गन्धक ८ माशा, चावल ८ माशा, इन तीनों को खरल में महीन पीस कजली करे पीछे इनकी ७ पुड़ियाँ करे पीछे १ पुड़िया को नित्य इन्द्रिय में धूनी दे तो फिरंगवायु जाय। अथवा पीले फूल की खरेटी के पत्तों का रस ४ माशा, पारा ४ माशा इन दोनों को दोनों हाथों में मीस ले पारा और वह रस हाथों में जब तक दीखे तब तक चरावे पीछे हाथों को कुछ तपाय ले जहाँ तक पसीना आवे इसी तरह ७ दिन करे तो फिरंगवायु जाय और नोन, खटाई न खाय। अथवा नींब के पत्ते ८ टके, हड़ की छाल ७ टके, आँवलासार ७ टकेभर, हल्दी ४ माशा इन सबको महीन पीस ४ माशे शीतल जल से नित्य ७ दिन ले तो बाहर भीतर की फिरंगवायु जाय। अथवा चोखी चोबचीनी का चूर्ण ४ माशे ले शहद से १५ दिन चाटे तो यह रोग जाय। इसके ऊपर नोन, खटाई न खाय और नोन खाय तो सेंधानोन खाय। अथवा ४ माशा पारा को कसेले के रस में खरल करे फिर इसमें गुग्गुल २० माशा, अकरकरा २० माशा, त्रिफला २० माशा ये सब महीन पीस और शहद २० माशा, गौ का घृत १० माशा मिलाय इस चूर्ण को नित्य २१ दिन तक २० माशा खाय अथवा इसका मर्दन करे तो फिरंगवायु जाय इसके ऊपर नोन, खटाई न खाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं। अथवा जुलाब से अथवा रुधिर के कढ़ाने से फिरंगवायु जाय। अथवा पारा, शिंगरफ़, नीलाथोथा, हीराकसीस, शोधी आँवलासार गन्धक ये सब बराबर ले इन्हें खरल में एकजीव कर इसका भुरकादे अथवा इसका लेप करे तो फिरंगवायु जाय। यह सूतक का लेप है।

अथवा १०० बार के धोये घृत का लेप करे तो फिरंगवायु जाय। अथवा नीलाथोथा, मोम इन दोनों को घृत में पकाय इनका लेप करे

तो फिरंगवायु जाय । अथवा कड़ुवा तेल १ टके, मोम २० माशा, कबीला, बेर ये दोनों धेलेभर ले, सिन्दूर ८ माशा, सोरा ८ माशा, मुर्दाशंख ७ माशा इन सबको महीन पीस पीतल के पात्र में मधुरी आँच से पकावे पीछे हाथों से मथ डब्बी में भर रक्खे फिर इसकी कजली दे तो फिरंगवायु के फोड़े, उपदंश इनको यह मलहर मरहम अच्छा करता है।

अथवा सिन्दूर आधपाव, गौ का घृत १ सेर इन दोनों को मथ शरीर में लेप करे पीछे पराल को शरीर में लपेटे इसी तरह ३ दिन करे इसके ऊपर खीर खाय तो व्रणमात्र, विस्फोटक, फिरंग के चकत्ते ये सब सूख जायँ। अथवा पारा, शीशा ये दोनों बराबर ले फिर इन दोनों की खरल में कजली करे और गेहूँ का तुष, कच्ची इमली, नींब के पत्ते, धमासा ये सब बराबर ले नींब के रस से खरल करे पीछे ८ माशा भर की गोली बाँधे वस्त्र से शरीर को ढाँककर १ गोली की धूनी ले इसी तरह ७ दिन करे तो सब प्रकार का विस्फोटक जाय इसके ऊपर खीर २१ तथा १४ दिन खाय। अथवा त्रिफला, खैरसार, जावित्री ये सब बराबर ले इन्हें पानी में औटाय मुख को धोवे पीछे धूनी ले तो फिरंगवायु जाय। अथवा कालाजीरा, कूठ ये दोनों १२-१२ माशा ले और पुराना गुड़ इनसे तिगुना ले इन्हें कूटकर इनकी १५ गोली करे फिर एक गोली प्रभात और एक सन्ध्या समय खाय तो फिरंगवायु जाय। और इसके ऊपर गेहूँ की रोटी घृत से चुपड़कर खाय। यह फिरंगगजकेशरी रस है।

अथवा शिंगरफ़ ६ माशे, सुहागा १० माशे, अकरकरा १० माशे, मोम १० माशे इन्हें महीन पीस इनकी गोली १ रत्ती प्रमाण की करे पीछे १ गोली की बेर की कोंपल में ७ दिन धूनी दे तो फिरंगवायु जाय। अथवा सहँजने का बक्कल, बड़ का बक्कल, काहू का बक्कल इनका काढ़ा ले तो ७ दिन में फिरंगवायु जाय। अथवा शिंगरफ़ ४ माशे, मैनसिल ४ माशे इन्हें महीन पीस बेर की लकड़ी की अग्नि में २ माशे की निर्वात स्थान में कपड़ा ओढ़ाय गुदा में धूनी दे तो फिरंगवायु जाय। यह हिंगुलादिधूम है।

रसकपूर से मुख आया हो उसका यत्न

पीपल का बक्कल, गूलर का बक्कल, बरगद और पकरिया का बक्कल, बड़ का बक्कल, चेन का बक्कल, इनका काढ़ा कर उसके कुल्ले करे तो मुख की सूजन दूर हो। अथवा जीरा २० माशा, खैरसार ८ माशा इन्हें जल से पीस छाले में लगावे तो मुखपाक जाय।

मसूरिका नाम शीतला की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

कड़ुवी, नोन की खारी, विरुद्ध वस्तुओं के खाने, भोजन पर भोजन करने, बहुत शाकादिक और नोन, शाक, मांस के खाने और दुष्ट पवन के सेवन से, दुष्टग्रह के आने से, देश में शीतला के उपद्रवों से शरीर में रुधिर दुष्ट होकर मसूर की आकृति फुंसियों को पैदा करता है। मसूरिका नाम रोग १४ प्रकार का है। वायु १, पित्त २, कफ ३, रुधिर ४, सन्निपात ५, चर्म ६, रोमान्तिका ७, सातों धातुगत रसगत ८, रक्तगत ९, मांसगत १०, मेदगत ११, अस्थिगत १२, मज्जागत १३, शुक्रगत १४।

वायु की मसूरिका का लक्षण

फुंसियाँ काली और रूखी हों पीड़ा बहुत हो, कड़ी हों ये लक्षण हों तो वायु की मसूरिका जानिए।

पित्त की मसूरिका का लक्षण

फुंसियाँ लाल, पीली, काली, दाहयुक्त हों, पीड़ा बहुत हो और शीघ्र पकें ये लक्षण पित्त की मसूरिका के जानिए।

कफ की मसूरिका का लक्षण

फुंसियाँ सफेद और चिकनी, बड़ी हों, खुजली आवे, मन्द पीड़ा हो और देर से पकें ये लक्षण कफ की मसूरिका के हैं।

रुधिर की मसूरिका का लक्षण

जिसमें अतीसार और ज्वर बहुत हो और पित्त के भी लक्षण हों उसे रुधिर की मसूरिका कहिए।

सन्निपात की मसूरिका का लक्षण

फुंसियाँ नीली और चपटी हों, फैल जायँ, बीच में खाज को लिये हो, पीड़ा बहुत हो, राद पड़ गई हो, देर से पकें और बहुत हों, ये लक्षण सन्निपात की मसूरिका के कहिए।

चर्म में उपजी मसूरिका का लक्षण

चर्म में उपजी मसूरिका कण्ठ को रोक के अरुचि, तन्द्रा, प्रलाप और अप्रीति को करती है। यह बहुत यत्न से अच्छी होवे।

रोमान्तिका नाम रोग में प्राप्त हुई मसूरिका का लक्षण

प्रथम ज्वर हो, पीछे रोम-रोम में कफ, पित्त से फुंसियाँ हों वे कुछ एक ऊँची हों और इसमें खाँसी तथा अरुचि हो तो रोमान्तिका कहिए।

रस में प्राप्त हुई मसूरिका का लक्षण

रस में प्राप्त हुई मसूरिका पानी के बुद्बुदे के सदृश हों, इनमें स्वल्प दोष हो और वे फूटें तब उनमें पानी निकले।

रुधिर में प्राप्त हुई मसूरिका का लक्षण

फुंसियाँ लाल हों, तत्काल पकें, त्वचा में हो जायँ और यही दुष्ट हुई साध्य नहीं हैं और ये ही फूटी हुई रुधिर को बहाती हैं।

मांस में हुई मसूरिका का लक्षण

फुंसियाँ कठोर और चिकनी हों, देर से पकें, त्वचा में हों गात्र में शूल चले, खुजली हो, दाह, मूर्च्छा, तृषा ये हों।

मेद में प्राप्त हुई मसूरिका का लक्षण

फुंसियाँ मण्डल के आकार, कोमल, कुछ एक ऊँची हों, उनसे भयंकर ज्वर हो, वे फुंसियाँ बड़ी और चिकनी हों, शूल को लिये हों, जिनसे मोह, अप्रीति, ताप हो तो उसमें कोई एक मनुष्य जीवे।

हाड़ व मज्जा में प्राप्त हुई मसूरिका का लक्षण

फुंसियाँ छोट, गात्र के समान रूखी, चपटी, कुछ एक ऊँची हो, उनमें मोह, पीड़ा और अप्रीति बहुत हो।

शुक्र में प्राप्त हुई मसूरिका का लक्षण

फुंसियाँ प्रथम ही पकी सी दीखें और चिकनी हों जिनमें बहुत पीड़ा, अप्रीति, दाह, उन्माद ये भी हों तो ऐसे लक्षणवाला न जीवे।

मसूरिका का साध्य लक्षण

त्वचा-रक्त में मसूरिका हों और पित्त से उपजी हों अथवा कफ से उपजी हों अथवा कफ पित्त से उपजी हों तो साध्य जानिए। और ये बिना यत्न ही अच्छी हों।

मसूरिका का असाध्य लक्षण

जो सन्निपात से उपजी हों और मूँगे के सदृश, जामुन के सदृश, रुधिर के सदृश, अलसी के फूलसदृश वर्ण हो तो मसूरिका असाध्य है। इसके अनेक वर्ण हैं।

मसूरिका का यत्न

मसूरिका के प्रारम्भ में सफ़ेद चन्दन को भिगोकर ७ दिन लेप करे तो मसूरिका थोड़ी निकले।

वायु की मसूरिका का यत्न

दशमूल, रास्ना, आँवला, खस, धमासा, गिलोय, धनियाँ, नागरमोथा इनका काढ़ा दे तो वायु की मसूरिका जायँ। अथवा मंजीठ, बड़ के अंकुर, सिरस का बकल, गुग्गुल का बक्कल, घृत मिलाकर इनका लेप करे तो वायु की मसूरिका अच्छी हो। अथवा गिलोय, महुआ, दारू, मूर्वा (मुरहरी), दाड़िम का बक्कल इनका काढ़ा कर गुड़ डाल पीवे तो वायु की मसूरिका अच्छी हों पकें नहीं। अथवा मसूरिका में शालि के चावल, मूँग, मसूर मिश्री आदि खाय परन्तु नोन न खाय यदि खाय तो थोड़ा सेंधानोन खाय।

पित्त की मसूरिका का यत्न

पटोल की जड़ का काढ़ा ले अथवा पानों का रस पीवे तो पित्त की मसूरिका अच्छी हों। अथवा नींब की छाल, पित्तपापड़ा, पाढ़, पटोल, दोनों चन्दन, खस, कुटकी, आँवला, अड़ूसा इनका काढ़ा मिश्री मिलाकर ले तो पित्त की मसूरिका जायँ।

कफ की मसूरिका का यत्न

अड़ूसा, चिरायता, त्रिफला, जवासा, पटोल, नींब की छाल इनका काढ़ा शहद डाल दे तो कफ की मसूरिका जायँ।

रुधिर की मसूरिका का यत्न

इसमें रुधिर कढ़ावे तो रुधिर की मसूरिका जायँ।

सर्व मसूरिका मात्र का यत्न

पाढ़, पटोल, कुटकी, दोनों चन्दन, खस, आँवला, अड़ूसा, जवासा इनका काढ़ा मिश्री डाल दे तो सब मसूरिकामात्र अच्छी हों

मसूरिका में हुए कण्ठव्रण का यत्न

आँवला, महुआ इनके काढ़े में शहद मिलाकर कुल्ला करे तो कण्ठ के व्रण अच्छे हों।

मसूरिका में आँखें चिपट गई हों उसका यत्न

महुआ के पानी से अण्डकोश का सेंक करे तो आँखें खुलें।

मसूरिका में हुए नेत्रव्रण का यत्न

महुआ, त्रिफला, मूर्वा, दारुहल्दी, कमलगट्टा, खस, पठानीलोध, मंजीठ इनका लेप करे तो नेत्रों का व्रण अच्छा हो फिर उस जगह व्रण न हो। अथवा बड़ का बक्कल, गूलर का बक्कल, पीपल का बक्कल इनका नेत्रों के ऊपर लेप करे तो नेत्र अच्छे हों। अथवा अरने उपले की राख के लगाने से मसूरिका अच्छी हों। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं।

मसूरिका का भेद शीतला का स्वरूप

प्रथम कभी विषमज्वर बहुत हो, कभी थोड़ा, कभी शीत लगे, कभी गर्मी, उसका भी नियम रहे नहीं पीछे मसूरिका के आकार फुंसियाँ निकलें वे बड़ी हो जायँ ज्वर के ३ दिन पीछे ७ दिनतक निकला करें और पीछे ढलें उसे शीतला कहिए। वह शीतला सात प्रकार की है।

शीतला का यत्न

शीतला पकी हों तो अरने उपले की राख नीचे बिछाइए। अथवा नींब की डाली से मक्खी उड़ाइए। इसके ज्वर में शीतल जल पिलाइए। शीतला को मनोहर शीतलास्थान में स्थापिये पवित्र हो शीतला का पूजन कीजिए और शीतला में बहुत औषध का यत्न न कीजिए अथवा शीतल जल से हल्दी को पीवे तो उसके शीतला के फोड़े कम हों। अथवा केले के जल से सफ़ेद चन्दन को अथवा अड़ूसे के रस में महुआ को अथवा शहद के साथ महुआ को शीतला निकलने से पहले प्यावे तो उसके शीतला का कोई विकार नहीं हो।

शीतलावाले की रक्षा

जिस घर में शीतलावाला रहे उस घर के द्वार में नींब के पत्ते

बाँधिए अथवा चन्दन, अड़ूसा, नागरमोथा, गिलोय, दाख इनका काढ़ा दीजे तो शीतला का ज्वर जाय। अथवा जप, होम, दान, ब्राह्मण भोजन, शिवपार्वती का पूजन श्रद्धा से कराइए। अथवा शीतला के आगे शीतलास्तोत्र पढ़ाइए *

शीतला स्तोत्र

स्कन्द उवाच ॥ भगवन् देवदेवेश शीतलायाः स्तवं शुभम् ॥ वक्तुमर्हस्यशेषेण विस्फोटकभयापहम् १ ॥ ईश्वर उवाच ॥ वन्देऽहं शीतलां देवीं सर्वरोगभयापहाम् ॥ यामासाद्य निवर्तेत विस्फोटकभयं महत् २ शीतले शीतले चेति यो ब्रूयाद्दाहपीडितः ॥ विस्फोटकभयं घोरं क्षिप्रं तस्य विनश्यति ३ यस्त्वामुदकमध्ये तु धृत्वा संपूजयेन्नरः ॥ विस्फोटकभयं घोरं कुले तस्य न जायते ४ शीतले तनुजान् रोगान् नृणां हरसि दुस्तरान् ॥ विस्फोटकविशीर्णानां त्वमेकाऽमृतवर्षिणी ५ गलगण्डग्रहा रोगा ये चान्ये दारुणा नृणाम् ॥ त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यान्ति संक्षयम् ६ न मन्त्रो नौषधं किञ्चित पापरोगस्य विद्यते ॥ त्वमेका शीतले धात्रि नान्यां पश्यामि देवताम् ७ मृणाल-तन्तुसदृशीं नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम् ॥ यस्त्वां विचिन्तयेद्देवि तस्य मृत्युर्न जायते ८ श्रोतव्यं पठितव्यं वै नरैर्भक्तिसमन्वितैः ॥ उपसर्ग-विनाशार्थं परं स्वस्त्ययनं महत् ९ शीतलाष्टकमेतद्धि न देयं यस्य कस्यचित् ॥ किन्तु तस्मै प्रदातव्यं भक्तिश्रद्धान्वितश्च यः १० शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता ॥ शीतले जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः ११ ॥ इति स्कन्दपुराणे शीतलास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

शीतला का और भेद

वायु-कफ से उपजे उसे कोद्रवा कहिए कोदों की सी आकृति हो। वायु-कफ की भी हो जाय उसमें अङ्ग-अङ्ग में गर्मी हो, सब शरीर दरदरासा हो जाय यह सात दिन में अथवा बारह दिन में ओषध बिना ही अच्छी हो इसे लौकिक में बोदरी और भोरी कहते हैं। इनमें गर्मी बहुत हो, शरीर में सरसों के आकार पीली पीली

* शीतलाष्टक स्तोत्र "बृहस्तोत्ररत्नाकर" में लिखा है।

फुंसियाँ हों। ये सब बालकों के होती हैं। ये सब शीतलाओं के भेद हैं।

इति सप्तदशस्तरङ्गः १७।



क्षुद्ररोगों की उत्पति, लक्षण और यत्न

अजगल्लिका नाम फुंसी का लक्षण

जो फुंसी चिकनी हो, शरीर के व्रण सदृश हो, जिसमें पीड़ा न हो और मूंगप्रमाण हो वह कफ-वायु से उपजती है।

यवप्रख्या फुंसी का लक्षण

यव के आकार हो और कड़ी, गठीली हो, मांस में रहती हो, यह कफ-वायु से उपजतो है।

अन्त्रालजा फुंसी का लक्षण

जो फुंसी भारी, सूधी और ऊँची मण्डल सहित हो, राद जिसमें थोड़ी हो, यह कफ-वायु से उपजती है।

विवृतानाम फुंसी का लक्षण

फटे मुँह की होय, जिसमें दाह बहुत हो, पक्के गूलर के फल समान हो, मण्डल के सहित हो।

कचछपिका फुंसी का लक्षण

पाँच अथवा छः गाँठि हों, वे भयंकर हों कछुवासी ऊँची हों ये कफ-वायु से उपजती हैं।

वाल्मीकि फुंसी का लक्षण

कुपथ्य करने से कन्धे, काँख, हाथ, पैर, गला इन स्थानों में बामी के आकार जो गाँठि हो पीछे वह बढ़े और अनेक मुख हों उनसे राद निकले, पीड़ा हो, वे ऊँची हों और विसर्परोग के मुवाफ़िक फैल जायँ इसका यत्न नहीं है।

इन्द्रवृद्धनाम की फुंसी का लक्षण

कमल के बीच कर्णिका में जो कमलगट्टे का घर है उसके आकार फुंसियाँ चारों ओर वायुपित्त से हों उसे इन्द्रवृद्ध फुंसी कहिए।

गर्दभिका फुंसी का लक्षण

मण्डल के आकार गोल हो, ऊँची और लाल हो और उसमें पीड़ा हो तो उसे वायुपित्त से उपजी गर्दभिका कहिए।

पाषाणगर्दभिका फुंसी का लक्षण

यह डाढ़ी की सन्धि में सूजन को लिये या स्थिर कफयुक्त हो, इसमें पीड़ा मन्द हो और चिकनी हो उसे पाषाणगर्दभिका फुंसी कहिए।

पनसिका फुंसी का लक्षण

कान के बीच में हो उसमें पीड़ा बहुत हो और वह स्थिर हो यह वायुकफ से होती है इसे पनसिका कहिए।

जालगर्दभिका फुंसी का लक्षण

पहिले थोड़ी सूजन हो पीछे विसर्प के सदृश फैल जाय तथा पके नहीं, दाह-ज्वर को करे उसे जालगर्दभिका फुंसी कहते हैं।

इरिवेल्लिका फुंसी का लक्षण

जो मस्तक में गोल फुंसी हो और जिसमें ज्वर को लिये पीड़ा बहुत हो वह सन्निपात से हुई इरिवेल्लिका होती है।

कांखोलाई का लक्षण

भुजों के एकदेश में अथवा पसवाड़े के एकदेश में अथवा कन्धों के एकदेश में पीड़ा को लिये पित्त के कोप से काला फोड़ा हो उसे काँखोलाई कहते हैं और कई एक पाछने के दोष से काँख में फोड़े हों उसे भी काँखोलाई कहते हैं।

अग्निरोहिणी फुंसी का लक्षण

काँख के एकदेश में मांस को विदीर्ण करनेवाला जो भयंकर फोड़ा हो और उस फोड़े में दाहज्वर भी हो और मानो उस फोड़े में अंगारा भर दिया है वह फोड़ा सात दिन में और बारह दिन में अथवा सोलह दिन में मनुष्य को मार डालता है। यह सन्निपात से उपजी असाध्य अग्निरोहिणी है।*

चिप्पनाम फुंसी का लक्षण

वायु-पित्त नख के मांस में रह करके दाह और पाक को करते हैं तब यह चिप्प नाम फुंसी पैदा होती है।

---

* अग्निरोहिणी नाम प्लेग की गाँठ है।

कुनखरोग (जिसका नख जाता रहा हो) का लक्षण

वायु, पित्त, कफ ये थोड़े कोप को प्राप्त हों तब पुरुष के कुनखरोग को करते हैं।

अनुसई फुंसी का लक्षण

जो फुंसी गम्भीर हो, जिसका आरम्भ अल्प हो, शरीर के वर्ण-समान पैर के ऊपर हो, कोप को प्राप्त हो जिसमें ये लक्षण हों उसे अनुसई कहिए।

विदारिका फुंसी का लक्षण

जो फुंसी विदारीकन्द के समान गोल हो, काँख में सन्निपात से उपजी हो उसे विदारिका फुंसी कहिए।

शर्करानाम फुंसी का लक्षण

कफ का भेद वायु है वह मांस और नसों में प्राप्त हो गाँठों को शहद, घृत अथवा बसा के समान करे और वह गाँठ बढ़ी, थकी होकर मैले रुधिर को चलाती है और शरीर के मांस को सुखा देती है उसे शर्करा कहिए।

शर्करार्बुद फुंसी का लक्षण

दुष्ट गाँठ हो उसमें से नानावर्ण का बहुत चेप निकला करे और उसकी नसें रुधिर को स्रवा ही करें उसे शर्करार्बुद कहिए।

ब्याऊ (बेंवाई) का लक्षण

जिसका पर बहुत रूखा हो और फिरा करे उसकी पगतली की वायु ब्याऊ को करती है।

कदर फुंसी का लक्षण

पैर में अथवा हाथ में काँकरी चुभी हो अथवा काँटा चुभा हो उस करके बेर की सी ऊँची गाँठ होजाय उसे कदर कहिए।

खरवे का लक्षण

दुष्ट कीचड़ के स्पर्श करने से पैर की अंगुली के नीचे खाज हो और उस जगह दाह, पीड़ा हो उसे खरवा कहिए।

इन्द्रलुप्त (उदीलागी) का लक्षण

रोम-रोम में रहनेवाला पित्त वायु-कफ से बढ़े हुए बालों को दूर

करता है पीछे रुधिरसहित कफ रोगों को उपजने से रोक दे उसे इन्द्र-लुप्त अथवा चान्द्रला कहिए।

अरूंषिका का लक्षण

केशों की भूमि में खुजली बहुत चले और वह भूमि वायु के कोप से रूखी पड़ जाय इसे दारुण कहिए। कफ और रुधिर मस्तक में कुपित हों तब मनुष्य के अरूंषिका प्रकट हो।

यौवन अवस्था में सफेद बालों का लक्षण

क्रोध से अथवा शोच से शरीर की गरमी शिर में जाय तब पित्त केशों को सफेद कर देता है।

लहसुन का लक्षण

काला और चिकना हो और उसमें पीड़ा नहीं हो, गोल हो यह कफ रुधिर से उपजता है और यह शरीर के साथ पैदा होता है इसे लहसुन कहिए।

मस्सों का लक्षण

उसमें पीड़ा न हो, स्थिर और काला हो, शरीर में उड़द समान ऊँचा हो यह वायु से होता है इसे मस्सा कहिए।

तिल का लक्षण

काला, तिल के समान हो, पीड़ा न हो, देह के बराबर हो, तथा वायु, पित्त, कफ की आधिक्यता से हों और बहुत हों उनको तिल कहिए।

न्यच्छ का लक्षण

बड़ा अथवा छोटा हो, काला अथवा सफेद हो, गोल और पीड़ा-रहित हो उसे न्यच्छ कहिए।

लिङ्गवर्तिका का लक्षण

लिङ्गेन्द्रिय के मलने से अथवा उसके दाबने से अथवा वहाँ चोट लगने से लिङ्गेन्द्रिय में वह वायु घूमती है, थकी लिङ्गेन्द्रिय के चमड़े को उथल दे और सुपारी के नीचे एक लम्बी पीड़ा को लिये गाँठ कर दे वह वायु से होती है उसे लिङ्गवर्तिका नाम रोग कहिए।

अवपाटिकारोग का लक्षण

जिस स्त्री की योनि का मुँह बहुत सूक्ष्म हो, उस स्त्री के साथ

पुरुष प्रसङ्ग करने जाय, हर्ष से अथवा अपने शरीर के बल से बहुत प्रसङ्ग करे तब उस पुरुष की लिङ्गेन्द्रिय को चमड़ी उतर जाय उसे अवपाटिका नाम रोग कहिए।

निरुद्धप्रकाशरोग का लक्षण

लिङ्गेन्द्रिय में वायु आकर धँसे तब सुपारी की चमड़ी में रह कर सुपारी की चमड़ी से लिङ्गेन्द्रिय को ढक मूत्र के मार्ग को रोक दे और वहाँ वायु से मिल पीड़ा करे तब उसे निरुद्धप्रकाश नाम रोग कहिए।

मणिनाम रोग का लक्षण

निरुद्धप्रकाश रोग के होने से मूत्र की धार महीन और विना पीड़ा चले और उस सोते का मुँह चौड़ा हो जाय उसे मणिनाम रोग कहिए।

सन्निरुद्धगुदरोग का लक्षण

जो मनुष्य मल की बाधा के वेग को रोके उसके गुदा के बड़े मार्ग को वायु छोटा कर दे तब छोटे मार्ग के प्रभाव से रूखा विष्ठा बड़े कष्ट से उतरे उसे सन्निरुद्धगुदरोग कहिए। यह भयङ्कर है।

वृषणकच्छूरोग का लक्षण

जो मनुष्य स्नान न करे उसके पोते में मैल बहुत हो जाय, जिसमें पसेव आकर खुजली चले तब उसके खुजलाने से फोड़े हो आवें पीछे उन फोड़ों में राद बहे तब उस जगह कफ और रुधिर के कोप से उपजा हुआ वृषणकच्छूरोग कहिए।

गुदभ्रंशरोग का लक्षण

मोड़ानिवाही और अतीसार इन दोनों से मनुष्य क्षीण पड़ जाय और शरीर रूखा पड़ जाय, दुर्बल हो जाय तब उस पुरुष की गुदा बाहर निकल आवे उसको काँच कहिए।

शूकरदंष्ट्ररोग का लक्षण

जिसकी त्वचा पक जाय, उस जगह पीड़ा बहुत हो, दाह लग जाय, लाल जगह हो, वहाँ खुजली बहुत चले और ज्वर हो आवे उसे शूकरदंष्ट्ररोग कहिए।

क्षुद्ररोगों का यत्न

अजगल्लिका आदि फुंसियों का जोंक लगाकर रुधिर निकला डाले। अथवा पके व्रण का जो यत्न पीछे लिखा है वह करे तो यह रोग अच्छा हो। अथवा फिटकरी, सौंफ, प्याज इन्हें शीतल जल से महीन पीस लेप करे तो अजगल्लिका आदि फुंसियाँ अच्छी हो। अथवा मैनसिल, देवदारु, कूट इन्हें पानी से महीन पीस लेप करे पीछे शस्त्र से चीर राद काढ़ डाले पीछे जो मरहम कहे हैं उससे ये निश्चय अच्छी हों। अथवा सहँजना, देवदारु इन्हें जल से पीस लेप करे तो विदारिका फुंसी अच्छी हो।

इरवेल्लिका फुंसी का यत्न

जो पित्त के विसर्प का यत्न है सो इसका भी यत्न है।

पनसिका फुंसी का यत्न

प्रथम नींब के पत्ते बाँध इसे पकावे पीछे मैनसिल, कूट, हल्दी, तिल इन्हें महीन पीस लेप कर इसे पकावे पीछे चिराय राद निकला मरहम लगावे तो पनसिका अच्छी हो।

पाषाणगर्दभिका फुंसी का यत्न

प्रथम जोंक लगाय रुधिर कढ़ाना अथवा गर्म लेप कर इसे पकावे पीछे व्रण के यत्न से इसका यत्न करे।

वाल्मीकि फुंसी का यत्न

इसे पकाय चिरा दे पीछे नोन, चित्रक का लेप कर राद निकला डाले फिर अर्बुदरोग का यत्न कर इसे भरे। अथवा जोंक आदि से इसका रुधिर कढ़ाइए। अथवा कुलत्थ की जड़, गिलोय, नोन, अमलतास, दन्ती, निसोत इन्हें पानी से महीन पीस गर्म कर इसमें थोड़ा घृत मिलाय लेप करे तो यह पक जाय पीछे चिरा दे और इसका मुरदा मांस निकला डाले, व्रण के अच्छे होने के मरहम से यह अच्छा हो। अथवा मैनसिल, इलायची, रक्तचन्दन, कूट, चमेली के पत्ते, भिलावाँ, मट्ठा, नींब के पत्ते इनमें तेल पकाकर लगावे तो वाल्मीकि फुंसी सूजन संयुक्त अच्छी हो। यह मनश्शिलादि तैल है।

काँखोलाई और अग्निरोहिणी का यत्न

प्रथम जोंक से रुधिर निकलावे अथवा जो पित्त के विसर्प का यत्न

है वह करे। अथवा देवदारु, मैनसिल, कूट इन्हें बराबर ले महीन पीस जल से कुछ एक गर्म कर इसका लेप करे अथवा इसकी सुहाती सुहाती गर्म पींड़ी बाँधे तो काँखोलाई अच्छी हो।

अवपाटिका का यत्न

चिकनी वस्तुओं से शनैः शनैः सुहाता-सुहाता सेंक करे तो अवपाटिका अच्छी हो।

निरुद्धप्रकाश का यत्न

चका के रस में तेल पकाय उस तेल का सेंक करे अथवा शूकर के घृत का सेंक करे तो निरुद्धप्रकाश अच्छा हो।

संनिरुद्ध गुदा का यत्न

गर्म सुहाता तेल का सेंक करे अथवा वायु के दूर करनेवाले तेल का सेंक करे तो संन्निरुद्ध गुदा का रोग जाय।

वृषण कच्छूरोग का यत्न

राल, कूट, सेंधा नोन, सरसों इन्हें जल से महीन पीस उबटना करे तो वृषण कच्छूरोग अच्छा हो।

गुदभ्रंश (काँचरोग) का यत्न

गोघृत आदि चिकनी वस्तुओं का सुहाता सेंक करे तो गुदभ्रंश जाय। अथवा कमलिनी के सूखे पत्तों में मिश्री मिलाकर ८ माशा नित्य खाय तो काँच निकलनी बन्द हो।

अथवा चूहे के मांस का घृत काँच में लेप करे तो काँच निकलनी बन्द हो। अथवा डाँसरा, चित्रक, लोनी, बेल की गिरी, पाढ़, जवाखार ये सब बराबर ले इनका महीन चूर्ण कर १० माशा गौ के मट्ठे से नित्य ले तो गुदभ्रंश जाय। अथवा मूसे का मांस और दशमूल में पानी डाल क्वाथ करे पीछे इस क्वाथ में तेल पकाय इसका मर्दन करे तो गुदभ्रंश (काँच का रोग), गुदशूल और भगन्दररोग जायँ। यह मूषकतैल है।

अथवा छछूँदर के तेल को मूषक के तेल की तरह कर उसका लेप करे तो गुदभ्रंश का रोग जाय। अथवा लोनी का रस, बेर की जड़ का रस, दही, मट्ठा इसमें सोंठि, जवाखार, घृत डाल पकावे पीछे

इस घृत को २० माशा नित्य खाय तो गुदभ्रंश का रोग जाय। यह चांगेरीघृत है।

सूकरदंष्ट्ररोग का यत्न

जलभाँगरे की जड़ और हल्दी को जल से पीस शूकर के काटे पर लेप करे तो शूकर की दाढ़ का विष अच्छा हो।

अलसनाम का यत्न

पटोल, मैनसिल, नींबू, गोरोचन, कालीमिरच, तिल, कटेली का रस, काँजी इनमें कड़ुआ तेल पकाकर खरवे में मर्दन करे तो खरवा अच्छा हो। अथवा कणगच के बीज, हल्दी, हीराकसीस, महुआ, गोरोचन, हरताल ये सब बराबर ले शहद से महीन पीस लेप करे तो खरवा अच्छा हो।

ब्याऊ (बेंवाई) का यत्न

गर्म तेल का सुहाता सेंक करे तो ब्याऊ अच्छी हो। अथवा मोम, जवाखार घृत में मिलाय गरम-गरम ब्याऊ में भरे तो ब्याऊ अच्छी हो। अथवा राल, सेंधा नोन, शहद, घृत इन सबको कड़ुए तेल में मिलाय मथे पीछे इसको ब्याऊ में भरे तो ब्याऊ अच्छी हो। अथवा शहद, मोम, गेरू, घृत, गुड़, गुग्गुल, राल इन्हें महीन पीस एकजीव कर ब्याऊ में भरे तो ब्याऊ अच्छी हो। अथवा धतूरे के बीज, जवाखार इन्हें कड़ुए तेल में पकाकर मर्दन करे तो ब्याऊ अच्छी हो।

कदर का यत्न

जिसके पैर में काँटा, कंकरी चुभी हो उसके आटण पड़ जाय तो उसको गर्म तेल से सेंके अथवा आक का दूध, गुड़ मिलाय बाँधे तो कदर जाय।

तिल का यत्न

सरसों, सज्जी, हल्दी, केसर इन्हें जल से महीन पीस उबटना करे पहिले छुरी आदि से उसको रगड़े तो शरीर का तिल जाय।

मस्से का यत्न

सज्जी, चूना, साबुन इन्हें जल से पीस मस्सों में लगावे तो मस्से दूर हों।

जतुमणिनाम लहसुन का यत्न

लहसुन को पाछने से रगड़े पीछे सरसों, हल्दी, कूट, सज्जी, जवाखार, केशर इन्हें पानी से पीस उबटन करे तो लहसुन जाय।

चेपनाम रोग का यत्न

इस रोग में जोंक आदि से रुधिर कढ़ावे अथवा सुपारी की राख, पीली कौड़ी की राख, कत्था, कबीला, मुरदाशंख, नीलाथोथा, इनको बुरके तो चेप जाय।

कुनखरोग का यत्न

सार १ माशे नित्य शहद से खाय अथवा कुटकी का साधन करे तो कुनखरोग जाय।

मस्सा, तिल, लहसुन इनका दूसरा यत्न

शिगरफ़, भुना नीलाथोथा ये दोनों १ पैसे भर ले और सिंदूर ४ माशा, राल २८ माशा इन सबको गौ के ६ टके भर घृत में काँसे की थाली में लोहे के घोटे से अथवा ताँबे के घोटे से घोटकर ३ दिन रगड़े जब वह जलसदृश हो जाय तब इसका लेप करे तो मस्सा, लहसुन, खारवा, फोड़ा, खुजली ये सब जायँ। अथवा कालीजीरी १० माशा, नौसादर २० माशा, सीप का चूर्ण २८ माशा, नीलाथोथा २ टके भर ले इन सबको महीन पीस अरणी के रस की ३ पुट दे पीछे जलभाँगरे के रस की ३ पुट दे, इन्हें धूप में सुखाय गौ के बछड़े के मूत्र से इनकी गोली बाँधे पीछे उसी के मूत्र से गोली को घिस लगावे तो तिल, मस्सा, लहसुन ये सब जायँ।

खुजली का यत्न

लोहे के पात्र में लोहे के घोटे से आँवलासार गन्धक १ माशा, पारा २ माशे, नीलाथोथा ३ माशे ले गौ के घृत से खूब घोटकर पीछे लेप करे तो खुजली दूर हो।

चेप का और यत्न

लोहे के पात्र में हड़ को हल्दी के रस से रगड़े पीछे गर्म कर लगावे तो चेप जाय।

पलित (यौवन अवस्था के सफेद बालों) का यत्न

लोहे का चूर्ण १ तोले, आम की गुठली ५ तोले, आँवला २ तोले, बड़ी हड़ का चूर्ण २ तोले, बहेड़ा १ तोले इन सबको महीन पीस लोहे के पात्र में भाँगरे के रस से २ दिन भिगो रक्खे पीछे सफ़ेद बालों में लेप करे तो श्याम हों। अथवा केतकी की जड़ अथवा केवड़े की जड़, सहँजने के फूल, कनेर की जड़, लोहचूर, जलभाँगरा, त्रिफला इन सबको तेल में पकावे पीछे लोहे के पात्र में धर पृथ्वी में गाड़ रक्खे, १ महीने पीछे उस तेल को सफ़ेद बालों में लगावे तो सफ़ेद बाल काले हों। अथवा त्रिफला, नींब के पत्ते, लोहचूर, जलभाँगरे का रस, बकरी के मूत्र में इसे पीस सफ़ेद बालों में लगावे तो बाल काले हों। अथवा पापड़खार १ माशे, सिंदूर १ माशे, मुरदाशंख १ माशे, खाने का चूना ८ माशे इन्हें पानी से पत्थर में ३ घड़ी तक महीन पीसे जब इसका रंग नख के ऊपर काला आवे तब सफ़ेद केशों में लगावे तो काले केश हों। अथवा मोटा नया माजूफल लेके भूभल में तबतक सेंके जबतक फटे नहीं और न जलने दे पीछे माजूफल १ माशे, संगरासि १ माशे, नीलाथोथा ४ रत्ती, नौसादर ३ रत्ती, लवङ्ग ३ माशे, फिटकरी ३ रत्ती, लोहचूर १ माशे इन सबको आँवले के रस में, लोह के पात्र में, लोह के घोटे से १ पहर रगड़े जब उसका रंग नखों पर काला आवे तब सफ़ेद केशों को आँवले के पानी से धोकर केशों पर गाढ़ा लेप करे तो ऊपर न आवे पीछे सफ़ेद केशों को आँवले के पानी से धो डाले तो केश काले हों। अथवा खाने का चूना, अरहर की राख अथवा कौड़ियों की राख को शीशे से रगड़े और इसमें थोड़ा गोपीचन्दन डाल १ माशे मुरदाशंख डाले जब रगड़ते में नखों का रंग काला आवे तब इसका केशों पर लेप कर ऊपर से अरण्ड का पत्ता बाँधे तो केश काले हों।

इन्द्रलुप्त (उदरीलागी) का यत्न

पटोल के पत्तों के रस में कुटकी को पीस जहाँ बाल गये हों वहाँ लेप करे तो बाल जम आवें। अथवा गोखुरू तिलों के फूलों को बराबर ले शहद, घृत में महीन पीस जहाँ बाल गये हों वहाँ लेप करे तो बाल

आवें। अथवा हाथीदाँत की राख बकरी के दूध के साथ लगावे तो बाल हो आवें अथवा कमल की जड़, दाख, तेल, घृत, दूध इन सबको महीन पीस लेप करे तो बाल हों। अथवा चमेली के पत्ते, कणगच की जड़, चित्रक इनमें तेल पकाकर उस तेल का मर्दन करे तो बाल आवें।

चेप का यत्न

चिरौंजी करछुले में सज्जी जलाय लेप करे तो चेप का रोग जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं।

मस्तक के रोगों की उत्पत्ति और लक्षण

मस्तक के रोग ११ प्रकार के हैं। वायु का १ पित्त का २ कफ का ३ सन्निपात का ४ रुधिर का ५ क्षीणपने का ६ कृमि का ७ सूर्यावर्त का ८ अनन्तवात का ९ शंखनाम कनपटी दुखने का १० अर्धावभेदक ११ ये सब दुष्ट भोजन से होते हैं।

वायु के शिरोरोग का लक्षण

कारण विना मस्तक में बहुत पीड़ा हो, रात्रि में अधिक हो और औषधों के लेप या सेंक से आराम हो तो वायुपीड़ा जानो।

पित्त के शिरोरोग का लक्षण

जिसका माथा अग्नि के सदृश जले, शिर के टूक हुए जायँ, नेत्रों में पीड़ा बहुत हो और शीत रात्रि में विशेष हो तो जानिए पित्त की पीड़ा है।

कफ के शिरोरोग का लक्षण

जिसका मस्तक कफ से लिपा रहे, भारी और ठण्ढा हो और आँख, नासिका, मुख में सूजन हो तथा जिसका शिर जले ये लक्षण कफ की पीड़ा के हैं।

सन्निपात के शिरोरोग का लक्षण

सन्निपात की पीड़ा में पीछे कहे हुए सब लक्षण होते हैं।

रुधिर के शिरोरोग का लक्षण

जो पित्त के लक्षण कहे हैं वे सब हों और मस्तक, हाथ का स्पर्श न सहे तब जानिए कि रक्त की पीड़ा है।

क्षीणपने से उपजे शिरोरोग का लक्षण

शरीर का बल जाता रहे, मस्तक खाली पड़ जाय, शिर जले और बहुत पीड़ा हो तब जानिए कि क्षीणपने की पीड़ा है।

कृमि से उपजे शिरोरोग का लक्षण

जिसके शिर में बहुत पीड़ा हो, फड़के और जिसकी नाक में रुधिर और राद बहुत निकले तथा उसका शिर बहुत बढ़े ये लक्षण हों तो कृमि को पीड़ा जानिए।

सूर्यावर्त रोग का लक्षण

सूर्य के उदय के समय शिर में मन्द-मन्द पीड़ा हो और ज्यों-ज्यों दिन चढ़े त्यों-त्यों दोपहर तक पीड़ा बढ़े तथा आँखों और भौंहों में पीड़ा बहुत हो और दोपहर पीछे पीड़ा मन्द होती जाय इसे सूर्यावर्त-रोग कहिए।

अनन्तवात शिरोरोग का लक्षण

वायु, पित्त, कफ, इन तीनों दोषों के दुष्ट होने से कन्धों, नेत्रों, कनपटियों में बहुत पीड़ा करे, दाढ़ों को न हिलने दे, कपोलों में कम्प, नेत्रविकार, शिर में पीड़ा बहुत करे इसे अनन्तवात कहिए।

शंखनाम कनपटी दूखे उसका लक्षण

पित्त, रुधिर और वायु ये दुष्ट होकर कनपटी में अत्यन्त पीड़ा करें और शरीर में दाह और कनपटी को लाल कर दें तथा शिर का टूक करें और गले को रोक दें इसे शंखनाम शिर का रोग कहिए इस रोगवाला तीन दिन जीवे।

अर्धावभेदक शिरोरोग का लक्षण

रूखी वस्तु खाने से, भोजन पर भोजन करने से, पुरवैया पवन से, बहुत मैथुन करने से, मलमूत्र रोकने से, खेद करने से वायु कुपित हो कफ को ग्रहण करे पीछे वह वायु कन्धे, कनपटी, कान, ललाट, भौंह इन सबके आधे-आधे में वज्र के लगने की सी पीड़ा हो उसे अर्धावभेदक कहिए और यह पीड़ा नेत्र और कान में बहुत होने से मनुष्य को मार डाले।

वायु के शिरोरोग का यत्न

वायु के तेल का अथवा इसी तेल का मर्दन करे और वायु को

दूर करनेवाली वस्तुओं को खाय तो वायु का शिरोरोग जाय। अथवा कूट, अरण्ड की जड़, सोंठि इन्हें मट्ठे में महीन पीस गर्म कर मस्तक में लेप करे तो वायु की शिरपीड़ा जाय। अथवा श्वासकुठार रस की नास ले तो नानाप्रकार की शिर की पीड़ा जाय। अथवा उड़द के चून को उसन के रोटी करे उस रोटी को शिर में एक पहर बाँधे तो शिर की पीड़ा दूर हो।

शिरोबस्ति

उड़द के चून को पानी में उसन १६ अंगुल अथवा ८ अंगुल की बाटी कर उसे गर्म तेल से पूर्णकर वह तेल १ पहर अथवा ४ घड़ी निश्चलस्थान में शिर के ऊपर रक्खे तो वायु का शिरोरोग, दाढ़, कंधे, नेत्र, कान के रोगों को और मस्तक काँपता हो उसे यह शिरोबस्ति दूर करती है, ५ दिन या ७ दिन सेवन करे।

पित्त के शिरोरोग का यत्न

चन्दन, कमलगट्टे इन्हें शीतल जल से पीस लेप करे तो पित्त की मस्तकपीड़ा जाय। अथवा सौबार के धोये घृत का लेप करे तो पित्त की मस्तकपीड़ा जाय। अथवा श्वासकुठार रस, कर्पूर, केसर, मिश्री, चन्दन इन्हें बकरी के दूध से पीस लेप करे तो पित्त की मस्तक पीड़ा जाय। अथवा सोंठि, गुड़ को पानी में पीस नास ले तो सब प्रकार की मस्तकपीड़ा जाय।

रुधिर की मस्तकपीड़ा का यत्न

पित्त की मस्तकपीड़ा और इनका यत्न एक ही है इसमें रुधिर छुड़ाना विशेष है।

कफ की मस्तकपीड़ा का यत्न

इस मस्तकपीड़ा में लंघन करना योग्य है अथवा कफहारी ओषधियों को पीस इनका गर्म लेप करे तो यह रोग जाय।

सन्निपात की मस्तकपीड़ा का यत्न

सन्निपात को दूर करनेवाली ओषधियों का लेप करे अथवा उन्हें खाय तो यह मस्तकपीड़ा जाय।

षड्बिन्दु तैल

अरण्ड की जड़, तगर, सौंफ, जीवन्ती, सेंधानोन, रास्ना, जलभाँगरा, बायबिड़ंग, मुलहठी, सोंठि, तिलों का तेल इन ओषधियों से अठगुना तेल और चौगुना जलभाँगरे का रस तथा तेल से चौगुना बकरी का दूध इन सबको इकट्ठा कर कराही में मधुरी आँच से पकावे जब जल सब जल जाय तेलमात्र रह जाय तब इस तेल के ६ बूँद को नाक में नास ले तो शिरोरोग और दाँतरोग जायँ।

अथवा क्षीणपन से हुई शिरपीड़ा को जो दूर करे ऐसा यत्न करने से मस्तकपीड़ा जाय।

कृमि से उपजी मस्तकपीड़ा का यत्न

सोंठि, मिरच, पीपल, अमलतास, सहँजने के बीज ये सब बराबर ले इन्हें बकरी के मूत्र में महीन पीस नास ले तो मस्तक के कृमि जायँ और मस्तकपीड़ा अच्छी हो।

सूर्यावर्त्त (आधाशीशी) का यत्न

दूध और घृत मिलाय नास ले तो आधाशीशी जाय। अथवा गुड़ और घृत मिलाय मालपुआ खाय। अथवा खीर खाय अथवा तिलों का सेंक करावे तो आधाशीशी जाय। अथवा जलभाँगरे का रस, बकरी का दूध बराबर ले इन्हें धूप में गर्म करे पीछे इसका नास ले तो आधाशीशी जाय। अथवा सिंगोमुहरा, अफ़ीम, लाख की जड़, धतूरे की जड़, सोंठि. कूट, लहसुन, हींग इन्हें गोमूत्र में महीन पीस गर्म कर मस्तक में लेप करे तो आधाशीशी जाय।

अर्द्धमस्तक दूखे उसका यत्न

उसको जुलाब दे तो अर्धमस्तक दुखता बन्द हो। अथवा गर्म भोजन से यह अच्छा हो। अथवा बायबिड़ंग, काले तिल ये दोनों महीन पीस लेप करे तो यह अच्छा हो। अथवा मिश्री, दूध, कच्चे नारियल का पानी ये सब मिलाकर पीवे अथवा इनकी नास ले तो आधाशीशी अर्धमस्तक का दूखना अच्छा हो।

अनन्तवायुशिरोरोग का यत्न

आधाशीशी का और इसका यत्न एक ही है अथवा मस्तक की

नास की फस्त लगावे तो यह अच्छा हो। अथवा शहद का मालपुआ खाय तो अनन्तवात शिर का रोग जाय।

पथ्यादिक्वाथ

हड़ की छाल, बहेड़ा, आँवला, हल्दी, गिलोय, चिरायता, नींब की छाल, गुड़ ये सब बराबर ले इन्हें जवकुट कर इनका काढ़ा दे वा नास ले तो भौंह कनपटी की पीड़ा और नेत्ररोग, आधाशीशी ये रोग जायँ।

कनपटी दुखती हो उसका यत्न

दारुहल्दी, हल्दी, मंजीठ, गोरीसर, खस, कमलगट्टा, इन्हें जल से महीन पीस कनपटियों में लेप करे तो कनपटी अच्छी हो। अथवा शीतल जल से शीतल ओषधियों को लेप करे तो कनपटी अच्छी हो। अथवा मुलहठी, उड़द बराबर ले और इनका चौथा हिस्सा सिंगीमुहरा ले इन्हें महीन पीस सरसों प्रमाण मात्रा ले तो सब प्रकार की शिर की व्यथा दूर हो। अथवा गिलोय, सीप का चूना, नौसादर इनको महीन पीस नास ले तो सब प्रकार की शिर को व्यथा जाय।

आधाशीशी का और यत्न

मिश्री, केसर इन्हें घृत में सेंके पीछे इनकी नास ले तो आधाशीशी कनपटी, भौंह, नेत्र का दुखना ये सब रोग अच्छे हों। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं।

अथवा सोंठि, मिरच, पीपल, पुष्करमूल, हल्दी, रास्ना, देवदारु, असगन्ध इनका काढ़ा ले तो सब प्रकार के मस्तक के रोग जायँ। अथवा मिश्री और इससे आधी दाड़िम की कली ले इन्हें महीन पीस नास ले तो मस्तक की पीड़ा जाय। अथवा कूट, अरण्ड की जड़ इन्हें कांजी में पीस लेप करे तो मस्तक की पीड़ा जाय। अथवा मुचकुन्द के फूलों का लेप करे तो मस्तकपीड़ा जाय। अथवा, देवदारु, तगर, कूट, खस, सोंठि, तिल इन्हें कांजी में घोट लेप करे तो मस्तकपीड़ा जाय।

आधाशीशी का और यत्न

मिश्री, मैनफल इन्हें गोमूत्र में महीन पीस नास ले तो आधा-

शीशी जाय। अथवा खरगोश के शोरवे में मिरच डाल भोजन के साथ ७ दिन खाय तो आधाशीशी आदि सब मस्तक के रोग जायँ। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में हैं। अथवा रक्तचन्दन, लवङ्ग, सोंठि इन्हें पानी में महीन पीस लेप करे तो मस्तकपीड़ा जाय। अथवा आम की छाल का लेप करे तो मस्तकपीड़ा जाय। अथवा जलभाँगरे का रस, गौ का मक्खन इन दोनों का लेप करे तो मस्तकपीड़ा जाय। अथवा पीपल, मिरच, पठानीलोध ये सब बराबर ले महीन पीस इनकी ३ दिन नास ले तो आधाशीशी आदि मस्तक पीड़ा जायँ।

कपाल के कीड़े का यत्न

कड़ुए ककोड़े के पत्तों के रस की नास ले तो कपाल के कीड़े जायँ। अथवा पीपल, आँधीझाड़ा, सरसों, आक की डोंड़ी के बीज इनका शीतल जल से लेप करे तो मस्तकपीड़ा जाय। ये यत्न वैद्यवल्लभ में हैं।

शिर के केश बढ़ने का यत्न

छारछबीला, कूट, काला तिल, गोरीसर, कमलगट्टे इन्हें शहद और दूध में महीन पीस लेप करे तो शिर के केश बढ़े। अथवा जलभाँगरे के रस में चिरमिटी का महीन पिसा चूर्ण और तिल का तेल पकावे फिर इस तेल में इलायची, छारछबीला, कूट इन्हें जल से महीन पीस लेप करे तो केश बढ़ें। अथवा बालछड़, खरेंटी, मौलसिरी की छाल, आँवला, कूट इन्हें जल से महीन पीस लेप करे तो केश बढ़ें।

मस्तकपीड़ा का और यत्न

लवङ्ग १, मिरच ३, हींग चने प्रमाण इन तीनों का जल से नास ले तो मस्तकपीड़ा निश्चय जाय।

आधाशीशी का मन्त्र

अर्द्धंकपालीनाशय जाजा री पापिनी जाजा री हत्यारी न जाय तो तेरे गुरु की आज्ञा हनुमन्त बीर की आज्ञा गरुड़पंखड़ी की आज्ञा मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरोमन्त्र ईश्वरोवाच॥ इस मन्त्र से मस्तक को शनैःशनैः २१ बार फूँक दे तो आधाशीशी निश्चय जाय। कृष्णपक्ष की १४ को शक्ति मुवाफ़िक इस मन्त्र का जप करे तो यह मन्त्र सिद्ध रहे।

दूसरा मन्त्र

ॐ नमो आधाशीशी हूंहूंकारी पहर पचारी मुख मूँदि पाटलेडारी अमुकारे शीश रहै मुख महेश्वर की आज्ञा फुरे ॐ ठं ठं स्वाहा ॥ इस मन्त्र से २१ बार अँगुली मस्तक पर फेरे तो आधाशीशी जाय ।

नेत्र के रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

नेत्र का मण्डल दो ढाई अंगुल प्रमाण है अथवा अपने अँगूठे के उदर प्रमाण है सो शार्ङ्गधर के मत से नेत्रमण्डल में ९४ रोग हैं और कई एक आचार्यों के मत से ७८ रोग मुख्य हैं दृष्टि में १२ रोग हैं, नेत्र में दो रोग हैं, नेत्र की काली जगह में ४ रोग हैं, नेत्र के सफेद भाग में ११ रोग हैं, नेत्र के मार्ग में ९ रोग हैं, नेत्र की बाफणी में २ रोग हैं नेत्र की सन्धि में ९ रोग हैं, सब नेत्र में १७ रोग हैं। इस प्रकार नेत्र में ७८ रोग हैं, ये चरक और सुश्रुत में लिखे हैं। वायु के १०, पित्त के १०, कफ के १३, रुधिर के १६, सन्निपात के २५, नेत्र के बाहर के २, इस प्रकार ७६ रोग हैं।

नेत्र के रोगों की उत्पत्ति

धूप आदि से शरीर में गर्मी हुई हो पीछे नदी, तालाब, बावली आदि के जल में प्रवेश करने, दूर के देखने, दिन के सोने, पसीने, नेत्रों में रज के पड़ने, नेत्रों में धुआँ के जाने, छर्दि के रोकने, बहुत वमन के करने और गर्म वस्तु के खाने तथा काँजी, कुलत्थ, उड़द इनके खाने, अधोवायु, मल-मूत्र इनके रोकने, ऋतु के विपरीतपने, क्लेश और बहुत मैथुन करने, अश्रु के रोकने और सूक्ष्म वस्तु के देखने से नेत्रों में ७६ रोग पैदा होते हैं।

प्रथम दृष्टिरोग का लक्षण

नेत्र की काली जगह में जो मसूर की दाल की बराबर एक बुन्द-सा है वह पाँच महाभूतों से उपजा है। वह अग्निसा चमकदार, अविनाशी, तेजस्वरूप सिद्ध है और चार पटलों (प्याज के छिलके के समान नेत्र की झिल्लियों) से ढका है। नेत्र की शीतलदृष्टि जल और रुधिर के आधार है। इस दृष्टि के ४ पटल हैं। प्रथम पटल तेज और जल के आश्रय है, दूसरा मांस के आश्रय है, तीसरा मेद के

आश्रय है, चौथा रुधिर, तेज, मांस, मेद, अस्थि इन पाँचों के आश्रय है।

प्रथम पटल के रोग का लक्षण

प्रथम नेत्र के पटल की दृष्टि में जो रोग रहते हैं उनसे पुरुष को जो दीखे सो सांगोपांग यथार्थ न दीखे क्योंकि पहले पटल में दोष थोड़े रहते हैं।

दूसरे पटल के दोष का लक्षण

नेत्र के दूसरे पटल में प्राप्त दोष से मक्खी, मच्छड़, केश इनका समूह न दीखे, दूर का निकट दीखे, निकट का दूर दीखे, दृष्टि भ्रमती रहे और बहुत यत्न से भी सूई का छिद्र न दीखे क्योंकि दृष्टि बहुत विह्वल हो जाती है।

तीसरे पटल के दोष का लक्षण

ऊँचा दीखे, नीचे का न दीखे, रूप का समूह दीखे मानो वस्त्र बीच आ गया है, कान, नाक, नेत्र ये और दीखें। दृष्टि में दोष बहुत हों तो नीचे की वस्तु ऊपर दीखे और से ऊपर की नीचे दीखे तथा नेत्र की पसलियों में बहुत दोष आ प्राप्त हों तो उसे निकट की वस्तु न दीखे और नेत्र के चारों ओर के दोष से आकुल, व्याकुल, चकचौंधी दीखे और दृष्टि के मध्य प्राप्त दोष से बड़ी वस्तु छोटी दीखे तथा दृष्टि में स्थित दोष से निकट की एक वस्तु को दो दीखें और बगल की दो वस्तु तीन दीखें और बगल में बहुत वस्तु हों तो उनको गिनती न हो सके ये लक्षण तीसरे पटल के जानिए।

चतुर्थ पटल में हुए दोषों का लक्षण

चौथे पटल में उपजे दोष को लौकिक में तिमिर कहते हैं तथा कोई वैद्यशास्त्र के आचार्य लिङ्गनाश रोग कहते हैं। लिङ्गनाश में नेत्रों की तेजोमयी पुतली नीली काँच सदृश हो जाती है उससे पटल में दोष बहुत हों, चन्द्रमा, सूर्य, नक्षत्र, आकाश, बिजली ये निर्मल तेज हैं सो भी अच्छे न दीखें, भ्रमते से दीखें इसको तिमिर कहते हैं अथवा इसे लिङ्गनाश कहिए और लौकिक में इसे नजला कहते हैं और कोई-कोई मोतियाबिन्द भी कहते हैं।

अन्यशास्त्रों के मत से लिङ्गनाश मोतियाबिन्द का लक्षण

यह लिङ्गनाश मोतियाबिन्द रोग ६ प्रकार का है। वायु १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ रुधिर ५ परिम्लायिन ६। परिम्लायिन कहिए रुधिर से मूर्च्छित हुए पित्त को।

वायु के लिङ्गनाश का लक्षण

जिसके वायु का लिङ्गनाश हो उसे संपूर्ण वस्तु भ्रमती और मलीन-सी दीखें तथा सब वस्तु कुछ लाल दीखें, कुटिल (बाँकी) दीखें तो जानिए इसके वायु का लिङ्गनाश है।

पित्त के लिङ्गनाश का लक्षण

जिसके पित्त का लिङ्गनाश हो उसको सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, अग्नि, इन्द्र का धनुष, बिजली ये सब भ्रमते से दीखे और सब वस्तु नीली-सी दीखें तो जानिए कि पित्त का लिङ्गनाश है।

कफ के लिङ्गनाश का लक्षण

कफ का लिङ्गनाश हो उससे चिकना और सफ़ेद दीखे और नेत्र जल से भरा रहे।

सन्निपात के लिङ्गनाश का लक्षण

जिसके सन्निपात का लिङ्गनाश हो उसे नानाप्रकार के आकार दीखें और अधिक व हीन अङ्ग दीखें और तेजरूप सब वस्तु दीखें तथा पीछे कहे लक्षण भी होते हैं।

रुधिर से उपजे लिङ्गनाश का लक्षण

जिसके रुधिर से उपजा लिङ्गनाश हो उसको सब वस्तुएँ लाल, सफ़ेद, हरी, काली और पीली दीखें।

परिम्लायिन से उपजे लिङ्गनाश का लक्षण

परिम्लायिन से उपजे लिङ्गनाश से दशों दिशाएँ पीली ही दीखें मानो सर्वत्र सूर्य ही हैं तथा वृक्ष आदि सब वस्तुएँ दग्ध हुई अग्नि-सदृश दीखें।

लिङ्गनाश का अन्य स्वरूप

वायु का लिङ्गनाश अरुणता, पीलेपन को लिए नीला, ऐसा ही पित्त का और कफ का सफ़ेद होता है रुधिर का लाल होता है और सन्निपात का विचित्र होता है।

वायु आदि से छः प्रकार के लिङ्गनाशों का नेत्रमण्डलगत पृथक्-पृथक् स्वरूप

वायु का नेत्रमण्डल अरुण, चञ्चल और कठोर हो, पित्त के नेत्रमण्डल में बिलोसा नेत्र काँसी के वर्णसदृश और पीला हो, कफ का मण्डल बहुत चिकना हो, शंख या कुन्द के फूल के सदृश पीला और चञ्चल हों और उस नेत्रमण्डल में सफ़ेद बूँदे हों।

सन्निपात के नेत्रमण्डल का लक्षण

इस नेत्रमण्डल में मूँगे के सदृश अथवा पद्म के पत्र सदृश नेत्रमण्डल हो और पीछे जो लक्षण कहे हैं वे भी हों।

रुधिर के नेत्रमण्डल का लक्षण

यह नेत्रमण्डल लाल होता है।

परिम्लायिन नेत्रमण्डल का लक्षण

यह नेत्रमण्डल भदरंगा, काँच के सदृश पीला हो और लाल, रूखा, मैला और नीला होता है।

पित्तविदग्ध दृष्टि का लक्षण

जिसके शरीर में पित्त दुष्ट हुआ हो उसकी दृष्टि पीली हो जाय और उसको सब वस्तु पीली ही पीली दीखें।

तीसरे पटल में प्राप्त दुष्टपित्त का स्वरूप

उसको दिन में न दीखे, रात्रि में दीखे, चन्द्रमा के शीतलपने से कुछ एक पित्त रात्रि में थोड़ा होता है।

कफविदग्ध दृष्टि का लक्षण

जिसकी दृष्टि कफ करके विदग्ध हो उसे सब सफ़ेद दीखे। यह रोग प्रथम द्वितीय पटल में होता है।

नक्तान्ध नाम रतौंधी का लक्षण

जब तीसरे पटल में कफ आवे तब नक्तान्ध होता है उससे दिन में दीखता है और रात्रि में नहीं दीखता है इसे लौकिक में रतौंधी कहते हैं।

धूमदर्शीरोग का लक्षण

शोक या ज्वर से, खेद से शरीर में ताप जाय प्राप्त हो तब मनुष्य की दृष्टि धुआँ से व्याप्त हो और मनुष्य को सब वस्तुएँ धुएँ के सदृश दीखें उसे धूमदर्शी रोग कहिए।

ह्रस्वजात्यरोग का लक्षण

जो कष्ट से बड़ी वस्तु को देखे और वह वस्तु दिन में छोटी और रात्रि में यथार्थ दीखे उसे ह्रस्वजात्यरोग कहिए।

नकुलान्धरोग का लक्षण

जिसकी दृष्टि में दोष आय प्राप्त हों तब उसको सब वस्तुएँ चित्र-विचित्र दीखें और नकुल की तरह नेत्र चमकें इसे नकुलान्ध कहिए।

गम्भीररोग का लक्षण

जो पुरुष शीशा खे तो उसकी दृष्टि भीतर को घुस जाय और नेत्र-में पीड़ा चले इसे गम्भीरनालरोग कहिए।

बिना कारण ही लिङ्गनाश हो उसका लक्षण

जिसकी दृष्टि निर्मल अच्छी हो वह बिना कारण ही काली हो जाय उसे बिना कारण लिङ्गनाश कहिए।

नेत्रमण्डल के रोगों के नाम और संख्या

कृष्णमण्डल में ये चार रोग होते हैं। सव्रणशुक्र १, अव्रणशुक्र २, अक्षिपाकात्यय ३, अजकाजात ४।

सव्रणशुक्र का लक्षण

नेत्र की काली जगह में पुतली के ऊपर बूँदसी होकर तारा ढक जाय और वह बूँदे नेत्र में गड़ा सा दीखे और उसमें सुई का सा चभका चले और गर्म-गर्म पानी नेत्र में से गिरा करे तो उसे सव्रण-शुक्र कहिए।

सव्रणशुक्र का असाध्य लक्षण

वह बूँद दृष्टि के समीप गाढ़ी पर्का त्वचा में न हो और आँखों में बहुत पानी नहीं पड़े और उसमें पीड़ा कम हो तथा एक आँख में हो वह तो कदाचित् अच्छा हो और इससे विपरीत लक्षण हों तो असाध्य जानिए।

अव्रणशुक्र का लक्षण

जिसकी काली पुतली के तारे पर शुक्र की बूँद आई हो और वह बूँद हाले, चले और शंख, चन्द्रमा, कुन्द के फूल, आकाश अथवा बादल के सदृश हो उसे अव्रणशुक्र कहिए यह साध्य है।

अव्रणशुक्र साध्य है परन्तु अवस्थाभेद से कष्टसाध्य होने का लक्षण

जिसके नेत्र का मांस बिखर जाय और वह बूँद आड़ी हों, नसों में हुई हो, भदरंगी हो और दूसरे पटल में हो, चारों ओर लाल हो और बहुत दिनों का हो ऐसा अव्रणशुक्र भी असाध्य जानिए। इसका यत्न न करना चाहिए।

पुनः अव्रणशुक्र का असाध्य लक्षण

जिसके नेत्र में आँसू गर्म उतरें, नेत्र में फुंसियाँ हों, पुतलियों के ऊपर शुक्र की मूँग के समान बूँद हो और तीतर के पंखसदृश वर्ण हो तो भी अव्रणशुक्र असाध्य जानिए।

अक्षिपाकात्यय नेत्ररोग का लक्षण

जिसके नेत्र की सफेद जगह सब सूज जाय और अश्रुपात भी बहुत हों, उस जगह पीड़ा बहुत हो और वह नेत्रदोषों से पक जाय इसे अक्षिपाकात्यय रोग कहिए यह असाध्य है।

अजकाजात नेत्ररोग का लक्षण

जिसकी आँखें बकरे की मेंगनी के सदृश हो जायँ और उसमें पीड़ा चले, लाल रहें, लाल ही आँसू आवें इसे अजकाजात नेत्ररोग कहिए। ये चारों कृष्णमण्डल के रोग हैं।

नेत्र के शुक्लभाग मे प्राप्त रोगों के नाम और संख्या

नेत्र के शुक्लभाग में ११ रोग हैं। प्रस्तार्म १ शुक्लार्म २ रक्तार्म ३ अधिमांसार्म ४ स्नाय्वर्म ५ शुक्ति ६ अर्जुन ७ पिष्टक ८ शिराजाल ९ शिरापिड़िका १० बलासग्रथित ११ ये कफ करके गुथे नेत्र के शुक्ल भाग में होते हैं।

प्रस्तार्म नेत्ररोग का लक्षण

नेत्र के सफेद भाग में गर्मी को लिये बड़ा और काला लाल चिह्न हो उसको प्रस्तार्म नेत्ररोग कहिए।

शुक्लार्म नेत्ररोग का लक्षण

नेत्र का सफेद और कोमल मांस बढ़े उसे शुक्लार्म कहते हैं।

रक्तार्म नेत्ररोग का लक्षण

नेत्र के सफेद भाग में पद्म के सदृश कोमल जो मांस बढ़े उसे रक्तार्मरोग कहिए।

अधिमासार्म नेत्ररोग का लक्षण

नेत्र के सफेद भाग में बड़ा और कोमल पुष्ट कालजा समान चिह्न हो उसे अधिमांसार्मरोग कहिए।

स्नाय्वर्म नेत्ररोग का लक्षण

नेत्र के सफेद भाग में कठिन तथा फैलनेवाला, स्राव रहित मांस बढ़े उसे स्नाय्वर्मनाम नेत्ररोग कहिए।

शुक्ति नेत्ररोग का लक्षण

नेत्र के शुक्लभाग में काली और मांस के सदृश बूँदें हों उसे शुक्तिनाम रोग कहिए।

अर्जुन नेत्ररोग का लक्षण

नेत्र के शुक्लभाग में शशा के रुधिर सदृश १ बूँद हो उसे अर्जुन नाम नेत्ररोग कहिए।

पिष्टक नेत्ररोग का लक्षण

नेत्र के शुक्लभाग में वायु, कफ के कोप से पिसे आटे के सदृश मांस ऊँचा हो उसे पिष्टक नाम रोग कहिए।

शिराजाल नेत्ररोग का लक्षण

नेत्र के सफेद भाग में नसों के समूह कठिन और पीले हो आवें उसे शिराजाल नेत्ररोग कहिए।

शिरापिड़िका नेत्ररोग का लक्षण

नेत्र के सफेद भाग में नसों से ढकी सफेद फुंसियाँ हों उसे शिरापिड़िका नाम नेत्ररोग कहिए।

बलासग्रथित नेत्ररोग का लक्षण

नेत्र के सफेद भाग में कांसी के सदृश सफेद अथवा कमलवर्ण और कठोर सा चिह्न हो उसे बलासग्रथित नेत्ररोग कहिए।

नेत्र के मर्मस्थान में रहनेवाले २१ रोगों के नाम

उत्सङ्गपिड़िका १ कुम्भिका २ पोथकी ३ वर्त्मशर्करा ४ अर्शोवर्त्मा ५ शुष्कार्श ६ अञ्जननामिका ७ बहुलवर्त्मा ८ वर्त्मबन्ध ९ क्लिष्टवर्त्मा १० वर्त्मकर्दम ११ श्याववर्त्मा १२ प्रक्लिन्नवर्त्मा १३ अक्लिन्नवत्वर्मा १४ वातहतत्र्मा १५ वर्त्मार्बुद १६ असस्तनिमेष १७ शोणितार्श १८ लगण १९ विषवर्त्मा २० और कुंचन २१।

उत्सङ्गपिड़िका नाम नेत्ररोग का लक्षण

नेत्र के ढकनेवाली बाफणी (बाझनी नाम) कोया में फुंसी हो और उस फुंसी में मुँह हो, फुंसी लाल और बहुत ऊँची हो तथा रुधिर से उपजी और बड़ी हो, उसमें खुजली चले ये लक्षण हों उसे उत्सङ्ग-पिड़िका नाम नेत्ररोग कहिए।

कुम्भिका नाम नेत्ररोग का लक्षण

जिसके नेत्रमार्ग के अन्त में कुम्भिका के बीज सदृश फुंसी हो और वह फुंसी फूटकर स्रवा करे तथा सूजन को लिये हो उसे कुम्भिका नाम नेत्ररोग कहिए।

पोथकी नाम नेत्ररोग का लक्षण

जिसके कोये में लाल सरसों के समान फुंसी हों और वे झरें, बहुत खाज चले तथा पीड़ा हो उसे पोथकी नाम नेत्ररोग कहिए।

वर्त्मशर्करापिड़िका नाम नेत्ररोग का लक्षण

जिसके कोये में तिबरसी यानी खीरा ककड़ी के बीज सदृश फुंसी हों और उनमें पीड़ा कम हो उसे वर्त्मशर्करापिड़िका नाम नेत्ररोग कहिए।

अर्शोवर्त्मा नाम नेत्ररोग का लक्षण

जो फुंसी चिकनी और कठोर हो उसे अर्शोवर्त्मा कहिए।

शुष्कार्श नाम नेत्ररोग का लक्षण

जिसके नेत्र के कोये में बड़े-बड़े अंकुर दर्दरे और भयंकर हों उसे शुष्कार्श नाम नेत्ररोग कहिए।

अञ्जननामिका नाम नेत्ररोग का लक्षण

जिसके नेत्र के कोये में दाह लिये फुंसियाँ हों और लाल हों, कोमल और छोटी हों, पीड़ा मन्द हो उसे अञ्जननामिका नाम नेत्ररोग कहिये।

बहुलवर्त्मा नाम नेत्ररोग का लक्षण

जिसके कोये में चारों ओर एक वर्ण की बहुतसी फुंसियाँ हों उसे बहुलवर्त्मा नाम नेत्ररोग कहिये।

वर्त्मबन्ध नाम नेत्ररोग का लक्षण

जिसके नेत्र के कोये में सूजन हो, उसमें थोड़ी खुजली चले,

थोड़ी पीड़ा हो और सूजन से नेत्र रुक जायँ उसे वर्त्मबन्ध नाम नेत्ररोग कहिए।

क्लिष्टवर्त्मा नाम नेत्ररोग का लक्षण

जिसके नेत्र के कोये का मार्ग अकस्मात् लाल हो और मन्द पीड़ा हो उसे क्लिष्टवर्त्मा नाम नेत्ररोग कहिए।

वर्त्मकर्दम नाम नेत्ररोग का लक्षण

जिसके नेत्र में कुपथ्य से पित्तसंयुक्त रुधिर दग्ध हो और आँख से कीचड़ बहुत बहे उसे वर्त्मकर्दमरोग कहिए।

श्याववर्त्मा नाम नेत्ररोग का लक्षण

जिसके नेत्र के कोये के मार्ग में और बाहर काली सूजन हो, उस सूजन में पीड़ा हो, खुजली चले और कीचड़ भी आवे उसे श्याववर्त्मा नाम नेत्ररोग कहिए।

प्रक्लिन्नवर्त्मा नाम नेत्ररोग का लक्षण

जिसके नेत्र के कोये के बाहर सूजन हो, उसमें पीड़ा न हो और कीचड़ बहुत आवे उसे प्रक्लिन्नवर्त्मा नेत्ररोग कहिए।

अक्लिन्नवर्त्मा नाम नेत्ररोग का लक्षण

जिसकी आँख धोने से भी न खुले और मिची ही रहे उसे अक्लिन्नवर्त्मा नेत्ररोग कहिए।

वातहतवर्त्मा नाम नेत्ररोग का लक्षण

जिसकी पलकें अच्छी तरह न मिचें और खुली ही रहें तथा पीड़ा रहे अथवा नहीं रहे और आँखें मिची रहें उसे वातहतवर्त्मा नाम नेत्ररोग कहिए।

वर्त्मार्बुद नाम नेत्ररोग का लक्षण

जिसके नेत्र भीतर को बैठ जायँ और वायु से बाफणी जला करें उसे वर्त्मार्बुद और असस्तनिमेष नाम नेत्ररोग कहिए।

शोणितार्श नाम नेत्ररोग का लक्षण

जिसके कोये की बाफणी के मार्ग में उपजी फुंसी के कोमल अंकुर हों उनके दूर करने के वास्ते बाँधकर सोवे और अंकुर बढ़ा करें उसे शोणितार्श नाम नेत्ररोग कहिए।

लगण नाम नेत्ररोग का लक्षण

जिसके नेत्र के कोये के मार्ग में बेरप्रमाण गाँठ हो और वह पके नहीं, कड़ी हो, उसमें खुजली चले और नेत्रों में कीचड़ आवे उसे लगण नाम नेत्ररोग कहिए।

विषवर्त्मा नाम नेत्ररोग का लक्षण

जिसके नेत्रों के कोये में बहुत छिद्र पड़ जायँ और कोये के ऊपर सूजन चढ़ जाय, नेत्रों में आँसू बहुत आवें उसे विषवर्त्मा नाम नेत्र-रोग कहिए।

कुञ्चन नाम नेत्ररोग का लक्षण

वायु, पित्त, कफ जिसके कोये के मार्ग को संकुचित कर लें और कोये को नेत्रों से न उठने दें, न कोई वस्तु दीखे उसे कुञ्चन नाम नेत्र-रोग कहिये।

नेत्र की बाफणी के रोग

पक्ष्मकोप १ पक्ष्मशान्ति २ ये दो बाफणी के रोग हैं।

पक्ष्मकोपरोग का लक्षण

जिसके कोये की बाफणी जाती रहे, कोये में घुस जाय, बाफणी में खुजली बहुत हो यह बहुत भयङ्कर रोग वायु के कोप से होता है, इसमें सूजन होती है, यह असाध्य है।

पक्ष्मशान्ति बाफणी के रोग का लक्षण

नेत्रों के कोये की बाफणी जाती रहे, उसमें खुजली चले और जलती रहे यह पित्त के कोप में होता है।

नेत्र की सन्धि के नव रोगों के नाम

पूयालस १ उपनाह २ पैत्तिकस्राव ३ कफस्राव ४ सन्निपातस्राव ५ रक्तस्राव ६ पर्वणीस्राव ७ अलज ८ जन्तुग्रन्थि ९।

पूयालस नाम नेत्रसन्धिरोग का लक्षण

नेत्र के मध्य पुतली के पास कोये के अन्त की सन्धि पीड़ा करे और पककर सूज जाय और उसमें कीचड़ राद के सदृश गाढ़ा बहुत आवे उसे पूयालस नाम नेत्र की सन्धि का रोग कहिए।

उपनाह नाम नेत्र की सन्धि के रोग का लक्षण

नेत्र की सन्धि में बड़ी गाँठ होकर पके नहीं, उसमें खाज आवे, पीड़ा न हो उसे उपनाह नाम नेत्र की सन्धि का रोग कहिए।

पैत्तिकस्राव नाम नेत्र की सन्धि के रोग का लक्षण

जिसकी आँखों में पीड़ा बहुत हो, रोमाञ्च हो आवे, आँखों में खुजली हो, नेत्र कड़ुए हों, शिर बले और नेत्र की सन्धि में हल्दी के समान बहुत पीले आँसू आवें उसे पैत्तिकस्राव नाम नेत्र की सन्धि का रोग कहिए।

कफस्राव नाम नेत्र की सन्धि के रोग का लक्षण

जिसके नेत्र की सन्धि में सफेद, भदरंगे और चिकने आँसू आँवें उसे कफस्राव नाम नेत्र की सन्धि का रोग कहिए।

सन्निपातस्राव नाम नेत्र की सन्धि के रोग का लक्षण

नेत्र की सन्धि में नासूर पड़ जाय और उसमें दुर्गन्धित राद निकला करे उसे सन्निपातस्राव नाम नेत्रसन्धि का रोग कहिए।

रक्तस्राव नाम नेत्र की सन्धि के रोग का लक्षण

जिसके नेत्र की सन्धि में बहुत गर्म रुधिर निकले उसे रक्तस्राव नाम नेत्र की सन्धि का रोग कहिए।

पर्वणीस्राव और अलज नाम नेत्रसन्धि के रोग का लक्षण

जिसके नेत्र की सन्धि ताँबे के वर्णसमान लाल हो, महीन हो, दाह और शूल को लिये हो, गोल शोथ हो उसे पर्वणीस्राव नाम नेत्र की सन्धि का तथा अलज नाम नेत्र की सन्धि का रोग कहिए।

जन्तुग्रन्थि नाम नेत्र की सन्धि के रोग लक्षण

जिसके नेत्र की सन्धि की गाँठ में कृमि पड़ जायँ और उससे बाफणी जाती रहे, खुजली चले और नेत्रों की सन्धि में अनेक महीन मार्ग हो जायँ, नेत्रों में बहुत पीड़ा हो उसे जन्तुग्रन्थि नाम नेत्र की सन्धि का रोग कहिए।

नेत्र के समस्त रोगों की संख्या और उनके नाम

वायु का अभिष्यन्द १, पित्त का अभिष्यन्द २, कफ का अभिष्यन्द ३, रक्त का अभिष्यन्द ४, वायु का अधिमन्थ ५, पित्त का

अधिमन्थ ६, कफ का अधिमन्थ ७, रक्त का अधिमन्थ ८, सशोथपाक ९, अशोथपाक १०, हताधिमन्थ ११, वातपर्याय १२, शुष्काक्षिपाक १३, अन्यतोवात १४, अमलाध्युषित १५, शिरोत्पात १६, शिरोहर्ष १७, नेत्रों की श्यामलता १८, नेत्रों की निरामता १९।

नेत्र की वायु का अभिष्यन्द (नेत्रपीड़ा) का लक्षण

आँखों में पीड़ा बहुत हो, रोमाञ्च हो आवे, आँखों में खुजली चले, नेत्र कड़े हों, मस्तक जले और अश्रु शीतल पड़ें तो इसे वाताभिष्यन्द नेत्र का रोग कहिए।

पित्त का अभिष्यन्द (गर्मी की नेत्रपीड़ा) का लक्षण

नेत्रों में दाह बहुत हो, आँखें पकि जायँ, नेत्रों को शीतलता सुहावे, धुआँ-सा निकले, गर्म आँसू पड़ें और पीले नेत्र हों तो पित्त का अभिष्यन्द नेत्ररोग जानिए।

कफ के अभिष्यन्द का लक्षण

आँखों में गर्मी सुहावे, नेत्र भारी हों, उन पर सूजन हो और आँखों में खुजाल और कीचड़ बहुत आवे, नेत्र बहुत शीतल रहें, बहुत झड़ें इसे कफ का अभिष्यन्दरोग कहिए।

रक्ताभिष्यन्द (रुधिर की पीड़ा) का लक्षण

नेत्रों के कोये लाल हों, ताँबे के समान गर्म आँसू पड़ें, नेत्रों में दाह हो, शीतलता सुहावे तो उसे रुधिर का अभिष्यन्द नेत्ररोग कहिए।

वायु का अधिमन्थ (बड़ी नेत्रपीड़ा) का लक्षण

आँखें दूखते में कुपथ्य करे तब आँखों में शूल बहुत चले और ऐसे रूले चलें मानो फूटी सी जायँ, आधा शिर नीचे हो जाय, मस्तक जल उठे, आँसू शीतल आवें तब जानिए वायु का अधिमन्थ नेत्र का रोग है।

पित्त के अधिमन्थ का लक्षण

आँखें दूखने आई हों तब गर्म वस्तु, खटाई आदि खाय तो आँखों में बहुत रूले चलें मानो आँखें शूल से फूटी सी जायँ, आँखों में दाह हो, पकि जायँ, शीतलता सुहावे, आँसू बहे, पीले नेत्र हों तब जानिये पित्त का अधिमन्थ नेत्ररोग है।

कफ के अधिमन्थ का लक्षण

जिसकी आँखों में रूले बहुत चलें, मानो आँखें फूटी जाती हैं और उसमें गर्म सुहावे, आँखों में सूजन हो, खाज आवे इसे कफ का अधिमन्थ नेत्ररोग कहिए।

रक्त के अधिमन्थ का लक्षण

जिसकी आँखें दुखती हों और रुधिर बिगड़े ऐसा कुपथ्य करे उसको आँखों में रूले बहुत चलें मानो आँखें बैठी सी जायँ और ताँबे के वर्णसदृश गर्म आँसू पड़ें, लाल आँखें हों, दाह हो, पकि जायँ तब जानिए रक्त का अधिमन्थ नेत्र रोग है। कफ का अधिमन्थ ७ दिन में और वायु का अधिमन्थ ६ दिन में तथा पित्त का अधिमन्थ तत्काल नेत्रों को फोड़ता है।

सशोथपाक नेत्ररोग का लक्षण

नेत्रों में आँसू आवें, खाज हो, नेत्र पके गूलर के फल समान पकि जायँ, सूजन हो और नेत्र लाल हों उसे सशोथपाक नेत्र का रोग कहिए।

अशोथपाक नेत्ररोग का लक्षण

नेत्रों के ऊपर सूजन न हो और खाज हो, पके गूलर के सदृश पकि जायँ, नेत्र लाल हों उसे अशोथपाक नेत्र का रोग कहिए।

हताधिमन्थ नेत्ररोग का लक्षण

नेत्रों से न दीखे, पीड़ा बहुत हो जैसे कमल सूखि जाय ऐसे नेत्र हो जायँ उसे हताधिमन्थ नेत्र रोग कहिए।

वातपर्याय नेत्ररोग का लक्षण

जिसकी भौंह और नेत्रों में बारम्बार बहुत पीड़ा चले उसके वात-पर्याय नेत्ररोग कहिए।

शुष्काक्षिपाकरोग का लक्षण

जिसके नेत्र मूँदि जायँ और जलें, लाल हों, अच्छी तरह न सूझे और रूखे हो जायँ उसके शुष्काक्षिपाक नेत्ररोग कहिए।

अन्यतोवात नेत्ररोग का लक्षण

जिसके कन्धे, शिर, डाढ़ी, कान, भौंह, आँखें इनमें वायु की बहुत पीड़ा चले उसके अन्यतोवात नेत्ररोग कहिए।

अम्लाध्युषित नेत्ररोग का लक्षण

जिसके नेत्र काले और लाल हों, पकि जायँ, सूजन हो, पानी आवे, उसे अम्लाध्युषित नेत्ररोग कहिए।

शिरोत्पात (सबलवायु नेत्ररोग) का लक्षण

जिसकी आँखों में पीड़ा हो या न हो परन्तु आँखों की नसें चारों ओर से ताँबे के सदृश लाल हों उसके शिरोत्पात नाम सबलवायु नेत्र का रोग होता है।

शिरोहर्ष नेत्ररोग का लक्षण

जो अज्ञानता से सबलवायु का यत्न न करे उसकी आँखों में आँसू बारबार पड़ा ही करे और उसे नेत्रों से किसी तरह भी न दीखे इसे शिरोहर्ष नेत्ररोग कहिए।

रोगयुक्त नेत्रों का लक्षण

नेत्रों में बहुत पीड़ा हो, ललाई रहे, खुजली हो, शूल चले, तब जानिए नेत्रों में रोग रहता है, गया नहीं है।

नीरोग नेत्रों का लक्षण

नेत्रों में कुछ भी पीड़ा न रहे और खाज, सूजन न हो, आँसू आदि न आवें, नेत्रों का अच्छा वर्ण हो, सब वस्तु यथार्थ दीखें तो उसके नेत्रों का रोग गया जानिए। यह परीक्षा है। जब तक नेत्रों में रोग रहे तब तक इतने काम नहीं करने चाहिए—नेत्ररोगवाला सुरमा, काजल आदि न लगावे, घृत कषैली, खटाई आदि और पान आदि गर्म वस्तु, गरिष्ठ भोजन न खाय और न स्नान करे।

समस्त नेत्ररोगों का यत्न

नेत्र के रोगवाले को लङ्घन, लेप और स्वेद कर्म करावे और शिर के नस की फस्त छुड़ावें, जुलाब और आश्च्योतन-कर्म आदि यत्न करे तो नेत्रों के सब विकार जायँ।

आँखें दूखने आई हों उसका यत्न

जिसकी आँखें दुखती हों उसके ३ दिन तक अञ्जनादिक न करे क्योंकि ३ दिन तक नेत्र कच्चे रहते हैं, चौथे दिन से नेत्रों में अंजनादि औषध करे तो नेत्र तत्काल अच्छे हों। हेमन्त और शिशिरऋतु में

मध्याह्न में अञ्जन करना, ग्रीष्म और शरदृऋतु में मध्याह्न के पहिले तथा वर्षाऋतु में बादल न हों तब अञ्जन करना और वसन्तऋतु में सदा ही सुरमा आदि का अञ्जन करे तो नेत्ररोग कभी भी न हों। प्रथम बाईं आँख आँजकर पीछे दाहिनी आँजना संप्रदाय है।

आंखें दूखने आई हों उसका लेप

हड़ की छाल, सेंधानोन, गेरू, रसौंत ये सब बराबर ले जल में महीन पीस नेत्रों के ऊपर लेप करे तो सर्वनेत्रों के रोग जायँ।

नेत्रों के अच्छे होने का दूसरा लेप

लोहे के पात्र में नींबू का रस डाले उसको कुछ गाढ़ा करे पीछे नेत्रों के ऊपर लगावे तो दूखते नेत्र अच्छे हों।

नेत्रों की पीड़ा को तत्काल दूर करनेवाला लेप

अफीम १ माशे, फुलाई फिटकरी १ माशे, पठानीलोध १ माशे इन्हें नींब के रस में पीस लोहे की कड़ाही में कुछेक गर्म करे पीछे नेत्रों के ऊपर लेप करे तो नेत्र दुखना तत्काल अच्छा हो।

नेत्रों के अच्छे होने का और लेप

मुलहठी, गेरू, सेंधा नोन, दारुहल्दी, रसौंत ये सब बराबर ले इन्हें जल से महीन पीस नेत्रों के ऊपर लेप करे तो नेत्र दूखने के सर्व-रोग जायँ।

नेत्र दूखने आये हों उनके अच्छे होने की पोटली

पठानीलोध १ माशे, फुलाई फिटकरी १ माशे, रसौंत १ माशे, मुलहठी १ माशे, इन्हें महीन पीस ग्वारपट्ठे के रस में अथवा पोस्त के पानी में अथवा जल में १ माशे भर की पोटली करे पीछे दूखते हुए नेत्रों के ऊपर बारम्बार फेरे तो नेत्र अच्छे हों।

नेत्रों में वायु से शूल चलता हो उसके अच्छे होने का सेंक

पठानीलोध को महीन पीस के कपड़े से छानकर घृत में भूने पीछे उसका गर्म पानी से सेंक करे तो नेत्र अच्छे हों।

शार्ङ्गधर वाग्भट्टादिक के मत से नेत्ररोगों का यत्न

सेंक १, आश्च्योतनकर्म २, पीड़ाबन्धन ३, बिड़ालकर्म (आँखों के ऊपर लेप करना) ४, तर्पण (नेत्रों में घृत रसादिक का डालना)

५, पुटपाक ६, अञ्जन ७, शस्त्रकर्म ८, इस प्रकार नेत्ररोग का यत्न करिए। अरण्ड के पत्ते की जड़, बक्कल इन्हें औटाय इस जल को बकरी के दूध में औटावे जब वह जल जाय और दूध आय रहे तब उस दूध को कुछ गर्म आँखों के ऊपर १०० बार तरेड़ा दे तो वायु से दूखती आँखें अच्छी हों। अथवा दूध में थोड़ा सेंधा नोन डाल गर्मकर सुहाता-सुहाता आँखों के ऊपर तरेड़ा दे तो वायु की आँखें अच्छी हों। अथवा हल्दी, दारुहल्दी, सेंधा नोन इन्हें दूध में पकाय इस दूध का आँखों के ऊपर तरेड़ा दे तो आँखें अच्छी हों।

गर्मी से आँखें दूखने आई हों उसका सेंक

पठानीलोध, मुलहठी इन्हें महीन पीस घृत में सेंके, पीछे बकरी के दूध में इन्हें पकावे फिर इस दूध का आँखों के ऊपर तरेड़ा दे तो गर्मी से दूखती आँखें अच्छी हों। और रुधिर के दुष्टपने से आँखें दूखें उसका भी यही यत्न है। अथवा त्रिफला, लोध, मुलहठी, मिश्री, नागरमोथा इन्हें शीतल जल से महीन पीस नेत्रों के ऊपर तरेड़ा दे तो रुधिर से दूखती आँखें अच्छी हों अथवा इमली के पत्तों को कूटकर अफ़ीम, नवकुट हुई लवङ्ग और आग पर फुलाई हुई फिटकरी इन दवाओं की पोटली बनाकर जलाप्लुत आँख में फेरे।

आश्च्योतन की विधि

आश्च्योतन कर्म रात्रि में होता है। आँखें उघारी राखे उनमें ओषधियों के रस को आठ बूँद डालिए। शीतकाल में गर्म और उष्णकाल में शीतल डालिए। वायु की आँखें दूखें तो गर्म औषध और कफ की आँखें दूखें तो तीक्ष्ण तथा गर्म औषध का रस डालिए।

वायु से आँख दूखें उसका लेप

नींब के पत्तों का रस पानी डाल निकाले, उसमें पठानीलोध को पीस गर्म करे पीछे उसका आँखों के ऊपर लेप करे तो वायु के रक्त, पित्त से दूखती आँखें अच्छी हों।

रक्त, पित्त और वायु से आँखें दूखें उसका यत्न

स्त्री के दूध की आठ बूँद डाले तो गर्मी से दूखती आँखें अच्छी हों। अथवा वायु से आँखों में रूले चलें और यत्न से आराम न हो तो

उसके ललाट की नस का कुछ रुधिर कढ़ावे अथवा भौंह के ऊपर दाह दे तो नेत्रों के रूले अच्छे हों। अथवा सहँजने के पत्तों की पींड़ी अथवा नींब के पत्तों की पींड़ी नेत्रों के ऊपर बाँधे तो कफ के नेत्र के रूले जायँ।

गर्मी से नेत्र में रूले चलें उसका यत्न

आँवले को पानी से पीस उसकी पींड़ी बाँधे अथवा बकायन के पत्तों की पींड़ी बाँधे तो गर्मी से उत्पन्न नेत्रों के रूले जायँ। अथवा त्रिफला, लोध इन्हें काँजी के पानी में पीस पीछे घृत में तले फिर इसकी पींड़ी बाँधे तो गर्मी से और कफ से हुए नेत्रों के रूले जायँ।

नेत्रों में रूला, सूजन और खाज हो उसका यत्न

सोंठि नींब के पत्ते इनमें थोड़ा सेंधा नोन मिलाकर महीन पीस इनकी पींड़ी नेत्रों के ऊपर बाँधे तो नेत्रों की सूजन, खाज और रूला ये सब जायँ।

नेत्रों की गुहानी का यत्न

नेत्रों की गुहानी को घृत से सेंके फिर उस गुहानी को शस्त्र से फोड़ उसके ऊपर हरताल, तगर, सेंधानोन ये सब बराबर ले इन्हें शहद से महीन पीस लेप करे तो गुहानी जाय।

नेत्ररोग के लिये तर्पण की विधि

जहाँ निर्वातस्थान हो वहाँ सूधा सुलाय उसके नेत्रों के ऊपर चौगिर्द उड़द का चून महीन पीस पानी में उसन उसकी २ अंगुल की बाटी कीजे फिर उसमें कुछ गर्म घृत सुहावा अथवा १०० बार धोया अथवा दूध की ही १०० बार गिनती का बोले इतनी बार राखे तो नेत्रों के रोग, बाँकापन, बाफणी जाती रही हों, आँखें अच्छी तरह न उघड़ें, तिमिर, फूला, मस्तकपीड़ा, वायु रूले ये सब रोग तर्पण से दूर होते हैं। यह तर्पण बादलों में, उष्णकाल में, चिन्ता में, भ्रम में न करना।

नेत्रों का अञ्जन

शंख की नाभि, बहेड़े की मींगी, हड़ की मींगी, मैनसिल, पीपल, कूट, खुरासानी बच ये सब बराबर ले इन्हें बकरी के दूध में महीन पीस अञ्जन करे तो फूला, तिमिर, मांसवृद्धि, काँच, पटल, रतौंधी,

अर्बुद आदि नेत्रों के रोगों को यह अञ्जन दूर करता है। यह चन्द्रोदयगुटिका है।

लेखनी गुटिका

कणगज के बीजों को महीन पीस उसमें टेसू (ढाँक के फूल) के रस की बहुत सी पुट दे पीछे उसकी गोली कर पानी से घिस अञ्जन करे तो फूला आदि नेत्र के सब रोग जायँ।

दन्तवर्ति

शूकर का दाँत, गौ का दाँत, बकरी का दाँत, घोड़े का दाँत, गधे का दाँत, शंख की नाभि, अनबेधा मोती, समुद्र का फेन ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस इसका अञ्जन करे तो सब प्रकार के फूले जायँ। अथवा कमलगट्टे, सहँजने के बीज, नागकेसर इन्हें महीन पीस अञ्जन करे तो नींद बहुत आती हो उसे नींद न आवे। यह नींदनाशक अञ्जन है।

रोपणी गुटिका

तिलों के फूल ८०, पीपल के बीज ६०, चमेली के फूल ५०, मिरच १६, इन्हें महीन पीस गोलीकर पानी में घिस अञ्जन करे तो तिमिर, अर्जुनरोग, फूला, मांसवृद्धि आदि नेत्रों के सब रोग जायँ।

स्नेह की गुटिका

रसौंत, दोनों हल्दी, चमेली के फूल अथवा नींब के पत्ते इन्हें महीन पीस गोबर के रस से अञ्जन करे तो रतौंधी जाय। अथवा आँवले के बीज, बहेड़े के बीज, हड़ के बीज इन्हें महीन पीस अञ्जन करे तो नेत्रों के पानी को और वातरक्त के रोगों को यह अञ्जन दूर करता है। अथवा नीलाथोथा, सोनामक्खी, सेंधा नोन, मिश्री, शंख की नाभि, मैनसिल, गेरू, समुद्रफेन, काली मिरच ये सब बराबर ले इन्हें शहद में महीन पीस अञ्जन करे तो तिमिर, नेत्रफूला, काँच इनको यह अञ्जन दूर करता है।

फूले के दूर होने का अञ्जन

चीनिया कपूर का बड़ के दूध में २ माशे तक अञ्जन करे तो फूला जाय।

नींदनाशक अञ्जन

कालीमिरच को महीन पीस घोड़े की लार से अथवा शहद से अञ्जन करे तो बहुत नींद जाती रहे।

तन्द्रा दूर होने का अञ्जन

मूँगा, कालीमिरच, कुटकी, खुरासानी बच, सेंधा नोन ये सब बराबर ले बछड़े के मूत्र में घिस अञ्जन करे तो तन्द्रा जाय।

रसाअञ्जन गुटिका

रसौंत, राल, चमेली के फूल, मैनसिल, समुद्रफेन, सेंधानोन, गेरू, कालीमिरच ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस शहद में अञ्जन करे तो नेत्रों की खाज, बाफणी जाती रही हो उसको यह अच्छा करे।

मोतियाबिन्दु के दूर होने का अञ्जन

गिलोय का रस १० माशे, शहद १ माशा, सेंधा नोन १ माशा इन सबको इकट्ठाकर महीन पीस अञ्जन करे तो मोतियाबिंदु और तिमिर, धुन्ध आदि सब रोग जायँ। अथवा साठी की जड़ को स्त्री के दूध से घिस अञ्जन करे तो नेत्रों की खाज तथा शहद से घिस अञ्जन करे तो नेत्रों से पानी पड़ना बन्द हो और घृत से रगड़ अञ्जन करे तो फूला तथा तेल से घिस अञ्जन करे तो तिमिर एवं काँजी से घिस अञ्जन करे तो तिमिर जाय।

नेत्रों में पानी पड़े उसके दूर होने का अञ्जन

बबूल के पत्तों का काढ़ा कर रस निकाले पीछे रस को गाढ़ा कर उसमें शहद मिलाय अञ्जन करे तो नेत्र से पानी पड़ना बन्द हो। निर्मली के फल को पानी में घिस अञ्जन करे तो नेत्र का पानी बन्द हो।

नेत्र के निर्मल करने का अञ्जन

निर्मली के फल को शहद में घिसे उसमें थोड़ा कपूर मिलाय अञ्जन करे तो नेत्र निर्मल हों।

मोतियाबिन्दु या काँच आदि से न सूझता हो उसके अच्छे होने का अञ्जन

काले साँप के मांस का घृत, शंख की नाभि और निर्मली इन्हें

महीन पीस नेत्रों में अञ्जन करे तो मोतियाबिन्दु आदि रोग दूर होकर दीखने लगे। अथवा मुर्गे के अण्डे का छिलका, मैनसिल, काँच, शंख की नाभि, चन्दन, सेंधानोन ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस अञ्जन करे तो मोतियाबिंदु, फूली आदि के रोग जायँ।

नेत्र के सब रोग दूर होने का अञ्जन

कालीमिरच २ माशे, पीपल २ माशे, समुद्रफेन २ माशे, सेंधानोन २ माशे, सुरमा ३६ माशे इन्हें महीन पीस चित्रा नक्षत्र के दिन इसका अञ्जन करे तो फूली, खाज, काँच आदि सब नेत्र के रोग जायँ। अथवा खपरिया को महीन पीस जल में मिला दे पीछे उसका पानी निथार ले और नीचे रहे खपरिया के चूर्ण को फेंक देवे फिर उस पानी को पात्र में रख सुखाय दे पीछे उसकी पापड़ी का चूर्ण कर त्रिफले के रस की ३ पुट दे तदनन्तर इस पापड़ी का दशवाँ भाग कपूर मिलाय महीन पीस अञ्जन करे तो नेत्रों के सब रोग जायँ।

नेत्रों के सब रोग दूर करने का यत्न

सुरमे को अग्नि से गर्म कर त्रिफले के रस में ७ बार डुबोवे पीछे स्त्री के दूध में इसी तरह ७ बार डुबोवे पीछे गोमूत्र में इसी प्रकार बार-बार गर्म कर सुरमे को डुबोवे फिर स्त्री के दूध में ५ बार डुबोवे पीछे इसको महीन पीस अञ्जन करे तो नेत्र के सब रोग जायँ।

नेत्र की दृष्टि करनेवाली शलाका

शीशे को अग्नि में गलाय-गलाय त्रिफले के रस में १०० बार डुबोवे पीछे इसी तरह जलभाँगरे के रस में ५० बार डुबोवे पीछे इसी तरह सोंठि के रस में ५० बार डुबोवे फिर इसी तरह घृत में ५० बार डुबोवे पीछे गोमूत्र में इसी तरह २५ बार डुबोवे फिर इसी तरह शहद में ३५ बार डुबोवे फिर बकरी के दूध में २५ बार डुबोवे फिर इस शीशे की शलाका करे और शलाका को नेत्र में फेरे तो नेत्र के सब प्रकार के रोग जायँ।

नयनामृत अञ्जन

शोधे शीशे को गलाय उसी के बराबर उसमें पारा मिलाव पीछे

सुरमा और शीशा पारे के बराबर मिलाय इन सबका दसवाँ भाग भीमसेनी कपूर डाले पीछे इन सबको महीन पीस अञ्जन करे तो नेत्र के सब रोग जायँ।

सर्प आदि का विष दूर होने का अञ्जन

जमालगोटे की मींगी में नींबू के रस की २१ पुट दे फिर इसकी गोली कर मनुष्य की लार में घिस नेत्र में अञ्जन करे तो सर्प आदि के विष दूर हों। वह मनुष्य मरा भी जोवे। ये सब अञ्जन शार्ङ्गधर में लिखे हैं।

दूखती आँख अच्छी होने का शाहहुजूरी का बताया नुस्खा

अत्तार की दवा, जंगी इड़ ये दोनों ओषधि पानी में घिस आँखों के ऊपर चौगिर्द लेप करे तो वायु, पित्त, कफ इन तीनों आज़ारों में किसी विकार से आँख दुखने आई हो तो शीघ्र आराम हो यह नुस्खा अजमाया हुआ है।

वाग्भट्ट के मत से मोतियाबिन्दु का यत्न

कच्चे मोतियाबिंदु का जाला न उतार कर शलाके से पक्के का जाला उतारना चाहिए।

पक्के मोतियाबिन्दु का लक्षण

नेत्र के तिल के ऊपर दही या मट्ठे के समान बूँद आ जाय और उसको कुछ भी न दीखे, नेत्र में पीड़ादिक कुछ भी न हो तब उस नेत्र का शलाकादि से जाला उतारे। इतने मनुष्यों का जाला न उतारिए– पीनस रोगवाले का, कान और नेत्र में जिसके शूल चले और श्रावण, कार्तिक और चैत्र के महीने में जाला न उतारिए। साधारण काल हो तब जुलाब दे शरीर को शुद्ध कर भोजन करा अच्छे निर्मल स्थान में बैठावे जहाँ पवनादिक न हों। मध्याह्न के पहले नेत्र के रोग को दूर करनेवाले प्रवीण वैद्य के निकट नेत्र का जाला शलाका से लिवावे। वैद्य को चाहिए कि रोगी को पल्थीमार बैठावे और रोगी के पीछे चतुर मनुष्य को बैठावे। वह मनुष्य दोनों हाथों से रोगी को पकड़े हिलने न दे। पीछे उसकी आँख में वैद्य शलाका डाल अत्यन्त चतुरता से उसकी आँख में शलाका फेरे और शलाका से नेत्र के प्रान्तभाग में

जाल को फोड़ सब नेत्र के जाले को दूरकर उस जाले में से नेत्र के तिल के ऊपर की वह विकार की बूंद गिर पड़े तब इस मनुष्य को सब वर्ण यथार्थ दीखें। शलाका के फेरने से पहले नेत्र को मुँह की बाफ से फूँक प्रस्वेदयुक्त कर ले और वैद्य अपने अँगूठे से उस रोगी के नेत्र को मसल कोमल कर ले पीछे शलाका से जाला ले। वैद्य भी अपना हाथ और तरह न हिलने दे । रोगी को अच्छी बातों से प्रसन्न कर फिर उसको सुलाय दे पीछे उस रोगी को आँख के ऊपर घृत का फाहा बाँधे और उस रोगी को सूधा सुलावे ऐसे स्थान में जहाँ पवन चकचोंध आदि न आवे और रोगी का शिर, शरीर हिलने न दे। रोगी को छींक, खाँसी, डकार, थूकना, बहुत पानी पीना, दातून, स्नान, खद आदि न करने दे। और उसको अधोमुख न सोने दे, अत्यन्त हलका भोजन करावे, घृतादिक गरिष्ठ वस्तु न खाने दे इस विधि से ७ दिन करे पीछे कुछ एक घृत डाल पतला, हलका अन्न का हरीरा खवावे पीछे वायु को दूर करनेवाली मिश्री आदि को ले खवावे इसी तरह १ मण्डल तक रक्खे कुछ कुपथ्य करने न दे और पवन, तेज और महीन वस्तु आदि को न देखे और नेत्र में शीतलता हो ऐसी दूब आदि वस्तु देखने दे तो मोतियाबिन्दु आदि नेत्र के सब रोग जायँ। पीछे इसके शीतल चश्मा लगावे तो यह रोग कभी इसके न हो। यह मोतियाबिन्दु का यत्न वाग्भट्ट में लिखा है।

पाण्डुरोग को दूर करनेवाला अञ्जन

हींग को दड़घल के रस में घिस नेत्र में अञ्जन करे तो पाण्डुरोग (पीलिया) जाय।

नारायणाञ्जन

तुलसी और तुलसी के पत्तों का रस बराबर ले दोनों को काँसे के पात्र में डाल दोनों के बराबर स्त्री का दूध डाले पीछे इन तीनों को गजबेलि के घोटे से २ पहर रगड़े फिर काँसे ही के पात्र में ताँबे के घोटे से २ पहर रगड़े पीछे इसका अञ्जन करे तो नेत्र का शूल और नेत्र का पाक तत्काल जाय।

नयनामृत गुटिका

सोंठि, हड़ की छाल, कुलत्थ, खापरा, फिटकरी, माजूफल ये सब

बराबर ले और भीमसेनी कपूर, कस्तूरी, अनबेधे मोती ये एक औषध के तोल से आधी आधी ले पीछे इन सबको खरल में महीन पीस नींब के रस में ५ दिन खरल करे पीछे इसकी गोली कर उस गोली को जल में घिस अञ्जन करे तो तिमिर और स्त्री के दूध से फूला, पटल और शहद से नेत्र से जल गिरना तथा गोमूत्र से रतौंधी और केले के रस से अञ्जन करे तो नेत्र की मांस वृद्धि जाय। यह नयनामृतवटी है।

नेत्रों की बाफणी जाती रही हो उसके आने का अञ्जन

आँधीझाड़ा (अपामार्ग) के पत्तों को गोमूत्र में पीसे पीछे उससे आधा खापरा ले इन दोनों को खरल में पीसे फिर इन दोनों के बीच जस्त का महीन पत्र धरे और कपड़मिट्टीकर सुखाय अरने उपले में गजपुट से फूँक दे फिर स्वाङ्ग शीतल होने पर निकाल महीन पीस अञ्जन करे तो नेत्र की बाफणी आवे।

शीतला के फूले दूर होनें का अञ्जन

गधे की दाढ़ को महीन पीस अञ्जन करे तो शीतला के फूले जायँ।

सबलवायु के दूर होने का अञ्जन

आँवलासारगन्धक से मारे ताँबे को महीन पीस अञ्जन करे तो सबलवायु, पटल आदि नेत्र के सब रोग जायँ। ये सब यत्न वैद्य-रहस्य में हैं।

फूला और धुन्ध के दूर होने का यत्न

चोखा नीलाथोथा २० माशा, फुलाई फिटकरी २० माशा, भिगोये पीपल के बीज २० माशा, मिश्री ५ माशे इन्हें महीन पीस कजली कर नेत्रमें अञ्जन करे तो फूला, ढलका, धुन्ध ये सब जायँ।

चन्द्रोदय गुटिका

शंख की नाभि, बहेड़े की मींगी, हड़ की छाल, मैनसिल, पीपल, मिरच, कूट, खुरासानी बच ये सब औषधें बराबर ले बकरी के दूध में महीन पीस गोली करे फिर गोली को घिस अञ्जन करे तो तिमिर, नेत्र के मांस की वृद्धि, पटल, काँच, रतौंधी, फूला ये सब दूर हों।

चन्द्रप्रभा गुटिका

हल्दी, नींब के पत्ते, पीपल, मिरच, बायबिड़ंग, नागरमोथा, हड़ की

छाल ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस बकरी के मूत्र में ३ दिन खरल करे, फिर इसकी गोली कर छाया में सुखाय फिर इस गोली को गोमूत्र से घिस अञ्जन करे तो तिमिर, जल से काँच, शहद से पटल और स्त्री के दूध से घिस अञ्जन करे तो फूले को दूर करे। यह चन्द्रप्रभावर्ति है।

द्वादशामृत हरीतकी

हड़ की छाल १ भाग, बहेड़े की छाल २ भाग, आँवला ४ भाग, शतावरि २ टकेभर, मुलहठी ८ माशा, तज ८ माशा, सेंधानोन २० माशा, पीपल २० माशा इन सबकी बराबर मिश्री ले इन्हें महीन पीस ८ माशा शहद और घृत के साथ ४९ दिन नित्य खाय तो तिमिर, पटल, काँच, रतौंधो, फूला, नेत्र से जल आवे, सबलवायु आदि सब नेत्र के रोगों को यह द्वादशामृत हरीतकी दूर करती है।

महात्रिफलादि घृत

त्रिफला का रस १ सेर, जलभाँगरे का रस १ सेर, अड़ूसे का रस १ सेर, शतावरि का रस १ सेर, बकरी का दूध १ सेर, गिलोय का रस १ सेर, आँवले का रस १ सेर, कमलगट्टे, मुलहठी, त्रिफला, पीपल, दाख, मिश्री, कटेली इन सबका रस ऽ।। सेर ले इन सबमें गौ का घृत पक्का २ सेर डाल मधुरी आँच से पकावे ये सब जलि जायँ घृतमात्र आय रहे तब इस घृत को २ टके भर नित्य खाय तो नेत्र का तिमिर, काँच, फूला, सबलवायु आदि सब रोग जायँ।

गर्मी के विकार दूर होने का अञ्जन और लेप की विधि

आँख दूखे या सूजन हो तो आँख में अंजन वा लेप करने से आराम होता है। शोधा सफ़ेदा १० माशे (उसके शोधने की विधि– सफ़ेदा को महीन पीस चीनी के बासन में बहुत पानी से धोवे जब सफ़ेदा नीचे बैठ जाय तब उसका पानी निकाल डाले इस तरह तीन बार कर लेवे), अत्तार की अंजरूत औषध ३ माशे ले (उसके शोधने की विधि–अंजरूत को महीन पीस फिर जिस स्त्री के बेटी होय उसका दूध ले और इसमें इतना मिलावे जो ८ पहर में सूखि जाय इस तरह ५ पुट दे) फिर कतीरा १ माशे, भीमसेनी कपूर ४ रत्ती, अत्तार की

निसोत औषध २ माशे, सफेद गोंद १ माशे तोल मुवाफ़िक सब औषध इकट्ठा कर गुलाब के जल में खरल करे फिर एक जीव कर बेर प्रमाण गोली बाँधे पीछे गुलाब के जल में अथवा सादे जल में घिस अंजन करे अथवा लेप करे तो गर्मी के सब विकार दूर हों।

सुश्रुत के मत से कान के रोगों के नाम

कर्णशूल १ कर्णनाद २ बधिर (बधिरपना) ३ कर्णक्ष्वेड ४ कर्णस्राव ५ कर्णकण्डू ६ कर्णगूथ ७ कर्णप्रतिनाद ८ कृमिकर्ण ९ चोट लगने से कर्ण में व्रण हो १० दोषों से कर्ण में व्रण हो ११ कर्णपाक १२ पूतिकर्ण १३ वायु का कर्णशोथ १४ पित्त का कर्णशोथ १५ कफ का कर्णशोथ १६ रुधिर का कर्णशोथ १७ वायु का कर्णार्श १८ पित्त का कर्णार्श १९ कफ का कर्णार्श २० रुधिर का कर्णार्श २१ वायु का कर्णार्बुद २२ पित्त का कर्णार्बुद २३ कफ का कर्णार्बुद २४ रक्त का कर्णार्बुद २५ मांस का कर्णार्बुद २६ मेद का कर्णार्बुद २७ नसों का कर्णार्बुद २८ चरक में कर्णपाली के बिषे ४ रोग अधिक कहे हैं उत्पात १ उन्मन्थक २ दुःखवर्द्धन ३ परिलेही ४।

कर्णशूल का लक्षण

जिसके कान में वायु धँसि जाय और वह कोप को प्राप्त हो तब कान में बहुत शूल चलावे उसको कर्णशूल कहिए।

कर्णनाद का लक्षण

कान के छिद्र में वायु के घुस जाने से भेरी, मृदङ्ग शंख आदि के से अनेक शब्द हों उसे कर्णनाद कहिए।

बधिर का लक्षण

जिसके कर्ण के छिद्र में वायु कफयुक्त प्रवेशकर उसमें बैठ रहे तो मनुष्य को बधिर कर दे।

बधिर का असाध्य लक्षण

बालक बूढ़ा और बहुत दिन का बधिर अच्छा नहीं होता।

कर्णक्ष्वेडरोग का लक्षण

जिसके कान में वायु, पित्त, कफ प्रवेशकर बाँस के फाड़ने का सा शब्द करें उसे कर्णक्ष्वेडरोग कहिए।

कर्णस्त्राव का लक्षण

जिसके शिर में चोट लगी हो अथवा कान में जल पड़ा हो उसके कान से राद बहा करे उसे कर्णस्रावरोग कहिए।

कर्णकण्डू का लक्षण

जिसके कान में कफ संयुक्त वायु पैठे और कान में खाज करे उसे कर्णकण्डू कहिए।

कर्णगूथ का लक्षण

जिसके कान में पित्त की गर्मी प्रवेशकर कफ को शोष ले उसके कान में मल बहुत स्रवे उसे कर्णगूथ कहिए।

कर्णप्रतिनाद का लक्षण

वह कर्णगूथ पतला पड़ जाय पीछे वह नाक में आय प्राप्त हो उसे कर्णप्रतिनाद कहिए।

कृमिकर्ण का लक्षण

जिसके कान में पतङ्ग, कनखजूरा आदि जानवर धँसि जायँ और कान में फड़फड़ावें तथा उस मनुष्य को बहुत व्याकुल कर दें, पीड़ा करे और पीड़ा आदि सब जाती रहें उसे कृमिकर्णरोग कहिए।

कर्णविद्रधि का लक्षण

यह दो प्रकार की है। एक तो कान में चोट लग जाने से व्रण पड़ जाय और दूसरा किसी दोष से कान में व्रण पड़ जाय पीछे उस कान से रुधिर, राद आदि निकले और कान में दाह आदि सब रहें उसे कर्णविद्रधि कहिए।

कर्णपाक का लक्षण

जिसका कान पित्त करके पक जाय और कान में काढ़े के सदृश राद निकले उसे कर्णपाक कहिए।

पूतिकर्ण का लक्षण

जिसके कान में व्रण पड़े पीछे उसके कान से जल गिरा करे और उसमें राद भी पड़े उसे पूतिकर्ण कहिए।

अथवा वायु, पित्त, कफ, रुधिर से जो हो उनके लक्षण से जानिए और वायु, पित्त, कफ, रुधिर के प्रभाव से मशे के रूप कान में अर्श

पदा होता है उसको वातादिक से जान लीजिए, और कान में वायु, पित्त, कफ, रुधिर, मांस, मेद, नसें ये सातों ही अर्बुद नाम (गाँठ-रूप) रोग को करते हैं। उसका लक्षण अर्बुदरोग में कहा है। कान में सब २८ रोग हैं। चरक के मत से कान के नीचे ४ रोग हैं। वायु का १ पित्त का २ कफ का ३ सन्निपात का ४।

कर्णपाली के ५ रोग और परिपोटक का लक्षण

कोमल कान की लौर को बढ़ाया करे तो कान की लौर सूज जाय और उसमें पीड़ा हो आवे उसे परिपोटक कहिए।

उत्पात का लक्षण

कान की लौर में भारी गहना पहिरे उसके संयोग से अथवा किसी तरह लौर के खींचने से ऊपर सूजन हो आवे, दाह और पीड़ा हो उसे उत्पातरोग कहिए।

उन्मन्थक का लक्षण

जो कान की पालीनाम लौर को हठ से बढ़ाया चाहे तब वहाँ वायु कोप कर कफसंयुक्त सूजन को करे और वहाँ खाज हो उसे उन्मन्थक कहिए।

दुःखवर्द्धन का लक्षण

जिसके कान की लौर दुःख से बींधी गई हो और वहाँ दाह और पीड़ा हो तथा पक जाय उसे दुःखवर्द्धन कहिए।

परिलेही का लक्षण

जिसके कान की लौर के ऊपर कफ, रुधिर के कोप से सरसों सदृश फुंसियाँ हों और उस जगह खाज चले, दाह हो और पक जाय उसे परिलेही कहिए।

कर्णरोग का यत्न

अदरक का रस, शहद, सेंधा नोन, तेल ये सब इकट्ठाकर इन्हें गर्म कर कान में डाले तो कान की पीड़ा, कर्णनाद, बधिरपना और कर्णक्ष्वेड ये सब रोग दूर हों। अथवा लहसुन का रस, अदरक का रस बरना की जड़ का रस, केले का रस इन सबको इकट्ठा गर्मकर कान में डाले तो कान की पीड़ा व रोग जायँ।

कान के शूल दूर करने का यत्न

आक के कोमल पत्तों को खटाई से महीन पीस उनका रस निकाले फिर इसमें तेल और नोन डाले पीछे इसको थूहर की लकड़ी में भरे और उस लकड़ी में कपड़मिट्टीकर उसको पुटपाक करे फिर उसका रस निकाल इस रस को थोड़ा गर्मकर कान में डाले तो कान का शूल जाय। अथवा आक के पत्तों में घृत लगाय अग्नि से तपाय उनका रस निकाल कुछ गर्म कर कान में डाले तो शूल जाय। अथवा बकरे के मूत्र में सेंधा नोन डाल थोड़ा गर्म कर कान में डाले तो कान का शूल जाय अथवा अरलू की जड़ के रस में मधुरी आँच से तेल को पकावे जब वह रस जल जाय और तेलमात्र आय रहे तब इस तेल को कान में डाले तो त्रिदोष का उपजा भी कर्णशूल जाय।

बधिर आदि कान के रोगों के दूर होने का तेल

कड़ुवे तेल में सोंठि, मिरच, पीपल, कूट, पीपलामूल, अपामार्ग का खार, जवाखार, बेल की जड़ का रस, गोमूत्र ये सब मधुरी आँच से पकावे पीछे जब ये सब जल जायँ और तेलमात्र रहे तब इस तेल को कान में डाले तो बधिरपना, कान में शब्द होना, कान बहना इन सब रोगों को यह दूर करे। यह बिल्वतैल है।

अथवा बेल के कच्चे फलों का रस निकाल उसमें सज्जी का चूर्ण डाल पीवे तो कान की पीड़ा, बधिरपना, दाह इन सबको दूर करे।

कान से राद बहती हो उसके अच्छे होने का तेल

आँवले के पत्तों का रस, जामुन के पत्तों का रस, महुआ के पत्तों का रस, बड़ के बक्कल का रस, चमेली के पत्तों का रस इसमें तेल डाल मधुरी आँच से पकावे जब तेलमात्र रह जाय तब इस तेल को कान में डाले तो कान बहना अच्छा हो। अथवा रसौंत को स्त्री के दूध में घिस शहद मिलाय कान में डाले तो कान बहना बन्द हो। अथवा कूट, हींग, बच, दारुहल्दी, सौंफ, सोंठि, सेंधा नोन इन्हें महीन पीस बकरे के मूत्र में मिलाय इसमें तेल डाल मधुरी आँच से पकावे जब ये सब जल जायँ और तेलमात्र आय रहे तब इस तेल को कान में डाले तो राद बहती बन्द हो।

कान में व्रण पड़ गया हो उसके दूर होने का तेल

मोटी सीप के चूर्ण को कड़ुए तेल में पकावे पीछे वह तेल कान में डाले तो कान के व्रण अच्छे हों। अथवा आँवलासार गन्धक १ टके भर, मैनसिल १ टके, हल्दी १ टके, कड़ुआ तेल ८ टके भर, धतूरे के पत्तों का रस ८ टके भर इन सबको ले इन्हें महीन पीस मधुरी आँच से पकावे जब सब जल जायँ तेलमात्र रहे तब इस तेल को कान में डाले तो कान के व्रण अच्छे हों।

कान में कृमि पड़ गये हों उनके दूर करने का यत्न

कृमि के दूर होने का यत्न जो पीछे लिखा है उससे कृमिरोग जाय। अथवा बैंगन की जड़ के रस का धुआँ सरसों के तेल के साथ कान में दे तो कान के कृमि जायँ। और कान की सूजन और कान के अर्बुद-रोग का यत्न पीछे लिखा है उससे ये जायँ। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं।

बधिरपने के दूर करने का तेल

मूली की जड़ का रस, कड़ुआ तेल, शहद ये सब बराबर ले इन्हें कुछ गर्म कर कान में डाले तो बधिरपना जाय। अथवा मिश्री, इलायची इन्हें महीन पीस कान में डाले तो बधिरपना जाय।

कान की पीड़ा के दूर होने का तेल

सोंठि, पीपल, सेंधा नोन, कूट, हींग, बच, लहसुन, तिल का तेल इनको आक के पत्तों के रस में मधुरी आँच से पकावे ये रस आदि सब जल जायँ और तेलमात्र रहे तब इस तेल को कान में डाले तो कान की पीड़ा दूर हो।

कान के सब रोगों के दूर होने का तेल

गाढ़ी और मोटी सीपों का चूर्ण, पद्माख, हींग, तूँबर, सेंधा नोन, कूट, कपास की मींगी इन्हें पीस इनका काढ़ाकर इसमें कड़ुआ तेल ७ टके भर डाले और हुलहुल का रस इन सबको बराबर डाले पीछे इसको मधुरी आँच से पकावे जब रस आदि सब जल जायँ और तेल-मात्र आय रहे तब इस तेल को कान में डाले तो कान के व्रण, राद, बधिरपना, कान में शब्द होना इन सब रोगों को यह दूर करता है।

अथवा कूकर भाँगरे का रस पाव भर, हरफारेवड़ी का रस ४ पैसे भर, लहसुन का रस ४ पैसे भर, सौंफ १० माशा, खुरासानोबच १० माशा, कूट १० माशा, सोंठि १० माशा, मिरच १० माशा, पीपल १० माशा, बकरी का दूध आधसेर, कड़ुआ तेल ५ टके भर इन सबको इकट्ठाकर मधुरी आँच से पकावे जब सब जल जायँ और तेलमात्र आय रहे तब इस तेल को कान में डाले तो बधिरपना, कान की राद और कान के सब रोग जायँ।

कान में राद बहती हो उसके अच्छे होने की औषध

समुद्रफेन, सुपारी की राख, कत्था इन्हें महीन पीस कान में डाले तो कान का बहना बन्द हो। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं।

कान की लौर पक गई हो उसके अच्छे होने का यत्न

शतावरि, असगन्ध, दूध, अरण्ड की जड़, काले तिलों का तेल इन्हें मधुरी आँच से पकावे ये सब जल जायँ और तेलमात्र आय रहे तब इस तेल को कान की लौर में लगावे तो लौर की पीड़ा आदि सब मिटें और कान की लौर बढ़े।

परिपोटक अच्छे होने का तेल

जीवन्तोगण में तेल पचाय मर्दन करे तो परिपोटक अच्छे हों। जोंकों के लगाने से उत्पात रोग जाय। सुरमा, कलिहारी, बावची, कंकपक्षी का मांस इनमें मधुरी आँच से तिलों का तेल पकावे जब रस जल जाय तेलमात्र आय रहे तब इस तेल को कान की लौर में लगावे तो उन्मन्थक जाय। अथवा जामुन के पत्ते, आम के पत्ते, बड़ के पत्ते इनका काढ़ा कर इस काढ़े में तेल पकावे फिर इस तेल का मर्दन करे तो दुःखवर्द्धन रोग जाय। अथवा गोबर के उपले से सेंके अथवा दूध से वा गोमूत्र से कपूर का लेप करे तो कान की लौर अच्छी हो। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं।

नासिका के रोगों की उत्पत्ति, लक्षण, यत्न, संख्या और नाम

नासिका में ३४ रोग हैं। पीनस १ पूतिनास २ नासापाक ३ पूयशोणित ४ बहुत छींक आवें ५ छींक न आवें ६ नाक जला करे ७ प्रतिनाह ८ परिस्राव ९ नासाशोष १० प्रतिश्याय ११ चार प्रकार

का नासार्बुद १५ सात प्रकार का नासार्श २२ चार प्रकार का नाकशोथ २६ चार प्रकार का नासिका में ३० रक्तपित्त चार प्रकार का ३४।

पीनस का लक्षण

जिसकी नाक से कफ करके श्वास अच्छी तरह न आवे, नाक रुक जाय, सूखी रहे उसमें धुआँ निकले और जिसकी नाक में सुगन्ध, दुर्गन्ध की वास न आवे उसके पीनस कहिए।

पूतिनास का लक्षण

जिसके गला, तालु के मूल की वायु पित्त, कफ को दूषित करे और उसके मुँह में नासिका में वह वायु-श्वास के मार्ग से दुर्गन्ध को निकाले उसे पूतिनासरोग कहिए।

नासापाक का लक्षण

जिसकी नाक में पित्त दूषित हो नाक में फुसी करे और उसको पकाय राद निकाले उसे नासापाक कहिए।

पूयरक्त का लक्षण

ललाट में किसी तरह की चोट लगने से कोप को प्राप्त हुए दोष नासिका के द्वारा रादयुक्त रुधिर को निकालें उसे पूयरक्त रोग कहिए।

क्षवथु नाम छींक बहुत आवें उसका लक्षण

नाक की पवन दुष्ट हो नाक के ममस्थानों को दूषित करे और कफ से मिलकर बहुत बार छींकों को प्रकट करे उसे क्षवथु नाम रोग कहिए।

क्षवथु का और लक्षण

जो पुरुष नाक में मिरच आदि औषध डाले अथवा सूर्य की ओर देखे अथवा नाक में सूत, तृण आदि डाले तब उसकी नाक में छींक बहुत आवें इसे भी क्षवथु नाम रोग कहिए।

क्षवथुभ्रंश का लक्षण

जिसकी नाक में पित्त करके कफ दग्ध होजाय और उस पुरुष को छींक न आवें उसे क्षवथुभ्रंश रोग कहिए।

दीप्तरोग का लक्षण

जिसकी नाक में पित्त कुपित होकर नाक में बहुत दाह करे और

नाक में धुआँ सा निकले तथा उस पवन करके नाक बले उसे दीप्त रोग कहिए।

प्रतिनाह का लक्षण

वायु से संयुक्त कफ नाक के स्वर को रोग दे तो उसे प्रतिनाह रोग कहिए।

परिस्राव का लक्षण

जिसकी नाक के स्वर में गाढ़ा, पीला, सफेदाई को लिये मल स्रवे उसे परिस्राव कहिए।

नासासंशोष का लक्षण

जिसकी नाक में वायु, पित्त, कफ ये तीनों दुष्ट हों और वह महाकष्ट से साँस ले उसे नासासंशोष कहिए।

प्रतिश्याय का लक्षण

जिसके पीनस का रोग हो और वह आलस्य कर उसका यत्न न करे तब वह पीनस बढ़कर कोप को प्राप्त हो और स्थानों में जाय प्रकटे तब उसके बहुत नाम नजले आदि पड़ें और वह प्रतिश्याय नाम पीनस के अनेक रोगों को करता है।

पीनस के पूर्वरूप का लक्षण

जिससे छींक आवे, मस्तक भारी रहे, अङ्ग जकड़बन्द हो जाय, रोमांच आदि उपद्रव हों तब जानिए कि इसके पीनस का रोग होगा।

वायु के पीनस का लक्षण

नाक का मार्ग रुक जाय और उससे थोड़ा पतला गर्म पानी गिरा करे तथा गला, तालू, ओष्ठ ये सूखें और उसकी कनपटी दूखें और मुँह से घों-घों शब्द हो उसे वायु की पीनस कहिए।

पित्त की पीनस का लक्षण

नाक में दाह हो, पीलाई लिए गर्म-गर्म पानी गिरे, शरीर कृश हो जाय, गर्म रहे, नाक से अग्निरूप धुआँ निकले तथा वमन भी हो उसको पित्त की पीनस कहिए।

कफ की पीनस का लक्षण

जिसकी नाक से गाढ़ा, सफेद कफ बहुत निकले, शरीर सफेद

हो जाय, आँखों के ऊपर सूजन हो, मस्तक भारी रहे और गला, तालू, ओष्ठ, शिर इनमें खाज बहुत हो तब जानिए इसके कफ की पीनस है।

सन्निपात की पीनस का लक्षण

जिसके नाक में पीछे कहे हुए सब लक्षण मिलें और वह पीनस बारम्बार हो तथा यत्न करने मे न दूर हो और न पके उसे सन्निपात की पीनस जानिए। यह असाध्य है।

दुष्टपीनस का लक्षण

बारम्बार जिसकी नाक झरा करे और सूख जाय तथा नाक से अच्छी तरह श्वास न आवे, नाक रुक जाय और कभी खुल भी जाय तथा सुगन्ध दुर्गंध का ज्ञान न रहे उसे दुष्टपीनस कहिए।

रुधिर से उपजी पीनस का लक्षण

जिसकी छाती में चोट लगी हो उसके रुधिर की पीनस हो जाय, नाक में रुधिर पड़े और उसके पीछे कहे हुए पित्त के लक्षण हों तथा उसकी आँखें लाल हों उसे रुधिर की पीनस कहिए।

पीनस का असाध्य लक्षण

आलस्य करके पीनस का यत्न न करे तो सब पीनस असाध्य हो जायँ।

पीनसवाले की नाक में कृमि पड़ जायें उसका लक्षण

जिसके नाक में पीनस से सफेद, चिकने छोटे-छोटे कृमि पड़ जायँ और वे दीखें नहीं उसके शिर का रोग हो जाय तथा और भी रोगों को प्रकट करे। बधिरपना, नेत्र के रोग, सूजन, मन्दाग्नि इन सब रोगों को यह कृमि पीनस प्रकट करता है और नाक में अर्बुदनाम गाँठ ७ प्रकार की, सूजन ४ प्रकार की, अर्श ४ प्रकार का, रक्तपित्त ४ प्रकार का नाक में होता है। इन सबके लक्षण पीछे लिखे हैं।

पीनस के कच्चेपने का लक्षण

जिसका शिर भारी रहे, भोजन में अरुचित हो, नाक झड़ा करे, धीरे बोले, शरीर क्षीण पड़ जाय, बहुत थूके ये लक्षण हों तो कच्चा पीनस जानिए।

पके पीनस का लक्षण

जिसकी नाक का कफ गाढ़ा निकले और नाक के छिद्र में भी रहे और वर्ण भी अच्छा हो जाय तथा स्वर भी अच्छा हो और भूख आदि सब लगें उसे पका पीनस कहिए।

नाक के रोगों का यत्न

कालीमिरच, गुड़, हींग ये तीनों मिलाय अनुमान मुवाफ़िक खाय तो पीनस का रोग जाय। अथवा कायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, कलौंजी इन सबको महीन पीस १० माशा चूर्ण अदरक के रस में ले अथवा इसका काढ़ा ले तो पीनस, स्वर-भङ्ग, पाण्डुरोग, सन्निपात, कफ, श्वास, कास इन सबको यह दूर करे। अथवा कायफल, हींग, मिरच, लाख, इन्द्रजव, कूट, बच, सहँजने की जड़, बायबिड़ंग इनका काढ़ा ले तो पीनस जाय।

व्योषादिगुटिका

सोंठि, कालीमिरच, पीपल, चित्रक, तालीसपत्र, डाँसरा, अमलबेत, चव्य, जीरा, इलायची, तज, पत्रज ये सब बराबर ले महीन पीस इनके बराबर पुराना गुड़ ले उसमें झरबेरी बेर के बराबर गोली करे, १ गोली नित्य १० दिन खाय तो पीनस, खाँसी, अरुचि दूर हो।

पीनस दूर होने का तेल

कटेली, दन्ती, बच, सहँजने की छाल, तुलसी के पत्तों का रस इन सबको तेल में पकावे पीछे इस तेल की नास ले तो पीनस जाय। यह व्याघ्रतेल है।

अथवा सहँजने की छाल, कटेली, निशोत, सोंठि, मिरच, पीपल, सेंधानोन, बेल के पत्तों का रस इन सबको तेल में पकावे पीछे इसकी नास ले तो पीनस जाय। यह शिग्रु तैल है।

जिसे छींक बहुत आवें उसका यत्न

घृत, गुग्गुल, मोम इनकी नाक में धूनो दे तो छींक बन्द हो अथवा सोंठि, कूट, पीपल, बेल की गिरी, दाख इनका काढ़ा कर तेल में पकावे पीछे इसकी नास ले तो छींक आना दूर हो।

पीनस के दूर होने का चूर्ण

बायबिड़ंग, सेंधा नोन, हींग, गुग्गुल, मैनसिल, खुरासानी बच इन्हें महीन पीस सूँघे तो पीनस जाय।

पीनस दूर होने का तेल

भाँगरे के पत्तों का रस, सेंधा नोन इनमें तेल पकावे फिर इस तेल को सूँघे तो पीनस तत्काल जाय।

नाक में अर्शनाम मस्सा हो उसके दूर होने का तेल

धमामा, पीपल, दारुहल्दी, अपामार्ग के बीज, जवाखार, अमलतास की गिरी अथवा बक्कल, सेंधानोन इनमें तेल पकाकर नाक के मस्से में लगावे तो मस्से दूर हों। और नाक के जो रोग कहे हैं उनमें इसका यत्न देख लेना। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं। अथवा सोने के समय अधौटा पानी पीवे तो पीनस का रोग जाय। अथवा जीरा, घृत, खाँड़ मिलाकर खाय तो पीनस जाय।

मुख के रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

मुख के ७ अङ्ग हैं। ओठ १ मसूढ़ा २ दाँत ३ जीभ ४ तालू ५ गला ६ तथा गला आदि मुख का सर्वाङ्ग ७ और जीभ का ५ तालू का ९ कण्ठ का १८ सर्व मुख में फैलता ३।

मुख के रोगों की उत्पत्ति

अनूप देश के मांस के खाने से, बहुत दूध के पीने से, बहुत दही और उड़द आदि के खाने से कोप को प्राप्त हुए वायु, पित्त, कफ ये मुख के रोगों को प्रकट करते हैं।

ओठ के रोगों की उत्पत्ति, संख्या

ओठ के ८ रोग हैं। वायु का १ पित्त का २ कफ का ३ सन्निपात का ४ रुधिर का ५ मांस का ६ मेद का ७ चोट लगने का ८।

वायु के ओठरोग का लक्षण

जिसके ओठ कठोर, खरदरे, गाढ़े और काले हों और उनमें पीड़ा बहुत हो, बहुत फटे हों तो वायु के कोप का ओठरोग जानिए।

पित्तकोप के ओठरोग का लक्षण

जिसके ओठों में फुंसियाँ हों और वे फुंसियाँ बहने लग जायँ, उनमें

पीड़ा भी चौगिर्द हो तथा दाह हो, पक जायँ और उनको कान्ति पीली हो जाय तब जानिए पित्त के कोप का ओठरोग है।

कफ के ओठरोगों का लक्षण

जिसके ओठ देह के वर्ण सदृश हों और वे स्रवें, उनमें फुंसियाँ हों और पीड़ा न हो, खाज आवे और उनमे गाढ़ा, कठोर कफ निकले उसे कफ के कोप का ओठरोग जानिए।

सन्निपातकोप के ओठरोग का लक्षण

कभी काले, कभी पीले, कभी सफ़ेद हों और उनमें बहुत फुंसियाँ हों और पूर्वोक्त सब लक्षण मिलें उसे सन्निपात के कोप का ओठ-रोग जानिए।

रुधिरकोप के ओठरोग का लक्षण

जिसके ओठों में फुंसियाँ बहुत हों और उनमें पीड़ा बहुत हो, उन फुंसियों का रंग छुहारे के समान हो और उनमें बहुत रुधिर निकला करे ये लक्षण हों तो रुधिर के कोप का ओठरोग जानिए।

मांसकोप के ओठरोग का लक्षण

जिसके ओठ का मांस दुष्ट हो उसके ओठ भारी और गठीले हो जायँ तथा जिसके रुधिर में जानवर डाले वह जानवर मूर्च्छित हो जाय तब जानिए इसके मांसकोप का ओठरोग है।

मेदकोप के ओठरोग का लक्षण

जिसके ओठों का रुधिर घृत अथवा माड़ के समान ओठों की फुंसियों से निकले और उनमें खाज हो, ओठ कोमल हों और रुधिर सफ़ेद पत्थर के समान गाढ़ा स्रवे तब मेद के कोप का ओठरोग जानिए।

चोट लगने के ओठरोग का लक्षण

ओठ में किसी तरह की चोट लगने से ओठ फट जायँ, उनमें खाज हो, ओठ मथे से हो जायँ और उनमें पीड़ा भी हो तब चोट लगने के कोप का ओठरोग जानिए।

ओठों के रोगों का यत्न

जिसके ओठों में रोग हो उसका जलौका से रुधिर कढ़ाइए तो रोग जाय। अथवा शुद्ध मोम में घृत डाल उसकी बत्ती से अच्छी तरह

सिंकावे तो ओठ के रोग जायँ। अथवा चार प्रकार के स्नेह–तेल १ घृत २ मांस का घृत ३ अथवा मांस के मध्य की मींगी ४ इन चारों स्नेहों में मोम मिलाय सुहाता सेंक करे तो ओठों के रोग जायँ। अथवा फूलप्रियंगु, त्रिफला, पठानीलोध इन्हें महीन पीस स्नेह में मिलाय सुहाता ओठों में सेंक करे अथवा शहद से खाय तो ओठों के रोग जायँ।

प्रतिसारणविधि

ओठों के चूर्ण, अवलेह अँगुली से शनैःशनैः लगावे उसे प्रतिसारण कहिए।

ओठों के बहुत व्रणों का यत्न

जो यत्न व्रण के अच्छे होने का पीछे लिखा है वही करे।

मसूढ़े के रोगों के नाम और संख्या

शीताद १ दन्तपुप्पुट २ दन्तवेष्ट ३ सौषिर ४ महासौषिर ५ परिदर ६ उपकुश ७ वैदर्भ ८ खल्लीवर्धन ९ अधिमांस १० पञ्चनाड़ी वायु से मसूढ़े की नस निकले ११ पित्त से मसूढ़े की नस निकले १२ कफ से मसूढ़े की नस निकले १३ सन्निपात से मसूढ़े की नस निकले १४ चोट लगने से मसूढ़े की नस निकले १५ दन्तविद्रधि १६।

शीताद मसूढ़े के रोग का लक्षण

कारण विना ही अकस्मात् मसूढ़े के व्रण से रुधिर निकले और उस रुधिर में दुर्गन्ध बहुत आवे तथा रुधिर काला हो, मसूढ़े कोमल हों और बिखर जायँ, आपस में पकने लगें। इस प्रकार कफ, रुधिर के दुष्टपने से शीतादरोग उत्पन्न होता है।

दन्तपुप्पुट मसूढ़े के रोग का लक्षण

दाँतों के तीन मसूढ़ों में सूजन बहुत हो जाय इसे दन्तपुप्पुट रोग कहिए। यह कफ, रुधिर के कोप से होता है।

दन्तवेष्टरोग का लक्षण

जिसके मसूढ़े में राद को लिये रुधिर निकले और दाँत हिलने लग जायँ उसे दन्तवेष्ट रोग कहिए।

सौषिर मसूढ़े के रोग का लक्षण

मसूढ़े में सूजन हो आवे, उसमें पीड़ा हो, लार पड़े, खाज हो उसको सौषिरनाम रोग कहिए। यह कफ वायु से होता है।

महासौषिर रोग का लक्षण

उन मसूढ़ों में दाँत हिलने लगें और तालू बैठ जाय अथवा तालू पर छेद पड़ जायँ। यह महासौषिर सन्निपात के कोप से होता है।

परिदर मसूढ़े के रोग का लक्षण

जिसके दाँत के मसूढ़े बिखर जायँ और उनसे रुधिर न बहे वह पित्त, रुधिर, कफ इनके कोप से उपजा परिदर कहाता है।

उपकुश मसूढ़े के रोग का लक्षण

जिसके मसूढ़ों में दाह हो, पक जायँ. दाँत हिलने लग जायँ मसूढ़े के दाबने से अथवा औषधों के घिसने से रुधिर निकले और उसमें पीड़ा न हो, मसूढ़े में दुर्गन्ध आवे यह पित्त रुधिर से उपजा उपकुश नाम मसूढ़े का रोग होता है।

वैदर्भमसूढ़े के रोग का लक्षण

जिसके मसूढ़ों में किसी तरह की चोट लगे अथवा वे घिस जायँ तब उनमें सूजन हो जाय, दाँत हिलने लगें और उनमें दाह, पीड़ा भी हो इसे वैदर्भ मसूढ़े का रोग कहिए।

खल्लीवर्धन मसूढ़े के रोग का लक्षण

जिसके मसूढ़ों में दाँत अधिक बढ़ें और वहाँ पीड़ा बहुत हो उसे खल्लीवर्धन मसूढ़े का रोग कहिए।

अधिमांस मसूढ़े के रोग का लक्षण

जिसकी नीचे की दाढ़ के अन्त में बहुत सूजन हो और उसमें पीड़ा भी बहुत हो, मुँह से लार पड़े यह कफ से उपजा अधिमांस मसूढ़े का रोग होता है। अथवा मसूढ़े की नसों में वायु, पित्त, कफ, सन्निपात से और चोट लगने से पाँच नसों का रोग कहिए।

दन्तविद्रधि मसूढ़े के रोग का लक्षण

दाँत के मसूढ़े में रुधिर निकले और वहाँ बहुत सूजन हो, उसमें

दाह और पीड़ा भी हो और राद, रुधिर को लिये बहुत स्रवे उसे दन्त-विद्रधि मसूढ़े का रोग कहिए।

शीताद आदि मसूढ़े के रोगों का यत्न

इस रोग में मसूढ़े का रुधिर निकलाइये पीछे सोंठि, सरसों, त्रिफला इनका काढ़ा कर कुल्ला करे तो शीताद आदि मसूढ़े के रोग जायँ। अथवा हीराकसीस, पठानीलोध, पीपल, मैनसिल, फूलप्रियंगु, तेजबल इन्हें बराबर ले महीन पीस शहद से मसूढ़े में लगावे तो शीताद आदि मसूढ़े के रोग जायँ। अथवा तेल वा घृत का कुल्ला करे तो शीताद आदि मसूढ़े के रोग जायँ।

दन्तपुप्पुट मसूढ़े का यत्न

इस रोग में मसूढ़े का रुधिर निकलाकर पाँचों नोन, जवाखार, शहद इनका मञ्जन करे तो यह रोग जाय।

चलदन्त मसूढ़े का यत्न

पठानीलोध, पतङ्ग, महुआ, लाख, बेल, सिरस का बक्कल इन्हें महीन पीस चूर्ण कर मसूढ़े पर मसले तो चलदन्त मसूढ़े का रोग जाय। अथवा नागरमोथा, हड़ की छाल, सोंठि, मिरच, पीपल, बाय-बिड़ंग, नींब के पत्ते इन्हें महीन पीस गोमूत्र में गोली करे फिर उस गोली को छाया में सुखाय सोते समय मुँह में रक्खे तो चलदन्त मसूढ़े का रोग जाय और दाँत गाढ़े हों। यह भद्रमुस्तादि गुटिका है।

अथवा नीले फूल का कठसैला, धमासा, खैरसार, जामुन का वक्कल, आम का बक्कल, मुलहठो, कमलगट्टे ये सब बराबर दो टकेभर ले पीछे इन्हें १६ सेर पानी में औटाकर इनका चतुर्थांश राखे पीछे इसमें तेल अथवा बकरी का घृत मधुरी आँच से पकावे जब रस आदि जल जायँ और तेलमात्र रहे तब इस तेल को अथवा घृत को २ घड़ी मुँह में रक्खे तो दाँत गाढ़े हों। यह सहचरादि घृत-तेल है।

सौषिर मसूढ़े का यत्न

इस रोग में मसूढ़े का रुधिर निकलाकर लोध, नागरमोथा, रसौत, शहद इन सबको महीन पीस मसूढ़े में लेप करे और पीछे दूध के कुल्ले करे तो सौषिर मसूढ़े का रोग जाय।

परिदर मसूढ़े के रोग का यत्न

मसूढ़े का रुधिर निकलाय सोंठि, सरसों, त्रिफला इनका काढ़ा कर कुल्ले करे तो परिदर और उपकुश ये दोनों मसूढ़े के रोग जायँ।

मसूढ़ें के व्रणों का यत्न

गूलर के पत्ते, नोन, * शहद, सोंठि, मिरच, पीपल इनका काढ़ा करे और मसूढ़े का शस्त्रादिक से रुधिर काढ़े पीछे इस काढ़े के कुल्ले करे फिर मसूढ़े पर लवण आदि का खार लगावे तो मसूढ़े का व्रण अच्छा हो और उसके कृमि मर जायँ, रोग जाता रहे।

खल्लीवर्धन मसूढ़े के रोग का यत्न

इस रोग में मसूढ़े का मांस निकलाय शहद के कुल्ले करे फिर बच, तेजबल, पाढ़, सज्जी, जवाखार, पीपल इन्हें महीन पीस मसूढ़े में लगावे तो खल्लीवर्द्धन मसूढ़े का रोग जाय।

मसूढ़े की नसों के व्रणों का यत्न

उन मसूढ़ों का मांस कुछ शस्त्र से दूर करे फिर पटोल (परवर) के पत्ते, नींब के पत्ते, त्रिफला इनका काढ़ाकर गर्म सुहाते-सुहाते से कुल्ले करे तो मसूढ़े की नसों का व्रण जाय। अथवा चमेली के पत्ते, धतूरे के पत्ते, कटेली, गोखुरू का पञ्चाङ्ग, मंजीठ, लोध, खैरसार, मुलहठी इनका काढ़ा कर इस काढ़े में मधुरी आँच से तेल को पकावे फिर इस तेल के कुल्ले करे तो मसूढ़ों के व्रण आदि सब रोग जायँ।

दाँतों के रोगों के नाम और संख्या

दालन १ कृमिदन्तक २ भञ्जनक ३ दन्तहर्ष ४ दन्तशर्करा ५ कपालिका ६ श्यावदन्तक ७ कराल ८।

दालननाम दाँत के रोग का लक्षण

जिसके दाँत में टूटे दाँत की पीड़ा हो, वह पीड़ा वायु से हो इसे दालननाम दाँत का रोग कहिए।

कृमिदन्तक दाँत के रोग का लक्षण

जिसके दाँत में काले छिद्र पड़ जायँ, दाह हो और उसमें से कुछ रुधिर निकले, सूजन हो, बिना कारण ही वायु की सी पीड़ा हो उसे कृमिदन्तक रोग कहिए।

---

* जिस प्रयोग में काढ़े के साथ शहद गेरना लिखा है उसमें पहले काढ़ा तैयार करके ऊपर से शहद मिलाना चाहिए।

भञ्जनक दाँत के रोग का लक्षण

जिसके दाँत टेढ़े हों, टूट जायँ तो इसको कफ से उपजा भञ्जनक नाम दाँत का रोग कहिए।

दन्तहर्ष दाँत के रोग का लक्षण

जिसके शीतल जलादिक से, रूखी वस्तु से, शीतल पवन से, खटाई से दाँत खट्टे हो जायँ ये लक्षण हों तो वायु पित्त से उत्पन्न दन्तहर्ष रोग जानना।

दन्तशर्करा दाँत के रोग का लक्षण

जिसके दाँत में मैल रहे उस मल को कफ, वायु शोष ले फिर उसके दाँत खरदरे लगें और रेत की सी तरह खिल जायँ उसे दन्त-शर्करा कहिए।

कपालिका नाम दाँत के रोग का लक्षण

जिसके दाँत माटी के घड़े के कपाल समान हों और उनमें छिद्र हों और हिलें तथा उनमें मैल हो उसे कपालिका दाँत का रोग कहिए।

श्यावदन्तक दाँत के रोग का लक्षण

जिसके दाँत दुष्ट रुधिर से मिलकर सब दग्ध हो जायँ, दाँत काले और नीले पड़ जाय उसे श्यावदन्तक रोग कहिए।

करालनाम दाँत के रोग का लक्षण

जिसके दाँतों को वायु शनैः शनैः नष्ट कर भयङ्कर कर दे उसे कराल दाँतों का रोग कहिए। यह रोग यत्न करने से भी अच्छा नहीं होता है।

ग्रन्थान्तर से हनुमोक्ष दाँत के रोग का लक्षण

जिसकी डाढ़ में वायु कुपित होकर दाँतों को पकड़े और दाँतों में तथा डाढ़ में पीड़ा करे उसे हनुमोक्षरोग कहिए और उसमें अर्दित रोग के भी लक्षण होते हैं।

दाँत के रोगों को दूर करनेवाला लाक्षादि तेल

लाख का रस ऽ। भर, तिलों का तेल ऽ। भर, गौ का दूध ऽ। भर, पठानीलोध १ टके भर, कायफल १ टके, मंजीठ १ टके, कमलगट्टे १ टके, कमल की केसर १ टके, रक्तचन्दन १ टके, मुलहठी १ टके

भर इन सबका काढ़ा कर फिर इस काढ़े में मधुरी आँच से तेल पकावे। ये सब रस जल जायँ तेलमात्र आय रहे तब इस तेल को मुँह में १ घड़ी राखे तो दाँत के सब रोग जायँ और दाँत गाढ़े हों। यह लाक्षादि तैल है।

अथवा वायु को दूर करनेवाले तेलों के कुल्ले करे तो दाँत के रोग जायँ।

कृमिदन्तरोग के दूर होने का यत्न

हींग को थोड़ा गर्म कर दाँतों के बीच में दे तो दाँतों के कृमि जायँ। अथवा कागलहरी, नील की जड़, कड़ुवी तूँबी की जड़ इन्हें महीन पीस दाँतों में मर्दन करे तो कृमि जायँ।

दाँत खट्टे रहें उसका यत्न

साँभरनोन, नरकचूर, सोंठि, अकरकरा इन्हें महीन पीस दाँतों में मर्दन करे तो खट्टे दाँत अच्छे हों।

दाँतों के सब रोग दूर होने की औषध

पाँचों नोन, नीलाथोथा, सोंठि, मिरच, पीपल, पीपलामूल, हीरा, कसीस, माजूफल, बायबिडंग इन्हें महीन पीस दाँतों में मर्दन करे तो दाँतों के सब रोग जायँ।

दाँतों के पुष्ट होने की मिस्सी

हीराकसीस, माजूफल, लोहे का चूर्ण, सोनामक्खी, मंजीठ, फुलाई फिटकरी, त्रिफला ये सब बराबर ले इन्हें खरल कर महीन पीस कज्जल समान करे फिर १ माशे दो घड़ी दाँतों में मसले इस विधि से ७ दिन करे तो दाँत स्याह और गाढ़े होयँ।

दाँतों के सर्वविकार दूर होने की औषध

फुलाई फिटकरी, नीलाथोथा, तेजबल, पपड़िया कत्था, पीपल का बक्कल, लाख, सोंठि, मिरच, पीपल, आँवला, हीराकसीस, माजूफल, मंजीठ, रूमीमस्तगी, मौलसिरी का बक्कल, सेंधानोन, दक्षिणी सुपारी ये सब बराबर ले इन्हें कूट कपड़छान कर निरगुण्डी के रस की २१ पुट दे पीछे मौलसिरी के बक्कल को २१ पुट देवे। एक एक पुट देके धूप में सुखाता जाय पीछे उसे महीन पीस सेंधानोन थोड़ा मिलावे पीछे इसको दाँतों में मर्दन करे तो दाँतों के सब रोग जायँ।

दाँतों के दुखने की और औषध

कूठ २० माशा, सोंठि २० माशा, मिरच २० माशा, खुरासानी अजवायन २० माशा, हड़ की छाल २० माशा, कत्था २० माशा इन्हें महीन पीस दाँतों में मर्दन करे तो दाँत दुखना बन्द हो।

दाँत दुखने की और औषध

गंगापार की तमाखू, अकरकरा, कायफल, बायबिड़ंग, सोंठि, मिरच, पीपल, नोन इन्हें महीन पीस दाँतों में मर्दन करे तो दाँत दुखना बन्द हो।

जीभ के रोगों की उत्पत्ति, नाम और संख्या

जीभ के रोग ५ प्रकार के हैं। वायु १ पित्त २ कफ ३ अलास ४ उपजिह्वा ५।

वायु के जिह्वारोग का लक्षण

जिसकी जीभ कट जाय और सूजन आ जाय, हरी हो जाय, जीभ में काँटे पड़ जायँ, मीठा आदि स्वादु का ज्ञान जाता रहे ये लक्षण हों तो वायु का जीभरोग जानिए।

पित्त के जीभरोग का लक्षण

जिसकी जीभ में दाह रहे, लाल वर्ण हो और काँटे पड़ जायँ तब जानिए जीभ में पित्त का रोग है।

कफ के जीभरोग का लक्षण

जिसकी जीभ भारी दीखे, कड़ी हो जाय और जीभ में सफेद काँटे पड़ें तो जीभ में कफ का रोग जानिए।

अलास जीभ के रोग का लक्षण

जीभ के नीचे बहुत सूजन हो, जीभ और डाढ़ी को लठर कर दे, हिलने न दे, जीभ के नीचे पक जाय यह अलासरोग कफ रुधिर से पैदा होता है। यह असाध्य है।

उपजिह्वा का लक्षण

जीभ की नोक के ऊपर सूजन हो मानो दूसरी जीभ है और जीभ में लार बहुत पड़े, खुजली और दाह हो इसे उपजिह्वा नाम जीभ का रोग कहिए।

जीभ के रोगों का यत्न

जीभ के सब रोगों को दूर करने के लिये रुधिर कढ़ाना योग्य है। अथवा गिलोय, पीपल, नींब की छाल, कुटकी इनका काढ़ाकर कुल्ले करे तो जीभ के रोग जायँ। अथवा ओठों का यत्न जो पीछे कहा है उससे भी जीभ का रोग अच्छा होता है। अथवा सोंठि, मिरच, पीपल, जवाखार, हड़ इन्हें महीन पीस जीभ में लगावे तो जीभ के रोग जायँ। अथवा सोंठि, मिरच, पीपल, जवाखार, हड़ की छाल इनमें तेल को पकाय इस तेल के कुल्ले करे तो उपजिह्वा दूर हो।

तालु के रोगों के नाम और संख्या

तालु के ९ रोग हैं। गलशुण्डी १ तुण्डकेरी २ ध्रुव ३ कच्छप ४ ताल्वर्बुद ५ मांससंघात ६ तालुपुप्पुट ७ तालुशोष ८ तालुपाक ९।

गलशुण्डी का लक्षण

तालु की जड़ से सूजन बढ़े और वह सूजन कटी खाल सदृश हो जाय तब जानिए इस खाल में वायु भरी है और उसको प्यास लगे, खाँसी और श्वास हो उसे गलशुण्डीरोग कहिए। यह कफ, रुधिर से उपजता है।

तुण्डकेरी का लक्षण

तालु की जड़ से उपजी सूजन दाह, पीड़ा और पाक को लिये हो तो कफ, रुधिर के दुष्टपने से उपजी जानिए। इसको तुण्डकेरीरोग कहते हैं।

ध्रुवरोग का लक्षण

तालु में ज्वरयुक्त लाल सूजन हो तो ध्रुवरोग कहिए।

कच्छपरोग का लक्षण

जिसके तालु में कछुवे के आकार ऊँची सूजन हो और पीड़ा भी हो यह कफ से उपजती है इसको कच्छपरोग कहिए।

ताल्वर्बुदरोग का लक्षण

जिसके तालु में कमल के आकार सूजन हो और जिसमें बड़े अंकुर हों और दाह हो उसे ताल्वर्बुद रोग कहिए।

मांस संघातरोग का लक्षण

जिसके तालु में दुष्टमांस बढ़े और उसमें पीड़ा न हो तो उसे मांससंघातरोग कहिए।

तालुपुप्पुटरोग का लक्षण

जिसके तालु में बेर समान सूजन हो और पीड़ा न हो तो उसे तालुपुप्पुट रोग कहिए।

तालुपाक रोग का लक्षण

गर्मी से तालु पक जाय उसे तालुपाक रोग कहिए।

तालु के रोगों का लक्षण

गलशुण्डीरोग का चतुर वैद्य शस्त्र से विष निकाल डाले तो गलशुण्डी रोग जाय। अथवा कूट, मिरच, खुरासानी बच, सेंधा नोन, पाढ़, नागरमोथा इन्हें महीन पीस गलशुण्डी में मले तो गलशुण्डी रोग जाय। अथवा पीपल, अतीस, कूट, बच, सोंठि, कालीमिरच, सेंधा-नोन इन्हें महीन पीस शहद से गलशुण्डी में लगावे तो गलशुण्डी जाय। अथवा पीपल, अतीस, कूट, बच, रास्ना, कुटकी, नींब की छाल इन्हें जवकुटकर इनका काढ़ा दे तो गलशुण्डी, तुण्डकेरी आदि तालु के सब रोग जायँ।

गले के रोगों के लक्षण, यत्न, नाम और संख्या

गले के १८ रोग हैं। पाँच प्रकार की रोहिणी–वायु की १ पित्त की २ कफ की ३ सन्निपात की ४ रुधिर की ५ और कण्ठशालूक ६ अधिजिह्वा ७ बलय ८ बलास ९ एकवृन्द १० वृन्द ११ शतघ्नी १२ गिलायु १३ गलविद्रधि १४ गलौघ १५ स्वरघ्न १६ मांसतान १७ विदारी १८।

वायु की रोहिणी का लक्षण

सब जीभ में बहुत पीड़ा हो और जीभ के सब मांस के अंकुर निकल आवें और उनसे कण्ठ रुक जाय तथा वायु के सब उपद्रव हो जायँ उसे वायु की रोहिणी कहिए।

पित्त की रोहिणी का लक्षण

जिसका गला पक जाय और गले में दाह, ज्वर हो उसे पित्त की रोहिणी कहिए।

कफ की रोहिणी का लक्षण

जिसके गले का सोत कफ से रुक जाय और गला देर से पके और गला भारी हो उसे कफ की रोहिणी कहिए।

सन्निपात की रोहिणी का लक्षण

ओंड़ा जिसका पाक हो और उसका वीर्य यत्न से भी दूर न हो तथा सब लक्षण मिले हों उसे त्रिदोष की रोहिणी जानिए।

रुधिर की रोहिणी का लक्षण

जिसके गले में पीड़ा हो आवे और जिसमें पित्त के लक्षण मिलें उसे रुधिर की रोहिणी जानिए।

कण्ठशालूक का लक्षण

जिसके गले में बेर की मींगी प्रमाण कफ की गाँठ हो जाय और गले में खरदरे काँटे पड़ जायँ तथा उस स्थान में पीड़ा भी हो उसे कण्ठशालूक रोहिणी कहिए।

अधिजिह्वारोग का लक्षण

जिसकी जीभ की नोक के ऊपर सूजन हो, रुधिर को लिए कफ थूके, जीभ कफ, रुधिर से लिपी रहे, पकी सी हो उसे अधिजिह्वा गले का रोग कहिए।

बलयनाम गले के रोग का लक्षण

जिसके गले में कफ बढ़े पीछे सूजन को करे, अन्न आदि को गले में न जाने दे, उसका मार्ग रोक दे उसे बलय गले का रोग कहिए, यह असाध्य है।

बलासनाम गले के रोग का लक्षण

जिसके कफ, वायु बढ़कर गले में सूजन कर और श्वास, कफ वायु और पीड़ा को प्रकटकर मर्म स्थान को छेदते हुए हृदय में पीड़ा करें उसके बलास गले का रोग कहिए।

एकवृन्दनाम गले के रोग का लक्षण

जिसके गले में कफ, रुधिर दुष्ट हो गले के बीच दाह को लिये गोल और ऊँची सूजन करे और वहाँ खुजली भी चले, गला पक जाय, भारी और कोमल हो उसे एकवृन्द गले का रोग कहिए।

वृन्दनाम गले के रोग का लक्षण

गले में कुपित हुए पित्त और रुधिर वायुसंयुक्त गले में गोल सूजन करें, विना पीड़ा गले में दाह करें तथा तीव्र ज्वर को पैदा करें तो इसको वृन्दनाम गले का रोग कहिए।

शतघ्नीनाम गले के रोग का लक्षण

जिसके गले में मांस के गाढ़े, कड़े और कण्ठ के रोकनेवाले बहुत अंकुर हों और उनमें पीड़ा चले, बहुत जलें उन्हें प्राण का हरनेवाला जानिए मानो कण्ठ में रुधिर की लट्ठी डाली है। यह रोग त्रिदोष के कोप से होता है। यह असाध्य शतघ्नी नाम का रोग है।

गिलायुनाम गले के रोग का लक्षण

जिसके गले में आँवले की मींगी प्रमाण गाँठ हो और उसमें पीड़ा कम हो तथा वह गाँठ कफ, रुधिर से प्रकट हो और भोजन करे तब वह बुरी लगे इसे शस्त्र से दूर करे तब यह दूर हो। इसे गिलायुनाम गले का रोग कहिए।

गलविद्रधि का लक्षण

जिसके सब गले में सूजन हो और उसमें प्राण की हरनेवाली बहुत पीड़ा हो यह भी त्रिदोष के कोप से पैदा होती है इसको गलविद्रधि कहते हैं।

गलौघनाम गले के रोग का लक्षण

जिसके गले के मार्ग में सूजन बहुत हो, पवन जाने से रुक जाय और उसके तीव्र ज्वर पैदा हो जाय इसको कफ, रुधिर के दुष्टपने से पैदा हुआ गलौघनाम गले का रोग कहते हैं।

स्वरघ्ननाम गले के रोग का लक्षण

जिसके गले में कफ दुष्ट हो और गले के स्वर को दूर करे और दुहरा मांस लिये जाय और घोंघों बोले तथा भोजन अच्छी तरह से न किया जाय और कफ से कण्ठ की पवन बिगड़ जाय इसे स्वरघ्न गले का रोग कहिए।

मांसतान गले के रोग का लक्षण

जिसके गले में क्रम से सूजन बढ़े और सब गले में सूजन हो

जाय तथा प्राणों को हरनेवाली पीड़ा हो ये लक्षण त्रिदोष से हुए मांसतान गले के रोग के हैं।

विदारी नाम गले के रोग का लक्षण

जिसके गले में ताँबे के वर्ण समान दाह और पीड़ा को लिये बहुत सूजन हो, गला लटक जाय और पक जाय, उसमें राद पड़ जाय यह पित्त के कोप से होता है। जिस करवट सोवे उसी ओर गले के पीछे विदारी नाम गले का रोग होता है।

गले के रोगों का यत्न

जिसके रोहिणी रोग हो उसके गले का जलौका आदि से किसी तरह रुधिर निकलावे तो रोहिणी रोग जाय।

गले के सर्व रोगों का यत्न

वमन करना, ओषधियों से हुक्का पीना, ओषधियों से कुल्ले करना, नास देना, रुधिर कढ़ाना, नोन का सेंक ये सब गले के रोग को अच्छे हैं। अथवा स्नेह से कुल्ले करे तो वायु सम्बन्धी गले के रोग को अच्छा है।

पित्त के गले के रोग का यत्न

मिश्री, शहद, फूलप्रियंगु इनके काढ़े से पित्त से उत्पन्न हुआ गले का रोग जाय।

कफ के गले के रोग का यत्न

घर का धूमस, कुटकी इनके काढ़े से कफ के गले का रोग जाय अथवा कुटकी, सोंठि, पीपल, मिरच, बायबिड़ंग, दन्ती, सेंधा नोन इनका काढ़ा कर उसमें तेल पकावे फिर इस तेल की नास दे तो कफ के सब रोग जायँ। अथवा विष्णुक्रान्ता (कोयल) का काढ़ा पीवे तो रोहिणी नाम गले का रोग जाय। अथवा विष्णुक्रान्ता और शंखाहूली इनको घोट पीवे तो कण्ठशालूका, तुण्डकेरी, उपजिह्वा, अधिजिह्वा, एकवृन्द, गिलायु ये सब रोग जायँ। अथवा शस्त्रक्रिया कर गले का रुधिर कढ़ावे तो गलविद्रधि आदि गले के सब रोग जायँ।

कण्ठ के रोगों का यत्न

कण्ठ के रोग रुधिर कढ़ाने और नास देने से अच्छे होते हैं।

अथवा दारुहल्दी, नींब की छाल, इन्द्रयव, हड़ की छाल, तज इनका काढ़ाकर उसमें शहद डाल पीवे तो कण्ठ के सब रोग जायँ। अथवा कुटकी, अतीस, दारुहल्दी, नागरमोथा, इन्द्रयव इनका काढ़ा कर उसमें गोमूत्र डाल पीवे तो कण्ठ के सब रोग जायँ। अथवा हड़ की छाल का काढ़ा कर शहद डाल पीवे तो कण्ठ के सब रोग जायँ। अथवा मुनक्का, दाख, कुटकी, सोंठि, मिरच, पीपल, दारुहल्दी, तज, त्रिफला, नागरमोथा, पाढ़, रसौंत, मूर्वा, तेजबल, हल्दी इनका काढ़ा कर शहद डाल पीवे अथवा इनके कुल्ले करे अथवा शहद से इनकी गोली बाँधकर मुँह में रक्खे तो गला और कण्ठ के सब रोग जायँ।

समस्त मुख रोगों की उत्पत्ति, लक्षण, यत्न और संख्या

मुख में चार प्रकार के रोग होते हैं—वायु का १ पित्त का २ कफ का ३ सन्निपात का ४।

वायु के मुख रोग का लक्षण

जिसके मुख में सर्वत्र छाले हो जायँ और उनमें पीड़ा बहुत हो तो वायु का मुख रोग जानिए।

पित्त के मुख रोग का लक्षण

जिसके मुख में लाल छाले हों या दाह को लिये पीले हों उसे पित्त का मुख रोग कहिए।

कफ के मुख रोग का लक्षण

जिसके मुख में पीड़ा रहित सफ़ेद छाले हों और उसमें खुजली चले उसे कफ का रोग कहिए।

मुख रोग का असाध्य लक्षण

जिसके ओठ में और मसूढ़े में रुधिर के कोप से अथवा त्रिदोष के कोप से छाले हों वह असाध्य जानिए।

समस्त मुख रोगों का यत्न

मुख में वायु के छाले हों तो नोन, फिटकरी के कुल्ले कराइए। अथवा वायु के दूर करनेवाले तेल के कुल्लों से छाले जायँ।

पित्त के मुख रोग के छाले का यत्न

मुलहठी, खैरसार इन्हें औटाय इसमें शहद डाल कुल्ले करे तो पित्त के मुख रोग के छाले दूर हों। अथवा दूध को गर्म कर उसमें थोड़ा घृत शहद डाल कुल्ले करे तो पित्त के मुख रोग के छाले जायँ।

कफ के मुखरोग के छाले का यत्न

नीलाथोथा, फिटकरी इन्हें महीन पीस छाले में लगावे और मुँह की लार डाले तो कफ के छाले जायँ।

सन्निपात के मुख रोग के छाले का यत्न

इस रोग में मुँह की नस की फ़स्त ले तो ये छाले जायँ। अथवा चमेली के पत्ते, गिलोय, त्रिफला, जवासा, दारुहल्दी, दाख इनका काढ़ा कर उसमें शहद डाल कुल्ले करे तो त्रिदोष के मुखरोग के छाले जायँ। अथवा कालाजीरा, कूट, इन्द्रयव इन्हें महीन पीस दाँतों से उसका रस मुख में ले फिर थूक दे तो त्रिदोष का मुखपाक जाय। अथवा पटोल के पत्ते, नींब की छाल, जामुन के पत्ते, आम के पत्ते, चमेली के पत्ते इनका काढ़ा कर कुल्ले करे तो त्रिदोष के मुखपाक के छाले जायँ। अथवा पटोल के पत्ते, त्रिफला, दारुहल्दी इनका काढ़ाकर उसमें शहद डाल कुल्ले करे तो त्रिदोष का मुखपाक जाय। अथवा खस, पटोल, नागरमोथा, हड़ की छाल, कुटकी, मुलहठी, अमलतास की छाल, रक्तचन्दन इनका काढ़ा ले अथवा इनके कुल्ले करे तो त्रिदोष के मुखपाक के छाले जायँ। अथवा तिलों की हाँड़ी, कमल की जड़, घृत, मिश्री, दूध, शहद इन सबको इकट्ठा कर कुल्ले करे तो त्रिदोष के मुखपाक के छाले जायँ। अथवा हल्दी, नींब के पत्ते, मुलहठी, कमल की जड़ इन्हें तेल में पकावे पीछे इस तेल के कुल्ले करे तो त्रिदोष के मुखपाक के छाले जायँ। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं।

दाँत हलते हों और उनमें पीड़ा भी होती हो उसकी औषध

पीपल, सेंधानोन, स्याह जीरा, हड़ की छाल, मोचरस इन्हें महीन पीस दाँतों को रगड़े तो दाँत हलते बन्द हों और उनकी पीड़ा जाय। अथवा नागरमोथा, हड़ की छाल, सोंठि, मिरच, पीपल, बायबिड़ंग, नींब के पत्ते इन्हें महीन पीस गोमूत्र की ३ पुट दे छाया में सुखाय

गोली करे पीछे वह गोली रात को मुख में धर सोवे पीछे प्रभात उस गोली को थूक दे फिर कुल्ले करे तो दाँत के सब रोग जायँ। अथवा फिटकरी नीलाथोथा, खैरसार, पपड़िया कत्था, तेजबल, कच्ची लाख, वंशलोचन, मिरच, आमले, मंजीठ, रूमी मस्तगी, मौलसिरी का बक्कल, सेंधा नोन, माजूफल, दक्षिणी सुपारी, इन्हें महीन पीस कपड़छान कर इसमें निर्गुण्डी के रस की १ पुट और चमेली के रस की १ पुट दे फिर धूप में सुखाकर महीन पीस दाँतों में रगड़े तो दाँत गाढ़े हों और दाँतों के सब रोग जायँ।

जीभ के रोग की पुनः औषध

कचनार के बक्कल का काढ़ा कर इसमें खैरसार मिलाकर कुल्ले करे तो जीभ के सब रोग जायँ।

गले के सब रोग दूर करने की गोली

तेजबल, पाढ़ा, रसौंत, दारुहल्दी, पीपल इन्हें महीन पीस शहद से गोली बाँधे पीछे गोली को मुख में रक्खे तो सब प्रकार के रोग जायँ।

मुखपाक के दूर करने की गोली

खैरसार, जायफल, भीमसेनी कपूर, दक्षिणी सुपारी, तज, पत्रज, नाग केसर, इलायची, कस्तूरी ये सब बराबर ले महीन पीस खैरसार के काढ़े में इनकी चने प्रमाण गोली बाँधे फिर इस गोली को मुँह में राखे तो जीभ, ओठ, दाँत, मुँह, गला, तालू इनके सब रोग जायँ।

दूसरी खैरसार की गोली

जायफल, कस्तूरी भीमसेनी कपूर, सुपारी इनकी बराबर खैरसार ले इन सबको महीन पीस गोली करे और मुख में राखे तो मुख के सब रोग जायँ।

दाँत में रुधिर निकले उसकी औषध

सेंधा नोन, खैरसार, कूट, धनियाँ, मिरच, सोंठि, सफेद भुना जीरा, भुना नीलाथोथा इन्हें महीन पीस दाँतों में मर्दन करे तो दाँत का रुधिर निकलना बन्द हो।

मुखपाक की और औषध

दारुहल्दी, गिलोय, चमेली के पत्ते, दाख, अजवायन, त्रिफला

इनका काढ़ा कर कुल्ले करे तो मुखपाक जाय। ये सब यत्न वैद्यरहस्य में लिखे हैं।

मुख पर की छाया के दूर करने का यत्न

पठानीलोध, धनियाँ, खुरासानी बच, गोरोचन, मिरच इन्हें महीन पीस मुख पर लेप करे तो मुँह की छाया जाय। अथवा सरसों, बच, लोध, सेंधा नोन इन्हें महीन पीस मुख पर लेप करे तो मुख की छाया जाय। अथवा रक्तचन्दन, मँजीठ, कूट, लोध, फूलप्रियंगु, बड़ के अंकुर, मसूर इन्हें जल से महीन पीस मुख की छाया के लेप करे तो छाया जाय। अथवा जायफल को घिस लेप करे तो छाया जाय। अथवा आक के दूध में हल्दी को भिगोय लेप करे तो मुख की छाया जाय। अथवा मसूर को दूध में पीस इसमें थोड़ा घृत मिलाय लेप करे तो मुख को छाया जाय और कान्ति बढ़े। अथवा केसर, रक्तचन्दन, लोध, खस, मँजीठ, मुलहठी, पत्रज, कूट, गोरोचन, हल्दी, लाख, दारुहल्दी, नागकेसर, फूलप्रियंगु, बड़ के अंकुर, चमेली के पत्ते, मोम, सरसों, बच इनका काढ़ा कर इसमें मधुरी आँच से तेल पकावे फिर इस तेल का मर्दन करे तो मुख की छाया, कील, तिल, मस्से आदि सब विकार जायँ।

इत्यष्टादशस्तरङ्गः ।। १८ ।।

—:(०):—

सब स्थावर के विषभाव की और इनसे उपजे रोगों की

उत्पत्ति, लक्षण, यत्न और संख्या

विष दो प्रकार का है—स्थावर और जंगम। स्थावर विष दश जगहों में रहता है। वृक्ष की जड़ में १, पत्र में २, फल में ३, पुष्प में ४, छाल में ५, वृक्ष के दूध में ६, वृक्ष के रस में ७, वृक्ष के गोंद में ८, धातुमात्र हरतालादिक में ९, कन्दनाम सिंगीमोहरादिक में १०, तथा जंगम विष १३ जगहों में रहता है। मनुष्यादिक की दृष्टि में १, सर्पादिक की श्वास में २, श्वान, श्रृगालादिक की डाढ़ में ३ व्याघ्रादिक के नखों में ४, बिषखपरादिकों के मल में ५, मूत्र में ६, बन्दरादिकों के शुक्र में ७, सिड़ी जानवर (बावले श्वान, श्रृगाल आदि)

की गुदा में ८, सर्पादिकों के हाड़ में ९, न्योला, मच्छर आदि के पित्ते में १०, भौंरादिक के काँटे में ११, मूषक के दाँत में १२ और सिंहादिकों के रोम में १३।

स्थावर विष खाने से जो रोग होते हैं उनका वर्णन

स्थावर विष के खाने से ज्वर, हिचकी हो, दाँत खट्टे हो जायँ, गला बँध जाय, मुख में फेना आवे, छर्दि, अरुचि, श्वास और मूर्च्छा हो। ये लक्षण हों तो जानिए कि स्थावर विष खाया है।

वृक्षादिकों की जड़ के विष के खाने का लक्षण

वृक्ष की जड़ का विष खाने से वमन और मोह होता है।

वृक्ष के पत्र के विष के खाने का लक्षण

वृक्ष के पत्र का विष खाने से जम्हाई बहुत आवे, शरीर काँपे और श्वास हो।

वृक्ष के फल के विष खाने का लक्षण

वृक्ष के फल के विष से मुख में सूजन, शरीर में दाह हो और भोजनमात्र में द्वेष होता है।

पुष्प के खाने और सूँघने से हुए रोग का लक्षण

पुष्प के खाने और सूँघने से छर्दि, अफरा और मूर्च्छा हो।

वृक्ष के बक्कल के खाने या लगने के विष का लक्षण

विषवाला बक्कल खाने और लगने से मुख में दुर्गन्ध आवे, शरीर कड़ा हो जाय, मस्तकपीड़ा हो, मुख में कफ बहुत निकले।

वृक्षादिक के दूध के विष के खाने का लक्षण

हृदय दूखे, मूर्च्छा हो, मुख में फेना आवे, गुदा का बन्ध छूट जाय, जीभ भारी हो जाय। ये लक्षण वृक्षदूध के विष से होते हैं।

हरतालादिक धातुओं के विष खाने का लक्षण

हृदय दूखे, मूर्च्छा हो, शरीर में दाह लग जाय और तालू में दाह हो इस विष से तत्काल मरे अथवा कालान्तर में मरे।

कन्दविष सिंगीमुहरा आदि के खाने आदि का लक्षण

सिंगीमुहरादिक के खाने से मनुष्यादिक तत्काल मर जायँ तथा हृदयदूखे, मूर्च्छा हो, शरीर में दाह हो, तालू जले।

शुद्ध हुए स्थावर विषमात्र के खाने का गुण

स्थावर विषमात्र रूखा, गर्म और तीक्ष्ण है, इसका सूक्ष्म गुण है स्त्रीसङ्ग बहुत कराता है और सब शरीर में तत्काल फैल जाता है तथा उग आता है और तत्काल इसका परिपाक हो जाता है ये दश गुण स्थावर विष में हैं।

स्थावर विष खाने से उपजे रोगों का वर्णन

विष के रूखेपन से मल बिगड़े और सब स्थानों के जोड़ों को काटे तथा विष के सूक्ष्मपने के गुण से शरीर के अङ्ग-अङ्ग में वह विष बँट जाय और विष के पराक्रम से स्त्रीसङ्ग बहुत करे। इस गुण से शरीर के दोषों, शरीर की धातुओं और शरीर के मल को बिगाड़ता है और विष के शीघ्रपने के गुण से शरीर को क्लेश देता है। इसी विष का यत्न अति कठिन है।

विष के पानी से बुझे हुए शस्त्र के लगने का लक्षण

विष के पानी से बुझा हुआ शस्त्र जिसके लगे उसका घाव तत्काल पक जाय, उसमें से काला रुधिर बहुत निकले और उसमें दुर्गन्ध बहुत आवे तथा जिसका मांस बिखर जाय, तृषा लगे, ताप, दाह, मूर्च्छा हो ये लक्षण हों तो जानिए कि किसी बैरी ने विष के पानी से बुझे हुए शस्त्र से मारा है।

विष देनेवाले के जानने के लक्षण

विष देनेवाले मनुष्य की वाणी की चेष्टा, मुख की कान्ति और सी हो जाय, कोई उससे पूछे तो उसको उत्तर न दे और का और ही कहे क्योंकि विष देनेवाला मोह को प्राप्त होता है इससे बोला नहीं जाता है। यदि बोले भी तो मूर्ख की तरह बोले, अंगुली से पृथ्वी खने, भग जाय, घर में से निकलना चाहें और इधर-उधर बारंबार देखता जाय तथा उसका चित्त विपरीत हो जाय ये सब लक्षण विष देनेवाले के होते हैं सो बुद्धिमान जान लें।

जङ्गम विष (सर्पादि के काटने) से उपजे रोगों का सामान्य लक्षण

जिसे ऐसे किसी जानवर ने काटा हो उसे निद्रा और तन्द्रा हो, उसका सब ज्ञान जाता रहे, दाह हो, अँधेरी आवे, उस स्थान में

सूजन हो और अतीसार हो ये सब लक्षण हों तो जानिए किसी विषैले जानवर ने काटा है।

भोगी-मण्डल (सर्प) के काटने के पृथक्-पृथक् लक्षण

वायु की प्रकृतिवाला भोगी, पित्त की प्रकृतिवाला मण्डल नाम, कफ की प्रकृतिवाला राजिल नाम ये सर्प जिसे काटें उनका लक्षण कहते हैं। भोगी सर्प जिसे काटे उसके दंश की जगह पीली पड़ जाय और उसके सब वायु के रोग उपज आवें तथा मण्डल नाम सर्प जिसे काटे उसके काटने की जगह पीली पड़ जाय और कोमल सूजन हो और उसके पित्त के सब रोग जायँ एवं राजिल नाम सर्प जिसे काटे उसके काटने की जगह में स्थिर सूजन हो और उस स्थान में पीला, चिकना, झागयुक्त गाढ़ा रुधिर निकले और उसके कफ के सब रोग हो जायँ।

देशविशेष और कालविशेष में जो सर्पादिक काटें उनका लक्षण

पीपल के स्थान में, देहरे में, मशान में, ड्योढ़ी के निकट, चौहटे में, सन्ध्या के समय, भरणी नक्षत्र और मघा नक्षत्र में, मर्मस्थान में जो सर्पादिक मनुष्य को काटें तो मनुष्य मर जाय।

दर्वीकर नाम सर्प के काटने का लक्षण

जिसका फन हिये के सदृश अथवा क्षत्र, कमल, अंकुश के सदृश हो और वह सर्प जल्दी चले उसे दर्वीकर कहिए। इतने मनुष्यादिकों के सर्पादिक काटें तो यत्न न करना। अजीर्णवाले को, गर्मी के विकार-वाले को, बालक को, बूढ़े को, भूखे मनुष्य को, घायल को, प्रमेहवाले को, गर्भवाली स्त्री को और जिसके शरीर में रुधिर न हो इन मनुष्यों को सर्पादिक काटें तो असाध्य जानिए। अथवा जिसके मुख में रुधिर की धार पड़े तथा जिसकी गुदा और इन्द्रिय में रुधिर की धार पड़े सो भी असाध्य है।

दूसरे विष का लक्षण

स्थावर और जङ्गम दो विष हैं ये बहुत दिनों के प्रभाव से और विषनाशक ओषध से हतवीर्य हो जाते हैं, उनका गुण जाता रहता है तथा उन विषों से मूर्च्छा, भ्रम और वमनादि हो जाते हैं।

मूसे के विष का लक्षण

जहाँ मूसा काटे उस जगह रुधिर पीला निकले और उस जगह मण्डल पड़ जाय तथा ज्वर, अरुचि, रोमांच और दाह हो ये लक्षण हों तो मूसे का काटा जानिए।

प्राणहर मूसे के विष का लक्षण

जिस मूसे के काटने से मूर्च्छा हो, अङ्ग में सूजन और शरीर का वर्ण और सा हो जाय, शरीर में बहुत खेद हो, काटने की जगह में रुधिर बहुत पड़े, ज्वर हो आवे, शिर भारी हो, लार बहुत पड़े, रुधिर आवे तो मूसे के काटे को असाध्य जानिए।

गिरगिट के विष का लक्षण

गिरगिट के काटने की जगह सूजन हो और वह जगह काली पड़ जाय, शरीर के नानावर्ण हो जायँ तथा मोह हो, अतीसार हो जाय तो जानो कि गिरगिट के काटने का विष है।

बिच्छू के काटने के विष का लक्षण

शरीर में जहाँ बिच्छू काटे उस जगह अग्नि लग जाय और ऊँचा चढ़े तथा काटने की जगह फटने लगे।

बिच्छू के काटने का असाध्य लक्षण

जो बिच्छू निपट ज़हरी हो और नाक में काटे तो उस जगह अग्नि बहुत जले, उसकी जीभ पीड़ा से थक जाय और उस जगह का मांस गिरने लगे ऐसा मनुष्य मर जाय।

विषैले मेंढक के काटने के विष का लक्षण

विषैले मेंढक के काटने से उस जगह सूजन और पीड़ा हो, उसे तृषा लगे, नींद बहुत आवे और वमन हो।

विषैली मछली के काटने के विष का लक्षण

विषैली मछली जिसे काटे उसके शरीर में दाह लगे और उस जगह सूजन और पीड़ा हो।

विषैली जोंक के काटने का लक्षण

उस जगह खाज और सूजन हो तथा मूर्च्छा हो तब जानिए कि यह विषैली जोंक के काटने का ज़हर है।

विषैली विषखपरी ने काटा हो उसका लक्षण

उस जगह दाह, सूजन और पीड़ा हो, पसीना आवे।

कनसलाई के काटने का लक्षण

जिस जगह कनसलाई काटे उस जगह पीड़ा हो, पसीना आवे और दाह हो।

मच्छर के विष का लक्षण

उस जगह खुजली चले, पीड़ा हो और कुछ सूजन हो।

वन के मच्छर के काटे का असाध्य लक्षण

जिसे विषैला मच्छर काटे उसके पित्तीसमान लाल चकत्त घाव समान गहरे पड़ जायँ और उस जगह पीड़ा बहुत हो यह असाध्य जानिए।

विषैली मक्खी के काटने का लक्षण

जिस जगह विषैली मक्खी अथवा भँवरमक्खी काटे वह जगह काली पड़ जाय, दाह हो, मूर्च्छा और ज्वर हो तथा वहाँ चकत्ते हों तो इसका काटा मर जाय।

सिंह, बघेरा, चीता जिसे काटे उसका लक्षण

जिसे सिंहादिक काटें उसका घाव पके और उसमें राद पड़े तथा ज्वर हो आवे।

बावले श्वानादि का लक्षण

जिसके मुँह से लार पड़े और वह श्वान अन्धा और बहरा होजाय तथा चौगिर्द दौड़े, उसकी पूँछ सूधी हो जाय, उसकी दाढ़, कन्धे और मस्तक दूखें इससे उसका मुख नीचे ही रहे ऐसा श्वान अथवा स्यार, सिंह, व्याघ्रादिक भी बावला जानिए।

बावले श्वानादिक जिसे काटें उसका लक्षण

जिसे बावले श्वानादिक काटें उसका रुधिर काला निकले, हृदय, शिर बहुत दूखे, ज्वर हो, शरीर जकड़बन्द हो, तृषा लगे, उस जगह खाज और पीड़ा हो, शरीर का वर्ण और सा हो जाय, शरीर में बहुत क्लेश हो, घुमेर आवे, दाह हो, काटने की जगह सूजन हो, गाँठ पड़

जाय, काटने की जगह फटने लग जाय और उस जगह फोड़े हों ये लक्षण बावले श्वान के काटने के जानिए।

इसका असाध्य लक्षण

जो पुरुष जल में, काँच में, तेलादि में स्यार और श्वान को देख पुकार उठे, टेढ़ी चेष्टा करे और डरे तो वह मर जाय।

स्थावर विषमात्र का यत्न

जो स्थावर विष खाय उसे औषधादिक से वमन कराइए तो स्थावर विष जाय। विषमात्र गर्म हैं इस वास्ते सब शीतल यत्न अच्छे हैं। अथवा शहद घृतसंयुक्त विष के दूर करनेवाली औषध दे तो स्थावर विष जाय। और स्थावर विषवाले को खट्टा रस खाने को और चबाने को मिरच देना। और उसके भोजन में साठी चावल, कोदों सेंधा नोन देवे।

विष के दूर करने का लेप

फूलप्रियंगु, मालकाँगनी की जड़, पान का बक्कल, फूल, बीज और सिरस का पञ्चाङ्ग इन्हें गोमूत्र में महीन पीस लेप करे तो स्थावर विष का रोग जाय। अथवा पीपल, रोहिष, जटामांसी, लोध, इलायची, शोरा, कालीमिरच, नेत्रबाला, सोनागेरू इन्हें जल से महीन पीस लेप करे तो विष जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में हैं। अथवा चौलाई की जड़ को चावलों के पानी में पीस पीवे तो स्थावर विष का दोष दूर हो।

जंगम विष का यत्न

मृत्युपाश छेदघृत

हड़ की छाल, गोरोचन, कूट, आक के फूल, कमल की जड़, नरसल की जड़, बेत की जड़, तुलसी, इन्द्रयव, मंजीठ, जवासा, शतावरि, सिंघाड़ा इनका काढ़ा कर उसमें गो का घृत पकावे पीछे ये सब जल जायँ घृतमात्र आय रहे तब इस घृत में बराबर का शहद डाल इसका शरीर में लेप करे तो विषमात्र का दोष, साँप का काटना आदि और सब जीवों का विष दूर हो। इस घृत को खाने में, लेप में और नास में दीजे। यह भावप्रकाश में है।

सर्प के विष के दूर होने का यत्न

घृत, शहद, मक्खन, पीपल, अदरक, मिरच, सेंधा नोन इन सबको महीन पीस पोवे तो काले साँप का काटा भी अच्छा हो। अथवा सिरस के फूल के रस में सहँजने के बीज की ७ पुट दे, पीछे उसका अञ्जन करे तो साँप का काटा अच्छा हो। अथवा सफेद साठी की जड़ को पुष्यार्क के दिन लाकर चावल के पानी से महीन पीस पीवे तो साँप का काटा अच्छा हो।

बिच्छू के विष का यत्न

जमालगोटे को घिस बिच्छू के डंक ऊपर लगावे तो विष दूर हो। अथवा नौसादर, हरताल इन्हें पानी में महीन पीस बिच्छू के डंक पर लेप करे तो बिच्छू का विष दूर हो। अथवा पलाशपापड़े को आक के दूध में घिस बिच्छू के डंक में लगावे तो विष दूर हो। अथवा सिरस के बीजों को बकरी के दूध में घिस बिच्छू के डंक में लगावे तो विष जाय।

बिच्छू के विष दूर होने का मन्त्र

ॐ आदित्यरथवेगेन विष्णुवाहुवलेन च। सुवर्णपक्षपातेन भूम्यां गच्छ महाविष। १। भोपक्षयोगपदाज्ञा श्रीशिवोत्तम प्रभुपदाज्ञा भूम्यां गच्छ महाविष। इस मन्त्र से २१ बार डंक के ऊपर झाड़ दे तो बिच्छू का जहर जाय।

कनेर के विष के दूर करने का यत्न

हल्दी को दूध में महीन पीस उसमें मिश्री मिलाकर पीवे तो कनेर का विष उतरे।

धतूरे के विष के दूर करने का यत्न

चौलाई की जड़ अथवा गिलोय इन्हें पीवे अथवा कपास के पञ्चाङ्ग को पीवे तो धतूरे का विष जाय।

आक के विष दूर होने का यत्न

हल्दी, तिल, दूब इन्हें बकरी के दूध में महीन पीस लेप करे तो आक का विष जाय।

कोंच के विष दूर होने का लेप

घृत का मर्दन करे तो कोंच का विष जाय।

भिलावें के विष के दूर होने का लेप

सौ बार के धोये घृत के मर्दन से भिलावें का विष जाय।

मक्खी के विष के दूर होने का लेप

केसर, तगर, सोंठि इन्हें जल से महीन पीस लेप करे तो मक्खी का विष जाय।

भौंरामक्खी के विष के दूर होने का यत्न

सोंठि, कबूतर की बीट, बिजौरे का रस, हरताल, सेंधा नोन इन्हें महीन पीस लेप करे तो भौंरामक्खी का विष जाय।

मूसे के विष के दूर होने का यत्न

धमासा, मंजोठ, हल्दी, सेंधा नोन इन्हें पानी में महीन पीस लेप करे तो मूसे का विष जाय।

मेंढक के विष के दूर होने का यत्न

सिरस के बीजों को थूहर के दूध में महीन पीस लेप करे तो मेंढक का विष जाय।

कनसलाई के विष दूर होने का लेप

दीपक के तेल का लेप करे तो कनसलाई का विष जाय।

सर्प के विष दूर होने का अञ्जन

जमालगोटे की मींगी में नींब के रस की ७ पुट दे धूप में सुखावे इसी तरह लाख के रस की १ पुट दे पीछे इसका अञ्जन करे तो साँप का काटा अच्छा हो।

बावला कुत्ता, स्यार आदि काटे उसका यत्न

ये जानवर जिस जगह काटें उस जगह का रुधिर निकला डालिए अथवा उस जगह लोहे की शलाका से दाग दे तो कुत्ता, स्यार आदि के विष दूर हों। अथवा धतूरे का रस ४ माशा, आक का दूध ४ माशा, घृत ४ माशा इन्हें महीन पीस लेप करे तो बावले कुत्ते का विष जाय। अथवा धतूरे के फल को बीजों समेत ले चौलाई की जड़ के रस में पीस अथवा गोभी और शहद से पीस पीछे लेप करे तो बावले कुत्ते का विष जाय। अथवा मांस, आक का दूध, तेल, गुड़ ये सब बराबर ले पीछे ४ माशा नित्य ७ दिन खाय तो इसका विष जाय।

अथवा इस मन्त्र से एक सौ आठ आहुति दे और जिसको बावला श्वान काटे उसे चौहटे में अथवा नदी के तीर स्नान कराकर आप पवित्र हो इस मन्त्र से एक सौ आठ आहुति दे पीछे डाभ से इसका झाड़ा दे तो उसका विष उतरे।

मन्त्र

अलर्काधिपते यक्ष सारमेय गणाधिप।

अलर्कजुष्टमेतन्मे निर्विषं कुरु मा चिरात् स्वाहा ॥ इति मन्त्रः ॥

अथवा गुड़, तेल, आक का दूध इनका लेप करे तो श्वान का विष जाय। अथवा कूकर की बीट का लेप करे अथवा ग्वार के पट्ठे की गिरी, सेंधा नोन उसके ऊपर ५ दिन बाँधे तो श्वान का विष जाय। अथवा चौलाई की जड़, तुलसी के बीज, खुरासानी बच इन्हें चावल के पानी में पीस ७ दिन पीवे तो श्वान का विष जाय। अथवा चौलाई की जड़ का रस और चोखा घृत मिलाय ७ दिन खाय तो श्वान का विष जाय अथवा कड़ुवी तूँबी की जड़ १६ माशा, सोंठि १६ माशा, मिरच १६ माशा, नींब की निबोली १६ माशा, शोधा जमालगोटा ३६ माशा, निशोत २८ माशा इन्हें महीन पीस गुड़ में १० माशा भर की गोली बाँधे। १ गोली गर्म पानी से ७ दिन तथा १४ दिन ले तो बावले श्वान का विष जाय। अथवा कड़ुवी तूँबी की जड़, शिंगरफ़, शोधा जमालगोटा, मिरच, फुलाया सुहागा ये सब बराबर ले इनकी २ रत्ती भर की गोली चौलाई के रस में बाँधे। १ गोली गर्म पानी से ७ दिन ले तो श्वान का विष जाय और जहाँ श्वान ने काटा हो वहाँ इस गोली को मूत्र में घिस लगावे तो मन्त्र में हो लट गिर पड़े।

इत्येकोनविंशतितमस्तरङ्गः। १९।

—:०:—

स्त्रियों के प्रदर आदि रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

प्रदररोग की उत्पत्ति

विरुद्ध भोजन से, बहुत मद के पीने, भोजन पर भोजन करने

अजीर्ण से गर्भ के पड़ने, अति मैथुन करने, सवारी के चढ़ने, मार्ग के चलने, शोच करने, अति तीक्ष्णपने, भार के उठाने, चोट के लगने और दिन के सोने से स्त्रियों के वायु, पित्त, कफ, सन्निपात ये सब कोप को प्राप्त हो प्रदररोग को पैदा करते हैं। वह प्रदररोग चार प्रकार का है-वायु का १, पित्त का २, कफ का ३, सन्निपात का ४।

प्रदररोग का सामान्य लक्षण

स्त्री की योनि में नानाप्रकार का रुधिर विना ही ऋतु निकले और रुधिर निकलते हड़फूटन हो तथा सब शरीर में पीड़ा हो उसे प्रदर-रोग कहिए।

वायु के प्रदर का लक्षण

योनि का रुधिर रूखा हो और झागों को लिए हो और मांस के पानी सदृश हो तो वायु का प्रदर जानना।

पित्त के प्रदररोग का लक्षण

योनि का रुधिर पीला, नीला, सफ़ेदी को लिये लाल और गर्म बहुत जाय तथा शरीर में दाह हो यह पित्तप्रदर का लक्षण है।

कफ के प्रदररोग का लक्षण

जिसका रुधिर गोंदसमान चिकना और गुलाब के जल समान जाय उसे कफ का कहिए।

सन्निपात के प्रदर का लक्षण

शहद अथवा घृत समान, हरताल के सदृश, मस्तक की गूदी के समान, मुरदे की सी दुर्गन्ध को लिये जिसका रुधिर जाय तो त्रिदोष का जानिए।

रुधिर के बहुत जाने का उपद्रव

बहुत रुधिर गिरने से दुर्बल हो जाय, श्रम हो, मूर्च्छा और मद हो, तृषा बहुत लगे, दाह और प्रलाप हो, शरीर पीला हो, तन्द्रा हो तथा वायु के और भी रोग होते हैं।

प्रदर का असाध्य लक्षण

योनि से निरन्तर रुधिर चला करे, बन्द न हो, तृषा लगे, दाह और शरीर में ज्वर हो, शरीर दुर्बल हो उसे असाध्य जानिए।

शुद्ध आर्तव नाम स्त्री के धर्म का लक्षण

जिस स्त्री की योनि का रुधिर महीने के महीने शशा के रुधिर समान निकले, रुधिर में दाह और रुधिर निकलते पीड़ा न हो तथा पाँच रात्रि तक निकले और न तो बहुत और न थोड़ा ही निकले उसे शुद्ध स्त्रीधर्म जानिए और स्त्रीधर्म १६ दिन रहता है।

प्रदररोग का यत्न

सोंचर नोन, जीरा, मुलहठी, कमलगट्टे इनका काढ़ा कर शहद डाल पीवे तो वायु का प्रदररोग जाय। अथवा मुलहठी १० माशा, मिश्री ८ माशा इन्हें महीन पीस चावल के पानी में ले तो पित्त का प्रदररोग जाय। अथवा रसौंत १० माशा, चौलाई की जड़ का रस ८ माशा भर उसमें शहद मिलाय ७ दिन पीवे तो सब प्रकार का प्रदररोग जाय। अथवा आसापाले के बक्कल का काढ़ा कर उसमें दूध डाल कर पीवे तो प्रदर का रोग जाय। अथवा डाभ की जड़ को चावल के पानी से पीस ३ दिन पीवे तो प्रदररोग जाय। अथवा कठूँबर के बक्कल के रस में शहद अथवा मिश्री और चावल का पानी डाल पीवे तो प्रदररोग जाय। अथवा दारुहल्दी, रसौंत, चिरायता, अड़ूसा, नागरमोथा, रक्त चन्दन, आक के फूल, इनका काढ़ा कर उसमें शहद डाल पीवे तो लाल, सफ़ेद, पीला सब प्रकार का स्त्री का प्रदररोग जाय। यह दार्व्यादिक्वाथ है।

अथवा गूलर के फूलों को सुखाकर उन्हें महीन पीस उसमें मिश्री, शहद डाल ४ माशा भर की गोली बाँधे पीछे इस गोली को ७ दिन खाय तो प्रदररोग जाय।

प्रदरभेद (सोमरोग) का लक्षण

स्त्रियों के बहुत प्रसङ्ग से, शोक से, खेद से, जहर के संयोग से अतीसार की भाँति स्त्रियों के अथवा पुरुष के भी सोमरोग होता है। इसमें बारम्बार बहुत मूत्र उतरता।

सोमरोग का सामान्य लक्षण

बारम्बार मूतने से दुर्बल अङ्ग और शिथिल शरीर हो जाय, मुख और तालू सूखा करें, मूर्छा हो, जँभाई बहुत आवें, प्रलाप हो, त्वचा सूख जाय और भोजनादिक में तृप्ति न हो ये लक्षण जिसके हो उसके सोमरोग जानना।

सोमरोग का यत्न

पक्के केले में मिश्री लगाकर खाय तो सोमरोग जाय। अथवा आँवले के रस में शहद डाल खाय तो सोमरोग जाय। अथवा उड़द का चून, मुलहठी, बिदारीकन्द इन्हें महीन पीस उसमें बराबर की मिश्री मिलाय १ टके भर दूध से नित्य १० दिन ले तो सोमरोग जाय।

सफेद प्रदर का यत्न

आँवले के २० माशा बीजों को जल में भिगोकर महीन पीस, छान उसमें शहद, मिश्री मिलाकर नित्य १४ दिन पीवे तो सफ़ेद प्रदर जाय।

मूत्रातीसार का लक्षण

सोमरोग बहुत दिन रहे तो मूत्रातीसार हो। इस मूत्रातीसार में बल जाता रहे और मूत्र बहुत उतरे।

मूत्रातीसार का यत्न

तालवृक्ष की जड़, छुहारा, मुलहठी, बिदारीकन्द इन्हें महीन पीस इसमें शहद, मिश्री मिलाकर १ टके भर नित्य खाय तो मूत्रातीसार जाय। अथवा पवाँड़ की जड़ को चावलों के पानी से पीवे तो मूत्राती-सार जाय अथवा सफ़ेद मूसली, तालवृक्ष की जड़, छुहारा, पक्का केला इन्हें दूध से पीवे तो मूत्रातीसार जाय।

प्रदर का और यत्न

मूसे की ८ माशा मेंगनी में बराबर की मिश्री मिलाकर दूध से ३ दिन पीवे तो स्त्री के लाल, सफ़ेद सब तरह के प्रदररोग अच्छे हों। अथवा धवई के फूल, बीजबोल, मूसे की मेंगनी इन सबको बराबर ले महीन पीस मिश्री मिलाय ८ माशा जल से ले तो प्रदर का रोग जाय।

स्त्रियों के योनिरोग की उत्पत्ति, लक्षण और संख्या

मिथ्या आहार, मिथ्या विहार करने से वायु, पित्त, कफ दुष्ट होकर स्त्री की योनि में बीस प्रकार के रोगों को उपजाते हैं। उनके नाम ये हैं—उदावर्त १, वन्ध्या २, विप्लुता ३, परिप्लुता ४, बातला ५,

लोहितक्षया ६, दुःप्रजाविनी ७, वामिनी ८, पुतघ्नी ९, पित्तला १०, अत्यानन्दा ११, कर्णिनी १२, कर्णिका १३, अतिचरणा १४, अनार्तवा १५, अस्तनी १६, खण्डिता १७, अण्डिनी १८, महाविवृता १९, सूचीवक्रा २०।

स्त्रियों की योनि का लक्षण

जो स्त्रीधर्म हो तो बड़े कष्ट में झाग को लिये रुधिर छोड़े उसे उदावर्त योनि कहिए १ और जो स्त्रीधर्म न हो उसे बन्ध्या योनि कहिए २, और जिसकी योनि में नित्य ही पीड़ा रहे उसे विप्लुता योनि कहिए ३, और जिस स्त्री के स्त्रीधर्म होने के समय बहुत पीड़ा हो उसे परिप्लुता योनि कहिए ४, और जिसकी योनि कठोर हो और योनि में शूल चले उसे वातला योनि कहिए ५, और जिसकी योनि में दाह रहे और रुधिर निकला करे उसे लोहितक्षया योनि कहिए ६, जिसकी योनि चुवा करे और कुपित रहे उसे दुःप्रजाविनी (दुःख से प्रसववाली) योनि कहिए ७, जिस स्त्री की योनि से पवनसंयुक्त रुधिर को लिये वीर्य निकले उसे वामिनी योनि कहिए ८, और जिस स्त्री के गर्भ रहे और फिर जाता रहे उसे पुत्रघ्नी योनि कहिए ९, और जिसकी योनि में दाह बहुत हो, पक जाय और शरीर में ज्वर रहे उसे पित्तला योनि कहिए १० तथा जिसकी योनि मैथुन से संतोष को न प्राप्त हो उसे अत्यानन्दा योनि कहिए ११, और जिसकी योनि कर्णफूल के आकार हो और उसमें कफ, रुधिर निकले उसे कर्णिनी योनि कहिए १२, तथा जिस योनि में वीर्य न रहे उसे अतिचरणा योनि कहिए १३, और जिस स्त्री के बहुत छोटे स्तन हों उसे अस्तनी योनि कहिए १४, और जिसकी योनि खण्डिता हो और मैथुन करते कुछ नीचे लटक आवे उसे खण्डिता योनि कहिए १५, और जिसकी योनि का छिद्र सूक्ष्म हो उसे अण्डिनी योनि कहिए १६, और जिसका मुँह बड़ा हो उसे महाविवृता योनि कहिए १७, और जिसका मुँह सुई के समान हो उसे सूचीवक्रा योनि कहिए १८।

योनिकन्दरोग की उत्पत्ति और लक्षण

दिन के सोने से, अति क्रोध के करने से, खेद से, अति मैथुन से

योनि के ऊपर किसी तरह की चोट लगने से अथवा योनि में नख दाँत के लगने से कफ कुपित हो योनि में योनिकन्द नाम रोग को उपजाता है।

योनिकन्दरोग का स्वरूप

योनि के बीच राद, रुधिर को लिये बड़हल के फल समान एक गाँठ पीछे कहे हुए कारणों से होती है उसे बद और योनिकन्द रोग कहते हैं। योनिकन्दनाम रोग चार प्रकार का है—वायु का १, पित्त का २, कफ का ३ और सन्निपात का ४।

वायु के योनिकन्द का लक्षण

योनि के बीच की गाँठ रूखी हो और उसका वर्णं अच्छा और योनि के वर्णं समान हो तथा उस गाँठ का मुख फटा हो उसे वायु का योनिकन्द कहिए।

पित्त के योनिकन्द का लक्षण

जिसकी योनि की भीतरी गाँठ दाह को लिये लाल हो और उसे ज्वर हो आवे उसके पित्त का योनिकन्द होता है और जिस स्त्री के योनिकन्द रोग होता है उसके स्त्री-धर्म नहीं होता है।

बन्ध्या स्त्री का यत्न

जिस स्त्री के स्त्रीधर्म न हो वह स्त्री नित्य मछली का मांस खाय तो स्त्रीधर्म हो। अथवा कांजी या तिल अथवा उड़द या दही नित्य खाय तो स्त्रीधर्म हो तब उसका बन्ध्यापन दोष दूर हो। अथवा साठी के बीज, कड़ुवी तूँबी, दन्ती, पीपल, गुड़, मेदल, दारू का झाग, जवाखार, थूहर का दूध इन सबको इकट्ठा कर महीन पीस योनि में इनकी बत्ती डाले तो स्त्री के स्त्रीधर्म तत्काल हो और उसके बन्ध्यापन का दोष तत्काल दूर हो। अथवा मालकाँगनी, राई, विजयसार, खुरासानी बच इन्हें महीन पीस शीतल जल से ५ दिन पीवे तो उस स्त्री के स्त्रीधर्म हो और उसका बन्ध्यापन जाय।

बाँझ स्त्री के पुत्र होने का यत्न

खरैटी, गंगेरन की छाल, महुआ, बड़ के अंकुर, नागकेसर ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस गौ के दूध में २० माशा चूर्णं शहद डाल इसको नित्य १५ दिन पीवे तो बन्ध्या स्त्री के निश्चय पुत्र हो।

स्त्रीधर्म न हो उसका यत्न

काला तिल, सोंठि, मिरच, पीपल, भारंगी, गुड़ इन सबको चार चार माशा भर ले और औटाय इनका काढ़ा कर १५ दिन पीवे तो उस स्त्री के स्त्रीधर्म निश्चय हो और रुधिर का गुल्म दूर होकर पुत्र हो। अथवा असगन्ध के काढ़े में गौ का दूध और घृत मिलाय ऋतु के समय स्त्री प्रभात ही ५ दिन पीवे तो स्त्री के गर्भ रहे। अथवा सफ़ेद कटेली की जड़ पुष्य नक्षत्र के दिन उखाड़कर २॥ टके भर पीस दूध के साथ ऋतु के समय ३ दिन स्त्री पीवे तो निश्चय गर्भ को धारण करे। अथवा कटसैला की जड़, धवई, बड़ के अंकुर, कमलगट्टे इन्हें महीन पीस १० माशा ऋतु के समय स्त्री पीवे तो निश्चय गर्भ को धारण करे। अथवा पार्श्वपीपल (सफ़ेदपीपल) की जड़ अथवा इसके बीज, सफ़ेद जीरा, सरफोंका ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस १० माशा ऋतु के समय स्त्री दूध के साथ ले तो उस स्त्री के गर्भ रहे और निश्चय उसके पुत्र हो। अथवा बाराहीकन्द, कैथा और शिवलिङ्गी इन्हें महीन पीस ऋतु के समय १० माशा दूध के साथ ले तो स्त्री के निश्चय पुत्र हो। ये यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं। अथवा बिजौरे के बीजों को गौ के दूध में पकाकर उसमें गौ का घृत मिलावे और उसकी बराबर नागकेसर मिलाय ऋतुसमय २० माशा मिश्री के साथ ७ दिन खाय तो स्त्री गर्भ को धारण करे। अथवा अरण्ड की अंडोली और बिजौरे के बीज इन दोनों को घृत में पीस दूध के साथ ऋतु में ३ दिन पीवे तो स्त्री गर्भ को धारण करे। अथवा पीपल, सोंठि, मिरच, नागकेसर इन्हें महीन पीस ऋतु के समय स्त्री घृत के साथ ३ दिन पीवे तो स्त्री गर्भ को धारण करे। यह सर्वसंग्रह में लिखा है।

गर्भ नहीं रहने का औषध

पीपल, बायबिड़ंग, सुहागा ये बराबर ले इन्हें महीन पीस ऋतु के समय स्त्री ५ दिन जल से ले तो स्त्री के कभी भी गर्भ न रहे। अथवा १ टके भर पुराने गुड़ को औटाय ऋतु के समय स्त्री नित्य १५ दिन पीवे तो स्त्री कभी भी गर्भ को न धारण करे। अथवा निंबोली

के तेल के फोहे को स्त्री ऋतु के समय योनि में ५ दिन दे तो स्त्री के कभी गर्भ नहीं रहे। यह भावप्रकाश में है।

स्त्री की योनि के रोगों का क्रम से यत्न

तगर, कटेली, कूठ, सेंधा नोन, देवदारु इनका काढ़ाकर इस काढ़े में तेल पकावे पीछे इस तेल का फोहा योनि में रक्खे तो विप्लुतायोनि का रोग जाय। अथवा पाढ़ल के पत्तों को या उसके बक्कल को सिझाय उससे योनि को पसीना लिवावे और धोया करे तो वायु की योनि के रोग जायँ। अथवा तिलों के तेल में निंबौली को पकाय उससे योनि को सेंके तो पित्त की योनि के रोग जायँ। अथवा पित्त को हरनेवाली औषध के घृत से योनि को सेंके तो पित्त की योनि के रोग जायँ। अथवा आँवले के रस में मिश्री डाल स्त्री १० दिन पीवे तो स्त्री की योनि का दाह जाय। अथवा कूकरभाँगरे की जड़ को चावलों के पानी के साथ पीवे तो स्त्री की योनि में राद पड़नी दूर हो। अथवा नींब के पत्ते, अमलतास के पत्ते, खुरासानी बच, अड़ूसे के पत्ते, पटोल के पत्ते इन्हें औटाय इससे योनि को धोवे तो योनि की दुर्गन्ध जाय। और पीपल, मिरच, उड़द, सौंफ, कूठ, सेंधा नोन इन्हें औटाय इससे योनि को धोवे तो योनि के कफ के सब रोग जायँ।

योनिसंकोचन की औषध

मूँग के फूल, खैरसार, हड़, जायफल, सुपारी इन्हें महीन पीस महीन वस्त्र से छान स्त्री की योनि में रक्खे तो स्त्री की योनि संकीर्ण हो अथवा कौंच की जड़ के काढ़े से योनि धोये स्त्री की योनि गाढ़ी हो। अथवा भाँग को महीन पीस इसकी पोटली कर स्त्री योनि में रक्खे तो योनि महासंकीर्ण हो। अथवा मोचरस को महीन पीस इसकी पोटली कर स्त्री योनि में रक्खे तो स्त्री की योनि संकुचित हो अथवा आँवले की जड़, कटसेला, बबूल की जड़, बेर की जड़, अड़ूसे की जड़, माजूफल इन सबको औटाय इस पानी से योनि को धोवे तो योनि संकोच हो। अथवा दही से योनि को धोये तो योनि संकोच हो। अथवा सफेद फिटकरी को फुलाय माजूफल मिलाय महीन पीस पोटली कर योनि में धरे तो योनि संकुचित हो।

योनि के सब रोगों के दूर होने का फलघृत

मंजीठ, मुलहठी, कूट, त्रिफला, मिश्री, खरैटी, मेद, असगन्ध, अजमोद, दोनों हल्दी, फूलप्रियंगु, कुटकी, कमल की जड़, दाख, रक्त चन्दन ये सब धेले-धेले भर ले और गो का घृत पावभर, शतावरि का रस एक सेर ले पीछे इनको मधुरी आँच से पकावे। जब ये सब जल जायँ घृतमात्र आय रहे तब इस घृत को पुरुष अथवा स्त्री नित्य १ टके भर पीवे तो नपुंसक पुरुष भी महाकामी, बड़ा पराक्रमी, पुत्रों को उपजानेवाला होता है और स्त्री इस घृत को खाय तो योनि के सब रोग जायँ तथा इस घृत के प्रभाव से स्त्री के दीर्घायु, बलवान् और बुद्धमान् पुत्र होवें।

योनिकन्द का यत्न

गेरू, बायबिड़ंग, हल्दी, कायफल इन सबको महीन पीस त्रिफले के काढ़े में शहद मिलाकर इस चूर्ण को स्त्री योनि में रक्खे तो स्त्री का योनिकन्दरोग जाय।

गर्भिणी स्त्री के रोगों का यत्न

जिस स्त्री का गर्भ गिरता हो उसे झाऊ की जड़, अतीस, नागरमोथा, मोचरस, इन्द्रयव इनका काढ़ा कर दे तो उस स्त्री का गर्भ गिरना बन्द हो।

गर्भिणी स्त्री के ज्वर का यत्न

मुलहठी, रक्तचन्दन, खस, गोरीसर, कमल की जड़ इनका काढ़ा-कर मिश्री शहद मिलाकर पीवे तो गर्भिणी स्त्री का ज्वर जाय।

गर्भिणी स्त्री की संग्रहणी का यत्न

चावलों के सत्तू को आम और जामुन के बक्कल के काढ़े से ले तो गर्भिणी स्त्री की संग्रहणी जाय। अथवा झाऊ वृक्ष का बक्कल, अरलू का बक्कल, रक्तचन्दन, खरैटी, धनिया, कुड़ा की छाल, नागरमोथा, जवासा, पित्तपापड़ा, अतीस इनका काढ़ा कर गर्भिणी स्त्री ले तो अतीसार और संग्रहणी ज्वर को दूर करता है।

स्त्री के गर्भ गिरने और गर्भस्राव की उत्पत्ति और लक्षण

बहुत मैथुन करने, मार्ग के चलने, ज्वर के आने, उपवास करने,

चोट के लगने, अजीर्ण में भोजन करने, दौड़ने, वमन करने, जुलाब लेने और तीखी, कड़ुवी, गर्म, रूखी वस्तु के खाने से तथा विषम आसन बैठने, भय के होने और पेट में शूल चलने से स्त्री के गर्भ का गिरना और गर्भ का स्राव होता है।

गर्भ के गिरने का और गर्भस्राव का पूर्वरूप

स्त्री के गर्भ रहे पीछे चार महीने में जो गर्भ गिरे तो उसे गर्भस्राव कहिए और चार महीने के उपरान्त पाँच-छः महीने में गर्भ गिरे उसे गर्भपात कहिए। इस जगह दृष्टान्त है जैसे वृक्ष का फल किसी चोट के लगने से गिर पड़ता है वैसे ही कच्चा गर्भ किसी तरह की चोट लगने से गिर पड़ता है।

गर्भ स्रवता हो उसके थँभने का यत्न

कमल की जड़, कमल की नाल, कमल के फूल, मुलहठी इन्हें दूध के साथ औटाकर पीवे तो गर्भस्राव बन्द हो और यही गर्भिणी स्त्री के दाह, मूर्च्छा, छर्दि और अरुचि इनको दूर करता है।

गर्भपात का उपद्रव

स्त्री के गर्भ गिरने से दाह हो, शूल हो, पसली और पीठ में पीड़ा हो, रजोधर्म बहुत हो और मूत्र उतरे नहीं, अथवा गर्भस्थान में जाय उसके भी यही उपद्रव होते हैं।

गर्भ पड़ता हो उसके थँभने का यत्न

डाभ की जड़, कास की जड़, अरंड की जड़, गोखरू की जड़ इनमें गो का दूध औटाय गर्भिणी स्त्री पीवे तो उसके हृदय आदि का शूल जाय। अथवा गोखरू, मुलहठी, कटेली, मदनबाण के फल इन्हें गो के घृत में औटाकर स्त्री पीवे तो गर्भ पड़ना बन्द हो और स्त्री के शरीर की सब प्रकार की वेदना जाय। अथवा कुम्हार की चाक की मिट्टी, गेरू, चमेली, मंजीठ, धवई के फूल, रसौंत, राल इनका चूर्ण कर २० माशा शहद से स्त्री ले तो स्त्री के प्रदर आदि सब रोग जायँ। अथवा भृङ्गी (भौंरा) जानवर के घर की मिट्टी, मंजीठ, लजालू, कसेरू, कमल की जड़ इन्हें गो के दूध में औटाकर स्त्री पीवे तो गर्भ गिरना बन्द हो।

गर्भिणी स्त्री के अफरा हो उसका यत्न

खुरासानी बच, रसौंत, हींग, काला नोन इनमें दूध औटाय पीवे तो गर्भिणी स्त्री का अफरा जाय ।

गर्भिणी स्त्री के मूत्र न उतरने का यत्न

डाभ की जड़, दूब की जड़, कास की जड़ इन्हें दूध में औटाकर गर्भिणी स्त्री पीवे तो मूत्र उतरे ।

महीने के महीने ये औषध दे तो स्त्री का गर्भ न गिरे

मुलहठी, शालवृक्ष के बीज, क्षीरकाकोली, देवदारु, लूणारुय (लोनियाँ शाक), काला तिल, राल, पीपल, शतावरि, कमल की जड़, जवासा, गौरीसर, रास्ना, दोनों कटेली, सिंघाड़ा, कसेरू, दाख, मिश्री, इन्हें औटाकर महीने के महीने ७ दिन पीवे तो स्त्री का गर्भ न गिरे और कोई उपद्रव भी न हो । ये सब यत्न सात महीने तक करे ।

आठवें महीने का यत्न

कैथा की जड़, कटेली की जड़, बेल की जड़, पटोल की जड़, साठी की जड़ इन्हें दूध में औटाकर पीवे तो गर्भ पुष्ट रहे ।

नवें मास का यत्न

मुलहठी, जवासा, क्षीरकाकोली, गौरीसर इन्हें धेले-धेले भर ले फिर उसे दूध में औटाकर पीवे तो गर्भ पुष्ट रहे ।

दसवें महीने का यत्न

सोंठि, क्षीरकाकोली इन्हें दूध में औटाकर पीवे अथवा सोंठि, मुलहठी, देवदारु, क्षीरकाकोली, कमलगट्टे, मंजीठ इन्हें जल में औटाकर जलसमेत दूध में औटावे पीछे पानी जल जाय दूध मात्र रह जाय तब इस दूध को पीवे तो स्त्री का गर्भ पुष्ट हो नीरोग रहे और उसके किसी तरह का उपद्रव न उठे ।

वायु से गर्भ सूख जाने का यत्न

जिस स्त्री का गर्भ वायु से सूख जाय उस स्त्री का उदर परिपूर्ण न हो, खाली रहे तब वह स्त्री पुष्टई के लिये दूध, मांसरस और पुष्ट वस्तु खाय तथा दूध पीवे तब वायु दूर होकर गर्भ परिपूर्ण होता है ।

गर्भस्थ बालक के होने का महीना

स्त्री नवें महीने अथवा दशवें महीने सन्तान को उपजाती है और कोई स्त्री ग्यारहवें अथवा बारहवें महीने सन्तान को उपजाती है और इन महीनों के उपरान्त जो गर्भ रहे वह गर्भ विकार का जानिए। इस गर्भ को उदर के रोगों में गिन उसका यत्न करना चाहिए।

स्त्री के सुखपूर्वक प्रसव होने का यत्न

साँप की काँचली, मरुवे (नाज्बोय) इन दोनों की योनि में धूनी दे तो स्त्री सुख से सन्तान जन्मे। अथवा कलिहारी की जड़ को स्त्री हाथ-पैर में बाँधे तो स्त्री के तत्काल प्रसूति हो। अथवा कूकर-भाँगरे की जड़ और पाढ़ल की जड़ को स्त्री हाथ-पैरों में बाँधे तो स्त्री के तत्काल प्रसूति हो। अथवा पोई की जड़ के काढ़े में तिलों का तेल डाल स्त्री गर्भ पर लेप करे तो सुख से तत्काल प्रसूति हो अथवा पीपल, खुरासानी बच इन्हें जल से महीन पीस योनि पर लेप करे तो सुख से तत्काल प्रसूति हो। अथवा अरण्ड के तेल को स्त्री की नाभि पर लेप करे तो तत्काल प्रसूति हो। अथवा बिजौरे की जड़, महुआ इन दोनों को घृत से पीस स्त्री पीवे तो तत्काल प्रसूति हो। अथवा साठी की जड़ को स्त्री की कटि में बाँधे तो तत्काल प्रसूति हो। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं। अथवा अपामार्ग की जड़ और काकलहरी की जड़ को कटि में बाँधे तो तत्काल प्रसूति हो। ये योग-चिन्तामणि में लिखे हैं।

सुख से तत्काल प्रसव करने का मन्त्र और यन्त्र

मुक्ताः पाशा विमुक्ताश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्तः सर्वभयाद्गर्भ एहि माचिर माचिर स्वाहा॥ इस मन्त्र से जल को ७ बार मन्त्रित कर स्त्री को पिलावे तो तत्काल प्रसूति हो। अथवा इस यन्त्र को स्त्री देखे तो तत्काल प्रसूति हो।

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

मूढ़गर्भ की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

स्त्री के शरीर में वायु कुपित हो योनि, उदर और कोख में शूल

---

१६ ६ ८ २ १० १८ १२ १४ ४

* नाड़ीऋतुवसुभिः सहपक्षदिगष्टादशभिरेव च। अर्कभुवनाब्धिसहितैरुभयत्रिंशकमाश्चर्यम्॥

को करे तथा मूत्र न उतरने दे और गर्भ को योनि में चार प्रकार से टेढ़ा कर देती है।

गर्भस्थ बालक की चार प्रकार की स्थिति

कीलक १ प्रतिखुर २ परिघ ३ बीज ४ और ऊर्ध्वबाहु, चरण, शिर और पसलियों के भेद से आठ प्रकार से बालक गर्भ में रहता है।

कीलक का लक्षण

योनि के मुख में कीला सा लग जाय उसे कीलक कहिए १, योनिद्वार में हाथ, पैर आड़ा आ जाय उसे प्रतिखुर कहिए २, योनि के मुख में आग सी लग जाय उसे परिघ कहिए ३, योनि के मुख में शिर आ अटके उसे बीजक मूढ़गर्भ कहिए ४, योनि के मुख में पेट आ अटके उसे ऊर्ध्वबाहु कहिए ५, योनि के मुख में पसवाड़ा आ अटके उसे चरणशिर कहिए ६, स्त्री की योनिद्वार का मुख नीचा हो ७, स्त्री की योनि के मुख में पसवाड़ा, पीठ आ अटके ८, इस प्रकार मूढ़गर्भ आठ प्रकार के होते हैं।

मूढ़गर्भ का असाध्य लक्षण

जिस गर्भवती स्त्री का मस्तक सूधा न रहे, लटका जाय और जिसकी लाज जाती रहे, अङ्ग शीतल हो जायँ, शरीर की नसें नीली हो जायँ उस स्त्री का बालक मरा जानिए तथा वह स्त्री भी मर जाती है।

अथवा जिस स्त्री के गर्भ में बालक मरा हो उस स्त्री का गर्भ फड़के नहीं और उसका मुख काला, पीला नसों को लिये हो और उसकी नाक और मुख के श्वास में मरे की सी दुर्गन्ध आवे और पेट में शूल चले ये लक्षण हों तो जानिए इसके उदर में मरा बालक है।

पेट में बालक के मरने का कारण

जिस स्त्री का भाई, माता, पिता, पुत्र, स्वामी आदि कोई प्यारा मरा हो अथवा उसका द्रव्यादिक किसी तरह से जाता रहे या उसके उदर में किसी तरह की चोट लग जाने से जो दुःख हो उस दुःख से

उसका गर्भ बहुत दुःखी हो और उसकी कोखि में अनेक रोग पैदा हों इस कारण उसके पेट का बालक पेट में मर जाता है।

गर्भिणी स्त्री का असाध्य लक्षण

जिस स्त्री की योनि का मुख मरे बालक से ढक जाय और कुक्षि में शूल चले उस गर्भ की मकल्लक संज्ञा है और पीछे कहे उपद्रव भी होते हैं। यह असाध्य है।

मूढ़गर्भ का यत्न

जिस स्त्री के गर्भसमय भग के निकट बालक बुरी तरह आ गया हो उसके वास्ते निपट चतुर जिसने बहुत से बालक अच्छी तरह जनाए हों ऐसी दाई को बुलाइए। वह हाथ में घृत लगाय उस हाथ को चतुराई से भग में डाल बालक को सूधाकर जीता ही तत्काल भग में से बाहर निकाल लेवे।

गर्भ में बालक मर गया हो उसका यत्न

निपट चतुर दाई चतुराई से भग में पैना छोटा नस्तर डाल उस मरे बालक का अङ्ग अङ्ग काटकर भग के बाहर निकाल ले। इस तरह भग में से बालक को न निकाले तो वह गर्भवती स्त्री भी उसके साथ मर जाय। मरे बालक को गर्भ में से निकाल भग को चतुराई से गर्म पानी से धोवे और उसी समय सुहावते गर्म घृत से अथवा तेल से चुपड़े तो भग कोमल रहे और उसमें शूलादिक कोई उपद्रव न होवें पीछे कड़ुवी तूँबी के पत्ते और पठानीलोध ये बराबर ले महीन पीस इसका भग में लेप करे तो भग ज्यों की त्यों अपने ठिकाने बैठ जाय अथवा पलाशपापड़ा, पक्के गूलर का फल इन्हें बराबर ले तिलों के तेल में महीन पीस भग में लेप करे तो भग गाढ़ी हो जाय और इसी तरह २१ दिन करे तो भग में कोई रोग न हो।

इसका और यत्न

सर्प की काँचली, कूट, सरसों इन तीनों को महीन पीस कड़ुए तेल से भग में धूनी दे तो भग के रोग जायँ। अथवा कलिहारी की जड़ को औटाकर उस पानी से हाथों और पैरों में लेप करे तो भग में से मरे बालक का दोष दूर हो।

मकल्लकरोग की उत्पत्ति और लक्षण

जिस स्त्री के सन्तान हुई हो और वह रूखी और वायु की करने-वाली वस्तु खावे तथा उसको तीक्ष्णद्रव्य पीपलामूल आदि न मिलें या वह न खाय तो उसके वायु नाभि के नीचे अथवा दोनों पसलियों में अथवा पेड़ू में रुधिर को रोक वायु की गाँठ करती है अथवा नाभि और पेड़ू, उदर और पक्वाशय में शूल को प्रकट करती है अथवा पेड़ू में अफरा कर मूत्र को रोक देती है उसको वैद्य मकल्लकरोग कहते हैं।

मकल्लकरोग का यत्न

जवाखार को गर्म पानी में पीस ले तो मकल्लकरोग जाय। अथवा पीपल, पीपलामूल, मिरच, सोंठि, चित्रक, चव्य, सम्हालू, इलायचो, अजमोद, सरसों, सेंकी हींग, पाढ़, इन्द्रयव, सफ़ेद ज़ीरा, बकायन, मुरहरी, अतीस, कुटकी, बायबिड़ंग यह पिप्पल्यादिगण है इन सबको बराबर ले महीन पीस १० माशा गर्म पानी से ले अथवा इनका काढ़ा कर इसमें थोड़ा सेंधा नोन डाल पीवे तो स्त्री के कफ या वायु के सब रोग जायँ और स्त्री के गोले, शूल, उदर के रोग और ज्वर को दूर करे और भूख लगावे, आँव को दूर करे तथा मकल्लकरोग को निश्चय ही दूर करे। अथवा सोंठि, मिरच, पीपल, तज, पत्रज, नागकेसर, इला-यची, धनियाँ इन सबको महीन पीस १० माशा पुराने गुड़ से ले तो मकल्लकरोग जाय, और जिस स्त्री के प्रसूति हुई हो उस स्त्री को युक्ति से आहार-विहार करावे तथा खेद, मैथुन, क्रोध, ठंढे में रहना ये कार्य न करे। मिथ्या आचरण करने से भी उसके सूतिका रोग होगा।

सूतिकारोग की उत्पत्ति

मिथ्या आहार से, बहुत क्लेश से, विषम आसन से, अजीण में भोजन से सूतिकारोग होता है। जापा (सौरि) में जो रोग होते हैं वे सब भयङ्कर हैं।

प्रसूतिकारोग का लक्षण

अङ्गों में पीड़ा हो, ज्वर और खाँसी हो, तृषा बहुत लगे, शरीर

भारी हो और शरीर में सूजन, पेट में शूल, अतिसार, अफरा हो, शरीर का बल जाता रहे, तन्द्रा और अरुचि हो इत्यादि वायु-कफ के बहुत रोग हों, और बल, मांस, अग्नि जाती रहे इन सब रोगों को सूतिका रोग कहिए।

सूतिकारोग का यत्न

जो औषध वायु को दूर करे वह औषध सूतिकारोगों को दूर करती है अथवा दशमूल का काढ़ा सूतिकारोग को दूर करे। अथवा गिलोय, सोंठि, सहँजना, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, नेत्रबाला, इनका काढ़ा शहद डाल दे तो सूतिकारोग दूर हो। अथवा देवदारु, खुरासानी बच, कूट, पीपल, सोंठि, चिरायता, जायफल, नागरमोथा, हड़ की छाल, गजपीपल, धमासा, गोखुरू, जवासा, कटेली, गिलोय, काला-जीरा ये सब बराबर ले इनका काढ़ा करे और हींग, सेंधा नोन की प्रतिवास दे यह काढ़ा दे तो सूतिकारोग, शूल, खाँसी, श्वास, ज्वर, मूर्च्छा, मस्तकपीड़ा, तन्द्रा, अतीसार, वमन, इन सब रोगों को यह दूर करता है। यह देवदार्वादि क्वाथ है।

पञ्चजीरकपाक

काला जीरा, सफ़ेद जीरा, सौंफ, अजवायन, अजमोद, धनियाँ, मेथी, सोंठि, पीपल, पीपलामूल, चित्रक, झाऊ की जड़ का बक्कल, बेर की मींगी, कूट, कबीला ये सब औषध टके-टके भर ले इन्हें महीन पीस कपड़छान कर पीछे गो के १ सेर घृत में मकरोवे पीछे इस चूर्ण को ४ सेर गौ के दूध के मावे में घृत से मकरोवे फिर चूर्ण को पका-कर इसका खैरामावा करे फिर इस मावे को १०० टके भर खाँड़ की चाशनी में डाले पीछे एक टके भर की गोली कर नित्य प्रसूता स्त्री खाय तो सूतिकारोग, ज्वर, क्षयी, श्वास, खाँसी, पाण्डुरोग, क्षीणता, वायु के रोग इनको यह पञ्चजीरकपाक दूर करे।

सौभाग्यशुण्ठीपाक

सतुवा सोंठि ॥ सेर महीन पीस कपड़छान कर ॥ सेर गौ के घृत में मकरोवे फिर ५ सेर खाँड़ की चाशनी कर इस चाशनी में ये औषध–धनियाँ ४ माशा, सौंफ २० माशा, बायबिड़ंग १ टकेभर,

सोंठि १ टके, कालीमिरच १ टके, पीपल १ टके, नागकेसर १ टके, नागरमोथा १ टकेभर महीन पीस कपड़छान कर डाले तथा सार २० माशा, अभ्रक २० माशा इसमें डाले और मेवा यथारुचि डाल पीछे १ टके भर की गोली बाँधे। इस गोली को स्त्री खाय तो तृषा, छर्दि, ज्वर, दाह, श्वास, खाँसी, पाण्डुरोग, मन्दाग्नि इनको यह दूर करे।

स्तनरोग का लक्षण

सब शरीर में फैलनेवाले वायु, पित्त, कफदोष ये दुष्ट होकर स्त्री के स्तन में जाय प्राप्त होते हैं और उस स्त्री के दूधसंयुक्त अथवा दूध रहित स्तनों में गाँठ आदि रुधिर के रोगों को पैदा करते हैं।

स्तनरोगों का यत्न

वैद्य स्त्री के स्तन पर सूजन देखे तो विद्रधि का सा पीछे लिखा यत्न करे तो स्त्री के स्तन के रोग जायँ। अथवा स्तन के ऊपर गाँठ कच्ची ही हो तो गाँठ को दूर करनेवाली शीतल ओषध लगावे तो स्तन के रोग जायँ। अथवा जोंक लगाकर स्तन का रुधिर कढ़ावे तो स्तन के सब रोग जायँ।

स्तन की पीड़ा का यत्न

गरडुंबा (इन्द्रायण) की जड़ को पानी में पीस लेप करे तो स्तन की पीड़ा जाय। अथवा हल्दी, धतूरे की जड़ इन्हें जलसे महीन पीस लेप करे तो स्तन की पीड़ा दूर हो। अथवा बाँझककोड़ी की जड़ महीन पीस जल से लेप करे तो स्तन की पीड़ा जाय। अथवा लोहे को गर्म कर पानी में बुझाय वह पानी स्त्री पीवे तो स्तनरोग जाय। ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं।

रांड़ स्त्री के गर्भनिवारण और गर्भ पातन का यत्न

ऋतु के समय चौथे दिन तालीस और गेरू ८ माशा महीन पीस शीतल जल से पीवे तो स्त्री बन्ध्या हो अथवा ऋतु के समय चौथे दिन पलाशपापड़े को शहद, घृत से महीन पीस भग में लेप करे तो वह स्त्री गर्भ को कभी धारण न करे। अथवा गाजर के बीज, कलौंजी इन्हें गुड़ के साथ खाय तो स्त्री का गर्भ गिर पड़े। अथवा चौलाई की जड़ को चावलों के पानी के साथ स्त्री ऋतु के समय ५ दिन पीवे तो

वह स्त्री बन्ध्या हो। अथवा ऋतु के समय नींब की जड़ की युक्ति मे योनि में धूनी दे तो स्त्री बन्ध्या हो। अथवा मेथीदाना ऽ॥ सेर, गुड़ ऽ॥ सेर इन्हें पानी से औटाय यह जल ५ दिन पीवे और गरडुंबा की जड़ और राल इनको बत्ती कर योनि में धरे तो राँड़ स्त्री का गर्भपात हो। अथवा कड़ुवी तूँबी और साँप की केचुली, सरसों इन्हें कड़ुवे तेल में पीस भग में धूनी दे तो स्त्री के गर्भ का पात हो।

इति विंशतिस्तरङ्गः। २०।

—:•:—

बालकों के रोगों की उत्पत्ति, लक्षण और यत्न

इन सूर्यादि ग्रहों से भिन्न बालकों के नवग्रह जुदे ही हैं वे नवग्रह अपवित्र बालकों को पीड़ा करते हैं इससे इन नवग्रहों से बालक की रक्षा करना चाहिए।

बालक के नवग्रहों के नाम

स्कन्धग्रह १, स्कन्दापस्मार २, शकुनी ३, रेवती ४, पूतना ५, गन्धपूतना ६, शीतपूतना ७, मुखमण्डिका ८ और नैगमेथ ९।

नवग्रहों की उत्पत्ति

ये नवग्रह स्वामिकार्त्तिक की रक्षा के लिये महादेवजी ने उत्पन्न किये हैं। इन नवग्रहों में किसी का स्वरूप महासुन्दर स्त्री का सा और किसी का सुन्दर पुरुष का सा स्वरूप है। स्वामिकार्त्तिकजी का विशाख नाम सखा अग्नि के समान शरीर की कान्तिवाला अग्नि से उत्पन्न है और अन्य शिव, पार्वती, कृत्तिका आदि से उत्पन्न हुए हैं। ये सब स्वामिकार्तिकजी के साथ रहते हैं। एक समय उन सबों ने मिल स्वामिकार्त्तिकजी से विनय की कि महाराज! हम भूखे हैं, खाने के वास्ते कोई आजीविका बतलाइए तब स्वामिकार्त्तिकजी ने श्री-महादेवजी से कहा। श्रीमहादेवजी ने आज्ञा दी कि जगत् में पशु-पक्षी आदि तिर्यग्योनि, मनुष्य और देवता रहते हैं। ये तीनों परस्पर उपकारी होते हैं। परन्तु देवता गर्मी, वर्षा, शीत और पवन आदि को यथाकाल प्रेरित कर सबको सुख पहुँचाते हैं और मनुष्य नमस्कार, जप, होमादिक से अच्छे प्रकार देवताओं को प्रसन्न करते

हैं। इससे जो मनुष्य देवता, ब्राह्मण आदि का पूजन नहीं करते हैं
उनके बालकों को पीड़ित करो और उन्हें खाओ।

बालग्रह से पीड़ित का लक्षण

जिन बालकों को ये बालग्रह लगते हैं वे बालक एक क्षण में उद्वेग
को प्राप्त हों और क्षण ही में डरने लग जायँ तथा एक क्षण में अपनी
धाय को नखों और दाँतों से काटने लग जायँ, आकाश की ओर
देखा करें, अपने दाँतों को चाबा करें, कराहा करें, जँभाई लिया करें,
भौंह चढ़ाया करें, ओठ काटा करें, मुख में झाग आवें, वमन करें,
अतीसारयुक्त भी हों और उनका शरीर क्षीण पड़ जाय, रात्रि में
जागे, शरीर में सूजन आ जाय, कण्ठ का स्वर घों घों हो जाय और
उनके शरीर में मछली की सी दुर्गन्ध हो, शरीर दुर्बल हो, गुदा में
रुधिर जाय और शरीर की संज्ञा जाती रहे ये लक्षण जिन बालकों में हों
उनके बालग्रह लगा जानिए। ये बालग्रह के सामान्य लक्षण हैं।

बालग्रहों के विशेष लक्षण

जिसके अङ्ग शिथिल हो जायँ, शरीर में रुधिर की दुर्गन्ध आवे,
स्तनों का दूध न पीवे, मुँह टेढ़ा हो जाय, आधा अङ्ग रह जाय, नेत्रों में
आँसू रहें तथा रोवे और ठोढ़ी, हाथ की मूठी बँधी रहे ये लक्षण जिसके
हों तब जानिए कि इसे स्कन्दग्रह लगा है।

विशाखग्रह का लक्षण

जिसकी संज्ञा जाती रहे और फिर संज्ञा आ जाय और कभी हाथ
पगों को नवाने लग जाय और बिन संज्ञा मल-मूत्र कर दे, जँभाई
बहुत आवें, मुख में झाग आवें तब जानिए कि इनको विशाखग्रह
लगा है।

शकुनीग्रह का लक्षण

अङ्ग शिथिल रहे, भय से चकित रहा करे, शरीर में मछली की सी
दुर्गन्ध आवे, शरीर में व्रण बहुत पड़ जायँ और दाह हो ये लक्षण हों
तब जानिए कि इसके शकुनीग्रह लगा है।

रेवती का लक्षण

जिसका मुँह लाल और हरा हो, पीली देह हो, पीड़ा को लिये

हाथ, पैर काले हों ऐसा बालक हो जाय तो जानिए कि इसके रेवती-ग्रह का दोष है।

पूतनाग्रह का लक्षण

जिसका शरीर शिथिल हो, रात-दिन सोवे नहीं, मल पतला पड़ जाय, शरीर में कागले की सी दुर्गन्ध आवे, छर्दि हो और तृषा बहुत लगे तो जानिए कि इसके पूतनाग्रह लगा है।

गन्धपूतनाग्रह का लक्षण

जो बालक स्तन का दूध न पोवे, अतीसार हो और खाँसी, हिचकी, छर्दि, ज्वर हो और शरीर का वर्ण जाता रहे और शरीर में रुधिर की सी दुर्गन्ध आवे तब जानिए कि इसको गन्धपूतना का दोष है।

शीतपूतना के दोष का लक्षण

जो बालक रोया ही करे, काँपा करे और जिसकी आँतें बोलें, शरीर शिथिल हो जाय और अतीसार बहुत हो ये लक्षण हों तो शीतपूतना का दोष जानिए।

नैगमेयग्रह के दोष का लक्षण

जिसके मुख में बहुत झाग आवें, बहुत काँपे, ऊँचा ही देखे, बहुत पुकारे और शरीर में दुर्गन्ध आवे और संज्ञा जाती रहे तब जानिए कि इसके नैगमेयग्रह का दोष है, और यही लक्षण डाकिनी के दोष का जानिए।

सामान्यग्रह के दोषों का यत्न

गोरखमुण्डी, खस इनका काढ़ा कर इस काढ़े से बालक को स्नान करावे। अथवा हल्दी, चन्दन, कूठ इन्हें पीस शरीर में लेप करे तो बालक के सामान्यग्रह के दोष दूर हों। अथवा साँप की केंचुली, लह-सुन, सरसों, नींब के पत्ते, बिलाई की बीट, बकरे के बाल, मेढ़े के सींग, घुड़बच, शहद ये सब पीस इनकी बालक के धूनी दे तो बालक के ग्रहों के सब दोष जायँ। अथवा उतारा आदि सब यत्न करे तो बालकग्रहों के दोष जायँ।

स्कन्दग्रह आदि बालकग्रहों के विशेष यत्न

वायु के दूर करनेवाले वृक्षों के पत्तों का काढ़ा कर उस बालक को

स्नान करावे तो बालकग्रह के दोष दूर हों। अथवा सरसों, साँप को केंचुली, बच, कागलहरी इन्हें कूट इसमें ऊँट के और बकरे के बाल मिलावे और घृत मिलाय इसकी बालक के घूनी दे तो बालकग्रहों के दोष दूर हों।

स्कन्दापस्मार के दोष का यत्न

बेल की जड़, सिरस की जड़, सफ़ेद दूब, सरसों, पाढ़, सफ़ेद राई, बावची, कायफल, कसूँभी, बायबिड़ंग, सम्हालू, गूलर, खरैटी, चिरपोटण (मकोय), बकायन, काली तुलसी, भारंगी इनके काढ़ा के पानी से बालक को स्नान करावे तो स्कन्दापस्मार आदि बालक-ग्रह दोष जायँ। अथवा गौ, बकरी, भेड़, भैंस घोड़ा, गधा, ऊँट इन सबके मूतों में तेल को पकावे। जब मूत्र जल जायँ और तेलमात्र आय रहे, तब इस तेल को बालक के मर्दन करे तो स्कन्दापस्मार, बालकग्रह का दोष जाय अथवा गोमूत्र, बकरी का मूत्र, मस्तककेश, हाथी का नख, बैल के रोम इनमें घृत मिलाय इनकी धूनी दे तो बालक के स्कन्दापस्मार का दोष जाय। अथवा जवासा, मैनसिल, कस्तूरी, कोंच की जड़ इनकी बालक के घूनी दे वा बालक के बाँधे तो बालक का स्कन्दापस्मार ग्रहों का दोष जाय। अथवा बालक को चौहटे में स्नान करावे तो स्कन्दापस्मार (विशाख) का दोष जाय।

शकुनीग्रह के दोष का यत्न

बेत की लकड़ी, आम की जड़, कैथा की जड़ इनके काढ़े के पानी से बालक को स्नान करावे तो शकुनीग्रह का दोष जाय। अथवा झाऊ की जड़, महुआ, खस, गौरीसर, कमल की जड़, पद्माक, पठानीलोध, फूलप्रियंगु, मंजीठ, गेरू इन्हें जल से महीन पीस इसका उबटना करे तो शकुनी ग्रह का दोष जाय। अथवा स्कन्दा-पस्मार ग्रह का यत्न जो पीछे कहा है वह शकुनी ग्रह के दोष को दूर करता है। अथवा शतावरि वा इन्द्रायण की जड़ तथा नागदोन वा कटेली अथवा सहदेई इनका पूजन कर बालक के गले में बाँधे तो शकुनी ग्रह के दोष दूर हों। अथवा तिल, चावल, फूलों की माला, हरताल, मैनसिल इनकी विधिपूर्वक शकुनी ग्रह को बलि दे और बालक

को औषध के जल से स्नान करावे तो शकुनी ग्रह का दोष दूर हो ।

रेवतीग्रह का यत्न

असगन्ध, मेढ़ासिंगी, गौरीसर, साठी की जड़, सेवती के फूल बिदारीकन्द इनका काढ़ा कर इसके पानी से बालक को स्नान करावे तो बालक के रेवतीग्रह का दोष जाय । अथवा बालक की देह में तेल का मर्दन करे अथवा कूठ, राल, गुग्गुल, खस, हल्दी इनकी बालक के धूनी दे तो रेवतीग्रह का दोष दूर हो । अथवा सुगन्धित सफेद फूल, चावल की खील, दूध, शालि, दही इन्हें बालक के ऊपर डाल स्नान करावे और इन्हीं की गोशाला में बलि दे तो बालक के रेवतीग्रह का दोष दूर हो ।

पूतनाग्रह का यत्न

नींब की छाल, विष्णुकान्ता, वन की छाल इनका काढ़ा कर बालक को स्नान करावे तो पूतनाग्रह का दोष दूर हो । अथवा नवीन बिदारी-कन्द, सफ़ेद दाख, हरताल, मैनसिल, कूठ, राल इनका काढ़ा कर इनके रस में तेल अथवा घृत पकावे पीछे इस तेल अथवा घृत का बालक के मर्दन करे तो पूतना का दोष दूर हो ।

गन्धपूतनाग्रह का यत्न

नींब के पत्ते, पटोल के पत्ते, कटेली के पत्ते, गिलोय के पत्ते, अड़ूसे के पत्ते इनका काढ़ा कर इस पानी से बालक को स्नान करावे तो गन्धपूतना का दोष जाय । अथवा पीपल, पीपलामूल, दोनों कटेली इनका काढ़ा कर इसमें गौ का घृत पकावे फिर इस घृत का मर्दन करे तो बालक के गन्धपूतना का दोष दूर हो । अथवा केसर, अगर, कपूर, कस्तूरी, चन्दन इन्हें महीन पीस बालक की आँखों के ऊपर लेप करे तो गन्धपूतना का दोष दूर हो अथवा कूकर की बीट, बालक के केश, वन की छाल, घृत इन्हें बालक के ऊपर उतार चौराहे में रक्खे तो गन्धपूतना का दोष दूर हो ।

शीतपूतनाग्रह का यत्न

गोमूत्र, बकरी का मूत्र, नागरमोथा, देवदारु, चन्दन आदि सब सुगन्ध ले इनमें तेल पकावे फिर इस तेल का बालक के मर्दन करे तो

शीतपूतना के ग्रह का दोष दूर हो। अथवा कुटकी, नींब की छाल, खैरसार, ढाक की छाल, काहू की छाल इनके काढ़े में घृत पकावे फिर यह घृत बालक को खवावे अथवा लेप करे तो शीतपूतना का दोष दूर हो। अथवा नींब के पत्तों की बालक के धूनी दे अथवा बालक को गुंजा की माला पहिरावे तो शीतपूतना का दोष दूर हो। अथवा नदी के तट के ऊपर मूंग, चावल शीतपूतना को समर्पण करे तो शीतपूतना का दोष दूर हो।

मुखमण्डिका ग्रह का यत्न

कैथा, बेल, अरणी, अड़ूसा, सफ़ेद अरण्ड, कूट इनके काढ़े के जल से बालक को स्नान करावे तो मुखमण्डिका का दोष जाय। अथवा भाँगरे के तेल या रस में तेल पकावे फिर इस तेल का बालक के मर्दन करे तो मुखमण्डिका का दोष जाय। अथवा राल, कूठ इनका काढ़ा कर इनके रस में घृत पकाय बालक के मर्दन करे तो मुखमण्डिका का दोष दूर हो। अथवा गौ के स्थान में बलि करे और वहाँ इस मन्त्र से स्नान करावे तो मुखमण्डिका का दोष दूर हो।

स्नान कराने का मन्त्र

अलंकृता कामवती सुभगा कालरूपिणी।
गोष्ठमध्या लयरता पातु त्वां मुखमण्डिका॥

नैगमेयग्रह का यत्न

बेल की जड़ का बक्कल, अरणी की जड़, कंजा की जड़, इनके काढ़े के पानी से बालक को स्नान करावे तो नैगमेयग्रह का दोष जाय। अथवा फूलप्रियंगु, जवासा, सौंफ, चित्रक, वृक्ष का बक्कल, गुड़हल, इनका काढ़ाकर इस काढ़े के रस में तेल पकावे फिर इस तेल के पकते ही में गोमूत्र, दही और कांजी डाले और पकावे। जब ये सब जल जायँ तेलमात्र आय रहे तब इस तेल को बालक के मर्दन करे तो नैगमेयग्रह का दोष जाय। अथवा तिल, चावल, फूलों की माला, लड्डू आदि मिठाई बालक के ऊपर ७ बार उतार वृक्ष के पास धरे तो नैगमेयग्रह का दोष दूर हो।

उतारे का मन्त्र

अजाननश्चलाक्षिभ्रूः कामरूपी महायशाः । बालं पालय भो देव नैगमेयोऽसि रक्षतु ॥ ये सब यत्न भावप्रकाश में लिखे हैं ।

रावणकृत बालतन्त्र

बालक के जन्म हुए के पीछे पहिले दिन, प्रथममास और प्रथम वर्ष में मन्दा नाम मातृका आदि रावण की बारह बहिन हैं वे बालक को पीड़ित करती हैं । उनके ये लक्षण हैं–बालक के ज्वर हो बहुत रोवे अथवा बोले नहीं उसके अच्छे होने के वास्ते बलि कहते हैं । नदी के दोनों तटों की मिट्टी ले उसका कोरी सैनक में पुतला करे और उसके पास चावल और सात सफेद फूल, ध्वजा, सात दिये, सात गुलगुले, सात पान, गन्ध, धूप, मांस, दारू, ये सब बालक के ऊपर उतार पूर्व दिशा की ओर चौराहे में मध्याह्न के समय बलि दे और पीपल के पत्ते मस्तक पर धर बालक को स्नान करावे तो मन्दा नाम मातृका का दोष दूर हो । इसी प्रकार चार दिन करे और बालक के सरसों, मेढ़े के सींग, नींब के पत्ते और शिवनिर्माल्य इनकी धूनी दे तो बालक अच्छा हो ।

उतारे का मन्त्र

ॐ नमो भगवते रावणाय हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा ।

बालक के जन्म से दूसरे दिन, दूसरे महीने, दूसरे वर्ष शुभद्रा नाम रावण की बहिन बालकों के दोष करती है उसका लक्षण

प्रथम ज्वर हो, नेत्र मिचे नहीं, शरीर काँपा करे बोले नहीं, उसके अच्छे होने के वास्ते यह बलि (उतारा) देवे–सवा सेर चावल, दही, मछली का मांस, मदिरा, तिल का चूर्ण ये सब सरवे में धर पश्चिम दिशा की ओर चौराहे में तीन दिन सन्ध्या समय बालक के ऊपर उतारा करे पीछे शालि के जल से बालक को स्नान करावे फिर शिवनिर्माल्य, खस, बिलाई के रोम, घृत, दूब इनकी बालक के धूनी दे ।

उतारे का मन्त्र

ॐरावणाय हन हन मुञ्च मुञ्च हुं फट् स्वाहा ॥ चौथे दिन ब्राह्मण भोजन यथाशक्ति करावे तो शुभद्रा नाम मातृका दोष जाय ।

तीसरे दिन, तीसरे मास, तीसरे वर्ष पूतना नाम रावण की बहिन
बालक के दोष करती है उसका लक्षण

प्रथम बालक के ज्वर करे, शरीर काँपे, बोले नहीं, पुकारा करे, आकाश की ओर देखा करे, उस बालक के सुख के वास्ते यह उतारा देवे-नदी के वारपार की मिट्टी ले उसका पुतला बनावे पुतले को सरवे में धरे उसके मध्य ताम्बूल, रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, सात दिये, सात डब्बी मांस, सुरा, भात धर दक्षिण दिशा में तीसरे प्रहर चौराहे में बलि दे पीछे शिवनिर्माल्य, गुग्गुल, सरसों, नींब के पत्ते, मेढ़े के सींग इनकी धूनी ३ दिन दे।

उतारे का मन्त्र

ॐनमो रावण य नमः हन हन मुञ्च मुञ्च त्रासय त्रासय स्वाहा।
चौथे दिन ब्राह्मण भोजन करावे तो बालक को आराम हो।

चौथे दिन, चौथे मास, चौथे वर्ष मुखमण्डिकानाम रावण की
बहिन के दोष करने का लक्षण

प्रथम ज्वर हो, कन्धा नवे नहीं, नेत्र फटे रहें, बालक बोले नहीं, रोया करे, सोये बहुत, हाथ की मुट्ठी बाँधे रहे उसके सुख के वास्ते यह उतारा देवे--नदी के दोनों तटों की मिट्टी ले पुतला बनावे उसके आगे कमल के फूल धरे और गन्ध, ताम्बूल, सफेद फूल, चार दिये, तेरह पुवे, मछली का मांस, सुरा, छाछ यह सब सरवे में धरे पीछे उत्तर दिशा में तीसरे पहर चौराहे में धरे तो बालक को सुख हो।

उतारे का मन्त्र

ॐनमो रावणाय हन हन मथ मथ स्वाहा।
चौथे दिन ब्राह्मण भोजन करावे तो बालक अच्छा हो।

पाँचवें दिन, पांचवें महीने, पाँचवें वर्ष पूतना नाम मातृका
रावण की बहिन के दोष का लक्षण

प्रथम ज्वर हो, शरीर काँपे, बोले नहीं और हाथ की मुट्ठी खोले नहीं।

उसके अच्छे होने का उतारा

कुम्हार के चाक की मिट्टी ले उसका पुतला बनावे उसके आग गन्ध, ताम्बूल, चावल, सफेद फूल, पाँच ध्वजा, पाँच दिया, बड़े ले

ईशान दिशा में उतारा धरे पीछे शान्ति के जल से स्नान करावे फिर शिवनिर्माल्य, साँप की केंचुली, घृत, नींब की पत्ती इनकी धूनी दे तो बालक अच्छा हो ।

उतारे का मन्त्र

ॐ नमो रावणाय नमः चूर्णय चूर्णय स्वाहा ।

चौथे दिन ब्राह्मण भोजन करावे तो बालक अच्छा हो ।

छठें दिन, छठे महीने, छठे वर्ष, शकुनी नाम मातृका का रावण की बहिन के दोष का लक्षण

प्रथम ज्वर हो, शरीर काँपे, रात्रि दिन चैन नहीं पड़े, ऊँचा देखे, उसके सुख के वास्ते उतारा--गेहूँ के चून का पुतला करे, सफेद फूल, लाल फूल, पीले फूल, मदिरा, मांस, १० दिये, १० ध्वजा, दूध, जामुन इनका उतारा अग्निकोण में मध्याह्न समय धरे पीछे शीतल जल से स्नान करावे और शिवनिर्माल्य, लहसुन, गुग्गुल, सरसों, साँप की केंचुली, नींब के पत्ते, घृत इनकी धूनी दे ।

उतारे का मन्त्र

ॐ नमो रावणाय चूर्णय चूर्णय हन हन स्वाहा ।

तीसरे दिन ब्राह्मण को भोजन करावे तो बालक अच्छा हो ।

सातवें दिन, सातवें महीने, सातवें वर्ष शुष्करेवती नाम मातृका रावण की बहिन के दोष का लक्षण

प्रथम ज्वर हो, गात काँपे, मुट्ठी बँधी रहे, रोवे बहुत उसके सुख के वास्ते उतारा--नदी के तट की मिट्टी का पुतला करे उसके आगे लाल फूल, ताम्बूल, लाल चावल की खिचड़ी, १० दिये, मांस, दारू, १३ ध्वजा ले पश्चिम दिशा में गाँव के बाहर तीसरे प्रहर उतारा धरे पीछे स्नान करावे और शिवनिर्माल्य, मेढ़े के सींग, सरसों, खस, घृत इनकी धूनी दे ।

उतारे का मन्त्र

ॐ नमो रावणाय तत्तेजसे हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा ।

चौथे दिन ब्राह्मण भोजन करावे तो बालक अच्छा हो ।

आठवें दिन, आठवें महीने आठवें वर्ष अर्यमा नाम मातृका
रावण की बहिन के दोष का लक्षण

प्रथम ज्वर हो, शरीर में दुर्गन्ध आवे, आहार ले नहीं, शरीर काँपे उसके सुख के वास्ते उतारा--लाल फूल, पीली ध्वजा, रक्तचन्दन, खीर, मांस, सुरा इनकी बलि प्रभात समय दे।

उतारे का मन्त्र

ॐ नमो रावणाय त्रलोक्यविद्रावणाय चतुर्दशमोक्षणाय ज्वर हन हन ॐ फट् स्वाहा।

नवें दिन, नवें महीने, नवें वर्ष, सूतिका नाम मातृका रावण की
बहिन के दोष का लक्षण

ज्वर हो, शरीर में पीड़ा हो, छर्दि हो उसके सुख के लिये उतारा नदी के दोनों तटों की मिट्टी का पुतला कर सफेद वस्त्र पहिरावे और सफेद फूल, गन्ध, ताम्बूल, १३ दिये, १३ ध्वजा ले उत्तर दिशा में गाँव के बाहर उतारा करे पीछे शान्ति के जल से स्नान करावे और गुग्गुल, नींब के पत्ते, गाय का सींग, सरसों, घृत इनकी धूनी दे।

उतारे का मन्त्र

ॐ नमो रावणाय हन हन स्वाहा।
चौथे दिन ब्राह्मण भोजन करावे तो बालक अच्छा हो।

दशवें दिन, दशवें मास, दशवें वर्ष क्रियानाम मातृका
रावण की बहिन के दोष का लक्षण

ज्वर हो, शरीर काँपे, रोवे, मल-मूत्र कर दे उसके सुख के लिये उतारा--नदी के दोनों तटों की मिट्‌टी का पुतला करे पीछे गन्ध, ताम्बूल, रक्तपुष्प, रक्तचन्दन, ५ ध्वजा, ५ दिये, पुवा, मांस, सुरा ले वायव्य कोण में बलि दे पीछे काकविष्ठा, गौ का सींग, बिलाई के रोम, नींब के पत्ते, घृत इनकी धूनी दे।

उतारे का मन्त्र

ॐनमो रावणाय चूर्णितहस्ताय मुञ्च मुञ्च स्वाहा।
चौथे दिन ब्राह्मण भोजन करावे तो बालक अच्छा हो।

ग्यारहवें दिन, ग्यारहवें मास, ग्यारहवें वर्ष पिपीलिकानाम मातृका रावण की बहिन के दोष का लक्षण

ज्वर हो, आहार ले नहीं उसके सुख के लिये बलि–गेहूँ के आटे का पुतला कर उस पुतले के मुख में दूध,की धार दे, पीछे रक्तचन्दन, पीले फूल, गन्ध, ताम्बूल, ७ दिये, ८ बड़े, मालपुवा, मांस, सुरा ले पूर्वदिशा में उतारा धरे पीछे शान्ति के जल से स्नान करावे और शिवनिर्माल्य, गुग्गुल, गौ का सींग, साँप की केंचुली, घृत इनकी धूनी दे।

उतारे का मन्त्र

ॐनमो रावणाय मुञ्च मुञ्च हन हन स्वाहा।

चौथे दिन ब्राह्मणों को भोजन करावे तो बालक अच्छा हो।

बारहवें दिन, बारहवें मास, बारहवें वर्ष कामुका नाम मातृका रावण की बहिन के दोष का लक्षण

ज्वर हो, हँसे, हाथ से दूर करे, पुकारे बहुत, श्वास बहुत ले उसके सुख के लिये उतारा–मावे का पुतला करे पीछे गन्ध, ताम्बूल, सफ़ेद पुष्प, ध्वजा, ७ मालपुवा इनकी बलि दे फिर शान्ति के जल से स्नान करावे और शिवनिर्माल्य, गुग्गुल, सरसों, घृत इनकी धूनी दे।

उतारे का मन्त्र

ॐ नमो रावणाय मुञ्च मुञ्च हन हन स्वाहा।

चौथे दिन ब्राह्मणों को भोजन करावे तो बालक अच्छा हो। यह रावण का बनाया कुमारतन्त्र चक्रदत्त में लिखा है।

वायु के रोगों की उत्पत्ति और लक्षण

धाय के भारी गरिष्ठ भोजन करने से और उसके वायु, पित्त के रोगों से बालक के शरीर में दोष कोप को प्राप्त होते हैं तथा ऐसे ही कुपथ्य के भोजन से धाय के स्तन में प्राप्त हो दूध के द्वारा बालक के वायु के रोग होते हैं तब वह बालक क्षीण हो जाय, मुख सफ़ेद हो जाय, शरीर कृश हो जाय और उसके मलमूत्र कठिनता से उतरें इत्यादि वायु के और भी रोग होते हैं। ऐसे ही पित्त से दूषित दूध पीवे तो बालक के पित्त का रोग पैदा होता है। उससे बालक के पसीना आवे, मल पतला जाय, शरीर पीला पड़ जाय, तृषा बहुत लगे, शरीर

गर्म रहे इत्यादि पित्त के रोग होते हैं और उसके लार बहुत पड़े, नींद बहुत आवे, शीत बहुत रहें, शरीर सुन्न हो जाय और नेत्र, मुँह सब शरीर भारी रहे तथा ज्वर आदि जो रोग बड़े आदमी के होते हैं वे ही बालक के होते हैं और तालुकण्टक आदि रोग बालक के ही होते हैं बड़े मनुष्य के नहीं होते।

तालुकण्टक का लक्षण

तालु के मांस में बालक के कफ कोप करे तब उसके तालु में काँटे पड़ जायँ, तालु बैठ जाय और तालु के बैठने से दूध न पीवे, मल पतला जाय, तृषा बहुत हो, आँखें दूखें, कंठ और मुँह में पीड़ा हो, मस्तक उठे नहीं और वमन करे।

महापद्मरोग का लक्षण

बालक के मस्तक में और गुदा में रोग पैदा हों और वायु पैदा हो तथा पद्म के वर्णसमान जिसका वर्ण हो ये तीनों दोषों के कोप से होते हैं। प्रथम वह रोग कनपटियों से हृदय में आवे पीछे हृदय से गुदा में आवे ऐसे ही पेड़ू से गुदा में जाय और गुदा से फिर हृदय में जाय तथा हृदय से शिर में आवे।

कुकूणकरोग का लक्षण

दुष्ट दूध के पीने से बालक के कुकूणक रोग होता है उसमें नेत्र दूखें, नेत्रों में खाज हो, आँसू बारम्बार बहुत पड़ें और वह बालक ललाट, नेत्र, नाक इन्हें घिसा करे, धूप की ओर देखे नहीं और आँख खुले नहीं इसे कुकूणकरोग कहिए।

तुण्डिगुदापाकरोग का लक्षण

बालक की गुदा पक जाय और उसकी नाभि में पीड़ा हो उसे तुण्डिगुदापाकरोग कहिए।

अहिपूतनारोग का लक्षण

बालक की गुदा मल-मूत्र से लिपी रहा करे अथवा धोवे अथवा कपड़े से पोंछे, वायु लगे तब खाज हो और गुदा लाल रहे और वह बालक गुदा को खुजावे तब उसके फोड़े हों, उसकी गुदा से पसीना झरा करे और उसको गुदा में भयंकर व्रण हो जायँ उसको अहिपूतनारोग कहिए।

अजगल्लीरोग का लक्षण

जिसके शरीर में चिकनी, लाल वर्ण की मूँगप्रमाण बहुत सी फुंसियाँ हो जायँ और उनमें पीड़ा नहीं हो वे कफ और वायु से उपजती हैं उनको अजगल्लिका कहिए।

पारिगर्भिकरोग का लक्षण

जो बालक गर्भिणी स्त्री का दूध पीवे तो उसके खाँसी आवे, अग्नि मन्द हो जाय, शरीर में दाह और तन्द्रा हो, क्षीण पड़ जाय, अरुचि हो, घुमेर आवे और उसका पेट बढ़ जाय उसे पारिगर्भिकरोग कहिए।

बालक के दाँतों का रोग

बालकों के दाँत आने के समय ज्वर हो, पेट छूट जाय, खाँसी आवे, छर्दि हो, मस्तक और आँखें दूखें तथा रतुवा हो ये लक्षण दाँतों के रोगों के जानिए।

बालकों के रोगों का यत्न

जो बड़े आदमियों के रोग होते हैं वे ही बालकों के हों तो जो यत्न बड़े आदमियों का करे वही बालकों का करना। बालक के एक वर्ष तक एक रत्ती और दूसरे वर्ष से १ माशे औषध देना यह मर्यादा है। बालक जहाँ हाथ लगाकर रोवे वहाँ रोग जानिए और उसका यत्न करिए।

बालक के ज्वर का विशेष यत्न

नागरमोथा, हड़ की छाल, नींब की छाल, पटोल इनका काढ़ा कर उसमें शहद डाल बालक को पिलावे तो बालक का सब प्रकार का ज्वर जाय। यह सर्वज्वर के ऊपर भद्रमुस्तादि क्वाथ देना चाहिए।

बालक के ज्वरातीसार का यत्न

नागरमोथा, पीपल, अतीस, काकड़ासिंगी इनका चूर्ण कर शहद से बालक को चटावे तो बालक का ज्वरातीसार जाय और खाँसी, वमन को दूर करे। यह चातुर्भद्रादि है।

बालक के अतीसार का यत्न

बेल की गिरी, धवई के फूल, नेत्रबाला, लोध, गजपीपल इनके काढ़े में शहद डाल दे तो बालक का अतीसार जाय।

बालक के भयङ्कर अतीसार का और यत्न

मंजीठ, धवई के फूल, लोध गौरीसर इनका काढ़ा शहद डाल दे तो बालक का भयङ्कर भी अतीसार जाय। यह समङ्गाद्रिक्वाथ है।

बालक के आमातीसार का यत्न

बायबिड़ंग, अजमोद, पीपल इन्हें महीन पीस चावल के पानी से दे तो आमातीसार जाय। यह बिड़गादिक्वाथ है।

बालक के रक्तातीसार का यत्न

मोचरस, मंजीठ, धवई के फूल, कमल के फूल इन्हें महीन पीस साठी चावल के माड़ में दे तो रक्तातीसार जाय।

बालक के सब प्रकार के अतीसार का यत्न

सोंठि, अतीस, नागरमोथा, नेत्रबाला, इन्द्रयव इनका क्वाथ दे तो बालक का सब प्रकार का अतीसार जाय।

बालक के मोड़ानिबाही का यत्न

चावल की खील, मुलहठी, महुआ इन्हें महीन पीस मिश्री और शहद में चटावे तो बालक को मोड़ानिबाही जाय।

बालकों की संग्रहणी का यत्न

हल्दी, चव्य, देवदारु, कटेली, गजपीपल, पृष्ठिपर्णी, सौंफ इन्हें महीन पीस, शहद, घृत के साथ चटावे तो संग्रहणी और पाण्डुरोग के ज्वरातीसार को दूर करे और भूख लगावे। यह रजन्यादि चूर्ण है।

बालक की खाँसी का यत्न

नागरमोथा, अतीस, अड़ूसा, पीपल, काकड़ासिंगी इन्हें महीन पीस शहद के साथ चटावे तो बालक की पाँच प्रकार की खाँसी और श्वास जाय। यह मुस्तादि है।

खाँसी का और यत्न

कटेली के फूलों की केसर को शहद से चटावे तो बालक की खाँसी जाय।

खाँसी और श्वास का यत्न

मुनक्का, ढाख, अड़ूसा, हड़ की छाल, पीपल इन्हें महीन पीस शहद और घृत के साथ चटावे तो बालक की हिचकी और छर्दि जाय।

बालक की छर्दि का यत्न

आम की गुठली, चावल की खील, सेंधा नोन इन्हें महीन पीस शहद से चटावे तो बालक की छर्दि जाय।

बालक के दूध गिराने का यत्न

कटेली के डोंडे का रस, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि इन्हें महीन पीस शहद और घृत से चटावे तो बालक की छर्दि जाय।

बालक के पेट में अफरा और शूल चले उसका यत्न

सेंधा नोन, सोंठि, इलायची, सेंकी हींग, भारंगी इन्हें महीन पीस गर्म पानी से ले तो बालक का अफरा और शूल जाय।

बालक का मूत्र बन्द हो गया हो उसका यत्न

पीपल, मिरच, छोटी इलायची, सेंधा नोन इन्हें महीन पीस मिश्री और शहद से चटावे तो मूत्र अच्छी तरह से उतरे।

बालक के लार बहुत पड़े उसका यत्न

गौरीसर, तिल, लोध इनका काढ़ा कर शहद डाल बालक को पिलावे तो बालक की लार पड़ती बन्द हो।

बालक के मुँह में छाले पड़े हों उसका यत्न

पीपल बक्कल और पत्तों को महीन पीस शहद में मिलाकर चटावे तो बालक के मुख के छाले अच्छे हों।

बालक की नाभि में सूजन हो उसका यत्न

पीली मिट्टी को अग्नि से लाल कर दूध में मिलाकर लगावे तो सूजन अच्छी होती है।

बालक की नाभि पक गई हो उसका यत्न

हल्दी, लोध, फूलप्रियंगु इन्हें शहद से महीन पीस नाभि में लेप करे तो नाभि का पकना अच्छा हो।

बालक की गुदा पक गई हो उसका यत्न

रसौंत को पानी में महीन पीस बालक की गुदा में लेप करे तो गुदा पकती बन्द हो। अथवा शंख, मुलहठी, रसौंत इन तीनों को महीन पीस लगावे तो बालक की गुदा पकती बन्द हो।

बालक के दाँत दोहरे आवें उसका यत्न

धवई के फूल, पीपल इन्हें आँवले के रस में बालक के मुँह में

लगावे तो दाँत अच्छी तरह आवें, और लाक्षादितेल से बालक के ज्वारादिक सब रोग जायँ।

इत्येकविंशतिस्तरङ्गः ॥ ११ ॥

—:०:—

वाजीकरण

जो औषध पुरुष को घोड़े के समान मैथुन करने में बलवान् करे उसको वैद्य वाजीकरण कहते हैं।

नपुंसक के लक्षण, निदान और संख्या

नपुंसक ७ प्रकार के होते हैं। स्त्री से रमण की इच्छा तो हो और सङ्ग हो नहीं इस कारण से लिङ्ग उठे नहीं उसे नपुंसक कहिए। कड़वी वस्तु, खटाई, गर्म वस्तु, नोन इनके बहुत खाने से नपुंसक हो अथवा शोक से तथा क्रोधादि के करने से वीर्य का नाश हो अथवा पुत्र, स्त्री, धन आदि के नाश से नपुंसक हो अथवा लिङ्ग में किसी तरह हाथ की चोट लगने से लिङ्ग की नस मारी जाय उससे और बहुत ब्रह्मचर्य के रहने से नपुंसकता होती है इत्यादि और भी कारण हैं।

नपुंसकपने का यत्न

नानाप्रकार के मधुर, मनोहर, अतिस्वादयुक्त भोजन करने से नपुंसकपना जाय। अथवा सर्वाङ्ग महासुन्दर स्त्री के स्पर्श करने से नपुंसकपना जाय। अथवा महासुन्दरी स्त्री की मधुर, मनोहरवाणी के सुनने से नपुंसकपना जाय। अथवा तांबूल, सुन्दर आसव को पीना, उपवन का रहना, पुष्टई की औषध, दूध, मिश्री के संयोग की और मृगाङ्क, चन्द्रोदय आदि सातों धातु, दधि, सिखरन, उड़द ये सब वस्तु नपुंसकपने को दूर करती हैं। अथवा अमरस आदि का भोजन, भीमसेनी कपूर और कस्तूरी के संयोग की पान की बीड़ी आदि और भी वस्तुओं से नपुंसकपना जाय।

गोखुरादि चूर्ण

गोखुरू, तालमखाना, असगन्ध, शतावरि, सफेद मुसली, कौंच के बीज, मुलहठी, खरैटी के बीज, गंगेरन की छाल ये सब बराबर ले इन्हें महीन पीस इसमें मिश्री अनुमान मुवाफ़िक मिलाय औटाय

दूध के साथ ६ माशा भर रात्रि में नित्य ले और पथ्य से रहे तो नपुंसकपना जाय।

सुपारीपाक

दक्षिणी सुपारी ڄ॥ सेर ले उसे दो दिन जल में भिगोवे पीछे उन्हें महीन कतर सुखाय ले फिर उसका चूर्ण करे और वस्त्र से छान बराबर घृत से मकरोय अठगुने दूध में उसका खेरामावा करे पीछे अठगुनी मिश्री की चाशनी कर उसमें सुपारी का मावा डाले और ये औषधें इसमें मिलावे—इलायची, खरैटी, गंगेरन की छाल, जायफल, लवङ्ग, जावित्री, पत्रज, सोंठि, शतावरि, मूसली, कोंच के बीज, विदारीकन्द, गोखुरू, दाख, सालममिश्री, सिंघाड़ा, जीरा, छड़, वंशलोचन, असगन्ध, केसर, कस्तूरी, कपूर, चन्दन. भीमसेनी कपूर, अगरु ये सब औषध २ टके भर ले या वैद्य अपनी बुद्धि मुवाफ़िक ले और मृगाङ्क, चन्द्रोदय, बङ्गसार, अभ्रक, सुगन्धद्रव्य, मेवा अपनी बुद्धि मुवाफ़िक इसमें डाले पीछे १ टके प्रमाण इसका मोदक करे। १ मोदक नित्य खाय और पथ्य से रहे तो निश्चय ही नपुंसकपना जाय। यह रतिवल्लभपुङ्गीपाक है।

आम्रपाक

पक्के मीठे आम का रस १६ सेर, मिश्री ४ सेर और घृत १ सेर इन सबको ले मिट्टी के बासन में पकाय गाढ़ाकर चाशनी समान करे और चाँदी के बासन में भरे पीछे इसमें ये औषधें डाले—सोंठि ८ टके भर, मिरच ८ टके भर, पीपल २ टके भर, धनियाँ २ टके भर, जीरा १ टके भर, चित्रक १ टके भर, पत्रज १ टके भर, दालचीनी १ टके भर, नागकेसर १ टके भर, केसर १ टके भर, इलायची १ टके भर, लवङ्ग १ टके भर, जायफल १ टके भर, कस्तूरी ४ माशे, भीमसेनी कपूर ४ माशा भर, शहद पावभर पीछे इन सबको एकजीव कर अमृतबान में भर रक्खे फिर इनमें से १ टके भर नित्य खाय तो नपुंसकपना दूर हो तथा स्त्री से सङ्ग बहुत करावे और संग्रहणी, क्षयी, श्वास का रोग, अरुचि, अम्लपित्त, रक्तपित्त, पाण्डुरोग इतने रोगों को यह आम्रपाक दूर करता है।

हथलस आदि किसी कारण से नपुंसक हो गया हो उसका यत्न

देशी गोखुरू का चूर्ण २० माशा, शहद २० माशा मिलाय बकरी के दूध के साथ २ महीने ले तो नपुंसकपना जाय।

चन्दनादि तेल

रक्तचन्दन, पतङ्ग, अगर, देवदारु, चीढ़, पद्माक, कपूर, कस्तूरी, केसर, जायफल, जावित्री, लवङ्ग, दोनों इलायची कङ्कोल, तज, दालचीनी, पत्रज, नागकेसर, नेत्रबाला, खस, छड़, दारुहल्दी, मूर्वा, कचूर, नागरमोथा, सम्हालू, फूलप्रियंगु, लोहबान, गुग्गुल, लाख, नख, राल, धवई के फूल, कुसुम के फूल, पीपलामूल, मजीठ, तगर, मोम ये सब औषध चार चार माशे ले और इनका मधुरी आँच से काढ़ा करे फिर इनका चौथा हिस्सा राखे फिर इसमें मीठा तेल पावभर डाले फिर मधुरी आँच से पकावे जब काढ़े का रस जल जाय और तेलमात्र आय रहे तब छानकर पात्र में भर रक्खे पीछे इसका शरीर में मर्दन करे तो बूढ़ा भी आदमी तरुण हो और शरीर के सब रोग जायँ।

वानरी गुटिका

कोंच के बीज पावभर गौ के पावभर दूध में शनैः शनैः पकावे फिर इनका छिलका दूर करे फिर इनका महीन चूर्ण कर दूध में उसन छोटे छोटे इसके बड़े कर गौ के घृत में तले फिर इससे दूनी मिश्री की चाशनी कर बड़ों को पागे फिर इन बड़ों को शहद में डाले पीछे इनमें से नित्य ४ माशा २ महीने खाय तो नपुंसकपना जाय, स्त्री के सङ्ग में उसका वीर्य देर से स्खलित हो।

नपुंसकपने के दूर करने का यत्न

अरकरा, सोंठि, लवङ्ग, केसर, पीपल, जायफल, जावित्री, सफ़ेद चन्दन ये सब धेले धेले भर ले और अफ़ीम १ टके भर ले फिर इन सबको शहद में महीन पीस उड़द प्रमाण गोली करे। १ गोली रात्रि में नित्य खाय ऊपर से दूध पीवे तो वीर्य देर से गिरे और नपुंसकपना जाय तथा बहुत स्त्रियों से भोग करे। अथवा बिदारीकन्द का चूर्णकर उस चूर्ण में गीले बिदारीकन्द के रस की २१ पुट दे दे सुखाता जाय फिर उसमें मिश्री, शहद और घृत मिलाय नित्य ८ माशा खाय अथवा

चार माशे ले और इसके ऊपर मधुर दूध पीवे तो बूढ़ा मनुष्य भी जवान हो यह वृन्द में लिखा है। अथवा आँवले का चूर्ण करे फिर इस चूर्ण में गीले आँवले के रस की २१ पुट दे सुखा ले फिर इस चूर्ण को मिश्री शहद से नित्य ८ माशा खाय तो नपुंसकपना जाय। यह चक्रदत्त में है।

मदनमञ्जरी गुटिका

सोंठि, मिरच, पीपल इन तीनों का चार भाग करे। पारे का १ भाग और वङ्ग का २ भाग करे। इन सबकी बराबर शतावरि, तज, पत्रज, नागकेसर, इलायची, जायफल, मिरच, पीपल, सोंठि, लवङ्ग, जावित्री इन सबको २ भाग ले फिर सबको महीन पीस मिश्री, शहद और घृत में २० माशा अनुमान गोली बाँधे फिर एक गोली नित्य खाय ऊपर से दूध पीवे तो बूढ़ा भी जवान हो। यह योगतरङ्गिणी में है।

अथवा अफीम, पारा इन दोनों को बराबर ले धतूरे के बीज के तेल में ३ दिन खरल करे पीछे मिश्री और भाँग बराबर मिलाय १ रत्ती खाय ऊपर से दूध पीवे तो वीर्य न गिरे और नपुंसकपना जाय। यह सारसंग्रह में लिखा है।

अथवा जायफल, अकरकरा, लवङ्ग, सोंठि, केसर, पीपल, कस्तूरी, भीमसेनी कपूर, अभ्रक इन सबकी बराबर अफीम ले फिर इन सबको महीन पीस मूंग प्रमाण गोली करे फिर १ गोली तथा २ गोली ले तो वीर्य न गिरे।

लिंगलेप की लिंगार्जुन गुटिका

चीनियाकपूर, सुहागा, पारा इन्हें बराबर ले अगस्त के रस में और शहद में १ दिन खरल करे फिर लिङ्ग में लेप करे १ पहर राखे पीछे लिङ्ग को धोवे फिर स्त्री से सङ्ग करे तो वीर्य देर में गिरे।

लिंगलेप की पट्टी

सफ़ेद कनेर की जड़ का बक्कल, अकरकरा, अजमोद, काले धतूरे के बीज, जायफल इन सबको जल से महीन पीस मिरच प्रमाण गोली बाँधे फिर एक गोली मनुष्य के मूत्र से घिस लिङ्ग पर लेप करे तो

नपुंसकपना जाय, वीर्य देर से गिरे। अथवा शूकर का घृत, शहद इन दोनों को खरल में घिस १ महीने तक लिङ्ग पर लेप करे तो लिङ्ग को सब कसर मिटे। अथवा सफ़ेद कनेर की छाल को दूध में जमाय घृत काढ़े फिर इस घृत में मोहरा, जायफल, जमालगोटा अनुमान मुवाफ़िक मिलाय लिङ्ग पर ७ दिन लेप करे ऊपर पान बाँधे और ब्रह्मचर्य से रहे तो नपुंसकपना जाय।

नपुंसकपना दूर करने की और औषध

चोपचीनी, सोंठि, मोचरस, दोनों मूसली, मिरच, बायबिड़ंग, सौंफ़ ये सब औषध समान ले महीन पीस छानकर पैसा भर चूर्ण आध सेर अधौटा दूध के साथ ले तो बल व पुष्टता हो।

दूसरी औषध

चोपचीनी ५ पैसा भर, सोंठि, मोचरस, दोनों मूसली, मिरच, बायबिड़ंग, सौंफ़ ये सब औषध बराबर ले कपरछानकर १ सेर अधौटे दूध के साथ ले तो धातुपुष्ट हो और बल बढ़े।

तीसरी औषध

शहद २ पैसा भर आध सेर गौ के दूध में मिलाकर पिये तो पुरुष के अधिक शक्ति हो।

चौथी औषध

मैदालकड़ी ꠰। भर ले काली बकरी के दूध में भिजोवे फिर कपर-छान कर ꠰१ गौ के दूध में भिगोकर तीन दिन तक सूखने दे, पीछे गोखुरू ३ पैसा भर, चीनी खाँड़ आध सेर मिलाय धर राखे। मात्रा १ पैसा भर ꠰।। गौ के दूध में खाय तो पुष्टता हो और नपुंसकता दूर हो।

पाँचवी औषध

सफ़ेद कनेर की जड़ दो पैसा भर ले महीन कतर पाँच सेर गौ के दूध में औटावे जब दूध ꠰३ शेष बचै तब उतार ठंढाकर जड़ समेत जमाय दे फिर दूसरे दिन माखन निकाल ले तिस पीछे सात गरवा मँगवावे जायफल सात नग और जावित्री पसा भर ले सातों गरवन में भरे, पेट से ले मूड़ पाँव काट डाले फिर ꠰। भर गौ के घी में खूब

खरलकर भूँजे फिर उनकी मैदा को कनेर के घी में ४ रत्ती प्रमाण गोली बाँधे फिर लिङ्ग में लेप करे अथवा १५ दिन खाय तो नामर्द मर्द हो।

छठी औषध

मंजीठ ऽ१ गोखुरू ऽ१ लभेरे के फल ऽ१ ले गौ के आठ सेर दूध में औटावे जब ऽ१ शेष रहे तब उतार गोखुरू को सुखा ले फिर तीनों औषध शेष कपरछान कर आगे लिखी औषध मिलावे–जायफल पैसा भर, मूसली दोनों ऽ। भर, शतावरि ऽ। भर, पीपलामूल ऽ=, सोंठि ४ पैसा भर, भाँगरा ऽ।, निर्गुण्डी ऽ। ये सब औषध कपरछान कर आध सेर घी मिलाय तीन तीन पैसा भर की गोली बाँधे और दोनों समय एक एक गोली १४ दिन खाय तो नामर्द मर्द हो।

सातवीं औषध

वत्सनाग विष २ पैसा भर, जमालगोटा २ पैसा भर, सफ़ेद घोंघर्चा २ पैसा भर, सफ़ेद कनेर की जड़ २ पैसा भर, बीरबहूटी २ पैसा भर, अकरकरा २ पैसा भर, मालकाँगनी ऽ१ चिमगादर १ कुचिला २ पैसा भर, केंचुवा ऽ१ ऊसरसाँड़ा एक खुरासानी अजवायन २ पैसा भर, सुहागा २ पैसा भर, मैनसिल २ पैसा भर, लवङ्ग २ पैसा भर, जायफल २ पैसा भर, दालचीनी २ पैसा भर, आक की जड़ २ पैसा भर, चमेली की जड़ २ पैसा भर, चिमगादर, शूकर और साँड़े का यन्त्र में तेल निकाले, तिस पीछे सब औषध कपरछान कर बकरी के दूध में ३ दिन खरल करे, तिस पीछे यन्त्र में तेल निकाल बँगला पान में चुपर लिङ्ग पर सात दिन तक बाँधे और स्त्री भोग से बचा रहे तो नपुंसकपना दूर हो।

आठवीं औषध

कनेर की जड़ २ पैसा भर, सींगियाविष १ पैसा भर, चौराई के बीज १ पैसा भर, सालम मिश्री १ पैसा भर, निर्गुण्डी १ पैसा भर ये सब औषध कपरछान कर पाँच सेर गौ के दूध में औटाय, जमाय माखन निकाल ले फिर सुपारी बचाय उलटा बँगलापान पर लगाकर १४ दिन तक पट्टी बाँधे और स्त्री सँभोग से बचा रहे तो नामर्द मर्द हो।

नवीं औषध

हींग, धतूरे के बीज, अकरकरा, समुद्रफ़ेन, दालचीनी ये सब औषध बराबर ले कपरछान कर ऊँटकटेड़ा के रस में १४ दिन तक लिङ्ग पर लेप करे तो नपुंसकता दूर हो।

खाने की औषध

असगन्ध, जावित्री, जायफल, लवङ्ग, दालचीनी ये सब औषध बराबर ले काले तिल ऽ। भर, शहद ऽ। भर ले गोली बाँध २१ दिन खाय तो नपुंसकता जाय।

दूसरी औषध

अकरकरा पैसा भर, अफ़ीम धेला भर, दोनों मूसली पैसा भर, कुलींजन पैसा भर, लवङ्ग पैसा भर, बहुफली पैसा भर, असगन्ध धेला भर, खाँड़ ६ पैसा भर सब औषध कपड़छान कर खाँड़ के सङ्ग में १ पैसा भर की गोली बाँधे ओर १४ दिन तक रात्रि में खाय तो नपुंसकता दूर हो

लेपन

तेलिया सुहागा ४ माशा, कूठ ४ माशा, मैनसिल ४ माशा, चमेली के पत्तों का रस १६ माशा, तिल का तेल ऽ। भर ले इन सबको कपड़-छान कर तेल में औटावे जब तेल में खर हो जाय तब उतार रक्खे फिर तेल की पट्टी ७ दिन बाँधे तो नपुंसकता जाय।

खाने की औषध

पोस्त आध सेर, माजूफल आध सेर ले १ मन भर पानी में औटावे जब सेर भर शेष रहे तब उतार आगे लिखी हुई औषध कपड़ छानकर मिलावे–जायफल १ टका भर, लवङ्ग १ टका भर, तेज १ टका भर, बिदारीकन्द–४ टका भर, सेंभर के बीज आध सेर, नागकेसर १ टका भर, सोंठि आध सेर, पुराना गुड़ २ सेर गौ के दश सेर दूध में औटावे जब औटते-औटते ३ सेर शेष रहे तब गुड़ व खाँड़ डालकर औटावे जब गाढ़ा हो जाय तब उतार आँवले की बराबर गोली बनावे और प्रातःकाल डेढ़ पैसा भर और सन्ध्या को एक पैसा भर पानी के साथ खाय तो १४ दिन में नपुंसकता दूर हो।

अब हस्तक्रिया और कच्चे कुश्ता आदि के खाने और सर्दी, गर्मी या बहुत मेहनत से जो आदमी नामर्द हो गया हो उसके उपाय के लिये तिला लेप अच्छी-अच्छी खाने की पुष्ट औषधों समेत आगे लिखते हैं।

तिल हथलस और सुस्ती का

दालचीनी ४० माशा, जायफल ४० माशा, धतूरा जड़, पत्ते समेत ४० माशा, जावित्री ४० माशा, लवङ्ग ४० माशा, बीरबहूटी ४० माशा, मालकाँगनी ४० माशा, जमालगोटा ४० माशा, संखिया ४० माशा, तेलिया ४० माशा, चौहरनीलाल ४० माशा, शिंगरफ़ ४० माशा, पारा ४० माशा, लोहबान ४० माशा, अदरक का रस ४० माशा, चमेली के पत्ते ४० माशा, मैनसिल ४० माशा, हरताल ४० माशा, कूट ४० माशा, सुहागा ४० माशा, मीठा तेल ४० माशा, चिमगादर की चरबी ४० माशा, हल्दी ४० माशा, श्वेत कनेर की जड़ ४० माशा, लाल कनेर की जड़ ४० माशा, गिडोहे (केंचुआ) सूखे ४० माशा, रेंगमाही ४० माशा, शेर की चरबी १३ तोला ४ माशा, अरण्ड का तेल ५ तोला, मछली का पित्ता ४० माशा, मुर्ग का पित्ता ४० माशा, चोखी दारू ६ माशा गधे का मगज और यह न हो तो गधे के फोतों में जोंक लगाकर ४० माशा रुधिर, शूकर की चरबी ४० माशा ले काष्ठादिक औषधों को कपरछान कर गोली बाँधे फिर उसे आतसी शीशी में भरकर मुँह पर सींक लगावे, कपरोटी करे, चपटा अधवर से फोड़े पेंदे में छेद करे, पेंदे में शीशी की नालीकर फिर तेल निकाल ले। यदि तेल न निकल सके तो गोली, दो रत्ती केसर में लेप करे और यदि तेल निकल आवे तो इन्द्रिय पर की सुपारी और नीचे का जोड़ बचा के तेल मले, ऊपर से बँगला पान बाँधे, लंगोट बन्द रहे, परहेज करे और खट्टी, गर्म चीज न खाय तो सुस्ती दूर हो।

तिला दूसरा

कपड़ा बाफ़ते का पाव गज आक के दूध में भिगोय सुखाकर थूहर के दूध में भिगोवे और पाँच पैसा भर घी उस पर लपेटे उस पर संबुल-

जर्द पीस लेप कर बत्ती बनावे फिर लोहे के गज पर लपेट उसका तेल निकाले। वह तेल पान पर लगाकर लिङ्ग के ऊपर बाँधे तो नामर्द मर्द होवे।

तिला तीसरा

पारा १ पैसाभर, संखिया १ पैसाभर, मीठा तेलिया १ पैसा भर, भटकटैया १ पैसाभर, हल्दी का जहर १ पैसाभर, नागबच १ पैसाभर, संबुल १ पैसाभर, हरताल १ पैसाभर, चिरमिटी सफेद १ पैसाभर, धतूरे के बीज १ पैसाभर, बीरबहूटी १ पैसाभर, मैनसिल १ पैसाभर, शिंगरफ १ पैसाभर, लोहबान १ पैसाभर, केंचुवा १ पैसाभर, मालकाँगनी १ पैसाभर, कोंच के बीज १ पैसाभर, कनेर की जड़ १ पैसाभर, जमालगोटा १ पैसाभर, इन सबको पीस शीशी में चढ़ावे फिर पातालयन्त्र कर तेल निकाले रत्तीभर लिङ्ग के ऊपर मल ११ दिन पान बाँधे तो नामर्द मर्द होवे।

तिला चौथा

जायफल १ पैसाभर, सुहागा तेलिया १ पैसाभर, मैनसिल १ पैसाभर, चमेली के पत्तों का रस ३ सेर, मीठा तेल आध सेर इन सबको मिलाकर औटावे जब रस जल जावे और तेलमात्र रह जावे तब तेल शीशी में भर रक्खे फिर ११ दिन इन्द्रिय पर लेपकर पान बाँधे तो नामर्द मर्द हो।

नस जुड़ने की पोटली

कान का मैल १ पैसाभर, हाथीदाँत का बुरादा ६ माशे, कुल्थी ६ माशे, केंचुवे ६ माशे, बीरबहूटी ६ माशे, अकरकरा ६ माशे, जायफल ६ माशे, जावित्री ६ माशे, केसर ६ माशे, हवासल की चरबी १ पैसाभर, मछली का भेजा १ माशे, नौसादर १ पैसाभर, शेर की चरबी १ पैसाभर, गौ का घी १ पैसाभर, इन सबको ले धेले भर की पोटली कर ११ दिन इन्द्रिय पर सेंक करे तो टूटी हुई नसें फिर जुड़ें और नामर्द मर्द हो जाय।

नामर्द के वास्ते लेप

इन्द्रयव, चिरमिटी, सफेद कनेर की छाल, मालकाँगनी, धतूरे के

बीज, खुरासानी बच, कटाई के बीज, गजपीपल इन सबको बराबर ले कूट पीसकर इन्द्रिय पर लेप करे तो नसें जुड़ें।

लेप

अरण्डी १ पैसाभर, अफीम ६ माशे, अकरकरा ६ माशे, जायफल ६ माशे, दालचीनी ६ माशे, बीरबहूटी ६ माशे, लवङ्ग ६ माशे इन सबको पीस कूट लेप कर ७ दिन पान बाँधे तो नामर्द मर्द हो। अथवा चमेली के पत्तों का रस निकाल के कूठ, सुहागा और मैनसिल सबको तिली के तेल में एकत्रकर औटावे जब रंग बदल जाय तब उतार शीशी में धरे, ४० दिन मले तो टूटी हुई नसें जुड़ें। अथवा मीठा तेल, मालकाँगनी, छुहारा ये सब बराबर ले गर्म कर लेप करे। अथवा गंगेरन, आक, कनेर, पीपल, कूठ, बच और माखन मिलाय लेप करे तो नसें जुड़ें और स्थूल हों। अथवा अकरकरा ८ माशा, सफ़ेद कनेर के फूल २ माशा, जायफल ४ माशा, सफ़ेद गोंद २ माशा महीन पीस मर्दन करे तथा महिषी के दूध में मिलाकर लेपन करे तो नसें जुड़ें तथा इन्द्रिय कठोर हो।

खाने की औषध

कोंच के बीज और जड़ को कूट पीसकर ४ माशे दूध के साथ मिश्री मिलाकर दोनों समय कुछ दिन तक सेवन करे तो बल, वीर्य बहुत हो और सहस्र स्त्री से भोग करे, सुख पावे। अथवा उड़द का चून, जव का चून, गोखुरू के बीज, शतावरि इन सबको बराबर ले दूध में माड़कर घृत में बड़ी करे। सन्ध्या समय ६ मास पर्यन्त १ बड़ी खाय और ऊपर से दूध मिश्री पीवे तो बूढ़ा भी जवान हो, वीर्य बँधे। अथवा त्रिफला, धवई के फूल बराबर लेकर पीस एकरस की भावना दे, ७ दिन धूप में सुखावे फिर सन्ध्या समय मिश्री और शहद में मिलाकर चाटे ऊपर से दूध पीवे इसका कुछ दिन सेवन करे तो शत स्त्री से भोग करे, काम बँधे, भूख लगे, पुष्ट हो, महाकामी हो। अथवा किवाँच की जड़, तिल, असगन्ध बिदारीकन्द, साँठी चावल इन सब को बराबर ले पीस ⅟१ दूध में पचावे फिर प्रात समय २० माशा प्रमाण नित्य खाय और परहेज़ करे तो महाकामी हो और रति में सुख उपजे। अथवा बिदारीकन्द और गोखुरू इन दोनों को २०

माशा ले फिर पीस के मिश्री और दूध के साथ फाँके तो बूढ़ा भी जवान और महाकामी हो तथा प्रमेह और बिन्दुकुशाद भी जाय। अथवा जायफल, जावित्री, लवङ्ग, केसर, अमगन्ध, काले तिल और अफ़ीम सबों को दो दो माशे ले खरल करे और २ माशे की शहद में गोली बाँधे। प्रभात समय सात दिन तक खाय तो नामर्द मर्द हो। अथवा उड़द, यव, असगन्ध के पाँच बीज, शतावरि, तालमखाना, सेमर की छाल ये सब समान भाग ले पीस कर दूध के साथ खाय तो शत स्त्री से भोग करे, धातु बँधे परन्तु पथ्य से रहे। अथवा यव और उड़द का चून ८ पैसाभर दूध और मिश्री के साथ पीवे तो वीर्यवृद्धि और धातु पुष्ट हो। अथवा अधेलेभर आँवले को एकरस की भावना देकर छाया में सुखावे पीछे शहद और मिश्रो से २० माशा खाय तो धातु बँधे, महाकामी हो। अथवा अकरकरा १३ माशा, तेजबल १२ माशा, जावित्री १२ माशा, नागकेसर १२ माशा, जायफल १२ माशा, लवङ्ग १२ माशा, इलायची समूची १२ माशा, सफ़ेद मूसली १२ माशा, शर्करा १२ माशा, नागरपान २५ ले फिर बड़े बेर समान पानों के साथ गोली बाँधे। प्रातःसमय खाय तो निर्वीर्य भी वीर्यवान् हो।

इन्द्रिय सूख गई हो उसका यत्न

गौ का घृत १ पैसाभर, श्वेत कनेर की जड़ की छाल १० तोला, लवङ्ग १२ माशा, मालकाँगनी २२ माशा, कूठ २० माशा, अजवाइन खुरासानी २० माशा, अकरकरा २० माशा, सफ़ेद गुंजा २० माशा, कुचिला २० माशा, इसबन्द २० माशा, कनकबीज २० माशा, पीपल २० माशा, जायफल २० माशा, जावित्री २० माशा, अफ़ीम १२ माशा, कटेरे के बीज ५ तोला, मूसली बीज २० माशा, घृत में मिलाकर कूट राखे फिर सात दिन शीशी में भर पातालयन्त्र चुवावे। ४ रत्ती प्रमाण नित्य खात तो अतिकामी हो, खट्टा न खाय परहेज करे।

इन्द्रिय के बाकापन जाने का इलाज

बिनौले की मींगी और बकरे की चरबी मिलाकर लेप करे तो बाँकापन जाय और स्थूल हो। अथवा सुहागा, कूठ, मैनसिल बराबर ले कपड़छान कर दमड़ीभर चमेली के पत्ते का रस मीठे तेल में पकावे।

फिर कपड़छानकर तेल शीशी में रक्खे इन्द्रिय लेपन करे अथवा मले तो एक मास में बाँकापन जाता रहे। अथवा समुद्रफल, दारुहल्दी मुलहठी, शहद, गधे के पेशाब में घिसकर मले तो बाँकापन जाय, स्थूल हो और बढ़े।

स्तम्भन औषध

जावित्री, सफ़ेद कनेर की छाल, समुद्रशोष, खुरासानी अजवायन, अफ़ीम, जायफल, पीपर, चीनी, खाड़ ये सब बराबर लेकर कपड़छान कर गुड़ में गोली बाँधे। ४ माशा प्रमाण १ गोली रात को खाय तो १२ घड़ी तक स्तम्भन हो दूध पिये तब स्खलित हो।

सफ़ेद कनेर की छाल ८ माशा, सफ़ेद कबूतर की विष्ठा ८ माशा ले और ८ माशा के प्रमाण शदह में गोली बाँधे फिर पोस्त के पानी से घिसकर लिङ्ग पर लेप करे तो दो घड़ी तक स्तम्भन हो तथा ताल मखाना मूसली, शतावरि, खुरासानी बच ये सब औषध २० माशा और विजया ५।) तोला घी १३ तोला खाँड़ ३६ पैसा भर ले विजया पीस के बँगला पान की तीन पुट दे फिर खाँड़ का पाक कर ८ माशा प्रमाण गोली बाँधे। १ गोली सन्ध्या समय में खाय तो कामवृद्धि हो।

तीसरी विधि

चौपाई

* एक टंक जो केसर करे। दोय टंक लौंगें लै धरे॥
तीन टंक जायफल सुलेय। चारि टंक अहिफेन करेय॥
दो रत्ती कस्तूरी करे। मधु से बाँधि जो गोली धरे॥
टंक टंक गोली परमान। सांझ समय ये खाय सुजान॥
स्तम्भन कर कायाबल होय। दिन दिन रूप सवायो सोय॥
उपजे अग्निक्षुधा अधिकाय। मनसों मिटेनरति की चाय॥

चौथी विधि

भाँग ६ माशे, अफ़ीम ६ माशे, पोस्त ६ माशे, छुहारा १ तोला, बादाम की गिरी १ तोला, मोठ की जड़ १ तोला, धतूरे के बीज ६

* १ टंक का प्रमाण शास्त्रकार ने ४ माशा का माना है।

माशे इन सबको कूट पीसकर माजूम बनावे फिर ३ माशे खाय तो बंधेज करे। अथवा अफ़ीम १ माशे, भाँग २ माशे, शहद २ माशे, खाँड़ २ माशे ले पीस गोली धेला भर की बनाकर खावे और ऊपर से दूध पीवे तो बंधेज होवे।

पञ्चम विधि

दोनों मूसली १ तोला, तालमखाने ६ माशे, बीजबन्ध ६ माशे, कनेर की जड़ की छाल ६ माशे, गूलर की छाल ६ माशे, गोंदनी की छाल ६ माशे, बड़ की जटा ६ माशे, लसोढ़ा ६ माशे, सेलखड़ी ६ माशे इन सबको कूट पीस छानकर पुराने गुड़ में गोली बाँधे १ माशे २ घड़ी पहिले खावे तो बंधेज होवे फिर सेंधा नोन से छूटे।

बंधेज की छठी विधि

जायफल ३ माशे, रूमी मस्तगी ६ माशे, लवङ्ग ६ माशे, इलायची के बीज ६ माशे ले पीसकर शहद में बेर प्रमाण गोली बाँधे १ गोली खावे तो बंधेज होवे।

बंधेज की सप्तम विधि

आक के फूल ६ माशे, धतूरे के फूल ६ माशे, काली मूसली १ तोला, इसबन्द १० माशे, जायफल ६ माशे, इन सबको पीसकर शहद में बेर समान गोली बाँधे। दो घड़ी पहिले खावे ऊपर से जलेबी खावे और दूध पीवे तो बंधेज होवे। अथवा उटंगन के बीज पैसा भर, कोंच की मींगी पैसा भर, निशास्ता पैसा भर ले पीस छान पानी से ३ माशे शाम को फाँके तो स्तम्भन करे।

बंधेज की अष्टम विधि

लवङ्ग, अफ़ीम, भाँग, छोटी इलायची, जायफल, जावित्री, कमलगट्टा इन सबों को महीन कर पान के रस में गोली बाँधे। २ माशे प्रमाण खाय तो स्तम्भन करे विना खटाई न छूटे। अथवा जिमीकंद और तुलसी की जड़ इन दोनों को बराबर ले महीन कर पान के रस में गोली बाँधे फिर बीड़ी के साथ खाय तो बहुत स्तम्भन करे। अथवा दालचीनी और काले तिल बराबर ले फिर महीन कर शहद में ७ माशे प्रमाण गोली बनावे। सोते समय १ गोली खाय तो मैथुन के पीछे १

पहर इन्द्रिय की प्रबलता रहे। अथवा कौंच की जड़ १ अंगुल भर ले अपने मुख में रस चूसे। जब तक मुख में रहे कभी न छूटे।

बंधेज की नवम विधि

कनेर की जड़ १२ माशा, अफ़ीम ४ माशा, आदी के रस से इन्द्रिय पर लेप करे तो स्तम्भन हो। पान खाय तब छूटे। अथवा खिरनी के बीज की मींगी और महुआ के बीज की मींगी दोनों को पानी से पीस बत्ती सी बनाय सुपारी के बीज में रखे तो मूत्रस्तम्भन हो। अथवा सफ़ेद कनेर की जड़ और त्वचा छाँह में सुखाय कपड़-छान कर जायफल २० माशा, तेलिया १० माशा, अफ़ीम चोखी ४ माशा, बच्छनाग विष ४ माशा इन सबको बड़ की जड़ के रस में हल कर झरबेरी के बेर प्रमाण गोली बाँध छाया में सुखाय धर राखे फिर गोली को पोस्त के पानी में घिसकर लिङ्ग पर लेप करे तो स्तम्भन हो।

बंधेज की दशवीं विधि

चौपाई

जातीफल विजया अरु नाग। मिश्री मेलहु द्वादश भाग॥
कुचिला समुद्रशोष के बीज। ऊँटकटाई लौंगहु दीज॥
पहिले तीन बराबरि चारि। गोली बाँधो मधु को डारि॥
रही पाँच की बाँधहु बरी। क्रीड़ा हरि राधा सों करी॥

अथवा सूखी अद्रक ४ माशा, तेजबल ४ माशा, नकछिकनी ४ माशा, गुड़ १२ माशा मिलाय एकत्र कर ८ माशा प्रमाण की गोली बनावे इस गोली को सन्ध्या समय खाय ऊपर से चार पैसा भर दही बड़े खावे तो चार घड़ी के वास्ते स्तम्भन हो।

बंधेज की ग्यारहवीं विधि

कौंच के बीज २० माशा, बंगामूद २० माशा, मिरच २० माशा इन सबों को बकरी के दूध से लिङ्ग पर लेपन करे तो बहुत स्तम्भन करे अथवा चने आधे कच्चे आधे पक्के और चूना दोनों एकत्र कर नींबू की फाँक में रख अग्नि में पकावे पाँच घड़ी पीछे निकालकर चूसे फिर भोजन करे तो सात घड़ी को स्तम्भन हो फिर सादा नींबू चूसे तब छूटे

बंधेज की बारहवीं विधि

बेलगिरी, सौंफ़ और सफ़ेदा तीनों को एकत्र कर कूट पीस कपड़-छान कर खाय तो जल्दी न छूटे। अथवा केसर ४ माशा, लवङ्ग ८ माशा, जायफल ४ माशा, कस्तूरी ४ माशा इन सबको एकत्र कर गोली बनावे फिर एक गोली रति से ३ घड़ी पहिले खाय तो ६ घड़ी स्तम्भन हो।

मृत्तिका मदनगुटिका बंधेज की तेरहवीं औषध

इलायची, केसर, तज, लवङ्ग, जायफल, जावित्री, रूमीमस्तगी, अकरकरा, नागरमोथा, पीपल, अफ़ीम, चन्दन, कस्तूरी, और कपूर, इन सबको चार चार माशा ले पीस शहद में २ माशे भर की गोली बाँधे। सन्ध्या समय खाय तो बंधेज से करे ऊपर से दूध पीवे यह बहुत गुण और पराक्रम करता है।

बंधेज की चौदहवीं औषध

कपूर १ माशे, अफ़ीम ८ माशे, केवाँच के बीज ८ माशे अकर-करा ८ माशे, लवङ्ग, ८ माशे, गुजराती इलायचो ८ माशे, शोधा बच्छ-नाग २ माशे, मालकाँगनी ८ माशे, शोधा शिगरफ़ ३ तोला इन सब औषधियों की १०० पानों के रस में ३ रत्ती गोली बनावे फिर रात्रि को खाय ऊपर से दूध पीवे। यदि गर्मी करे तो घी घाय और ऊपर से दूध पीवे। धातु स्खलित न हो तो कागजी नींबू चूसने से तुरन्त स्खलित हो।

बचछनाग शोधनक्रिया

बच्छनाग का टुकड़ा करे और गाई की गोती में ७ दिन तक भिगो रक्खे परन्तु गोती नित्य नई हो और पुरानी फेंक दे फिर सातवें दिन गौ के दूध में औटाय निकालकर छाँह में सुखावे तब शुद्ध हो।

शिगरफशोधनविधि

शिगरफ़ को भेड़ के दूध में डोलयन्त्र कर औटावे तब शुद्ध होती है शुद्ध की हुई स्तम्भन औषधि में मिलावे।

बंधेज की पन्द्रहवीं विधि

जायफल २१ माशा, जावित्री २१ माशा, कनकबीज २१ माशा,

मुलहठी २१ माशा, पारा २१ माशा, अकरकरा २१ माशा, लवङ्ग २१ माशा, अफ़ीम २१ माशा इन सबको एकत्र कर शहद में गुंजा-प्रमाण गोली बाँधे सोते समय खाय तो १ पहर तक बंधेज रहे फिर नींबू से छूटे। अथवा लजालू का बीज १ तोला दूध में पीसकर गोड़ के तलुए में लेप करे तो निस्सन्देह बंधेज हो जब धोवे तब छूटे।

बन्धेज की सोलहवीं विधि

सफ़ेद घोंघची का तेल निकालकर पैरों के नखों में लगावे तो सूक्ष्म स्तम्भन हो और नींबू चूसे अथवा नोन की डली मुँह में डाले तब छूटे। अथवा शिंगरफ़ ३। माशे, अजवाइन खुरासानी ३। माशे, अफ़ीम ३ माशे, जायफल ३ माशे, जावित्री ३ माशे, अकरकरा १ माशे इन सबको एकत्र कर पुराने पान के रस में मटर बराबर गोली बाँधे फिर रात्रि को सोते समय खाय तो अति बंधेज करे फिर नोन से छूटे।

बन्धेज की सत्रहवीं विधि

दोहा

मुण्डी इसबँध जायफल जावित्री अहिफेन।
विजया अजवायन दुनी सातो स्तम्भन मैन॥
पीपर कुमकुम जायफल चन्दन नागर जानि।
मिर्च अकरकरा कंकोलही ये सब सम कर आनि॥
द्वादश माश जो खावई अरु मेले अहिफेन।
नित्य खाय जो प्रात उठि द्रवे न तत्क्षण मैन॥

छप्पय

शशि १ केसरदृग २ लौंगराम ३ जातीफल जानत।
*वेद ४ टंक अहिफेन गुञ्ज द्वै मृगमद आनत॥
सकल पीस इक ठौर शहद सूं बटी बनावत।
रती द्वैक परिमाण रसिक सन्ध्या को खावत॥
बटी एक भुञ्जत पुरुष अति आनँद तिय होत जस।
तबलग मनोज मुंचे नहीं जब लग खात न अम्लरस॥

---

* १ टंक का प्रमाण शास्त्रकार ने ४ माशे का माना है।

सोरठा

चतुअ गुञ्ज अहिफेन टंक एक हरिबल्लभा ।
रहै थकित ह्वै मैन ज्यों बारिद ऋतुशरद में ।।

बन्धेज की अठारहवीं विधि

गीतिका छंद

बिम्बफल इक टोरि मध्य द्वै टंक पीपरि डारिये ।
लपटाय पट पिंडोर ताको सकल मूँदि सँवारिये ।।
आगि में वह डारिके मध्यमहिं आँच पकाइये ।
औषध सँपूरण करि सुचूरण झीन अम्बर छानिये ।।
सम दालचीनी चारु ले फिटकरी अर्क रलाइये ।
पुनि आधटंक प्रमाण मधु सों बरी सुन्दर ठानिये ।।
रति आदि मुख जलधोइ तासों लिङ्गलेपन कीजिये ।
हृदय को आनन्द उपजे तियन को सुख दीजिये ।।

बन्धेज पर माजून

केसर १ तोला, लवङ्ग १ तोला, जावित्री १ तोला, अकरकरा १ तोला, रूमी मस्तगी १ तोला, मुसली दोनों ४ तोले, चोपचीना २ तोले, इलायची २ तोले, दालचीनी १ तोला, पीपल १ तोला, हड़ और अतीस १ तोला, शतावरि २ तोले, बेखबलधी २ तोले, मदनमर्त ४ तोले, लालमिरच और अजवाइन खुरासानी १ तोला, कबाबचीनी १ तोला, अफ़ीम २ तोले, पिस्ता ४ तोले, बादाम ४ तोले, सालबमिश्री ४ तोले, चाँदी का वर्क ४ तोले इन सब औषधों को पीस छानकर बराबर की चीनी की चाशनी में सबों को मिलाय माजून बनावे फिर अमृतबान में भर रक्खे। सन्ध्या समय ६ माशे खाय और ऊपर से दूध पीवे तो अति बंधेज करे और बल को बढ़ाती हुई अनेक गुण करती है।

बंधेज पर माजून दूसरी

दालचीनी १ पैसेभर, जायफल १ पैसेभर, जावित्री १ पैसेभर, लवङ्ग १ पैसेभर, गुजराती इलायची १ पैसेभर, कस्तूरी १ माशे, जेठी मधु १ पैसेभर, केसर १ माशे, सालबमिश्री १ पैसेभर, तीखुर ८ पैसेभर, गोखुरू ८ पैसेभर, बंशलोचन १ पैसेभर, शतावरि १ पैसेभर,

किवाँच १ पैसाभर, भीमसेनी कपूर ३ माशे, बादाम का घी १ पैसा-भर, भाँग का काढ़ा ℘॥ सेर, गाय का घी ℘॥ सेर, दूध १ सेरभर इन सब औषधों को इकट्ठा करके मिश्री की चाशनी कर उसमें मिलाकर थाली में माजून जमा दे और कतर ले फिर सन्ध्या को १ कतरा खाय तो स्तम्भ खूब हो और गर्मी कम हो।

बंधेज पर तीसरा माजून

कस्तूरी १ तोला, जावित्री १ तोला, कबाबचीनी १ तोला, कोंच के बीज, मुण्डी और मोथा १ तोला, बीजबन्द और गोखुरू १ तोला, मिर्च सुर्खंदराज १ तोला, केसर १ तोला, नागकेसर १ तोला, इला-यची १ तोला, चोपचीनी १ तोला, गाजर के बीज १ तोला, माल-काँगनी १ तोला, मदनमर्त १ तोला, समुद्रसोली १ तोला, बनफ्शा की जड़ १ तोला, कहरवा १ तोला, लवङ्ग १ तोला, जौज १ तोला, दालचीनी १ तोला, उटगन के बीज १ तोका, रूमी मस्तगी १ तोला, मोचरस १ तोला, स्याहमूमली १ तोला, पीपरामूल १ तोला, इन्द्रयव १ तोला, शतावरि १ तोला, अकरकरा १ तोला, गुड़ तिवरसा ८ पैसे भर इन सबको पीस छान जायफल प्रमाण गुड़ में गोली बाँधे। सोते समय १ गोली खाय ऊपर से दूध पीवे अगर दूध न हो तो शक्कर से गोली खाय तो अतिस्तम्भन करे।

लड़कपन में बहुत से पुरुषों की धातु लाल मिर्च अथवा अधिक खटाई खाने, धूप में रहने और बहुत मेहनत करने से पतली पड़ जाती है। इस कारण से वे स्त्रीप्रसङ्ग में रमणी को आनन्द देने में असमर्थ होते हैं और वीर्य जल्दी पतन होने से वे कुछ भी रति का आनन्द नहीं जानते इससे कुछ अच्छी-अच्छी धातुपुष्ट को औषधें कहते हैं।

धातुपुष्ट के यत्न

मदनमोदक गुटिका। असगंध नागोरी, कूट, गेरू, छड़ीला, अज-मोद, त्रिफला, सोंठि, मुल्तानी, बिदारीकन्द, धनियाँ, मोथा, मोचरस, गजपीपल और सेमर का मूसरा, कचूर, दोनों मूसली, पीपल, दोनों कटाई, पत्रज, सोंठि, गेहूँ का सत, दोनों जीरे, जटामासी, भारंगी, करंज की मींगी, मुलहठी, कमलगट्टा, सिंघाड़ा, काकड़ासिंगी, नाग-

केसर, पुष्करमूल, शतावरि, तालीस, लवङ्ग, जायफल, जावित्री, दालचीनी, सुपारी, अगर, दोनों चन्दन, चीनियाँ कपूर, भाँगरा, निर्गुण्डी और चूक ये सब औषध बराबर ले कपरछान करे फिर पाँच सेर गो के दूध का खोवा करे जब दो सेर शेष रहे तब उतार ये औषधें मिलावे। लवङ्ग, चिरौंजी, गिरी, छुहारा, बादाम, असगन्ध, दोनों इलायची, दाख, भाँग आध सेर ले पोटली बाँध दूध में डारिके औटावे पीछे सब औषध मिलाय दो-दो पैसेभर की गोली बाँधे एक गोली प्रभात समय खाय तो धातु पुष्ट हो, भूख बढ़े और क्षीणता मिट जाय।

धातुपुष्ट की दूसरी विधि

कुचिलादि गुटिका। कुचिला १ पैसाभर, सोंठि ५ पैसेभर और अकरकरा, जायफल, लवङ्ग, जावित्री, रूमी मस्तगी से सब औषध धेला-धेलाभर ले कपरछान कर ऽ२ सेर बँगलापान के रस में ४ प्रहर खरल करे पीछे छदाम-छदामभर की गोली बाँधे। १ गोली पान के साथ खाय तो धातु पुष्ट हो, भूख बढ़े, उच्चाट मिटे, बल बढ़े और स्त्री-भोग की शक्ति हो।

धातुपुष्ट की तीसरी विधि

सेमर के बीज ऽ॥ सेर ले ५ सेर दूध में औटावे फिर बीज सुखाकर ये औषध डाले-जावित्री, जायफल, लवङ्ग, दालचीनी २ पैसेभर, दोनों मूसली पावभर, निर्गुण्डी, मुण्डी, भारंगी और भाँगरा ये दो-दो पैसेभर ले सब कपरछान कर दो-दो पैसेभर की गोली बाँधे। १ गोली सोते समय आध सेर दूध के साथ खाय तो धातु पुष्ट हो और वृद्ध भी तरुण हो।

धातुपुष्ट की चौथी विधि

धातुपुष्ट पर माजून। जायफल, जावित्री, लवङ्ग, रूमी मस्तगी, चीनियाँ कपूर, अकरकरा, दालचीनी, तज, पत्रज, अगर, तगर, वंशलोचन, चन्दन, खस, कचूर, असगंध, पीपल, सोंठि, मिर्च, तिल, कोंच के बीज, सालबमिश्री, इलायची, बादाम, अखरोट, छुहारा, कपास के बीज, मूली के बीज, तालमखाना, बीजबन्द, गोखुरू, दोनों मूसली, इन्द्रयव, मुलहठी, नागकेसर, सुगन्धबाला, मोचरस, बिदारीकन्द,

कुलींजन, दोनों जीरे, कास की जड़, कमलगट्टा, धनियाँ, शिलाजीत ये सब औषध पैसा पैसाभर ले और रोहू मछली का तेल १ पैसाभर, लोहबान का तेल १ पसाभर, गिरी ७ पैसेभर, गौ का घी ऽ१ सेर, चीनी खाँड़ ऽ२ सेर ये सब औषध कपरछान कर घी में भूने फिर खाँड़ मिलाय आँवलेप्रमाण गोली बाँधे। १ गोली प्रभात और १ सन्ध्या को खाय तो बहुत पुष्टता हो।

धातुपुष्ट की पाँचवीं विधि

नागौरी असगन्ध ५ तोला ४ माशा कपरछान कर ३२ माशा भर घी में भूने पीछे घी निचोय ऽ५ से दूध में औटावे फिर ये औषधें मिलावे—सोंठि, तज, पीपल, मिरच, पत्रज, इलायची, सिंघाड़ा, केला की जड़, काकड़ासिंगी, दोनों चन्दन, बंग, शिलाजीत, जायफल, नागकेसर, मोथा, कचूर, जावित्री, वंशलोचन, दोनों जीरे, चीनियाँ कपूर, सुगन्धबाला, अभ्रक, रूमीमस्तगी, सार, कोच के बीच, तालमखाना, बीजबन्द, कमलगट्टा, तवाखीर, दोनों मूसली, निर्गुण्डी, भाँगरा, चीनी, खाँड़ ऽ३ ये सब औषध कपरछान कर उसी दूध में मिलाय खाँड़ की चाशनी कर दो पैसेभर के प्रमाण गोली बनावे। १ गोली प्रभात समय खाय तो प्रमेह दूर हो, वीर्य का प्रवाह थँमे और अतिपुष्ट हो।

धातुपुष्ट की छठीं विधि

चोपचीनी, मुलतानी, सोंठि, मिरच, मोचरस, बायबिड़ंग, सौंफ ये सब औषध पैसा पैसा भर ले कपरछान कर १ सेर गौ के दूध में औटावे जब आध सेर शेष रहे तब सम्पूर्ण औषध और ऽ॥ शहद मिलाय टकाभर की गोली बाँधे। १ गोली प्रभात खाय तो धातु पुष्ट हो।

धातुपुष्ट की सातवीं विधि

असगन्ध १ पैसा भर, ब्रह्मदण्डी १ पैसा भर, निर्गुण्डी १ पैसाभर ले खाँड़ ऽ। भर मिलाय बकरी के दूध के साथ ७ दिन ले तो धातु बन्द हो अथवा बंशलोचन, विजयसार की गाद, खाँड़ ये तीनों बराबर ले पीवे तो धातु बन्द हो।

धातुपुष्ट की आठवीं विधि

मोचरस, मिरच, दोनों मूसली, मुलहठी, दोनों जीरे, असगन्ध,

रूमीमस्तगी, शंखाहूली, इलायची, निर्गुण्डी, गिलोय, उड़द की दाल, पीपल, भारंगी लवंग, शतावरि, सोंठि, मुण्डी, भाँगरा, दालचीनी, तज, चिरौंजी, दाख, छुहारा, बीजबन्द, तालमखाना, बिदारीकन्द, त्रिफला ये सब औषध पैसा पैसाभर ले कपरछान करे फिर ॥ऽ ५ गौ के दूध का खोवा कर उसमें उपर्युक्त सब औषधें मिलाय पावभर घी और पावभर शहद मिलाकर आँवले के प्रमाण गोली बाँधे। १ गोली प्रातःकाल और १ सन्ध्या समय खाय तो धातु की पुष्टता हो और भूख बढ़े।

धातुपुष्ट की नवीं विधि

आधसेर बिदारीकन्द में तुलसी के रस की तीन पुट दे फिर छाया में सुखाय गौ का दूध ऽ५ औटावे जब ऽ२ शेष रहे तब उतारकर बिदारीकन्द और ऽ॥ खाँड़ मिलाय सात भाग कर सात दिन खाय तो धातु पुष्ट हो और ७ स्त्री से भोग करने की शक्ति हो।

धातुपुष्ट की दशवीं विधि

कस्तूरी, केसर जावित्री, दालचीनी, अकरकरा, लवङ्ग, असगन्ध, मूली के बीज, रूमी मस्तगी, मिरच, तज, पत्रज, दोनों मूसली, पीपल, सालबमिश्री, बीजकन्द, गोखुरू, अजमोद, मालकाँगनी, समुद्रफेन, समुद्रशोष, गिलोय, चीते की छाल, उटंगन के बीज, कोंच के बीज, इन्द्रयव, इसबन्द, पीपलामूल, कमलगट्टा ये सब औषध पैसा पैसा भर ले कपरछान कर ऽ१ चीनी खाँड़ मिलाय पैसा पैसा भर दोनों समय खाय तो धातु पुष्ट और अधिक हो तथा शक्ति बढ़े। अथवा चोपचीनी, मोचरस, बायबिड़ंग, सौंफ़, गजपीपल, गाजर के बीज, सलगम के बीज, तेजबल, इन्द्रयव, नागकेसर, दोनों मूसली, सेमर का मूसरा, लसोढ़े के बीज, सालबमिश्री, ऊँटकटावा की जड़, तालमखाना, दालचीनी, शतावरि, दोनों गोखुरू, भारंगी, भाँगरा, चिरौंजो, कमलगट्टा, कोंच के बीज ये सब औषध पैसा पैसा भर ले और गौ का दूध ऽ५ औटावे जब सेरभर रहे तब कपरछानकर सब औषध मिलावे फिर सेर भर खाँड़ मिलाय दो पैसे भर की गोली बनाय खाय तो धातु की पुष्टता हो और बल बढ़े। अथवा दोनों गोखुरू, कोंच के बीज, बीज-

बन्द, शतावरि, बिदारीकन्द, तालमखाना, असगन्ध, अड़ूसे की जड़, उटंगन के बीज, गिलोय, रक्तचन्दन, तज, पत्रज, इलायची, पीपल, त्रिफला, नागकेसर, सेमर का मूसरा, ऊँटकटावा की जड़, कुड़ा की जड़, ऊँख की जड़ ये सब औषध पैसा पैसाभर ले कपरछान कर ऽ५ गो के दूध में औटावे जब ऽ१ सेर शेष रहे तब उसमें तीन सेर खाँड़ और सब औषधें मिलाय २ पैसेभर की गोली बाँधे। १ गोली सन्ध्या और १ गोली सबेरे खाय तो धातु को पुष्ट करे और पराक्रम को बढ़ावे।

धातुपुष्ट की ग्यारहवीं विधि

मूसली काली १ पैसाभर, मूसली सफ़ेद १ पैसाभर, रत्नज्योति १ पैसाभर, अजमोद १ पैसाभर, सेमर का मैदा १ पैसाभर, शतावरि १ पैसाभर, मोचरस १ पैसाभर, समुद्रशोष १ पैसाभर, तालमखाना १ पैसाभर, बीजबन्द १ पैसाभर, पिस्ता का फूल १ पैसाभर, धनियाँ के चावल १ पैसाभर, दक्षिणी गोखुरू १ पैसाभर, रूमी मस्तगी १ पैसाभर, वंशलोचन १ पैसाभर, सालबमिश्री १ पैसाभर, शकाकुल १ पैसाभर, उटंगन के बीज २ माशे, चिरचिरे की गिरी १ पैसाभर, धावे के फूल १ पैसाभर, जायफल ३ माशे, इलायची ३ माशे, दालचीनी ३ माशे, शीतलचीनी ३ माशे, सेलखड़ी ६ माशे, चुनियाँ गोंद ६ माशे, कीकर की गोंद ६ माशे, पिस्ता १ पैसाभर, अखरोट की गिरी १ पैसाभर, नारियल की गिरी १ पैसाभर, बादाम की मींगी १ पैसाभर, तरबूज के बीज १ पैसाभर, चिरौंजी १ पैसाभर इन सब औषधों को कूट पीसकर शहद में माजून पकावे। तोले तोलेभर की गोली बाँध खाय तो धातु पुष्ट और बल करे तथा और भी गुण करे।

धातुपुष्ट की बारहवीं विधि

तालकेश्वर २ माशे, बङ्ग ३ माशे, दूधी ७ माशे, तिलकूट ८ माशे, पवाँर के बीज ८ माशे, बीजबन्द ८ माशे, गोखुरू ८ माशे, सोंठि ८ माशे, मिर्च ८ माशे, गुड़ ५ पैसेभर इन सबको कपरछान कर गुड़ में गोली बाँधे। १ गोली नित्य प्रातःकाल खाय और खट्टे मीठे से परहेज रक्खे तो धातु पुष्ट हो।

धातुपुष्ट की तेरहवीं विधि

अजवाइन खुरासानी, चीनियाँ कपूर, जायफल, लवङ्ग, बीजबन्द,

अकरकरा, शिंगरफ़, माजूफल, फिटकरी, सुहागा इन सब औषधियों को बराबर ले कपरछान करे परन्तु कपूर पीछे से डाले फिर नींबू के रस में झरबेरी बेर के समान गोली बाँधे। १ गोली प्रातः समय खाय तो सब धातुव्याधि जाय। और गेहूँ, चने और घी खाय। खटाई आदि से परहेज करे अथवा बादाम, केसर, माजू छोटी, जावित्री, शहद मीठे तेल में पीस पिस्ते के फूल और गुड़ में झरबेरी बेर के प्रमाण गोली बाँधे फिर १ गोली प्रातःकाल खाय तथा खटाई और गर्म चीजों से परहेज करे तो धातु पुष्ट हो।

धातुपुष्ट की चौदहवीं विधि

इनद गूँद और गिलोय बराबर ले चूर्ण कर सबेरे गौ के घृत और दूध से खाय। पथ्य–गेहूँ और चने की अलोनी रोटी का करे तो धातु पुष्ट हो। अथवा बबूर की फली, दूधी, झरबेर की जड़ की छाल ये सब समान ले उसमें चीनी मिलाय २ पैसे भर नित्य दूध के साथ सबेरे खाय तो धातु पुष्ट हो। अथवा तालमखाना, गोखुरू, समुद्रशोष, सुपारी का फूल, अफ़ीम, पारा, बबूल का गोंद, सेमर की छाल, स्याह मूसली, श्वेत मूसली, बीजबन्द, कमलगट्टा ये सब औषध तीन तीन माशा भर ले उसमें २१ पैसेभर सिघाड़े का आटा और २६ पैसे भर चीनी मिलाय १ पैसाभर नित्य खाय तो धातु पुष्ट हो। परहेज से रहे। अथवा तालमखाना १ पैसाभर, गोखुरू १ पैसाभर, शिलाजीत १ पैसाभर, इन सबको एकत्र पीस ३ पैसाभर चीनी मिलावे फिर ७ दिन तक धेला धेला भर नित्य खाय और परहेज करे तो धातु पुष्ट हो अथवा तालमखाना ५ पैसेभर, तज ५ पैसेभर, चीनीगोंद ५ पैसेभर सबको पीस राखे फिर उसमें दुगुना शहद मिलाय २ पैसेभर नित्य दूध के साथ निगलजाय। इसका सेवन २५ दिन तक करे और दूध ६ पैसेभर से शुरू करे और सेरभर तक नित्य बढ़ाता जाय तो धातु अतिपुष्ट हो।

इति द्वाविंशतितमस्तरङ्गः २२

—:०:—

शरीर की पुष्टई का यत्न

बूढ़ेपन को दूर करने के लिये सात धातु और सात उपधातु तथा चन्द्रोदय आदि रसों की क्रियाएँ और उनके खाने की विधि। सोना १ रूपा २ ताँबा ३ पीतल ४ सीसा ५ राँगा ६ लोहा ७।

मृगाङ्क की विधि

सोने का पतला वर्क कराय गर्मकर तेल, काँजी, मट्ठा, त्रिफला, गोमूत्र, कुलत्थ इनके काढ़े में तीन तीन बार बुझावे फिर सोने से दूना पारा ले और सोने के वर्कों को नींबू की खटाई के साथ खरल करे पीछे उसका गोला कर फिर उन दोनों की बराबर आँवलासार गन्धक उस गोले के नीचे ऊपर दे सरवे के संपुट में धर कपड़मिट्टी दे गजपुट में फूँक दे इस तरह इसमें ३ पुट दे तब यह मृगाङ्क चोखा हो। अथवा सोने का चोखा वर्क ले उसका सोलहवाँ हिस्सा सीसा डाले फिर इन दोनों को खटाई से खरल करे पीछे इसके नीचे ऊपर शोधी गन्धक इसकी बराबर दे और सरवे में धर उसको कपड़मिट्टी कर गजपुट में फूँक दे इस तरह सात पुट दे तो चोखा मृगाङ्क बने अथवा सोने का वर्क मँगाय उसको बराबर उसमें खटाई से खरल में पारा चढ़ावे पीछे उसमें कचनार के रस की १ पुट दे पीछे उसमें अग्निछाल के रस की ३ पुट दे फिर करिहारी की जड़ के रस की १ पुट दे पीछे उसमें सोने के वर्क से चौथे हिस्से मोती डाले और खरल करे पीछे उसमें सबको बराबर शोधी गन्धक डाल २ दिन खरल करे फिर उसका गोला कर, सरवे में धर, कपड़मिट्टी कर गजपुट में फूँक दे स्वाँगशीतल होने पर निकाले तो मृगाङ्क चोखा बने।

मृगाङ्कमारण की द्वितीय विधि

राँगा १ पैसाभर, सीसा १ पैसाभर ले, एक नये ठीकरे में चूल्हे पर चढ़ाय नीचे बबूल की लकड़ी जलावे जब ये तीनों पिघल जायँ तब उसमें विषखपरा की सूखी जड़ के छोटे छोटे टूक डालता जाय और करछी से चलाता जाय जब वह भस्म हो जाय तब एकत्रकर दाब रक्खे जब शीतल हो तब उतारे और १ रत्ती पान के साथ खाय तो दाह जाय और धातु बढ़े।

मृगाङ्क के खाने की विधि

१ रत्ती मृगाङ्क और १० माशा शहद में १ पीपल मिलाय खाय तो खाँसी, श्वास, क्षयी, अरुचि आदि सब रोगों को दूर करे। २ महीने खाय तो शरीर को पुष्ट करे। पथ्य से रहे खटाई आदि न खाय।

रूपरस की विधि

चाँदी का वर्क ३ भाग और हरताल का वर्क १ भाग ले पीछे इन दोनों को नींबू की खटाई से खरल करे फिर इनका गोला कर सरवे के संपुट में धर गज पुट में फूँक दे इसी तरह १४ पुट दे तो रूपरस निपट चाखा बने। एक रत्ती नित्य खाय तो बहुत गुण करे। अथवा चाँदी के पत्तों के नीचे ऊपर रूपामक्खी बराबर कर दे और सरवे के संपुट में फूँक दे तो रूपरस चोखा हो। १ रत्ती १ महीने तक खाय तो बहुत गुण करे।

दूसरी विधि

रूपा २ पैसेभर और जस्ता धेलाभर ले नीलाथोथा से १ पहर शोधे, १ पहर नींबू के रस में शोधे, १ पहर गौ के मट्ठे में शोधे, १ पहर खरगोश के मूत्र में शोधे, फिर ताँबे के पात्र में धर के फूँक दे तो रूपा सिद्ध हो जाय। १ रत्ती नित्य आमले के मुरब्बे में खाय तो बहुत गुण करे।

तीसरी विधि

खजूर का रस १० सेर, चूना २ सेर और १ शंख मँगाय कपरछान करे फिर इन तीनों को मिलाय ४ पहर कपरछान करे पीछे इन सबको १ शंख के भीतर भर उसमें २ पैसाभर शुद्ध रूपा धरे फिर शंखपर ३ कपरोटीकर उसे एक मटके के भीतर थोड़ासा चूना डाल बीच में लटकावे और मटके के पेट में छेद कर उसमें १ नली लगावे फिर उसका मुँह मूँद कपरोटी करे और नली के मार्ग से मटके के भीतर खजूर का रस डाले तथा नली का मुँह मूँद गढ़ा खोद घोड़े की लीद में ८ दिन गाड़ रक्खे तो रूपा सिद्ध हो। चावल प्रमाण पान में प्रातः समय खावे तथा दूध और घृत का सेवन अधिक करे तो भूख लगावे, शरीर को पुष्ट करे और भी अनेक गुण करे।

चौथी विधि

१ गोह मार उसमें जितना समावे उतना राँगा भर मूड़ और पूँछ काट दोनों मार्ग सी दे फिर उसको एक कुम्हड़ा मँगाय ऊपर सात कपरौटी कर सुखावे। जब वह सूख जाय तब उसमें गोह भरे और उसके मुँह पर ३ कपरौटी कर गजपुट में कंडा की आँच से फूँक दे जब शीतल हो तब निकाले तो सिद्ध हो। यह १ रत्ती तोले भर राँग को बेधे और ५० वर्ष की अवस्था पर खाय तो बहुत गुण करे और धातु बढ़ावे।

पांचवीं विधि

राँग ६ पैसेभर ले ढाक की लकड़ी में टांकी दे ऐसा छेद करे कि जिसमें १ सेर राँग समा जाय फिर उसमें नोन बिछावे उसके ऊपर नकछिकनी बिछाय राँग धरे फिर ऊपर नोन बिछाय और वज्रमुद्राकर उस पथली में चारों ओर से कंडा भर आँच दे जब शीतल हो तब निकाले तो सिद्ध हो। यह १ रत्ती तोले भर राँग को बेधे और खाय तो पूर्ववत् गुण करे।

छठी विधि

गन्धक १ पैसाभर, शोरा १ पैसाभर, गोभी का रस १२ टकाभर ले फिर प्याले मँगाय उनमें चार चार टकाभर गोभी का रस डाले पीछे शोरा और गन्धक ले गोभी के रस में २ पहर खरल करे फिर उसको प्याले में डाल चूल्हे पर चढ़ाय दे और करछी से टालते जाय जब रस जल जाय तब दूसरा प्याला चढ़ाय दे फिर तीसरा प्याला चढ़ावे और ऊपर से रस डालता जाय जब पिघल जाय तो भस्म हो। यह १ रत्ती तोले भर राँग को वेधे और पूर्ववत् बहुत गुण करे।

सातवीं विधि

पारा और रूपे के ताव दोनों बराबर ले फिर इनको तेण, मट्ठे, गोमूत्र, कांजी और कुल्थी के क्वाथ में शोधकर त्रिफला के क्वाथ से शोधे फिर इनको खरल में जब तक पिट्ठी के प्रमाण न हो जावे तब तक घोटे फिर गन्धक और हरताल ये दोनों बराबर ले उसमें मिलाय नींबू के रस से घोटे तदनन्तर करवे में धर के कपरौटी कर आँच दे तो रूपा सिद्ध हो जाय। यह अनेक गुण करता है।

तांबेश्वर की विधि

चोखे ताँबे के पत्र गाढ़े कराय तेल में, मट्ठे में, त्रिफले के रस में सात बार शोध ले पीछे उन पत्रों की बराबर रूपामक्खी महीन पीस उनके नीचे ऊपर धर सरवे में संपुट कर गजपुट में फूँक दे तो ताँबेश्वर चोखा बने, पीछे इसे १ रत्ती नित्य १ महीने तक खाय तो श्वास, खाँसी आदि सर्व रोग जायँ और बहुत गुण करे।

दूसरी विधि

ताँबा ५ तोले ले पत्र कराय प्रथम गोमूत्र में ७ बार फिर माठा में ७ बार बुझावे पीछे इमली के फूल मँगाय हाँडी में भरे उसके बीच में परत दे ताँबे के पत्र धरे और पानी डाल बारह पहर की आँच दे पीछे पत्र रेत के कढ़ाई में डाल नींबू के रस में खरल करे फिर ५ तोले पारा मँगाय कागजी नींबू के रस में २ पहर खरल करे ताँबे में चराय दे पीछे सात तोले गन्धक मँगाय नींबू के रस में खरल कर उसकी गोली बनावे। गोली के भीतर ताँबा धरे फिर उसके ऊपर नींबू के रस से ७ कपरौटी कर मटकी मँगाय मटकी के ऊपर ७ कपरौटी करके सुखाय उसमें बालू भर बीच में यन्त्र धरे और वज्रमुद्रा कर भट्ठी पर चढ़ाय २४ पहर की आँच दे जब शीतल हो तब उतारे। इसकी १ रत्ती मात्रा खाय तो ५ सेर की भूख हो, सर्दी दूर हो, नामर्द मर्द हो और कास, श्वास, वात, पित्त जाय।

तीसरी विधि

ताँबा ५ पैसेभर ले पत्र करावे फिर उन्हें तपाय सरसों के तेल, नकछिकनी के रस, घीकुआर के रस और आक के दूध में सात सात बार बुझावे पीछे इमली के फूलों में १२ पहर औटावे फिर खटाई की हाँड़ी में बन्दकर ३ दिन अग्नि करता जाय चौथे दिन रेतवावे और इस ताँबे के चूर्ण में २॥ पैसे भर पारा मिलाय कढ़ाही में डाल नींबू के रस में खरल कर पारा चराय के फिर उसमें १ पैसाभर गन्धक डाल नींबू के रस में गोली बनावे तदनन्तर कुम्हार से कटोरा सा संपुट बनवाय उसमें चौराई की जड़ पीस के बिछावे उस पर गदापुरैना की जड़ पीस गोली के ऊपर लपेटे फिर चौराई की जड़ पीस संपुट

के भीतर बिछावे और उस पर गन्धक डाल भीतर गोला धर संपुट को बन्दकर ऊपर से ७ कपरौटी करे और उसे मोटी हाँड़ी में धरे। हाँड़ी पर ७ कपरौटी कर पेंदी में छेदकर उसमें बालू भरे उस बालू के बीज में ताँबे के गोले को धर हाँड़ी के मुँह पर परिया धर वज्रमुहा करे उस पर भी ७ कपरौटी करे फिर उसे भट्ठी पर चढ़ाय नीचे २४ पहर तक तेज अग्नि लगावे जब स्वाङ्गशीतल हो जाय तब उतारे तो औषध सिद्ध हो फिर उसमें अकरकरा, लवङ्ग और कुटकी मिलाय बँगला पान के रस में ऐसी गोली बाँधे जिसमें गोली पीछे २ रत्ती ताँबा आवे १ गोली खाय तो खाँसी, कफ, ऊर्ध्वश्वास, आमवात और धातुक्षीणता दूर हो तथा काम की वृद्धि हो। जो इस औषध को नियम कर खाय तो वृद्ध देह तरुण हो और देह के वातविकार जायँ, नेत्रों में ज्योति बढ़े और बहुत गुण करे।

चौथी विधि

एक सेर ताँबे के पत्र कराय गोमूत्र और मट्ठे तथा तेल में तीनतीन-बार बुझावे फिर पारा पाव सेर, गन्धक पाव सेर इन दोनों को घीकुआर के रस में एक दिन घोट ताँबे के पत्रों पर लेप करे फिर सुखाय दूसरी बार लेपकर हाँड़ी में धरे और ऊपर परिया से मुँह बन्द कर हाँड़ी को चूल्हे पर चढ़ाय नीचे से ८ पहर अग्नि जलावे जब लाल हो जावे तब निकाल ले तो ताँबेश्वर सिद्ध हो। १ रत्ती प्रतिदिन पान में खाय तो सर्व रोग जायँ और गुण करे।

पांचवीं विधि

ताँबे के पत्र करावे फिर पारा और गन्धक बराबर ले नींबू के रस में घोट उन ताँबे के पत्रों पर लेप करे फिर उन्हें संपुट में धर ऊपर सात कपरौटी कर बकरी की लेंड़ी की आँच में ७ बार गजपुट दे जब स्वांग शीतल हो तब निकाले तो ताँबेश्वर सिद्ध हो। मात्रा १ रत्ती पान के साथ ले तो सर्वरोग जायँ अथवा ताँबेश्वर तीन रत्ती, तज, पत्रज, खुरासानी बच, नागकेसर, लवङ्ग, जायफल, जावित्री, त्रिकुटा, अकरकरा, मंजीठ ये औषध चार चार माशे ले घीकुआर के रस में गोली बाँधे अथवा शहद और मिश्री में गोली बाँधे। यह प्रतिदिन

खाय तो धातु बढ़े और कास, श्वास, बीसों प्रमेह, आमवात, क्षयी, अजीर्ण, रक्तपित्त और दाह ये सब रोग जायँ और भी अनेक गुण करे।

छठीं विधि

ताँबा १ पैसाभर, नैनियाँगन्धक १ पैसाभर ले डिबिया में धर कपरौटी कर अरने कंडों में दहका दे जब शीतल हो तब निकाल पथरसंगा और मूली का रस धेला धेलाभर डाल खरल करे फिर आँच दे तो ताँबेश्वर सिद्ध हो और ये सब औषधें बङ्ग में डाल खरल कर फूँकदे तो बङ्गेश्वर सिद्ध हो।

सातवीं विधि

४ पैसे भर ताँबे की कटोरी बनवाय गर्म कर १०१ बार नींबू के रस में बुझावे पीछे २ सेर काले धतूरे के पत्तों की २ रोटी बनावे उनमें से एक हँड़िया की पेंदी में बिछाय उस पर ४ पैसे भर आमलासार गन्धक पीस के धरे उसके ऊपर वह रोटी औंधावे फिर दूसरी रोटी कटोरी के ऊपर धर दोनों का मुख बन्द कर दे फिर हँड़िया का मुख बन्द कर १२ पहर की आँच दे जब स्वाङ्गशीतल हो तब निकाले तो ताँबेश्वर सिद्ध हो। मात्रा १ सरसों की बराबर पान में २१ दिन तक खाय तो कायाकल्प हो, ज्वर जाय और बहुत गुण करे।

आठवीं विधि

ताँबा १ पैसाभर, राँग धेलाभर, नकछिकनी छदामभर इन सबको घरिया में धर फूँक दे तो ताँबा भस्म हो जाय फिर उसमें पिसी हुई पथरसंगा की जड़, नकछिकनी समेत पारा गन्धक मिलाय घरिया में धर फूँक दे तो ताँबेश्वर सिद्ध हो।

नवीं विधि

दोहा

घोरि जँभीरी रङ्ग सों पारा गन्धक दोय।
पत्र लपेटैं ताम्र के तासों यह विधि होय॥
सरवा मध्ये पत्र धरि कपरौटी करवाय।
तीन बार इमि आँच दे ताम्र भस्म हो जाय॥

दशवीं विधि

प्रथम अधोतर या गजी की चद्दर ले चने के खेत में कई दिन तक प्रातःकाल फेरे जब उसमें चनों की नोनी लग जाय तब उसकी नोनी झार ले पीछे सात चुकरिया मँगाय उनमें नोनी भर बीच में एक एक पसा धरे फिर उनके मुँह दीवा से बन्द कर ऊपर से कपरौटी कर सुखावे और गढ़ा खोद उसमें कंडा भर बीच में चुकरिया धर फूँक दे। जब अग्नि शीतल हो तब निकाल ले तो वह १ रत्ती तोले भर राँगा को बेधे। यह सदाशिव का कहा हुआ है। यह बंगेश्वर की विधि है।

नागेश्वर की विधि

शीशे को गलाय तेल में, मट्ठे में, गोमूत्र में, काँजी में, त्रिफले के पानी में, और आक के दूध में ७ बार बुझावे पीछे कड़ाही में धर चूल्हे पर चढ़ाय नीचे अग्नि जलावे पीछे शीशे के ऊपर पीपल के छिलके का चूर्ण और इमली के छिलके का चूर्ण शीशे से चौथाई ले उस शीशे के ऊपर थोड़ा थोड़ा डालता जाय और लोहे की कड़छी के पेंदे से उसे १ दिन निरन्तर रगड़ता जाय पीछे इसे जीरे से उसन गजपुट में फूँक दे पीछे इसी तरह जम्भीरी के रस की १० पुट दे पीछे नागरबेल के पत्तों के रस की १० पुट दे फिर शीशे के बराबर मैनसिल ले उसे काँजी से खरल करे पीछे टिकड़ी बाँध सरवे में धर गजपुट में फूँक दे। स्वाङ्गशीतल होने पर निकाले इसी तरह ६० पुट दे तो नागेश्वर चोखा हो, बहुत गुण करे, सब रोगों को दूर करे। खाने की मात्रा १ रत्ती तथा २ रत्ती।

दूसरी विधि

शीशे को शोध कड़ाही में चढ़ाय नीचे अग्नि जलावे फिर केवड़े के घोटे से १ दिन निरन्तर रगड़ता जाय तो वह भस्म लाल हो। उसकी मात्रा १ रत्ती नित्य २१ दिन खाय तो बहुत गुण करे।

तीसरी विधि

शीशा ५ पैसे भर, मैनसिल १ पैसा भर, छाछिया गन्धक १ पैसा भर लेकर शीशे के पाँच पत्र करावे पीछे दो संपुट मँगाय दोनों औषध महीन पीसकर उनमें बिछावे उस पर परत देके शीशे के पत्र धरे फिर

ऊपर से और औषध दे ऊपर से दूसरा दिया धर ७ कपरौटी करे फिर उस संपुट को एक अँगीठी में धर अरने कण्डों से गजपुट में फूँक दे जब शीतल हो तब निकाले। १ रत्ती खाय तो धातु बढ़े और भूख बहुत हो।

बंगेश्वर की विधि

राँग को गलाय गलाय तेल में, मट्ठे में, गोमूत्र में, काँजी में और त्रिफले के पानी में ७ बार बुझावे फिर आक के दूध में सात बार बुझावे पीछे कड़ाही में धर चूल्हे पर चढ़ाय राँगे से चौथाई पीपल का छिलका और चौथाई इमली का छिलका महीन पीस राँग के ऊपर डालता जाय और कड़ाही के पेंदे से २ पहर तक रगड़ता जाय तब वह राँगा भस्म होता है पीछे राँगे के बराबर हरताल ले खटाई से खरल कर गजपुट में फूँक दे इसी तरह १० पुट दे तब बङ्गेश्वर सिद्ध हो। मात्रा १ रत्ती की अथवा बङ्ग और पारा पाव पावभर ले इनको एक जीव कर पत्र करे पीछे एक बड़ा उपला ले उसमें कसेला का चूर्ण पावभर बिछाय उसके ऊपर राँगे का टुकड़ा धरे फिर ऊपर कसेले का चूर्ण धर आसपास उपले धरे और बिना पवन की जगह में फूँक दे तो उस राँग के फूले हो जायँ। यह बहुत गुण करता है।

दूसरी विधि

आधसेर राँग को कड़ाही में पिघलावे पीछे ॥३ अजवायन और हल्दी ॥। भर ले एकत्र पीस कड़ाही में राँग पर बुरकता जाय और ढाँक की लकड़ी से चलाता जाय तो राँग मरे। इसके खाने की विधि यह है कि ३ तोले बङ्ग और लवङ्ग, इलायची, जायफल, जावित्री, सोंठि, मिरच, पीपल, तज, पत्रज, नागकेसर ये सब औषध बराबर ले ४ माशा की गोली बाँधे। १ गोली प्रतिदिन खाय तो शुक्रवृद्धि हो और कृशता, हड़फूटन, दाह, मूत्रकृच्छ्र और ज्वर ये सब रोग जायँ।

तीसरी विधि

राँगा और पारा बराबर ले अग्नि दे तो राँगा मरे और जो गुण स्वर्ण के खाने से हों वे ही बङ्गेश्वर से होते हैं।

चौथी विधि

राँगा ५ पैसाभर, हल्दी १५ पैसा भर, दोनों अजवायन १५ पैसा-भर ले कपरछान कर राँगे को गर्म करके कोरे खपरा में चढ़ाय पिघलावे और ऊपर से थोड़ी थोड़ी औषध डालता जाय जब सिद्ध हो जाय तब सब समेट एक दीवा में बन्दकर कड़ी आँच दे जब शीतल हो तब निकाले फिर लवङ्ग इलायची के अनोपान से खाय तो जलन जाय, भूख बढ़े। सोंठि से खे तो वात जाय, भूख बढ़े और अनेक गुण करे।

पाँचवीं विधि

राँगा को लोहे की कड़छी में तपाय गौ का मट्ठा, तिल का तेल और गोमूत्र को बहेड़े की कठौती में डाल इक्कीस इक्कीस बार बुझावे पीछे गजभर लंबा और गजभर चौड़ा गढ़ा खोद उसमें अरने कंडे भर ऊपर से पीपल की छाल बिछाय उसके ऊपर राँगा धर पीपल की छाल धरे फिर और कंडा धर फूँक दे तो भस्म हो।

छठी विधि

टाट पर भाँग बिछाय राँग के पत्र धरे इसी भाँति कई परत देके गजपुट में फूँक दे तो बङ्ग सिद्ध हो।

सातवीं विधि

चौपाई

पहिले दूध आक को लावे। तासों ले हरताल पिसावे॥
राँग पत्रसों वह हरताला। लपिटावे इत उत ततकाला॥
ता ऊपर पीपल को बकला। सूखो कूटि देय पुनि सकला॥
धरि सरवा में करि कपरौटी। गजपुट आँच देय पुनि मोटी॥
सात बार यहि विधि पुट देवे। पीपल बकला फिर के लेवे॥
बार बार इमि आँच दिखावे। मरे बङ्ग सो कामे आवे॥

सार की विधि

गजबेलि के लोहे का चूर कराय उसे तेल में, मट्ठे में, गोमूत्र में और काँजी में सात सात बार बुझावे पीछे छीलर के रस में खरल कर गजपुट में फूँक दे पीछे ग्वार के पट्ठे की तीन पुट और आक के दूध

की, थूहर के दूध की, त्रिफले के रस की और डोड़ा के पत्ते के रस की सात सात पुट दे इसी तरह पुट दे दे भस्म कर पत्थर के ऊपर पीसे जब तक वह जल ऊपर तिरे तब तक भस्म करे तो बहुत गुण करे अथवा गजबेलि के चूर में नींबू के रस की और नौसादर की २१ पुट दे गजपुट में फूँकता जाय और पीसता जाय तो सार चोखा हो और गुण बहुत करे। मात्रा १ रत्ती नित्य खाय तो सब रोगों को दूर करे।

दूसरी विधि

चौपाई

करि सरिया गजबेलि रितावे। ताको चूर्ण तौलि मंगवावे॥
सो चूरण का द्वादश अंशा। इंगुर डारे विधि औ शंशा॥
घृतकुमारि को डारे नीरा। दोय पहर लों घोटे धीरा॥
सरवा मधि धरि करि कपरौटी। आँच देय गजपुट की मोटी॥
फिर फिर घोटे फिर फिर आँचा। बार बार इमि करिये साँचा॥
तब लोहा मरि जाय निदाना। होय सिद्ध औषध परमाना॥

रसमारण विधि

लोह और चूना ५ पैसाभर, मैनसिल धेलाभर, कसीस धेलाभर ये दोनों औषध सूखी पीसे फिर औषधों के तीन भाग करे एक भाग चुकरिया में पानी डालके डारे फिर लोह और चूना दोनों को लोह के बासन में डाल लोहे के घोटे से घोटे और औषधों का पानी डालता जाय इस भाँति सात दिन घोटे पीछे सात आँच दे जब शीतल हो तब उतारे तो सिद्ध हो। अनोपान–सोंठि १ टकाभर, मिश्री १ टका भर ये दोनों औषधें मिलाकर २१ पुड़िया बाँधे और क्षीणधातुवाले को दे ऊपर से १ सेर गो का दूध पिलावे तो धातुवृद्धि हो।

दूसरी विधि

सार २ पैसाभर ले मूँगा के रस में ७ बार बुझावे फिर मूली के रस में ७ बार बुझावे पीछे धेला भर नौसादर ले सार में मिलाय सूखे खरल करे और थोड़ासा पानी गेर चुकरिया भर के ३ दिन राखे तो सार सिद्ध हो। शीशा धातु को १ सेर दूध के अनुमान से १ रत्ती दे तो धातु बढ़े। यह सारविधि है।

उपधातुओं के मारण की विधि

उपधातुएँ ये हैं—सोनामक्खी और रूपामक्खी १ अभ्रक २ मैनसिल ३ हरताल ४ पारा ५ खपरिया ६ सुरमा ७।

सोनामक्खी का शोधन

सोनामक्खी ३ भाग, सेंधा नोन १ भाग ले इन दोनों को लोहे के करछुले में धर बिजौरे के रस में और जँभीरी के रस में जहाँ तक लोहे का पात्र लाल हो जाय तब तक पकावे तो सोनामक्खी शुद्ध हो।

सोनामक्खी का मारण

सोनामक्खी को कुलत्थ के काढ़े में पीस सरवे के सम्पुट में धर गजपुट में फूँक दे अथवा तेल में पीस गजपुट दे या मट्ठे में पीस गजपुट दे अथवा बकरी के दूध में पीस गजपुट दे तो सोनामक्खी मरे। इसकी मात्रा १ रत्ती खाय तो गुण करे।

अभ्रक के शोधन और मारण की विधि

काले भोडल को अग्नि में तपाय दूध में बुझावे अथवा चौलाई के रस में बुझावे या खटाई में बुझावे तब अभ्रक शुद्ध हो पीछे अभ्रक का पृथक् पृथक् पत्र कर उन्हें कूट महीन कर सुखाय दे पीछे उन्हें कम्बल में धरे और उसमें भूसी समेत शालि मिलाय अभ्रक को शालिसमेत मसल मसल महीन कम्बल से पानी कर पृथक् बासन में रस निकाले तब यह धान्याभ्रम हो पीछे इस अभ्रक को आक के दूध में खरल कर इसकी टिकड़ी बाँधे पीछे सुखाकर आक के पानी में लपेट कपड़मिट्टी दे बिना सरवे गजपुट में फूँक दे इसी तरह ७ पुट दे और इसी तरह थूहर के दूध की ७ पुट दे तथा इसी प्रकार ग्वार के पट्ठे की ७ पुट दे और चौलाई के रस की ७ पुट दे अथवा नागरमोथा के काढ़े की, काँजी की, चित्रक के काढ़े की, जँभीरी की, त्रिफले की अथवा गोमूत्र की इन सबकी सात-सात पुट दे तो अभ्रक बहुत अच्छी बने। यह अभ्रक नित्य १ रत्ती २ महीने तक खाय तो प्रमेह आदि सब रोग जायँ और शरीर को बहुत पुष्ट करे और नपुंसकपना दूर हो।

अभ्रक की दूसरी विधि

सफ़ेद भोडल की बराबर गुड़ को पानी में घोलकर भोडल

के पत्रों में गाढ़ा गाढ़ा लेप करे और उन पत्रों के ऊपर शोरा बुरकाता जाय, शोरा भोडल से आधा ले और भोडल की तह करता जाय उस भोडल की तह को उपलों में फूँक दे वह भोडल खिल जाय निश्चंद्र हो तो यह भी गुण करे। मात्रा १ रत्ती की।

अभ्रक मारने की तीसरी विधि

डेढ़ तोले अभ्रक लेकर टाट की थैली में बाँधकर खूब मले जब वह मैदा सी हो जावे तब उसमें डेढ़ तोला गुड़ और डेढ़ तोला कलमी शोरा मिलाकर खरल करे फिर उसके चार भाग करे और चारों को चार बड़े बड़े उपलों में खोदकर रक्खे और उन पर एक एक उपला और रक्खे फिर एक गढ़ा हाथ भर गहरा खोदकर उसमें जितने अरने उपले आवें भरकर उन चार उपलों को रक्खे फिर आँच लगा दे जब शीतल हो तब निकाले इसी प्रकार से हर दफ़े गुड़ और कलमी शोरा मिलाकर चार दफ़े फूँके तो सिद्ध हो जाय। २ रत्ती प्रमाण मुनासिब ओषधियों के साथ खावे तो हरएक बीमारी को आराम करे।

चौथी विधि

श्याम अभ्रक को दूध, तेल, काँजी और कुलथी के क्वाथ में इक्कीस इक्कीस बार बुझावे फिर शोरा के गर्म पानी में १०१ बार बुझावे फिर खरल कर टिकिया बाँध सुखावे पीछे टिकिया की बराबर पारा दे गजपुट की आँच दे तो सिद्ध हो यदि कच्चा रहे तो फिर आँच दे फिर और ओषध के साथ खाय तो सर्दी और गर्मी के सब विकारों को दूर करे।

पाँचवीं विधि

भोडल ४० माशा और पुराना गुड़ ऽ= शोरा ऽ= लेकर पुराने गुड़ और शोरा दोनों को ऊपर नीचे चढ़ाय ।ऽ कंडों में फूँक दे जब शीतल हो तब सावधानी से निकाल लेवे। यह अभ्रक की विधि है।

हरताल का शोधन

पीछे हरताल का पत्र कर पोटली बाँध हाँड़ी में काँजी भर दोला यन्त्र में १ पहर तक पकाइए पीछे चने की कली के पानी में पोटली

कर दोलायन्त्र से ४ पहर पकाइए इसी तरह हरताल को पकावे तो हरताल शुद्ध हो।

हरताल का मारण

शोधे हरताल को खरल में महीन पीस दूध के रस में २ दिन खरल करे पीछे खरैटी के रस में २ दिन खरल करे पीछे इसका गोला कर छाया में सुखावे तदनन्तर छीले की राख को हाँड़ी में दाब दाब भरे उसके बीच में इस हरताल के गोले को धर हाँड़ी को चूल्हे पर चढ़ाय नीचे ३ दिन तक निरन्तर क्रम से मन्द, मध्य और तेज अग्नि जलावे और उसका धुआँ न निकलने दे यदि धुआँ निकले तो धुएँ को छीले की राख से मूँदता जाय पीछे स्वाङ्गशीतल होने पर उस हरताल को हाँड़ी में से निकाले तब यह हरताल सिद्ध और सफेद हो। खाने में मात्रा १ रत्ती खाय तो सब रोगमात्र को यह दूर करे और भूख बढ़ावे।

अथवा प्रथम हरताल को इस विधि से शोध ले पीछे इस हरताल को ग्वार के पट्ठे के रस में ३ दिन खरल करे पीछे चूल्हे पर चढ़ाय उसके नीचे ४ पहर अग्नि जलावे फिर स्वाङ्गशीतल होने पर निकाले और वह पूरी तौल उतरे तथा निर्धूम हो उसे पान में १ रत्ती खाय तो यह कोढ़ को दूर करता है। खाने में मोठ, चना की रोटी अलोनी खाय तो कोढ़ जाय।

हरताल की दूसरी विधि

हरताल २ पैसाभर, पारा २ पैसाभर ले २ पहर सूखा खरल करे पीछे मूँगा के रस में, आक के दूध में, सहिंजना के रस में और मकुना सेहुँड़ के दूध में बारह बारह पहर खरल करे पीछे माटी की घरिया में भर १०१ कपरौटी करके खूब सुखावे तदनन्तर माथे बराबर गढ़ा खोद उसमें बहुत सी लकड़ी और कंडे भर उसके बीच में उस हरताल के यन्त्र को धरकर फूँक दे जब शीतल हो जाय तब युक्ति से निकाले यन्त्र फूटने न पावे। जाड़े में पान के साथ खावे तो ५ सेर की भूख करे। गर्मी में मक्खन के साथ खाय तो रात्रिभर में सात स्त्रियों से भोग करे।

तीसरी विधि

हरताल ५ पैसाभर ले गोमूत्र में ८ पहर भिजोवे पीछे गोमूत्र सेहुँड़ का दूध, सहदेई का रस, आक का दूध, राई का रस, चिरचिरा का रस, गुवार का रस, बकरी का दूध, नकछिकनी का रस, नींबू का रस और बड़ का दूध इनमें क्रम से तीन तीन दिन खरल करे पीछे चँदिया बाँध ७ दिन सुखावे फिर मोटी हाँड़ी मँगाय सात कपरोटी कर सुखाय उसमें पीपल की लकड़ी की राख भर उसके बीच में भोडल के २ पत्र मँगाय उनके बीच में उस चँदिया को धर ऊपर से फिर उसी राख को हाथ से दबाय भरे। फिर हाँड़ी के मुख पर परिया धरके वज्रमुद्रा करे, तदनन्तर बड़े चूल्हे पर चढ़ाय ३२ पहर की आँच दे। प्रथम दीपक की सी आँच २ पहर तक, मशाल की सी आँच ४ पहर, खिचरी की सी आँच ६ पहर, बैंगन की सी आँच १२ पहर, फिर दीपक की सी आँच ८ पहर तक दे। पीछे स्वाङ्गशीतल हो जाय तब उतारे। मात्रा २ चावलभर पान के साथ खाय तो सकल कुष्ठ दूर हों।

चौथी विधि

हरताल १ पैसाभर ले पोटली बाँध ऽ५ गौ के दूध में ४ पहर औटावे फिर उसमें से निकाल हल्दी और बिष में ४ पहर खरल करे फिर नकछिकनी के रस, भोगी के रस, पथरचटा के रस और भाँगरा के रस में चार-चार पहर खरल करे फिर ऽ५ पीपल की छाल मँगाय उसकी मैदा कर घरिया बनाय उसमें हरताल भर २ घरियों के भीतर धर घरिया पर तीन कपरोटी करे फिर अंगीठी में कंडा भर गजपुट की आँच दे जब स्वाङ्गशीतल हो तब उतार १ रत्ती पान के साथ खाय तो सकल कुष्ठ दूर हों।

पाँचवीं विधि

हरताल और पारा धेलाभर ले नींबू के रस में ४ पहर तक खरल करे फिर चँदिया बाँधकर पीपल की राख मँगाय उसे केला के रस में भिजोय १ हाँड़ी में भरे उसके बीच में हरताल की टिकिया धरे ऊपर से कुम्हार के आँवाँ की भाँति बन्द करे और नीचे अग्नि जलावे जब

शीतल हो तब निकाले परन्तु यन्त्र फूटने न पावे तब सिद्ध हो। इसकी १ रत्ती तोलेभर राँग को बेधे।

छठी विधि

हरताल १ पैसाभर लेकर पुराने कंडा को खोल उसको घरिया बनाय उसमें धरे फिर उस पर कुचिला के पत्तों का रस निचोवे जो हरे पत्ते न मिलें तो सूखे पत्तों को भिगोकर निचोवे पीछे अग्नि दे इस भाँति आठ बार करे जब सुहागे को सी खील हो जाय तब बन्द करे तो हरताल को शुद्ध भस्म हो और १ रत्ती तोले भर राँग को बेधे।

सातवीं विधि

हरताल २ पैसाभर और पारा २ पैसाभर ले दोनों को १ पहर खरल करे पीछे मूँगा के रस में, सँहजने की जड़ के रस में, आक के दूध में और मकुना सेंहुँड़े के दूध में बारह बारह पहर खरल करे पीछे चँदिया बनाय १२ पहर सुखावे पीछे सरवों के यन्त्र में धर १०१ कपरौटी कर तदनन्तर खूब सुखाकर माथे बराबर गढ़ा खोद उसमें बहुत सी लकड़ी और कंडा भरे उसके बीच में यन्त्र धर कुम्हार के आँवाँ के समान बनाय आँच दे जब स्वाङ्गशीतल हो तब युक्ति से निकाले जिसमें यन्त्र न फूटे। इसकी मात्रा १ रत्ती भर खाय तो भूख बहुत बढ़े ५ भोजन करे और जब तक जीवे तब तक भूख न घटे।

आठवीं विधि

हरताल ६ पैसाभर और फिटकरी ९ पैसाभर ले सूखी २ पहर खरल करे पीछे आक के दूध में ४ पहर खरल करे फिर चँदिया बनाय ८ पहर सुखावे पीछे उस चँदिया को २ सरवों में धर ३ कपरौटी चढ़ाय सुखाय और बराबर गढ़ा खोद आधे में कंडा भर सरवा धरे उसके ऊपर से और कंडा भर अग्नि दे ऊपर से ढाँपि दे जब स्वाङ्गशीतल हो तब निकाल उसमें ये औषधें कपरछान कर मिलावे-लवंग, जायफल, दालचीनी, अकरकरा, कुटकी, जावित्री और अदरक के रस में दो रत्ती के प्रमाण हरताल, पारा इसकी १ माशा की गोली बाँधे और ४९ दिन खाय तो सकल कुष्ठ दूर हों, देह को सूजन जाय,

धातु पुष्ट हो, देह के मण्डल दूर हों। पथ्य–चना की रोटी खाय ४९ दिन पर्यन्त।

नवीं विधि

हरताल ४० माशा महीन पीसे, पीछे ८ तोला ४ माशा सीसे को खपरा में चढ़ाय नीचे अग्नि जलावे। जब पिघल जाय तब उसमें हरताल का चूर्ण डाल कड़छी से चलावे जब उसमें अग्नि उठे तब औटे हुए सरफोंका के पानी से बुझावे और १ रत्ती अजवायन के साथ खाय तो नामर्द मर्द हो।

दशवीं विधि

हरताल २ पैसाभर ले घिकुआर के रस में ८ पहर खरल करे फिर सहिंजना की जड़ के रस में ८ पहर खरल कर गोली बाँध सुखाय १ कागजी नींबू के भीतर धरे और ऊपर से सात कपरौटी कर गोला बनावे पीछे पीपल की लकड़ी की राख बनाय हाँड़ी में धरे उसके बीच में गोला धर ऊपर से मुँह तक दाब के खूब भरे और हाँड़ी पर ७ कपरौटी करे फिर हाँड़ो के मुख पर परिया धर वज्रमुद्रा करे तिस पर ३ कपरौटी कर सुखाय भट्ठी पर चढ़ाय २४ पहर आँच दे जब शीतल हो तब उतारे तब हरताल सिद्ध हो। मात्रा १ रत्ती पान के साथ खाय तो काया शुद्ध हो, छठे दिन खाय तो आगम जाने, सातवें दिन खाय तो तीनों लोक देखे, आठवें दिन खाय तो महादेव का आशीर्वाद होवे, नवें दिन खाय तो धन देखे, दशवें दिन खाय तो हरिणी की सी चौकड़ी फाँदे और ग्यारहवें दिन खाय तो सिद्ध हो।

ग्यारहवीं विधि

हरताल १ पैसाभर ले ताँबा की डिबिया में भरे उसमें ६ पैसाभर बड़े गोखुरू का रस डाल बन्द कर ऊपर कपरौटी कर फिर राख में गाड़ के ऊपर से आग जलावे और प्रातःकाल उखाड़ ले फिर उसमें नींबू का रस और आँवलसार गन्धक डाल अग्नि दे तो हरताल मरे।

बारहवीं विधि

तबकिया हरताल ले नींबू के रस में ३ दिन राखे चौथे दिन निकाल टिकिया बनाय मटका के भीतर पेंदी में धरे ऊपर से सरवा

औंधाय उसके चारों ओर फिटकरी बिछावे उसके ऊपर मटका के मुँह तक बालू भरके नीचे अग्नि जलावे जब ऊपर की बालू गर्म हो तब उतार ले और चाहे जिस काम में लावे।

तेरहवीं विधि तिजारी के ऊपर

तबकिया हरताल १ पैसाभर ले ग्वार के रस में एक पहर खरल करे फिर हरताल से चौगुनी फिटकरी ले १ चुकरिया में नीचे २ पैसाभर फिटकरी धरे और उस पर हरताल धर ऊपर से फिर २ पैसाभर फिटकरी धरे और उसका मुँह बन्द कर ऊपर से कपरौटी कर सवा हाथ गहरा डेढ़ हाथ चौड़ा गढ़ा खोद उसमें अरने कंडे भर बीच में चुकरिया धरे उसके ऊपर और कंडा धर फूँक दे जब जलकर बुझाय जाय और शीतल हो जाय तब निकाल इसमें से १ रत्ती बताशे में खाय तो तुरन्त तिजारी जाय २ घड़ी पीछे दूध, भात खाय और जो सन्निपातवाले को दे तो चावल भर अथवा डेढ़ चावल भर पान और १ लवङ्ग में खवावे तो चैतन्य हो। जो सन्निपात में बहुत ही डूबा हो तो पान और लवंग के रस में चटा दे तो निस्सन्देह बोध हो।

हरताल के गुण

सवैया

श्री हरताल गुणौघ बतावत चावल एक प्रमाण जो खावे।
पान में खात हरे सब व्याधिन दूध औ भात जो भोजन पावे।।
होय जो पुष्ट बने अति बीरज बीरज राखि समाधि लगावे।
और गुणन की गम्य नहीं पर जानत यह सब रोग भगावे।।

चौदहवीं विधि

हरताल २ भाग, पारा २ भाग, फिटकरी ५ भाग लेकर शुद्ध ऋद्धिनाम औषध के रस में घोलकर संपुट में बन्द कर गजपुट में फूँक दे तो हरताल की भस्म हो।

चन्द्रोदय रस की विधि

सोने का चोखा वर्क १ टकेभर और शोधा पारा ८ टकेभर ले अथवा शिगरफ़ का निकाला पारा ८ टकेभर, शोधा आँवलासार गन्धक १६ टकेभर ले फिर तीनों को खरल में डाल नांदणबणि-

नर्मे के फूल के रस से ३ दिन खरल करे फिर ग्वार के पट्ठे के रस से ३ दिन खरल करे फिर इसको सुखाय काँच की आतशी शीशी में कपड़मिट्टी में दे सुखाय इस शीशी में ये सब औषध सोने के वर्कसमेत भरे फिर शीशी का मुँह बाँध दे और बालुकायन्त्र में धर चूल्हे पर चढ़ावे नीचे अग्नि जलावे प्रथम मन्द, मध्य और तेज अग्नि दे इसी तरह ३२ पहर की आँच दे फिर स्वांगशीतल होने पर बालुकायन्त्र में से शीशी को निकाल चन्द्रोदय की डिब्बी में भर रक्खे इसका रंग शिंगरफ सदृश लाल हो पीछे इसमें से मात्रा १ रत्ती ले और इसमें जायफल, भीमसेनी कपूर, समुद्रशोष, लवंग, कस्तूरी ये सब ४ माशे मिलाय नित्य खाय तो गुण बहुत करे ऊपर से औटाय मिश्री के संयोग से रुचि मुवाफ़िक रात्रि में दूध पीवे और मांस आदि पुष्टई की वस्तु खाय और खटाई न खाय तो बहुत स्त्रियों से संभोग करे तथा यह चन्द्रोदय नपुंसकपने को दूर करता है और वीर्य का बन्धेज करता है।

स्वर्ण-भस्म

शुद्ध सोना और उसका दूना शुद्ध पारा नींबू के रस में घोट गोली कर गोली के समान गन्धक पीस नीचे ऊपर धरे फिर मिट्टी के दो सरवे ले एक में गोला धर दूसरा ऊपर से ढक दे उस पर कपरौटी कर बिनुवाँ कंडा की आँच दे। इसे सरावसंपुट कहते हैं। इसी प्रकार आग से निकाल निकाल संपुटकर चौदह बार आँच दे ऐसे प्रति आँच में गन्धक देने से स्वर्णभस्म निर्भय होता है अथवा माशे भर सोना गलाय उसमें माशे भर शीशा डाल उतार ठण्डा कर चूर्ण करे फिर नींबू के रस में गोला बाँधे नीचे ऊपर गन्धक धर गोले के समान सरावसंपुट कर फिर गोटा की आँच दे तो सोना भस्म हो अथवा कचनार के रस में पारा, गन्धक समान मिलाय खरल करे जब कजली हो तब सोने के पत्र पर लगावे फिर कचनार की छाल मीसिके उस गोली पर बहुत सी लपेटे फिर दो घड़िया मिट्टी की बनाय एक में धर दूसरी ऊपर ढाँप कसकर कपरौटी कर सुखाय बड़ी आँच दे इसी तरह प्रथम कही रीति से तीन आँच दे जब जिलाने से न जिये तो उत्तम है फिर उसकी भस्म जैसे कचनार विधान में कही वैसे ही करे। यह करि-

हारों से भी मरता है। ऐसे ही ज्वालामुखी (अरणी) से भी मरता है अथवा मैनसिल से सिंदूर मले फिर मदार के दूध में शतावरि घोट-घोट सुखावे तब दश माशे सोना गलावे जब वह चक्कर खाने लगे तब वह मैनसिल सिंदूर का चूर्ण सोने में छोड़कर बुकनी देकर तीव्र आँच दे और जब तक वह बुकनी न जल जाय तब तक आँच देता रहे इसी प्रकार से बुकनी दे-दे तीन आँच दे तो सोना भस्म हो अथवा कबूतर वा कुक्कुट की बीट दोनों को सोने के पत्र पर लपेटे और उसी के समान गन्धकचूर्ण भी दोनों ओर धरे तब संपुट करे फिर थोड़ी सी भूमि खोद पाँच कंडे में फूँक दे इसी प्रकार नो आँच दे दशवीं बार बड़ी आँच ३० कंडे को दे इस प्रकार से सोना भस्म होता है। परंतु ऊपर लिखी हुई विधि करने के पहले वैद्य को उचित है कि स्वर्ण को कांजी, गोमूत्र, कुल्थीक्वाथ इन सबमें तीन-तीन बार बुझाकर धातु को शुद्ध कर ले।

—:(०):—

सुवर्ण के शोधन-मारण की क्रिया

दोहा

कूट छान कचनार को रस कढ़ाय गलवाय।
तीन बार सोनो तहाँ डारु सुहागो जाय १
वा सोने की तबक करि पारा तबक समान।
डारि खल्ल मधि घोटि के गोला करे निदान २
सोना पारा दोय के सम गन्धक जो लेय।
गन्धक गोला के तरे अरु ऊपर वह देय ३
तब गोला वामें धरे कपरौटी करवाय।
सुखे आँच गजपुट करे बन के ऊपर लाय ४
तो सोना या यत्न सों भस्म होय मरि जाय।

रससिंदूर विधि

इसको हरगौरीरस भी कहते हैं। प्रथम पारे को शोधकर खरल में डाल हल्दी, ईंट, धूमसा और नींबू का रस इनमें ३ दिन खरल करे तब इसकी सातों काँचली दूर हों पीछे त्रिफला, कांजी, चित्रक, ग्वार,

के पट्ठे, सोंठि, मिरच, पीपल इनमें ३ दिन खरल करे पीछे लहसुन के रस और जभीरी के रस में तीन-तीन दिन खरल करे तदनन्तर हाँड़ी में धर दूसरी हाँड़ी का मुख जोड़े फिर मुँह को खाम चूल्हे पर चढ़ावे और ऊपर की हाँड़ी की पेंदी पर गीला कपड़ा रक्खे नीचे अग्नि जलावे तब वह पारा ऊपर की हाँड़ी की पेंदी में जाय लगे तब पारे को निकाल ले अथवा शिंगरफ़ का पारा विधि से निकाल बाँझककोड़े के रस में खरल करे पीछे हाँड़ी में बाँझककोड़े का रस डाल उस रस में ये वस्तुएँ और डाले—सरफ़ों का की जड़, जमीकन्द का रस, भाँगरे का रस, साँभर नोन, सेंधा नोन और कांजो ये सब हाँड़ी में डाल फिर इसमें डोलक-यन्त्र कर कपड़े में पारा बाँध ४ पहर पका ले तब वह पारा शुद्ध हो। यह पारा शुद्ध करने की विधि है।

अथवा हजार नींबू के रस में सोंठि, मिरच, पीपल राई, साँभर नोन, चित्रक और हींग ये सब ओषधें डाल २१ दिन तक इस रस में पारे को खरल करे तब वह पारा शुद्ध हो। शोधा पारा ५ टके भर, शोधा आँवलासार गन्धक ५ टके भर, नौसादर ८ माशा, फिटकरी ८ माशा इस सबको ३ दिन खरल करे पीछे आतशी शीशी के ७ कपड़मिट्टी दे उसमें ओषध भरे फिर शीशी का मुँह खामकर बालुकायन्त्र में धरे और भट्ठी के ऊपर चढ़ावे। नीचे क्रम से मन्द, मध्य और तेज अग्नि जलावे। इसी प्रकार ३२ पहर की अग्नि दे पीछे स्वाङ्गशीतल होने पर बालुकायन्त्र में से शीशी निकाल उसमें से रससिंदूर को निकाल ले। १ रत्ती नित्य पान के साथ खाय और पथ्य से रहे तो यह सब रोगों को अलग-अलग अनोपान से दूर करता है, भूख लगाता और शरीर को पुष्ट करता है। यह हरगौरीरस की क्रिया है।

अथवा शिंगरफ़ से निकाला पारा अथवा यही शोधा पारा और आँवलासार गन्धक इन दोनों को बराबर ले और इन्हें बड़ की जटा के रस में १ दिन खरल कर फिर आतशी शीशी के कपड़मिट्टी दे उसमें भरे। फिर इस शीशी को पतली ईंट से खाम दे और बालुका-यन्त्र में शीशी को धर उसे भट्ठी पर चढ़ाय क्रम से २१ पहर मन्द, मध्य और तीक्ष्ण अग्नि दे पीछे स्वाङ्गशीतल होने पर रससिन्दूर को

निकाले । इसका रंग शिंगरफ़ के समान होता है । १ रत्ती पान में खाय तो सब रोगों को दूर करे । यह रससिन्दूर की क्रिया है ।

पारा मारने की विधि

पारे को खरल में डाल गूलर के दूध में १ पहर खरल करे और गोली बाँधे । फिर गूलर के दूध में चोखी हींग घिस उसकी २ मूसी (घरिया) बनावे और पारे की गोली को मूसी में धर दूसरी मूसी का मुँह जोड़ खाम दे । पीछे सुखाकर १ सेर ऊपले की भूभल में पकावे जब वह पारा सफेद खिल जाय तब इसकी भस्म हो । यह भस्म सब रोगमात्र को दूर करती है ।

पाराभस्म की क्रिया

अथवा अपामार्ग के बीजों को महीन पीस उसकी २ मूसी बनावे । पीछे गूलर के दूध में पारे को खरल कर गोली बाँधे । गोली मूसी में धर इसके नीचे ऊपर दड़घल के फूल, बायबिड़ंग और खैर इनका चूर्ण रक्खे । फिर इस मूसी की गोली कर उसको धवनी से कोयले में धँवावे । फिर इसके कपड़मिट्टी दे गजपुट में फूँक दे, तब इसकी भस्म पूरी तोल उतरे । यह भस्म सब रोगों को दूर करती है ।

दूसरी विधि

पारा ७ तोला, गन्धक ७ तोला, सोनामक्खी ७ तोला इन तीनों को इकट्ठे कर नींबू के रस में खरल करे पीछे आतशी शोशी में भर इस शीशी को बालू के यन्त्र में धर ८ पहर आँच देवे फिर उतारकर गन्धक २४ माशे, राई ७ तोले डाल के ४ दिन खरल करे, फिर दूसरी शीशी में डाल बालू के यन्त्र में चढ़ाय ७ दिन आँच दे जब शीतल हो, तब उतारे । मात्रा १ चावल भर पान के साथ खाय तो ८५ की भूख हो ।

तीसरी विधि

पारा २ पैसे भर ले स्याह धतूरे के रस में ३ पहर खरल करे । फिर करिहारी के रस में ३ पहर खरल कर पीछे शीशी पर ७ कपरौटी कर औषध भरकर मुख मूँद अरने कंडों से गजपुट में फूँक दे । जब शीतल

हो तब निकाले। इस विधि से थोड़ी कंडा की आँच अंगीठी में दे तो सिद्ध हो। गुण बहुत करे, भूख ऽ५ की लगे और ७ स्त्री से भोग करे।

वसन्तमाली रस की क्रिया

सोने का वर्क १ माशे, मोती २ माशे, शिंगरफ़ ३ माशे, मिरच ४ माशे, सूरतखापरा ८ माशे। खापरे को गोमूत्र में १६ पहर गोलक-यन्त्र से पकावे फिर इन सबको खरल में डाल मक्खन से खरल करे। जितना मक्खन सोखे उतना मिलावे। फिर नींबू के रस में खरल करे जिससे मक्खन सूख जाय और चिकनाई दूर हो जाय। इस प्रमाण चाहे जितना करे फिर इसकी गोली कर इसे १ रत्ती २ पीपल और शहद के संयोग से नित्य खाय तो विषमज्वर आदि सब रोगों को दूर करे और इसे पुष्टाई के संयोग से खाय तो शरीर को पुष्ट करे।

शिंगरफ शोधन-विधि

नींबू के रस की, पुट दे और भेड़ के दूध की ७ पुट दे तो शिंगरफ़ शुद्ध हो।

शिंगरफ-मारण-विधि

चोखे शिंगरफ़ की ४ पैसे भर की डली ले इसे कड़छुले में धर इस डली के ऊपर नींबू का ऽ। भर रस सुखावे पीछे शिंगरफ़ के ऊपर प्याज का रस ऽ५ सुखावे फिर इस डली को निकाल कड़छुले में धरे। इस डली के नीचे ऊपर ऽ। भर प्याज की लुगदी दे पकावे। फिर इस डली को अलग निकाले पीछे ऽ। भर कुचिला, ऽ। भर राई, ऽ। भर मालकाँगनी, ऽ१ प्याज, ऽ१ घृत, ऽ१ शहद इन सबको महीन पीस एक लुगदी कर कड़ाही में धर और लुगदी के बीच में शिंगरफ़ की डली धर और इसके नीचे ८ पहर अग्नि जलावे तब यह शिंगरफ़ सिद्ध हो और तोल में पूरा उतरे। रंग लाल हो। खाने की मात्रा आध रत्ती की अथवा १ रत्ती पान में खाय, पथ्य से रहे तो यह सब रोगों को दूर करे, भूख बहुत लगावे और नपुंसकपने को दूर करे।

दूसरी विधि

शिंगरफ़ ४ पैसाभर, पीपल ४ पैसाभर दोनों मिलाकर १ पहर

खरल करे, पीछे काले धतूरे के रस में २१ पहर खरल करे। पीछे चँदिया बाँध उस पर वत्सनाग विष धेला भर पानी से पीसकर लपेटे। उस चँदिया को सुखाकर, महीन कपड़ा में बाँधे, फिर ১५ गौ का दूध मँगाकर हँड़िया में भरे और उसमें चँदिया डाले। हँड़िया के मुख पर परिया रख उड़द के चून से चारों ओर बन्द करके चूल्हे पर चढ़ाकर ६ पहर तक मध्यम आँच करे। जब शीतल हो तब उतार दूध पृथ्वी में गाड़ दे और शिंगरफ़ निकाल ले। मात्रा ४ रत्ती पान के साथ खावे तो देह में बल, सुर्खी और भूख बढ़े तथा झोल मिटे एवं पुरुष शक्तिमान् हो।

तीसरी विधि

১८ गोमूत्र कड़ाही में चढ़ावे, उसमें विष का डेला डाल कलछी से चलाता जाय। जब गाढ़ा होकर ১। शेष रहे तब उसमें १ पैसा भर इंगुर खरल करे। जैसे गाढ़ा होता जाय वैसे गोमूत्र डालता जाय। जब सूखकर गाढ़ा हो जाय तब टिकिया बनाकर सरवा संपुट में रख ४ कपरौटी करके गजपुट में फूँक दे शीतल होने पर निकाल पान में १ रत्ती खाय तो पुष्टता और सुर्खी करे तथा खाँसी जाय।

चौथी विधि

शिंगरफ़ को थूहर की पुँगरिया में रखकर १०१ बार रेंडी की आँच में बुझावे। फिर आँवलासार गन्धक डाल कुम्हड़ा में रखकर आवाँ में रक्खे तो सिद्ध हो।

सुम्बलखार मारण विधि

सुम्बलखार २ पैसाभर ले। गधे का मूत्र ১२ और थूहर का दूध ১२ इन दोनों को एक हँड़िया में भर दोलायन्त्र में सुम्बलखार लटकावे और मध्यम आँच करे। जब दोनों का खार हो जाय तब निकाले फिर १०१ इन्द्राणी के फल मँगाकर एक फल में भर दो। कपरौटी करे, थोड़े से कंडों में आँच दे। इस भाँति प्रत्येक फल में १०१ आँच दे तो सुम्बल सिद्ध हों। १ रत्ती तोले भर राग को बेधे।

पीतल और काँसा मारण विधि

दोहा

घोट जँभीरी रंग सों पारा गन्धक दोय ।
पत्र लपेटैं दुहुँन के तासों यह बिधि होय ।।
सरवा मध्ये पत्र धरि कपरौटी करवाय ।
तीन बार इमि आँच दे उभय भस्म हो जाय ।।

कालीमिरच, शोधा हुआ शिंगरफ़, सुहागा, गन्धक, शुद्ध सींगिया विष, शुद्ध पीपल, धतूरे के बीज इन सबों को खरल में डालके भाँग के रस में दो पहर घोटे तो कनकसुन्दर नाम रस हो। यह महारस अति उत्कट संग्रहणी, अतीसार और मन्दाग्नि रोग-नाशक है।

बड़वानलरस

हरताल, पारा और शीशे की भस्म १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, मिरच १६ भाग, इन सबको पीसकर १ रत्ती घी के साथ खाय तो बिसूची, सब प्रकार के शूल, प्लीहा और उदररोग दूर हों। यह बड़वानलरस गुल्म, संग्रहणी, श्वास, खाँसी, कफवात और मन्दाग्नि आदि अनेक रोगों को दूर करता है।

वह्निरस

जावित्री ३ कर्ष, मिरच १ पल, गन्धक आधा कर्ष, पारा आधा कर्ष, लौंग आधा कर्ष, रिष आधा कर्ष, इन सब औषधों को इमली के पत्तों के रस में पीसकर गोली बनावे। १ माशे की गोली के सेवन से अग्नि ऐसे बढ़ती है, जैसे कि अग्नि को विद्या से अग्नि बढ़ जाती है। यह वह्निरस शूल आदि समस्त रोगों को दूर करता है।

शंखलीरस

पारा १ भाग, गन्धक १ भाग, शंख की भस्म ४ भाग, कौड़ी की भस्म ६ भाग, मिरच १२ भाग, और पारे से चौथाई सुहागा, इन सबको पीसकर ४ माशे घी के साथ खाय तो क्षयीरोग शान्त हो।

शंखद्रावरस

आक, सेंहुड़, थूहर, इमली, ढाँक, काले तिल, अपामार्ग, गोखुरू,

कौड़ी, शंख इन सबों की भस्म से उत्पन्न खार, पारा, पाँचों नोन, ५ खार, ये सब बराबर ले और सबकी तिहाई गन्धक और रेहू मिट्टी, सोरा, कसीस, नौसादर ये चारों चीजें सब औषधों को बराबर ले। फिर इन सबों की कजली करके नींबू के रस में घोटे, पीछे नलिकायंत्र में चढ़ाकर चार पहर की आँच दे। उसमें से सुई को गलानेवाला जो रस टपके, उसको ले ले और उसमें से ३ रत्ती या ६ रत्ती नलिका से दे तो गुल्म, बवासीर, प्लीहा आदि रोगों को नाश करे। यह शंखद्रावरस प्रत्यक्ष फल का दिखानेवाला है, इसमें संदेह नहीं।

शितादिरस

चौपाई छन्द

ताम्र सुहागा गन्धक लीजै। विष पारद हरताल धरीजै॥
भाँग तूतिया दोय मिलाय। ये सब लीजै शुद्ध कराय॥
घटिका एक ताहि पिसवाय। घोटि करेला रंग मिलाय॥
जाको नाम शीतअरि जानि। शंभुशिवा सों कहेउ बखानि॥
मिसरी जीरा में सहदेइ। सकल सुयश याको सुनि लेइ॥
शीतज्वर अति जाय नसाय। इक दोई चौथाई जाय॥

पञ्चामृतपरपटीरस

दोहा

लोहा अभ्रक पारदै अर्क शुद्ध सब लेइ।
दूनों गन्धक सबनि ते लोहपात्र भरि देइ॥

चौपाई

बदरी काष्ठ आँच मृदु दीजै। सिद्ध जान पुनि ये विधि कीजै॥
गोमय ते फिरि भूमि लिपाऊ। तामें कदलीपात्र बिछाऊ॥
रस उतारि तापर सब नावै। फिर कदली के पत्र उढ़ावै॥
या विधिसों रस सिद्ध प्रमाना। पञ्चामृत परपटी बखाना॥
संग्रहणी अतिसार नशाई। जीर्णज्वर यक्ष्मा मिटि जाई॥
प्लीह पाण्डु ज्वर अर्श नशाई। अम्लपित्त अरु अग्नि बढ़ाई॥

दोहा

जीरा सैंधव हींग में संग्रणी अनुपान।
केवल जीरा संग में पाण्डुरोग में जान॥

शहद पीपली संग ही जीर्णज्वर मिट जाय ।
सर्वरोग में दीजिये बुध हनुमान बताय ।।

विलासिनीवल्लभरस

दोहा

गन्धक पारो भाग द्वै कनकबीच सम लेइ ।
काढ़ि धतूरे तेल में शुद्ध सो घोटन देइ ।।
कहेउ विलासिनि वल्लभै याको नाम सुहाय ।
दोय बल्ल मिश्री शहद देत प्रमेह बहाय ।।
करै मनोज प्रकाश अति वीर्यबन्द सो होइ ।
हरै मानिनी मान को जो यह सेवै कोइ ।।

हीरा की शोधन और मरण विधि

कुल्थी और कोदों के क्वाथ को दोलायन्त्र में भर उसमें भटकटैया की जड़ की लुगदी में हीरा रखकर कपड़े में बाँध तीन दिन सिद्ध करे तब हीरा शुद्ध हो। फिर आग में तपाकर गधे के मूत्र में २१ बार बुझावे। ७४ मत्कुण (खटकिरवा) और हरताल पीस गोलाकर उसमें हीरा रख तीव्र आँच दे। मूषायन्त्र में रख भाथी में फूँक दे, फिर अश्व-मूत्र में २१ बार बुझावे। हरताल गोला में रखकर फूँके। इसी तरह २१ बार अश्व-मूत्र में बुझा बुझाकर फूँके। यह इस प्रकार से भस्म होता है। इसका चूर्ण सर्वत्र साध्य है। अथवा हींग, सेंधा नोन, कुलथी के क्वाथ में डाल उसमें यह तपाय २१ बार बुझावे तो हीरा मरे। अथवा मेढक काँसे के पात्र में मूँदे और उसे डरावे। जब वह भय से मूते उस मूत्र में हीरा तपाकर बहुत बुझावे तो खिलकर चूर्ण हो।

वैक्रान्ति की शोधन और मारण विधि

वैक्रान्ति नाम कच्चे हीरे का है काला हो वा लाल उसको १४ बार बुझाके लालकर करके हीरे की तरह शोधे। फिर उसे मेढ़ासिंगो के पञ्चांग के गोले में रखकर मूषायन्त्र में भर संपुट कर फूँक दे। इसी प्रकार से सात बार करे तो वैक्रान्ति भस्म हो। इसको हीरे की जगह दे।

सर्वरत्नों की शोधन और मारण विधि

अच्छे मोती, माणिक्य और मूँगा अरणी रस दे दोलायन्त्र में १ पहर सिद्ध करे तो शुद्ध हों। घिकुआर और चौराई या स्त्री का दूध, इन तीनों में सात सात बार माणिक्यादि तपा तपाकर बुझावे। मूँगा, मुक्तादि सब क्षण भर में वर्ण पलट जाते हैं, संशय नहीं। मूँगा और मोती सोनामक्खी की रीति से भी मरते हैं और सब रत्न हीरे की तरह शोधे और मारे।

शिलाजीत शोधन विधि

ग्रीष्म के ताप से पर्वत से चुआ शिलाजीत लाकर गो के दूध और त्रिफला क्वाथ तथा भँगरे के रस में पहर भर घोट दिन भर धूप में रक्खे। जब सूख जाय तब शुद्ध हो। अथवा अच्छे शिलाजीत की शिला ले छोटे छोटे टुकड़े करके अतिउष्ण जल में पहर भर रक्खे तत्पश्चात् उतार ले, इसको क्षारक कहते हैं। यह सफेद होता जाता है और सब पानी न जले तो क्वाथ सम रहता है। वैद्यजन औषध में ये दो प्रकार के सार देते हैं। कुरैया, पलाश, बकायन, बहेड़ा, अमलतास, मदार, अलसी, सेंहुड़, चिरचिरा, पाढ़, केला, जमालगोटा, सहिंजन और मूली इत्यादि क्षारवृक्ष हैं।

तूतीयाशोधन विधि

बिलाई की बीट और तूतिया का दशांश सुहागा दे घोर मध्यम आँच दे। फिर दही की पुट दे फूँके। उसके उपरान्त शहद की पुट दे फूँके तब शुद्ध हो।

सुरमा की शोधन और मारण विधि

सुरमा चूर्ण कर जंभीरी नींबू के रस में घोलकर एक दिन धूप में रक्खे तो सब काम लायक होता है। उसी प्रकार से गेरू, कसीस, सुहागा, कोड़ी, शंख, फिटकरी और चोक ये सब शुद्ध होते हैं।

मैनसिल की शोधन और मारण विधि

बकरी के मूत्र में दोलायन्त्र से तीन दिन पकाकर बकरी के पित्ते में सात भावना दे तब मैनसिल शुद्ध होता है। अथवा अगस्तपत्र के रस में सात भावना दे तो मैनसिल कार्य साध्य होता है।

खपरियाशोधन विधि

खपरिया ले गोमूत्र से दोलायन्त्र में शुद्ध करे तो कार्य साध्य हो।

समस्त धातुओं के सत निकालने की विधि

लाही, लघुमीना, छगरीपय, सुहागा, मृगशृङ्ग, पीली सरसों, सहिंजन, लालगुंजा, गुड़, सैन्धव, यव, कटुकाघृत, मधु, इनमें जो एक दो न हों तो चिन्ता नहीं जिस धातु में चाहे उसमें दे। अन्धमुखयन्त्र कर आँच दे तो सब धातु का सत निकलता है।

गन्धक शोधन विधि

लोहे की कड़ाही और घी दोनों को अतितप्त कर घी के समान गन्धकचूर्ण छोड़े। जब गल जाय तब चतुर्गुण दूध में गर्म ही छोड़कर बुझावे तो गन्धक शुद्ध हो। यह सर्वकार्य योग्य है।

शिंगरफ से पारा निकालने की विधि

शिंगरफ़ को नींबू के रस अथवा नीम के पत्तों के रस में १ पहर घोटे, फिर उसे डमरूयन्त्र कर उतार ले तो पारा शुद्ध हो। पारा उड़ा लेने से भी शुद्ध हो, सर्वकार्यकारक होता है।

पारे के मुखकरण की विधि

कालकूट, बच्छनाग, सिंगिया, प्रदीपन, हलाहल, ब्रह्मपुत्र, हरदिया, सुक्तक, सौराष्ट्रक, ये नव विष हैं और मदार, सेंहुड़, धतूरा, करियारी, लाल कनेर, घुँघची, और अफ़ीम ये सात उपविष हैं। इन सब विषों में मर्दन करने से पारा पक्षहीन होता है और समस्त धातुओं के भक्षण करने को समर्थ होता है। अथवा त्रिकुटा, दोनों खार, राई, पाँचों नमक, लहसुन, नवसादर और सहँजने की छाल, ये सब बराबर ले चूर्ण करे। फिर पारे के समान ले जंभीरी के रस वा नींबू के रस अथवा काँजी में गर्म कर तीन दिनरात खरल करे तब पारा सब धातुओं को खावे और तोल न बढ़े और पारे के मुख हो अथवा छरबुन्दा वा बीरबहूटी में तीन दिन घोटे फिर पाँचों नोन और नींबू के रस में घोटे तो पारे का मुख खुले और धातु भक्षण करे।

द्वितीय ज्वरांकुशरस

हरिण का सींग चूर्ण कर बराबर जैत का रस ले मिट्टी के बर्तन में

रख मुँह मूँद दे। १ पहर की आँच दे उतार ले फिर आठवाँ अंश त्रिकुटा दे पीसे। पान के रस में चार रत्ती दे तो वातपित्तज्वर नाश हो। यह ज्वरांकुशरस सर्व ज्वरों के लिए हितकारी है।

ज्वरारिरस

पारा, खपरिया, हरताल, तूतिया, सुहागा और गन्धक ये सब समान ले शोध कर करेले के रस में एक दिन घोटकर ताम्रपात्र में अर्ध अंगुल मोटा लेस पात्र का मुख मूँद कपरौटी कर बालू के यन्त्र में रख यन्त्रमुख खुला रखकर आँच दे। जब उस बालू में धान डालने से खील हो जाय तब जानिए कि रस सिद्ध हो गया। जब वह अपने आप ठण्ढा हो तब उसको पात्र से छुड़ा ले। फिर इस ज्वरारिरस के समान मिरच मिलाके पीसकर माशे भर पान के टूक में धर खिलावे तो ज्वर का नाश करे। तीन दिन खाने से अतिकठिन अन्तरिया, तिजारी, चातुर्थिक आदि ज्वरों को नाश करे।

शीतज्वरारिरस

हरताल, तूतिया, ताम्रभस्म, शोधा पारा, शुद्ध गन्धक, मैनसिल, ये सब एक एक तोला भर ले। त्रिफला के रस में घोटकर गोला बाँधे फिर मिट्टी से कपरौटी कर खूब फूँक मदार के दूध में सात भावना दे पुनः जमालगोटा की जड़ के काढ़े में और निशोत के काढ़े में सात भावना दे। १ माशे रस और पचास मिरच, छः माशे गुड़, दो तुलसी-दल भक्तिपूर्वक तीन दिन खाय। इस रस का नाम शीतारि है और बहुत दुर्लभ है। इसमें पथ्य दूध-भात दे तो जूड़ी, दाह, ज्वर, तिजारी, चातुर्थिक, अन्तरिया, नित्य और समग्र ज्वरजनित विकार नाश हों।

ज्वरघ्नगुटिका

शुद्ध पारा १ भाग, एलुआ, पीपल, जंगीहड़, अकरकरा, कड़ुआ तेल में शोधा गन्धक, इन्द्रायण ये चार-चार भाग ले इन्द्रायण के रस में मिलाकर माष प्रमाण गोली बाँधे। इस ज्वरघ्नगुटिका को तरुण ज्वर में गुर्च के रस के साथ दे तो ज्वर जाय।

लोकनाथरस

पारा बुभुक्षित और धातुभक्षक दो भाग ले दोनों को खरल कर

कजली करे और पारे से चौगुनी पारे की भस्म और पारे के समान सुहागा गौ के दूध में घोटे और पारे से अठगुनी शंख की भस्म शुद्ध ले सब पीस दो सरवों के भीतर लेस कर दोनों का संपुट कर वस्त्र लपेट मिट्टी लगाकर गजपुट में फूँक दे। जब ठंडा हो तब निकाले फिर खुरचकर खरल करे। यह रस ६ रत्ती ले मिरच के साथ खरल करे। वातरोग में घी तथा पित्त में मक्खन के साथ और कफरोग में शहद से दे एवं अतिसार, छर्दि, अरुचि, ग्रहणी, दुर्बलता, मन्दाग्नि, कास, श्वास, गुल्म इन रोगों में शहद से दे। इस लोकनाथरस पर प्रथम तीन कौर घी-भात खाय, फिर क्षण भर विना तकिये, बिछौने खाट पर उताना सोवे, उसके उपरान्त जिस प्रकार चाहे सोवे और खटाई छोड़ मधुर दही अच्छे घृत के साथ अन्न खाय और जंगली मृगादि पशु, पक्षी आदि का मांस घृत में अच्छी तरह भूँजकर अवश्य खाय। संध्या समय पक्का अर्धावशेष दूधभात भोजन करे। मूँग के मोदक अधिक घृत में बने हुए भोजन के साथ खाकर तथा तिल आँवला पीस उबटना लगाकर वा घी मर्दन कर अन्हावे। अथवा उष्णोदक से कमर तक स्नान करे। तेल को न छुवे। बेल, करेला, मछली, इमली, श्रम, स्त्रीभोग इत्यादि को त्याग दे। मद्य, अचार, हींग, सोंठि, उड़द, मसूर, पेठा, राई, बेर और काँजी, तजे तथा सम्पन्न न सोवे। काँसे में न खाय। ककारादि आम के फल और साग छोड़ दे। यह लोकनाथरस शुभ मुहूर्त, पूर्णा तिथि शुक्लपक्ष और बलवान् चन्द्रमा देख, कुमारी जिमाकर, दान दे, दुघटिका साधकर भक्षण आरम्भ करे। इसके खाने पर तप आती है उसके लिए मिश्री, गुर्च का सत, वंशलोचन इन सबको मिलाकर दे। कचूर, अनार, दाख, ऊख की गँडेरी दे तो रसताप दूर हो। अथवा धान की छाल घृत में भूँज चूर्ण करके मिश्री मिलाकर खिलावे, उसी ताप में धनियाँ और गुर्च का काढ़ा दे। अथवा खसरूखे का काढ़ा मधु और मिश्री मिलाकर दे, इससे रक्तपित्त, कफ, कास, श्वास और स्वरभङ्ग ये सब अच्छे हों। लोकनाथरस भुनी हुई भाँग में मिलाकर निद्राभंग, अती-सार, संग्रहणी और मन्दाग्नि में भी दिया जाता है। यदि सोंचर, हड़

और पीपल के साथ खिलावे एवं गर्म पानी पिलावे तो शूल और अजीर्ण दूर हो। पीपल और शहद से दे तो पिलही, वातरक्त, छर्दि और अर्श को दूर करे। नासास्तु अरण, अनार के रस में दे बेर, सिमी, मोरपंख की भस्म, मिश्री और शहदयुत खाय तो छर्दि और हिचकी दूर हो। ये भाँति भाँति के अनोपान लोकनाथरस के कहे सो सब पूरे करे। इसमें भी उसी प्रकार देना जैसे मृगाङ्क, हेमगर्भ, मौक्तिकाक्षा और पञ्चरत्नादि पोटली का रस। इन सबों में लोकसदृश पथ्य करे तो सम्पूर्ण रोग अच्छे हों।

मृगाङ्कपोटलीरस

सोने का वर्क यत्नपूर्वक बनाकर उसके बराबर पारा मिला के खरल करे और कचनाररस वा अरणीरस अथवा करियार रस में घोटे। जब गोला बँध जाय तब चौथाई सुहागा दे और स्वर्ण का दूना मोती का चून दे तथा इन सबके समान गन्धक दे। फिर सबको खरल करे गोला बाँध सूत का कपड़ा लपेटे, उस पर मिट्टी लगा, सुखाकर, सरवासंपुट कर लोनपूरित पात्र में संपुट धरे फिर उसको सुखाकर गजपुट में फूँक दे फिर ठण्ढा होने पर निकाल सोने के प्रमाण पारा और गन्धक ले पूर्ववत् रस में खरलकर फिर उसी क्रिया से गजपुट में फूँक दे। जब ठण्ढा हो तब निकालकर दो गुंजा रस, आठ मिरच वा तीन पीपल के साथ दे और औषधि को विचारकर रत्तीभर न्यूनाधिक विचारकर दे और घी अथवा शहद के साथ दोष विचार कर देना चाहिए। इसमें लोकनाथ के सदृश पथ्य देना चाहिए। चित्त एकाग्रकर अति पवित्र हो खावे तो श्लेष्मा, ग्रहणी, कास, श्वास, क्षयी, अरुचि इन सब रोगों को यह रस दूर करता है एवं बलहीन को बलवान् और दुर्बल को मोटा करता है।

कफ क्षयी पर हेमपोटलीरस

पारा और उसकी चौथाई सोना ले खरल करे। जब पीठी हो जाय तब दोनों से दूनी गन्धक दे। फिर कचनार के रस में घोट गोला करे। उसे मूषायन्त्र में भर संपुट कर, वस्त्र लपेट, मिट्टी लगाके, सुखाकर भूधरयन्त्र में फूँक दे। भूधरयन्त्र—एक हाथ लम्बा और एक हाथ

चौड़ा गढ़ा खोदे। उसमें एक छोटा सा गढ़ा खोदे उस छोटे से गढ़े में औषध रख मिट्टी से दाब उस पर बिनवाँ कण्डों की करसो कर बड़े गढ़े में भर तीन दिन आँच दे। जब स्वभाव से शीतल हो तब निकाल समान गन्धक ले अदरक अथवा चीते के रस में घोट बड़ी पीली कौड़ी में भर औषध का अष्टमांश सुहागा और सुहागे का आधा सिंगिया दोनों को सेंहुड़ा के दूध में पीस कौड़ी का मुख बंद कर, फिर मिट्टी के पात्र में चूना लगा कौड़ी में भर दूसरे दिवस बंद कर मुद्रितकर, गज-पुट में आँच दे। जब ठण्ढा हो तब निकालकर लोकनाथ की रीति से खिलावे और मृगाङ्क की रीति से तीन दिन पथ्य दे। लोन वर्जित है। जो छर्दि हो तो गुर्च का रस वा क्वाथ मधुयुक्त दे। कफार्ति में गुड़, अदरकरस युक्त दे। अतीसार में भूनी भाँग ही दोनों के साथ दे। कास, श्वास, ग्रहणी, क्षयी और अरुचि इनमें दही और भाँग के साथ दे। यह हेमपोटली रस अग्निदीपन और कफवातनाश करता हुआ बहुत श्रेष्ठ है।

कास पर हेमगर्भरस

पारा ४ भाग, सोना ४ भाग इन दोनों की पीठी कर द्वादश भाग गन्धक दे और तीनों की कजली कर १६ भाग मोती, २४ भाग शंख, १ भाग सुहागा ये सब एकत्र कर पक्के नींबू के रस में घोटे। फिर गोला बाँध, मूषा पुट में रख, मुद्रा साध, सुखाकर हाथभर भूमि खोदकर उसमें रखकर हाथभर कण्डा भराकर फूँक दे। जब शीतल हो तब निकाल ले। चार रत्ती रस और उन्तीस मिरच गोघृत में पीस चाँदी व मिट्टी तथा काँच के पात्र में धर खिलावे और लोकनाथरस समान पथ्य बतावे। इस यत्न से कास, श्वास, क्षयी, वात, कफ, ग्रहणो और अतीसारवाले को दे। यह हेमगर्भपोटली इन सब रोगों को हर लेती है।

द्वितीय आनन्दभैरवरस

शुद्ध शिंगरफ़, सिंगिया, मिरच, सुहागा और पीपल ये सब समान ले महीन चूर्ण करे। नींबू के रस अथवा अदरख के रस में १ पहर खरल करे। फिर यह आनन्दभैरवरस रोगी का बल देखकर एक जुवार वा दो गुञ्जा रस इन्द्रायण कुरैया छाल दोनों दश माशे पीस रसयुक्त

शहद में मिलाकर चटावे तो त्रिदोष जाय व अतीसार दूर हो। गऊ का दही, मट्ठा और घृत पथ्य भात के साथ खाय। ठण्ढा पानी और भाँग अच्छी तरह धो-बनाकर रात को पिलावे।

सन्निपात पर लघुसूचिकाभरण

सिंगिया ४ माशे और पारा ४ माशे दोनों को खरल कर दो परई काँच के लुक करी हुई में धरके मुद्राकर सुखा के चूल्हे पर चढ़ाकर मन्द मन्द दो पहर की आँच दे। दोनों जुदा कर ऊपर के सरवे में लगे हुए रस को छील जिस पात्र में पवन न जा सके ऐसी सूचीमुख शीशी में रक्खे। फिर उस शीशी से जितना रस निकले, उसे सन्निपात मूर्च्छित का शिर मुड़ाय पछने दे जो रक्त निकले उसी घाव पर उस रस को अँगुली से मले। जो रुधिर और रस में मिल जाय तो मूर्च्छित जागे। उसी प्रकार से साँप का काटा हुआ भी जागे, फिर इसे इस उपचार से तप आवे तब उस रोगी को मधुर अर्थात् गँडेरी, अनार, छुहारा और दाख आदि खिलावे।

सन्निपात पर जलबुन्दरस

पारे की भस्म समान गन्धक और चौथाई मैनसिल, सोनामक्खी, पीपल, सोंठि, मिरच ये सब समान ले और खरल कर मछली के पित्ते में सात भावना दे। इसी प्रकार मयूर पित्ते में भी सात भावना दे। सुखाकर श्वेत मुसली के रस में दो गुञ्जा परिमाण खवावे और पञ्चकोल--पीपल, पीपलामूल, चव्य, सोंठि, चीता, काढ़े में भी दे। यह जलबुन्दरस सन्निपात को दूर करता है। जल ठण्ढा पिये और ठण्ढे जल से हाथ-मुँह धोवे। जल का स्पर्श रक्खे तो औषध बल पाती है और सन्निपात को दूर करती है।

सन्निपात पर पञ्चवक्त्ररस

शुद्ध पारा, सिंगिया, गन्धक, मिरच, सुहागा, पीपल इनको धतूरे के रस में १ दिन मर्दन करके फिर धूप में सुखावे। यह पञ्चवक्त्ररस दो गुञ्जा सन्निपात में दे तो सन्निपात दूर हो तथा मदारमूलक्वाथ, सोंठि, मिरच और पीपल के साथ दे, यही अनोपान है। पथ्य--दही और भात दे। इसको शहद के साथ खाय तो कफजनित उपद्रव दूर होते

हैं। अदरक और शहद के साथ दे तो अग्निदीपन करे। यथायोग्य घृत और मांस खाय तो अग्नि को प्रबल करे।

सन्निपात पर उन्मत्तरस

पारा और गन्धक बराबर ले धतूरे के फल के रस में १ दिन खरल करे। फिर इसमें इसके समान त्रिकुटा डालकर पीसे। इस उन्मत्तरस का नास लेने से सन्निपात दूर होता है।

शूल पर नाराचरस

शुद्ध पारा, सुहागा समभाग कर समान मिरच, गन्धक, पीपल और सोंठि दो दो भाग ले खरल करे। फिर सबके समान शुद्ध जमाल-गोटा ले सबको एकत्रकर खरल करे। इसे गुञ्जाभर देने से रेचन हो। यह नाराचरस आध्मान, मलविष्टम्भ, उदावर्त आदि सब रोगों का नाश करता है।

शूल पर इच्छाभेदीरस

शुद्ध शिंगरफ़, सुहागा, सोंठि और पीपल एक एक तोला भर, चोष और जमालगोटा ४ तोला भर सबको खरलकर गौ के दूध में तीन गुञ्जा रेचनार्थ दे। इस इच्छाभेदीरस से विष्टम्भ और आध्मान रोग नाश हो।

क्षयी पर राजमृगाङ्करस

पारा की भस्म ३ भाग, सोने की भस्म १ भाग, ताँबे की भस्म १ भाग, मैनसिल, शुद्धगन्धक, हरताल दो दो भाग, इन सबको घोटकर कौड़ी में भर बकरी के दूध में सुहागा पीस कौड़ी का मुख मूँद मिट्टी के पात्र में धर, संपुटकर, सुखाकर गजपुट में फूँक दे। जब शीतल हो तब खरल करे। इस राजमृगाङ्करस को ४ गुञ्जा दे तो क्षयी क्षय हो। इसका अनोपान २९ मिरच के साथ अथवा पीपल और शहद के साथ दे।

वराग्निरस

शुद्ध पारे से दूनी शुद्ध गन्धक खरलकर कजली करे। दोनों के समान पोलाद भस्म ले सब घिकुवार के रस में दो पहर घोट बासन में भर एरण्डपत्र से ढंक पहर भर धूप में रक्खे। उष्ण हो तब नाज की

राशि में १ दिन १ रात रखकर निकाल ले। फिर खरल कर वस्त्र में छान ले तब जल पर डाले तो तिरेगी।

स्वयमग्निरस

त्रिकुटा, त्रिफला, इलायची, जायफल और लौंग ये सब ८ भाग ले सबको खरल कर शहद के साथ दो निष्क खाय। यह स्वयमग्निरस क्षयी और कास को नाश करता है।

श्वास पर सूर्यावर्त्तरस

पारे की आधी गन्धक २ पहर घिकुवार के रस में घोटे। फिर यह कजली बराबर ले ताम्रपत्र पर लेप करे पुनः १ दिन थालीयन्त्र में पकाकर ऐंच ले अथवा थालिकायन्त्र मिट्टी की हाँड़ी में लोन भर उस पर ताँबे का पात्र धर मुख मूँद कपरौटी कर फूँक दे। यह सूर्यावर्त्तरस पीस दो गुञ्जा खवावे तो श्वास को नाश करे।

द्वितीय स्वच्छन्दभैरवरस

शुद्धपारा, मरा लोहा, सोनामक्खी, गन्धक, हरताल, हड़, अरणी, मेवड़ी, त्रिकुटा, भुना सुहागा और सिंगिया इनको बराबर मिलाकर खरल करे, फिर १ दिन गोरखमुण्डी के रस में खरल करे। फिर दो गुञ्जा समान गोली करे यह स्वच्छंदभैरवरस वातरोगी को खिलावे। रासना, गुर्च, देवदारु, सोंठि, एरण्ड की जड़ इनका काढ़ा कर गुग्गुल-युक्त गर्म उसके साथ पिलावे। यह अनोपान सुखदायी है।

अश्मरी पर त्रिविक्रमरस

मरा ताँबा, बकरी का दूध समान ले किसी पात्र में धर आँच दे दूध उतार ले तब ताँबे के समान शुद्ध पारा और गन्धक ले मेवड़ी के रस में १ दिन घोट, गोलीकर, मूषायन्त्र में धर, बालुकायन्त्र में आँच दे। तब दो गुञ्जा खिलावे, बिजैण की जड़ को समेवा काढ़े में यह रस दे। माशेभर सेवन करे तो पथरी दूर हो।

महाहरतालेश्वर

हरताल, सोनामक्खी, मैनसिल, शुद्धपारा, सैन्धव, सुहागा ये सब समान खरलकर पारे से दूनी गन्धक ले और गन्धक के तुल्य मरा ताँबा जम्भीरी के रस में ५ दिन घोट, सरावसम्पुट में धर, कपरौटी

कर भूधरयन्त्र में फूँक दे। इसी प्रकार ६ बार फूँके, फिर निकालकर विजयसार में ५ दिन पूर्ववत् घोटे तब २४ तोले रस ले मरा ताँबा ८ तोले, मरा लोहा १६ तोले ये तीनों जम्भीरी के रस में १ दिन घोट दश गोइँठा में आँच दे। इस भस्म का तीसवाँ अंश सिंगिया दे खरल करे तब दो माशे भैंस के रस में नित्य खाय। इसके पीछे बकुची का चूर्ण दश माशे मधुयुक्त घी के साथ खाय तो सब प्रकार के कुष्ठ नाश हों।

कुष्ठ कुठाररस

पारे की भस्म, गन्धक, मरा हुआ लोहा, ताम्र, गुग्गुल, त्रिफला, बकायन, चीता, शुद्ध शिलाजीत इन सबको १ तोला ३ माशा ले और कच्चे रेंजे के बीजों का चूर्ण २१ तोला ४ माशा तथा अभ्रकभस्म २१ तोला ४ माशा ले इन सब औषधों को इकट्ठी कर समान घृत में सानकर घृतभांड में भरकर रख छोड़े। फिर आठ माशे खिलावे तो सर्वप्रकार के कुष्ठों को दूर करे। इस कुष्ठकुठाररस से गलितकुष्ठ भी अच्छा हो जाता है।

उदयादित्यरस

शुद्ध पारा, दूनी गन्धक ले घिकुवार के रस में १ दिन मर्दन करे। फिर उसका गोला बाँध मिट्टी के बरतन में रखकर उसके ऊपर १ कटोरी, जो पारे से तिगुने ताँबे की गहरी बनी हो ढक दे। ढकने से चारों तरफ राख भरकर चूल्हे पर चढ़ा दे। दो पहर की आँच दे। कटोरी पर गोबर मिला हुआ जल छोड़ता जाय। अन्त में तीव्र आँच दे। ठण्ढा करके उतार ले। फिर कठगूलर, चीता, त्रिफला, अमलतास, पत्रविड़ंग, बकुची के बीज इनका क्वाथ कर इसकी भावना दे २८ दिन घोटे। २ गुञ्जा प्रमाण इस उदयादित्यरस के खिलाने से विचर्चिका, दाद, श्वेत कुष्ठ ये सब अच्छे हों। इसका अनोपान खदिरसारक्वाथ वा गो का दूध अथवा त्रिफले के क्वाथ में तीन शाण बकुची का चूर्ण मिला दे। इस रस से तीन दिन में फूट, काककुष्ठ और सात दिन में श्वेतकुष्ठ दूर होता है।

अथवा यह लेप लगावे। नीलपत्र, गुञ्जक, कसीस, धतूरा, हंसपद (हंसराज), सूर्यमुखी, छोटी लुनिया ये सब समान भाग ले जहाँ

फूटा हो वहाँ लेप कर दे तो सात दिन में गलितकुष्ठ अच्छा हो एवं श्वेतकुष्ठ साध्य अथवा असाध्य कैसा ही हो दूर हो। इसी पर महात्मा लोगों ने और भी लेप कहा है। घुँघची और चीता जल में पीस लेप करे तो श्वेतकुष्ठ दूर हो। अथवा मैनसिल, चिर्चिरा और राख पीस पानी के साथ लेप करने से श्वेतकुष्ठ दूर होता है।

कुष्ठ पर सर्वेश्वररस

शुद्ध पारा ४ तोला और गन्धक १६ तोला ले १ पहर खरल करे। फिर मरा ताँबा, अभ्रक, लोह, शुद्ध इँगुर चार चार तोला ले और मरा सोना और चाँदी भी चार चार तोला ले और १ माशे हीरा, ८ तोला हरताल का सत ले जम्भीरी, धतूरा, कसा, सेंहुड़, मदार, बकायन, कुचिला, कनेरमूल इन सबके रस में एक एक दिन भावना दे, घोटे। इसी प्रकार ७ दिन करे। फिर सुखाकर कपरौटी कर बालू के यन्त्र में ३ दिन तक मन्द मन्द आँच दे पकावे। इसको निकाल चूर्णकर ४ तोला सोंगीया और ८ तोला पीपल का चूर्ण ले मिलावे। २ गुञ्जा शहद के साथ खिलावे तो श्वेतकुष्ठ दूर हो। इसके ऊपर से बकुची और देवदारु का चूर्ण १ तोलाभर रेंड़ी के तेल में मिलाकर चाटे।

मेहबद्धरस

मरा पारा, कांतीभस्म, लोहभस्म, शिलाजीत, शुद्ध सोनामक्खी, शुद्ध मैनसिल, शुद्ध त्रिकुटा, त्रिफला, झरबेर की गूदी, कैथा और हल्दी इन सबको समान भाग ले चूर्णकर भाँगरे के रस में घोटे। जब सूख जाय तब ४ माशे रस शहद मिलाकर नित्य खाय तो प्रमेह नाश हो। बकायन के ६ बीज ले ४ पैसा भर चावल का धोवन और आठ माशे घी, इन सबको मिलाकर पिये तो दिनी प्रमेह दूर हो।

जलोदर पर बन्यरस

पारा १६ तोला, गन्धक ३२ तोला, हल्दी, त्रिफला, हड़ इन सबों को आठ आठ तोला ले और निशोथ, जयपाल, चीता इन सबों को बारह बारह तोला ले और त्रिकुटा, जमालगोटे की जड़, श्वेतजीरा ये बत्तीस बत्तीस तोला ले सबको मिलाकर खरल करे, फिर जयन्तीरस, सेंहुड़ का दूध, भाँगरे का रस अथवा काढ़ा और रेंड़ी का तेल इन सबों

में क्रम से सात भावना दे। इस महावन्यरस को ४ माशे मुँह में रख गर्म पानी से उतार जाय। जब मल गिर जाय तब सन्ध्या को रेचन होने पर मट्ठा, भात और सैन्धव पथ्य दे। गर्म जल पिये तो पेट के सब रोग दूर हों, मूढ़वात भी जाय।

विद्याधररस

शुद्ध गन्धक, हरताल, सोनामक्खी, मरा ताँबा, मैनसिल, पारा इन सबको समान ले खरल करे। फिर पीपल के क्वाथ में दिन भर खरल करके एक दिन सेंहुड़ के दूध में खरल करे। २ माशे शहद में चाटे तो गुल्म और प्लीहा दूर हो। इस रस को खा ऊपर से दूध पिये।

त्रिनेत्ररस

सुहागा, हिरन का सींग, मरा हुआ सोना, ताँबा और पारा इनको एक दिन तक अदरक के रस में घोटे। फिर गजपुट में फूँक दे। इस त्रिनेत्ररस को माशे भर घृत और शहद में चाटे उसके ऊपर सैन्धव, जीरा, हींग, घृत और शहद भी चाटे। इस प्रकार महीने भर नियम करे तो पसली की सब पीड़ा जाय।

गजकेसरीरस

शुद्ध पारा से दूनी शुद्ध गन्धक ले दोनों को बलपूर्वक घोट दोनों के तुल्य शुद्ध ताँबा ले कजली में मिलाकर सम्पुट करे। फिर मिट्टी के बर्तन में नोन के बीच में सम्पुट रख गजपुट की आँच दे। जब ठण्डा हो जाय तब निकाल ले, फिर खरल कर पक्के पान के रस में खवावे तो पेट का शूल दूर हो। उसी पर भूनी हींग, सोंठि, जीरा, बच, मिरच इसके चूर्ण को उष्णोदक के साथ पिये तो असाध्य शूल भी नाश हो।

अग्नितुण्डीरस

शुद्ध पारा, विष, गन्धक, तीनों अजमोद, त्रिफला, सज्जी, जवाखार, चीता, सैन्धव, जीरा, काला नोन, बायबिडंग, गंगालोन, त्रिकुटा इन सबको समान भाग ले और सबके समान कुचिला ले जम्भीरी के रस में छोटी मिरच सम गोली बाँध खाय तो मन्दाग्नि दूर हो।

अजीर्णकण्टकरस

पारा, सिंगिया, गन्धक तीनों शुद्ध और समान ले खरल कर सबके

समान मिरच दे भटकटैया के रस में भिगोय २१ बार घोट तीन रत्ती भर की गोली बनाय खाय। इस गोली से अजीर्ण शान्त हो और सूचिका जाय।

मापान भैरव

मरा हुआ पारा और ताँबा, हींग, पुष्करमूल, सैंधव, शुद्ध गन्धक, हरताल, कुटकी सबों को बराबर ले खरल करे और गदापुरैना, बन्दाल, मेवड़ी, चौराई, करुई तोरई इन सबों के रस में क्रम से बलपूर्वक घोटे। फिर माशे भर शहद के साथ खाय और ऊपर से निम्बादिक क्वाथ पिये तो कफरोग जाय।

वातनाशकरस

शुद्ध पारा, शुद्ध सोना, शुद्ध लोहा, शुद्ध हीरा, शुद्ध सोनामक्खी, शुद्ध हरताल, शुद्ध सुरमा, शुद्ध तूतिया, अफ़ीम ये सम भाग ले और १ भाग में पाँचों नमक ले सबको सेंहुड़ के दूध में खरल कर संपुट में रख भूधरयन्त्र में पचावे। फिर माशे भर अदरक के रस में खाय तो सब वायु नाश हों। अथवा पीपरामूल के क्वाथ में पीपल मिलाकर खाय तो सब दादविकार दूर हों।

कनकसुन्दररस

सोने की भस्म ८ भाग, पारे की भस्म १२ भाग, शुद्ध गन्धक १२ भाग, ताम्रभस्म ८ माशा, अभ्रक की भस्म १६ माशा, सोना-मक्खी की भस्म ८ माशा, बङ्ग की भस्म ८ माशा, सुरमा की भस्म १ तोला, लोह की भस्म ३२ माशा, विष की भस्म १२ माशा, करियारी ४ तोला इन सबों को आँवले और जम्भीरी के रस में खरल कर संपुट में थोड़ी आँच दे फूँके फिर खरल कर माशे भर खिलावे तो सन्निपात दूर हो और अदरक अथवा लहसुन के रस में खिलावे तो कुष्ठ, विसर्प, भगन्दर, ज्वर और विषविकार ये सब जायँ।

भैरवरस

पारा १२ माशा, गन्धक १२ माशा इन दोनों को घोट कजली कर ताँबा, चाँदी, पीतल, बङ्ग, पोलाद आदि की एक एक तोला भर भस्म ले सहिंजने की जड़ का रस, सोंठि का काढ़ा, बेल के फल

का रस, चौराई का रस आदि में पहर भर घोटकर गोला बाँधे। फिर इस गोले को नोनपूरित दो काँच के प्यालों के संपुट में रख उसके ऊपर से कपरोटी मिट्टी करे पुनः इसको एक मिट्टी के पात्र में धर बालुका यन्त्र कर २ पहर की आँच दे। जब ठण्ढा हो तब निकालकर उसमें १ तोला मूँगे का चूर्ण, विष ४ माशा भर काले सर्प के जहर-युक्त एक दिन खरल करे। फिर काँच की शीशी में भर दो पहर की आँच दे। जब ठण्ढा हो तब निकालकर चूर्ण करे। फिर तगर, मुसली, जटामांसी, चूक, जगन्नाथी पीपल, नील, नीम की पत्ती; इलायची, चीता, कटसरैया, सौंफ़, वनतोरई, धतूरा, अगस्त, मुण्डी महुआ, चमेली, मैनफल आदि के रस में अथवा काढ़े में एक एक बार घोट सुखाकर रक्खे। इस रस को सन्निपात में मिरच दो गुञ्जा, जम्भीरी अथवा अदरक के रस में दे। यह रस शार्ङ्गधर में लिखा है।

ग्रहणीकपाटरस

चाँदी, मोती, सोना और लोह इनकी भस्म एक एक भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, शुद्ध पारा ३ भाग ले खरल करे। फिर इसको कैथे के रस में खरलकर हिरन के सींग में भर ३० गोइँठा की आँच दे। जब ठण्ढा हो तब निकाल बरियारे के रस में ७ बार खरल करे। पीछे चिर्चिरे के रस में ३ बार खरल करे, फिर पठानीलोध, अतीस, मोथा, धवपुष्प, इन्द्रयव और गुर्च इनके रस में क्रम से तीन तीन बार खरल करे। माशे माशे भर शहद और मिरच मिलाकर चाटे तो सब अती-सार और संग्रहणी दूर हों तथा अग्नि दीपन हो।

वज्रकपाटरस

पारे और अभ्रक की भस्म, शुद्ध गन्धक, जवाखार, सुहागा, अरणी, बीजबोल और खुरासानी बच इन सबको समान भाग ले यह रस जम्भीरी और भाँगरे के रस में तीन-तीन दिन घोट, गोला कर, सुखाय, लोहे की कड़ाही में रख, ऊपर से मिट्टी का पात्र ढाँप ४ घड़ी तक मन्द-मन्द आँच दे। फिर उसको उतारकर उसके समान उसमें अतीस, मोथारस डाल कैथे और भाँगरे के रस में ७ बार घोटे। फिर इसके बाद धवपुष्प, इन्द्रयव, मोथा, लोध, बेल और गुर्च इनके रस में

एक एक बार घोटकर सुखा ले। इस रस को ४ माशा भर शहद के साथ खाय और ऊपर से चीता, सोंठि, पांगानोन, बेल, सैन्धव इन सबका समान भाग चूर्ण कर उष्णजल के साथ खाय तो ग्रहणी दूर हो।

मदनकामदेवरस

चाँदी, हीरा, सोना, ताँबा आदि की भस्म, पारा, गन्धक, लोहा तीनों शुद्ध ले इन सातों को क्रम से बढ़ती भाग ले और घिकुवार के रस में घोटकर शीशी में भर कपरौटी करे और मिट्टी के पात्र में नीचे ऊपर नोन पूरकर बीच में शीशी धर संपुट बनाय चूल्हे पर धर मन्द मन्द आँच दिनभर जलावे, फिर निकालकर मदार के दूध में खरल करे। असगन्ध, काकोली, बिना भी असगन्ध, किवाँच, मुसली, ताल-मखाना और शतावरि इनके रस में तीन तीन भावना दे, फिर कमल की जड़ ले कसेरू और काँस इनमें तीन भावना दे। कस्तूरी, त्रिकुटा कपूर, शीतलचीनी, इलायची, लौंग आदि को पीसे, फिर पूर्व चूर्ण जो भावनादि से सिद्ध किया है उसका अष्टमांस कस्तूर्यादि चूर्ण युक्तकर सबके समान शक्कर मिलाकर २० माशा भर खाय। ८ पैसा भर दूध पिये। पथ्य मधुर करे। इसके खाने से बहुत स्त्रीगमन करे और धातु न घटे।

कन्दर्पसुन्दररस

पारा, शुद्ध हीरा, मोती, चाँदी, सोना, कृष्णाभ्रक इन पाँचों की भस्म एक एक तोलाभर लेकर खैर के क्वाथ में १ दिन घोटे, फिर मूँगे का चूर्ण, शुद्ध गन्धक दो दो तोला मिलाकर असगन्ध के रस में एक दिन घुटाके मृग के सींग में भर कपरौटी कर थोड़ी आँच में रख फूँक दे। उस पर धवफूल के रस अथवा क्वाथ में भावना दे फिर काकोली, विना आसन मुलेठी, जटामांसी, बरियारा, गुलसकरी, ककई, भसीड़, हिंगवट, मुनक्का, पीपल, काबादी, कटसरैया, वनमूँग, मुग्धपर्णी, फालसा, कसेरू, महुआ, किवाँच के बीज इन सबके रस में एक एक भावना दे सुखाकर खरल करके रख छोड़े। इलायची, तेज, पत्रज, बंशलोचन, लवङ्ग, अगर, केसर, मोथा, कस्तूरी, पीपल, सुगन्धबाला और कपूर इनका चूर्ण कर ४ माशाभर ले और ४ माशाभर पूर्वोक्त

कन्दर्पसुन्दररस और खाँड़, आँवला, बिदारीकन्द इन सबको मिलाकर तोलाभर घी रात्रि में विषयी पुरुष खाय। दूध पिये तो बहुत स्त्री के साथ भोग करे और वीर्यहानि न हो।

लोहरसायन

पारा और गन्धक दोनों को शुद्ध एक एक भाग ले घोट कजली करे। तीन भाग शुद्ध पोलाद का चूर्ण ले कजली के साथ पहरभर घोटे। पीछे घिकुआर के रस में ३ दिन तक घाम में बैठकर घोटे। फिर घाम और घोटने की गर्मी से बहुत धुआँ उठे और कड़ा हो तब गोला बाँध एरण्डपत्र लपेट ताँबे के पात्र में रख घाम में तीन दिन गाड़ रक्खे तत्पश्चात् निकाल घाम में रख सबुजा के रस की ३ भावना दे। जब सूख जाय तब सोंठि, मिरच, पीपल तीनों के तीन क्वाथ कर तीन भावना दे। फिर रूसा, गुर्च, चीता इनको एक एक के रस में तीन तीन भावना दे जल से निकाल लोहपात्र में धर त्रिफला में घोटकर मेवड़ो, अनार का छिलका, भसींड़, भाँगरा, कटसरैया, पलाश, केले के वृक्ष का रस, विजयसार के रस का क्वाथ, नील, मुण्डीरस, बबूलफली, फालसा इन सबके रस अथवा क्वाथ में ३ भावना दे। फिर बरियारा, शतावरि, गोखुरू, छरहट इनके रस में तीन तीन भावना दे। यदि सब मिल जायँ तो प्रभात समय ८ माशे रस घृत और शहद में खिलावे। ऊपर से ४ तोलाभर त्रिफला का क्वाथ पिये, यही इसका अनोपान है। तीन माशे सेवन करे तो बाल श्वेत न हों और त्वचा पर झुर्री न पड़े। मन्दाग्नि, श्वास, खाँसी, पाण्डु, कफ, वायु-विकार इन सबके लिये त्रिफलायुक्त खाय। पीपल तथा शहद में खाय तो बल, सुन्दरता और आयु बढ़ावे एवं लोह खानेवाला श्वेत कुम्हड़ा, तिल का तेल, उड़द, राई, मद्य, खटाई पदार्थ छोड़ दे।

इति त्रयोविंशतिस्तरङ्गः ॥२३॥

—:०:—

आसव बनाने की विधि

दशमूलासव की विधि

सरिवन, पिथवन, दोनों कटेली, गोखुरू, बेल, अरणी, अरलू,

खम्हारि, पाढ़ल इन सबकी जड़ ५ टके, चित्रक २५ टके, पुष्कर-मूल २५ टके, लोध २० टके, गिलोय २० टके, आँवले १६ टके, धमासा १२ टके, खैरसार १२ टके, विजयसार १२ टके, हड़ की छाल १२ टके, कूठ ८६ टके, मंजीठ १२ टके, देवदारु २ टके, वायविडंग २ टके, मुलहठी २ टके, भारंगी २ टके, कैथ २ टके, बहेड़े की छाल २ टके, साँठी की जड़ २ टके, पद्माक २ टके, नाग-केसर २ टके, नागरमोथा २ टके, चव्य २ टके, बड़छड़ २ टके, फूल-प्रियंगु २ टके, गोरीसर २ टके, कालाजीरा २ टके, निशोत २ टके, सम्हालू २ टके, रासना २ टके, पीपल २ टके, सुपारी १ टके, कचूर १ टके, हल्दी २ टके, सौंफ़ २ टके, इन्द्रयव २ टके, काकड़ासिङ्गी २ टके, काकोली २ टके, क्षीरकाकोली २ टके, ऋद्धि २ टके, वृद्धि २ टके, मुनक्का (दाख) ६० टके और शहद ३२ टके भर धवई के फूल ५ सेर, बेरझारी ५ सेर, और बेल की छाल १५ सेर इन सबको अठगुने पानी में औटाकर उसका चौथा हिस्सा रक्खे अथवा इन सबको जवकुट कर बड़े मटके में भर इसके अनुमान मुवा-फ़िक पानी डाले। पानी में पक्का १ मन चोखा गुड़ मिलाकर घूरे की जमीन में इस मटके को गाड़ दे और उसका मुँह ढाँक दे। २१ दिन के बाद जब इसका जावा उठे तब उस जावे को अन्य मटके में भर दारू काढ़ने के यन्त्र से और बासन में इस आसव को निकाल ले। उस यन्त्र के मुँह ये सुगन्धित औषधे पोटली कर डाले--खस, चन्दन का चूर, जायफ़ल, लवङ्ग, दालचीनी, इलायची, पत्रज, केसर, पीपल, इन सबको दो दो टके भर और कस्तूरी ४ माशे ले पोटली कर धरे। इसको पुराना कर २ टके भर अनुमान मुवाफ़िक मदात्यय के प्रकरण में लिखी विधि के अनुसार पीवे तो क्षयीरोग, संग्रहणी, अरुचि, शूल, श्वास, कास, भगन्दर, वायु के सब रोग, कोढ़, बवासीर, प्रमेह, मन्दाग्नि, उदर के सब रोग, पथरी और मूत्रकृच्छ्र इन सबको यह दूर करे तथा भूख को बढ़ावे और नपुंसकपने को दूर करे एवं शरीर को पुष्ट कर शरीर में वीर्य को बढ़ावे। इसी तरह सब आसव दारू, अंगूर आदि के बना ले।

मुसलीपाक बनाने की विधि

सफेद मुसली पावभर, कौंच के बीज १० माशा, बिदारीकन्द १० माशा, गोखुरू १० माशा, शतावरि १० माशा, खरैटी के बीज ४ माशा, गंगेरन की छाल १ टके भर, सोंठि २ टके भर इन सबको महीन पीस इनकी बराबर गोघृत में इन्हें मकरोय १० सेर दूध में पकावे। जब दूध का कड़ा मावा हो जाय तब १ सेर खाँड़ की (लड्डुओं की सी) चाशनी कर उसमें वह मावा मिलाकर ये ओषधें डाले—मिरच ८ माशा, पीपल ८ माशा, सोंठि २ टके, दालचीनी १ टके, पत्रज २½ टके, इलायची १ टके, नागकेसर २ टके, कस्तूरी ४ माशे, लौंग १ टके, जायफल १ टके, जावित्री १ टके और वंशलोचन १ टके भर। इन ओषधों को जुदी जुदी पीस इस चाशनी में डाले ओर सारबङ्ग, अभ्रक, मृगाङ्क और हरगौरीरस ये भी अनुमान मुवाफ़िक चाशनी में डाले। इनको एकजीव कर १ टके भर की गोली बाँधे। प्रभात और संध्या समय एक एक गोली खाय तो शरीर को पुष्ट कर प्रमेहादिक सब रोगों को दूर करती है और इसी तरह अन्य पाक भी बनाये जा सकते हैं।

शिलाजीत के शोधने की विधि

शिलाजीत अथवा जिसमें से वह निकला हो, उस पत्थर को ले उस शिलाजीत को गौ के दूध अथवा त्रिफले के काढ़े या भाँगरे के रस में भिगोवे। एक दिन के बाद उस बर्तन में उसको खूब मसले। उसको कपड़छान कर धूप में सुखा ले तब वह शुद्ध होता है। अथवा शिलाजीत के काँकरे को ले उन्हें पीस गर्म पानी में दो पहर रक्खे, फिर उसको मसल और मिट्टी के पात्र में वस्त्र से छान ले। उस पात्र को धूप में रक्खे। ऊपर का पानी उसका दूसरे पात्र में निथार ले। इसी तरह बारम्बार दो महीने तक करता जाय तब वह शिलाजीत शुद्ध होता है। अग्नि में निर्धूम हो और अग्नि में धरने से लिङ्गोपम खड़ा हो जाय तब शुद्ध जानना। शोधा शिलाजीत प्रमेह आदि बहुत रोगों को दूर कर शरीर को पुष्ट करता है।

जवाखार आदि सब खारों के बनाने की विधि

कच्चे जवों को काटकर सुखा ले, फिर उसको जला राख करके बासन में २ दिन तक भिगो दे। इसके बाद टिकठी के कपड़ा बाँध उस कपड़े में उस राख को डालकर पुटली बाँध पानी में डाल दे। जब तक उसमें से खारा पानी निकले तब तक और पानी डालता जाय। उस पानी को कड़ाही में चढ़ाकर जला दे। जब उस कड़ाही में उस पानी का नोन समान खार जम जाय तब निकाल ले। इसी तरह सब खार बना ले।

चनाखार के बनाने की विधि

चतुर आदमी माघ के महीने में चने के खेत के ऊपर महीन कपड़ा ३ या ४ घड़ी के तड़के फेर लावे। वही कपड़ा १५ दिन तक फेरे और नित्य सुखाता जाय। जब वह कड़ा हो तब उस कपड़े को पानी में भिगोकर कपड़े से वह पानी छान ले। पीछे कड़ाही में वह नितरा पानी डाल चाशनीसमान गाढ़ाकर बर्तन में उँडेल ले तो वह चोखा चनाखार हो। यह बहुत खट्टा होता है।

स्नेह की विधि

स्नेह चार प्रकार का है—घृत १ तैल २ वसा (मांस) में मिली चरबी ३ और हाड़ के भीतर की मज्जा ४। वैद्य को उचित है कि इन चारों को सूर्योदय के समय मनुष्य को पिलावे। इनमें भी दो भेद हैं—१ स्थावर २ जंगम। स्थावर का अर्थ अचर है (जहाँ उपजे वहीं स्थिर रहे) इस प्रकार स्नेह अनेक प्रकार के हैं और जंगम का अर्थ चर है (जो श्वास सहित हो) इसमें घृत श्रेष्ठ है।

स्नेहभेद

घी और तेल मिलावे उसे यम और घी, तेल और वसा मिलावे उसे त्रिवृत तथा घी, तेल, वसा और मज्जा संयुक्त हों उन्हें महान् कहते हैं।

स्नेहपान

कृमि रोगी को घृत तीन दिन, तेल चार दिन, वसा पाँच दिन, मज्जा छः दिन, घृतादि स्नेह सात दिन पिलावे क्योंकि अधिक दिन पान कराने से आहार होकर गुण नहीं करता है।

स्नेहमात्राप्रकार

वातादि दोष, ऋतुकाल, जठराग्नि, अवस्था, निर्बल, सबल और समबल का विचार कर अल्प, मध्य अथवा ज्येष्ठ मात्रा रोगी को घृत, स्नेह आदि की देनी चाहिए। मात्रा, प्राण और विना दोष समझे और विना बल जाने न्यूनाधिक मात्रा तथा अकाल वा विपरीत भोजन और विहार करने से सूजन, अर्श, ऊँघना, निद्रा और असावधानता ये रोग होते हैं। दोनों समय घट बढ़ विना रुचि देश काल विरुद्ध खाने को मिथ्याहार कहते हैं और अकाल परिश्रम करना, ऋतु से विपरीत (गर्मी में धूप खाना, सर्दी में बहुत जलाभ्यास और विना वस्त्र) इत्यादि को मिथ्या विहार कहते हैं।

मात्राप्रमाण

दीप्ताग्निवाले को घृतादि स्नेह की मात्रा ४ तोला भर मध्यमाग्नि मनुष्य को ३ तोला प्रमाण और मन्दाग्निवाले मनुष्य को २ तोला प्रमाण मात्रा का देना उचित है। ऋषि लोग घृतादि पान की सामान्य मात्रा कहते हैं। ये तीन प्रकार की हैं–एक महती (जो आठ पहर में पचे), दूसरी मध्यमा (जो दिनभर में पचे) तीसरी अल्प (जो दो पहर में पचे)। इन तीनों मात्राओं में तिल का प्रमाण नहीं है, जैसा पचे वैसा ही दे। सब मात्राओं से अल्प सुखदायी है।

अल्पादि मात्राओं का गुण

अल्पमात्रा दो तोला की है–अग्नि दीप्त करती है और इससे स्त्री प्रसंग की इच्छा होती है एवं जो थोड़े वातादि कुपित हों, उन्हें शान्त करती है। मध्यम मात्रा तीन तोला की है। शरीरपुष्टि, धातुवृद्धि और भ्रम को शान्त करती है। ज्येष्ठ मात्रा ४ तोला भर की है। इस मात्रा से बीस प्रकार का कुष्ठरोग, उन्माद, भूत-प्रेत-बाधा और मृगी ये रोग दूर होते हैं।

दोषोचित अनोपान

पित्तकोप में केवल घृत, वायुकोप में सैंधव संयुक्त घृत और कफकोप में सोंठि, मिरच, पीपल और सार पीसकर घृत में युक्तकर पिलावे और रुखाई, उरःक्षत, विषार्ति और वातपित्त दोष, हीनबुद्धि और सुधि

भुलाना इन सबों में घृत अवश्य पिलाना चाहिए। कृमिविकार, वायु-वृद्धि, शरीर में कफ और मेदवृद्धि इन सबों में तेल का देना उचित है। जो तेल उसे स्वाभाविक ही अहित हो तो अग्नि भी दीप्त करेगा जो मनुष्य परिश्रम कर दुर्बल और पीड़ित हो, धातुक्षीण, शुष्करक्त, शरीर पीड़ा, भस्मक, आक्षेपकादि वायु और बलिष्ठ वायु इनमें वसा पिलाना योग्य है। दुष्ट कोष्ठक्लेशित, वायुपीड़ित और प्रबलाग्निवाले को मज्जा का पिलाना योग्य है, यह सब शरीर को हित है।

स्नेहपानसमय

शीतकाल में दिन में, उष्णकाल में रात को, अधिक वातपित्तवाले को रात में और अधिक वात और कफवाले को दिन में पिलावे। घृतादिकर्म विशेषकर नास के कारण, मर्दन को, कुल्ली को, मस्तक में दाबने को, कान और आँख में डालने को घृत अथवा तेल वातादि दोष और सबल-निर्बल का विचार कर वैद्य युक्ति से देवे।

स्नेहपानानुपान

घृत उष्णोदक के साथ पिये। तेल यूष के साथ पिये। चरबी, हाड़ और मज्जा माड़युक्त पीने से सुखदायी है। जिसको स्नेह न भावे उसे अन्न के साथ दे। बालक, बूढ़ा, सुकुमार, दुर्बल और मृदुतायुक्त मनुष्य को गर्मी में भात के साथ दे।

स्नेहयवागू

तिल को भली प्रकार कूटकर थोड़ासा चावल का चून डाल थोड़ा घृत और जल देकर पतला पका ले। गुनगुना खाय तो धातु को बहुत उत्पन्न करे और शरीर को चिकना करे।

धारोष्णदुग्धविधि

दोहनी के भीतर मिश्री पीस घृत मिलाकर तप्त करे। उसमें दुहा दुग्ध तुरन्त गर्म गर्म पिलावे तो धातु जल्द पैदा हो। स्नेह पीने पर परिश्रम करने वा कफकृत पदार्थ खाने से स्नेह न पचा हो वा मलाव-रोध किया हो तो उष्ण जल से वमन करावे तो अजीर्ण दोष मिटे। जो स्नेह अजीर्ण की शंका हो तो तप्त जल प्यावे। जब शुद्ध डकार आवे और अन्न पर इच्छा करे तो जाने कि अजीर्ण शान्त हुआ। पित्तप्रकृतिवाले

को स्नेहपान से गर्मी होती है और प्यास विशेष लगती है। उसे शीत जल पिलावे, वमन करावे तो प्यास और ऊष्मा शान्त हो। स्नेहनिषेध अजीर्ण उदररोग में, तरुणज्वर में, दुर्बल को, अरुचि को, अतिस्थूल को, मूर्च्छा में, मदार्ति को, बस्तिकर्मवाले को, विरेचनवाले को, वमन को, परिश्रमी को और गर्भ गिरी स्त्री को स्नेह न प्यावे। स्नेह योग्य औषध दे और जिसे स्वेद निकला हो, रेचन कराया हो, मद्य पीनेवाले को, मैथुन श्रमी को, बाल और वृद्ध को, रूक्षशरीर को, रक्तधातुक्षीण को, वातार्ति को और तिमिररोगी को घृतादि स्नेह पिलाना योग्य है।

स्नेहगुणादि लक्षण

जो स्नेहपान से गुण हुआ हो तो शरीर में वायु शुद्ध करता है अग्नि को दीपन करता है, दस्त खुलकर होता है, तनु कोमल, तेजयुक्त चिकना होता है तथा मनुष्य ग्लानिरहित हो जाता है। उपद्रव बिना शरीर हल्का, इन्द्रिय निर्मल होना अच्छे स्नेह के लक्षण हैं और रूखे लक्षण हों तो स्नेहपान विपरीत समझना।

स्नेह बहुत पीने के उपद्रव

अन्न न भावे, मुख में पानी छूटे, मलमार्ग में जलन रहे और मल बहे तथा तन्द्रा अतीसार और पीला शरीर होना ये सब अतिस्नेह के लक्षण हैं।

स्नेह रूक्ष और रूक्षस्निग्ध का प्रतीकार

रूक्ष मनुष्य को बिना मक्खन निकाला मट्ठा, तिल का कल्क और यव का सत्तू खिलाकर स्निग्ध करे। स्निग्ध के समान चावल चनादि खिलाके रूखा करे।

स्नेहसेवन के गुण

स्नेहसेवन से अग्निदीप्त, शुद्ध कोष्ठ, धातु पुष्ट, इन्द्रिय दृढ़, जरा-रहित, बल और कान्तियुक्त लक्षण होते हैं। स्नेहसेवन में ये बातें मना हैं—श्रम न करे, ठण्ढे पदार्थ तजे, मल-मूत्र न रोके, बहुत न जागे, दिन में न सोवे और कफकृत पदार्थ तथा रूक्षान्न न खाय।

स्वेदविधि

स्वेद चार प्रकार का है—१ ताप २ उष्ण ३ उपनाह ४ द्रवस्वेद।

ताप और उष्णस्वेद कफ के रोगों को दूर करते हैं। बालूरेत, नोन, वस्त्र, गर्म हाथ टकनी, अँगीठी इत्यादि से सेंककर पसीना लिवावे उसे ताप-स्वेद कहते हैं १ लोह की पींड़ी, ईंट आदि के तपाने से पसीना आवे उसे उष्णस्वेद कहिए २ ताप और उष्ण इन दोनों के मिलने से जो पसीना आवे उसे उपनाहस्वेद जानना ३ शरीर को वस्त्र से ढाँककर शरीर के ऊपर गर्म खटाई के पानी से सींचे अथवा वायु को दूर करने-वाली ओषधियों का गर्म पानी शरीर के ऊपर डाले तो पसीना बहुत आवे इसको द्रवस्वेद कहते हैं ४ ये चारों प्रस्वेद वायु के रोगों को दूर करते हैं।

महासालवण स्वेद

कुलत्थ, उड़द, गेहूँ, अलसी, तिल, सरसों, सौंफ, देवदारु, सम्हालू, जीरा, अरण्ड, अरण्ड की जड़, रास्ना और सहँजने की जड़ इन सबको नोन समेत काँजी अथवा किसी खटाई से महीन पीस गर्म कर शरीर में जहाँ वायु भारी हो वहाँ सेंके तो वायु के सब रोग जायँ।

वमनविधि

शरद, वसन्त और वर्षा इन ऋतुओं में मनुष्यमात्र को वमन और जुलाब लेना योग्य है। जिसके शरीर में कफ के रोग हों, हृदय आदि दूखे, विष का दोष हो और श्लीपद, कोढ़, विसर्प, प्रमेह, अजीर्ण, भ्रम, श्वास, खाँसी, पीनस, मृगी, उन्माद, रक्तातीसार तथा नाक, तालू, ओठ और नाक पक गये हों, दो जीभ हो गई हो, अतिसार हो, पित्त-कफ के रोग हों, मेद बढ़ गया हो, शिर के रोग हों, पसलियाँ दूखें, तत्काल ज्वर हो और अरुचि हो। इन सब रोगों में वमन करना हित-दायक है। तिमिर के रोग में, गोले के रोग में, उदर के रोग में तथा दुर्बल और बूढ़े को, गर्भिणी को, स्थूल को, चोट खाये हुये को, मेदवाले को, भूखे को, उदावर्ती को और वायु के रोगी को वमन न कराना चाहिए।

वमन की विधि

भेदड़ी (पतली रबड़ी) को पेटभर खिलाइए और भेदड़ी में दूध, मठा और दही डालकर कण्ठपर्यन्त खिलाइए। इसके बाद सेंधा-

नोन, शहद और बच खिलाकर ऊपर से गर्म पानी पिलाके गले में अंगुली डाल वमन करावे। अथवा कुटकी और तीखी वस्तु अथवा मेढ़ल का चूर्ण अथवा फिटकरी तम्बाकू आदि गर्म पानी से ले तो वमन हो। अथवा नींब आदि कड़ुवे द्रव्यों से वमन करावे तो पीछे कहे हुए सब रोग जायँ। वमन करने के अनन्तर जीभ में जीरा अथवा बिजौरा आदि अच्छी वस्तु लगावे। अतर आदि सुगन्ध सूँघे और हितदायक भोजन करे।

गण्डूषविधि

गण्डूष और कवल चार प्रकार का है--स्नेहक १ शमन २ शोधन ३ रोपण ४।

स्नेह का गण्डूषभेद

चिकने और उष्ण पदार्थ को स्नेह करते हैं। यह वायु की प्रबलता में देना चाहिए। ठण्ढे पदार्थ को शमन कहते हैं, इसे पित्त के विकार में देना चाहिए। कड़ुआ, खट्टा और उष्ण पदार्थ शोधन कहलाते हैं, इन्हें कफ के विकार में देना चाहिए। कषाय, कटु, मधुर और तप्त किये पदार्थ को रोपण कहते हैं, इन्हें व्रणादि में देना चाहिए। इसी प्रकार कवल में भी जानना चाहिए।

गण्डूष और कवल की रीति

गीला काढ़ा आदि मुँह में भर खूब गुलगुलाने को गण्डूष और कल्क कर मुख में रख इधर-उधर फेरने को कवल कहते हैं।

उभय द्रव्यप्रमाण

गण्डूष में जो क्वाथ दिया जावे उसके द्रव्य का प्रमाण कोल * कोलमात्र है और कवल कर्ष कर्ष * प्रमाण है। गण्डूष और कवल से योग्यावस्था पाँच वर्ष के ऊपर है इसको चित्त सावधान कर रोगों के निवारण के लिए कपोल, गला, मुख आदि को कुछ सेंककर तीन, पाँच वा सातवें दोष के नाशपर्यन्त गण्डूष करे। जब तक मुख में कफ न भर आवे अथवा तीनों दोष शान्त न हो जावें अथवा नेत्र और नाक से जल न टपकने लगे तब तक गण्डूष करे।

---

* शास्त्रकार ने कोल का प्रमाण ८ माशे और कर्ष का १ तोला का माना है।

वातरोगस्नेह गण्डूष

मनुष्य को वात का प्रबलता में तिलकल्क, पानी, दूध वा तिलादि स्निग्ध गण्डूष देना चाहिए।

पित्तशमन गण्डूष

तिल, नील कमल, घृत, खाँड़, दूध और शहद आदि मिलाकर कुल्ला करने से पित्त से उत्पन्न दाह दूर होता है।

व्रणादि पर गण्डूष

शहद के कुल्ले करने से मुखक्षत, रसज्ञान, चटकना, दाह और प्यास आदि उपद्रव दूर होते हैं तथा मुख शुद्ध होता है।

विषादि पर गण्डूष

घृत वा दूध के कुल्ले करने से विषविकार तथा चूने से फटा और अग्नि से जला मुख अच्छा होता है।

दांतों को पुष्टकारक गण्डूष

जिस मनुष्य के दाँत हिलते हों वह तिल के तेल में सैन्धव मिला-कर कुल्ले करे तो दाँत हिलना बन्द हो।

मुखशोष पर गण्डूष

जिस मनुष्य का मुख सूखता हो अथवा फीका फीका रहता हो तो काँजी के कुल्ले करने से अच्छा होता है।

कफदोष पर गण्डूष

अदरक के रस में सैन्धव, त्रिकुटा और राई आदि पीस मिलाकर कुल्ला करने से कफदोष मिटे।

कफ रक्तपित्त पर गण्डूष

त्रिफले के चूर्ण को शहद में डाल कुल्ला करे तो मुख में कफ-रक्त-पित्त दोष कदापि न रहे।

मुखरोग पर गण्डूष

दारुहल्दी, गुर्च, त्रिफला, दाख, चमेली और जवासा ये समान ले क्वाथ करे। उसमें उसके छठवें भाग के तुल्य शहद डाल कुल्ले करे तो त्रिदोष का मुखपाक जाय।

विशेष

जो द्रव्य गण्डूष करनेवाली हैं, उसको प्रतिसारण और कवल में भी देना योग्य है।

कबलविधान

केसर, बिजौरा की गूदी, सैंधव और त्रिकुटा इन सबका कौर बनाकर मुख में बिलोवे तो मुख की कठोरता और कफवात की अरुचि दूर हो।

प्रतिसारण प्रकार

प्रतिसारण में औषध देने के ३ प्रकार हैं—१ कल्क २ अवलेह ३ चूर्ण। जैसा मुख में रोग देखे, उसी प्रकार की औषध को अँगुली के अग्रभाग से मुख के भीतर मले।

प्रतिसारण चूर्ण

कूट, दारुहल्दी, धवपुष्प, पाढ़ा, कुटकी, हल्दी, तेजबल, मोथा और लोध इनका चूर्ण जीभ और दाँतों की जड़ में बार बार मलकर लार गिरावे तो दाँतों की पीड़ा, रक्त का गिरना, मसूढ़ों का सूजना और दाह ये रोग दूर हों।

गण्डूषादि हीन वृद्ध हुए से उपद्रव के लक्षण

कफ को न्यूनाधिक्य, स्वाद और अज्ञान होता है अन्न से अरुचि अतियोग से मुख पकना, पीर का होना, मुखशोष और ग्लानि आदि उपद्रव होते हैं।

सम्यक् गण्डूष लक्षण

मुखव्याधिनाश, चित्त प्रसन्न, निर्मल मुख, लहलका, जीभ के स्वाद आदि से सम्यक् गण्डूष जानना।

विरेक नाम जुलाब की विधि

विधिपूर्वक वमन कराकर पाचन द्रव्य देवे जिनसे शरीर के कफरोगपच जायँ। शरद् और वसन्त ऋतु में जुलाब देने से सब रोग दूर होते हैं। रोगानुसार सब ऋतुओं में जुलाब दिया जा सकता है। अजीर्णज्वर, शरीर में मल का संग्रह, वायु, रक्त, भगन्दर, बवासीर, पाण्डुरोग, उदररोग, गोला, हृद्रोग, अरुचि, योनिरोग, गमा का रोग, कान और नासिका का रोग, प्रमेह, फोड़ा, विसूचिका, नेत्ररोग, शूल, शिरोरोग, मुखरोग, शोथ और मूत्राघात ये रोग जुलाब लेने से अवश्य अच्छे होते हैं। इन रोगवालों को जुलाब देवे। बूढ़ा, जिसका शरीर

बहुत चिकना हो, शस्त्र लगने से क्षीण पड़ जाय, भयभीत, खेदयुक्त, पिपासित, स्थूल पुरुष, गर्भिणी स्त्री, तत्काल ज्वर चढ़ा हो, तत्काल की प्रसूता स्त्री, मन्दाग्निवाला, मेदक रोगवाला और रूखे शरीरवाला। पित्त की प्रकृतिवाले को, कोमल कफ की प्रकृतिवाले को मध्यम और वायु की प्रकृतिवाले को कड़ा जुलाब देना हितदायक है।

मृदुजुलाब

दाख, दूध और हड़ आदि का कोमल जुलाब है।

मध्यम जुलाब

निशोत, कुटकी और अमलतास आदि।

तीक्ष्ण जुलाब

थूहर का दूध, चोख, दन्ती, जमालगोटा और इच्छाभेदी आदि का कड़ा जुलाब होता है।

जुलाब लेने की विधि

प्रथम पाँच सात दिन तो पुरुष मुंजिस ले। फिर सोनामुखी (सनाय) १० माशा, जीरा ५ माशा, सौंफ़ १० माशा, मुनक्का (दाख) १० माशा, गुलाब के फूल १० माशा, पाढ़ ४० माशा इन सबको तीन पाव पानी में औटाकर पावभर रक्खे। पीछे इस पानी को छान नित्य ४ दिन पीवे तो उदर का मल पचे और थोड़ा थोड़ा निकला करे। नित्य चावल की खिचड़ी घृतसमेत खाय पाँचवें दिन सोनामुखी ४० माशा, निशोत १० माशा, गुलाब ४० माशा, जीरा १० माशा, सौंफ़ २० माशा, पाढ़ ४० माशा इन्हें औटाकर नित्य ४ दिन ले और घृत समेत खिचड़ी खाय तो जुलाब अच्छा उतरे और इससे सब रोग जायँ। खट्टा, खारा न खाय। जुलाब में ३० दस्त आवें तो उत्तम, २० आवें तो मध्यम और १० आवें तो हीन जुलाब जानिए।

छओं ऋतु के पृथक् पृथक् जुलाब

वसन्तऋतु में सोनामुखी (सनाय), निशोत, गुलाब के फूल, सौंफ़, जीरा, खाँड़ (चीनी) इनका जुलाब ले। ग्रीष्मऋतु में निशोत और मिश्री को बराबर ले जुलाब ले तो सब रोग जायँ और शरीर शुद्ध हो।

वर्षाकाल का जुलाब

निशोत, पीपल, दाख, सोंठि और शहद का जुलाब ले।

शरद्ऋतु का जुलाब

निशोत, धमासा, नागरमोथा, दाख, नेत्रबाला, मुलहठी, चन्दन सनाय और मिश्री का जुलाब रोगनाशक है।

हिमऋतुकाल का जुलाब

निशोत, चित्रक, पाढ़, चोखी सनाय और बच का गर्म पानी से जुलाब ले तो सब रोग जायँ।

शिशिरऋतु का जुलाब

निशोत, पीपल, सोंठि, सेंधानोन, शहद और सनाय का जुलाब ले तो सब रोग जायँ।

अभयादि मोदक

हड़ की छाल, मिरच, सोंठि, बायबिड़ंग, आमला, पीपल, पीपला-मूल, तज, पत्रज, नागरमोथा ये सब बराबर, इनसे तिगुनी दन्ती, इन सबसे अठगुना निशोत और इन सबसे छः गुनी मिश्री ले। फिर इन सबको महीन पीस शहद में १० माशा प्रमाण की गोली बाँधे। एक गोली प्रभात ही शीतल जल से ले तो जुलाब अच्छा उतरे। जब तक बहुत गर्म पानी नहीं पीवे तब तक जुलाब लगा करे। इससे बहुत जुलाब लगे तो मनुष्य के ये सब रोग जायँ—विषमज्वर, मन्दाग्नि, पाण्डुरोग, खाँसी, भगन्दर, प्रमेह, राजयक्ष्मा, नेत्ररोग, बवासीर, कोढ़, गण्डमाला, उदररोग, वायु के रोग, अफरा, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, जाँघ और कटि की पीड़ा इन सब रोगों को अभयादिमोदक दूर करता और बलिष्ठ बनाता है।

जुलाब लेनेवाला इतना काम करे

जुलाब लगने के बाद शीतल जल से आँख धोवे, अतर सूँघे, पान खाय, पवन के स्थान में न रहे, शीतल जल से न नहाय, गर्म जल बारंबार पीवे, जब तक पूरा जुलाब लगे और बीच में ये न करे तो नाभि और कुक्षि में शूल चले पीछे मल न उतरे और पवन न सरे, पित्ती आदि रोग हो जायँ, शरीर भारी रहे, दाह और अफरा हो, घुमेर

आवें, छर्दि हो तो पीछे उसको पाचनादि दे शुद्ध करे तो ये सब रोग जायँ और भूख लगे, शरीर हलका रहे। जुलाब बहुत लगे तो मूर्च्छा हो, गुदा बाहर निकल आवे, शूल चले, अतीसार आदि और भी रोग हों तब उसे शीतल जल से स्नान करावे और चावल, मिश्री, शहद, शिखरन, दही ये सब खवावे। बकरी का दूध मिश्री डाल पिलावे। यदि साठी के चावल और मसूर खवावे तो बहुत जुलाब बन्द हो।

अच्छा जुलाब होने का लक्षण

मन प्रसन्न रहे, वायु सरे, सब इन्द्रियों में बल होवे, बुद्धि निर्मल हो, भूख अच्छी तरह लगे और सब शरीर में बल हो।

* छओं ऋतुओं में हड़ खाने की विधि

ग्रीष्मऋतु में १ हड़ की छाल का चूर्ण कर उसमें बराबर का गुड़ मिलाकर नित्य ६० दिन तक खाय तो रोग न हो। वर्षा ऋतु में २ हड़ का चूर्ण कर सेंधानोन के साथ खाय तो रोग न हो। शरद्ऋतु में मिश्री के साथ ३ हड़ का चूर्ण खाय तो रोग न हो। हेमन्तऋतु में ४ हड़ का चूर्ण सोंठि के साथ खाय तो रोग न हो। शिशिरऋतु में ५ हड़ का चूर्ण पीपल के साथ खाय तो रोग न हो वसन्तऋतु में ६ हड़ का चूर्ण शहद के साथ खाय तो रोग नहीं होता।

बस्तिकर्म (पिचकारी) की विधि

जिस रोगी का मल-मूत्र वायु के रोग से रुक गया हो उसके इन्द्रिय में पिचकारी दे। पिचकारी जस्ते की नली लगाकर बकरे के अंडे की बनावे अथवा सुवर्ण आदि धातुओं की नली गोपूँछ के आकार बनती है, इसमें औषधों का जल भर इन्द्रिय में या गुदा में बस्तिकर्म करे तो वायु के सब रोग जायँ। यह बस्तिकर्म दो प्रकार का है–प्रथम अनुवासन, द्वितीय निरूह। तेल, घृत आदि की पिचकारी देने को अनुवासनबस्तिकर्म कहते हैं। निरूहबस्ति का भेद एक उत्तरबस्ति है और अनुवासन का भेद मात्राबस्ति है। उसकी तौल दो टके भर जल की है। भस्मक केवल वायु का रोग, मूर्च्छा, अरुचि, खाँसी, श्वास, क्षयी इन रोगवालों को और भयभीत

* सिन्धूत्थशर्कराशुंठीकणामधुगुडैर्युता। वर्षादिष्वभया प्राश्या रसायनगुणैषिणः॥

को अनुवासनबस्ति न देना चाहिए। और इन रोगवालों को अनुवासनबस्ति करावे। एक वर्ष से ले छः वर्ष तक वाले को छः अंगुल पिचकारी की बस्ति, बारह वर्ष वाले को आठ अंगुल की और बारह वर्ष के उपरान्त बारह अंगुल की पीछे बुद्धि के अनुमान से बस्ति दी जाती है। पिचकारी में घृत लगाकर बस्ति देना और बस्तिकर्म से शरीर में बल बढ़े व रोग जाय। शीतकाल में और वसन्तऋतु में स्नेह की बस्ति देना और ग्रीष्म, वर्षा, शरद्ऋतु में रात्रि को अनुवासनबस्तिकर्म करिए। बहुत चिकना भोजन न करावे, हलका भोजन करावे। स्नेह में सौंफ का जल, सेंधानोन डाल गुदा में बस्ति दीजे। गर्म पानी में भोजन कराकर और फिराके और मल-मूत्रादिक कराकर, बायें पसवाड़े की तरफ लेटाकर और बाईं जाँघ ऊँची कर गुदा में स्नेह की पिचकारी दे। बायें हाथ से पकड़ और दाहिने से दाबे तब गुदा में पिचकारी का जल और स्नेह जावे। पिचकारी दे तो वह देनेवाला और लेनेवाला पुरुष इतनी वस्तु न करे–जम्हाई, खाँसी और छींक। जब तक ३० ताली बजावे तब तक बस्ति करे अथवा मुख से १०० तक की गिनती करे पीछे सब शरीर को पसार सूधा सोवे। फिर दोनों पाँवों की अँगुली और अँगूठे को चतुर मनुष्य से खिंचवावे, फिर सेज के ऊपर सीधा लेटे। नींद ले इसी तरह करे तो बस्ति वायु के सब रोगों को दूर करे। गुदा में ली हुई बस्ति मलसमेत गुदा में से सब मल को और वायु के रोगों को दूर करती है। अनुवासन बस्तिकर्म इस विधि से छः, सात, आठ, नव बार एक एक दिन के अन्तर करने से सब वायु के रोगों को दूर करे। अनुवासन बस्तिकर्म के पीछे निरूह करिए। जिसके मलाशय अथवा पक्वाशय में अनुवासन बस्ति चलाने से उसी जगह उसका स्नेहयुक्त जल आ जाय, पेड़ू को मसलने से भी गुदा में से न निकले तो निरूहबस्ति और करे। औषध की बत्ती कर गुदा में चलावे तो वायु सरे और उसका मल निकल जाय और शरीर शुद्ध हो अथवा जुलाब दे निकालिए।

अनुवासनबस्ति के देने का तेल

गिलोय, अरण्ड की जड़, कणगच की जड़, भारंगी, अड़ूसा, रोहिष,

शतावरि, सहँजना, कागलहरी इन्हें टके टके भर ले और यव, उड़द, अलसी, बेल की जड़, कुलत्थ ये एक एक सेर ले इन सब औषधों को ६४ सेर पानी में औटाकर इनका चौथा हिस्सा रखकर उसमें मीठा तेल ४ सेर पका ले। जब रस जल जाय केवल तेल ही रह जाय तब इसे छान ले। गुदा में १ टके भर तेल लगावे तो समस्त वायुरोग दूर हों।

निरूहबस्ति करने की विधि

निरूहबस्ति अनेक प्रकार की है और इसके बहुत से कारण हैं, इसका स्थापन भी नाम है। निरूहबस्ति का अधिक देने का प्रमाण है। इतने रोगवाले को निरूहबस्ति दीजिए–जिसका शरीर बहुत चिकना रहे और हृदय में चोट लगी हो, शरीर क्षीण हो, अफरा, छर्दि, हिचकी, बवासीर, श्वास, खाँसी, गुदा की सूजन, अतीसार, विसूचिका, उदावर्त, वातरक्त, विषमज्वर, मूर्च्छा, तृषा, उदररोग, अफरा, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, चरणरोग, मन्दाग्नि, शूल, अम्लपित्त और हृदय के रोग। इनमें से कोई भी रोग हो, उसको दी हुई निरूहबस्ति रोगों को दूर करती है। निरूहबस्ति के देने की विधि अनुवासन बस्ति की विधि में लिखी है। यह निरूहबस्ति भी दो चार बार एक एक दिन के अन्तर से पीछे लिखी विधि के अनुसार दे। केवल वायु का विकार हो तो कषैली, कड़ुवी, स्नेहसंयुक्त दे, पित्त का विकार हो तो दूध संयुक्त दो बस्ति दे और कफ का विकार हो तो कषैले, कड़ुए, मूत्र आदि से निरूहबस्ति दे। सुकुमार, बालक और बूढ़े को मृदुबस्ति देनी चाहिए।

उत्क्लेशनबस्ति की विधि

अरण्ड, महुआ, पीपल, सेंधा नोन, बच, झाऊरूख का बक्कल, इन्हें औटाकर बस्ति दे।

दोषहरबस्ति की विधि

सौंफ, मुलहठी, बेल, इन्द्रयव, इन्हें काँजी और गोमूत्र में पीस दे तो सब दोष जायँ।

लेखनबस्ति

त्रिफले का काढ़ा, गोमूत्र, शहद और जवाखार दे तो दोष जायँ।

शोधनबस्ति

इड़, अमलतास आदि का जुलाब या पिचकारी देने को शोधन-बस्ति कहते हैं।

शमनबस्ति

फूलप्रियंगु, मुलहठो, नागरमोथा और रसौंत इन्हें दूध में पीस इनकी पिचकारो दे। उसे शमनबस्ति कहिए।

बृंहणबस्ति

पुष्टई की ओषधियों का काढ़ा कर उसमें मीठा द्रव्य मिलाकर और घृत मांसादि इनकी पिचकारी दे। उसे बृंहणबस्ति कहिए।

पिच्छिलबस्ति

बे केरी पत्ते, सतावरि, लहसुवा और मोचरस इन्हें दूध में पका-कर उसमें शहद डाल बस्ति दे। उसे पिच्छिलबस्ति कहिए।

निरूहबस्ति की तोल का प्रमाण

प्रथम तो किंचित् सेंधा नोन डाले पीछे उसमें ऽ॥ शहद और ऽ॥ सेर घृत डाले। इन तीनों को खूब मथि इसकी पिचकारी पाँच सात बार एक दिन के अन्तर से चतुराई से दे। यह निरूहबस्ति के तोल का प्रमाण है।

मधुतैलबस्ति की विधि

अरण्ड की जड़ का काढ़ा कर उसमें शहद और मीठा तेल १० टके भर डाले। सौंफ १ पैसे भर, सेंधानोन अधेले भर इन्हें पीसकर मथे और इनकी पिचकारी दे तो मेद, गोला, कृमि, फिया, मलरोग, उदावर्त आदि रोगों को यह बस्ति दूर करे और शरीर में बल को बढ़ावे।

स्थापनबस्ति

शहद, घृत, दूध और तेल दो दो पैसे भर ले। इनमें झाऊ के बक्कल का रस और सेंधानोन, अधेलाभर डाले। इन सबको एक जीव कर पिचकारी दे, उसे स्थापनबस्ति कहिए।

सिद्धिबस्ति

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठि इनका काढ़ा कर उसमें तेल, शहद, सेंधानोन मुलहठी इन्हें ओटाकर मिलाय इसकी पिच-कारी दे, उसे सिद्धिबस्ति कहिए।

फलबस्ति

गुदा में और बाहर घृत लगाकर अपने अँगूठे प्रमाण पुष्ट डंडी १२ अंगुल की आधी गुदा में डाले और इसकी चतुराई से पिचकारी दे उसे फलबस्ति कहिए और निरूहबस्ति का भेद उत्तरबस्ति है। बस्तिकर्म करानेवाला गर्म पानी में स्नान करे और दिन में सोवे। अजीर्ण और कुछ भी कुपथ्य न करे।

हुक्का आदि धूमपान की विधि

धूमपान छः प्रकार का है–शमन, बृंहण, कासहर्ता, वमनकर्ता, व्रणधूपन और शोधन। खेदसंयुक्त, भयभीत, दुःखी, दंतरोगी, रात्रि, में जगा हो, तृषित, दाहवाला, तालुरोग, उदररोग, मस्तकरोग, छर्दि, अफरा, व्रणरोग, प्रमेह और पाण्डुरोगी तथा गर्भिणी स्त्री, क्षीण पुरुष, बालक, वृद्ध को धूमपान न करावे। धूमपान वायु और कफ के सब रोगों को दूर करता है। सब इन्द्रियों और मन को प्रसन्न करता है तथा केशों और दाँतों को पुष्ट करता है। इलायची आदि के धुएँ को शमनधूम, राल आदि के धूएँ को बृंहणधूम, तीक्ष्ण औषधियों के धुएँ को रेचन, मिरच आदि के धुएँ को कासघ्न, खाल के धुएँ को वमनकर्ता, नींब और बच आदि के धुएँ को व्रणधूपन कहते हैं। व्रणधूपन को व्रणादिक में देना चाहिए।

अपराजित धूप

मोर के पंख, नींब के पत्ते, कटेली का डोडा, मिरच, हींग, बालछड़, कपास, बकरे का बाल, साँप की काँचुली, बिलाई की विष्ठा और हाथीदाँत इन्हें पीस घृत मिलाकर धूनी दे तो भूत, पिशाच, राक्षस, प्रेत, डाकिनी आदि के सब दोष दूर हों और ज्वर को दूर करे।

माहेश्वरधूप

हींग, देवदारु, बेलपत्र, गो का घृत दे, कुक्कुट का हाड़, सरसों, नींब के पत्ते, मस्तक के केश. साँप की काँचुली, बिलाई की विष्ठा, गो का सींग, मेढ़ल, दोनों कटेली, कपासतुष, बकरे का रोम, चन्दन, मोरपंख और बकरे का मूत्र इन्हें पीस मनुष्य के धूनी दे तो भूत, पिशाच, राक्षस, डाकिनी, प्रेत और चुड़ैल आदि के सब दोष दूर हों। इस धूप से सब प्रकार का ज्वर दूर हो।

रुधिर छुड़ाने की विधि

मनुष्य के शरीर में रुधिर के विकार को भले प्रकार देख उसका रुधिर ऽ१ सेर तथा ऽ॥ सेर या ऽ। भर अथवा ऽ= पाव निकलावे और शरद्‌ऋतु में विकार हो तो थोड़ा रुधिर निकलावे तो मनुष्य के रुधिर का विकार न हो।

शुद्ध रुधिर का स्वरूप

रुधिर का मीठा रस लालवर्ण हो, शीतल और गर्म न हो तथा भारी चिकना और दुर्गन्ध को लिये हो तो यह दग्ध हुआ रुधिर गर्मी के सब विकारों को करता है और शरीर में रुधिर दुष्ट हो तब पीड़ा हो, शरीर पक जाय, दाह हो, शरीर में चकत्ते पड़ जायँ, खाज पड़ जाय तो खटाई और मिठाई की वाञ्छा रहे, मूर्च्छा आवे, शरीर रूखा रहे और शरीर की नसें शिथिल हो जायँ।

वायु से दूषित रुधिर का लक्षण

अरुणरंग हो, झाग आवे, कठोर हो और जिसकी उतावली सूक्ष्म धार चले, सुई समान शरीर में चुभके चलें और लाल हों ये सब लक्षण हों तो जानो कि रुधिर वायु से दुष्ट हुआ है।

पित्त से दूषित रुधिर का लक्षण

रुधिर पीला, हरा, नीला और काला हो, दुर्गन्ध बहुत आवे, जले नहीं, गर्म हो, मक्खी और कीड़े खायँ नहीं। जिस रुधिर में ये लक्षण हों, उसे पित्त से दूषित जानिए।

कफ से दूषित रुधिर का लक्षण

रुधिर शीतल और बहुत चिकना हो, गेरू के रंग समान हो, मांस की पोटली सदृश हो, धीरे चले। ये लक्षण जिस रुधिर में हों, उसे कफ से दूषित जानिए।

सन्निपात से दूषित रुधिर का लक्षण

जिसमें ये सब लक्षण मिलें और कांजी समान रंग हो उसे सन्निपात से दूषित रुधिर जानिए।

विष से दूषित रुधिर का लक्षण

जिसका रुधिर काला हो और नाक में बहुत चले, दुर्गन्ध बहुत आवे, कांजी का सा रंग हो जिससे कोढ़ हो जाय, सावन की कीड़ी

के समान किसका रंग हो और शरीर में सूजन तथा दाह हो और शरीर पक जाय। जिसमें ये लक्षण हों, उसे विष से दूषित रक्त जानिए।

इतने रोगों में रुधिर निकलाना योग्य है

सूजन और शरीर में दाह हो, अङ्ग फोड़े और फुंसियों से पक जाय, शरीर का वर्ण लाल हो जाय, वात-रक्त का रोग और ब्याऊ आदि रोग हों, स्तन का रोग हो, शरीर भारी रहे, नेत्र लाल हों, तन्द्रा आवे, नासिका और मुख के रोग हों तथा फिया, गोला, विसर्प और विद्रधि हो तथा छाले आदि रोग, मस्तकपीड़ा, उपदंश (गर्मी का रोग) और रक्तपित्त, इन सब रोगों में रुधिर निकलाना योग्य है। सींगी अथवा जोंक या तूँबी लगावे अथवा शिरा छुड़ावे तब मनुष्य के रोग जायँ।

इतने रोगियों का फास्त से रुधिर निकलाना अयोग्य है

क्षीणपुरुष, बहुत विषयी, नपुंसक, भयभीत, गर्भिणी और प्रसूता स्त्री तथा बवासीर, सर्वाङ्गशोथ, खाँसी, श्वास, छर्दि, पाण्डुरोगी और जुलाब आदि पञ्चकर्म जिसने न किये हों उसको एवं प्रस्वेदयुक्त शरीर-वाले, १६ वर्ष की तथा ७० वर्ष से अधिक आयुवाले को शिरा छुड़ाना अनुचित है। इन रोगों में रुधिर निकलाने से रोग जाय तो जोंक लगाकर रुधिर निकलावे। विष से दूषित रुधिर हो तो शिरा छुड़ाना एवं पछना दे रुधिर निकलाना योग्य है। वायु, पित्त और कफ से कुपित रुधिर को सींगी, जोंक, तूँबी आदि से निकलाना योग्य है। जोंक एक हाथ का, सींगी और तूँबी १२ अंगुल का, पछना एक अँगूठे प्रमाण का और शिरा शरीर के सर्वांग का रुधिर सोखे। क्षुधा और मूर्च्छावाले को, नींद, भ्रान्ति, मद, मल-मूत्र का जिसके वेग हो, इन पुरुषों का शीतऋतु में रुधिर न निकलवावे। जलौकादि से जिसका रुधिर न निकला हो तो उस व्रण के मुँह को कूट, सोंठि, मिरच, पीपल, सेंधानोन इनसे मसले तो रुधिर भली भाँति निकले। हलका भोजन कराकर अच्छे समय में, अर्थात् बहुत शीत और बहुत धूप न हो, रुधिर निकलावे।

बहुत निकलते हुए रुधिर के बन्द होने का यत्न

लोध, राल, रसौंत, यव, गेहूँ का आटा, धव का बक्कल, गेरू, साँप की कांचुली, रेशमी वस्त्र की राख, साम्हर का पाल इन्हें व्रण में लगावे तो रुधिर बन्द हो और भी व्रण का शीतल यत्न करे। अथवा शिरा छुड़ाने की नस के ऊपर दाग दे। अथवा उस नस में खार लगावे या नस में कषैली वस्तु का लेप करे। बायें अण्ड में सूजन हो तो दाहिने हाथ के नीचे की नस को दग्ध करे और दाहिने अण्ड में सूजन हो तो बायें हाथ के अँगूठे की नीची नस को दग्ध करे। बायें अण्ड में सूजन हो तो दाहिने हाथ की और दाहिने अण्ड में सूजन हो तो बायें हाथ की शिरा छुड़ावे तो वह सूजन और विसूचिका जाय।

फस्त छुड़ाने से अधिक रुधिर निकले तो ये रोग हों

अन्धा हो, आधा अङ्ग सुन्न हो जाय, तृषा के रोग हों, अन्धेरी आवे, मस्तक पीड़ा हो, श्वास और खाँसी हो, हिचकी आवें, दाह और पाण्डुरोग हो तथा रुधिर बहुत ही छूटे तो मनुष्य मर जाय। शरीर में रुधिर ही से जीवन है। शरीर में रुधिर न रहने से मृत्यु होती है, इससे शरीर के रुधिर का तत्काल प्रबन्ध करे। रुधिर निकलने से सूजन हो तो थोड़ा घृत गर्मकर उसको सेंके तो पीड़ा और सूजन दूर हो। यदि रुधिर बहुत निकले तो हरिण या बकरे के मांस का शोरुआ देना एवं उसमें दूध पीना और साठी के चावल की खीर खाना योग्य है। जब तक पीड़ा शान्त, शरीर हलका और मन प्रसन्न न हो तब तक यह खाना चाहिए।

रुधिर छुड़ाने का कुपथ्य

मैथुन, क्रोध, शीतल जल से स्नान, बाहर की बहुत पवन, एकासन बैठना, दिन में नींद, नोन और खट्टी वस्तु, कड़ुवी वस्तु, शोच, वाद, अजीर्ण में भोजन ये सब वस्तु रुधिर छुड़ानेवाला न करे। जहाँ तक शरीर में बल आवे तहाँ तक कुपथ्य न करे।

इति चतुर्विंशतिस्तरङ्गः॥ २४॥

—:०:—

अनुभूतावलेहकल्पना

द्रव्य को क्वाथ की तरह औटाकर फिर विशेष आँच दे। जब गाढ़ा हो तब अवलेह होता है। कोई-कोई इसे लेह भी कहते हैं। इसकी मात्रा ४ मुद्रा भर है। इसमें चूर्ण से द्विगुण मिश्री लेना चाहिए और गुड़ दूना तथा द्रव्यादि चौगुने, यह रीति सर्वत्र है। जब आँच देने पर तार बँधे और पानी में पाक की बूँद न डूबे और न घुले तब सिद्ध जाने तथा अँगुली के दबाने से कुछ दबे तब सुगन्धित रसादि डाले। दूध से, ऊख से, उत्पत्ति वस्तु यष से, पञ्चमूलक्वाथ से इन अनोपानों से देना अथवा और कोई रोगोचित अनोपान हो उसके साथ देना चाहिए।

हिचकी और कासश्वास पर भटकटैयावलेह

भटकटैया ४ सेर ले १६ सेर जल में औटावे। जब चौथाई रह तब उसमें चूर्ण डाले। गुर्च, चाब, चीता, मोथा, काकड़ासिंगी, त्रिकुटा, जवासा, भारंगी और कचूर ये सब चार चार तोलाभर ले चूर्ण करे। शक्कर ८० तोला, घृत ३२ तोला, तेल ३२ तोला ये सब काढ़े में औटावे। जब ऊपर कही हुई रीति के अनुसार अवलेह सिद्ध हो तब ३२ तोला शहद, १६ तोला वंशलोचन, १६ तोला पीपली का चूर्ण मिलाकर उत्तम पात्र में रख छोड़े। इस अवलेह से हिचकी, कास और श्वास दूर होते हैं।

क्षयादि पर च्यवनप्राशावलेह

बेल, अरनी, टेंटू (स्योनाक), कंभारी और पाढ़र (पाटला) की छाल, खरेंटो, सालपर्णी, पृष्ठपर्णी, माषपर्णी, मुद्‌गपर्णी, पीपल, गोखुरू, बड़ी कटेली, छोटी कटेली, काकड़ासिंगी, भूमिआँवला, दाख, जीवन्ती, पुहकरमूल, अगर, हड़, गिलोय, ऋद्धि, जीवक, ऋषभक, कचूर, नागरमोथा, पुनर्नवा मेदा, छोटी इलायची, कमलगट्टा, लाल-चन्दन, विदारीकन्द, अड़ूसे की जड़, काकोली और काकजंघा ये सब चार चार तोले और बड़े बड़े पाँच सौ आँवले ले इनको कपड़े की ढीली पोटली में बाँधे फिर बड़े मिट्टी के पात्र में १६ सेर जल में सब औषधें डाल उसमें आँवलों की पोटली को लटकाकर खूब औटावे।

जब चौथाई जल शेष रहे तब उतार ले। आँवलों को अलग निकाल-कर उनकी गुठली दूर कर ६ टके भर घृत और ६ टके भर तेल में आँवलों को भूनकर शिलबट्टे से महीन पीस ले तदनन्तर ५० टके भर मिश्री पहले किये हुए क्वाथ में डालकर पिसे हुए आँवले मिलाकर पाक बनावे। जब अवलेह सिद्ध हो जाय तब वंशलोचन १६ तोला, पीपल ८ तोला, दालचीनी २ तोला, तेजपात १ तोला, छोटी इलायची के बीज १ तोला, नागकेसर १ तोला इन सबका चूर्ण कर उस अव-लेह में डाले फिर कलछी से एक जीवकर उतार ले। ठंडा होने पर २४ तोला शहद डालकर घी के चिकने बरतन में भरकर रख दे। इसकी मात्रा २ तोले की है और अनुपान बकरी का दूध है। इसके सेवन से राजयक्ष्मा, स्वरभङ्ग, खाँसी, श्वास, हृद्रोग, छाती का रोग, वातरक्त, प्यास तथा शुक्र और मूत्र के दोष नष्ट होते हैं। यह अवलेह व्रणशोषी, वृद्ध और बालकों के अङ्गों को बढ़ाता और आयुवृद्धि, मेधा, स्मरणशक्ति तथा कान्तिवान् है। इन्द्रियों में बलकर्ता, अग्नि उद्दीपनकर्ता और स्त्रीरमण की इच्छा प्रकट करता है। इसके सेवन से वृद्ध भी युवा हो जाता है। च्यवन ऋषि ने इसी के प्रताप से यौवन प्राप्त किया था। जहाँ मिश्री या चीनी न मिले और साधारण खाँड़ ही मिले वहाँ आँवले बहुत कम भूने। प्रायः सर्वत्र चतुर्थांश जल रहने पर द्रव्यों का रस उसमें आ जाता है। यह भावप्रकाश में कहा है।

रक्तपित्त पर कूष्माण्डपाक

कुम्हड़े को छीलकर १०० टुकड़े करे, फिर उसे दूने पानी में पचावे। जब आधा रहे तब उतारकर उन टुकड़ों को वस्त्र में बाँधकर निचोड़, धूप में सुखा, गुदनी से गोदे, फिर उसको २८ तोला घी में ताँबे की कड़ाही में भूने और उसका निचुड़ा हुआ पानी उसी में डाल दे पुनः ५ सेर खाँड़ दे पकाकर सोंठि, पीपल, जीरा ये आठ आठ तोला डाले। धनियाँ, पत्रज, इलायची मिरच और चाब ये दो दो तोले ले इनका चूर्ण और घृत का आधा शहद डाल बलानुसार रक्तपित्त, ज्वर, क्षयी, प्यास, कास, और श्वास छर्दि आदि रोगवाले पुरुषों को दे तो रोग अवश्य जाय।

अर्श पर खण्डकूष्माण्डावलेह

पेठा और आतमीकन्द के छोटे छोटे टुकड़े कर दोनों को एकत्र करे। फिर उसी रीति से अवलेह बनाकर खिलावे तो अर्श, मन्दाग्नि और मूढ़वात ये सब रोग अच्छे हों।

क्षयी पर अगस्त्यहरीतकी

बड़ी हड़ें १००, यव चार सेर, दशमूल ८० तोले और चीता, त्रिफला, लजालू पाढ़ा बेलि, इन्द्रयव, बच, भिलावाँ, अतीस, बिड़ंग, सुगन्धबाला इनको चार चार तोला भर ले तथा घृत १६ तोले ले और ठण्ढा होने पर १६ तोले शहद डाले। यह अवलेह सर्वार्श को वेग ही नाश करता है और दुर्गम रोग अतीसार, अरुचि, ग्रहणी, पाण्डु, रक्तपित्त, कमलपित्त, शोथ और प्रवाहिका इन सब रोगों को दूर करता है। इसका अनोपान बकरी का दूध, मट्ठा, दही और घी तथा उसी का पानी और औषध भोजन के पाचन समय खाय।

सर्वातीसार पर कुरैयाष्टक

ढाई सेर कुरैया की छाल १६ सेर पानी में पकावे। जब चौथाई रहे तब यह चूर्ण डाले। लजालू, धवफूल, बेल, पाढ़ा, मोचरस, मोथा और अतीस इन सबको चार चार तोला ले औटावे जब कलछी में लगने लगे तब सिद्ध जानो। फिर इसे बकरी के दूध या पानी अथवा माड़ तथा केसर में पीवे तो सर्वातीसार की घोर वेदना दूर हो। सब भाँति रक्तवाह, सर्वार्श और प्रवाहिका का नाश करे।

श्वास, कास सहित कफज्वर पर अवलेह

श्वास और कास के साथ जो कफज्वर हो तो मेढ़ासिंगी, पीपल, कायफल और कूट इन चारों को कूटकर चूर्ण करे। उसको वर्णमाक्षिक वा साधारण मधु के साथ मिलाकर चाटे तो निस्संदेह श्वास और कास के सहित कफज्वर नष्ट हो।

श्वास पर अवलेह

१ पल चार तोले का है इस परिमाण से एक सौ तोले भर बकरी का मूत्र और एक सौ पल बहेड़ा इनको मधु के साथ पकावे। जब पककर चाटने योग्य गाढ़ा हो तब उतार ले। प्रातःकाल में चाटा करे

तो खाँसी, श्वास और कफरोग बलवान् भी हो गये हों तो भी तुरन्त जाते रहें और रोगी सुख पावे।

आशव कल्पना

उदकादि द्रव्य वस्तु में औषध देकर पात्र में भर मुंह मूँद कर मास भर रखने से औषध उत्तम होती है उसका नाम आसव अथवा अरिष्ट है। इनमें भेद यह है कि उदकादि पदार्थ में जो औषध पूर्वोक्त रीति से सिद्ध करे, उसे आसव कहते हैं। और जो किसी द्रव्य के क्वाथ में उसी रीति से सिद्ध करे, उसे अरिष्ट कहते हैं। इसके खाने की मात्रा ४ रुपये भर है। इसमें जलादि पदार्थ १६ सेर, गुड़ ५ सेर और ढाई सेर शहद देना उचित है और द्रव्य का चूर्ण गुड़ जितना है उसका दशांश दे।

शीधुमद्य भेद

जो कच्चे ऊखरसादि मधुर पदार्थ में सिद्ध करे उसे शीतरसशीधु कहते हैं। जो पकाकर रस में सिद्ध करे उसे पक्वरसशीधु कहते हैं। सुरा प्रसन्नादि कर अग्निबलत्रय से उतारे उसे सुरा कहते हैं। सुरा के फेन को प्रसन्ना कहते हैं और फेन रहित जो नीचे रहे उसे कांदबरी अथवा घन कहते हैं। जो सुरा के नीचे रहे उसे जगल कहते हैं और जगल के घने भाग को मेदक कहते हैं। मेदक पकाने से जो सार निकले उसे सुरा-बीज कहते हैं और ताड़ अथवा खजूर का रस अग्नि-यन्त्र का योग कर वा कच्चा ले मद सिद्ध करे उसे वारुणी कहते हैं। कन्द, मूल, फल, घृत, तैल आदि स्नेह और लवण ये सब द्रव्यपदार्थ में अग्नि अथवा यन्त्रयोग से मथन करे उसे सूक्त कहते हैं और जो विनिष्ट अर्थात् चलित रस लेके खमीर, मद्य वा तुरन्त मधुरद्रव में द्रव्यचूर्ण डाल मास भर सन्धित की हो उसे चुक्र कहते हैं अथवा गुड़, पानी, तेल, कन्दमूल और फल इन्हें पूर्वोक्त रीति से कर मास भर में सिद्ध करे उसे गुड़सूक कहते हैं। इसी प्रकार ऊखरस और दाख का सूक्त भी होता है। यवों को पानी के साथ एक दिन तक सन्धित करे उसे तुषाव कहते हैं। यवघूघरी पानी में सिझाकर एक दिन सन्धित रक्खे उसे सौवीर कहते हैं। कुरथी अथवा चावल पानी में सिझावे

उसे माँड़ कहते हैं और उस माँड़ में सोंठि, राई, जोरा, हींग और नोन डालकर तीन-चार दिन सन्धित रक्खे उसे काँजी कहते हैं और मूली के उबाले हुए पानी में हींग, सरसों, जोरा, सेंधा और अदरक डाल चार-पाँच दिन रक्खे उसे सण्डाकी और आसव कहते हैं। आसव और अरिष्ट बनाने की यह रीति है।

रक्तपित्त पर खसासव

खस, सुगन्धबाला, कमलपत्र, खंभारी, नीलकमल, पद्माक, मालकाँगनी, पठानीलोध, मंजीठ, जवासा, पाढ़ा, चिरायता, कुटकी, बट, यव, गुलरी, कचूर, पित्तपापड़ा, श्वेतकमल, परवर, कचनार, जामुन और सेमर का गोंद इन सबको चार चार तोला भर ले फिर चूर्णकर दाख ८० तोला, धव के फूल ६० तोला, ३२ सेर जल, ५ सेर शक्कर, ५ सेर शहद ले। फिर जटामांसी और मिरच इनका धुआँ दे बासन में सब औषधें भर महीना भर तक रक्खे। इसको उसीरासव कहते हैं। यह रक्तपित्त को नाश करता है और पाण्डु, कुष्ठ, प्रमेह, अर्श, कृमि और सूजन इनके दोषों को भी अच्छा करता है।

क्षयी पर पिप्पली आसव

पीपल, मिरच, चाब, हल्दी, चीता, मोथा, बिड़ंग, सुपारी, लोध, पाढ़ा, आँवला, छरीला, खस, सफेद चन्दन, कूट, लवङ्ग, तगर, जटामांसी, दालचीनी, इलायची, तेजपात, पुष्पप्रियंगु वा गोंदी, नागकेसर इन सबको दो दो तोला ले महीन पीस १५ सेर गुड़सहित ३२ सेर जल में डाले और ४० तोला धवपुष्प, दो सेर तीन पाव दाख इन सबको मिट्टी के बर्तन में एक मास रक्खे। जब जाने कि सब औषधें एकतन हो गई तब खिलावे, परन्तु अग्निबल देख ले। इस पिप्पली आसव के खाने से क्षयी, पेटरोग, दुर्बलता, ग्रहणी, पाण्डु और अर्श ये समस्त रोग अति शीघ्र दूर होते हैं।

पाण्ड पर लोहासव

लोहचूर्ण, त्रिकुटा, त्रिफला, अजवायन, बिड़ंग, चीता और मोथा इन सबको १६-१६ तोला ले फिर सबका चूर्ण कर तीन सेर सोलह तोला शहद, ५ सेर गुड़ और ३२ सेर जल दे पुनः घृतपात्र में इसे

एक मास रक्खे। यह लोहासव पीने से पाण्डु, शरीर फूलना, गुल्म, अर्श, कुष्ठ, पिलही, खाज, श्वास, कास, भगन्दर, अरुचि, ग्रहणी और हृद्रोग ये सब नाश हों।

ज्वर पर कुरैयारिष्ट

कुरैया की छाल और दाख ढाई ढाई सेर, महुआ और खंभारी की छाल चालीस-चालीस तोला ले। फिर इसे ६४ सेर पानी में पचावे। जब १६ सेर रहे तब उतार उसमें १ सेर धव के फूल और ५ सेर गुड़ डाल मिट्टी के बर्तन में मासभर तक रक्खे। यह कुटजारिष्ट सब ज्वरों को दूर कर अग्नि को तीक्ष्ण करता है।

विद्रधि पर बिड़ंगारिष्ट

बिड़ंग, पीपलामूल, रासना, कुरैया की छाल, पाढ़ा, एलुवा, बालछड़ और आँवला ये सब बीस बीस तोला १२८ सेर जल में औटावे। जब १६ सेर रहे तब उतार ले। जब ठण्ढा हो जाय तब १२०० तोले शहद १ सेर धव फूल और तज पत्रज तथा इलायची ये आठ आठ तोला ले और गोंदी, कचनार, लोध ये चार चार तोला भर ले और त्रिकुटा ३२ तोला चूर्ण कर डाले। फिर इनको घृत के पात्र में एक मास तक भर रक्खे। जैसा अग्निबल देखे उसी प्रमाण से पिलावे तो विद्रधि, प्रमेह, ऊरुस्तम्भ, पथरी, प्रत्यष्ठीला, भगन्दर, गण्डमाला और हनुस्तम्भ आदि रोग बिड़ंगारिष्ट से दूर होते हैं।

प्रमेह पर देवदारु अरिष्ट

ढाई सेर देवदारु, रूसा १ सेर, मंजीठ, इन्द्रयव, दन्ती, तगर, दोनों हल्दी, रासना, बिड़ंग, मोथा, सिरस, बेर और अर्जुन ये सब चालीस चालीस तोला ले और अजवायन, कुरैया, चन्दन, गुर्च, कुटकी और चीता ये ३२-३२ तोला ले। इसको १२८ सेर पानी में पचावे। जब १६ सेर रहे तब उसमें ये औषधें डाले—धवपुष्प ६४ तोला, शहद १५ सेर, त्रिकुटा ८ तोला तथा तज, पत्रज और इलायची ये १६-१६ तोला, प्रियंगु १६ तोला, नागकेसर ८ तोला इन सबका चूर्णकर घी के बर्तन में मास भर रक्खे। फिर इसे पिये तो दुर्जय प्रमेह भी नाश हो और वातरोग, ग्रहणी, अर्श और मूत्रकृच्छ्र इनको नाश करे। यह देवदारु अरिष्ट दाद कुष्ठ को भी अच्छा करता है।

कुष्ठ पर खदिरारिष्ट

खैर ढाई सेर, देवदारु ढाई सेर, बकुची ४८ तोला, हल्दी १ सेर, त्रिफला १ सेर इनको १२८ सेर जल में पचावे। जब १६ सेर रहे तब ठण्ढाकर नीचे लिखी औषधें डाले। शहद १० सेर, खाँड़ ५ सेर, धवफूल ८ तोला और कंकोल, नागकेसर, जायफल, लवङ्ग, इलायची, तज, पत्रज ये सब चार चार तोला और पीपल १६ तोला ले। फिर इसको घी के वर्तन में मास भर रखकर पिये तो महाकुष्ठ, हृदयरोग, पाण्डु, अर्बुद गुल्म, ग्रन्थि, कास, तथा पिलही ये सब रोग जायँ। यह एक खदिरारिष्ट ही सब कुष्ठों को बहुत शीघ्र नाश करता है।

क्षयी पर बबूलारिष्ट

बबूल की छाल १० सेर ले ६४ सेर पानी में पकावे। जब १६ सेर रहे तब उतार ठण्ढाकर ५ सेर गुड़ दे और ६४ तोला धव के फूल, ८ तोला पीपल और जायफल, शीतलचीनी, तज, पत्रज, केसर, लवङ्ग और मिरच ये चार-चार तोला भर ले फिर इनको पीस मासपर्यन्त मिट्टी के बर्तन में रक्खे। इस बबूलारिष्ट से क्षयी, कुष्ठ, अतीसार, प्रमेह, श्वास और कास इन सब रोगों का नाश होता है।

उरःक्षत पर द्राक्षारिष्ट

ढाई सेर दाख ३२ सेर जल में पकावे। जब चौथाई रहे तब उतार ठण्ढाकर ये औषधें डाले—गुड़ १० सेर और तज, इलायची, पत्रज, केसर, फूलप्रियंगु अथवा मकरा, मिरच, पीपल और बिड़ंग ये सब चार चार तोला ले मिट्टी के बर्तन में रख एक अङ्ग कर बासन के मुख पर मुद्राकर मास भर रक्खे फिर पिये तो उरःक्षत, क्षयी, कास और गले के भीतरी रोग नष्ट हों। यह द्राक्षारिष्ट बल करे और मल शोधे।

अर्श पर रोहितारिष्ट

हरद्वारीकुशा ५ सेर ले ६४ सेर पानी में पकावे। जब चौथाई रह जाय तब उतार ठण्ढाकर ५ सेर गुड़, ६४ तोला धव के फूल और सोंठि, पीपल, पोपलामूल, बच, चीता, पत्रज, इलायची, तज तथा त्रिफला इन सबको चार चार तोला भर ले फिर चूर्णकर सब द्रव्यों को बासन में भर कर रक्खे। तदनन्तर उसको महीना भर पीछे पीवे तो

कांच के रोग, ग्रहणी, पाण्डु, हृदयरोग, पिलही, गुल्म, कुष्ठ और अरुचि आदि रोग इस रोहितारिष्ट से निस्सन्देह दूर होते हैं।

क्षयीप्रमेह पर दशमूलारिष्ट

दशमूल बीस बीस तोला, चीता और पुष्करमूल सौ सौ तोला ले, लोध १ सेर, गुर्च १ सेर, आँवला ६४ तोला, जवासा ४८ तोला तथा खैर, बिजयसार और हड़ ३२-३२ तोला और कूट, मंजीठ, देवदारु, बिड़ंग, भारंगी, कपित्थ, बहेड़ा, गदापुरैना, चाब, जटामांसी, मकरा, सरिवन, कृष्णजीरा, निशोथ, मेवड़ी, काँजी, रासना, पीपल, सुपारी, कचूर, हल्दी, सौंफ, पद्माक, नागकेसर, मोथा, इन्द्रयव, सोंठि, दोनों कटसरैया, मेदा, महामेदा, काकोली, ऋद्धि और वृद्धि ये सब आठ आठ तोला ले। इन सब ओषधियों का अठगुना जल औटावे। जब चौथाई रह जाय तब उतार मिट्टी के बर्तन में रक्खे, फिर दाख ३२ तोला ले चौगुने पानी में औटावे। जब चौथाई जल जाय और तीन चरण रहे तब ठण्ढा कर पहिले क्वाथ के साथ मिलावे और शहद १२८ तोला, गुड़ १५ सेर धव के पुष्प १२० तोला तथा शीतलचीनी, खस, चन्दन, जायफल, लवङ्ग, तज, इलायची, पत्रज, केसर, और पीपल इन सबका चूर्ण आठ आठ तोला, कस्तूरी ४ माशे इन सबको इकट्ठा कर उसी में डाल धरती खोदकर गाड़े फिर उसमें का रस पिये। निर्मली डाले तो रस निर्मल हो जाता है। इसके पान करने से ग्रहणी, अरुचि, शूल, श्वास, कास, भगन्दर, वातव्याधि, क्षयी, छर्दि, पाण्डु, कमल, कुष्ठ, अर्श, प्रमेह, मन्दाग्नि, उदररोग, सिकताप्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और धातुक्षय ये रोग जायँ। दुर्बल मोटा हो, बाँझ पुत्र जने। यह दशमूलारिष्ट तेज और धातुबल देता है।

इति पञ्चविंशतिस्तरङ्गः। २५।

घृत और तेल का साधन

कल्क से चतुर्गुण घृत अथवा तेल और क्वाथादि द्रव्य भी चौगुने देने उचित हैं। इसकी मात्रा पल भर है। जिस द्रव्य का क्वाथ देना हो तो चौगुने जल में औटावे। जब चतुर्थांश रह जाय तब उसे उतार

छान ले। फिर उसमें घृत, तेल आदि सिद्ध करे। कोमल द्रव्यों में चौगुना, कठोर में अठगुना और अत्यन्त कठोर में सोलहगुना जल देना चाहिए। जो द्रव्य अति कोमल और कठोर न हो, उसमें अठगुना जल देना चाहिए अथवा रुपया भर से ४ रुपया भर तक सोलहगुना पानी देकर क्वाथ करे और पल से कुड़व[1] तक अठगुना तथा प्रस्थ[2] से खारी[3] पर्यन्त चौगुना दे और जो केवल कल्क पानी, घी अथवा तेल में सिद्ध करे तो चतुर्थांश कल्क दे। यथा सेर भर तेल हो तो पाव भर कल्क हो और जो कल्क काढ़े के साथ घी और तेल पकावे तो घृत और तेल का षष्ठांश कल्क देना जैसे तीन पाव में आध पाव। जब कल्क रस के साथ घी अथवा तेल में पकावे तो तेल का अष्टमांश कल्क देना चाहिए। यथा सेर भर में आध पाव। घृत और तेल प्रमाण यही है। दूध, दही, रस, मट्ठा इनमें अष्टमांश कल्क देना और कल्क को अच्छी प्रकार पकाने के कारण जल चौगुना देना चाहिए। जहाँ कल्क, घृत, तेल, क्वाथ और फांट ये पांचों हों वहाँ स्नेहादिक के समान देना चाहिए तथा जल चौगुना देना। जब सड़ी-घुनी द्रव्य घृत अथवा तेल में पकानी हो तो जल में द्रव्य पीस गोली अथवा कल्क कर चौगुने पानी में पकावे और जो केवल काढ़े में कहा हो वहाँ उसी क्वाथ की द्रव्य का कल्क कर घृत अथवा तेल युक्त वह काढ़ा और चौगुना पानी दे पकावे। जहाँ कल्क रहित है वहाँ केवल द्रव्य वस्तु दूध पानी देकर पका लेना। जब फूल के कल्क में स्नेह सिद्ध करेंगे तब चौगुना जल देंगे। जब स्नेह से स्नेह सिद्ध करेंगे तब स्नेह का अष्टमांश दूसरा स्नेह ले पुष्प कल्क युक्त पका लेना चाहिए। फिर जब वह स्नेहपाक अँगुली में लेके मलने से बत्त बन जाय और उसे अग्नि पर डाले और जल से चिर्चिराहट का शब्द न करे तब सिद्ध हुआ जानना। तेल को फेन उठने से सिद्ध जानना और घृत में फेन शान्ति होने से सिद्ध जानना। जब गन्ध आवे और घृत अथवा तेल निर्मल हो जाय और रस उत्पत्ति करे तब घृत अथवा तेल सिद्ध हुआ जानिए। स्नेह-

---

१. कुड़व १६ तोला का माना गया है। २. प्रस्थ एक सेर का माना गया है। ३. चार द्रोणी की एक खारी अर्थात् ४०९६ पलों की एक खारी होती है।

पाक तीन प्रकार का है—मृदु १, मध्य २, खर ३। जो कल्क मोम की तरह रहे तो मृदु जानिए और निरस हो कुछ कोमल रहे तो मध्य जानिए तथा निरस और कठोर हो जाय वह खर है। जो इस प्रमाण से अधिक जल जाय तो समझ लेना चाहिए कि स्नेह बिगड़ गया और अकार्थं गया। जो कच्चा रहे और उसका सेवन करे तो मन्दाग्नि हो और भारी हो। नास लेने को नरम हित है और मध्यम सर्व कार्य साधक है और खर मर्दन के अर्थ है। जहाँ जैसा चाहे वहाँ उसी प्रकार का बना ले। तेल, घृत और गुड़ ये एक दिन में न साधे दिनान्तर दे करे तो गुण करें।

पिलही पर क्षार

पीपल, पीपलामूल, चाब, चीता, सोंठि और सेंधव इन सबको चार चार तोला भर और दूध चोगुना ले चार सेर घी में पचावे। जब सिद्ध हो तो घृत प्लीहा को नाश करता है। विषमज्वर और मन्दाग्नि को दूर करता है तथा रुचिकारक है।

संग्रहणी और अतीसार पर चाङ्गेरी घृत

पीपल, पीपलामूल, चीता, गजपीपल, गोखुरू, सोंठि, धनिया, पाढ़ा, बेलि, अजवायन ये सब चार चार तोला भर और घृत तीन सेर १६ तोला तथा चाङ्गेरी (छोटी लुनिया) का रस १०२४ तोला और १०२४ तोला दही ले फिर मन्द मन्द आँच से पकाकर सिद्ध करे। इस चाङ्गेरी घृत के सेवन से वात, कफ, ग्रहणी, अर्श, पेट फूलना, काँच का निकलना, मूत्रकृच्छ्र और प्रवाहिका ये सब नाश होते हैं।

अतीसार पर मसूरघृत

५ सेर मसूर ले १६ सेर जल में उसका क्वाथ करे। जब चौथाई रहे तब उस काढ़े में ३२ तोला बेल की गूदी दे और १ सेर घृत दे पचावे। इससे सब अतीसार, ग्रहणी और बिथरा मल गिरना तथा प्रवाहिक ये सब दूर हों।

रक्तपित्त पर कामदेवघृत

असगन्ध ५ सेर, गोखुरू ढाई सेर और शतावरि, बिलाईकन्द,

बनउर्दी, बरियारा, गुर्च, पीपल, कारिगुसा, रक्त कमलगट्टा, गदापुरैना, खंभारिपुष्प, काले उड़द, इन सबको चालीस चालीस तोला ले १६ सेर जल में पचावे। जब चतुर्थांश रहे तब ४ सेर घृत दे पचावे, फिर दाख, पद्माक, पीपल, रक्तचन्दन, पत्रज, नागकेसर, किवाँच के बीज, हिरमिजी, नीलकमल[1] का फूल, सरिवन, पिथवन, जीवगशा ये सब द्रव्य एक एक तोला भर ले। पूर्वोक्त औषधियाँ न मिलें तो केवल बरियारा देना तथा शक्कर ८ तोला और पौंड़ा कर रस चार सेर ये सब इकट्ठा कर उसमें पचावे। जब केवल घी रह जाय तब छान ले। यह रक्तपित्त, ऊरुस्तम्भ, क्षीण, कमल, वातरक्त, हलीमक इनको हरे, सुवर्ण हो और स्वरक्षय, मूत्रकृच्छ्र, उदर, पसुली पीड़ा को दूर करे। यह घृत रमणी को दे तो बाँझ भी पुत्रवती हो। दुर्बल को दे तो मोटा हो। यह घृत श्रेष्ठ और बलकर्ता है। शरीर की रंगत अच्छी कर हृदय को प्रिय हो पुष्ट करता है। रसायनरूप यह तेज, बल, आयु और प्राण को बढ़ाता है। दुर्बलेन्द्रिय पुरुष को बलयुक्त कर सब रोगों को नाश करता है। जैसे सींचने से वृक्ष तरुण होता है, वैसे मनुष्य का शरीर भी नवीन होता है। यह कामदेव घृत बड़ा गुणदायी है।

अपस्मार पर कल्याणघृत

त्रिफला, दोनों हल्दी, रेणुका, सरिवन, पिथवन, मकरा, बनउदा, बनमूँग, देवदारु, एलुवा[2], तगर, इन्दारुण, जमालगोटे का बीज, अनार, नागकेसर, नीलकमल, इलायची, मंजोठ, बिड़ंग, पद्माक, कूठ, मालती अथवा चमेलीपुष्प, श्वेतचन्दन, तालीसपत्र, वृद्धभटकटैया ये सब एक एक तोला प्रमाण ले पानी में पीस कल्क कर चौगुना पानी दे। उस पानी में १ सेर वह घृत और वह कल्क देकर पकावे। फिर रोगी को दे तो मृगी, चित्तभ्रम, ज्वर, क्षयी, वातरक्त, कास, मन्दाग्नि, नाक टपकना, कटिपीड़ा, तिजारी, चातुर्थिक, मूत्रकृच्छ्र, विसर्पिका, खुजली, पाण्डुरोग ये सब अच्छे हों। बाँझ पुत्र जने, भूत और राक्षसबाधा दूर हो। इस घृत का नाम पानी कल्याण प्रसिद्ध है।

१—इसके अभाव में कमलगट्टा लेना। २—अभाव में सुगन्धबाला।

वातरक्त पर अमृतादि घृत

गुर्च का कल्क और क्वाथ दूध के साथ घृत में पचावे, इससे वातरक्त और कोढ़ अवश्य दूर होता है।

वातकुष्ठादि पर महातिक्तारिघृत

छितौनी, अमलतास, अतीस, कुटकी, पाढ़, मोथा, खस, त्रिफला, पित्तपापड़ा, पटोल, नींब, मंजीठ, पीपल, पद्माक, कचूर, चन्दन, जवासा, इन्दारुण, दोनों हल्दी, गुर्च, सरिवन, पिथवन, मुर्रा, रूसा, शतावरि, त्रायमाण (सफेद कटेली), इन्द्रयव, मुलेठी, चिरायता इन सबको एक एक तोला ले और घी चौगुना दे तथा घी का दूना आँवले का रस दे और अठगुना जल दे। इस सिद्ध घी को सब वातरक्त के विकारों, अठारहों कुष्ठ और रक्तपित्त में देना। यह रक्तार्श, पाण्डु, हृद्रोग, गुल्म, विसर्प, प्रदर, गण्डमाला, क्षुद्ररोग और ज्वर इनको दूर करे। इसका नाम महातिक्त है।

कुष्ठ, दाद और खाज पर कसीसादिघृत

कसीस, दोनों हल्दी, मोथा, हरताल, मैनसिल, कबीला, गन्धक, बिड़ंग, गुग्गुल, मोम, मिरच, कूठ, तूतिया, पीली सरसों, रसौंत, सिन्दूर, राल, लालचन्दन, खैर, नींब का पत्ता, करञ्ज, सरिवन, बच, मँजीठ, महुआ की छाल, जटामांसी, सिरस, लोध, पद्माक, गदापुरैना, हड़ ये सब एक एक तोला ले। इनका चूर्ण कर १२० तोला घृत में साने, फिर उसे ताम्रपात्र में भर सात दिन धूप में रक्खे। इस घी के लगाने से कुष्ठ, दाद, खाज, विचर्चिका, शुक्रदोष, विसर्प, शीतला, वातपित्तजनित रोग, मस्तकघाव, गर्मी, नासूर, शोथ, भगन्दर और लूता ये सब दूर हों। घाव अति शुद्ध हो पूरि आवे और उसका चिह्न भी न रहे।

घाव पर जातीघृत

चमेली, नींब, परवल इनकी पत्ती, दोनों हल्दी, कुटकी, मँजीठ, मुलेठी, मोम, करञ्ज, खस, सरिवन, तूतिया इन सबको समान ले इनकी लुगदी कर घृत में पचावे। इस घी के लगाने से घाव, नासूर और मर्मस्थान का दुःखदायी गम्भीर घाव तथा पीड़ा ये सब दूर हों

उदररोग पर बिन्दुघृत

चीता, शंखाहूली, हड़, कबीला, दोनों निशोथ, बिधारा, अमलतास, जमालगोटा, त्रिफला, कटुतरोई, देवदाली (बंदाल) नील की पत्ती, कौवाशुण्ठी, सेहुँड़ की छीमी, पीपलामूल, बिड़ंग, कुटकी, चोकरा ये सब तोला तोला भर ले। इनका कल्क कर १ सेर घी में पचावे। फिर २४ तोला सेहुँड़ का और ८ तोला मदार का दूध डाले। यह सिद्ध घृत दे तो गुल्म और कुष्ठ अच्छे हों। शूल, उदावर्त, शोथ, पेट फूलना, भगन्दर, आठों उदररोग दूर हों और आठ बूँद पानी से व दूध से या ऊँटनी के दूध से अथवा कुलथी के क्वाथ से, गर्म पानी से जो बूँद पिये तो दस्त हों। इस बिन्दुघृत का नाभि पर लेप करने से दस्त आते हैं।

नेत्रों पर त्रिफलाघृत

त्रिफले का रस १ सेर, रूसे का १ सेर, भाँगरे का १ सेर, बकरी का दूध १ सेर, घी १ सेर और त्रिफला, पीपल, दाख, चन्दन, सैंधव, बरियारा, दोनों काकोली,[1] मेदा, मिर्च, सोंठि, खाँड़, श्वेतकमल, रक्तकमल, गदापुरैना, दोनों हल्दी, मुलेठी इनको एक एक तोला ले। कल्क कर घी में पचाकर भोजन के आदि या मध्य अथवा अन्त में खाय तो नक्तान्ध, नकुलान्ध, खाज, पिल्लरोग, नेत्रस्राव, पटल, तिमिर, नीलबिन्दु ये सब अच्छे हों। इस त्रिफलादि घृत को खाय अथवा नास ले तो यथोचित अनोपान करे।

घाव पर गौर्यादिघृत

दोनों हल्दी, मुर्रा, सरिवन, दोनों चन्दन, मुलेठी, कमलकेसर, कमल, नीलकमल, खस, मेदा, त्रिफला, आम्र, वट, पीपल, पाकर, गूलर इनकी छाल ये सब तोला तोला ले कल्क कर सेर भर घी में पचावे। यह गौर्यादिघृत विसर्पिका, अगिआसन, शीतला, कीटविष और क्षत इन सबको अच्छा करे।

शिरोरोग पर मयूरघृत

बरियारा, मुलेठी, रासना, दशमूल और त्रिफला ये सब आठ आठ

१—काकोली और क्षीरकाकोली के अभाव में असगन्ध लेना और महामेदा तथा मेदा के अभाव में मुलेठा लेना।

तोला ले १६ सेर जल में पकावे। फिर आँत, ओझरी, पित्त, पाँव के विना मयूरमांस पानी में गलावे। जब चौथाई रहे तब उतार ले, फिर इसकी बराबर इसमें क्षीर डाले और सेर भर घी में जीवनीयगण तथा सब काढ़ा पचावे। इस घृत से शिररोग, मन्या, व्यथा, पृष्ठिग्रह, लकवा, कर्ण, नाक, नेत्र, जीभ, गला आदि के सब रोगों को दूर करे। इस घृत को खाय, सूँघे, मले, कान में डाले। इसका सेवन हेमन्त, शिशिर, वसन्त आदि ऋतुओं में करे। यह बड़ा गुणदायक घृत है।

बन्ध्या के लिये त्रिफलादिघृत

त्रिफला, मुलेठी, कूट, दोनों हल्दी, कुटकी, विड़ंग, पीपल, मोथा, कायफर, मेदा, महामेदा, दोनों काकोली, सरिवन, पिथवन, मकरा, सौंफ़, हींग, रासना, दोनों चन्दन, चमेली के फूल, वंशलोचन, कमल, शक्कर, अजमोद और दतून ये तोला तोला भर ले। इनका कल्क कर जिस गाय के बछड़े का भी रंग गाय का सा हो उसका सेर भर घृत और चौगुना दूध ले बिनुवा कंडा की मन्द मन्द आँच दे पचावे। तदनन्तर शुभ तिथि और पुष्य नक्षत्र में मिट्टी या ताँबे के बर्तन में स्त्री अथवा पुरुष शुभ दिन में पिये तो पुरुष वृषभतुल्य कामी और बलवान् हो। बाँझ के पुत्र हो और जिस स्त्री के पुत्र मर जाते हों उसके भी पुत्र हों। इस घृत के सेवन से शतवर्ष की आयु होती है। यह घृत भारद्वाज ऋषि का कहा हुआ है। वैद्य लोग इसके साथ लक्ष्मणा (सफ़ेद कटैया) बूटी की जड़ को बिना कहे देते हैं।

योनिदोष पर फलघृत

कटसरैया, गुर्च, गदापुरैना, सिरस, दोनों हल्दी, रासना, मेदा, शतावरि इनका सेर भर कल्क ४ सेर घी में पकावे। जब यह सिद्ध हो तब स्त्री इसे पान करे तो सब योनिदोष दूर हों और पलित, चलित, मिश्रित, विकृत, पित्तयोनि, विभ्रान्तखण्ड योनि आदि योनि के रोग मिटें और गर्भ टिके। यह फलघृत योनिदोष को बहुत अच्छा है।

विष पर पंचतिक्तघृत

रूसा, नींब, गुर्च, भटकटैया, पटोल इनके काढ़े और कल्क में

घृत पकाकर खाय तो विषमज्वर जाय। पाण्डु, कुष्ठ, विसर्प, कृमि और अर्श ये भी दूर हों।

कुष्ठ पर भूनिम्बादि घृत

चिरायता, त्रिफला, खस, नींब की छाल, मोथा, अरूसा, मुलेठी, सरिवन, कुटकी, अतःमणी, रसौंत, गिलोय, पीपल, पद्माक, कचूर, इन्द्रायण के फल, इन्द्रयव, मूर्वा, पिथवन, अतीस, हल्दी, शतावरि ये सब औषधें धेला धेला भर ले और इन सब औषधों के दूने आलि के फल ले अठगुने पानी में काढ़ा करे। फिर काढ़ा और घृत मिलाकर अग्नि पर चढ़ावे। जब काढ़ा जल जाय और घृतमात्र शेष रहे तब उतार ले। १ पैसा भर प्रातःकाल पिये तो कुष्ठ, उन्माद, ज्वर, पेट की ग्रन्थि, गलशोथ, गण्डमाला और गलग्रह आदि सब रोग निस्संदेह जायँ।

बिन्दुघृत

कबीला और निसोत इन दोनों की बराबर सेहुँड़ का दूध और उतना ही आँवले का रस तथा सबकी बराबर घी और घी की बराबर दूध और सेंधानमक डालकर मन्द अग्नि से ओटाकर घृत बनावे। यह बिन्दुघृत १ तोला प्रमाण खाने से गुल्म और शूलादि उपद्रव सहित प्लीहोदर और कछुइया को दूर करता है।

अनुभूत तैल प्रकरण

लाक्षादितैल

एक आढ़क (४ सेर) लाख ले १६ सेर पानी में काढ़ा करे। जब चौथाई रहे तब उतारकर उसमें सेर भर तैल दे और दही का जल ४ सेर भर दे। फिर सौंफ, असगन्ध, हल्दी, देवदारु, कुटकी, मेवड़ी, बीजमुर्रा, कूट, मुलेठी, चन्दन, मोथा, रासना ये सब तोला तोला भर ले। इनका चूर्ण कर तैल में मध्यम आँच दे सिद्ध करे। इस तैल के लगाने से विषमज्वर नाश हो तथा कास, श्वास, नाक बहना, शरीरपीड़ा, पीठ जकड़ना, वातपित्तज मृगी, यक्ष, राक्षसी उन्माद, खाज, पेट पीड़ा, दुर्गन्ध और देह फूटन ये सब रोग दूर हों तथा गर्भिणी मले तो गर्भ पुष्ट हो।

वायु पर नारायण तैल

असगन्ध, परिया, बेल पाढ़ा, भटकटैया, दोनों गोखुरू, ककई, नींब, सोहनपत्ती, गदापुरैना, गन्धप्रसारिणी, अरणी ये सब द्रव्य चालीस चालीस तोले ले। फिर सबको ६४ सेर पानी में पकावे। जब १६ सेर रहे तब ४ सेर तैल में गीली शतावरि का रस चार सेर दे जो सूखी हो तो काढ़ा करके दे। तैल का चौगुना गौ का दूध दे। उसमें कल्क दे, धीरे धीरे पकावे। फिर कूट, इलायची, चन्दन, सुगन्धबाला, जटामांसी, छरीला, सेंधानोन, असगन्ध, बरियारा, रासना, सौंफ, देवदारु, सरिवन, बनउर्दी, बनमूँग, तगर ये सब आठ आठ तोले लेकर कल्क करे और तैल में साध ले। फिर उस तैल को नास दे, शरीर पर मले, पिचकारी आदि कर्म में दे। यह तैल पक्षाघात, ठोड़ी जकड़ना, गल जकड़ना, कूबरा, बहिरा, लँगड़ा, कमर जकड़ना, देह का सूखना, नपुंसकत्व इन सब रोगों को अच्छा करता है और ज्वर, क्षय, अण्डवृद्धि, अन्त्रवृद्धि, दन्तरोग, शिरोरुज, पसुली पीड़ा, पंगुत्व, गृध्रसी, बुद्धिहानि, विषम वात और सब देह की बाई जायँ। इस तैल के प्रभाव से बन्ध्या के पुत्र हो। यह तैल मनुष्य, घोड़ा, हाथी आदि सबको हित है। जैसे नारायण दुष्ट दैत्यों को नाश करते हैं, उसी प्रकार से यह तैल भी दुष्ट वात के रोगों को नाश करता है।

वात पर बरियारातैल

बरियारा की जड़ का क्वाथ, कुरथीक्वाथ, यवक्वाथ, झड़बेरी क्वाथ इन सबको आठ आठ सेर ले और सेर भर तैल ले तथा जीवनीयगण, शतावरि, इन्द्रारुण, मंजीठ, कूट, छरीला, तगर, अगर, सैन्धव, बच, गदापुरैना, जटामांसी सरिवन, पिथवन, तेजपात, सौंफ, असगन्ध इन सबको एक एक तोला मिलाकर पकावे। जब तैलमात्र रह जाय तब उतारकर रक्खे। यह गर्भिणी स्त्री, धातुक्षीण, अतिश्रमी पुरुष और प्रसूती को दे। यह बरियारातैल सब वातविकारों को हरता, राजा और सुखी पुरुषों के लिये है।

प्रसारिणीतैल

गन्धप्रसारिणी ५ सेर ले १६ सेर जल में पकावे। जब चौथाई रहे

तब उतारकर उसमें काढ़े के बराबर दही और तैल दे तथा तैल के समान काँजी और तैल का चौगुना दूध तथा तैल का आठवाँ भाग आगे लिखी हुई सब द्रव्यों को ले। मुलेठी, पीपलामूल, सेंधानोन, चीता, बच, गन्धप्रसारिणी, देवदारु, रासना, गजपीपल, भिलावाँ, सौंफ, जटामांसी इन सबका कल्क तैल में पचावे। यह तैल अत्युत्तम है। वातश्लेष्म रोग नाशक है और कुबड़ा, अङ्गभङ्ग और पंगु आदि को हितकारक है तथा गृध्रसीवायु, हनु, पृष्ठ, शिर, ग्रीव और कटि इनका जकड़ना और कठिन वातरोग को नाश करे।

वायु पर माषतैल

उड़द, यव, अलसी, भटकटैया, केवाँच, कुरैया, गोखुरू, स्योनाक इन सबको चार चार तोला भर ले। फिर इसको चौगुने पानी में पकावे। जब चौथाई रहे तब उतार ले और बिनौले की गूदी, बेर, सनई के बीज, कुरथी इन सबको छप्पन छप्पन तोला ले। फिर इसे चौगुने पानी में पकावे। जब चौथाई रहे तब उतार ले और सेर भर छागमांस २५६ तोले पानी में पकाने के बाद उतारकर छान ले। फिर सेर भर तैल में सब क्वाथ और मांसजूस देकर पकावे और आगे लिखा हुआ कल्क भी इसके साथ पकावे। गुर्च, सोंठि, गदापुरैना, रासना, एरण्ड, पीपल, बरियारा, गन्धप्रसारिणी, जटामांसी, कुटकी ये सब दो दो तोले ले घी में छोड़कर उस तैल में पकावे इस माषतैल से ग्रीवा जकड़ना, बाहुव्यथा, अर्द्धाङ्ग सूखना, आक्षेप, ऊरुस्तम्भ, अपतानक, सर्वाङ्गकम्प, शीतरस आदि रोग नाश हों और समस्त वातविकार दूर हों।

शतावरितैल

शतावरि, सुगन्धबाला, नेत्रबाला, दोनों पर्णी, एरण्ड, असगन्ध, गोखुरू, बेल, कास, कुरैया ये सब छः छः तोले ले कल्क कर चौगुने जल में पकावे। जब चौथाई रहे तब उतार ले। फिर सेर भर तैल और दूध में पकावे और एक सेर शतावरिरस सेर भर पानी में पकावे फिर शतावरि, देवदारु, जटामांसी, तगर, चन्दन, सौंफ, बरियारा, कूट, इलायची, छारछरीला, कमल, ऋद्धि, सिद्धि * मेदा (जो दो

* ऋद्धि और सिद्धि तथा जीवक के अभाव में बाराहीकन्द लेना।

बार कही है वह दुगुनी लेना) काकोली, जीवक ये सब तोला तोला भर ले इनका कल्क कर गोबर की आँच में पकावे। इस तैल के माथे में लगाने से पुरुष स्त्रियों में वृषभ तुल्य रहे, स्त्री पुत्र जने और स्त्री के सर्व योनिविकार नाश हों, अंगशूल, शिरःशूल, कमल, पाण्डु, गृध्रसी, प्लीह, सब प्रमेह, दण्डापतानक, वायु, दाहसहित वातरक्त, वातपित्त, मद, कानरुधिर, आध्मान, रक्तपित्त ये सब रोग दूर हों। यह शतावरि तैल कृष्णजी से आत्रेयजी ने कहा है।

अर्श पर कसीस तैल

कसीस, करिहारी, कूट, सोंठि, पीपल, सैन्धव, मैनसिल, कनेर, बायबिड़ंग, चीता, अड़ूसा, जमालगोटा, बनतुरई, बीजचोक, हरताल ये सब तोला तोला भर ले इनका कल्क कर सेर भर तैल में पकावे और ८ तोला सेहुँड़ का दूध, ८ तोला मदार का दूध और तैल का चोगुना गोमूत्र देकर अच्छी तरह से पकावे। यह तैल खारनाद आचार्य ने कहा है। इस तैल के लगने से बवासीर का मस्सा गिर पड़ता है और क्षारकर्म कष्ट सहित नहीं होता।

वातरक्त पर पिण्डतैल

मंजीठ, सरिवन, राल, मुलेठी, मोम ये चार चार तोले भर ले तैल में पकावे, फिर उतारकर धर रक्खे। इस तैल के लगाने से वातरक्त निस्सन्देह दूर हो।

कण्डू पर मदारतैल

ग्वारपत्र का रस और हल्दी का कल्क सरसों के तैल में पकाकर लगाने से खुजली, दाद, विचर्ची आदि सब रोग दूर हो।

कुष्ठ पर मरिचतैल

हरताल, निशोत, रक्तचन्दन, मोथा, मैनसिल, जटामांसी, दोनों हल्दी, देवदारु, इन्द्रारुण, कनेर, कूठ, मदार का दूध, गोबर का रस ये सब तोला तोला प्रमाण ले और २ तोले संखिया और सेर भर तैल, गोमूत्र दूना, जल दूना दे पकावे। मरिचादि तैल से कुष्ठ के घाव अच्छे हों, श्वेतरक्त और कृष्णदाग मिटें तथा खसरा, सेहुँआँ, कटीला और भैंसही दाद ये सब दूर हों।

धातु पर त्रिफलातैल

नींब, चिरायता, दोनों हल्दी और रक्तचन्दन इनका बना तैल लगाने से मनुष्य को बहुत गुण करता है।

पलित पर निम्बतैल

नींब के बीज की मींगी को भङ्गरा के रस में भावना दे, फिर रासना-रस में दे। फिर उसका तैल निकाल नास ले तो अकाल के पके बाल काले हों। इसमें दूध और भात का पथ्य दे। अथवा मुलेठी और कच्चे आँवले का कल्क, चौगुना दूध, चौगुना तैल दे पकावे उसके उपरान्त चौगुना पानी दे पकावे। जब केवल तैल रहे तब उतार कर इसका नास ले तो केश सघन हों।

इन्द्रलुप्त पर करञ्जतैल

कंजा, चीता, चमेली और कनेर में तैल पकाकर लगावे तो वात-क्षारा दूर हो।

पलित पर नीलकादि तैल

नीलकेतकी, मूल भाँगरा, कटसरैया, अर्जुनफूलन का हार, चमेली, काले तिल, तगर, कमल का सर्वाङ्ग, लोहचूर्ण, मालकाँगनी, अनार की छाल, गुर्च, त्रिफला और कमल के जड़ की मिट्टी को तोला तोला भर ले। उसमें त्रिफले के क्वाथ सहित तैल पकावे और इसमें भाँगरे का रस भी डाले। जब सिद्ध हो तब उतार ले। फिर इसे लगावे तो बाल स्थित हों, अकालपलित अच्छा हो और दारुण उपजिह्वक, शिरो-रोग अच्छे हों।

पलित पर भृङ्गराजतैल

भाँगरे के रस में लोहचूर्ण अथवा कीट, त्रिफला, सरिवन इनके कल्क में तैल पकावे। इस तैल से पलित, खाज और इन्द्रलुप्त ये सब रोग दूर हों।

मुख और दन्तरोग पर इरिमेदादितैल

खैर छाल ७२० तोले कूटकर १६ सेर जल में पकावे। जब चौथाई रहे तब उतार ले। उसमें दो सेर तैल दे। फिर खैर, लवंग, गेरू, अगर, पद्माक, मंजीठ, लोध, मुलेठी, लाही, वट की जड़, मोथा

तज, जायफल, कपूर, कंकोल, खदिरसार, पतंग, धवपुष्प, इलायची और नागकेसर तोला तोला ले इसमें तेल को पकाकर लगावे तो मुख-रोग दूर हों और मुख का मांस बढ़ना, दाँत हिलना, दाँत फूटना, मुख और कान का विकार, दाँतों का ठण्ढा होना, दाँत गिरना, दन्तकृमि, दाँत टूटना, दुर्गन्धिरोग, तालूरोग और ओष्ठरोग दूर हों।

वातहरतैल

सरसों का तैल ऽ१, महुआ का तैल ऽ१, अंडी का तैल ऽ१, भाँगरे का रस ऽ॥, गो का घी ऽ॥ ले, सबको तैल में एकत्र कर चढ़ा दे। जब तेल खरा हो जाय तब सब औषधें गो के ऽ१ दही में सानकर औटावे। जब सिद्ध हो तब लगावे तो वात, स्त्री का प्रसूतिरोग, देह के सकल रोग और सब प्रकार का ज्वर और अग्निवात दूर हों।

वात पर पंचस्नेहीतैल

सोंठि, पीपल, मिरच, कूट, अरणी के पत्तों का रस, कंजा, अजमोद, त्रिफला, हींग, खुरासानी बच, कायफल, सरसों, बायबिड़ंग, अजवाइन, मोथा, राई, मंजीठ, सुगन्धबाला, जटामांसी, पपराबीज, पान, गजपीपल, शतावरि, हल्दी, देवदारु, धनियाँ लहसुन, विष, मैनसिल, निर्मली ये सब औषधें दो-दो पैसे भर ले तिल का तैल ऽ१, सरसों का तैल ऽ१ अण्डी का तैल ऽ॥, गो का घी ऽ१, मालकाँगनी का तैल ऽ॥ इन सब तेलों को एकत्र कर चढ़ावे। फिर औषधें कपरछान कर जब तेल खरा हो जाय तब उसमें औटाकर सिद्ध करे। देह में लगाने से प्रसूति-रोग, अंग की पीड़ा, हाथ-पाँव और कटि की पीड़ा तथा उचाट वायु इन सब रोगों को दूर करता है।

झोला पर अठरंगातैल

सहँजने की जड़, बकायन की जड़, धतूरे की जड़, पुराने अरण्ड की जड़, आक की जड़, गुलसकरी की जड़, कनेर की जड़, करिहारी की जड़ घोंघची की जड़, नींब की जड़, छोटी बड़ी कटेली की जड़, अरसी की जड़, असगन्ध, महुआ, विष ये सब औषधें पैसा-पैसा भर ले चंदिया बनावे। फिर ऽ१ तिल का तेल ले आग पर चढ़ावे। जब तैल खरा हो जाय तब उसमें चंदिया छोड़ दे। जब औटते-औटते चंदिया

तल के ऊपर आ जायँ तब सिद्ध हुआ जानना। इसके लगाने से शरीर की झुर्री दूर होती है।

कर्णशूल पर हिंगुतैल

हींग, तुम्बर, सोंठि इनको कड़ुए तैल में पकावे। यह कान में डालने से पीड़ा को दूर करता है।

बधिरत्व पर बिल्वतैल

छोटे बेल का गोमूत्र में कल्क कर तेल और बकरी का दूध पानी सहित पकाकर कान में डालने से बहिरापन दूर हो।

कान बहने पर क्षारतैल

लघुमूली का खार, सज्जी, जवाखार, पाँचों नोन, हींग, सहिंजन, सोंठि, देवदारु, बच, कूट, सौंफ, रसौंत, पीपलामूल, मोथा ये सब तोला-तोला भर ले। इनका कल्क कर सेर भर तैल में केले और बिजौरे के रस सहित पकावे और चौगुना मधुसूक्त दे। इस तैल से कान से पीब का गिरना, शब्द होना, पीड़ा, बहिरापन आदि कान के और मुख के रोग दूर हों।

मधुसूक्त बनाने की विधि

जंभीरी नींबू का रस सेर भर, शहद १६ तोले और पीपल ४ तोले इन सबको इकट्ठा कर बच का काढ़ा, अदरक का रस, गुड़ इन सबको भी मिश्रित कर मिट्टी के बरतन में मूँद धान्यराशि में तीन रात्रि रख-कर निकाल ले। इसको मधुसूक्त कहते हैं।

पीनस पर पाढ़ादितैल

पाढ़ा, दोनों हल्दी, मुर्रा, पीपल, चमेलीपत्र और दन्ती इनके तैल से दुष्ट पीनस अवश्य दूर हो।

नाकरोग पर भटकटैयातैल

भटकटैया, दन्ती, बच, सहिंजन, तुलसी, सोंठि, मिर्च, पीपल, सैन्धव इनके तैल से नाक से पीब का गिरना आदि नाक के अनेक रोग दूर होते हैं।

छिक्का पर कूठतैल

कूठ, बेल, पीपल, सोंठि और दाख इनका काढ़ा या कल्क तैल अथवा घृत में पकाकर नास ले तो छींकरोग को दूर हो।

नासार्श पर बृहद्धूमादितैल

रसोईं के स्थान का धुआँ, पीपल, देवदारु, जवाखार, करंज, सेन्धव, चिवड़ा बीज इनका तैल नाकरोगों को बहुत शीघ्र ही हरता है।

सब कोढ़ों पर तैल

छिमियाँ सेहुँड़ का दूध, मदार का दूध, धतूर और चीते का रस, भैंस के गोबर का रस इन सबको तिल के तेल में पकावे। जब केवल तेल रह जाय, तब उसमें चतुर्गुण गोमूत्र दे, फिर पकावे। जब तेल रहे तब सेर भर तेल में गन्धक, भिलावाँ, चीता, मैनसिल, हरताल, बायबिड़ंग, दोनों अतोस, कटुतुरई, कूट, जटामांसी, बच, त्रिकुटा, दारुहल्दी, मुलेठी, सज्जी, जीरा, देवदारु ये सब तोला तोला भर ले तेल को सिद्ध करे। इस तेल के लगाने से सब कुष्ठ नाश हों।

रोमशातन पर कनेर का तैल

कनेर की मूल, दन्ती की मूल, निशोत, कठुतुरई, केलाक्षार और केले का पानी इनमें तैल सिद्ध कर लगावे तो रोम गिर पड़ें।

पित्तज्वर पर तैल

दो०—हल्दी लाख मँजीठ को, कल्क करे बुध धीर।
लेय तैल षटगुण बहुरि, और दही को नीर॥
छाछि कल्क वा तैल में, डारैं वैद्य पचाय।
तैल लगावै अंग में, दाह शीतज्वर जाय॥

अन्य लाक्षादि तैल

सज्जी १ पैसा भर, सोंठि १ पैसा भर, उपलोट १ पैसा भर, चोबा १ पैसा भर, पिलवनी १ पैसा भर, पीपल की लाख ६ पैसे भर, हल्दी ६ पैसे भर, मंजीठ ४ पैसे भर इन सब औषधों को कपरछान करे। फिर ओषधियों से ६ गुणा मट्ठा ले डेढ़ सेर सरसों के तेल में ओटावे। जब खरा हो जाय तब उसमें ओषधें डाल ओटाकर सिद्ध करे। यह तैल देह में लगाने से शीतज्वर और दाहज्वर को हरता है और स्त्री के गिरते हुए गर्भ को रोकता है।

विजयनारायणतैल

सरसों, बायबिड़ंग, मंजीठ, बच, कूठ, जायफल, चाब, कचूर,

अजमोद, पुष्करमूल, दोनों चन्दन, राई, मोथा, कलौंजी और चिरायता ये सब औषधें पाँच-पाँच टंक ले कपरछान कर तिल के १ सेर तैल में पकावे। फिर उतारकर देह में लगावे तो झोलाबाई और गठिया तथा तेरहों सन्निपात जायँ।

मारिचादिबृहत्तैल

निशोत की जड़, दन्ती की जड़, आक का दूध और पत्तों का रस, देवदारु, हल्दी, दारुहल्दी, जटामांसी, रक्तचन्दन, इन्द्राणी की जड़, कनेर की जड़, हरताल, मैनसिल, चीते की छाल, मुलहठी, बायबिड़ङ्ग, पँवार के बीज, लहसुन, करिकचिहाऊ की जड़, सिरस की छाल, सुमान, थूहर का दूध, गिलोय, अमलतास, कञ्जा, मोथा, खैर, पीपल, बच, जावित्री, सेब की जड़ ये सब औषधें बराबर ले और औषधों से दूना सरसों का तैल और चौगुना गोमूत्र ले। पहिले तैल में गोमूत्र पकावे। तदनन्तर पानी में सब औषधें पीस उस तैल में औटावे। जब सिद्ध हो तब उतार लगावे तो २० प्रकार के कोढ़, कान की पीड़ा और अङ्ग के मण्डल जायँ।

इति षड्विंशतितमस्तरङ्गः ॥ २६ ॥

—:०:—

अनेक रोगों पर अनुभूत काढ़े

क्वाथ (काढ़ा) पाँच प्रकार का है। स्वरस (अङ्गरस) १ कल्क २ क्वाथ ३ हेम ४ फांट ५। ये सब क्रम से एक से एक गुण में न्यून हैं यथा स्वरस से कल्क लघु होता है।

स्वरस विधि

किसी द्रव्य को उत्तम भूमि से उखाड़कर बिना पानी डाले कूट-कर कपड़े में रखकर रस निचोड़ ले उसको स्वरस (अङ्गरस) कहते हैं और किसी द्रव्य को सोलह तोले कूटकर द्विगुण जल में रात्रि-दिन भिगो रक्खे उस रस को भी स्वरस कहते हैं। जो हरी द्रव्य न मिले तो सूखी द्रव्य अठगुने पानी में औटावे। जब चौथाई रहे तब ले। ओदी द्रव्य का रस भारी होता है। इससे कार्य में दो तोले लेना उचित है और सूखी द्रव्य रात को भीजी का रस हलका है, इससे वह ४ तोले भर लेना चाहिए। स्वरस अथवा काढ़ा वा यन्त्र का

निकाला रस इनमें शहद, शक्कर, गुड़, खाँड़, जीरा, नमक, घृत, तेल और चूर्ण ये सब आठ माशे मिलाकर करना। गुरच का रस शहद के साथ खाने से सब प्रमेह नाश हों और आँवले का रस, हल्दी का चूर्ण और शहद मिश्रित कर खाने से भी प्रमेह नाश होते हैं।

रक्तपित्तादि पर वासास्वरस

रूस का स्वरस शहद मिलाकर पीने से रक्तपित्त, ज्वर, खाँसी, क्षयी, कमल, कफ और पित्त इन रोगों को नाश करे।

कमल पर त्रिफलादिस्वरस

त्रिफले का रस और शहद अथवा बड़ी हल्दी का रस और शहद अथवा नींब का रस और शहद अथवा गुरच का रस शहद मिलाकर पिये तो कमलरोग निस्सन्देह नाश हो।

विषमज्वर पर तुलसी आदि स्वरस

तुलसी का रस, मिरच का चूर्ण, अथवा मूँगा का रस और मिरच साथ पिये तो विषमज्वर दूर हो।

रक्तातीसार पर जबादिस्वरस

जामुन, आम और आँवला की पत्तियों का रस शहद, घृत और दूध के साथ पिये तो पुराना रक्तातीसार दूर हो।

अतीसार पर बबूलादिस्वरस

बबूल की छाल का रस शहद में मिलाकर पिलावे तो सात तरह का अतीसार जाय। बाकुरे का रस अथवा करील का रस शहद के साथ पिये तो अतीसार जाय।

अण्डकोश और श्वास पर अदरकस्वरस

अदरक का रस और शहद पिये तो वाताण्डवृद्धि पचे तथा श्वास, खाँसी, अरुचि और नाक बहना भी बन्द हों।

पार्श्वादिशूल पर बीजपूरस्वरस

बिजौरा नींबू का रस शहद और जवाखार के साथ पिये तो पसुली का शूल, हृदय का शूल, पेड़ू की पीड़ा और कोष्ठवृद्धि इन सब रोगों से निर्मुक्त हो।

पित्तशूल पर शतावरिरस

शतावरि का स्वरस शहदयुक्त पिये तो पित्तशूल नाश हो।

प्लीह पर घिकुवाररस

घिकुवार का रस हल्दीचूर्णयुक्त पिये तो पिलही, अपची और पेट की गाँठि निस्सन्देह दूर हों।

गण्डमाला और अपची पर मुण्डीस्वरस

मुण्डी के स्वरस को आठ तोले पिये तो गण्डमाला, अपची और क्यांबल नाश हों।

सूर्यावर्तादि पर मुण्डीस्वरस

मुण्डीस्वरस को उष्ण कर मिरचचूर्ण के साथ सात दिन पीवे तो सूर्यावर्त, आधाशीशी आदि रोग निस्सन्देह दूर हों।

उन्माद परब्राह्मयादिस्वरस

ब्राह्मी, श्वेत कुम्हड़ा, कचूर, कोघाला इनका स्वरस अलग अलग शहद और कूट के साथ पिये तो सर्व उन्माद जायँ। श्वेत कुम्हड़े का रस पुराने गुड़ के साथ पीने से दुष्टकोदव का उन्माद नाश होता है।

घाव पर बरियारे का स्वरस

तुरन्त ही बरियारे का या कुकरौंधा का रस लगाने से शस्त्र का घाव अच्छा होता है।

पुटपाकस्वरस विधि

ओदी द्रव्य को पीसकर गोला बाँधे, उस पर एरण्ड अथवा बरगद या जामुन का पत्ता लपेटे। फिर कपरोटी कर दो अंगुल मिट्टी लेसे, फिर अग्नि में रक्खे। जब लाल हो जाय तब बाहर निकालकर उसका रस निचोड़ ले। इस रस को पुटपाक कहते हैं। यह ४ रुपये भर रस रुपया भर शहद में पिये और जो कल्क, चूर्ण, पतली द्रव्य मिश्रित करना हो तो पुटपाकरस के यथायोग्य देना चाहिए।

सर्वातीसार पर कुरैयापुटपाक

चावल के धोवन में ४ तोले कुरैया की छाल पीसकर गोला बाँध जामुन के पत्ते लपेट फिर सूत से बाँधकर गेहूँ का आटा लपेट उस

पर मिट्टी लगावे। फिर उसे गाय के गोबर में फूँक दे। जब अंगार सा हो जाय तब निकाल, रस निचोड़, शीतल कर शहद मिलाकर पीवे तो बहुत दिनों का कठिन अतीसार दूर हो।

चावल धोने की क्रिया

चार रुपया भर शुद्ध चावल अठगुने पानी में धोवे वही चावल का धोवन सर्वत्र लिया गया है।

पुनः पुटपाक

अरलू अथवा करील वा सोनापाठा का पुटपाक अग्नि को दीपन करता है। जब शहद और मोचरस मिलाकर दे तब अतीसार दूर हो।

पुनः पुटपाक

बड़, पीपल, गूलर, पाकर, जगन्नाथी पीपल इनकी छाल पानी में पीस गोला बाँध श्वेत तीतर का पेट चीर उसकी अँतड़ियों में वह गोला रखकर पुटपाक करे। फिर पकने पर गोला निगालकर रस को निचोड़ ले। फिर वही रस शहद के साथ दे तो सब अतीसार जायँ।

अन्य पुटपाक

पक्के अनार का पुटपाक बनाकर उसका रस शहद में दे तो सब अतीसार दूर हों।

उबाकी पर बिजौरापुटपाक

बिजौरा नींबू, जामुन की पत्ती वा जड़ के पुटपाक का रस शहद के साथ दे तो सब प्रकार की छर्दि दूर हो।

रक्तपित्त, कास और ज्वर पर वासापुटपाक

रूसे का पुटपाकरस शहद के पीने से रक्तपित्त, कास, छर्दि और ज्वर इन सबको दूर करता है।

कासश्वास पर भटकटैया

भटकटैया के पञ्चाङ्ग का पुटपाकरस पीपल का चूर्ण डालकर दे तो कास, श्वास और कफ ये सब दूर हों।

कासश्वास पर विभीतकपुटपाक

बहेड़े के ऊपर घी चुपड़कर उसके ऊपर आटा लपेट अंगार पर पुटपाक बनावे। फिर उसका छिलका मुख में रखने से कास, श्वास, स्वरभङ्ग आदि सब रोगों को दूर करे।

आमातीसार पर शुण्ठीपुटपाक

सोंठि को चूर्ण कर उसकी गोली घृत के साथ बनावे और एरण्ड-पत्र में लपेट मन्दाग्नि में पुटपाक करे। उस चूर्ण को सबेरे शरबत के साथ खाय तो आमातीसार की पीड़ा दूर हो। अथवा सोंठि के चूर्ण को एरण्ड की जड़ के रस में सान पुटपाककर रस निकाल शहद के साथ खाय तो आमवात की पीड़ा दूर हो।

बवासीर पर सूरणपुटपाक

जिमीकन्द का पुटपाक बनाकर नमक और तेल के साथ खाय तो अर्श नाश हो।

हृदयशूल पर हरिणभृङ्ग पुटपाक

हरिण के सींग को शराब के पुटपाक में जलाकर गोघृत में डाल कर पिये तो हृदय शूल निस्सन्देह जाय।

क्वाथ

चार रुपयाभर द्रव्य और चौंसठ रुपयाभर पानी मिट्टी के पात्र में भर मन्दाग्नि से औटावे। जब आठ रुपया भर रहे तब उतार ले, फिर कुछ गर्म रहे तब पिये। इस क्वाथ के चार नाम हैं। सृत १ क्वाथ २ कषाय ३ निर्यूह ४। आहार का रस पके पर वृद्धवैद्य के उपदेश से दो पल काढ़ा पिये। एक पल चार तोला का होता है।

क्वाथ में मधु और मिश्री डालने का प्रमाण

जो वायुप्रधान हो तो मिश्री थोड़ी देना। पित्त में अष्टमांश, कफ में षोडशांश, वायु में षोडशांश, पित्त में अष्टमांश और कफ में चतुर्थांश देना चाहिए।

जीरा आदि अनेक वस्तु डालने का प्रमाण

जीरा, गुरगुलक्षार, सैन्धव, शिलाजीत, हींग और त्रिकुटा ये काढ़े में चार माशे दे। ज्यादा और कम देना चाहे तो समय और बल का विचार कर ले। दूध, घी, गुड़, तैल, गोमूत्र, स्वरसादि और चूर्णादि बल और समय देखकर दश दश माशे देना उचित है।

सर्वज्वरों पर गुर्चादि काढ़ा

गुर्च, धनियाँ, नींब की छाल, पद्माक, रक्तचन्दन इनके क्वाथ के

पीने से सर्वज्वर नाश होते हैं। यह क्वाथ दीपन है। दाह, तृष्णा, खार और उबकाई को दूर करता है।

वातज्वर पर गुर्चादिपाचन

गुर्च, पीपलामूल, सोंठि का काढ़ा वातज्वर में सदैव देना।

वातज्वर पर काढ़ा

माषपर्णी (बनउर्दी), बरियारा, रासना, गुर्च और सरिवन का काढ़ा पिये तो तीव्र वातज्वर जाय। अथवा खंभारि, सरिवन, दाख, त्रायमाण और गुर्च का काढ़ा गुड़ मिलाकर पिये तो वातज्वर जाय।

पित्तज्वर पर कट्फलादिपाचन

कायफल, इन्द्रयव, पाढ़ा, कुटकी और नागरमोथा का काढ़ा पित्तज्वर में दश दिन दे तो पित्तज्वर दूर हो।

पित्तज्वर पर पित्तपापड़ादिक्वाथ

पित्तपापड़ा, रूसा, कुटकी, चिरायता, जवासा और प्रियंगु दाना (पीतसरसों सा होता है) का काढ़ा चीनी डालकर पिये तो तृषा, दाह, रक्तपित्त और ज्वर दूर हों। अथवा दाख, हड़, मोथा, कुटकी, अमलतास और पित्तपापड़ा का क्वाथ कर दे तो पित्तज्वर, तृष्णा, मूर्च्छा, दाह और रक्तपित्तरोगों को शमन और भेदन करता है।

कफज्वर पर बिजोरापाचक

बिजोरा की जड़, हड़, सोंठि और पीपलामूल का काढ़ा जवाखार डालकर कफज्वर के बारहवें दिन पिये तो जल्दी पाचन करे तथा चिरायता, नींबू, पीपल, कचूर, शतावरि, गुर्च और भटकटैया का काढ़ा भी कफज्वरनाशक है। अथवा पटोल, त्रिफला, कुटकी, कचूर, रूसा और गुर्च के काढ़े में शहद मिलाकर पीवे तो कफज्वर नाश हो।

वातज्वर पर पित्तपापड़ाक्वाथ

पित्तपापड़ा, मोथा, गुर्च, सोंठि, चिरायता का काढ़ा करे। यह पञ्चभद्रकाढ़ा वात और पित्तज्वरनाशक हैं।

वातकफज्वर पर छोटी भटकटैयाक्वाथ

भटकटैया, सोंठि, पुष्करमूल का काढ़ा कफवातज्वर को नाशता

है और सन्निपातज्वर में पिये तो कास, श्वास, अरुचि को तथा सुपारी की पीड़ा को हरता है।

कफवातज्वर पर अमलतासादिक्वाथ

अमलतास, पीपलामूल, मोथा, कुटकी का काढ़ा वातकफज्वर को वेग ही नाश करता है तथा आम और शूल को शमन करता है और गोटा गिरावे, अग्नि दीपन और पाचन करे।

अमृताष्टकक्वाथ

गुर्चं, नींब, कुटकी, मोथा, इन्द्रयव, सोंठि, पटोल, रक्तचन्दन का क्वाथ और पीपल का चूर्ण डालके पीने से पित्तकफज्वर नाश होता है और उबकाई, अरुचि, हल्लास, दाह और तृषा को भी निवारण करता है।

सब ज्वरों पर भटकटैयादिक्वाथ

दोनों भटकटैया, सोंठि, धनियाँ, देवदारु का काढ़ा पाचन है और सर्वज्वरों को हरता है।

वातकफ पर दशमूलक्वाथ

बनउर्दी, बनमूँग, दोनों भटकटैया, गोखुरू, बेल की जड़, अग्नि-मन्थ, सोहनपत्ता, खम्भीरी, पाढ़ा इन दशों मूलों का काढ़ा पीपल के चूर्ण के साथ पिये तो वातकफज्वर नाश हो, और सन्निपातज्वर, सूतिकादोष, मुख सूखना, शीतल अङ्ग, भ्रम, पसीना, श्वास और कास को नाश करे तथा हृदयशूल, पार्श्वपीड़ा और तन्द्रा दूर हों।

सन्निपातज्वर पर अन्य हरीतकीक्वाथ

हड़, मोथा, धनियाँ, रक्तचन्दन, पद्माक, रूसा, इन्द्रयव, खस, गुर्च, अमलतास, पाढ़े की जड़ और कुटकी का काढ़ा पीपल के चूर्ण के साथ पिये तो सन्निपातज्वर, तृष्णा, दाह, कास, भ्रम, श्वास, तन्द्रा आदि रोगों को नाश करे। यह क्वाथ दीपन और पाचन भी करता है और वायु से मलमूत्रावरोध, वमन, कण्ठदोष और अरुचि इन उपद्रवों को नाश करता है।

पुनः भूनिम्बदशमूलक्वाथ

चिरायता, कुटकी, मोथा, धनियाँ, इन्द्रयव, सोंठि, दशमूल और

देवदारु का क्वाथ गजपीपल के साथ पिये तो पसुली की पीड़ा, सन्निपातज्वर, कास, श्वास, वमन, हिचकी, तन्द्रा और हृदयरोग नाश हों।

कासज्वर पर कायफलक्वाथ

कायफल, मोथा, भारंगी, धनियाँ, खस, पित्तपापड़ा, हड़, काकड़ासिंगी, देवदारु और सोंठि का काढ़ा, कासज्वर, श्वास, कफ और कण्ठरोग को शान्त करता है।

अन्य क्वाथ

गुर्च का काढ़ा पीपलयुक्त पीने से जीर्णज्वर छूटता है। पित्तपापड़े का क्वाथ पीपलयुक्त पीने से पित्तज्वर नाश होता है। भटकटया में पीपल डालकर पिये तो कास, श्वास, पीनस, अरुचि, गला बैठना, शूल, जीर्ण और कफज्वररोग दूर हों।

सर्वशीतज्वरों पर भटकटैयाक्वाथ

भटकटैया, धनियाँ, सोंठि, गुर्च, मोथा, पद्माक, रक्तचन्दन, चिरायता, पटोल, रूसा, मोचरस, कुटकी, इन्द्रयव, नीम, भारंगी और पित्तपापड़ा का क्वाथ प्रातःकाल पिये तो सर्वशीतज्वर नाश हों।

विषमज्वर पर मोथाक्वाथ

मोथा, भटकटैया, गुर्च, सोंठि, आँवला और शहद पीपलयुक्त पिये तो विषमज्वर नाश हो।

नित्य आते ज्वर पर पटोलक्वाथ

पटोल, त्रिफला, नींब, दाख, अमलतास और रूसा के क्वाथ को शहद और खाँड़युक्त पीने से एकाहिकज्वर दूर हो।

तृतीयज्वर पर गुडूच्यादिक्वाथ

गुर्च, धनियाँ, मोथा, रक्तचन्दन, खस और सोंठि का काढ़ा शक्कर और शहद मिलाकर पिये तो तृतीयज्वर, प्यास और दाह दूर हों और रोगी अच्छा हो।

चतुर्थज्वर पर देवदारुक्वाथ

देवदारु, हड़, रूसा, शालिपणा, सोंठि, आँवला, इन्द्रयव का काढ़ा मिश्रीयुक्त पीने से चातुर्थिकज्वर और श्वास, कास, मन्दाग्नि आदि रोगों को दूर करता है।

ज्वरातीसार पर गुडूच्यादिक्वाथ

गुर्च, धनियाँ, खस, सोंठि, सुगन्धबाला, पित्तपापड़ा, बेल, अतीस, पाढ़ा, रक्तचन्दन, कुरैया, चिरायता, मोथा और इन्द्रयव का काढ़ा ठण्ढा कर शहद और मिश्री मिलाकर पिये तो ज्वरातीसार और रक्त-पित्त नाश हों।

अन्य क्वाथ

सोंठि, कुरैया, मोथा, गुर्च और अतीस के काढ़े को पीने से समस्त ज्वरातीसार नाश हों।

आमशूल पर धान्यपञ्चकक्वाथ

धनियाँ, सोंठि, बेल, मोथा और खस के क्वाथ से शूल और आम-रोग दूर होते हैं। यह क्वाथ ग्राही, दीपन और पाचन है। शहद, धनियाँ और सोंठि का क्वाथ भी दीपन और पाचन है और जो एरण्ड की जड़युक्त करे तो आमवात दूर हो।

आमातीसार पर कुरैयाक्वाथ

कुरैया की मूल, अतीस, बेल, मोथा और खस का काढ़ा पीने से अतीसार अवश्य नाश होता है।

कुटजाष्टकक्वाथ

कुरैया, मूल, अतीस, पाढ़ामूल, धवफूल, लोध, मोथा, हाऊबेर और अनार का काढ़ा मधु और मोचरस मिलाकर पिये तो समग्र अतीसार जायँ। यह क्वाथ दाह, रक्त, कठिन शूल आदि को भी दूर करता है।

अतीसार पर हाऊबेरक्वाथ

हाऊबेर, धवफूल, लोध, लजालू, कुरैया, धनियाँ, अतीस, मोथा, गुर्च, बेल और सोंठि का काढ़ा पीने से बहुत काल का भी अतीसार दूर हो जाता है और अरोचक, आमशूल आदि को भी हरता है तथा पाचन और दीपन भी है।

बालकों के सर्वातीसार पर क्वाथ

धवफूल, बेल, लोध, सुगन्धबाला और गजपीपल का काढ़ा मधुयुक्त देने से अथवा इसका अवलेह बनाकर देने से बालकों के सर्वातीसार नाश होते हैं।

संग्रहणी पर बनउर्दीक्वाथ

बनउर्दी, बरियारा, बेल, धनियाँ और सोंठि का काढ़ा देने से पेटशूल, नाभिशूल और वातसहित संग्रहणी को दूर करे।

चतुर्भद्रक्वाथ

गुच, अतीस, सोंठि और मोथा का क्वाथ असाध्यतर ग्रहणी को दूर करता है और दीपन और पाचन भी है।

सर्वातीसार पर इन्द्रयवक्वाथ

इन्द्रयव, धनियाँ, पटोल का काढ़ा, खाँड़ और शहद के साथ खाय तो छर्दि और अतीसार जायँ। अथवा आम की गुठली और बेल का काढ़ा, शहद और मिश्री मिलाकर पीने से सब अतीसार दूर होते हैं।

कृमि पर त्रिफलाक्वाथ

त्रिफला, देवदारु, मोथा, मूसाकरणी, सहिंजन का क्वाथ पीपल और बिड़ङ्गयुक्त पीने से कृमिज उपद्रव दूर हों।

कमल पर त्रिफलादिक्वाथ

त्रिफला, गुर्च, कुटकी, नींब, चिरायता और रूसा का क्वाथ शहद के साथ पीने से कमल और पाण्डुरोग नाश होते हैं।

पाण्डु पर गदापुरैनाक्वाथ

गदापुरैना, हड़, नींब, दारुहल्दी, कुटकी, पटोल, गुर्च और सोंठि का काढ़ा पिये तो पाण्डु, कास, उदररोग, श्वास, उदरशूल और सर्वाङ्ग-सूजन रोग दूर हों।

रक्तपित्त पर रूसाक्वाथ

रूसा, दाख और हड़ का काढ़ा शहद अथवा मिश्री के साथ पिये तो रक्तपित्त की दारुण पीड़ा, कास और श्वासरोग नाश हों। अथवा रूसे का काढ़ा शहद के साथ पिये तो रक्तपित्त, कास श्वास, क्षयी और कफपित्तज्वर रोग दूर हों।

कासज्वर पर रूसाक्वाथ

रूसा, भटकटैया, गुर्च को मधुयुक्त खाने से कासज्वर मिटे। भटकटैया का काढ़ा पीपल के चूर्णसंयुक्त दे तो खाँसी जाय।

कास और श्वास पर क्षुद्रादिक्वाथ

भटकटैया, कुरथी, रूसा, सोंठि और पुष्करमूल का क्वाथ पीने से कास और श्वासरोग दूर होते हैं।

हिक्का पर मेवड़ीक्वाथ

मेवड़ी, काँजी, पीपल, भुनी हींग मिलाकर पीने से पाँचों प्रकार की हिचकियाँ जायँ।

उबकाई पर बिल्वलवादिक्वाथ

बेल की छाल अथवा गुर्च का काढ़ा मधुयुक्त पीने से त्रिदोषजन्य छर्दि मिटती है। यदि पित्तपापड़ा और शहद मिलाकर पिये तो पित्त और छर्दि नाश हो।

गृध्रसीवायु पर दशमूलक्वाथ

हींग और पुष्करमूल का चूर्ण दशमूलक्वाथ में युक्त कर पिये तो गृध्रसीवायु जाय। यदि मेवड़ीक्वाथ में हींग व एरण्डमूल का चूर्ण मिलाकर पिये तो गृध्रसीवायु तुरन्त दूर हो।

वायु पर रासनापञ्चकक्वाथ

रासना, गुर्च, देवदारु, सोंठि, एरण्डमूल इनका काढ़ा पीने से सप्तधातुगत वात और सब अङ्गवायु दूर हों। अथवा रासना, गोखुरू, एरण्ड, देवदारु, पुरैना, गुर्च, अमलतास इनका काढ़ा कर सोंठि के चूर्ण के साथ पीने से जाँघ, कटि, पसुली और छाती की पीड़ा तथा भारी आमवात दूर हों।

संपूर्ण वायु पर महारासनादिक्वाथ

दो भाग रासना और एक भाग में जवासा, बरियारा, एरण्ड, देवदारु, कचूर, बच, रूसा, सोंठि, हड़, चाब, मोथा, गदापुरैना, गर्बबिधारा, सौंफ, गोखुरू, असगन्ध, अतीस, अमलतास, शतावरि, पीपल, इन्द्रयव, धनियाँ, दोनों भटकटैया इनका क्वाढ़ा सोंठिचूर्ण डाल पाक वा पीपल का चूर्ण या योगराजगुग्गुल के साथ अथवा अजमोदादिचूर्ण के साथ तथा रेंड़ी के तैल के साथ दे तो सर्वाङ्गकम्प, कूबड़, पक्षाघात, बाहुक, गृध्रसी, आम, फ़ीलपाँव, अपतन्त्र, अण्डवृद्धि, पेट फूलना, जंघपीड़ा, धातुरोग, बन्ध्या के योनिसम्बन्धी रोग दूर हों।

यह महारास्नादिक्वाथ ब्रह्मा ने कहा है। इसमें औषधों का दूना रासना लेना अनुचित है।

छाती की पीड़ा पर एरण्डक्वाथ

एरण्ड, बिजौरा की जड़, गोखुरू, दोनों भटकटैया, पाषाणभेद, बल की लकड़ी इनका काढ़ा, रेंड़ी का तैल, हींग, जवाखार और सैन्धवयुक्त पिये तो हृदय, कण्ठ और स्तनपीड़ा मिटे।

वातशूल पर शुण्ठीक्वाथ

सोंठि, एरण्डमूल, इन्द्रयव इनका काढ़ा तथा भुनी हींग और काला नमक मिलाकर पीने से वातशूल दूर होता है।

पित्तशूल पर त्रिफलाक्वाथ

त्रिफला और अमलतास के काढ़े में शक्कर शहद मिलाकर पिये तो रक्तपित्त, दाहपित्त और शूलरोग जायँ।

कफशूल पर एरण्डमूलक्वाथ

एरण्ड की जड़ ८ तोले लेकर ६४ तोले जल में काढ़ा करे। जवाखार डालकर पिये तो कफजन्य पार्श्व और हृदयपीड़ा नाश हो।

हृदयरोग पर दशमूलक्वाथ

दशमूल का काढ़ा, जवाखार, और सैन्धवयुक्त पीने से हृदयरोग, वायुगोला, कास और श्वासादि रोग नाश हों।

मूत्रकृच्छ्र पर हरीतकीक्वाथ

हड़, जवासा, अमलतास, पाषाणभेद और गोखुरू का काढ़ा कर शहद में पीने से दाहसहित मल और मूत्रावरोधरोग अच्छा हो।

मूत्ररोग पर अर्जुनक्वाथ

आकाशबवँरि, काश की जड़, तीनों कटसरैया, दोनों कुश, नरकटमूल, गोंदा, शिवलिङ्गी, अरणोचूर्ण, हालवारी, पाषाणभेद व करील, गोखुरू, चिरचिरा, कमलपत्र यह परितरु श्रेष्ठगण है। इस क्वाथ के पीने से शर्करा, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात नाश हों।

अश्मरी शर्करादि पर एलाक्वाथ

इलायची, मुलहठी, गोखुरू, मेंवड़ीबीज, एरण्ड, रूसा, पीपल

और पाषाणभेद का काढ़ा शिलाजीत मिलाकर पीने से शर्कराप्रमेह और मूत्रकृच्छ्ररोग नाश होता है।

मूत्रकृच्छ्र पर गोखुरूक्वाथ

गोखुरू के पञ्चाङ्ग का काढ़ा मिश्री और शहद मिलाकर पिलावे तो मूत्रकृच्छ्र और उष्णवायुरोग अच्छे हों।

मूत्रकृच्छ्र पर त्रिफलाक्वाथ

त्रिफला, दारुहल्दी, मोथा, देवदारु इनका काढ़ा शहद मिलाकर पिये तो प्रमेह नाश हो। अथवा कुरैया, त्रिफला, दारुहल्दी, मोथा, ककई इनका काढ़ा शहद के साथ पीवे तो प्रमेह नाश हो।

प्रमेह पर त्रिफलाक्वाथ

त्रिफला, मोथा, दारुहल्दी, इन्द्रायण की जड़ इनका काढ़ा हल्दी के चूर्ण के साथ पिये तो सकल प्रमेह नाश हों।

प्रदर पर दारुहल्दी क्वाथ

दारुहल्दी, रसौंत, मोथा, भिलावाँ, तेल, रूसा और चिरायता का काढ़ा ठण्ढाकर मधुसंयुक्त पिये तो स्त्री का पीत, श्वेत, कृष्ण, लाल प्रदरसहित शूल, उदररोग अच्छे हों।

तक्षव्रणादि पर वटादिकक्वाथ

वट, पाकर, वेतस, बेर, तुनि, जेठीमधु, चिरौंजी, लोध, गुलरी, पीपल, धूप, जगन्नाथी, पीपल, पलाश, दोनों तन्दुक, जामुन, आम्र, हड़, कदम्ब, अर्जुनतरु, भिलावाँ और कायफल जो द्रव्य इसमें न मिले सो त्याग दे। यह न्यग्रोधादि गणक्वाथ बहुत ग्राही है। जो घाव खराब हो गया हो तो अच्छा हो। योनिदोष, दाह, मेद, प्रमेह और विषरोग नाश हों। वेतस को कहीं जगन्नाथी पीपल कहते हैं।

मेदरोग पर बेलक्वाथ

बेल, अरणी, सोहनपात, खंभारी इन सबका काढ़ा शहद के साथ पिये तो मेददोष मिटे। अथवा त्रिफले का काढ़ा शहद मिलाकर पिये तो मेददोष जाय। अथवा गर्म पानी ठण्ढा कर शहद के साथ पिये तो मेदरोग जाय।

उदररोग पर चावक्वाथ

चाब, चीता, सोंठि, देवदारु इनका काढ़ा निशोथ चूर्ण और गोमूत्र के साथ पिये तो उदररोग दूर हों।

पेट फूलने पर गदापुरैनाक्वाथ

गदापुरैना, गुर्च, देवदारु, सोंठि इनका काढ़ा गोमूत्र और गुग्गुल-युक्त पिये तो पेट की सूजन मिटे।

पिलही पर हरीतकीक्वाथ

हड़ और अगियाखार का काढ़ा जवाखार और पीपलयुक्त पीने से प्लीहा, वायुगोला और यकृत अच्छा हो।

शोथ पर गदापुरैनाक्वाथ

गदापुरैना, दारुहल्दी, सोंठि, गुर्च, चीता, भारङ्गी, देवदारु इनके क्वाथ से हाथ, पाँव, उदर, छाती और मुख की सूजन ये सब रोग जायँ।

अण्डवृद्धिसूजन पर त्रिफलाक्वाथ

त्रिफला के काढ़े में गोमूत्र मिलाकर पीने ये वातकफजन्य अरण्ड-वृद्धि जाय।

आँतवृद्धि पर रासनाक्वाथ

रासना, गुर्च, बरियारा, मुलहठी, गोखुरू, अरण्ड इनके काढ़े में रेंड़ी का तैल मिलाकर पीने से आँतवृद्धि मिटे।

गण्डमाला पर कचनार क्वाथ

कचनार की छाल का काढ़ा सोंठियुक्त पीने से निस्सन्देह गण्ड-माला नाश हों।

फीलपांव पर सहोड़ाक्वाथ

सहोड़े का काढ़ा गोमूत्रयुक्त पीवे तो अवश्य फीलपाँव और मेद-दोष नाश हों।

अन्तर्विद्रधि पर गदापुरैनाक्वाथ

गदापुरैना और वरुणा का क्वाथ पिये तो भीतर का फोड़ा वा पिड़की अच्छी हो।

वरुणादिगणक्वाथ

वरुणपत्र, मौलसिरी वा बिजगुरी, आबेलि, चिरचिरा, चीता, दोनों अरणी, दोनों सहिंजन, दोनों भटकटैया, तीनों कटसरैया, अमुर्समेष-

शृंगी, चिरायता, बनकुँदुरू का मूल वा पल्लव, करञ्ज, शतावरि इनका काढ़ा करे। इस वरुणादिगणक्वाथ से मेददोष शुद्ध हो। गुल्म, शिरःशूल, अन्तर्विद्रधि और पीनसरोग अच्छे हों। मेढ़ासिंगी प्रसिद्ध है।

भगन्दर पर खदिरादिक्वाथ

खैर, त्रिफला का काढ़ा, भैंस का घृत, बायबिड़ंग के चूर्ण संयुक्त पिये तो भगन्दर निस्सन्देह अच्छा हो।

गर्मी पर पटोलादिक्वाथ

खैर त्रिफला का काढ़ा अथवा पटोल, त्रिफला, बच, चिरायता, काही, रासना इन ओषधों का क्वाथ गुग्गुल के साथ पिये तो सब उपदंश दूर हों।

रक्तपित्तातीसार पर मोथादिप्रमथ्या

मोथा और इन्द्रयव का प्रमथ्या दो पल ठण्ढा कर मिश्री मिलाकर पिये तो रक्तातीसार नाश हो।

यवागूविधान

सोलह तोले द्रव्य में उसका सोलहगुना पानी ले। फिर आग पर रखने से जब आधा जल जाय तब द्रव्य छानकर फेंक दे जो पानी रह जाय उसे यवागू कहते हैं। इस पानी में रोगी को पथ्य देते हैं। इस प्रकार जो शेष पानी रह जाय उसमें पथ्य पकावे। जब रस को सोख ले तब दे।

यूषकविधि

सोंठि का कल्क ओषध एक पल उसमें पीपल पाँच माशे सेर भर पानी में पकाकर उसमें अन्न खूब गलाकर दे तो उसे यूषक कहते हैं।

सन्निपात पर सप्तमुष्टिकयूष

कुरथी, यव, बेर, मूँग, मूली की पेंदी (जो पत्तों के पास होती है) इन सब सूखे द्रव्यों का यूष सोंठि और धनियाँ मिलाकर पीवे तो कफ और वात नाश हों। इस सप्तमुष्टिक यूष से सन्निपातज्वर, आमवात, कण्ठ, हृदय और मुखरोग दूर हों।

पानादिकल्पना

पलभर कूटी द्रव्य चौंसठ पल पानी में ओटावे। जब आधा रह

जाय उस पानी को भक्त कहते हैं। इसे भोजन के समय दे अथवा थोड़ा थोड़ा कर दे।

ज्वरतृषा पर उशीरादि पान

खस, पित्तपापड़ा, सुगन्धबाला, मोथा, सोंठि, रक्तचन्दन इन्हें पकाकर, पानी ठण्ढा कर दे तो प्यास और ज्वर जाय।

उष्णोदक

रात को उष्णोदक पीने से कफ, आमवात, मेदा, बस्तिशोधन, दीपन, श्वास, कास और ज्वररोग जाते हैं।

क्षीरपाकविधि

द्रव्य का अठगुना दूध और दूध का चोगुना पानी एकत्र कर औटावे। पानी जल जाने पर दूध पीने से आमशूल दूर हो।

अन्न-भेद

अन्न को यवागू से छहगुना जल देकर पकावे, उसे कृश और घना कहते हैं। चावल, मूँग, माष और तिल इनका यवागू ग्रहणी को बल देता है। तृप्ति और वायु को नाश करता है और पलभर अन्न में चोगुना जल डालकर पकावे, उसे विलेपी कहते हैं। यह अन्न तृप्ति व मन प्रसन्न करता, प्रिय, मधुर और पित्तनाशक है।

पय

अन्न को चोदह गुने पानी में सिद्ध करे। पतला मठा न हो जो पिया जाय, उसे पय कहते हैं। उससे कुछ ही गाढ़े को यूष कहते हैं। यह यूष हल्का है। ग्रहणी को शुद्ध करता, धातुपुष्ट करता, बल करता, कण्ठ शुद्ध करता, लघुपाक और कफहारक है।

भातविधि

चावल से चोदहगुने पानी में चावलों को पकावे। इसका माड़ मीठा और हल्का होता है जिसे भक्तमण्ड कहते हैं। इसमें सोंठि और सैन्धव डालकर पिये तो दीपन और पाचन करे तथा अष्टगुण माड़–धनियाँ, त्रिकुटा, सैन्धव, मठा, तैल की भुनीं हींग और तक्रयुत माड़ का अष्टगुणमाड़ नाम है। यह प्राणदाता, बस्तिशोधन, रक्तवर्धन, ज्वरघ्न और सब दोषों को हरण करता है।

यवमण्ड

यव को कूट-भूनकर उबाले उसको वाद्यमण्ड कहते हैं। यह कफ-पित्त को हरता हुआ कण्ठ को शुद्ध करता है और रक्तपित्त को नाश करता है।

लाजामण्ड

धान का लावा, कूटी द्रव्य वा भूजे धान का बनावे, इसको लाजा-मण्ड कहते हैं। यह कफ और पित्त को हरता है, ग्राही है तथा तृष्णा और ज्वर को नाश करता है।

अजीर्ण से उत्पन्न हुए ज्वर पर क्वाथ

पीपल, पीपलामूल, सोंठि, अजवाइन, बायबिड़ंग, देवदारु, दोनों कटेली इनका काढ़ा देने से अजीर्णज्वर दूर हो। अथवा पीपल, पीपला-मूल, सोंठि, मिरच, छोटी हड़, लवङ्ग, धनियाँ, अमलतास, देवदारु, इन द्रव्यों का अष्टावशेष काढ़ा दे तो ज्वर जाय। अथवा सोंचरनोन और बकाइन का काढ़ा दे तो ज्वर जाय। अथवा पीपल, पीपलामूल, गिलोय, सोंठि, इनको बराबर ले, इनका क्वाथ करके दे तो ज्वर जाय। अथवा पीपल, पीपलामूल, सोंठि, अजवाइन, बायबिड़ंग, देवदारु, चव्य, दोनों कटेली इन सबको बराबर ले क्वाथ कर दे तो ज्वर दूर हो।

सन्निपात पर काढ़ा

भारङ्गी, मिरच, सोंठि, कूट, अकरकरा, अतीस, बच, कलौंजी, अंतःमनि, चिरायता, अजमोद, अजवाइन, पीपलामूल, काकड़ासिंगी, दवागूमी, बायबिड़ंग, दोनों कटेली, चाब, चित्रक, पाढ़ा, सरिवन, पिथवन, आक की जड़ ये सब औषधें चार-चार माशा ले। फिर उसके तीन भाग करे और एक भाग का अष्टावशेष क्वाथ कर दे तो १३ सन्निपात दूर हों।

सन्निपात पर कायफलादिक्वाथ

कायफल, नागरमोथा, बच, पाढ़ा, पुष्करमूल, पित्तपापड़ा, देवदारु, हड़ का काढ़ा, काकड़ासिंगी, पीपल, चित्रक, सोंठि, भारङ्गी, इन्द्रयव, कुटकी, कचूर, धनियाँ, रोहिष, बेल, खम्भारी, बहेड़ा, दोनों कटेली, गोखुरू, सरिवन, पिथवन ये सब औषधें चार चार माशा ले तीन भाग

करे। एक भाग का अष्टावशेष क्वाथ दे तो सन्निपात, कर्णमूल, हिचका और पित्त दूर हों।

वातरक्त पर गुडूच्यादिक्वाथ

गुर्च, एरण्ड की मूल, रूसा इनका क्वाथ एरण्ड के तैल के साथ पिये तो सर्वाङ्गप्रवर्ती, वातरक्त निश्चय करके दूर हो। अथवा परवल, त्रिफला, कुटकी, गुर्च, शतावरि इनका काढ़ा पिये तो दाहयुक्त वातरक्त अच्छा हो।

श्वेतदाग जाने का काढ़ा

आँवला और खैरसार दोनों का काढ़ा बकुचीचूर्णयुक्त थोड़े दिनों के हुए कुष्ठ पर अभ्यास कर पिये। पथ्य यथावत् करे तो श्वेतदाग निस्सन्देह मिट जायँ।

वातरक्तकुष्ठ पर लघुमञ्जिष्ठादिक्वाथ

मंजीठ, त्रिफला, कुटकी, बच, दारुहल्दी, गुर्च और नींब इनका क्वाथ कर पिये तो वातरक्त, कण्डू, गलितकुष्ठ और रक्तमण्डल दूर हों।

सर्वकुष्ठवृद्धि पर मञ्जिष्ठादिक्वाथ

मंजीठ, मोथा, कुरैया, गुर्च, कूठ, सोंठि, भारङ्गी, भटकटैया, बच, नींब, दोनों हल्दी, त्रिफला, परवल, कुटकी, मूर्वा, बायबिड़ंग, रासना, चीता, शतावरि, त्रायमाण, पीपल, इन्द्रयव, रूसा, भाँगरा, देवदारु, पाढ़, खदिरसार, रक्तचन्दन, निशोथ, वरुणा, चिरायता, बकुची, अमलतास, सहोरा, बकायन, करञ्ज, अतीस, खस, इन्द्रारुण, जवासा, सारिवा और पित्तपापड़ा ये सब द्रव्य समान लेकर काढ़ा कर पीपल और गुग्गुल मिश्रित कर पिये तो अठारहों कोढ़ और वातरक्तपीड़ा, उपदंश, फ़ीलपाँव, शून्यवायु, पक्षाघात, मेदादोष और नेत्ररोग इन रोगों को मजिष्ठादिक्वाथ निस्सन्देह नाश करता है।

शिरश्शूल और नेत्र पर हरीतकीक्वाथ

हड़, बहेड़ा, आँवला, भूनिम्ब (चिरायता), हल्दी, निम्ब, आँबाहल्दी, गुर्च इनके काढ़े में गुड़ मिलाकर पिये तो शिरःशूल, भौंह, कान, आधाशीशी, सूर्यावर्त, लेवाड़ी, दन्तपातरोग, रतौंधी, पटलफूली, नेत्ररोग और नेत्रपीड़ा दूर हों।

नेत्ररोग पर अरूसादि क्वाथ

रूसा, सोंठि, गुर्च, हल्दी, रक्तचन्दन, चीता, चिरायता, नींब, कुटकी, परवल, त्रिफला, नागरमोथा, यव, इन्द्रयव कुरैया इनके क्वाथ से सर्वनेत्र-रोग नाश हों तथा स्वरभङ्ग से कण्ठ खुजलाना, पीनस, श्वास, कलेजे का घाव जाता रहे। अथवा गुर्च, त्रिफला का काढ़ा, शहद और पीपल-संयुक्त ठण्ढा कर पीने से सर्व नेत्ररोग विनाश हों।

क्षत (घाव) पर पिप्पल्यादि क्वाथ

पीपल, गूलर, पकरिया, बेर, वेतस इनका काढ़ाकर घाव धोवे तो उपदंश (गर्मी), घाव और सूजन सब अच्छे हों। अथवा औषध पीसकर गोली बना के अठगुने पानी में डाल काढ़ा करे। जब चौथाई पानी रहे तब उतार ले, इसे प्रमथ्या कहते हैं। इसके पानी की मात्रा आठ तोले है।

सन्निपात पर अन्य काढ़ा

भारङ्गी, सोंठि, मिरच, अजमोद, अजवाइन, हींग, पीपलामूल, काकड़ासिंगी, दूब, मूँगा, बायबिड़ंग, दोनों कटेलो, चाब, चीते की छाल, पाढ़ा, सरिवन, पिथवन, मदार की जड़ ये सब औषधें बराबर ले तीन भाग करे। एक भाग का अष्टावशेष काढ़ा कर दे तो सन्निपात दूर हो।

सन्निपात पर चित्रकादि क्वाथ

चित्रक, पीपलामूल, पीपल, बच, चाब, सोंठि, अतीस, जीरा, पाढ़, सरसों, मिरच, कायफल, पुष्करमूल, बायबिड़ंग, दोनों कटेलो, जवासा, अजवाइन, अजमोद, गजपीपल, मदार की जड़, बकायन की जड़, हींग ये सब औषधें दश दश माशा ले तीन भाग करे। एक भाग का अष्टावशेष क्वाथ कर दे तो शीतज्वर दूर हो और तेरहों प्रकार के सन्निपात जायँ।

अतीसार पर काढ़ा

धनियाँ, सोंठि, नागरमोथा, बेलगिरी, मूँज की जड़ ये सब औषधें पैसा पैसा भर लेकर तीन भाग करे। एक भाग का अष्टावशेष क्वाथ दे तो अतीसार दूर हो। अथवा सोंठि, अजवाइन, अतीस, हींग,

नागरमोथा, बेलगिरी और गिलोय ये सब बराबर ले क्वाथ कर दे तो अतीसार जाय।

प्रसूति पर काढ़ा

पीपल, देवदारु, मोथा, अगर, पीपलामूल, कलौंजो, बायबिड़ंग ये सब चार चार माशा ले काढ़ा कर दे तो प्रसूतिरोग अच्छा हो। अथवा देवदारु, बच, कूठ, लवङ्ग, पीपल, सोंठि, कायफल, मोथा, चीते की छाल, मूँज की जड़, कुटकी, धनियाँ, हड़, गजपीपल, जवासा, अतीस, कलौंजी, गोखुरू ये सब औषधें पैसा पैसा भर ले तीन भाग करे। एक भाग को काढ़ा कर २ रत्ती हींग और २ रत्ती सेंधानमक डाल कर दे तो प्रसूति जाय।

श्वेतकुष्ठ पर काढ़ा

आँब की जड़ २१ पैसा भर, कौंच की जड़ २१ पैसा भर, बेर की छाल २१ पैसा भर, मंजीठ २१ पैसा भर ये सब बराबर ले १ पैसा भर का काढ़ा २१ दिन पीवे। देह में वायु न लगने पावे तो श्वेतकुष्ठ दूर हो।

ज्वर पर क्वाथ

पहले दिन के ज्वर को सात दिन लंघन कराकर देवदारु, धनियाँ, छोटी बड़ी भटकटैया और सोंठि ये सब दो तोला ले सोलहगुने जल में क्वाथ करे। जब चौथाई रह जाय तब मन्दोष्ण होने पर पिला दे। इस क्वाथ से तीन अथवा पाँच दिन में ज्वर नष्ट हो जाता है।

क्रम से वातपित्तकफज्वर में क्वाथ

वात के ताप में गिलोय, सोंठि, मोथा और धमासा (जवासा) इनका क्वाथ पीवे। पित्त के ताप में चिरायता, कुटकी, मोथा, पित्त-पापड़ा, जवासा इनका क्वाथ पीवे। कफ के ज्वर में सोंठि, अड़ूसा, नागरमोथा, जवासा इनका क्वाथ पीवे। गिलोय, सोंठि और पीपला-मूल इन तीनों का क्वाथ वातज्वर को नष्ट करता है। गिलोय, पित्त-पापड़ा मोथा और चिरायता इनका काढ़ा पीने से वातपित्त का ज्वर नष्ट होता है।

अन्य क्वाथ

दाख, पित्तपापड़ा, स्योनाक, कुटकी, मोथा, हड़ इन द्रव्यों का

काढ़ा मूर्च्छा, राजयक्ष्मा, पसीना, प्यास, घबड़ाना और भ्रान्ति इन संयुक्त पित्तज्वर को नाश करे। जवासा, कंगुनी, चिरायता, कुटकी, अड़ूसा, पित्तपापड़ा इन छओं का क्वाथ तृष्णा, शरीर में दाह, अश्रु, पित्तरोग और पित्तज्वर को नष्ट करे। अथवा गिलोय, आँवला और पित्तपापड़ा इनका काढ़ा पीने से पित्तज्वर अवश्य नष्ट होता है।

अन्य क्वाथ

रक्तचन्दन, पद्माक की त्वचा, धनियाँ, गिलोय और नींब इनका क्वाथ पीने से पित्त और कफ से उत्पन्न ज्वर और प्यास, वमन और मन्दाग्नि ये सब नष्ट हों।

अन्य क्वाथ

दाह के साथ ऐसे ज्वर में प्यास हो तो सुगन्धबाला, बीरणमूल (खस), मोथा, पित्तपापड़ा, सोंठि और रक्तचन्दन इनका क्वाथ करे। ठंढा करके पीने से ज्वर की तृष्णा मिटे।

ज्वर में मुख की कड़ुवापन जाने का क्वाथ

जिसको बुखार आता हो उसे कुटकी का क्वाथ करके दे तो पित्त ज्वर से हुआ कड़ुवामुख अच्छा हो।

मुखरोग और खाँसी का क्वाथ

कायफल का तृण, मोथा, धनियाँ, काकड़ासिंगी, बच, पाँच रेखा-वाली हड़, भारङ्गी, पित्तपापड़ा, सोंठि, देवदारु इन औषधों का क्वाथ करके छान ले। चार माशे पिसी हुई भुनी हींग और दो तोले शहद को क्वाथ में डाल के पीवे तो खाँसी, श्वासरोग, मुख के रोग और ज्वर का वेग तथा कफ की वृद्धि और कण्ठ की पीड़ा ये सब नष्ट हो जायँ।

बुद्धिभ्रंश, पसीना, शीत और अनर्थ बोलने पर क्वाथ

पीपलामूल, इन्द्रयव, सेहुँड़ अथवा देवदारु, गुग्गुल, बायबिड़ंग, भारङ्गी, दालचीनी, सोंठि, मिरच, पीपल, चीता, कायफल, पुष्करमूल, रासना, जैत के बीज, हड़, दोनों कटहरी, अजवाइन, जटामांसी, चिरायता, घुड़बच, चाव और पाढ़ा इन औषधों का काढ़ा पीने से सकल सन्निपात, बुद्धिभ्रंश, पसीना, शीत का लगना, अनर्थ

का बोलना, शूल, अधोवायु रुकने से पीड़ा के साथ पेट फूलना, हृदय का विस्फोटक, कफयुक्त वायु प्रसूतिवायु के सब रोग नष्ट हों।

प्रसूतावातव्याधिहरण क्वाथ

अर्कमूल, जवासा, चिरायता, देवदारु, रासना, जैत के बीज, सँभालू, घुड़बच, अरणी, सहिंजना, पीपलामूल, पीपल, बच, चीता, सोंठि, अतीस, भाँगरा इन औषधों का क्वाथ दुःसह सन्निपात के ज्वरों को, धनुर्वायु को, दाँतों के बन्ध को, असह्य शीत से शरीर के काँपने को, कास और श्वास को और प्रसूता स्त्री की वातव्याधि को हरण करता है।

सकल सन्निपात पर क्वाथ

कुटकी, चिरायता, पित्तपापड़ा, गिलोय, कचूर, रासना, जैत के बीज, पीपल, पुष्करमूल, त्रायन्ती (त्रायमाण), बहुला, भटकटैया, देवदारु, सोंठि, हड़, जवासा और भारङ्गी इन औषधों के क्वाथ के पीने से सारे सन्निपात, दिन की नींद, रात्रि का जागना, प्यास, मुख का सूखना तथा देह का दाह, खाँसी और अनेक प्रकार के श्वास-रोग जायँ।

हिचकी, प्यास, वमन और जलन पर क्वाथ

रक्तचन्दन, दोनों खस कुटज की छाल, पाढ़ा (पर्वती पयण्ड), कमल, धनियाँ, गिलोय, चिरायता, मोथा, सुगन्धबाला, बेलगिरी, अतीस और सोंठि इनका क्वाथ पीने से हुचकी, प्यास, वमन, जलन, अन्त में अरुचि और सब भाँति के अतीसार रोग जायँ।

पंचमूलादि क्वाथ

लघुपञ्चमूलो[1], पाढ़ा, मोथा, बरियारा, इन्द्रयव, कुटज की छाल, खस, कुटकी, गिलोय, सोंठि, बेलगिरो इन औषधों का काढ़ा वमन, खाँसी, श्वास और शूल, इनके साथ ज्वरातीसार को दूर करता है।

शोकातीसार पर क्वाथ

देवदारु, अतीस, पाढ़ा, बिडंग, मोथा, मिरच और कुटज की छाल इनका क्वाथ पीने से शोक से हुआ अतीसार चला जाय। अथवा सुगन्ध-

---

१. शालिपर्णी, पृश्नपर्णी, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखुरू, इनको पंचमूल कहते हैं।

बाला, बेलगिरी, मोथा, धनियाँ और सोंठि इन पाँचों का क्वाथ भी अतीसार को दूर करता है। अथवा धनियाँ, सुगन्धबाला, बेलगिरी और मोथा इनका क्वाथ शीतल कर पीवे तो अतीसार रोग नष्ट हो।

श्वासहरण क्वाथ

बाँसा, हल्दी, पीपल, गिलोय, भारङ्गी, रुद्रजटा, सोंठि, कटहली की जड़, इन आठों का काढ़ा करे। उसमें पिसी हुई मिरच डालकर पीवे तो श्वास का रोग शान्त हो। अथवा सोंठि का काढ़ा भी पीने से श्वास रोग शान्त होता है।

कासहरण क्वाथ

पीपल का चूर्ण मिलाकर कटहली की जड़ के वक्कल का काढ़ा पीने से कास का रोग शीघ्र ही दूर होता है। अथवा सोंठि और भारङ्गी का काढ़ा पीवे तो कास और श्वास दोनों रोग दूर हों।

बालातीसार में क्वाथ

धवई के फूल, लोध, बेलगिरी, मोथा, मंजीठ और सुगन्धबाला इनका क्वाथ व चटनी पिलाने अथवा चटाने से बालक के अतीसार को दूर करती है।

फाण्ट

कुटी हुई द्रव्य पलभर एक कुडव पानी मिट्टी के पात्र में अच्छी तरह तप्त कर उतार ले। फिर उस द्रव्य को उष्णोदक में डाल ढक दे। जब ठण्ढा हो तब छान ले, इसे फाण्ट कहते हैं। इस फाण्ट की मात्रा आठ रुपये भर है और इसमें मिश्री, शहद और पुराना गुड़ काढ़े की तरह डालना चाहिए।

पित्तज्वर पर मधूकफाण्ट

महुआ, मुलेठी, फालसा, चन्दन, नीलकमल, लोध, नागकेसर, त्रिफला, सरिवन, दाख, लावा ये सब गरम पानी में डाल मिश्री और शहद मिलाकर पिलावे। इस फाण्ट वा हिम से वातपित्तज्वर, दाह, प्यास, मूर्च्छा, मतिभ्रम, रक्तपित्त और मद ये सब निस्संदेह दूर हों।

प्यास पर आम्रादिफाण्ट

आम, जामुन की कोंपल, वट, डिंगसा और जटा, खस इनका

फाण्ट कर पिये तो ज्वर, प्यास, छर्दि, अतीसार और मूर्च्छा ये सब रोग निस्सन्देह नष्ट हों।

पित्ततृषा पर मधूकफाण्ट

महुआ, चन्दन, खंभारी, खस, धनियाँ, सुगन्धबाला, दाख इनका फाण्ट शक्कर मिलाकर पिये तो तृष्णा, दाह, मूर्च्छा और भ्रम ये सब जायँ।

मन्थफाण्ट भेद

द्रव्य का चौगुना जल मिट्टी के बरतन में डाल मथे। उस पानी को छानकर ८ तोले पिये। खजूर, अनार, दाख, तिन्तड़ी, इमली, आँवला और फालसे इनका मन्थ सकल मदनाशक है।

उबकाई पर मसूर आदि मन्थ

मसूरिका, सतूश, शहद और दाड़िमरस इनका मन्थ पिलावे तो सन्निपातजनित छर्दि जाय।

तृष्णा पर यवमन्थ

यव का सत्तू ठण्ढे पानी में मथकर पिये तो तृष्णा, दाह और रक्तपित्त इन सबको दूर करता है परन्तु बहुत गाढ़ा न हो।

हिम

चार तोले भर कुटी हुई द्रव्य २४ तोले जल में सायंकाल भिगोकर रख दे। फिर प्रातःकाल निचोड़कर छान ले, इसको हिम कहते हैं। कोई कोई शीतकषाय भी कहते हैं। इसकी मात्रा भी फाण्ट की तरह आठ तोले है। यह सर्वत्र निश्चय जानो।

रक्तपित्त पर आम्रादि हिम

आम्र, जम्बू, अर्जुन इनको कूटकर पानी में भिगोवें। फिर उसका हिम प्रातःकाल शहद मिलाकर पीवे तो रक्तपित्त जाय।

तृष्णा पर मरीच्यादि हिम

मिरच, मुलेठी, कठगूलर की कोंपल और नील कमल इनका हिम कर पीने से तृष्णा, छर्दि आदि रोग नाश होते हैं।

पित्त पर नीलकमलादि हिम

नीलकमल, बरियारा, दाख, महुआ, मुलेठी, खस, पद्माक,

खंभारीफल, फालसा इनका शीतकषाय पीने से हिमवात, पित्त, ज्वर-प्रलाप, भ्रम, छर्दि, मोह और तन्द्रा ये सब रोग दूर हों।

जीर्णज्वर पर गुडूच्यादि हिम

गुर्च का हिम पीने से जीर्णज्वर; वासा का हिम पीने से पित्तज्वर और कासरक्त और धनियाँ का हिम शक्कर डालकर पीने से अन्तर्दाह, तृष्णा और मूत्रावरोधरोग नाश होते हैं।

रक्तपित्त पर धनियाँ हिम

धनियाँ, आँवला, रूसा, दाख, पित्तपापड़ा इनके हिम से रक्तपित्त-ज्वर, दाह, तृषा, कण्ठशोष रोग नाश होते हैं।

कल्क

सूखी द्रव्य को जल में पीसे, ओदी व निर्जल रहे उसको कल्क और प्रक्षेप कहते हैं। इसकी मात्रा दश माशे है। कल्क में मधु, घृत और तैल मात्रा से दूना दे। मिश्री और गुड़ मात्रा के समान और ओदी पतली चौगुनी दे।

पाण्डु पर वर्धमानपीपल

पीपल तीन अथवा पाँच या सात बढ़ावे। जितने पीपल से आरम्भ करे उतने प्रतिदिन दश दिन तक बढ़ावे, फिर उतने ही प्रतिदिन घटावे। इस प्रकार बीसवें दिन प्रथम दिन की मात्रा पूरी करे। इस वर्धमानपीपल के सेवन से पाण्डु, कास, श्वास, अरुचि, उदर-विकार, क्षयी, कफ, वात और छाती जकड़ना ये सब दूर हों। जो पानी या दूध के साथ पिया चाहे तो तीन दिन तक दो अथवा तीन तोले दूध लेना फिर कल्क से चोगुना लेना।

घाव पर निम्बकल्क

नींबपत्र की लुगदी घाव पर लगावे, उससे घाव साफ़ हो पूरता है। जिस घाव पर लुगदी नहीं लग सकती उसे नासूर कहते हैं। इसकी विधि दूसरी है। नीम की पत्ती खाने से छर्दि, सर्व कुष्ठ, पित्त ये क्रम-क्रम से अच्छे हों।

गृध्रसी पर बकायनकल्क

बकायन की जड़ की छाल का कल्क गृध्रसी वायु को दूर करता

है। एक लहसुन की पिट्ठी में तिल का तैल मिलाकर खाय तो तीव्र-वात और विषमज्वर नाश हों।

वात रोग पर दूसरा कल्क

पक्के लहसुन के जवा छील भीतर के अंकुर रात्रि भर दही में रक्खे तो उसकी दुर्गन्ध जाय। फिर दही से निकाल पीसकर इस चूर्ण का पञ्चमांश जो आगे कहते हैं, वह डाले। काला नमक, अजवाइन, भूनी हींग, सैन्धव, त्रिकुटा और जीरा को बराबर कूट ले। यह चूर्ण और लहसुन की लुगदी मिलाकर दश माशे खाय तो अग्नि प्रबल हो। रोगी की शक्ति विचार ऋतु के अनुसार मात्रा दे। अनोपान एरण्ड की जड़ की छाल का काढ़ा दे। सर्वाङ्ग और एकान्तवात, मृगी, उन्माद, गठिया, गृध्रसी, छाती, पीठ, कमर, पसुली, उदरपीड़ा और कृमिदोष नाश हों। रोगी को उचित है कि लघुभोजन, घामत्याग, अक्रोध और जल थोड़ा पिये। दूध और गुड़ का त्याग करे। इस ओषध का भोगी पथ्य शराब, मांस और खटाई खाय।

ऊरुस्तम्भ पर पिप्पल्यादिकल्क

पीपल, पीपलामूल और भिलावें की लुगदी शहद मिलाकर दे तो गठिया निस्सन्देह दूर हो।

परिणामशूल पर विष्णुक्रान्ताकल्क

विष्क्रान्ता की जड़ का कल्क, मिश्री, शहद और घीयुक्त सात दिन पिये तो परिणामशूल जाय। अथवा सोंठि, गुड़, तिल दूध में पीस सेवन करे तो इस कल्क से परिणामशूल मिटे और आमवात जाय।

रक्तार्श पर चिर्चिरादिकल्क

चिर्चिरा का चावल चावल के धोवन में पीसकर पीने से रक्तार्श दूर हो।

रक्तातीसार पर बेरकल्क

बेर के मूल की छाल और तिल का कल्क शहद और दूध में पीने से रक्तातीसार निश्चय नाश हो।

रक्तक्षयी पर लाहीकल्क

एक तोला लाही पेठा के रस में पीसकर पीने से रक्तक्षयी, छाती-क्षत और क्षय निस्सन्देह जायँ।

रक्तप्रदर पर चौराईकल्क

चौराई की जड़ चावल के धोवन में पीसकर शहद और रसौंत के साथ पीवे तो रक्तप्रदर दूर हो।

अतीसार पर अङ्कोलकल्क

अङ्कोल की मूल की छाल को चावल के धोवन में पीसकर शहद डालकर पीवे तो अतीसार और विष दूर हो।

विष पर खिखसाकल्क

खिखसा अथवा सिरसमूल या बेरमूल का कल्क घी के साथ खाने से विष नाश हो।

दीपनपाचन पर हरीतकीकल्क

हड़, सोंठि, सैन्धव और पीपल का कल्क तीनों दोषों को निस्संदेह हरता है। अथवा हड़, सोंठि और सैन्धव का कल्क दीपन और पाचन है।

कृमि पर निशोतकल्क

निशोत, पलाश, बाँदा, खुरासानी अजवाइन, कबीला, बायविड़ंग इन सबको समान ले मट्ठे के साथ खाने से कृमिरोग बहुत शीघ्र दूर होता है। नैनू, मिश्री, नागकेशर के कल्क से रक्तार्श नाश होता है तथा मसूर का काढ़ा हुआ यूष चेलफल इनका कल्क उस यूष के साथ पीने से संग्रहणी नाश हो एवं भटकटैयाफल का कल्क मट्ठे के साथ पीने से संग्रहणी नाश होती है।

इति सप्तविंशतिस्तरङ्गः ॥ २७ ॥

—:o:—

नवदुर्गाचूर्ण

अनारदाना ʃ।, जीरा स्याह १५ माशे, जीरा सफेद ३० माशे, सोंठि १५ माशे, तन्तरीक १५ माशे, हड़ का बकला १५ माशे, छोटी हड़ १५ माशे, निशोथ १५ माशे, लहोरी नोन ३ माशे इन सब औषधों को कूटपीस और कपड़छान कर चूर्ण बनाले। फिर नित्य भोजन के पश्चात् तीन माशे खाय तो मन्दाग्नि जाय और भूख बढ़े।

दूसरा चूर्ण

पोस्त, हड़, सौंफ और सोंठि को बराबर ले। सौंफ और हड़ को

घृत में भून ले, फिर उन दोनों को भी मिलाकर दो पैसाभर मिश्री मिला ले। दो पैसा भर नित्य पाँच दिन तक ठण्डे पानी से खाने से आँव, लोहू और मरोड़ा अच्छे हों।

तीसरा चूर्ण

हड़, आँवला, चीता, पीपल, सेंधानोन इन पाँचों औषधों को बराबर ले कूट पीसकर चूर्ण बनावे। फंकी गर्म पानी से ले तो सब उदरविकारों को दूर करे और पाचन होकर भूख बढ़ावे।

बाई का चूर्ण

सोंठि, पीपल, सनाइ, हड़, बहेड़ा, आँवला, चीता, सेंधानमक, साँभर नमक, खारीनमक, कालीमिरच, निशोत, पोदीना, सौंफ़, अनारदाना, अजवाइन, अजमोद, मेथी, तेलिया सुहागा ये सब दवाइयाँ छह माशे और हींग १ माशा ले। फिर सबको कूटपीस नींबू और अदरक के रस में गोली बनावे। एक तथा दो नित्य खाय तो वायु के सब विकारों को दूर करे।

दूसरा चूर्ण

सोंठि २ माशे, सुहागा तेलिया २ माशे, पीपल २ माशे, काली-मिरच २ माशे, हड़ ३ माशे, पाँचों नोन ५ तोले, अजवाइन ६ माशे इन सब औषधों को ले कूटपीस सहँजने के रस में गोली बाँधे। एक तथा दो नित्य खाय तो चौंसठ वायु दूर हों।

अग्निदीपक चूर्ण

पारा ४ माशे, सुहागा ८ माशे, गन्धक ४ माशे, मीठा, तेलिया १२ माशे, शंख १६ माशे, कौड़ी जर्द जली हुई १६ माशे, सोंठि ४ माशे, कालीमिरच ४ माशे इन सबकी नींबू के रस में सात पुट देकर मूँग बराबर गोली बाँधे। फिर नित्य खावे तो अजीर्ण और मन्दाग्नि को दूर कर क्षुधा को बढ़ावे तथा अर्धांगशूल और विसूचिका को दूर करे।

नागरादि चूर्ण

सोंठि, मोथा, अजवाइन, जावित्री, तज, पत्रज, श्वेतजीरा, काला-जीरा, पीपल, कालीमिरच, जायफल, आँवला, चीता, लवङ्ग इन सब

औषधों को बराबर ले कूट, पीस, छानकर चूण बनावे। नित्य खाय तो अनेक गुण करे।

अमृतचूर्ण

हड़, बहेड़ा, आँवला, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, लवंग, जावित्री, बायबिड़ंग, जायफल, सफ़ेदजीरा, धनियाँ, अजवाइन, अनारदाना, पाँचों नोन इन सब औषधों को बराबर ले कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे। नित्य खाय तो बहुत गुण करे।

ज्वर का चूर्ण

आँवला, चीता, हड़, पीपल और सेंधानमक को बराबर ले कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे। गर्म पानी से फंकी ले तो सब प्रकार के ज्वर जायँ।

आमवात और शूल का चूर्ण

सोंठि, हड़, बायबिड़ङ्ग, सेंधानमक, पीपल इन सबको कूट, पीस, छानकर चूर्ण बनावे। फिर ४ माशे प्रमाण खाय तो तीन दिन में आमवात जाय।

हिंग्वष्टक चूर्ण

हींग १ तोला, अजमोद ३ तोले, जीरा ३ तोले, सोंठि ३ तोले, कालीमिरच ३ तोले, पीपल ३ तोले, सेंधानोन १ तोला, साँभर नोन १ तोला इन सब औषधों को कूट, पीस, छान चूण बनावे। फिर भोजन के ग्रास में घृत और चावल के साथ खाय तो शूल, अर्धाङ्ग और अजीर्ण-रोग जायँ और भूख बढ़े।

वायु का चूर्ण

सोंठि, मिरच, पीपल, हड़, सहँजने के बीज, लवङ्ग इन सब औषधों को एकत्रकर सहँजने के रस में बेर प्रमाण गोली बाँधे। नित्य खाय तो चौंसठ वायु और बहत्तर शूलों को दूर करे।

वायु का दूसरा चूर्ण

पीपल, सौंफ, लवङ्ग, लोटकसज्जी, सोंठि, सेंधानोन इन सब औषधों को तोले-तोले भर लेकर, कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे। फिर नित्य खाय तो वायु दूर हो।

वायु का तीसरा चूर्ण

लवङ्ग, इलायची, तज, पत्रज, तगर, कङ्कोल, कालाअगर, नागकेसर, जायफल, सोंठि, जावित्री, सफ़ेदजीरा, स्याहजीरा, सौंफ, पीपल, मिरच, पुष्करमूल, नरकचूर, हड़, बहेड़ा, आँवला, चीता, तालीस, देवदारु, धनियाँ, अजवाइन, मुलहठी, वंशलोचन, अजमोद, काकड़ासिङ्गी, पीपलामूल, भूनी हींग, मोथा, अतीस, शतावरि इन सब औषधों को तोले तोले भर ले पीस, छानकर चूर्ण बनावे। उसमें बराबर की मिश्री मिलाकर प्रातःकाल नित्य खाय तो वायु को दूर करे तथा और भी अनेक गुण करे।

सुदर्शनचूर्ण

हड़, बहेड़ा, आँवला, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, हल्दी, दारुहल्दी, गिलोय, कूठ, मोथा, जवासा, काकड़ासिङ्गी, कटहरी की जड़, पीपलामूल, कचूर, बच, पुष्करमूल, मुलहठी, कुड़ा की छाल, सौंफ़, कमलगट्टा, इन्द्रयव, देवदारु, मंजीठ, पद्माक, खस, तज, गोखुरू, सालबमिश्री, अजवाइन, अतीस, बेलगिरी, पत्रज, चीता इन सब औषधों को तोले तोले भर ले पीस, छानकर चूर्ण बनावे। फिर गर्म जल से फंकी ले तो सन्निपात, अजीर्ण, शूलविरेचिका और सर्वज्वर जायँ।

लवङ्गादि चूर्ण

लवङ्ग, अगर, कपूर, कमलगट्टा, सफ़ेदचन्दन, स्याहजीरा, सफेद जीरा, खस, इलायची, मोथा, जटामांसी, तगर, वंशलोचन, पीपल, कङ्कोल, कालीमिरच, जायफल, तज, नागकेसर इन सब औषधों को तोले तोले भर ले कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे और आधी मिश्री मिलावे। फिर तीन माशे नित्य फंकी करे तो मन्दाग्नि, त्रयोदशवायु, पित्तकफ, कण्ठरोग, कास, श्वास, अतीसार, गुल्म, प्रमेह, संग्रहणी रोग दूर हों।

भास्कर चूर्ण

पीपल, पीपलामूल, साँभरनोन, सेंधानोन, कालानोन, कचनोन, मनियारीनोन, सफ़ेदजीरा, स्याहजीरा, बायबिड़ङ्ग, पत्रज, तालीस, चव्य, कालीमिरच, सौंफ़, तज, इलायची, अनारदाना इन सब

ओषधों को ले कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे। फिर नित्य खाय तो उदर के सब विकारों को दूर करे और गर्म जल से फाँके तो अजीर्ण और सन्निपात जायँ।

चन्दनादि चूर्ण

चन्दन, लवङ्ग, कपूर, अगर, कमलगट्टा, सफेदजीरा, स्याहजीरा, अनारदाना, कालानमक, इन सब ओषधों को तोले तोले भर ले कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे। फिर नित्य खाय तो उदर के सर्व विकारों को दूर करे।

गंगाधरचूर्ण

मोथा, सोंठि, इन्द्रयव, धवई के फूल, लोध, मोचरस, पेठे के बीज, राल, लजालू की जड़, अतीस, पोस्त इन सब ओषधों को तोले तोले भर ले कूट, पीस, छान चूर्ण बनावे। फिर चावल के धोवन के साथ फंकी करे तो पेट के रोग, अतीसार और संग्रहणी दूर हों।

नागकेसरादि चूर्ण

नागकेसर, चन्दन, लोध, खस, बेलगिरी, मोथा, इन्द्रयव, सोंठि, अतीस, धाय के फूल, सौंफ, तीन वर्ष की आम की पुरानी गुठली, जामुन की गुठली, सोंचरनोन, कमलगट्टा, मञ्जीठ, छोटी इलायची, अनारदाना, तज इन सब ओषधों को तोले तोले भर ले कूट, पीस, छान चूर्ण करके मिश्री मिलावे। फिर चावल के धोवन से फाँके तो संग्रहणी, अर्श, बवासीर अतीसाररोग नाश हों।

दूसरा चूर्ण

चीता, हड़, बहेड़ा, आँवला, बायबिड़ंग, पोलादसार इन सब ओषधों को तोले तोले भर ले कूट, पीस, छान चूर्ण करे। फिर ३ माशे शहद में ३ माशे चूर्ण मिलाकर खावे तो भगन्दर, बवासीर, मन्दाग्नि, अरुचि और अनेक रोगों को दूर करे।

पुरुष चूर्ण

अकरकरा, सोंठि, कङ्कोल, केसर, पीपल, जायफल, लवङ्ग, चन्दन इन सब ओषधों को तोले तोले और अफीम माशे भर या ६ रत्ती ले

चूर्ण कर शहद से सन्ध्यासमय खाय और रात्रि को स्त्रीसेवन करे तो अतिपुष्ट बंधेज हो।

कर्पूरादि चूर्ण

कपूर, तज, कङ्कोल, जावित्री, लवङ्ग, नागकेसर, सोंठि, कालीमिरच, पीपल इन सब ओषधों को तोले तोले भर ले पीस, कूट, छान, चूर्ण बनावे और मिश्री बराबर की मिलावे। फिर तोला भर नित्य खाय तो श्वास, कास, गुल्म और छर्दि इन सब रोगों को नाश करे।

तालीसादि चूर्ण

तालीस, सोंठि, पीपल, कालीमिरच, बंशलोचन, छोटी इलायची, तज और खस को तोले तोले भर ले चूर्ण बनावे और बराबर की मिश्री मिलावे। फिर जल से फाँके तो कास, श्वास, तप, संग्रहणी और अतीसाररोग नाश हों।

अजवायनादि चूर्ण

अजवायन, तन्तरीक, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, अमलवेत, अनारदाना, सोंचरनोन, जीरा और बायबिड़ंग को तोले तोले भर ले चूर्ण बनावे। फिर ३ माशे नित्य खाय तो जिह्वारोग, हृदयरोग, पार्श्वरोग, पसुली का शूल, कुष्ठ, कास, श्वास, संग्रहणी और रक्तविकार जायँ।

वायुखाण्डव चूर्ण

धमासा, जवाखार, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, पेठे के बीज, हड़, बहेड़ा, आँवला और लोध को तोले तोले भर ले चूर्ण बनावे और शहद से खाय तो समस्त कण्ठरोग जायँ।

एलादि चूर्ण

इलायची, लवङ्ग, नागकेसर, झड़बेरी की मींगी, धान की खील, तज, नागरमोथा, चन्दन, पीपल, भुनी हींग, गेरू, हड़, नारियल के जटाओं की राख, तुलसीपत्र इनको एक एक तोला ले चूर्ण बनाकर शहद से चाटे तो त्रिदोषीय छर्दि नष्ट हो।

सरस्वती चूर्ण

कूट, अजमोद, असगन्ध, सफेदजीरा, स्याहजीरा, सोंठि, पीपल,

कालीमिरच और हल्दी को एक एक तोला ले चूर्ण बनावे। शहद से चटावे तो बुद्धि निर्मल हो और विद्या आवे।

सिद्धार्थ चूर्ण

सफ़ेद सरसों, बच, भूनी हींग, करञ्ज के बीज, देवदारु, मंजीठ, हड़, बहेड़ा, आँवला, सफ़ेद चमेली की छाल, मालकाँगनी, तज, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, सिरस की छाल, हल्दी और दारुहल्दी को एक एक तोला ले चूर्ण बनाकर गोमूत्र से खाय तो सन्निपात और आठों ज्वर दूर हों।

पेट के दुःख का चूर्ण

पटोल, हल्दी, बायबिड़ंग, हड़, बहेड़ा, आँवला, कमलगट्टा, नील की और निशोत को एक एक तोला ले चूर्ण बनावे। दूध से फाँके तो पेट का दुःख दूर हो।

निम्बादिक चूर्ण

नींब की कोंपल, नींब की छाल, नींब के फूल, नींब की जड़ नींबकाठा, हड़, बहेड़ा, आँवला, सोंठि, कालीमिरच, पीपल, भारंगी, गोखुरू, पुष्करमूल, चीता, बिड़ंग, विदारीकन्द, सारकुश्ता, गिलोय का सत, हल्दी, दारुहल्दी, बावची, कूट और इन्द्रयव को तोले तोले भर ले विजयसार की ७ पुट देकर पुनः भाँगरा के रस की ७ पुट दे। फिर खाय तो रक्तपित्त, रक्तवायु, भगन्दर, नाड़ीव्रण, मुखरोगादि दूर हों।

भृङ्गादिक चूर्ण

त्रिफला ३ तोले और काकड़ासिंगी, निगन्ध, खरैटी की जड़, भारंगी, पुष्करमूल, एक एक तोला तथा ५ तोले नमक का चूर्ण बनाकर गरम पानी से फाँके तो हड़फूटन, पीनस, नजला, वायु और शरीर के दुःखों को दूर करे।

पथरीमूत्रकृच्छ्र का चूर्ण

बड़ की जटा, पीपल की जटा (जड़) खस, चीता, पुराने आम की गुठली, जामुन की गुठली, चिरौंजी, आलूबुखारा, धव का गोंद, महुआ, मुलहठी, लोध, बरने की छाल, नींब की कोंपल, पँवाड़ की जड़, हड़, इन्द्रयव और भिलावाँ का चूर्ण बनाकर शहद के साथ खाय तो मूत्रकृच्छ्र और पथरी जाय।

अग्निमुख चूर्ण

चीता, पाढ़ा, लोटकसज्जी, जवाखार, करञ्ज के बीज, समुद्रफेन, इलायची, पद्माक, भारंगी, बिड़ंग, पुष्करमूल, नरकचूर, दारुहल्दी, निशोत, मोथा, बच, इन्द्रयव, हाऊबेर, अनारदाना, त्रिकुटा, भिलावाँ, अजमोद, अजवाइन, देवदारु, अतीस, हड़, तिल का खार, सहँजने का खार, बावची का खार, ढाक का खार और कीटीकुश्ता (मंडूररस) को तोले तोले भर ले अदरक के रस में १२ पहर खरल करे। फिर दूध के साथ फाँके तो गुदा के सब रोग जायँ। दूध-भात का भोजन करे।

भगन्दरविजय चूर्ण

त्रिकुटा, बच, हींग, पाढ़ा, जवाखार, सज्जी, हल्दी, हड़, चिरायता, इन्द्रयव, चीता, गजपीपल, नमक, पीपलामूल, बिड़ंग, अजमोद, त्रिफला, सफ़ेद जीरा और स्याह जीरा को एक एक तोला ले चूर्ण बना ले। फिर गरम पानी के साथ खाय तो वायु, शोथ, अर्श, भगन्दर, हृदयशूल, पार्श्वशूल, अरुचि, प्लीह, प्रमेह, कमलवायु, पाण्डुरोग, आमवात, संग्रहणी और प्रसूति के रोग जायँ।

अतीसार का चूर्ण

समुद्रशोख, मायी, राल, माजू, पत्रज, जायफल, छोटी इलायची, सेलखड़ी और बेलगिरी को तोले तोले भर ले चूर्ण बनावे। फिर पानी से फाँके तो अतीसार जाय।

संग्रहणी और अतीसार का चूर्ण

कालीमिरच, पीपल, तमालपत्र, पीपलामूल, इलायची, दालचीनी, जायफल, नेत्रबाला, वंशलोचन, चन्दन इनको तोले तोले भर ले चूर्ण बना ले। फिर २ माशे नित्य की फंकी करे तो संग्रहणी, पुराना ज्वर और अतीसार दूर हों।

वायुशूल का चूर्ण

बड़ी हड़ का बक्कल, सोंठि, सनाय, गुजराती इलायची, निशोत, पुरानी सौंफ और स्याह नमक को पैसे पैसे भर ले। चूर्ण बनाकर गरम पानी से फंकी करे तो तत्काल वायुगोला जाय। पथ्य मूँग की दाल-भात या रोटी अथवा खिचड़ी खाय और चीजों से परहेज करे।

कालचूर्ण की विधि

सोंठि, पीपल, कालीमिरच, सफेदजीरा, स्याहजीरा, हींग, सेंधानमक, साँभरनमक, कचनमक सवा सवा सेर और अमचूर एक सेर तथा पावभर चूक एकत्र कर चूर्ण बना ले। इनके खाने से पाचनशक्ति बढ़ती है।

शीतज्वर का चूर्ण

पीपल, सोंठि, गिलोय, पीपलामूल इसका चूर्ण कर जल से फंकी करे तो शीतज्वर दूर हो।

तालीसादि चूर्ण

तालीस, तज, पत्रज, इलायची, नागकेसर, सोंठि, मिरच, पीपल, पीपलामूल, सारिवा के बीज, त्रिफला, जायफल, जावित्री, पुष्करमूल, चीते की छाल, दोनों अजवाइन, असगन्ध नागौरी, नागरमोथा, वंशलोचन, दोनों जीरे, कलौंजी, धनियाँ, काकड़ासिङ्गी, सार और वङ्ग आठ आठ माशे ले। इसमें ޲।॥ कच्ची खाँड़ मिलाई जाय। टकाभर की मात्रा खाने से ज्वर जाय, पित्त पचि जाय, भूख लगे, खाँसी जाय, बल बढ़े और पुष्टता हो।

तुम्बुरु आदि चूर्ण

तुम्बुरु, सोंचरनमक, सारिवा, अजमोद, जवाखार, पीपल, मिरच और बच को बारह बारह माशे लेकर चूर्ण बनावे। फिर अधेला भर गरम पानी के साथ खाय तो सात प्रकार के ज्वर दूर हों।

गुडूच्यादि चूर्ण

गिलोय, तेजबल, अतीस, मोथा, पीपल, काकड़ासिङ्गी का चूर्ण-मट्ठा के साथ ले तो ज्वर, खाँसी और अतीसार जायँ।

तालीसादि चूर्ण

तालीस, ब्रह्मदण्डी, मोचरस, सोंठि, वंशलोचन, गजपीपल, इलायची, तज टके टके भर ले चूर्ण कर ३२ टके भर खाँड़ मिलाकर अधेला भर खाय तो ज्वर, खाँसी, मस्तकशूल और अजीर्ण जायँ।

अतीसार पर चूर्ण

अतीस, गजपीपल, कुड़ा की छाल, जायफल, इलायची, मोचरस,

बेलगिरी, धाय के फूल, नागरमोथा, काकड़ासिंगी, सुगन्धबाला आठ आठ माशे ले कपड़छान कर पैसे भर शहद के साथ खाय तो अतीसार और शूल जाय। रक्तबन्द हो।

तेरहों सन्निपात पर सिद्धार्थ चूर्ण

सरसों, बच, कूट, पीपल, मिरच, सोंठि, कुटकी, कायफल, चीते की छाल, बायबिड़ंग, मंजीठ, जीरा, कलोंजी, अजवाइन, अजमोद, भारङ्गी, पाढ़ा, हींग, जायफल, पीपलामूल बीस बीस माशे ले कूट छानकर गोमूत्र से मर्दन करे तो १३ सन्निपात, शीत, उच्चाट, वायु, सर्दी और पसेव दूर हों।

आमातीसार पर चूर्ण

सेंधानोन, कालानोन, हींग, बच, हड़, अतीस इनको बराबर ले अधेला भर गरम पानी के साथ खाय तो अतीसार जाय।

द्वितीय चूर्ण

नागकेसर, तवाखीर, रक्तचन्दन, ये सब बराबर ले चूर्ण कर शीतल जल के साथ खाय तो अतीसार जाय।

सर्वरोग पर हिंग्वाष्टक चूर्ण

हींग, दोनों जीरे, कालीमिरच, सोंठि, पीपल, सेंधा नमक, गजपीपल, अजमोद ये सब बराबर ले अदरक के रस में गोली बाँधे या अदरक के रस से चूर्ण खाय तो सर्वरोग जायँ।

दूसरा हिंग्वाष्टक चूर्ण

हींग, सोंठि, मिरच, पीपल, पीपलामूल, त्रिफला, अजवाइन, अजमोद, खुरासानी अजवाइन, कायफल, बच, चीते की छाल, बायबिड़ंग, रेंडुका, पत्रज, पुष्करमूल, गजपीपल, सेंधानोन, कालानोन, सांभरनोन, सज्जी, जवाखार, अकरकरा, भुना सुहागा पैसे पैसे भर ले कपड़छान कर चूक की ३ पुट दे। मिट्टी के कोरे बरतन में रक्खे। तोला भर खाय तो वायुगोला, हिचकी, पेट का भारीपन, खाँसी कफ और ७ प्रकार के शूल जायँ।

सर्वरोग पर द्वितीय तालीसादि चूर्ण

तालीस, लवङ्ग, पत्रज, पीपल पुष्कर मूल, बायबिड़ंग, जायफल,

जावित्री, खैरसार, भारङ्गी, बच, दोनों जीरे, कायफल, कुचिला, गजपीपल, कलौंजी, असगन्ध, मिरच, अकरकरा, अजवाइन, अजमोद, खुरासानी अजवाइन, भूनी फिटकरी, सोंठि, चिरायता, हींग, कूट, त्रिफला, कुटकी, काकड़ासिंगी, हड़ छोटी बड़ी, बंग, अभ्रक, सार, सेंधानोन पैसे पैसे भर ले कपड़छान करे। फिर चार सेर दूध औटावे। जब दूध ॥१ सेर शेष रह जाय तब उसमें सब औषधें मिलाकर दो दो पैसे भर की गोलियाँ बाँधे। एक गोली प्रातःकाल खाय तो बल बढ़े, पुष्टता हो, पुरुषशक्ति अधिक हो। खटाई का परहेज करे।

सब प्रमेहों पर मिरचादिचूर्ण

मिरच, कङ्कोल, लवङ्ग, खस, रक्तचन्दन, कमलगट्टा, कलौंजी, अगर, नागकेसर, पीपल, सोंठि, सोंचर, सुगन्धबाला, चीनियाँकपूर, जायफल, वंशलोचन, छिकुरा की छाल, तज, पत्रज, केला की जड़, कौंच के बीज, असगन्ध, मोचरस, नागरमोथा, सिंघाड़ा, उड़द की धुली दाल, गंगेरन, अञ्जीर, दोनों सेमर का मूसरा, शतावरि, दोनों मूसली, निर्गुण्डी, मुण्डी और भाँगरा आठ आठ माशे ले अभ्रक ४० माशे, सार ४० माशे, बंग ४० माशे इनको कपड़छान करे। इसमें कच्ची खाँड़ ॥१ सेर मिलाई जाय। फिर २० माशे प्रातःकाल और संध्यासमय खाय तो सकल प्रमेह दूर हों, मूत्र का प्रवाह थँभे, दाह जाय, पुष्टता हो, खाँसी, शूल और वात जायँ। स्त्री खाय तो पीड़ा दूर हो। यह चूर्ण राजाओं के योग्य है।

पुष्टिकरण चूर्ण

मुलहठी, बिदारीकन्द, तज, लवङ्ग, गोखुरू, गिलोय, सफेद मूसली बराबर बराबर ले चूर्ण बनावे। धेला भर नित्य ॥॥ सेर दूध के साथ खाय तो पुरुष के सदा बल रहे।

मधुयष्टी चूर्ण

मुलहठी, गिलोय, त्रिफला, बिदारीकन्द, दोनों मूसली, नागकेसर, शतावरि बराबर बराबर ले कपड़छान कर चूर्ण बनावे घृत और शहद मिलाकर ४ माशे भर २५ दिन तक नित्य खाय तो वृद्धपुरुष भी सात स्त्री भोग करे।

प्रमेहनाशक चूर्ण

शंखाहूली, इलायची, शिलाजीत बराबर बराबर ले तथा तवाखीर और कच्ची खाँड़ दूनी ले। सबको मिलाकर चूर्ण बना ले और धेलाभर नित्य शीतल जल के साथ ले तो प्रमेह दूर हो।

खण्डादि चूर्ण

मिरच, लवङ्ग, दाख, बादाम, चिरौंजी, तज, पत्रज, इलायची, रक्तचन्दन, पीपल, दोनों जीरे, सोंठि, धनियाँ, पीपलामूल, कौंच के बीज, मोथा, वंशलोचन, कमलगट्टा, तवाखीर, दोनों मूसली, शतावरि पैसे पैसे भर और खाँड़ ॥ ले फिर कूट-पीस कपड़छान कर २५ दिन तक नित्य खाय तो सकल प्रमेह दूर हों और धातु बढ़े तथा पुष्टता हो।

असगन्धादि चूर्ण

असगन्ध, बिधारा, स्याह मूसली, सफ़ेद मूसली, तालमखाना, बिदारीकन्द, बीजबन्द, सेमर का मूसला, बड़ा गोखुरू टके टके भर ले चूर्ण बनावे। उसमें बंग ४० माशे, अभ्रक ४० माशे, सार ४० माशे, खाँड़ ३, शहद १, गौ का घी १ और दूध ये सब औषधें कपड़-छान कर दूध में खोवा करे। जब दो सेर रहे तब उतार सब औषधें मिलाकर दो पैसा भर की गोली बाँधे। एक गोली प्रभात समय खाय तो धातु की पुष्टता हो, देह में बल बढ़े और वातरोग दूर हो।

प्रसूतिका चूर्ण

देवदारु, अजमोद, बायबिड़ंग, सोंठि, चित्रक, मिरच, सेंधानोन, कालानोन, सौंफ, हल्दी पैसे पैसे भर ले छः पैसा भर पुराने गुड़ में धेला भर की गोली बाँधे। एक गोली दोनों समय खाय तो प्रसूतिका रोग जाय।

श्वेतकुष्ठ का चूर्ण

कठूमर और कठि अञ्जीर का बकला। भर, बकुची। भर इनको एकत्र कर चूर्ण करे। फिर पैसे पैसे भर नित्य दोनों समय पानी के साथ खाय तो श्वेतकुष्ठ जाय।

लाही चूर्ण

त्रिजात (तज, पत्रज, इलायची), त्र्योष (सोंठि, मिरच, पीपल),

त्रिफला (हड़, बहेड़ा, आँवला), पारा, गन्धक, अजमोद, सौंफ, बायबिड़ङ्ग, हल्दी, बेलगिरी, चीते की छाल, जीरा, लवङ्ग, धनियाँ, गजपीपल, मुलहठी, पाँचों नोन (सेंधा, काला, बिड़, समुद्र, गर), कञ्जा की मींगी, हींग, मोचसार ये सब सम भाग तथा सज्जी और जवाखार सब औषधों से चौथाई भाग ले। इन सब औषधों को कूटकर चूर्ण बनावे। रोगी को मठ्ठा के साथ दे तो शीघ्र ही संग्रहणीरोग दूर हो। यह सर्वरोगनाशक तथा अग्नि और कान्तिवर्द्धक है। यह प्रयोग बहुत अनुभूत है। इसको लाही नाम्नी किसी धाय ने बनाया है।

बृहन्निम्बादि चूर्ण

छं०—हिंगुवाछार वैर सिंधु सौवर्चलैं। कञ्ज गूदी मिलैं पीपरीमूल लैं ॥
चाब चीते बचा मिर्च जीरा गरैं। चेतकी सोंठि ह्रीबेरमोदा धरैं ॥
सटी पीपली धान्य लै पुष्करैं। अम्लबेतैं बिड़ंगैं समै लै धरैं ॥
चूर्ण सेवैं यथाशक्ति भाषैं गुनैं। अश्मरी अर्श प्लीहा सदा लै हनैं ॥
आम बंधैं विबंधैं औ मूलैं हरैं। पांडु गुल्मै हृदै रोग सोई जरैं ॥
बिरसता आननैं अग्निमंदैं महा। कासश्वासैं सहिक्का विनाशैं कहा ॥
दो०—भोजन प्रथम घीव से, सेवन करैं जो कोय।
वात गुल्महा क्षुधाकर, त्रिकुटादिक है सोय ॥

त्रिकुटादि चूर्ण

दो०—त्रिकुट हींग अजमोद लैं, पुनि जीरायुग लेइ।
सेंधव नोन मिलायकैं, चूरणसम करु सेइ ॥

रुचिक्यादि चूर्ण

चौ०—सोंचर सेंधव चित्रक लीजे। त्रिकुटचैल भारंगी दीजे ॥
शिवा और युग जीरा आने। बायबिड़ंग जवाइन जाने ॥
अजमोदायुत चूरण करे। मातुलुङ्ग अमलीरस परे ॥
तामें गुटिका लेय बनाय। अग्निमन्द अति देय नशाय ॥
सकल बदन की शूल नशावे। पचै अन्न अतिक्षुधा बढ़ावै ॥

शुण्ठ्यादि चूर्ण

छं०—शुण्ठी युग तीनि सुभाग धरैं। पीपल पुनि तामहँ चारि परैं ॥
अजमोद जवाइन भाग परैं। युग भाग सो सेंधव आनि ठरैं ॥
सब चूरण के सम डारि शिवा। शुण्ठ्यादिप्रसिद्ध सो नाम भवा ॥

लोलिंबसोराज विचारि कहै। मल तापप्रलाप को वेगि दहै ॥
उदरै पुनि शूल अनेक टरै। सब वातव्यथा अरु वात हरै ॥
निशिवासर भोजन चित्त बसै। नानाविधि भोजन दोष नसै ॥

बृहद्बड़वानल चूर्ण

दो०—शुण्ठी पीपल चीत लैं, पूतबिड़ंग मिलाय।
कंज वि गूदी हर्रई, सम शर्करा मिलाय ॥
अग्नि बढ़ावै क्षुधाकर, वातगुल्म सब जाय।
बड़वानल चूरण कहेउ, ग्रन्थन को मत पाय ॥

अमलवेत लवणभास्कर चूर्ण

स्याहजीरा, कालीमिरच, सोंठि, अनारदाना, लवङ्ग, मूली के बीज, चारों नमक (सेंधा, सोंचर, साँभर, समुद्र), पैसा पैसा भर, पीपल, पीपलामूल, पत्रज, नागकेसर, तालीस, सफ़ेद जीरा, इलायची, जवाखार, खुरासानी अजवाइन, कलौंजी दो-दो पैसा भर, त्रिफला ३ पैसा भर और दालचीनी ८ माशे अमलवेत की गिरी निकालकर उसमें उक्त औषधों को कूट-पीस कर भरे। उसको रीता न रक्खे। जबहीं रीता हो, उसमें निचोड़ता जाय। प्रातः घाम और रात्रि को छाया में सुखावे। नित्य ३ माशे खाय तो समग्र उदरविकार दूर हों, भूख बहुत लगे और अन्न पचे।

संचलक्रिया

सोंचर, सेंधा, साँभर नमक पाव पाव तथा आँवला और जंगरो नमक सेर भर इनको पीसकर पान और गोमूत्र के साथ हाँड़ी में भर चूल्हे पर चढ़ावे, नीचे अग्नि दे। शीतल हो तब हाँड़ी फोड़ फेंक दे, फिर उसे नित्य खाय तो रोग अवश्य ही जाय।

वायुशूल का चूर्ण

त्रिकुटा, अजमोद, सेंधा, स्याहजीरा, सफ़ेद जीरा, भुनी हींग, इनको एकत्र कर चूर्ण बनावे। फिर ४ माशे नित्य भोजन के पहिले ग्रास के साथ दोनों समय खाय और घृत खाय तो वायुशूल जाय।

सामुद्र चूर्ण

चारों नमक (सेंधा, सोंचर, समुद्र, खारी), अजमोद, जवाखार,

बायबिड़ंग, हड़, पुष्करमूल, पीपल, सोंठि, अजवाइन, निशोत बराबर-बराबर लेकर चूर्ण बनावे। चार माशे गरम पानी के साथ ले तो गुल्म-क्षयीं की आँटी, पवनबधवाई इनको दूर कर भूख बढ़ावे।

पाचक चूर्ण

त्रिफला, त्रिकुटा, बायबिड़ंग, लवङ्ग, पीपल, तज, सुहागा, शुभ्र फूला इतने नोन, तीनों शोरा, चित्रक इन सबको, समान लेकर चूर्ण बनावे। नित्य २ माशे भर खाय तो पाचक होकर भूख को बढ़ावे।

चित्रादि चूर्ण

खुरासानी अजवाइन, बिहारी हड़, सतुआ सोंठि, लवङ्ग, पीपल, मधुबहेड़ा, आँवला, मिर्च, सोंचर, सेंधा, जवाखार इन सबको नींबू के रस में तीन पुट दे। फिर छाया में सुखाकर बेर प्रमाण गोली बाँधकर खाय तो बहुत गुण करे।

कण्ठक चूर्ण

चौ०—मिर्च कुलिंजन सम करि राखै। खट्टा मिट्ठा जरा न चाखै॥
वर्ष एक जो साधै कोय। पिकसम कण्ठ ताहि कर होय॥

मन्दाग्निनाशक चूर्ण

चौ०—सेंधा सोंचर बायबिड़ंग। त्रिफला त्रिकुटा तुवर लवङ्ग॥
चित्रक हिंग अजवाइन मानि। जीरे अनारदाने आनि॥
इन औषध का चूरणकरी। तीन निम्बुपुट उसमें धरी॥
टंकदोय जब प्रातहि खाय। मन्द अग्नि तबही मिटि जाय॥

कण्डूनाशक चूर्ण

दो०—हल्द बावची निम्ब फल, अरु आँवलो मिलाय।
टंक दोय गोमूत्रसन, पीवत कण्डू जाय॥

प्लीहा को चूर्ण

सेंधा, सोंचर, जवाखार, हींग, हड़, पीपल, अजमोद, बायबिड़ंग, सज्जी इन सबको चार-चार माशे ले एकत्र कर चूर्ण बनावे। ७ माशे चूर्ण नित्य पाँच पैसा भर गो के घृत के साथ मिलाकर खाय तो प्लीहा-रोग जाय।

अग्निकर चूर्ण

कालीमिर्च, बड़ी इलायची एक एक पैसा भर और लवङ्ग चार पैसा

भर तथा मिश्री पाव भर को पीस ४ पैसे भर मीठे चूक में मिलावे, फिर इसे करव में मले और ६ माशे भर खूराक खाय तो गर्मी, चिनग, ज्वर, जर्दीरोग जायँ और भूख बहुत लगे।

अफरे का चूर्ण

सोंठि का सत और पीपल १ पैसाभर, अजमोद १२ माशे, अजवाइन ४ माशे, सेंधा ८ माशे, हड़ें १४ सबको अलग अलग पीसकर रक्खे। प्रातःकाल ताजे पानी से पहिले हड़ें और सेंधा नमक मिलाकर खाय। तत्पश्चात् सबको मिलाकर खाय। यदि गुण करे तो और अधिक खाय तथा सन्ध्या समय खिचड़ी खाय तो अफरा जाय।

हड़क्रिया

हींग ८ माशे, सोंचर ८० माशे, सेंधा ६४ माशे, साँभर ४८ माशे ये चारों पानी में मिलाकर पहिले तैयार करे। त्रिकुटा सर्व मिलाकर पानी में डाले। उसका मुँह बाँध चार दिन तक धूप में सुखावे। फिर पाव भर आँवला डाले। फिर तीसरे दिन चूक डाले। चूक न हो तो नींबू का रस डाले। सबको हड़ों समेत बाँध ले। हड़ों को जितने पानी में डूब जायँ छोड़ दे तो हड़ें बनें।

अपूर्व चूर्ण

त्रिफला, त्रिकुटा, हींग, सुहागा, सेंधा, सोंचर, लवङ्ग, चीता सबको बराबर ले हींग और सुहागे को भून ले। फिर सबको एकत्र कर सहँजने के रस में चने प्रमाण गोली बाँधे। जब चाहे खाय। यह क्षुधा बढ़ाता और अन्न पचाता है।

ज्वर पर पीपल चूर्ण

पीपल को कूट, पीसकर शहद के साथ चाटे तो ज्वर, कास, श्वास, हिचकी, कण्ठरुज, पिलही आदि रोग जायँ।

प्रमेह पर त्रिफला चूर्ण

हड़ १ भाग, बहेड़ा २ भाग, आँवला ४ भाग इन सबका चूर्ण प्रमेह, शोथ और विषमज्वर आदि को नाशता है। दीपन, कफपित्त-नाशन तथा कुष्ठहरण रसायन है। यही त्रिफला, शहद और घृतयुक्त खाने से नेत्र रोगों को नाशता है।

त्रिकुटाचूर्ण

पीपल, मिरच, सोंठि इनको ऊषण और त्रिकुटा भी कहते हैं। इसका चूर्ण दीपन है। कफ, कुष्ठ, पीनस, आम, अरुचि, प्रमेह, गुल्म और कण्ठरोग को दूर करता है।

कफादि पर पञ्चकोलचूर्ण

पीपल, चाब, सोंठि, पीपलामूल, चीता इनको पञ्चकोल कहते हैं, इसका चूर्ण खाने से पाचन और दीपन होता है तथा आनाह, पिलही, गुल्मशूल, कफ और उदररोग नाशक है।

त्रिगन्धचूर्ण

पत्रज, तज, इलायची इनको त्रिगन्ध कहते हैं। इसका चूर्ण रूखा और उष्ण है। यह चूर्ण कुक्षिपित्तकारक है; कान्ति और रुचिकर्ता तीक्ष्ण है तथा विष और कफनाशक है।

जीवनाय गण

काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, जीवन्ती, दूधिया, लता की छीमी (जिसकी तरकारी होती है), मुलहठी, मूँगफली, उर्दफली इनका चूर्ण स्थितिकारक, भारी, दुग्ध-वर्धक, धातुपोषक और धातुशोधक है। स्निग्ध, ठण्ढी, तृष्णा, रक्त-पित्त, क्षयी, शोष, ज्वर, दाह, वायु इन सबको हरता है।

विड्मूत्र पर लवणपञ्चक चूर्ण

सेंधानोन, कालानोन, बिड़नोन, खारीनोन, गड़नोन, साँभरनोन ये पाँच क्रम से जानो। इनमें सेंधा मुख्य है। जहाँ किसी नोन का नाम न लिखा हो, वहाँ सेंधानमक लेना चाहिए। इनके चूर्ण का पाक मधुर है। मल-मूत्र पकाकर गिरता है। चिकना, वशकर्ता, बलहर्ता, धातु को गर्मकर्ता, दीपन, तीक्ष्ण, पित्त को बढ़ाता है और गुल्मादिक को नाश करता है। दो खार हैं—सज्जी और जवाखार ये दोनों अग्नि-समान दीपक है।

वृद्धसुदर्शनचूर्ण

त्रिफला, हल्दी, दोनों भटकटैया, कचूर, त्रिकुटा, पीपलामूल, मुर्रा, गुर्च, जवासा, कुटकी, पित्तपापड़ा, मोथा, त्रायमाण, नेत्रबाला,

नींब की छाल, पुष्करमूल, मुलहठी, कुरैया, अजवाइन, इन्द्रयव, भारङ्गी, सहँजने का बिया, भुनी फिटकरी, बच, तज, पद्माक, खस, श्वेतचन्दन, अतीस, बरियारा, बनउर्दी, बनमूँग, बायबिड़ंग, तगर, चीता, देवदारु, चाब, पटोल, जीवन्ती, ऋषभक, लवङ्ग, वंशलोचन, कमलपत्र, काकोली, तेजपात, जावित्री तालीसपत्र इन सब ओषधियों को समान ले चूर्ण करे। फिर उसमें सब चूर्ण का आधा चिरायता डाले। तदनन्तर इस वृद्धसुदर्शनचूर्ण के खाने से त्रिदोष के सर्वज्वर नाश होते हैं। यह एकाहिक, द्वन्द्वज, त्रिदोष, मानस आदि सर्व ज्वरों को दूर करता है तथा शीतज्वर, जूड़ी, अन्तरिया, तृतीयक, चातुर्थिक, मोह, तन्द्रा, भ्रम, तृषा, कास, पाण्डु, हृदयरोग और रीढ़-पीड़ा, कटि, पाँव, जाँघ, पसुली इन अङ्गों की पीड़ा को नाश करता है। जैसे सुदर्शनचक्र दैत्यों को नाश करता है, उसी प्रकार वृद्धदर्शनचूर्ण भी सर्वज्वरों को नाश करता है।

कासश्वासज्वर पर त्रिफलादिचूर्ण

त्रिफला और पीपल दोनों का चूर्ण बनाकर शहद के साथ चाटे तो कासश्वासज्वर को नाश करे अग्नि को बढ़ावे।

कफज्वर पर कायफलादि चूर्ण

कायफल, मोथा, कुटकी, कचूर, काकड़ासिंगी, पुष्करमूल, इन्द्रायण इनका चूर्ण बनाकर शहद और अदरक के रस के साथ चाटे तो कण्ठ शुद्ध हो। ज्वर, कास, श्वास, अरुचि, ताप, शूल, छर्दि और क्षयो को दूर करे।

बालक की खाँसी और ज्वर पर काकड़ासिंगी आदि चूर्ण

काकड़ासिंगी, अतीस और पीपल को कूट पीस छान मधु से चटावे तो बालक की खाँसी, ज्वर और छर्दि दूर हो।

आमातीसार पर शुण्ठ्यादि चूर्ण

सोंठि, अतीस, हींग, मोथा, कुरैया और चीता का चूर्ण बनाकर गरम पानी के साथ खाने से आमातीसार दूर हो।

आमवात पर हरीतक्यादि चूर्ण

हरीतकी, सेंधानोन, कालानोन बच और हींग का चूर्ण बनाकर

ठण्ढे पानी के साथ तो आमातीसार जाय। यह चूर्ण ग्राही और अबल अग्नि को दीपन करता है।

सर्वातीसार पर लघुगंगाधर चूर्ण

मोथा, इन्द्रयव, बेल, लोध, मोचरस और धवफूल का चूर्ण बनाकर मट्ठा से गुड़ डालकर ले तो समस्त अतीसारप्रवाह बन्द हों। यह चूर्ण परमग्राही है।

अतीसार पर अन्य वृद्धगंगाधर चूर्ण

मोथा, सोंठि, कुरैया, धवफूल, सुगन्धबाला, बेल, मोचरस, पाढ़ा, इन्द्रयव, मधुकटैया, आम की बिजली, अतीस, लजालू का चूर्ण बनाकर शहद और चावल के धोवनसंयुक्त ले तो प्रवाहिक और सब अतीसार ग्रहणी जल्दी आराम हो। यह चूर्ण सरित प्रवाह को रोक सकता है। मट्ठा, मिरचचूर्ण चीता, कालानोन संगोपने से ग्रहणी नाश हो तथा उदररोग, प्लीहा, मन्दाग्नि, गुल्म, अर्श इन सब रोगों को अच्छा करता है।

ग्रहणी पर कपित्थाष्टक चूर्ण

पक्का कैथा आठ भाग, खाड़ छः भाग, अनार, इमली, बेल, धवफूल, अजमोद, पीपल तीन-तीन भाग, मिरच, श्वेत जीरा, धनियाँ, पीपलामूल, सुगन्धबाला, अजवाइन, तज, पत्रज, इलायची, नागकेसर, चीता, सोंठि एक-एक भाग लेकर महीन चूर्ण बना ले। इस कपित्थाष्टक चूर्ण के खाने से गले के रोग, अतीसार, क्षयी, गुल्म, ग्रहणी आदि रोग अच्छे हों।

ग्रहणी पर दाड़िमाष्टक चूर्ण

अनार ८ रुपये भर, शक्कर ३२ रुपये भर, त्रिकुटा १२ रुपये भर और तज, पत्रज, इलायची ४ रुपये भर मिलाकर चूर्ण बनावे। इसके खाने से रोचन, दीपन, कण्ठशुद्ध और ज्वर नाश होता है। यह चूर्ण ग्राही है।

अतीसार पर वृद्धदाड़िमाष्टक चूर्ण

पीपल, पीपलामूल, अजवाइन, धनियाँ, श्वेत जीरा, सोंठि चार-चार तोले और अनार ३२ तोले ले। पत्रज, एला, नागकेसर पाँच-पाँच माशे और वंशलोचन दश माशे ले। यह दाड़िमाष्टक चूर्ण अतीसार,

गुल्म, संग्रहणी, जलाग्रह, मन्दाग्नि और पीनस रोगों का नाशक है।

सुकुमार लवंगादि चूर्ण

लवङ्ग, शुद्ध कपूर, इलायची, नागकेसर, जायफल, खस, सोंठि, कालाजीरा, कालाअगर, वंशलोचन, जटामांसी, नीलकमल, पीपल, चन्दन, तगर, सुगन्धवाला और कंकोल को पीसकर और इसमें सब औषधों की आधी मिश्री मिलाकर चूर्ण तैयार करे। इसके खाने से रोचन और तृप्ति होती है। यह धातुपुष्टकारक, त्रिदोषहारी और बलदायक है। कण्ठ, हृदय, कास, हिचकी, पीनस, क्षयी, तमक श्वास, अतीसार, उरःक्षत, प्रमेह, अरुचि, गुल्म और ग्रहणी को दूर करनेवाला है।

जातीफलादि चूर्ण

जायफल, लवङ्ग, इलायची, तज, पत्रज, नागकेसर, कपूर, चन्दन, तिल, वंशलोचन, तगर, आँवला, तालीसपत्र, पीपल, हड़, चीता, कालाजीरा, सोंठि, बिड़ंग और मिरच, इन सबके समान मोथा लेना चाहिए। फिर इनका चूर्ण बनाकर उसमें चूर्ण के बराबर खाँड़ मिलावे। तोला भर खाने से ग्रहणी, कास, श्वास, अरुचि, क्षयी, वात, नाक टपकना और कफरोग शीघ्र नाश होते हैं।

अरुचि पर महाखाण्डव चूर्ण

मिरच, नागकेसर, तालीसपत्र, पाँचों नमक समान भाग, ग्रन्थि, चित्रक, तज, पीपल, इमली, जीरा दो-दो भाग और धनियाँ, अमलबेत, सोंठि, बड़ी इलायची, बेर, अजमोद, मोथी तीन-तीन भाग ले। इन सब औषधों की चौथाई अनार ले और आधी मिश्री मिलाकर खाय तो रोचन दीपन करे। यह हृदय को बलप्रद है। अतीसार, हृदयरोग, कण्ठजलन, मुखरोग, शीतरस, पेट फूलना, अर्श, गुल्म, कृमि, छर्दि पञ्चविध और सब श्वासों को नाश करे।

उदररोग पर नारायण चूर्ण

चीता, त्रिफला, सोंठि, पीपल, मिरच, जीरा, हड़, बेर, बच, अजवाइन, ग्रन्थि, सौंफ, असगन्ध, अजमोद, कचूर, धनियाँ, बिड़ंग, कालाजीरा, चक, पुष्करमूल, दोनों खार, पाँचों नमक समान भाग, इन्द्रायण

दो-दो भाग; निशोत और जमालगोटा तीन-तीन भाग तथा पीतपुष्प और सेहुँड़-मूल चार भाग ले। फिर इनका चूर्ण बनावे। कठिन कोढ़ रोगी को प्रथम पाचन और स्वेदन कर यह चूर्ण रेचनार्थ दे तो हृदयरोग पाण्डुरोग, कास, श्वास, भगन्दर, मन्दाग्नि, ज्वर, कुष्ठ, ग्रहणी और कण्ठरुज रोग नाश हों।

इसका अनोपान इस प्रकार है। पेट फूले तो मट्ठा से, गुल्म में बेर क्वाथ से, मल फोड़ने में दही या जल से, अजीर्ण में उष्णोदक से, उदररोग में आमला से, कठोदरादि में उष्ट्रीदुग्ध अथवा गोतक्र में, वातरोग में सुरामण्ड में, अर्श में अनार रस के साथ और दोनों विष में घी के साथ दे। यह नारायण चूर्ण दैत्यरूपी दुष्ट रोगों का नाशक है।

अजीर्ण पर हवुषादि चूर्ण

हाऊबेर, त्रिफला, त्रायमाण, पीपल, चूक, निशोत, पीतपुष्प, सेहुँड़ की जड़, कुटकी, बच, नील की पत्ती, सेवन और काला नमक का चूर्ण बनावे। इसको उष्णोदक, गोमूत्र, अनार का रस, त्रिफला का रस अथवा मांस रस आदि किसी के साथ रोगानुसार दे तो अजीर्ण, प्लीह, गुल्म, शोथ, अर्श विषमाग्नि, हलीमक, कमल, पाण्डु, कुष्ठ, पेट फूलना और उदररोग नाश हों।

शूलादि पर पंचसम चूर्ण

सोंठि, हड़, पीपल, निशोत, कालानमक इन सब औषधों को समभाग लेकर चूर्ण बना ले। फिर खाय तो बड़ा शूल, पेट फूलना, जठरसम्बन्धी रोग, अर्श और आमवात इन सबको दूर करे।

नाराच चूर्ण

पीपल १० माशे, निशोत ४ रुपये भर और खाँड़ पलभर का चूर्ण बनावे। फिर तोला भर शहद के साथ खाय तो पेट फूलना, गोटउदर, कफ, पित्त, शूल आदि जायँ।

प्लीहादि पर लवणत्रितयादि चूर्ण

तीनों लवण, दोनों खार, सौंफ, सोवाबीज, अजमोद, ममरी, हाऊबेर, दोनों जीरे, मिरच, पीपलामूल, पीपल, हुरहुरा, कचूर मगरेल, सोंठि, चीता, चाब, बिड़ंग, अमलबेत, अनार, इमली की छाल,

निशोत, जमालगोटा, शतावरि, इन्दोरन, भारङ्गी, देवदारु, अजवाइन, धनियाँ, तुम्बुरु, पुष्करमूल, बेर और हड़ ये सब समान ले चूर्ण बनावे। फिर अदरक और बिजौरे के रस में भावना दे। इसको घी अथवा पुरानी मद्य या उष्णोदक अथवा बेर का क्वाथ या मट्ठा अथवा उष्ट्रीपय या दही के तोड़ के साथ ले तो यकृत, प्लीह, कटिशूल, गुदा, कोख और हृदयरोग, अर्श, मन्दाग्नि, मलस्तम्भ, गुल्म, उदररोग, हिचकी, पेट फूलना, श्वास और कास दूर हों। वैद्य इनका घी बनाकर दे तो भी उपर्युक्त रोग जायँ।

शूल पर तुम्बुरु आदि चूर्ण

तुम्बुरु, तीनों लवण, अजवाइन, पुष्करमूल, जवाखार, हड़, हींग और बिड़ंग को बराबर ले और निशोत तीन भाग लेकर चूर्ण बनावे। उष्णोदक अथवा यवक्वाथ के साथ पिये तो सब शूल, गुल्म और पेट फूलना दूर हों।

मन्दाग्नि पर चित्रकादि चूर्ण

चीता, सोंठि, हींग, पीपल, पीपलामूल, चाब, अजमोद, मिरच, तोले तोले भर; और दोनों खार, काला, पाँगा, कटीला, साँभर चार चार माशे भर ले। फिर सबका चूर्ण कर बिजौरे के रस में गोली बाँधकर धूप में सुखा ले। यह चूर्ण गुल्म, ग्रहणी और आमरोग को हरता, अग्नि को दीप्त करता, रुचि को बढ़ाता और कफ को नाश करता है।

मन्दाग्नि पर अग्निदीपन चूर्ण

सेंधा नमक, पीपलामूल, पीपल, चाब, चीता, सोंठि, हड़ इन सबको क्रम से एक एक भाग अधिक ले कूट पीस छान चूर्ण बनावे। इसके खाने से सकल मन्दाग्नि नाश हो जाती है।

वातादि पर अजमोद चूर्ण

अजमोद, बिड़ंग, सेंधा नमक, देवदारु, चीता, पीपलामूल, सौंफ, पीपल, मिरच तोला तोला प्रमाण ले तथा हड़ ५ तोले, विधारा १० तोले और सोंठि १ तोला ले। फिर इनका चूर्ण करे। तदनन्तर गुड़ मिलाकर गरम पानी से खाय तो सूजन दूर हो। यह चूर्ण आमवात

गाँठिपीर, गृद्धसी, वायु, कटिपीड़ा, पीठ, गुदा, जाँघ, पोरतूनी, वायु-प्रतूनी, विश्वाची, कफरोग और वायुरोग इन सब रोगों को नाश करता है।

शूलादि पर हिंग्वादि चूर्ण

हींग, पाढ़ा, हड़, धनियाँ, अनार, चीता, कचूर, अजमोद, त्रिकुटा, हाऊबेर, अमलबेत, ममरी, इमली की छाल, जीरा, पुष्करमूल, बच, चाब, दोनों खार और पाँचों नमक का चूर्ण बना ले। भोजनादि अथवा पुरानी भंग में खाय तो यह चूर्ण वातकफ का गुल्म, कोष्ठबद्ध, अष्ठीलिका, हृदय, पेड़ू, पसुली, गुदा, योनि आदि के सर्वशूलों को और मूत्रकृच्छ्र, पेट फूलना, पाण्डु, अरुचि, हिचकी, यकृत, प्लीह, श्वास, कास, गलरोग, ग्रहणी और अर्श इन रोगों को दूर करे। बिजौरे के रस की सात भावना देकर गोली बाँध ले। इससे वात और कफ के रोग नाश हों।

अरुचि पर जवानीखांड़ चूर्ण

अजवाइन, अनार, सोंठि, इमली की छाल और अमलबेत चार-चार माशे ले और मिरच १० माशे, पीपल ४० माशे तथा तज, कालानमक, धनियाँ, जीरा, आठ आठ माशे और शर्करा २५६ माशे लेकर चूर्ण बनावे। इस चूर्ण के खाने से पाण्डु, हृदयरोग, ग्रहणी, छर्दि, शोष, अतीसार, प्लीह, पेट फूलना, कोष्ठबद्ध, अरुचि, शूल, मन्दाग्नि, अर्श, जीभरोग और गलरोग नाश हों।

अरुचि पर तालीसादि चूर्ण

तालीस १ तोला, मिरच २ तोले, सोंठि ३ तोले, पीपल ४ तोले, वंशलोचन ५ तोले ले और इलायची तथा तज आधा आधा तोला ले, खाँड़ ३२ तोले ले। फिर इनका चूर्ण बनाकर खाय तो पाचन और रोचन करे और कास, श्वास, ज्वर, छर्दि, अतीसार, शोष, पेट फूलना, प्लीह, ग्रहणी, पाण्डुरोग जायँ।

कासक्षयपित्तादि पर सितोपलादि चूर्ण

मिश्री १६ तोले वंशलोचन ८ तोले, पीपल ४ तोले, छोटी इला-यची २ तोले, तज १ तोला इनका चूर्ण कर शहद और घी मिलाकर

चाटे तो श्वास, कास, क्षयी, हाथ और पाँव का तपना, मन्दाग्नि, जीभ सूखना, पसुलीपीड़ा, अरुचि, ज्वर, रक्तपित्तरोग नाश हों।

ग्रहणी गुल्म पर लवणभास्कर चूर्ण

पाँगा नमक ८ रुपये भर, काला नमक ५ रुपये भर और बिड़, सेंधा, धनियाँ, पीपल, पीपलामूल, काला जीरा, पत्रज नागकेसर, तालीस, अमलबेत दो दो तोले तथा मिरच, जीरा, सोंठि तोला-तोला भर, अनार ४ तोले भर इलायची और तज पाँच माशे एकत्र कर चूर्ण बनावे। इसकी ४ माशे मात्रा मद्य, मठा अथवा दही के तोड़ के साथ दे तो वात, कफ, गुल्म, प्लीह, पेटरोग, छर्दि, अर्श, ग्रहणी, कुष्ठ, कोष्ठबद्ध, भगन्दर, सूजन, शूल, श्वास, कास, आमदोष, हृदयरोग, मन्दाग्नि आदि सब रोगों को दूर करता है और दीपन पाचन भी है। इस चूर्ण को श्रीभास्कर ने सब लोगों के लिए हितकारक कहा है।

वातपित्तकफ छर्दि पर एलादि चूर्ण

इलायची, प्रियंगु, मोथा, बेर की मींगी, पीपल, श्वेतचन्दन, लावा, लवङ्ग और नागकेसर को एकत्रकर चूर्ण करे। इसमें शहद और मिश्री मिलाकर चाटे तो वातपित्तकफजन्य छर्दि नाश हो।

कुष्ठ पर निम्ब चूर्ण

महीन पिसा नींब के पञ्चांग का चूर्ण ६० तोले और लोहभस्म, हड़, चाब, बड़नींब, चीता, भिलावाँ, बिड़ंग, खाँड़, आँवला, हल्दी, पीपल, मिरच, सोंठि, बकुची, अमलतास और गोखुरू को चार चार तोले भर ले चूर्ण बनावे। उसमें भाँगरे के रस की भावना दे। फिर खैर और आसन सेर भर पानी में काढ़ाकर अष्टमांश रहने दे। उसमें उसकी भावना दे पुनः सूखा चूर्ण रख छोड़े इसको एक तोला प्रमाण खैर आसन के क्वाथ, दूध अथवा घी के साथ एक मासपर्यन्त ले तो सब कोढ़ों को नाश करे। यह चूर्ण रसायन है और सब रोगों को नाश करता है।

पुष्टि पर शतावरि चूर्ण

शतावरि, गोखुरू, किवाँच के बीज, गुलशकरी, बरियारा और तालमखाना को बराबर ले चूर्ण बनावे। गोदुग्ध में नित्य पिये तो स्त्री

से तृप्ति कभी न हो और जो स्त्री प्रसङ्ग न करे तो बल और श्वेत वर्ण हो।

पुष्टि पर अश्वगन्धादि चूर्ण

नागौरी असगन्ध ४० तोले, विधारा ४० तोले भर ले दोनों का चूर्ण कर घृत के बर्तन में रक्खे। १० माशे चूर्ण दुग्ध में पिये तो स्त्री से कभी तृप्ति न हो।

धातुवृद्धि पर नवायसदि चूर्ण

चीता, त्रिफला, मोथा, बिड़ंग, त्रिकुटा को समान ले और पोलादभस्म इन औषधों के बराबर ले चूर्ण कर ३ माशे शहद और घृत के साथ चाटे अथवा गोमूत्र या मट्ठा के साथ पिये तो पाण्डु, हृद्रोग, भगन्दर, सूजन, कोढ़, उदररोग, अर्श, मन्दाग्नि, अरुचि और कृमि आदि रोग जायँ।

स्तम्भन पर अकरकरादि चूर्ण

अकरकरा, सोंठि, कङ्कोल, मिरच, केसर, पीपल, जायफल, लवङ्ग, श्वेतचन्दन इनको तोला तोला भर ले। फिर कूट-पीसकर चार तोले भर अफीम दे कपड़छानकर ले और सबकी बराबर खाँड़ मिलावे। माशे भर शहद से चाटे तो वीर्यस्तम्भन करे। पुरुष स्त्री को सुख देता है। कामी पुरुष इसका रात्रि में सेवन करे।

चन्द्रकलाभिध चूर्ण

चिरायता, कुटकी, मोथा, इन्द्रयव, सोंठि, मिरच, पीपल इनको समान भाग ले और इन्द्रयव के वृक्ष की छाल का सोलहवाँ भाग और चीते की छाल के दो भाग ले चूर्ण बनावे। इस चूर्ण से दूना पुराना गुड़ पानी में मिलाकर, फंकी करे तो पाण्डुरोग, ज्वर, अतीसार अरुचि, कामला, ग्रहणी, वायुगोला और प्रमेह रोग नष्ट हों और रोगी सुखी हो।

अन्य चूर्ण

सज्जी, जवाखार, खारी नमक, काला नमक, सेंधा नमक, सोंठि, मिर्च, पीपल, चाब, अजमोद, चीता, पीपलामूल, हींग, जीरा, और सौंफ बराबर बराबर ले चूर्ण बनावे। इसको गर्म पानी के साथ अथवा झड़बेरी के बेरों के औटे जल के साथ या मट्ठे के साथ पीवे तो हृद्रोग, क्षुधा की मन्दता, वायुगोला, अर्श, संग्रहणी आदि रोग दूर हों।

अन्य चूर्ण

सज्जी, जवाखार, पीपलामूल, पीपल, चाब, चीता, सोंठि, मिरच, सेंधा नमक, साँभर नमक, खारो नमक, समुद्र नमक, हींग और अजवाइन को बराबर बराबर लेकर चूर्ण बना ले। इसमें अमलबेत अथवा बिजोरा नींबू का पानी तथा आमला इन तीनों में से किसी एक के रस की भावना देकर तैयार करे। यह चूर्ण अतिदीपन पाचन है और कफ, बादी, संग्रहणी और अर्शरोग आदि को नाश करता है।

अन्य चूर्ण

चीता, बच, बेलगिरी और सोंठि का चूर्ण बनावे। इसको तक्र के साथ ले तो दुष्ट संग्रहणी दूर हो।

अन्य चूर्ण

काला नमक, चीता और मिरच के चूर्ण को तक्र के साथ पीने से संग्रहणी उदररोग, वायुगोला, अर्श, क्षुधा की मन्दता और मोह रोग नाश हों।

चिन्तामणि चूर्ण

जैंत के बीज, बरियारे की जड़, पद्माक, काहू, देवदारु, त्रिफला, सोंठि, मिरच, पीपल और बिड़ंग को समान ले चूर्ण बनावे। इस चूर्ण को विषम मधु और घृत के साथ खाया करे तो श्वास और कासरोग जायँ।

अन्य चूर्ण

पीपल, पीपलामूल, बहेड़े का बक्कल और सोंठि के चूण को शहद के साथ चाटने से खाँसी का रोग शान्त होता है।

अन्य चूर्ण

सोंठि, मिरच, पीपल इन्हें समभाग ले चूर्ण करे। उसके समान गुड़ और दुगुना घी मिलाकर चाटने से श्वास का रोग बहुत शीघ्र नष्ट होता है।

अन्य चूर्ण

त्रिफला, गिलोय, चीता, रायसन, बायबिड़ंग, सोंठि, मिरच और पीपल को बराबर ले चूर्ण बनावे। जितना चूर्ण हो उसमें उतनी ही शकर घोलकर सेवन करे तो खाँसी का रोग जाय।

लौलिम्बराज चूर्ण

सोंठि ५ भाग, पीपल ४ भाग, अजमोद ३ भाग, अजवाइन २ भाग, नमक १ भाग इन पन्द्रह भागों के तुल्य हड़ ले चूर्ण बनाकर खाय तो पेट की गुड़गुड़ाहट, पेटशूल, आमरोग, वायुगोला और मलरोग दूर हों।

इति अष्टाविंशतिस्तरङ्गः ॥ २८ ॥

वटी कल्पना

वटी (गोली) कई नामों से प्रसिद्ध है, जैसे वटिका, गुटिका, वटी, मोदक, पिण्डी और गुण्डी इत्यादि। गोली विना आग के योग के गुग्गुल से बँध जाती है और शहद से भी बँधती है। गोलियों में मिश्री चौगुनी, गुड़ दूना और चूर्ण लिखे प्रमाण दे। गुग्गुल और शहद बराबर और द्रव्यवस्तु दूनी दे। इसी रीति को सद्वैद्य करते हैं। इसके खाने का प्रमाण तोला मात्र है अथवा देहबल और दोष देखकर जैसा उचित हो खिलावे।

अर्श पर इन्दारु की गुटिका

इन्दारु, मोथा, सोंठि, जमालगोटा की जड़ की छाल, हड़, निशोत, कचूर, बिडंग, गोखुरू, चीता इन सबों को दो दो तोले ले और जमींकन्द ३२ तोले, निधास १६ तोले और भिलावाँ १६ तोले ले १६ सेर पानी में औटाकर जब चौथाई रहे तब उतार ले। फिर छानकर उसका तिगुना गुड़ डालकर पकावे। जब वह पककर नितरि उठे तब उसमें यह चूर्ण डाले—चीता, निशोत, जमालगोटा की जड़, बच चार चार तोले; त्रिकुटा, इलायची, बड़ा तज ये बारह बारह तोले ले। इनको पीस छानकर सेर भर शहद में पूर्वोक्त, चूर्णयुक्त बँधने मुवाफिक हो तैसा मिलावे तब बाहुशाल गुड़ सिद्ध हो। इससे सर्वार्श, गुल्म, वातोदर, आठ वायु, नाक टपकना, क्षयी, पीनस, श्लोमक, पाण्डु और प्रमेह नाश होते हैं।

कास पर मरिचादि गुटिका

मिरच और पीपल तोला तोला भर, जवाखार पाँच माशे और

अनार ८ तोले की ८ तोले गुड़ में चार चार माशे की गोली बाँधे। इस गोली को मुख में रक्खे तो खाँसी रोग दूर हो।

श्वास पर गुड़ादि गुटिका

गुड़, सोंठि, हड़, मोथा इन सबकी गोली जितने गुड़ में बँधे उतने में एक एक माशे भर की बाँध मुँह में रक्खे तो सब श्वास-कासों को हरे। मुख में केवल बहेड़ा रखने से भी यह रोग दूर होता है।

प्यास पर आँवलादि वटी

आँवला, कमल, कूटला, बटजटा इन्हें पीस शहद में गोली बाँध मुख में रक्खे तो महातृषा और मुख सूखना दूर हो।

सन्निपात पर संजीवनी गुटिका

विड़ंग, सोंठि, पीपल, हड़, आँवला, बहेड़ा, बच, गुर्च, भिलावाँ, शुद्ध सिंगिया बराबर बराबर ले गोमूत्र में खरल करे। फिर घुँघचिल की सी गोली बनाकर अदरक के रस में दे। अजीर्ण में १ गोली, विसूचिका में दो गोली दे। इसी प्रकार साँप काटे हुए को सन्निपात में चार दे। इस वटी का नाम संजीवनी (मनुष्य को जिलानेवाली) है।

पीनसादि पर त्रिकुटादि वटी

त्रिकुटा, अमलबेत, बच, तालीसदल, चीता, जीरा, इमली की छाल, गुड़ तोला तोला भर और तज, पत्रज, इलायची चार चार माशे ले। इसका व्योषादिगुटिका नाम है। पीनस, श्वास, कास को नाश कर रुचि को बढ़ाती है। कण्ठस्वर शुद्ध करती और नाक पकना बन्द करती है यदि आमदोष हो तो सोंठि और गुड़ की गोली दे। अजीर्ण में गुड़ और पीपल। कृच्छ्र में गुड़ और जीरा। अर्श में गुड़ और हड़ की गोली दे।

अर्श पर वृद्धिदारुमोदक

विधारा, भिलावाँ और सोंठि पीसकर गुड़ में गोली बनाकर दे तो छः प्रकार के अर्श जायँ।

अर्श पर सूरनवटिका

सूखे सूरन का चूर्ण ३२ भाग, चीता १६ भाग, सोंठि ४ भाग और मिरच २ भाग का चूर्णकर गुड़ में गोली बाँधकर खिलावे तो सब अर्श

नाश हों। अथवा सूरण और बिधारा सोलह सोलह भाग, मूसली और चीता आठ आठ भाग तथा त्रिफला, बिड़ंग, सोंठि, पीपल, भिलावाँ, पीपलामूल, तालीस, चार चार भाग ले। तज, इलायची और मिरच दो दो भाग ले। सबका चूर्ण कर दूने गुड़ में गोली बाँधकर खिलावे तो अग्नि प्रबल हो। यह रसायन अर्श, वातकफजन्य ग्रहणी, श्वास, कास, क्षयी, प्लीह, फीलपाँव, शोथ, प्रमेह, भगन्दर, बालों के श्वेत होने को दूर कर धातु और बुद्धि बढ़ाती है।

कामलादि पर मंडूरवटी

त्रिफला, त्रिकुटा, चाब, पीपलामूल, चीता, देवदारु, सोनामक्खी, हल्दी, मोथा, मंजीठ तोला तोला भर और मंडूर शाधकर सबसे दूना ले। अष्टगुण गोमूत्र में पकाकर गोली बाँधे मट्ठे के साथ खाय तो कामला, पाण्डु, अर्श, शोथ, प्रमेह, कुष्ठ, कफरोग, गठिया, अजीर्ण, और प्लीह नाश हों।

चन्द्रप्रभागुटिका

कपूर, बच, मोथा, चिरायता, गुर्च, देवदारु, हल्दी, अतीस, दारुहल्दी, पीपलामूल, चीता, धनियाँ, त्रिफला, बच, बिड़ंग, गजपीपल, त्रिकुटा, सोनामक्खीभस्म, सज्जीखार, जवाखार, सेंधा, काला और पाँगा नमक चार चार माशे और निशोथ, दन्ती, पत्रज, तज, इलायची, वंशलोचन ये सब तोला तोला भर और लोहे की भस्म २ तोले ले। इन सबका चूर्ण कर मिश्री ४ तोले, शुद्ध शिलाजीत ८ तोले को एकत्र कूटकर सुन्दर गुटिका बनावे। यह चन्द्रप्रभागुटिका कास, प्रमेह, कृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी, विड्बन्ध, पेट फूलना, शूल, इन्द्री फूलना, ग्रन्थि अर्बुद, अण्डवृद्धि, कटिशूल, श्वास, कास, कुष्ठ, मेद, अन्त्रवृद्धि, पाण्डु, कमल, सर्वार्श, खुजली. प्लीह, उदररोग, भगन्दर, दन्तरोग, नेत्ररोग, स्त्री के ऋतुरोग, पुरुष के धातुरोग, मन्दाग्नि, अरुचि, वात पित्त और कफरोग-विनाशिनी और बल-वीर्यवर्द्धिनी है। यह रसायन है। इसको १० माशे या १६ माशे दोष और बल विचार के खाना चाहिए।

गुल्म पर कांकायनगुटिका

अजवाइन, धनियाँ, जीरा, मिरच, कृष्णकान्ता, अजमोद, मगरेला

सोलह सोलह माशे, भुनी हींग २४ माशे तथा दोनों खार, पाँचों नमक, निशोत बत्तीस बत्तीस माशे और दन्ती, कचूर, पुष्करमूल, बिड़ंग, अनार, हड़, चीता, अमलबेत, सोंठि, चौंसठ चौंसठ माशे ले। फिर इसका चूर्ण कर बिजोरा के रस में वटी बाँधे। घृत, दूध, मद्य, नींबू का रस और उष्णोदक के साथ कांकायन बनाकर पिलावे तो गुल्म नाश हो। वातगुल्म में मद्य से, पित्तगुल्म में गोक्षीर संग, कफ-गुल्म में गोमूत्र के साथ, त्रिदोषगुल्म में दशमूल के क्वाथ के साथ और स्त्री के रक्तगुल्म में उष्ट्रीदुग्ध संग दे।

वातरोग पर कैशोर गुग्गुल

त्रिफला ३ सेर और गुर्च १ सेर को कूटकर २४ सेर जल में औटावे। जब अर्धजल रहे तब छानकर शुद्ध गुग्गुल चार सेर डाले। फिर लोहपात्र में लोहे की करछी से घोट गुड़-पाक सम गाढ़ा कर ये औषधें डाले—आँवला, बहेड़ा दो-दो तोले, गुर्च ४ तोले, त्रिकुटा ६ तोले, बिड़ंग २ तोले, दन्ती और निशोत १ तोला। सबको गुड़पाक में सानकर पिण्ड बाँध घी के बर्तन में रक्खे। इसकी गोली ४ माशे प्रमाण दे अथवा दोष विचारकर दे। इसका अनोपान गरम पानी, दुग्ध, मंजीठक्वाथ अथवा वैद्य जो उचित समझे उसके साथ दे तो सब कुष्ठ जायँ। त्रिदोषजन्य वातरक्त जाय। सब तरह के व्रण, गुल्म, प्रमेह, पिड़िकाप्रमेह, उदररोग, मन्दाग्नि, कास, सूजन, पाण्डु, आमरोग, इसके खाने से निस्संदेह नाश हों। यह भी एक रसायन है। इस क्वाथ को कैशोरक ऋषि ने कहा है, इससे इसका नाम कैशोर गुग्गुल है। यह गुग्गुल कान्तिप्रद है। यह रूसादि क्वाथ के साथ खाने से नेत्ररोग, वरुणादि क्वाथ के साथ गुल्मरोग, खदिरादि क्वाथ के साथ व्रणरोग और कुष्ठ दूर करता है। खट्टी व तीक्ष्ण वस्तु, मैथुन, श्रम, घाम और क्रोध इन सबको त्याग करे और संयम से रहे।

भगन्दर पर त्रिफलागुग्गुल

त्रिफला चूर्ण १२ तोले, पीपल का चूर्ण ४ तोले और शुद्ध गुग्गुल २० तोले को एकत्रकर गोली बाँधकर रोगी को अग्नि विचार के दे तो भगन्दर, गुल्म, शोथ और छओं अर्श दूर होती हैं।

प्रमेह पर गोक्षुरादिगुग्गुल

११२ तोले गोखुरू का छह गुने पानी में काढ़ा कर अर्धशेष ले फिर २८ तोले गुग्गुल डाल पकावे। जब गुड़पाक सा हो तब आगे लिखी हुई द्रव्यों को उसमें डाले—त्रिफला, त्रिकुटा, मोथा ये सातों चार चार तोले भर मिलाकर पिण्डी कर गोली बाँधे। फिर प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर, मूत्राघात, वातरक्त, वातरोग, शुक्ररोग और पथरी को नाश करे।

कुष्ठ पर त्रिफलामोदक

त्रिफला ३२ तोले, भिलावाँ १६ तोले, बकुची २० तोले, बिड़ंग १६ तोले और लोहभस्म, निशोत, गुग्गुल, शिलाजीत ये चार चार तोले, पुष्करमूल दो तोले, चीता दो तोले, मिरच ८ माशे तथा सोंठि, पीपल, मोथा, तज, इलायची, पत्रज, केसर ४-४ माशे भर ले। फिर चूर्ण कर सबके समान खाँड़ ले पाककर चूर्ण डाल ६ माशे की गोली बनावे। अग्निबल देखकर रोगी को खिलावे तो समस्त कुष्ठ, त्रिदोष, सर्व आमरोग, भगन्दर, प्लीहा, गुल्म, जिह्वा, कण्ठरोग, ग्रीवा और पृष्ठरोग नाश हों। शरीर के नीचे के रोगों में भोजनान्त में औषध देना। मन्दाग्निजनित में, भोजन के मध्य में और शिवबन्धी रोगों में भोजनान्त में देना चाहिए।

गण्डमाला पर कचनारगुग्गुल

कचनार की छाल ४० तोले, त्रिफला २४ तोले, त्रिकुटा १२ तोले, वरुण (बरना की छाल) ४ तोले, इलायची और पत्रज तोला तोला भर एकत्र कर चूर्ण करे। फिर सब चूर्ण समान गुग्गुल पीसकर चूर्ण मिला पिण्ड बनाकर ४ माशे की गोली बनावे। रोग और औषध बल देख रोगी को प्रातः समय दे तो गण्डमाला, अपची, अर्बुद, घाव, ग्रन्थि, कुष्ठ, भगन्दर आदि जायँ। इसका अनोपान मुण्डीरस, हड़ का क्वाथ अथवा उष्णोदक के साथ है।

धातुपुष्ट पर माषादि मोदक

धुली उड़द की दाल का चूर्ण, गेहूँ का चूर्ण, यव की गूदी का चूर्ण, साँठी चावल का चूर्ण, पिपलीचूर्ण, चार चार तोले भर ले। सब

चूर्ण का आधा घृत लेकर भूने। तदनन्तर चूर्ण के समान खाँड़ ले सबका दूना जल डाल मन्द मन्द आँच दे घोटे। जब सिद्ध हो तब चार चार तोले भर के लड्डू बाँध सन्ध्या समय खाय, उसके ऊपर से १६ तोले दुग्ध पिये। क्षार और खटाई न खाय। स्त्रीप्रसङ्ग करे तो वीर्य न द्रवे और देह पुष्ट रहे।

सूरनवटिका

सूखा ज़िमीकन्द ८ भाग, चीते की छाल ४ भाग, हड़ और सोंठि ५ भाग, मिरच और पीपल २ भाग, गुड़ १४ भाग ले गोली बनावे। यह गोली रुचि की देनेवाली है और मन्दाग्नि, बवासीर, कब्जियत तथा उदररोगों को दूर करती है। ऐसे हो गीले पीलू के फलों के खाने से बवासीर, कृमि, संग्रहणी और गुल्मरोग दूर होते हैं।

आदित्यवटी

चौ०—बच औ सोंठि हींग विष आन। जीरा मिर्च चीत तज जान॥
समकरि भृङ्गराज रस लीजै। ताहि एक क्षण मर्दन कीजै॥
चना सरिस गुटिका त्यहि करै। आदितवटी नाम शुभ धरै॥
वातरोग हियरोग बहावे। अष्टशूल अरु गुल्म नशावे।
पचै अन्न अति अग्नि बढ़ावै। अर्शमात्र को खोजि चटावै॥

कासश्वास पर गुटिका

मोथा, सोंठि और हरीतकी को पीसकर गोली बाँधे। उसे तीन दिन तक मुख में रक्खा करे और उसी से घूरा करे तो श्वास और कासरोग दूर हों।

लवंगादिगुटिका

लवङ्ग, मिरच, बहेड़े का बक्कल तीनो सम भाग और इन सबके बराबर खैरसार पीसकर डाले। इसमें बबूल की छाल का औटा हुआ पानी डालकर गोली बाँध ले। इस गोली के खाने से ८ घड़ी के पीछे सब प्रकार की खाँसी दूर होती है।

सन्निपात पर गोली

लवङ्ग, जायफल, जावित्री, तज, पत्रज, जमालगोटा, भुना सुहागा, हड़ का छिलका, घृत की भुनी हुई हींग धेला धेला भर ले कपड़छान

कर सहँजने के रस में गोली बाँधे। एक गोली गरम पानी के साथ खाय तो दस्त लगे, पेट का भारीपन, ज्वर और शीत जाय। इस गोली को १० वर्ष पर्यन्त खाय तो कुष्ठ जाय।

सन्निपात पर दूसरी गोली

मिरच २० माशे और विष ८ माशे को कूट तथा धेला भर बच और ५ धेला भर मोथा को कपड़छान कर अदरक के रस में २ पहर खरल कर १ रत्ती की गोली बनावे। १ गोली दे तो सन्निपात जाय।

अन्य वटिका

बहेड़े की छाल ៸।।, अकरकरा, हड़ की छाल, विष चार चार माशे, मिरच १२ माशे तथा बच और बायबिड़ंग २८ माशे को कपड़ छानकर ៸।। बहेड़े की छाल के रस में १ रत्ती की गोली बाँधे। एक गोली दे तो सन्निपात, खाँसी, गला और माथे का शूल, हड़फूटन और वातरोग जायँ।

दाहयुक्त अतीसार पर गोली

जावित्री, जायफल, नागकेसर, लवङ्ग, अफीम की चार चार माशे ले और महीन पीसकर पाती में एक रत्ती की गोली बाँधे। जीरा और सोंठि के अनोपान से खिलावे तो अतिसार दूर हो और दाह मिटे।

अतीसार पर लीलावती गोली

बच, रूमीमस्तगी, अनार की कली, वंशलोचन, आम की गुठली, लोध, मुलहठी, धाय के फूल, मोचरस, कुड़े की छाल, जायफल, बबूर की कली, माईं धेला-धेला भर और इन सबसे दूना खैर तथा खैर से दूना कुम्हड़ा के बीज ले। इन सब ओषधों को कपड़ छानकर पोस्ते के पानी में चार-चार माशे की गोली बाँधे। एक गोली चावल के धोवन के साथ दे तो सात प्रकार का अतीसार जाय। पथ्य दही और भात है।

अजमोदादि गुटिका

अजमोद ៸। भर, हड़, बहेड़ा, आँवला, सोंठि, मुलतानी, बिदारी-कन्द, धनियाँ, मोथा, मोचरस, गजपीपल, लवङ्ग, जायफल, पीपल, चीत की छाल, अनारदाना, भारङ्गी, कमलगट्टा, मिरच, दोनों जीरे, कुटकी, अजवाइन, पीपलामूल, रेणुका, बायबिड़ंग, बच, कायफल,

पित्तपापड़ा, तिधारा, दतूनिया, कुरदानासार ये सब औषधें कपड़छान करे। बीस वर्ष के पुराने ऽ१ गुड़ का पाक बनाकर उसमें सब औषधें मिला कर दो-दो पैसा भर की गोली बनावे। एक गोली गरम पानी से सबेरे खाय तो कछुई, पेट का भारीपन और उदरविकार जाय।

पुष्टि पर अपर अजमोदादि गुटिका

अजमोद, हड़, बहेड़ा, आँवला, बिदारीकन्द, सोंठि, धनियाँ, मोचरस, मोथा, गजपीपल, लवङ्ग, जायफल, पीपल, मुलतानी, विजया, अनारदाना, दोनों जीरे, चित्रक, भारङ्गी, कमलगट्टा, कोंच के बीज, मुलहठी, शिलाजीत, काकड़ासिंगी, केसर, नागकेसर, पुष्करमूल, शतावरि को पैसे पैसे भर ले कपड़छान करे। पाँच सेर गौ के दूध को ओटावे और जब एक सेर शेष रह जाय तब उसमें एक सेर खाँड़ और सब औषधें मिलाकर दो पैसे भर की गोली बाँधे। एक गोली नित्य खाय तो बल बढ़े और पुष्टता अधिक हो।

आमवात पर जमालगोटे की गोली

जमालगोटा, सज्जी, साँभरनोन, सोंचरनोन, सेंधानोन, धेला धेला भर, सोंठि २० माशे, गौ का दही २ सेर को कपड़छान करे। इसमें दही डाल कर आँवले के बराबर गोली बाँधे। एक गोली सबेरे खाय तो आमवात, पेट का भारीपन और देह के शोथ जायँ। यदि शाम-सबेरे खाय तो पेट के कृमि जायँ।

भूख बढ़ने की गोली

सेंधा नमक, हड़, सज्जी, जवाखार, सोंचर नमक, साँभर नमक, खारी नमक, सोंठि, जीरा, मोथा, अजवाइन, पीपल, मिरच, चीते की छाल, अजमोद, बायविड़ंग, धनियाँ, तिंतिरीक ये सब औषधें पैसे पैसे भर ले कपड़छान कर चूक और अदरक के रस में धेले धेले भर की गोली बाँधे। एक गोली नित्य खाय तो अन्न बहुत पचे, वात दूर हो और भूख बढ़े।

कफ और भूख पर चित्रकादि गोली

चीते की छाल, पीपलामूल, अजवाइन, भुना सुहागा, पाँचों नमक, सोंठि, पीपल, मिरच, हींग अजमोद को बराबर बराबर, ले कपड़-

छान कर बिजौरा नींबू के रस में धेले भर की गोली बाँधे। एक गोली खाय तो कफ दूर हो और भूख लगे तथा अन्न पचे।

मुखपाक पर खैरसार गोली

जायफल, कस्तूरी, भीमसेनी कपूर और सुपारी इन सबके बराबर खैरसार ले महीन पीसे। इनकी गोली बनाकर मुख में रक्खे तो मुख के सब रोग दूर हों। अथवा खैरसार, जायफल, भीमसेनी कपूर, दक्षिणी सुपारी, तज पत्रज, नागकेसर, इलायची, कस्तूरी ये सब बराबर ले महीन पीस खैरसार के काढ़े में चने भर की गोली बनावे। एक गोली मुख में रक्खे तो जीभ, ओंठ, दाँत, मुख, गला और तालु इन सबके रोग दूर हों।

पाचक की गोली

आक की मुँहमूँदी कली और मिरच पाव-पावभर, सेंधानमक २ पैसा भर इन सबको मिलाकर महीन पीस झरबेरी के बेर प्रमाण गोली बनावे। एक गोली जल के साथ खाय तो अजीर्ण, अफरा आदि उदररोग दूर हों और भूख बहुत बढ़े।

शंखवटी

शंख को सात बार तपा तपाकर मट्ठा में बुझावे तो शंख की भस्म हो। यह शंखभस्म छटाँकभर, सोंठि आधपाव तथा जीरा सफ़ेद, चौकिया सुहागा, पोदीना, अमलबेत, जिरिश्क, सेंधानमक, कचलोन, काला नमक दो दो टके भर तथा जवाखार और भुनी हींग १ टके भर को महीन पीसकर कपड़छान करे। पहले ॥ सहँजने के रस में घोटकर तत्पश्चात् ॥ नींबू के रस में घोटे और झरबेरी के बेर समान गोली बना ले। एक गोली शाम-सबेरे खाय तो अफरा आदि सब उदररोग दूर हों और पाचन हो तथा भूख की वृद्धि हो।

गन्धकवटी

नमक ४ माशे, कालीमिरच, चित्रक, पीपल, जवाखार, सेंधा और कालानमक आठ आठ माशे, तथा शुद्ध गन्धक १० माशे को पीसकर नींबू के रस में ७ दिन खरल करे। पीछे ४ माशे भर की गोली बनाकर एक गोली जल के साथ ले तो अजीर्ण, शूल, आम

का दोष, वायुगोला और अफरा ये सब रोग निस्संदेह दूर हों।

इति एकोनत्रिंशत्तमस्तरङ्गः ॥ २९ ॥

—:०:—

लेपन विधान

लेप के तीन नाम हैं—लिप्त, लेप और लेपन। तीनों सुखलेप, दोषघ्न, विषघ्न और वर्णप्रद हैं। इनका प्रमाण भी तीन प्रकार का है। अंगुल भर मोटे को दोषघ्न, पौन अंगुल को विषघ्न और अर्धांगुल लेप को वर्णप्रद कहते हैं। सब लेप रोग को हरते हैं और सूखने पर कान्ति को दूर करते हैं।

दोषघ्न लेप

गदापुरैना, देवदारु, सोंठि, सिरस, सहिंजन की छाल को समभाग ले कांचो पर पीस सूजन पर लेप करे तो सूजन दूर हो। बहेड़े की मींगी के लेप से भी दाह और पीड़ा दूर होती है।

दशांग लेप

सरसों, मुलहठी, तगर, लाल चन्दन, इलायची, जटामांसी, हल्दी, दारुहल्दी, कूट, नेत्रबाला को सम भाग ले चूर्ण कर पञ्चमांश घृत मिलाकर पानी में पीस लेप करे तो विसर्प, विषदोष, विस्फोटक, सूजन और दुष्ट फोड़ा ये सब नाश हों।

विषघ्न लेप

बकरी के दूध को तिल के साथ पीसकर मक्खन मिलाके लेप करे। अथवा काली मिट्टी और तिल का लेप करे तो विषसम्भव सूजन और भिलावाँ सूजन दूर हो।

अन्य लेप

करियारी, अतीस, दूधिया, कटुतोरई, मूली तीनों के बीज पाँचों को समान ले काँजी में पीसकर कीटदंश और विस्फोटक पर लगावे तो इनका दोष मिटे।

कान्तिकारक लेप

रक्तचन्दन, मंजीठ, कूठ, मालकाँगनी, वटांकुर, मसूर इनको समान ले जल में पीस लेप करे तो व्यङ्गरोग मिटे और कान्ति बढ़े।

अथवा बीजपूर की जड़, घृत, मसिल गोमयरस मिलाकर लेप करे तो कान्ति बढ़े और व्यङ्गरोग दूर हो।

तरुणपिटिका (मुँहासा) पर लेप

तरुण मनुष्य के मुख पर जो छोटी छोटी पिटिकाएँ उठती हैं उनको तरुणपिटिका कहते हैं। लोध और धनियाँ को पीस लेप करे। अथवा गोरोचन और मिरच पानी में पीस लेप करे। या सरसों, बच, लोध और सैन्धव ये सम भाग ले जल में पीस लेप करे तो मुँह पर की तरुण पिटिकाएँ अच्छी हों।

तरुणपिटिका पर लेप

वट का पीला पत्र, चमेली, रक्तचन्दन, कूट, दारुहल्दी और लोध को पीसकर लेप करे तो तरुणपिटिका, व्यङ्ग और झाईं दूर हों।

व्यङ्गरोग पर लेप

अर्जुन की छाल या मंजोठ अथवा श्वेत घोड़े के नख भस्म आदि में से कोई द्रव्य ले शहद संयुक्त लेप करे तो व्यङ्गरोग जाय।

मुख पर की झाईं पर लेप

मदार के दूध में हल्दी को घिसकर लगाने से बहुत दिन की झाईं भी निश्चय दूर हो।

रूखी पर लेप

पुराने तिल या उसकी लकड़ी और कुक्कुटबीट दोनों गोमूत्र में पीस लेप करे तो रूखी दूर हो। अथवा खेर, नींबू जामुन इन तीनों की छाल गोमूत्र में पीस लेप करे तो रूखी दूर हो।

दारुणरोग पर लेप

चिरोंजी, मुलहठी, कूट, माष, सेन्धव इन सबको समान भाग ले पीस शहद मिलाकर लेप करे तो दारुणरोग दूर हो। अथवा खसखस को दूध में पीस लेप करे। अथवा आम की बिजली और छोटी हड़ दूध में पीस लेप करे तो दारुणरोग नाश हो।

इन्द्रलुप्त पर लेप

कड़ुए परवल की पत्ती के रस को तीन दिन लेप करे तो बालखोरा दूर हो। अथवा भटकटैया और शहद लेप करे। या घुँघुची के पत्र या

फल का रस शहद के साथ लेप करे। अथवा भिलावें का रस और शहद को लेप करे तो बालखोरा दूर हो।

केशवर्धन लेप

गोखुरू और तिल के पुष्प को बराबर ले चूर्ण कर फिर समान घृत और शहद में फेंटकर लगावे तो बाल बढ़ें।

बालों के उगने का लेप

हाथी दाँत को जलाकर रसौंत और बकरी के दूध में पीसकर लेप करे तो जहाँ बाल न हों वहाँ भी बाल जमें।

इन्द्रलुप्त पर द्वितीय लेप

मुलहठी, कमल, दाख तीनों को घृत या तिल का तेल और गौ के दूध में लेप करे तो बालखोरा दूर हो। अथवा चतुष्पद चर्म, रोम, नख, सींग और हाड़ की भस्म तिल के तेल के साथ लेप करे तो नष्टबाल भी जमें।

कृष्णकरन लेप

इन्द्रायण के बीज का तेल पातालयन्त्र से निकाल सफ़ेद बालों पर लगावे तो काले हों। अथवा लोहचूर्ण, भाँगरा त्रिफला और काली मिट्टी को चूर्ण कर उष्णरस में सान मास भर रक्खे। कुछ दिन तक लेप करे तो अकाल के पके बाल काले हों। अथवा आँवले ३, हड़ २, बहेड़ा १, आम की बिजुली ५, लोहचूर्ण एक तोला ले। सबको कड़ाही में खूब घोटे और उसको दिन-रात उसी में रहने दे। फिर लेप करे तो श्वेत केश काले हों। अथवा त्रिफला, तिल के पत्ते, लोहे का चूर्ण और भाँगरा को समभाग लेकर बकरे के मूत्र में पीसे और पके हुए बालों पर लेप करे तो बाल काले हों। अथवा त्रिफला, लोह का चूर्ण, अनार की छाल, कमल की नाल इनको पाँच पल ले। उसमें भाँगरे का रस छह सेर निचोड़ लोहे की कड़ाही में खूब घोटे और एक मास तक उसमें रक्खे। तदनन्तर बकरी के दूध में पीस श्वेत बालों पर लेप करे और अरण्ड के पत्ते बाँधे। फिर रात्रिभर बँधे रहने दे और प्रभात स्नान समय धो डाले। इस प्रकार तीन दिन लेप करे तो सफ़ेद बाल काले हों।

लोमशातन प्रकार

बाल गिराने का लेप

शंखचूर्ण २ भाग, हरताल १ भाग, मैनसिल आधा भाग सबको पानी में पीस जहाँ के बाल गिराने हों वहाँ लेप कर दे और बाकी बालों को कपड़े से ढँक दे। लेप के पहिले बाल दूरकर उस जगह में यह लेप सात बार करे तब सब बाल गिरें और फिर न हों। अथवा हरताल, शंखचूर्ण, पलासक्षार ये आठ आठ माशे लेके दण्ड अथवा आक-पत्र के रस में पीस लेप करे तो बाल गिरें। बाल गिराने का यह अच्छा लेप है।

श्वेतकुष्ठ पर लेप

पीली चमेली, गजपीपल, कसीस, बिड़ंग, मैनसिल, गोरोचन और सैन्धव को बराबर बराबर ले गौ के मूत्र में पीस लेप करे तो श्वेत कुष्ठ दूर हो। अथवा काकटोटी, कूट पोपल को समान ले खसी के मूत्र में पीस लेप करे तो श्वेतकुष्ठ दूर हो। अथवा बकुची, अमलबेत, सलाष, कठगूलर, पीपल, रसौंत, लोहचूर्ण, काले तिल आठों को समभाग ले गोपित्त में पीस लेप करे तो श्वेतकुष्ठ दूर हो।

सेहुआँ पर लेप

आँवला, राल और जवाखार को सौवीर अथवा काँजी में पीस लेप करे तो सेहुआँ दूर हो। अथवा दारुहल्दो, मूली के बीज, हरताल, देवदारु और पान तोला तोला भर और शंखचूर्ण ४ माशे भर ले पानी में पीस लेप करे तो सेहुआँ दूर हो।

नेत्र पर लेप

हड़, सैन्धव, गेरू और रसौंत को समान ले पानी में पीस पलक पर लेप करे तो सब नेत्ररोग दूर हों। अथवा रसौंत, सोंठि, मिरच, पीपल चारों को समान ले पानो में पोस गोली बनाकर पलक पर लेप करे तो नेत्र को खुजली, गुहांजनी और छोटी-छोटी पिटिकाएँ दूर हों।

खुजली पर लेप

चकोड़ के बीज, बकुची, सरसों, तिल, कूट, हल्दी, दारुहल्दी और मोथा को समभाग ले मठे में पीस लेप करे तो खुजली दाद विचर्चिका पाँव फूटना आदि रोग दूर हों।

सूखी खाज पर लेप

चाक, बिड़ंग, शिंगरफ़, गन्धक, चकौड़ के बीज, कूट और सिंदूर को बराबर-बराबर ले नींब के पत्ते, धतूरा के पत्ते और पान तीनों का रस निकाल अलग-अलग पूर्वोक्त द्रव्यरस में पीस लेप करे तो सूखी खाज, दाद, विचर्त्रिका, पद फूटना, खाज, रक्तकुष्ठ नाश हों। अथवा दूब, छोटी हड़, सैंधव, चकौड़ के बीज और कटसरैया को मिट्टी में पीस लेप करे तो खुजली, दाद आदि दूर हों।

रक्तपित्त पर लेप

लालचन्दन, खस, मुलहठी, बरियारा, व्याघ्र के केश और कमल को सम भाग ले पानी में पीस लेप करे तो रक्तसम्बन्धी शिररोग जायँ।

उदररोग पर लेप

सरसों, हल्दी, कूट, चकौड़ के बीज और तिल समान ले कड़ुये तेल में पीस लेप करे तो शीत पित्त सम्बन्धी उदररोग दूर हों।

वातविसर्प पर लेप

रासना, नीलकमल, देवदारु, रक्तचन्दन, मुलहठी और बरियारा को बराबर ले दूध में पीस घृत मिलाकर लेप करे तो वातविसर्प दूर हो।

पित्तविसर्प पर लेप

कमल की नाल, रक्तचन्दन, पठानीलोध, खस, कमल, कोकाबेली, सरिवन, आँवला, जंगीहड़ बराबर-बराबर ले पानी में पीस लेप करे तो पित्तविसर्प अवश्य दूर हो।

कफविसर्प पर लेप

त्रिफला, पद्माक, खस, धव के फूल, कनेरमूल और जवासा सम-भाग ले पीस लेप करे तो कफविसर्प दूर हो।

पित्तवातरक्त पर लेप

सोरफली, नीलकमल, पद्माक, सरसों के फूल इनका चूर्ण सौ बार के धोये घृत में मिला खूब फेंटकर लेप करे तो वातरक्त जाय।

नाकरक्तस्राव पर लेप

आँवले को घृत में भूनकर काँजी के पानी में लेप करे तो नाक से रुधिर गिरना बन्द हो।

वातज शिरपीड़ा पर लेप

कूठ या मुचकुन्द के पुष्प को काँजी के जल में पीस अरण्ड का तेल मिलाकर मस्तक पर लेप करे तो वातजन्य शिर की पीड़ा मिटे। अथवा देवदारु, तगर, कूठ, सुगन्धबाला, सोंठि, इन पाँचों को समान ले काँजी में पीस अरण्ड का तेल मिलाकर मस्तक पर लेप करे तो वातसम्भव शिरपीड़ा दूर हो।

पित्तज शिरोरोग पर लेप

आँवला, कसेरू, सुगन्धबाला, कमल, पद्माक, रक्तचन्दन, दूध की जड़, खस, नरकट की जड़ इन सबको बराबर ले पानी में पीस माथे पर लेप करे तो पित्त और रक्तपित्तसम्बन्धी मस्तकपीड़ा दूर हो।

कफसम्भव शिरपीड़ा पर लेप

मेवड़ी के बीज, तगर, बालछड़, मोथा, इलायची, अगर, देवदारु, जटामासी, रासना और एरण्डमूल पानी में पीस गरम कर माथे पर लेप करे तो कफ की पीड़ा जाय।

सूर्यावर्त पर लेप

सरिवन, कूठ, मुलहठी, पीपल, नीलकमल को काँजी में पीस अरण्ड का तेल मिलाकर लेप करे तो आधाशीशी दूर हो।

शंखक, अनन्तवात और सर्वशिरोरोग पर लेप

छतारी, नीलकमल, दूब, काले तिल और गदापुरैना को समभाग ले पानी में पीस लेप करे तो शङ्खक, अनन्तवात और समस्त शिरपीड़ाएँ मिटें।

पित्तशोथ पर लेप

मुलहठी, रक्तचन्दन, मुर्ग, नरकट की जड़, पद्माक, खस, नेत्रबाला कमल ये सब समान ले पानी में पोस लेप करे तो पित्तशोथ नाश हो।

कफशोथ पर लेप

पीपल, पीना, सहिजने की छाल, बालू या खाँड़ इन सबको गोमूत्र में पीस गुनगुना लेप करे तो कफशोथ दूर हो।

आगन्तुक और रक्तशोथ पर लेप

हल्दी, दारुहल्दी, रक्त और श्वेतचन्दन, हड़, दूब, गदापुरैना, खस,

पद्माक, लोध, गेरू, रसौंत, ये सब समान भाग ले पानी में पीस आगन्तुक और रक्तज शोथ पर लेप करे तो उक्त रोग दूर हों।

व्रण पकाने पर लेप

सन की जड़, मूली, सहिंजने के बीज, तिल, सरसों, यव, लोह-कीट, अलसी समान ले पानी में पीस लेप करे तो व्रण पके।

व्रण फोड़ने पर लेप

लटजीरा की जड़, चीते की जड़ अथवा छाल, सेहुँड़, मदार का दूध, गुड़, भिलावाँ, कसोस, सैन्धव ये औषधें दूध में पीस व्रण पर लेप करे तो अवश्य फूटे। अथवा करञ्ज की मींगी, भिलावाँ, दन्तीमूल की छाल, चीता, कनेर ये पाँचों कबूतर या कुञ्ज अथवा गिद्ध आदि की बीट के समान ले लेप करे तो फोड़ा फूटे। अथवा सज्जी और जवाखार का लेप करे या चोख की जड़ की छाल ले लेप करे तो फोड़ा फूटे।

व्रणशोधन लेप

तिल, सैन्धव, मुलहठी, नींब के पत्ते, हल्दी, दारुहल्दी और निशोथ समान भाग ले चूर्ण कर घी में घेप फूटे हुए फोड़े पर लगावे या इनके कल्क की टिकिया बनाकर घी में छोड़ जलावे। जब टिकिया जल जाय तब उतार टिकिया फेंक दे और घी रख छोड़े। इन दोनों प्रकार से व्रण शुद्ध होता है।

व्रणशोधन पर लेप

नींब के पत्ते, घृत, मधु, दारुहल्दी, मुलहठी और तिल को पीस लेप करे तो व्रण शुद्ध हो और पूर आवे।

कृमिनिवारण पर लेप

करञ्ज, नींब, बकायन तीनों को घिस कृमि के स्थान में भरे तो कृमि मर जायँ या लहसुन अथवा हींग भरे वा हींग और नींब के पत्ते भरे तो कृमि नाश हों।

व्रणशोधनरोपण पर लेप

नींब के पत्ते, तिल, दन्ती की जड़, सैन्धव ये सब समान पीस शहदयुक्त लेप करे तो व्रण शुद्ध होकर पूर आवे।

पेटपीड़ा पर नाभि लेप

मनफल और कुटकी काँजी में पीस कुछ गर्म कर नाभि पर लेप करे तो पेटशूल मिटे।

वातविद्रधि पर लेप

सहिंजने की छाल, बकायन के पत्ते, एरण्डमूल, यव, गेहूँ, मूँग, ये सब बराबर पीस सुखोष्ण लेप करे तो विद्रधि दूर हो।

पित्तविद्रधि पर लेप

लावा और मुलहठी को शक्कर तथा घी में लेप करे। अथवा असगन्ध, खस, रक्तचन्दन दूध में पीस लेप करे तो विद्रधि दूर हो।

कफविद्रधि पर लेप

ईंट, बालू, लोहकीट और गोबर को गोमूत्र में पीस लेप करे तो कफविद्रधि दूर हो।

आगन्तुक विद्रधि पर लेप

रक्तचन्दन, मंजीठ, हल्दी, मुलहठी ये सब समान ले दूध में पीस चोट अथवा रुधिरविकार पर लेप करे तो अच्छा हो।

वातगलगण्ड पर लेप

बेत और सहिंजने के बीज समान ले जल में पीस शीत, गरम और प्रदेह संज्ञक लेप करे तो रोग दूर हो। इसी तरह दशमूल का लेप करे।

कफगलगण्ड पर लेप

देवदारु, इन्द्रायण दोनों को नौ नौ ले लेप करे तो गण्डमाला दूर हो।

अपची पर लेप

सरसों, नींब के पत्ते और भिलावाँ तीनों को बराबर ले मेष के मूत्र में लेप करे तो अपची जाय।

गण्डमाला, अर्बुद और गलगण्ड पर लेप

सरसों और सहिंजने के बीज, सनई के बीज और अलसी, यव तथा मूली के बीज ये सब औषधें समान भाग ले मट्ठे में पीस लेप करे तो गण्डमाला, अर्बुद और गलगण्ड रोग दूर हों।

अपबाहुक पर लेप

केवल वातपीड़ित कोई अङ्ग अपने स्वाभाविक कर्म में पीड़ा करे।

वहाँ के रोम दूर कर घुँघची पीस सुखोष्ण लेप करने से अपबाहुक, वायु विस्वाची, हाथ की गृध्रसी और जंघा की वायुसम्भव पीड़ा दूर हो।

फीलपाँव पर लेप

धतूरा, एरण्ड, मेवड़ी तीनों की पत्ती, गदापुरैना, सहिंजने की छाल, सरसों ये छहों पीस पुराने फ़ीलपाँव पर लेप करे तो अच्छा हो।

उपदंश पर लेप

कनेर की जड़ पानी में पीस इन्द्रिय पर लेप करे तो उपदंशसम्बन्धी असाध्य पीड़ा दूर हो।

कुरण्डरोग पर लेप

कालाजीरा, हाऊबेर, कूट, एरण्डमूल, बेर की छाल ये पाँचों समान ले कांजी के पानी में पीस अण्डकोश पर लेप करे तो अच्छे हों। अथवा त्रिफला कड़ाही में जलाकर राख कर शहद में फेंट लेप करे तो गर्मी के घाव शीघ्र पूर आवें। अथवा रसौंत और सरसों समान पीस शहद में घेप उपदंशसम्बन्धी राद बहते हुए व्रण पर लेप करे तो उपदंश दूर हो।

अग्निदग्ध पर लेप

वंशलोचन, पाकरि, रक्तचन्दन, गेरू, गुर्च ये पाँचो पीस घी में मिला जले पर लगावे। अथवा घी को चोराई के क्वाथ में मिला लेप करे तो जले की व्यथा दूर हो अथवा यव की राख तिल के तेल में घेप लगावे तो दग्धव्रण पूर आवे।

योनिसंकीर्ण लेप

पलाश और गूलर के फल तिल के तेल में पीस शहद मिलाकर योनि में लेप करे तो दृढ़ और संकुचित हो अथवा माजू कपूर पीस शहद में फेंट लेप करे तो गिरी हुई योनि तन आवे।

पुरुष की इन्द्रिय कठोर करने का लेप

मिरच, सैंधव, पीपल, तगर, भटकटैया के फल, बटजीरे के बिया, काले तिल, कूट, यव, उड़द, असगन्ध से सब समान पीस शहद मिश्रित कर नित्य इन्द्रिय पर मला करे तो इन्द्रिय मोटी हो और स्त्री के स्तनों पर लगाया करे तो स्तन कठोर पड़ जायँ तथा पुरुष के

भुजदण्ड और कानों पर मलना अच्छा है । अथवा श्वेतफूल का असगन्ध और सैंधव दोनों महीन पीस चौगुना घृत और घृत का चौगुना भेड़ का दूध एक कर आँच पर दूध जलाकर या छान इन्द्रिय पर लगावे तो इन्द्रिय मोटी हो ।

योनिद्रव लेप

पारा को रक्तकनेर के सोंटे से इन्द्रन के पत्तों के रस में घोटे । जब पीठी के समान कजली हो तब इन्द्रिय पर लेप स्त्रीप्रसंग करे तो स्त्री सुख पावे और पहिले वीर्यपात करे ।

देहदुर्गन्धनिवारण लेप

पानों को हड़ और पानी में पीस लेप करे तो दुर्गन्ध दूर हो । अथवा भूनी हुई कुलथी, कूठ, जटामांसी, श्वेतचन्दन का बुरादा, भूने चने इनको पीस छानकर धूरा करे तो दुर्गन्ध जाय ।

वशीकरण लेप

बच, कालानोन, कूठ, हल्दी, दारुहल्दी, मिरच ये सब समान पानी में पीस देह में लगावे तो अच्छा है ।

इति विंशत्तमस्तरङ्गः ।। ३० ।।

—:०:—

षड्ऋतु-वर्णन

हिमऋतु १ शिशिरऋतु २ वसन्तऋतु ३ ग्रीष्मऋतु ४ वर्षाऋतु ५ शरद्ऋतु ६ ये सब दो दो महीने को हैं । अगहन, पौष हिमऋतु । माघ, फाल्गुन शिशिरऋतु । चैत्र, वैशाख वसन्तऋतु । ज्येष्ठ, आषाढ़ ग्रीष्मऋतु । श्रावण, भादों वर्षाऋतु । आश्विन, कार्तिक शरद्ऋतु हैं ।

अन्य मत से

मेष और वृष की संक्रान्ति ये दोनों ग्रीष्मऋतु हैं १ मिथुन, कर्क की संक्रान्ति को प्रावृट् ऋतु कहिए । इस ऋतु में बादलों से आकाश छाया रहे मरोड़े को लिए थोड़ा बरसे भी यह ऋतु वर्षाऋतु का भेद है २ सिंह और कन्या की संक्रान्ति को वर्षाऋतु कहिए ३ तुला और वृश्चिक की संक्रान्ति को शरद्ऋतु कहिए ४ धन और मकर की संक्रान्ति को हेमन्तऋतु कहिए ५ कुम्भ और मीन की संक्रान्ति को वसन्तऋतु कहिए ६ ।

छहों ऋतु में वायु, पित्त और कफ का संचय, प्रकोप और शान्ति

ग्रीष्मऋतु में वायु का संचय, वर्षाऋतु में वायु का कोप, शरदृऋतु में वायु की शान्ति, वर्षाऋतु में पित्त का संचय, शरदृऋतु में पित्त का कोप, हिमऋतु में पित्त की शान्ति, शिशिरऋतु में कफ का संचय, वसन्त-ऋतु में कफ का कोप, ग्रीष्मऋतु में कफ की शान्ति होती है। समय में वायु, पित्त, कफों के प्रकोप और शान्ति आहार-विहार से होती है और ये बिना समय आप ही शान्त होते हैं।

वायुकोपकारक आहार-विहार

यह बिना समय हलकी, रूखी, थोड़ी और अतिशीतल वस्तु से; अतिखेद से; संध्यासमय मैथुन करने से, शोच, भय और चिन्ता से, तथा रात्रि के जागने से, चोट के लगने से, अन्न के अजीर्ण होने से, धातु के क्षीणपने से और इसी प्रकार के अन्य कारणों से भी वायु का कोप होता है। वायु के कोप को दूर करने का यत्न करे तो वायु की शान्ति होती है।

पित्तकोपकारक आहार-विहार

कड़ुवी, खट्टी, गर्म और तीक्ष्ण वस्तु के बहुत खाने से, क्रोध से, धूप आदि की गर्मी से, मध्याह्न समय में क्षुधा और तृषा के रोकने से, अन्न के अजीर्ण से आधी रात के समय पित्त कोप को प्राप्त होता है। यह पित्तनाशक यत्न करने से शान्त होता है।

कफकोपकारक आहार-विहार

मीठी-चिकनी द्रव्य के खाने, शीतल भोजन करने, दिन के सोने, अग्निमन्द होने और प्रभात के समय भोजन करे पीछे खेद आदि कारणों से कफ कोप को प्राप्त होता है। कफनाशक यत्नों से कफ की शान्ति होती है।

हिमऋतु के सेवन का आहार-विहार

नवीन भैंस और गौ का घृत, मीठा गुड़, मीठा दही, नोन, तेल का मर्दन, तिल, गेहूँ, उड़द, मिश्री आदि मीठी द्रव्य, सोंठि संयुक्त हड़, अग्नि, निर्वात स्थान, नूतन वस्त्र, नवीन स्त्री आदि का सेवन हितकारक है।

शिशिरऋतु के आहार-विहार

पीपलसंयुक्त हड़, मिरच, अदरक, नवीन घृत, सेंधा नोन, बड़े, गुड़, दही और हिमऋतु में जो कहे हैं वे सब इसमें सुखदायक हैं।

वसन्तऋतु के आहार-विहार

वसन्तऋतु में कुपित कफ रोगों को उत्पन्न कर जठराग्नि को नाश करता है, इसलिए शहदसंयुक्त हड़ खाय तो कफ दूर हो और शरीर में बल बढ़े। इस ऋतु में त्र्यूषण (सोंठि, मिरच, पीपल) और चित्रक का खाना पथ्य है। कफकारी द्रव्य भी अच्छे हैं।

ग्रीष्मऋतु के आहार-विहार

ग्रीष्मऋतु में सूर्य सर्व प्राणिमात्र का बल हर लेते हैं, इसलिए वृक्षादिक की सघन छाया लाभप्रद है। गुड़संयुक्त हड़, शीतल जल आदि द्रव्य मधुर और हलका भोजन, दाख, चिकनी द्रव्य, शिखरन, सत्तू, मिश्री का शर्बत, शीतल जल में पैरना, खस, खाना, फव्वारा आदि का छुड़ाना, कपूर और चन्दनादिक का लेपन, दिन का सोना, खस का पंखा, क्षीर का भोजन इत्यादि और भी अच्छी वस्तुएँ इस ऋतु में पथ्य हैं। कड़ुवी, तीक्ष्ण, नोन, खटाई, दाह को करनेवाली वस्तु, खेद, दारू और धूप ये कुपथ्य हैं।

वर्षाऋतु के आहार-विहार

सेंधा नोनसंयुक्त हड़, चिकनी, द्रव्य, नोन, खटाई, सालबमिश्री, सोंठि, मिरच, पीपल, पीपलामूल, चित्रक, सेंधा नोन इन संयुक्त दही का मट्ठा, गरम पानी, कुएँ का जल, सफ़ेद वस्त्र, भ्रमण, हलका भोजन और जुलाब ये इस ऋतु में पथ्य हैं। दिन का सोना, खेद, धूप में रहना, तालाब का जल, दही, वन, ध्यान और मैथुन कुपथ्य हैं।

शरद्ऋतु के आहार-विहार

वर्षाऋतु में उपजा पित्त शरद्ऋतु में कोप करता है। उसके दूर करने के लिए मिश्रीसंयुक्त हड़ का सेवन, मिश्री आदि मीठी वस्तु, साठी चावल, मूँग, सरोवर का जल और औटा दूध ये पथ्य हैं। तीक्ष्ण वस्तु, नोन, खटाई, आसव, धूप, दूध, दिन का सोना और पूर्व की पवन ये शरद्ऋतु में कुपथ्य हैं। ऋतु उतरने में सात दिन तक उसी ऋतु

की विधि करे और आठवें दिन से प्रारम्भवाली ऋतु की विधि करे।

दिनचर्या विधि

मनुष्य को चाहिए कि चार घड़ी के तड़के उठके अपने इष्टदेव या और देवता का ध्यान करे, फिर यह विचारे कि आज क्या करना है। पीछे शय्या से उठ मल-मूत्र का त्याग करे और इनका वेग न रोके। दिन में उत्तर दिशा की ओर तथा रात्रि में दक्षिण दिशा की ओर मुखकर मल-मूत्र करे, परन्तु मल-मूत्र करते समय न बोले। फिर सूधे वृक्ष मौलसिरी आदि की अपने हाथ की कनिष्ठिका अंगुली समान पतली और सीधी बारह अंगुल की दतून कर उसको फाड़कर जीभ को शोधे और शीतल जल से १२ कुल्ले करे पीछे शीतल ही जल से मुख धोवे तो मुख के सब रोग जायँ। सेंधा नोन आदि में सोंठि और भुना जीरा मिलाकर महीन पीस नित्य मर्दन करे तो दाँतों में रोग न होवे। शरीर में नारायणादि तैल को मर्दन करे, उसकी चिकनाई दूर करने के लिए चने का आटा और कठोरल आदि का उबटन करे। पीछे शरीर के बलानुसार कुश्ती करे। तदनन्तर श्रम दूर कर सुहाते सुहाते गरम पानी से कमर ऊपर से स्नान करे तो रोग न हों।

स्नान के गुण

स्नान शौच, गर्मी के रोग, हृदय का ताप, रुधिर का कोप और शरीर की दुर्गन्ध को दूर करता है। कान्ति और तेज को बढ़ाता, पाप और मन की ग्लानि को दूर करता है एवं क्षुधा, रुचि और बुद्धि, धर्म, सुख द्रव्य इन सबको बढ़ाता है। शरीर को आनंद देता, शरीर की कृशता और मार्ग के खेद को दूर करता है। ये स्नान में गुण हैं। इतने रोगवाला मनुष्य स्नान न करे—नींद से उपरान्त, नींद आती हो और ज्वर, खेद और हिचकी के रोगवाला, भोजन करके, क्षीण पुरुष, कफ और वायु तथा वमन के रोगवाला स्नान न करे। स्नान करके संध्यावंदन तथा देवता, गो, ब्राह्मण, आचार्य, गुरु और अतिथि आदि का पूजन करे, पीछे यथाशक्ति दान दे। मध्याह्न के समय बलि-वैश्वदेवादिक कर किसी अतिथि को वित्तानुसार भोजन कराकर कुटुम्ब समेत आप भोजन करे। प्रथम मधुर, चिकना, हितकारी और

चावल, मूँग, गेहूँ आदि की रोटी घृत संयुक्त अच्छी तरकारी के साथ खाय और शनैःशनैः भोजन करे। भोजन में शीघ्रता न करे। भोजन के अन्त में मिश्री के संयोग से दूध पीवे, दही न खाय। भोजन बहुत थोड़ा और बहुत अधिक न खाय। अपनी रुचि के अनुसार भोजन करे। भोजन करते समय माता, पिता, मित्र, वैद्य, पाक का कर्ता, मोर, चकोर, कुक्कुट, श्वान और वानर इनको बैठा ले। इनकी दृष्टि अच्छी है। अगस्त्य, कुम्भकर्ण, शनैश्चर, बड़वानल और भीमसेन का स्मरण करने से भोजन अच्छी तरह पच जाता है। भोजन के उपरान्त सुगन्धित फूलों की माला, इतर और अच्छे वस्त्रों को धारण करे और खस के पंखे आदि से पवन करावे तथा शीतल छाया में रहे। भोजन के उपरान्त २ घड़ी पीछे शीतल और मीठा जल थोड़ा थोड़ा पीवे। अधिक पीवे तो रोग होता है क्योंकि भोजन के आदि में जल पीवे तो अग्नि की मन्दता और भोजन के अन्त में पीवे तो विष का सा गुण करता है। अजीर्ण में जल पीवे तो अजीर्ण पच जाय। अन्न पचे पीछे जल पीवे तो शरीर में बल हो। रात्रि के अन्त में जल पीवे तो सब रोग जायँ। भोजन कर बैठ जाय तो शरीर में भारीपना हो और भोजन कर सूधा सोवे तो बल हो। भोजन कर बाईं करवट सोना आयुर्बल बढ़ाता और भोजन कर दौड़ना मृत्यु का बुलाना है। भोजन करे पीछे बाईं करवँट २ घड़ी सोवे नींद ले नहीं। अथवा भोजन करे पीछे १०० पग चले अथवा भोजन के अन्त में गौ की छाँछ पीवे तो गुण करे। अच्छा रात्रि का जमाया भैंस अथवा गौ के दही को मथकर वस्त्र में छान ले। फिर उसमें मिश्री का बूरा, मिरच, इलायची, भीमसेनी कपूर आदि अनुमान मुवाफ़िक मिलाकर इस शिखरन को पीवे तो शुक्र और बल को बढ़ावे और रुचि करे तथा वात पित्त के रोग को दूर करे। भैंस के दही को छान उसमें सोंठि, मिरच, पीपल, राई, नोन इन्हें महीन पीस मिलाकर अनुमान मुवाफ़िक खाय तो कफ वात दूर हो और बल बढ़े। शीतकाल में दही खाना अच्छा है।

संध्या के समय इतने काम न करे—भोजन, मैथुन, निद्रा, पढ़ना। भोजन करने से रोग होता है। संध्या में मैथुन करे तो भयंकर सन्तान,

निद्रा आवे तो दरिद्री और पढ़ने से आयुर्बल की क्षय होती है।

रात्रिचर्या

रात्रि में चाँद की चाँदनी में सोने से कामदेव की वृद्धि हो और शरीर का दाह दूर हो और अँधेरी रात आनन्दादिक को दूर करती है। रात्रि के प्रथम पहर में भोजनादिक करे, पीछे शयन करे। सुन्दर स्थान में अच्छी यौवनवती स्त्री से यथाशक्ति संभोग करे और शक्ति न हो तो संभोग न करे। संभोग के आदि में भैंस का अथवा गऊ का दूध औटाकर मिश्री के संयोग से पीवे और संभोग के अन्त में भी इच्छानुसार पीवे तो पुरुष के जरापने का रोग कभी न हो।

तत्काल प्राणनाशिनी वस्तुएँ

सड़ा मांस, वृद्धा स्त्री, धूप का सोना, तत्काल का जमाया दही, प्रातःकाल मैथुन, सबेरे सोना, ये छः वस्तुएँ तत्काल प्राणहारिणी हैं।

तत्काल आनन्ददायिनी वस्तुएँ

तत्काल का मांस, नवीन अन्न, बाला स्त्री, क्षीर का भोजन, नवीन घृत, उष्णोदक से स्नान, ये छः वस्तुएँ प्राणी को तत्काल आनन्दित करती हैं।

षड्ऋतु में स्त्रीसंभोगविधि

हिम और शिशिर में अपने शरीर की शक्ति के अनुसार वारंवार स्त्री से संभोग करे तो रोग न हो वरन् शरीर आनन्द ही रहे। वसन्त में तीसरे दिन, शरद में तीसरे-चौथे दिन, वर्षा में पाँचवें और ग्रीष्म में छठे या पन्द्रहवें दिन स्त्री से संभोग करे तो रोग न हो। शीतऋतु में रात्रि में तथा ग्रीष्मऋतु में दिन में एवं वर्षाऋतु में दिन में और रात्रि में जब मेघ गरजे तथा बरसे उस समय स्त्री से सम्भोग करे तो रोग न हो। शरद्ऋतु में कामदेव जागे तब संभोग करे तो रोगरहित।

संभोग में वर्जित स्त्रियाँ

रजस्वला, रोगिणी, वृद्धा, जिस स्त्री के कामदेव न जगे, मलीन, सप्तमासिक गर्भिणी और उपदंश रोगवाली स्त्री से संभोग न करे।

अन्य मैथुन वर्जन

भययुक्त, अधीर, क्षुधित, रोगी, तृषित, बालक, वृद्ध, मलमूत्र

आदि का जिसके वेग लग रहा हो, इतने पुरुष मैथुन न करें।

अतिमैथुन से होनेवाले रोग

शूल चले, खाँसी आवे, विषमज्वर हो, क्षीण पड़ जाय और वायु के पक्षाघातादिक रोग हों। मैथुन के उपरान्त स्नान कर मिश्री के संयोग का गर्म दूध पीवे, मांसादिक मीठा रस खाय, आसव पीवे, खस के व्यजन से पवन करावे, शयन करे और रात्रि को न बहुत जागे और न दिन में बहुत सोवे। रात्रि के अन्त में ५ घड़ी के तड़के आठ अञ्जलि प्रमाण शीतल जल पीवे, पीछे ४ घड़ी के तड़के उठे। इस विधि से सदा करे तो उस पुरुष के कभी भी रोग न हो, सदा आरोग्य रहे। ये सब विधियाँ भावप्रकाश और शार्ङ्गधर में लिखी हैं।

मनुष्य-शरीर के वायु, पित्त, कफ, धातु, उपधातु; शरीर की उत्पत्ति और नाश आदि का यथार्थ स्वरूप

मनुष्य के शरीर में इतनी वस्तुएँ हैं—कला ७, आशय ७, धातु ७, उपधातु ७, सातों धातुओं के मन ७, त्वचा ७, दोष ३, देह में मांस, हाड़ और मेद। इन सबके बाँधने की नसें १०० हैं और दो सो दस इसमें हाड़ हैं। कई एक आचार्यों के मत से २०० हाड़, १०७ मर्मस्थान, नसें ७०, रस के बहनेवाली धमनी नाड़ी २४ और मांस की पिण्डी ५०० हैं। स्त्रियों के मांस की पिण्डी ५२० हैं। सबसे बड़ी नाड़ी शरीरव्यापिनी १६ हैं। उन्हें कंडरा कहते हैं। मनुष्य के शरीर में १० और स्त्री की देह में १३ छिद्र हैं। स्त्रियों की देह में शास्त्र के अनुसार अपनी बुद्धि के मुवाफ़िक जो कुछ है वह लिखते हैं।

कला का स्वरूप

धातु और आशय के बीचवाली झिल्ली को, जिसमें बालक रहता है, कला कहते हैं। कला ७ प्रकार की है—मांस, रुधिर और मेद इन तीनों के बीच एक झिल्ली है १ इनके और फिया के बीच में एक झिल्ली है २ आंतों के बीच एक झिल्ली है ३ एक झिल्ली उदर की अग्नि को धारण कर रही है ४ एक झिल्ली वीर्य को धारण कर रही है ५ इन्हें सात कला कहिए।

सात आशय

हृदय में आशय नाम स्थान कफ का घर है १ हृदय के नीचे आम का स्थान २ नाभि के ऊपर बाईं ओर अग्नि का स्थान ३ अग्नि के ऊपर तिल है नाभि के नीचे पवन का स्थान ४ पवन के स्थान के नीचे पेड़ू में मल का स्थान ५ पेड़ू के लगता ही कुछ नीचे मूत्र का स्थान है उसे बस्ति कहते हैं ६ हृदय के कुछ ऊपर जीव का और रुधिर का स्थान है ७। ये सम्पूर्ण स्त्री और पुरुषों के आशय हैं और स्त्री के ३ आशय अधिक हैं। एक गर्भ का स्थान १ दो दूध के स्थान स्तन २।

सात धातु

रस, रुधिर, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र, ये सातों धातु पित्त के तेजकर पची हुई एक महीने में वीर्य को पैदा करती हैं। चौथे चौथे दिन एक एक धातु पैदा होती है। जो अन्नपानी खाया जाता है वह पित्त के तेज से रस होता और पित्त के तेज से पककर रुधिर हो जाता है। इसी तरह सातों धातु जानिए।

सात उपधातु

जीभ, नेत्र और कपोल का मल ये तीनों रसधातु की उपधातु हैं १ रंज, कफ, पित्त ये रुधिर की उपधातु हैं २ कान के मल को मांस की उपधातु जानिए ३ जीभ और दाँत के मल की उपधातु जानिए ४ बीसों नखों को हाड़ों की उपधातु जानिए ५ नेत्र में कीचड़ आवे उसे उपधातु जानिए ६ मुख ऊपर चिकनापन और कालापन हो यह शुक्र की उपधातु है ७। स्त्री के दो धातुएँ और हैं—एक तो स्तनों में दूध, दूसरे स्त्रीधर्म। ये दोनों समय में होते हैं और समय में ही जाते रहते हैं। और अन्य भी सातों धातु से पैदा होते हैं जैसे—शुद्ध मांस से पैदा हुए घृत को बसा कहिए। पसीना, दाँत, केश, ओज ये सब शरीर में रहते हैं सो चिकने और शीतल हैं, शरीर में बल और पुष्टता के करनेवाले हैं।

सातों त्वचा

ऊपर की त्वचा अवभासिनी नाम चिकनी है और विभूति का

स्थान है। दूसरी लाल है उसमें तिल पैदा होता है। तीसरी त्वचा सफेद है, उसमें चर्मदल नाम रोग पैदा होता है। चौथी त्वचा ताँबे के रंग समान है, उसमें सफ़ेद कोढ़ पैदा होता है। पाँचवीं त्वचा वेदिनी नाम है, उसमें सब कोढ़ पैदा होते हैं। छठी त्वचा रोहिणी है, उसमें गूमड़ी, गण्डमालादिक पैदा होती हैं। सातवीं त्वचा स्थूल नाम है, उसमें विद्रधि रहती है। ये सातों त्वचा दो यव के प्रमाण मोटी हैं।

तीनों दोषों का स्वरूप

वायु, पित्त, कफ, इन्हें दोष और मल कहते हैं। एक एक पाँच प्रकार के हैं और पृथक् पृथक् स्थान में रहते हैं। इन तीनों में वायु बलवान् है। वह वायु शरीर में सब वस्तुओं का विभाग कर सब शरीर में नसों के द्वारा पहुँचाती है। पित्त और कफ पंगुले हैं। वायु ही इस शरीर में बलवान् होकर सब रसादिकों को सब देह में पहुँचाती है। वायु रजोगुणमय सूक्ष्म, शीतल, रूखा और हलका है और मल के आशय में, कोष्ठ में, अग्नि के स्थान में, हृदय में, कण्ठ में इन स्थानों में रहता है। ये तो मुख्य स्थान हैं, परन्तु सब शरीर में है। गुदा में अपान, नाभि में समान, हृदय में प्राण, कण्ठ में उदान और सब शरीर में व्यान नाम वायु है।

पित्त का स्वरूप

पित्त गर्म, पतला, सत्त्वगुणमय और कड़ुवा है एवं दग्ध हुआ खट्टा होता है। यह पाँच स्थानों में रहता है। अग्न्याशय में तिल प्रमाण अग्निस्वरूप होकर रहता है। त्वचा में कान्ति का करनेवाला है। नेत्रों में रहकर सबको देखनेवाला है। यकृत् में रहकर सब वस्तु को पचाकर खाये हुए रस को रुधिर कर देता है और हृदय में रहकर बुद्ध्यादिक को करता है। इस पित्त के पाचक, भ्राजक, रञ्जक, आलोचक, साधक ये पाँच नाम हैं।

कफ का स्वरूप

कफ चिकना, पिच्छिल और तमोगुणमय है, यह दग्ध हुआ खारी होता है। आमाशय, मस्तक, कण्ठ, हृदय, सन्धि ये इसके मुख्य

स्थान हैं इन्हीं में रहता है। देह में रहता हुआ देह की स्थिरता और सब अङ्गों को कोमल करता है। क्लेदक, स्नेहन, रसन, अवलम्बक, बोधक ये इसके नाम हैं।

नसों का स्वरूप

शरीर में मांस, हाड़ और मेद इनके बाँधने के लिए स्नायु (नसें) कही हैं।

हाड़ों का स्वरूप

ये देह के आधार हैं। इनके बिना देह खड़ा नहीं रह सकता क्योंकि सार यही हैं।

मर्मस्थान का स्वरूप

जीव को धारनेवाला मर्मस्थान ही हैं।

नसों का स्वरूप

सब सन्धियाँ इनसे बँधी हैं और वायु, पित्त, कफ और सात धातुओं को भी यही नसें धारण करती हे।

धमनी नाड़ी का स्वरूप

धमनी नाड़ी रस और पवन को धारती है।

मांस की पिण्डी का स्वरूप

मांस की पिण्डी शरीर में बल करती हुई शरीर को धारती है।

कण्डरा का स्वरूप

सबसे बड़ी नशों को कण्डरा कहते हैं, वे १६ हैं। वे ही देह के सब अङ्गों को प्रसारण और संकोचन करती हैं।

रसरन्ध्रों का स्वरूप

नाक के दो, नेत्रों के दो और कानों के दो छिद्र हैं। लिंग, गुदा और मुख के एक एक छिद्र हैं। दशवाँ मस्तक में है, ये पुरुषों के रन्ध्र हैं। स्त्रियों के तीन अधिक हैं–दो स्तनों में तथा एक गर्भाशय में है। इस शरीर के रोम रोम में छोटे छोटे अनन्त छिद्र हैं। नाभि के पास बाईं ओर दो फुप्फुस हैं। उदान वायु के आधार को फुप्फुस कहते हैं। प्लीहनाम फिया है तथा नाभि के पास दाहिनी ओर यकृत् है।

रुधिर के बहनेवाली नसों का मूल भी प्लीह (फिया) है और रञ्जक नाम पित्त के स्थान में जो रक्त का स्थान है, उसको यकृत् कहते हैं। नाभि के बायें भाग में आमाशय के ऊपर जो तिल है वह जल के बहनेवाला नसों का मूल है वही तिल उसको ढाँक देता है। कुक्षि में जो दो गोले हैं, उन्हें वृक्क कहिए। वे दोनों जठर के मेद को पुष्ट करते हैं। वृषण (फोते) वीर्य को ले चलनेवाली नसों के आधार हैं और यही पुरुषार्थ को ले चलनेवाले हैं। लिङ्ग गर्भ को देनेवाला, वीर्य, मूत्र और ओज का घर है तथा हृदय, मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार इनका स्थान है एवं नाभि धमनी आदि नसों का स्थान है क्योंकि सब शरीर में नाभि से ही सब नसें फैलती हैं और यहाँ की वायु और सब धातुओं के संयोग से नाभि की जो वायु है वह सब शरीर को पुष्ट करती है। नाभि ही की पवन हृदय के कमल में जाय उसका स्पर्शकर कण्ठ के बाहर आकर विष्णुपद का अमृत पीने को नासिका के द्वारा जाता है। पीछे वह नासिका की पवन आकाश के अमृत को पीकर फिर मुख, नासिका आदि के द्वारा वेग से उदर में आय प्राप्त होती है, तदनन्तर सम्पूर्ण देह, जीव और जठराग्नि को पुष्ट करती है। शरीर की और हृदय की प्राण-पवन का जो संयोग है उसको आयुर्बल कहते हैं। और किसी समय इन दोनों का संयोग दूर हो उसको मरण कहते हैं।

इस पृथ्वी पर कोई प्राणी अमर नहीं है इससे मृत्यु अनिवार्य है। वैद्य रोग को दूर कर सकता है, पर मृत्यु को नहीं दूर कर सकता है। मनुष्य के रोग साध्य हैं परन्तु पथ्यादिक न करे तो उसका साध्य रोग ही याप्य हो जाता है। यदि फिर भी कुपथ्य ही किया करे तो याप्य रोग भी असाध्य हो जाता है। वह असाध्य रोग कुपथ्य के करनेवाले मनुष्य को निश्चय मार डालता है, इससे चतुर मनुष्य को चाहिए की रोगों से शरीर की रक्षा करे। कर्मविपाक के जाननेवाले को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों का साधन कहा है सो इनका कारण मनुष्य का शरीर ही है। जो पुरुष इस मनुष्यशरीर को मारता है वह सबको मारता है और जो इस शरीर की रक्षा करता है

वह सबकी रक्षा करता है। सातों धातु और सातों धातुओं का मल, वायु, पित्त और कफ ये सब बराबर शरीर में रहकर शरीर को पुष्ट करते हैं और ये सब घटे, बढ़े और कुपित हुए शरीर का नाश करते हैं।

सृष्टि के उपजाने का कथन

इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का कारण इच्छासहित सच्चिदानन्दस्वरूप ब्रह्म परमात्मा की प्रकृति नाम माया है। वह परमात्मा की माया नित्य है, जैसे सूर्य की प्रतिच्छाया नाम प्रकाश है। वह परमात्मा की माया है तो जड़, परन्तु चैतन्य परमात्मा के संयोग से इस अनित्य संसार को नट के ख्याल को तरह रचती है। इस संसार की माया (प्रकृति) प्रथम बुद्धि को उपजाती है। फिर उसका इच्छामयी महत्तत्त्वरूप है। महत्तत्त्व से अहंकार होता है। वह रजोगुण, सत्त्वगुण और तमोगुण इन भेदों से तीन प्रकार का होता है, पीछे सत्त्वगुण रजोगुण से मिल दश इन्द्रियों को पैदा करता है और मन भी इन दोनों ही से पैदा होता है।

दश इन्द्रियों का स्वरूप

कान, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, नासिका ये पाँच ज्ञानेन्द्रिय हैं और वाक्, हाथ, पग, लिङ्ग, गुदा ये पाँच कर्मेन्द्रिय हैं। तमोगुण सत्त्वगुण से मिल अहंकार से पञ्चतन्मात्रा को उत्पन्न करता है।

पञ्चतन्मात्रा का स्वरूप

शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध इनको तन्मात्रा कहते हैं पीछे पञ्च-तन्मात्रा से पाँच महाभूत उत्पन्न होते हैं। शब्दतन्मात्रा से आकाश, स्पर्शतन्मात्रा से वायु, रूपतन्मात्रा से अग्नि, रसतन्मात्रा से जल और गन्धतन्मात्रा से पृथ्वी पैदा होती है।

ज्ञानेन्द्रियों का विषय

कान का विषय शब्द, त्वचा का विषय स्पर्श, नेत्र का विषय रूप, जिह्वा का विषय स्वाद और नासिका का विषय सुगन्ध-दुर्गन्ध का ग्रहण है।

कर्मेन्द्रियों का विषय

वाणी का विषय बोलना, हाथ का विषय ग्रहण करना, पैरों का विषय चलना, लिङ्ग का विषय मैथुन करना और गुदा का विषय मल का अच्छी तरह त्याग करना है।

प्रकृति नाम

महत्तत्त्वनाम महाअहंकार १ पञ्चतन्मात्रा ५ प्रकृति १७ इन्द्रियाँ १० मन १ महाभूत ५ ये १६ विकार हैं। ये सब मिलकर २४ तत्त्व होते हैं। पीछे पाँच तत्त्वों का यह शरीररूपी घर बनता है। इस घर में जीवात्मा शुभाशुभकर्मों के अधीन मनरूपी दूत के वश हो शरीररूपी घर में आकर बसता है तब जीवसंयुक्त इस शरीर को बुद्धिमान् देही कहते हैं। यह देही पाप, पुण्य, सुख और दुःखादिकों से व्याप्त हुआ है और जीवात्मा मन से बँधा हुआ अपने किये हुए कर्मबन्धन से बँधा है। काम १ क्रोध २ लोभ ३ मोह ४ अहंकार ५ दश इन्द्रिय १० बुद्धि १ ये सब अज्ञान हुए जीवात्मा के बन्धन के अर्थ हैं। जीवात्मा को आत्मज्ञान हो तो उसकी मुक्ति होती है। जिसमें दुःख उपजे उसे व्याधि कहते हैं। जिसमें सुख उपजे उसे आरोग्य कहते हैं।

आहार और परिपाक, गर्भोत्पत्ति और बालक के पोषणादि का लक्षण

जो भोजनादि करे वह हृदय की प्राणपवन से प्रेरित हो प्रथम आमाशय में प्राप्त होता है तब वही षट्रस का आहार मधुरपने को और फेनभाव को प्राप्त होता है। वही आहार पचकर पित्त के प्रभाव से कुछ एक पका अम्लपने को प्राप्त होकर नाभि की समान नाम पवन से प्रेरित छठी ग्रहणीकला में प्राप्त होता है तदनन्तर कोष्ठ की अग्नि से ग्रहणीकला में पचकर कड़ुआ हो जाता है। वही आहार कोष्ठ की अग्नि से पचकर रस हो जाता है। वह अच्छे प्रकार पके नहीं और कच्चा रहे तो उसी आहार का आँव होता है। कोष्ठ की अग्नि बलवती हो तो आहार का रस मधुर होकर चिकनेपन को प्राप्त होता है तथा वही रस भले प्रकार पका हुआ इस शरीर की सम्पूर्ण धातुओं को पुष्ट करता है तभी यह रस अमृत की उपमा को प्राप्त होता है।

यह आहार रस मन्दाग्नि से दग्ध हो तो उदर में कड़ुआ रस हो जाय अथवा खट्टा रस हो जाय अथवा यही रस विष के स्वभाव को प्राप्त हो अथवा यही रस रोगों के समूहों को उत्पन्न कर शरीर में सूजन कर देता है। आहार का रस ही इस शरीर में सार (बल) है। सार हीन होने से मल पतला हो जाता है सो अच्छा नहीं। पिये हुए जल के सार को नसों के द्वारा वायु शरीर में पहुँचा देता है और इसके निस्सार को पेड़ू में प्राप्त कर मूत्र कर देता है। मूत्र लिङ्ग के द्वारा बाहर निकलता है और उसी आहार का रस नाभि की समान नाम पवन से प्रेरित हो मनुष्य के हृदय में जाय व्याप्त होता है। वही रस पित्त से पचकर लाल रंग हो रुधिर हो जाता है। रुधिर ही सब शरीर में रहता है और वही जीव का उत्तम आधार है। रुधिर चिकना, भारी, बलवान् और मीठा है तथा दग्ध हुआ पित्त की तरह होता है। एक एक धातु सवा चार चार दिन में पैदा होते हैं। पुरुष के महीने में भोजन किया आहार वीर्य हो जाता है और स्त्रियों के भोजन किया आहार एक महीने में स्त्रीधर्म द्वारा रज हो जाता है फिर स्त्री और पुरुष दोनों मिल मैथुन करें तब स्त्री की भग का शुद्ध रुधिर और पुरुष का शुद्ध वीर्य ये दोनों उस समय मिलकर गर्भस्थान में जाकर गर्भ हो जाते हैं। वह गर्भ भग के द्वारा नवें महीने में बाहर निकलता है तब उसको बालक कहते हैं। मैथुनसमय स्त्री का रज अधिक हो तो कन्या और पुरुष का वीर्य अधिक हो तो पुत्र होता है। यदि स्त्री और पुरुष इन दोनों के रज और वीर्य बराबर हों तो नपुंसक सन्तान पैदा होती है, फिर परमेश्वर की जैसी इच्छा हो वही होता है।

बालक को औषध देने की मात्रा

१ महीने का बालक हो तो दूध, शहद, मिश्री और घृत के साथ १ रत्ती औषध दे, फिर जैसे जैसे बालक बढ़े वैसे ही औषध एक वर्ष तक बढ़ाता जाय। पीछे १ माशे औषध १६ वर्ष तक दे, फिर औषधमात्रा ७० वर्ष तक इतनी ही रखिए। फिर बालक की तरह औषध की मात्रा घटा दीजिए यह तो विधि कल्क और चूर्णादिक

की है। काढ़ा की तौल इससे चौगुनी जान लीजिए। बालक का काजल, उबटना, स्नान कराया करे और महीने के महीने बालक को वमन करा दे तथा हड़ घिस उसकी घूटी नित्य दे और अन्न का ग्रास पाँचवें वर्ष दे। जुलाब १६ वर्ष के उपरान्त और मैथुन २० वर्ष उपरान्त कराइये। इस विधि से मनुष्य चले तो उसके कभी रोग नहीं होगा और वृद्धावस्था नहीं व्यापेगी। ३० वर्ष तक शरीर का मोटापना रहता है, ४० वर्षपर्यन्त मनुष्य के बुद्धि का आगमन रहता है, ५० वर्ष पर्यन्त त्वचा का गाढ़ापना रहता है, ६० वर्षपर्यन्त नेत्र की ज्योति अच्छी तरह प्रकाशित रहती है, ७० वर्षपर्यन्त मनुष्य के शरीर में वीर्य का अधिकपना रहता है, ८० वर्षपर्यन्त मनुष्य के शरीर में पराक्रम अधिक रहता है, ९० वर्षपर्यन्त अच्छी तरह ज्ञान और १०० वर्षपर्यन्त बोलने और हाथ पगों में बल, मल-मूत्र के त्याग की संज्ञा रहती है। ११० वर्षपर्यन्त स्मरणमात्र का स्थान रहता है और १२० वर्षपर्यन्त प्राणमात्र शरीर में रहते हैं। मनुष्य का शरीर नीरोग रहे तो आयुर्बल का प्रमाण १२० वर्ष का है।

वायु-प्रकृत-लक्षण

छोटे केश, शरीर कृश और रूखा, वाचाल मन और आकाश में रहनेवाले स्वप्न हों तो वायु-प्रकृति जानिए।

पित्त-प्रकृति-लक्षण

युवा अवस्था में सफेद बाल आवें, बुद्धिमान हो, पसीना बहुत आवे, क्रोधी हो और स्वप्न में तेज देखे। ये लक्षण हों तो पित्त-प्रकृति जानिए।

कफ-प्रकृति-लक्षण

जिसकी बुद्धि गम्भीर हो, अङ्ग स्थूल हो, चिकने केश हों, बलवान् हो और स्वप्न में जलाशय देखे। ये लक्षण जिसमें हों उसे कफ की प्रकृति कहिए।

मेद का लक्षण

कफ और तमोगुण अधिक हो तो मूर्च्छा हो। वायु पित्त और

रजोगुण अधिक हो तो घुमेर और भ्रान्ति हो। कफ और तमोगुण अधिक हो तो भौंर आवे, भ्रान्ति हो। कफवायु और तमोगुण अधिक हो तो तन्द्रा हो। बल जाता रहे तो ग्लानि हो तथा दुःख, अजीर्ण और खेद से भी ग्लानि होती है। बल थके और उत्साह न हो उसके आलस्य जानना इत्यादि बुद्धिमान पुरुष और भी जान लें।

इति श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराज राजेन्द्रश्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतेसागरे एकत्रिंशत्तमस्तरंगः ॥ ३१ ॥

समाप्त



श्रीमती स्मिता पटवर्धन, प्रबन्ध संचालक द्वारा अवध पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ में मुद्रित 2008 ई०।

हमारे अमूल्य प्रकाशन

पुस्तक का नाम	सधारण मूल्य रु० पै०
रामायण तु०कृ० (सचित्र-सजिल्द) टीकाकार पं० लक्ष्मण प्रसाद भारद्वाज	३००=००
योगवशिष्ठ संपूर्ण दो भागों में (सजिल्द)	४७५=००
भक्तमाल नाभाजी सटीक बड़ी (सजिल्द)	२२०=००
भक्तमाल भाषा अर्थात भक्तकल्पद्रुम लेखक - श्री प्रताप सिंह (सजिल्द)	९०=००
भक्ति सागर चरण दास (सजिल्द)	१२५=००
महाभारत भाषा (सजिल्द)	१८०=००
रामायण आठों कांड - सूर्यदीन शुक्ल (सजिल्द)	१८०=००
महाभारत - सबल सिंह चौहान दोहा चौपाई	१२५=००
प्रेमसागर (सजिल्द)	१२०=००
विश्राम सागर सटीक सचित्र सजिल्द	२२५=००
ब्रज विलास (सजिल्द)	९०=००
आल्हखण्ड (सजिल्द) ललिता प्रसाद कृत	१५०=००
भगवद्गीता भाषा (सजिल्द)	२५=००
नूतन स्त्रीसुबोधिनी (सजिल्द)	१००=००
अष्टावक्र गीता दर्पण	६६=००
अनुराग सागर	२४=००
नरसिंह पुराण	५०=००
गोपाल सहस्रनाम	७=००
विष्णु सहस्रनाम	७=००
ऋषिपञ्चमी व्रतकथा	५=००
हनुमान चालीसा	५=००
सूर्यपुराण भाषा	८=००
अर्जुन गीता	६=००
चित्रकूट महात्म्य	७=००
सुन्दर विलास	२१=००
शिव चालीसा	१=००
सुन्दर कांड गुटका	३=००
नवीन संग्रह	छप रही है
चाणक्य नीति दर्पण	२०=००
शार्ङ्गधर संहिता सटीक (सजिल्द)	९०=००
माधव निदान भाषा-टीका (सजिल्द)	छप रही है
भावप्रकाश भाषा (सजिल्द)	१५०=००
हंसराज निदान सटीक	१५=००
इलाजुल्गुर्बा नागरी	६२=००
बृजज्योति:सार सटीक (सजिल्द)	९०=००
बृजज्जातक सटीक स्टिफ कवर (ज्योतिष)	३५=००
मुहूर्त चिन्तामणि सटीक	६०=००
विवाह पद्धति भाषा टीका	३०=००
सर्वतोभद्र चक्रम	२५=००
चमत्कार चिन्तामणि (ज्योतिष)	१२=००
गरुड़ पुराण भाषा टीका (पत्राकार)	५५=००
कर्म विपाक संहिता	३५=००
शीघ्रबोध	२२=००
प्रश्न प्रकाश	८=००
फल प्रकाश	६=००
पार्वण श्राद्ध	९=००
लग्न चन्द्रिका	३५=००
जातक भरण	५५=००
लग्न जातक	८=००

पुस्तक मिलने का पता

मैनेजर

तेज कुमार बुक डिपो (प्राइवेट) लिमिटेड

पोस्ट बाक्स ८५,

१- तिलोकनाथ रोड, हजरतगंज, लखनऊ - २२६००१



श्रीमती स्मिता पटवर्धन, प्रबन्ध निदेशिका, तेज कुमार बुक डिपो (प्रा०) लि० द्वारा प्रकाशित

अवध पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ द्वारा मुद्रित

पुस्तक मिलने का पता

तेजकुमार बुक डिपो (प्रा०) लिमिटेड

उत्तराधिकारी - (नवल किशोर प्रेस बुक डिपो)

१, त्रिलोकनाथ रोड, लखनऊ - २२६००१

फोन - (०५२२) २६२३३१५